लेखक की अन्य कृतियाँ

विश्व यात्रा के संस्मरण
राह चलते चलते
कुछ देखी : कुछ सुनी
जाने अनजाने
आर्थिक समस्याएँ
हमारा संसद् भवन
कुछ अपनी : कुछ जग की
कुछ घटनाएँ : कुछ संस्मरण
इतिहास के निर्झर
मेरा बचपन : मेरा गाँव
मेरा संघर्ष : मेरा कलकत्ता

क्या खोया : क्या पाया ?

एक संघर्षशील व्यक्ति की असाधारण
निष्ठा एवं अध्यवसाय की दैनंदिनी



विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

KYA KHOYA : KYA PAYA ?

Diary of

Rameshwar Tantia

1981

प्रथम संस्करण : १९८१ ई०

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

मुद्रक

सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

रामेश्वर टांटिया

रामेश्वरजी मेरे घनिष्ठ मित्रों में से एक थे। साधु प्रकृति, परोपकार में तत्पर, बुराइयों से निवृत्त, द्वेष से वैराग्य, स्पष्ट वक्ता, साहित्य में रुचि, साहित्यकारों से घनिष्ठता और सज्जनों से मैत्री यह उनकी सहज प्रकृति थी। व्यवसायी थे, पर मुझसे जब-जब साक्षात्कार होता, चर्चा होती थी राजनीतिक, सामाजिक या साहित्यिक। वेदान्त में उनकी कोई विशेष गति नहीं थी, पर स्वभाव से वे धर्मभीरु और श्रद्धालु थे। सेवा का यदि आह्वान हो तो सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, सुविधा-असुविधा को वे नितान्त भूल जाते थे। ऐसे मित्र की अकाल मृत्यु से समाज में एक स्थान रिक्त हो गया, जिसकी पूर्ति दुर्लभ है।

पर संसार का रवैया ही ऐसा है कि कोई ठहरता नहीं। कृष्ण गये, राम गये, बुद्ध गया, शंकर गये और गांधी भी गया—संसार का प्रवाह जारी है और जारी रहेगा। इससे क्या कोई उद्विग्न हो और क्या शोक करे। हमारी जिम्मेदारी में भगवान ने जो काम हमें सुपुर्द किया, उसे जबतक श्वास है, निर्वाह करते जाओ। यही भगवान् का संदेश है।

इस संसार-चक्र को जो यथावत् घुमाता रहता है, उसका जीवन सार्थक है। जो इस चक्र को घुमाये बिना ही खाता है वह गीता के शब्दों में पाप खाता है। रामेश्वरजी ने इस चक्र को घुमाते रखकर अपने जीवन को सफल किया, ऐसा मेरा मानना है।

जब जाने का समय आता है तो कोई टिक नहीं सकता। पर इसमें शायद कुछ अपवाद है। "विधि का लिखा को मेटन हारा।" "हानि लाभ जीवन मरन जस-अपजस विधि हाथ।" यह सब यथार्थ है इस पर विधि के जनक भी हम ही हैं—विधि का निर्माण हमारे कर्म ही करते हैं। योग वाशिष्ठ ने विधि की कटु आलोचना की है और पुरुषार्थ की महिमा गाई है। पर एक बार जब हमने विधि की रचना कर दी तो फिर उसके प्रहार को भुगतना ही पड़ेगा। ऐसा नियम है।

संकल्प उठता है कि क्या रामेश्वरजी कुछ साल और जिंदा रह सकते थे, यदि उन्होंने आहार-विहार में संयम किया होता तो-कौन जाने।

गीता में दो श्लोक हैं, जो पठन और मनन करने लायक हैं। ये श्लोक संसार-निर्वाह को सुगम बनाने के निमित्त ही श्रीकृष्ण ने कहे हैं। संसार निर्वाह अध्यात्म से भिन्न नहीं है, यह भी समझ लेना चाहिए।

यद्यपि इन श्लोकों में अध्यात्म का विवेचन नहीं है, पर कुछ लोग कहते हैं कि हमारे सारे कर्म अध्यात्म से भिन्न नहीं।

'जो कुछ करो' सो सेवा।
खावो पीवो सो पूजा।

यह कबीर के वचन हैं—और सही हैं। क्योंकि परमार्थ भावना से किये गये सभी कर्म ईश्वर की पूजा है। प्रधान भावना है न कि कर्म।

इसी दृष्टि से गीता के ये दो श्लोक भी संसार निर्वाह को सुगम बनाने के लिए ही कहे गये हैं और अध्यात्म से भिन्न नहीं :

नात्यश्नतस्तु योगोस्ति न चैकान्तमनश्नतः।
न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन॥
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

न ज्यादे खाओ न कम। न ज्यादे सोओ, न अधिक जागो। युक्त आहार, युक्त विहार, युक्त चेष्टा, युक्त कर्म, युक्त सोना और युक्त ही जागना—यह क्रम संसार यात्रा के दुःख को हर लेता है। यह श्री भगवान् का कथन केवल पढ़ने की चीज नहीं, आचरण की चीज है। अति को त्याग के सहज काम और सहज विश्राम से संसार यात्रा सुगम होती है, स्वास्थ्य अच्छा रहता है और काम भी डटकर होता है-यह भगवान् की प्रतिज्ञा है।

पर यह विषयान्तर हो गया। खैर,

रामेश्वरजी की यह डायरी उनके जीवन की सम्पूर्ण झांकी नहीं है। मैंने उसका जो चित्र दिया है वह इस डायरी में नहीं मिलेगा।

रामेश्वरजी का भौतिक शरीर गया पर आत्मा तो अमर है। जबतक उनका जस है, वह प्रेरणा देता रहेगा।

ईश्वर उनके जस की प्रतिष्ठा को बनाये रखे।

७ जनवरी, १९८१

घनश्यामदास बिड़ला

⊙

प्रस्तावना

रुपये के दो ही पहलू होते हैं। एक सामने का और दूसरा पीछे का। वे मैले हो सकते हैं। कभी-कभी साफ करके भी दिखाये जा सकते हैं। किन्तु रत्न में अनेक पहलू होते हैं। वह ऐसा काटा और तराशा जाता है कि उसमें अनेक पहलू बन जाते हैं। वे सब चमकते हैं। उनके कारण उसे जिस कोण से देखो, वह अपनी चमक से देखने वाले को आकर्षित और आनन्दित करता रहेगा। मनुष्यों में भी कुछ रत्न होते हैं, जिनके जीवन के अनेक पहलू होते हैं और नियति ने उन्हें इस प्रकार बनाया और सँवारा तथा काटा और तराशा है कि हर देखनेवाले को वे प्रभावित, आकर्षित और आनन्दित करते हैं। श्री रामेश्वर टाँटिया इसी प्रकार के पुरुष-रत्न थे। श्री घनश्यामदास जी बिड़ला उन्हें अधिक निकटता से जानते थे। वे उनके चरित्र के कई पहलुओं से परिचित थे। प्रस्तावना में उन्होंने उनके व्यक्तित्व, सेवा भावना और राजनीतिक रुचि का इतना सजीव वर्णन दिया है; किन्तु मैं उनकी साहित्यिक अभिरुचि से ही परिचित होने का अवसर पा सका। उनके अन्य क्षेत्रों के कार्य से अपरिचित रहा। अतएव, मैं उनकी साहित्यिक गतिविधियों पर ही कुछ कह सकता हूँ।

श्री रामेश्वर जी टाँटिया का मेरा परिचय दिल्ली में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी गुप्त के यहाँ हुआ। गुप्त जी मेरे बहुत पुराने मित्र थे। मैं उन्हें उस समय से जानता था, जब उन्होंने 'सरस्वती' में लिखना आरम्भ किया था। अतएव उनसे काफी घनिष्ठता थी। उन्होंने मुझे टाँटिया जी का परिचय बड़े प्रशंसापूर्ण शब्दों में कराया। उस समय टाँटिया जी भारत की संसद् के सदस्य थे और दिल्ली ही में अधिकतर रहते थे। मुझे राजनीति में रुचि नहीं है। मुझमें उनमें दो बातें सामान्य थीं: साहित्यिक अभिरुचि और भ्रमणप्रियता, मैं उत्तरी गोलार्द्ध के अनेक देशों की यात्रा कर चुका था। टाँटिया जी भी बड़े भ्रमणशील थे। किन्तु एक बात में वे मुझसे अधिक थे। मैंने अपनी यात्राओं का वर्णन नहीं लिखा। टाँटिया जी व्यवसायी भी थे। अतएव उनके सब काम सुव्यवस्थित होते थे। उन्होंने अपनी यात्राओं के अनुभव विवरण सहित लिख छोड़े थे। मैं उन दिनों 'सरस्वती' का म्पादन करता था। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे अपनी यात्राओं के कुछ संस्मरण 'सरस्वती' के लिए लिखें। शायद मैथिलीशरण जी ने भी उन्हें यह सलाह दी थी। उन्हें लेखन का अभ्यास ही न था, वे अच्छे लेखक भी थे, उन्होंने कृपा कर मेरा अनुरोध स्वीकार कर लिया और 'सरस्वती' के लिए वे अपनी यात्राओं के अनुभव लिखने लगे। उनके कई यात्रा-वर्णन धाराप्रवाह रूप से 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए और वे

पाठकों को बड़े रुचिकर मालूम हुए। इसका कारण यह था कि एक तो उनकी भाषा बड़ी सरल और प्रवाहपूर्ण होती थी, दूसरे वे विदेशों के स्थानों और वस्तुओं को भारतीय दृष्टि से देखते थे और उन बातों पर प्रकाश डालते थे जो सांस्कृतिक, राजनीतिक या आर्थिक दृष्टि से भारत के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। उनके समान व्यस्त व्यक्ति के लिए ऐसे सुन्दर यात्रावर्णन लिखना बहुत बड़ी बात थी।

व्यवस्थित जीवन व्यतीत करने वालों में कुछ लोगों को दैनन्दिनी (डायरी) लिखने की आदत पड़ जाती है। टाँटिया जी ने भी १९३२ से दैनन्दिनी लिखना आरम्भ कर दिया था, और सन् १९७७ तक लिखते रहे। शायद वे उसे नियमित रूप से प्रतिदिन नहीं लिखते थे; किन्तु दो-चार दिन का अन्तर भी कभी-कभी पड़ जाता था। उनका उद्देश्य इसे छपाने के लिए लिखना नहीं था। इसलिए इसमें अपने लिए महत्त्व की बातें—विशेषकर व्यवसाय और परिवार सम्बन्धी ही—अधिक लिखते थे। वर्तमान संस्करण सम्पादित संस्करण है। इसमें बहुत से अंश, जो पाठकों के लिए अनावश्यक समझे गये हैं, निकाल दिये गये हैं। किन्तु जो व्यक्तिगत प्रवृत्तियाँ हैं वे उनके चरित्र, दृष्टिकोण और व्यक्तित्व को आलोकित करती हैं। उनसे हम पाते हैं कि वे कुशल व्यापारी, सरल व्यक्ति, समाजसेवी, सद्‌गृहस्थ और सामाजिक प्राणी थे। उनकी समाज-सेवा बहुमुखी थी, वे शिक्षा और विधवा-विवाह में विशेष रुचि लेते थे। पुस्तकें पढ़ने का शौक उन्हें आरम्भ ही से था और उनकी पठन-रुचि विस्तृत थी, किन्तु लेखन का शौक उन्हें बहुत बाद में पैदा हुआ। सन् १९४७ के २१ दिसम्बर को वे लिखते हैं—

"बंगाल एशियाटिक सोसायटी में महादेवी वर्मा का भाषण सुना। बहुत विदुषी हैं, कविता तो अच्छी करती ही हैं। मेरे मन में आता है मैं भी कुछ लिखूँ। कौन मुझे याद रखेगा? डायरी के आज वाले पन्ने पर लिखा है 'विदुष पुजै सर्वत्र'। बात सही है। मुझे कुछ व्यापारी लोग जानते होंगे, परन्तु विद्वान् को तो गाँव-गाँव के बच्चे भी जानते हैं, इज्जत करते हैं, मुझे थोड़ा समय लिखने-पढ़ने में देना चाहिए।"

इस प्रकार वास्तव में टाँटिया जी श्रीमती महादेवी वर्मा के एकलव्य शिष्य प्रमाणित होते हैं। उन्हें महादेवी जी से जो प्रेरणा मिली, उसके कारण ही वे अपने व्यस्त जीवन में थोड़ा-बहुत लेखन कार्य कर सके।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, यह डायरी 'स्वान्तः सुखाय' थी। प्रकाशन के लिए नहीं। फिर भी उनकी तीव्र व्यावहारिक दृष्टि के कारण अनेक बातों पर प्रकाश पड़ता है और मालूम होता है कि वे कितने दूरदर्शी थे। १६ दिसम्बर, १९६२ को वे तेजपुर-गौहाटी की प्रविष्टि में लिखते हैं—

"यहाँ का ढंग ठीक है। लोग कारबार में जम रहे हैं। परन्तु सबने डिफेन्स को मजबूत बनाने पर जोर दिया। पूर्वी पाकिस्तान से बीच-बीच में हिन्दुओं का आना चालू है और मुसलमान भी सीमा में आ कर बसते जा रहे हैं, इस बात की भी चर्चा हुई, आगे चलकर इससे प्राब्लम बढ़ेंगे।"

उन्होंने स्थिति को कितने सही ढंग से समझा था और कितनी सही भविष्यवाणी की थी, वह असम के वर्तमान आंदोलन और नाजुक स्थिति से भलेभाँति प्रमाणित है। जिस वात को एक यात्री के रूप में वे समझ गये, उसे वहाँ के शासक नहीं समझ सके और यदि समझे भी तो उन्होंने भावी विषम स्थिति को देखने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

टाँटिया जी राजस्थान से संसद् के सदस्य भी चुने गये थे। वैसे तो राजनीति से उनका पहिले ही से सम्पर्क था। श्री जयप्रकाश नारायण और श्री लोहिया से उनकी घनिष्ठता थी, वे उनकी सहायता भी करते थे, किन्तु उन्होंने कभी राजनीति में प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया। संसद् के सदस्य होने के वाद उन्हें उसमें थोड़ी-वहुत रुचि लेनी पड़ती थी, किन्तु वे कभी राजनीति में डूबे नहीं, इसका कारण यह था कि उन्हें राजनीति का वातावरण प्रायः अप्रिय लगा। उन्होंने कहीं-कहीं लिखा है कि राजनीति में झूठ वहुत वोलना पड़ता है। उस वातावरण में वे रचपच नहीं सके। १३ मई, १९६२ को वे लिखते हैं—

"इन दिनों दिल्ली में घटनाएँ तेजी से वदली हैं, मन में वहुत तरह के विचार आते रहे। राजनीति में आना मेरे जैसों के लिए ठीक नहीं, न कोई अंकुश है और न ही नैतिकता। स्वार्थ का ज़ोर ज्यादा चलता है। अव पीछे हटना सम्भव नहीं, देखें क्या होता है।"

२० नवम्वर, १९५८ को लिखा है—

"मन में विचार आता है, व्यापार छोड़ राजनीति में आया, परन्तु इसमें ज्यादा उलझन है, झूठ ज्यादा वोलता हूँ, इससे वचकर रहना चाहिए।"

किन्तु मन की वात कभी-कभी निकल ही जाती थी। निजी वार्तालाप में भी सत्य कहने में संकोच होता था। ४ नवम्वर, १९५८ को लिखते हैं—

"भागीरथ जी के गया। वहाँ जे० पी० आये। फिर घर आ कर १०-१५ वजे से एक घंटा जे० पी० के पास रहा। वहाँ मैंने पंडित जवाहरलाल नेहरू की कड़ी आलोचना की। वात सही भले ही हो, पर यह उचित नहीं था, मैंने महसूस किया। आगे से सावधान रहूँगा।"

राजनीति में रहनेवालों को निजी कक्ष में भी मन की वात करने में कितना संयम रखना चाहिए, चाहे भीतर-भीतर घुटता ही क्यों न रहे। वाक्स्वतन्त्रता राजनीति में कितनी रह जाती है, यह इससे स्पष्ट है।

अपने ही को वे राजनीति के लिए अनुपयुक्त नहीं समझते थे, प्रत्युत साहित्यकारों को भी संसद् में लाना उन्हें ठीक नहीं मालूम हुआ। १ मार्च, १९६० को वे लिखते हैं—

"शाम को मैथिलीशरण गुप्त से मिलने गया। वालकृष्ण शर्मा 'नवीन' से मिला। अग्नियुग के इन कवियों को राज्य सभा, लोकसभा में लाना ठीक नहीं हुआ। मुझे ऐसा लगता है कि इनकी प्रतिभा कुंठित हो रही है। साहित्य के साधक

को राजनीति से क्या मतलव ? कालिदास, सूर, तुलसी, भूषण ने राजनीति से अपने को दूर ही रखा था। रवीन्द्र, शरद, प्रेमचन्द ने भी।"

चीन के आक्रमण के समय की इनकी कुछ प्रविष्टियाँ ऐतिहासिक महत्त्व की हैं। इनमें से कुछ वानगी देखिए—

१३ अगस्त, १९६२ : "दिन में पार्लियामेंट गया। दिन में लद्दाख पर डिवेट था। एंथनी वहुत अच्छा वोले, पंडित जी के सामने भले ही कोई न वोले, मगर लावी में चर्चा होती है कि उनको फॉरेन पॉलिसी फेल कर रही है। चीन के मामले में उनकी ढिलाई रही और वहुत-सी वातें छिपाई गयीं। परन्तु अव तो सव सहना पड़ेगा। चीन दवाता जाएगा।"

१४ अगस्त, १९६२ : "दो दिनों से पार्लियामेंट में क्वेश्चन कम हो रहे हैं। लावी में चीन के मामले पर खूब वातें होती हैं। चीन वड़ी लड़ाई की तैयारी में है। पिछले महीने मुरारजी भाई ने दस हजार फुट से ऊपर रहने वाली मिलिट्री के लिए अतिरिक्त भत्ते की मंजूरी दे दी है। परन्तु मिलिट्री वाले आधुनिक हथियारों के लिए पाँच-छह अरव रुपयों की जरूरत वताते हैं। मुरारजी भाई ने कहा है कि रक्षा-मन्त्री (श्री कृष्ण मेनन) इस मामले को कैविनेट में रखें। पंडित जी का कहना है कि इसकी जरूरत नहीं, चीन हमला नहीं करेगा। समझ में नहीं आता कि क्या सही है और क्या गलत।"

९ अक्तूबर, १९६२ : "नेफा का कमाण्डर लेफ्टिनेंट-जनरल कौल को वनाया गया है। अनुभवहीन आदमी है। ऐसा लगता है, भारत के दुर्दिन आ रहे हैं।"

२१ अक्तूबर, १९६२ : "खवर आई, चीन ने नेफा पर हमला कर दिया है। मन में वहुत दुःख हुआ। अपनी कुछ भी तैयारी नहीं है, हथियार भी नहीं, सेना ने पिछले जून महीने में सातवीं वार रक्षा मन्त्रालय को हथियार और सामान की कमी के वारे में चेतावनी दी थी। हम लोगों ने कृष्ण मेनन से भी मीटिंगों में कहा, परन्तु उसने किसी की नहीं सुनी, पंडित जी ने उसका फेवर कर वहुत वड़ा खतरा उठा लिया है।"

२३ अक्तूबर, १९६२ : "पंडित जी के भाषण से लोगों में निराशा है। वाजार में शेयरों के भाव वहुत तेजी से टूटे, तरह-तरह की अफवाहें आ रही हैं।"

२४ अक्तूबर, १९६२ : "सारे दिन लड़ाई की चर्चा कि क्यूवा में अमरीका और रूस तथा हिमालय में भारत तथा चीन लड़ रहे हैं, परन्तु रूस और अमरीका तो आपस में नहीं लड़ रहे हैं, मुझे तो दिखावा लगता है। चीन ने तो हमारे ऊपर धावा वोल दिया है। दुनिया में कमजोर रहना अपराध है। वाजार में वहुत घट-वढ़ है। मन में अशान्ति है। पंडित जी के साथ-साथ सारे कांग्रेसी नेता, एम० पी० वगैरह भी नेफा काण्ड के लिए जिम्मेदार ठहराये जाएँगे। मन में दुख-सा हो रहा है।"

२५ अक्तूबर, १९६२ : "सुबह के० एल० ढाँढनिया के यहाँ गया, और लोग भी थे। ड्राफ्ट बनाया कि दीवाली पर रोशनी वगैरह न की जाए। पंडित जी की अपील है। मन में अपने को दोषी पाता हूँ, देश के लिए कुछ करने का मन हो रहा है, हमारे बहुत से जवान मरे और घायल हुए बताते हैं। हाथ में मामूली हथियार, बदन पर जरूरत के गरम कपड़े तक नहीं, ठंड में हाथ-पर की उँगलियाँ गल गयीं।"

२६ अक्तूबर, १९६२ : "सुबह अखबारों में देखा, हुएनसाँग चला गया। चीन की सेना बाढ़ की तरह आ रही है। आसाम पर खतरा उतरने से पाकिस्तान भी झमेला जरूर खड़ा कर देगा, मन में दुःख होता है। अपना देश हारता जा रहा है। हमारे जवानों की जान हमारी लापरवाही से जा रही है। कल जो स्टेटमेंट मैंने दिया था, वह अखबारों में आया।"

२७ अक्तूबर, १९६२ : "हम लोगों ने वार-फण्ड में एक लाख रुपया देने का तय किया। पिता जी को भी जँच गया।"

३ नवम्बर, १९६२ : "लड़ाई की हालत अच्छी नहीं है। नेफा के कमाण्डर कौल तो ११ तारीख को ही दिल्ली आ गये थे। उन्होंने पंडित जी और मेनन को बता दिया था कि चीन की घुसपैठ हो चुकी है और उन्हें दबाना बूते के बाहर है। इस बीच मैंने अखबारों में कई लेख भेजे और पत्र भी संसद् के अपने मित्रों को लिखे हैं। देखें क्या होता है। लद्दाख में हमारी सेना ने चीनियों को बढ़ने नहीं दिया। कौल को फिर से नेफा कमान पर भेजा गया है।"

६ नवम्बर, १९६२ : "सारे दिन मेनन के बारे में लोगों में चर्चा रही, ऐसा लगता है, पार्टी के सदस्य और संसद् सदस्यों को पछतावा है।"

७ नवम्बर, १९६२ : "शाम को पार्टी मीटिंग में पंडित जी ने मेनन को हटा दिया। एक प्रकार से मजबूर थे, मेनन के हटने से सबको खुशी हुई।"

८ नवम्बर, १९६२ : "कल पार्टी मीटिंग में पंडित जी ने मेनन को छोड़ देने को कह दिया। मेरा भी इसमें हाथ रहा। मुझे सन्तोष है। शायद पंडित जी नाखुश होंगे।"

२० नवम्बर, १९६२ : "दिन में लड़ाई के बारे में खबरें सुनता रहा। मन खिन्न हो रहा है, दुनियावाले हम लोगों पर हँसते होंगे। ४ बजे नेहरू जी से मिला। और भी लोग थे। रात में महावीर त्यागी आये। नेफा के मामले से वे बहुत चिन्तित थे।"

२१ नवम्बर, १९६२ : "सुबह उठते ही अखबारों में देखा कि चीन ने "सीज़ फायर" कर दिया है, दिन में नेहरू जी का स्टेटमेंट सुना, कुछ दम नहीं था। दुनिया ने देख लिया, हमारी विदेश नीति कितनी कमजोर है और विदेशों में हमारा कितना प्रभाव है। पार्लियामेंट में डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ऐसा कोई जोरदार विरोध करने वाला होता तो पंडित जी सम्हले रहते और देश का भला होता। लोहिया जी बोलते हैं, परन्तु उनकी चोट पंडित जी पर व्यक्तिगत रहती है। चीन को जो करना था कर दिया, ज़मीन तो हड़प ली।"

अब ये इतिहास की बातें हैं, किन्तु इनका महत्त्व यह है कि ये बातें टाँटिया जी के समान कांग्रेसी संसद् सदस्य ने अपनी निजी डायरी में लिखी हैं, जो प्रकाशन के लिए नहीं लिखी जाती थी। इन प्रविष्टियों से मालूम होता है कि टाँटिया जी कितने देशभक्त थे, उन्हें देश का कितना दर्द था और उनकी दृष्टि कितनी स्पष्ट थी, नेहरू जी के अनुयायी होते हुए भी वे देश के हित में उनको जिन बातों को उचित नहीं समझते थे, उन्हें अन्ध-भक्ति के कारण सही नहीं मान लेते थे। अनुशासन में रहते हुए वैधानिक रूप से उन बातों का खुल कर विरोध भी करते थे, जैसा कि पार्टी में उन्होंने कृष्णमेनन का किया।

जैसा कि मैं कह चुका हूँ, यह डायरी मूलतः व्यक्तिगत है। इसमें सार्वजनिक घटनाओं और बातों को बहुत कम स्थान मिला है। फिर भी उपर्युक्त प्रकार की बातें यत्रतत्र बिखरी हुई मिलती हैं, जिनसे टाँटिया जी की कुशाग्र बुद्धि, देश-भक्ति और दूरदर्शिता का प्रमाण मिलता है।

इस डायरी को सम्पादित करा कर उनके सुपुत्र और परम स्नेहभाजन पुत्र श्री नंदलाल जी ने प्रकाशित कर पितृ-ऋण का केवल आंशिक परिशोध किया है। जैसा कि श्री रामेश्वर जी टाँटिया ने स्वयं लिखा है, उनकी कामना अपने यशःशरीर को जीवित रखने की थी, यह डायरी वह काम कुछ ही सीमा तक कर सकती है। मेरा उनका साहित्यिक परिचय और सम्बन्ध था। अनेक अवसरों पर मुझसे उनसे साहित्यिक विषयों, साहित्य की आवश्यकताओं और उनके लेखन तथा इसकी शैली में काफी चर्चा हुई। इस डायरी का प्रकाशन स्वागत करने योग्य है; किन्तु उनकी आत्मा के सन्तोष और शान्ति के लिए कुछ ऐसा स्थायी महत्त्व का साहित्यिक कार्य किया जाए, जो उनके यशःशरीर को जीवित रखे: "कीर्तिर्यस्य स जीवति"। मैं आशा करता हूँ कि उनके सुपुत्र इसी डायरी को प्रकाशित कर अपने कर्तव्य की इतिश्री न समझ लेंगे।

श्री रामेश्वर जी टाँटिया से मेरे मधुर सम्बन्ध थे। मैं उनके निस्पृह साहित्य प्रेम और हिन्दी साहित्य के उन्नयन की अभिलाषा का हृदय से आदर करता था। उनके प्रति अपनी भावना और सम्मान को व्यक्त करने के लिए अस्वस्थ होते हुए भी मैं यह भूमिका लिखने को राजी हो गया, और मुझे प्रसन्नता है कि इस प्रकार मैं अपने दिवंगत आदरणीय मित्र के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर पा सका।

९ मार्च, १९८१ —श्रीनारायण चतुर्वेदी
५२, खुर्शेदबाग, लखनऊ

यह रचना

रामेश्वर टांटिया से मेरा सम्पर्क सन् बयालीस के आन्दोलन के अन्तिम चरण में आन्दोलन के कार्यक्रम के सिलसिले में कलकत्ता जाने और रहने के समय हुआ। उसके बाद से यह सम्बन्ध निकटतर होता गया। बढ़ता गया।

रामेश्वर जी एक सफल व्यवसायी और उद्योगपति थे। राजनीति के क्षेत्र में भी वे सेवा की भावना से आये और उन्हें सुयश मिला। वे सहृदय थे। साहित्यिक सहृदय होता है। रामेश्वर जी की रचनाओं में उनका हृदय बोलता है। इस कारण वे अपनी साहित्यिक रचनाओं के लिए सर्वाधिक याद किये जाते हैं। मन को छू जाने वाली शैली और सरल शब्दों में बात कहने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। लेखक रामेश्वर टांटिया को जितने लोग जानते थे, उतने उन्हें लोक सभा के सदस्य अथवा व्यापारी उद्योगपति के रूप में नहीं जानते।

साधारणतः व्यवसायी और राजनीतिक साहित्य से दूर हटते जाते हैं; कुछ तो परिस्थितियोंवश समयाभाव के कारण और कुछ रुचि परिवर्तन के कारण। रामेश्वर जी में ऐसा नहीं देखा गया। ज्यों-ज्यों उनका कार्य क्षेत्र विस्तृत होता गया साहित्य के प्रति उनकी रुचि बढ़ती गयी। अध्ययनशील वे शुरू से रहे, काफी पढ़ते थे। हिन्दी, बंगला और अंग्रेजी की अच्छी जानकारी थी। विभिन्न भाषाओं के अनूदित साहित्य को भी पढ़ा करते थे। नई से नई पुस्तकें पढ़ डालते। रुचि के अनुकूल किताब लगी और मन में यह हुआ कि इसे और भी लोग पढ़ें तो उस पुस्तक की एकत्र प्रतियाँ खरीद कर मित्रों में बाँट देते।

डायरी वे नियमित रूप से लिखते थे। किन्तु इसकी जानकारी किसी को नहीं थी। शायद परिवार के कतिपय सदस्यों को छोड़कर बहुत कम ही लोग जानते हों कि वे जहाँ कहीं भी जाते, डायरी अवश्य साथ रखते और लिखते। घुमक्कड़ी और भुलक्कड़ी स्वभाव के थे ही। कभी-कभी इधर उधर रख देते। कई दिनों बाद जब मिल जाती तो याद्दाश्त से पिछले दिनों की बातें नोट करते।

रामेश्वर जी की डायरियों में उनकी सहृदयता प्रकट होती है, अत्यन्त सूक्ष्म रूप में। विवरण या वर्णन नहीं मिलते। बड़ी से बड़ी घटनाओं के बारे में उन्होंने बहुत ही कम लिखा है। हाँ, यात्रा सम्बन्धी विवरण अपेक्षाकृत बड़े अवश्य हैं। इस प्रकार उनकी डायरियाँ नोट्स के रूप में हैं, किन्तु इनमें बहुत सार है। अन्तर्द्वन्द्व, अपनी दुर्बलताओं

की स्वीकृति, उद्देश्य और लक्ष्य के लिए किये गये प्रयासों के अनेक उल्लेख हैं। किसी पर आक्षेप करना उनका स्वभाव नहीं था। व्यवसायी, सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्त्ता के रूप में वे वहुतों के सम्पर्क में आये। सहमति-असहमति का होना या रहना स्वाभाविक है किन्तु ऐसा लगता है कि उन्होंने कार्य और उसके परिणाम को अधिक महत्व दिया, अपनी भावनाओं को वड़ा नहीं समझा। सम्भवतः इसी कारण वे व्यक्ति की आलोचना के प्रति उदासीन रहे।

डायरियाँ व्यक्ति की मनोभावनाओं और अन्तर्मन की प्रतिक्रियाओं का सही परिचय प्रस्तुत करती हैं, वशर्ते कि ईमानदारी से लिखी गई हों। सन् १९४१ से १९७७ तक की डायरियाँ निःसन्देह एक विस्तृत काल खण्ड की हैं जिनमें समाज, राजनीति, अर्थ-व्यवस्था की तेजी से वदलती तस्वीरें मिलती हैं। मोती के दानों सी घटनाएँ अलग-अलग विखरी सी हैं, किन्तु सूत्र में पिरो देने पर वड़े काम की सावित हो सकती हैं। एक विशेषता यह भी है कि कुछ ऐसी वातें हैं जिनका उल्लेख अन्यत्र कहीं नहीं मिलता।

श्री टांटिया ने सन् १९३७ तक कठोर परिश्रम कर व्यवसाय के क्षेत्र में पैर जमाया और सन् १९४७ आते-आते आर्थिक कठिनाइयों के प्रति वे आश्वस्त हुए। वे व्यापार में समृद्ध हुए और समाज में प्रतिष्ठावान। वड़े लोगों से सम्पर्क वढ़ने लगा। समाज-सुधार और जनसेवा के कार्य में अधिकाधिक सक्रिय होने लगे। अनेक सामाजिक, शिक्षण और सेवा-संस्थाओं से जुड़ गये। कलकत्ते की मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के माध्यम से उन्होंने तन, मन, धन से जो सेवाएं अर्पित कीं उनका जिक्र डायरियों में नहीं मिलता। केवल कहीं कहीं उल्लेख भर है। हाँ, इसी दौरान राजस्थान में सूखा और अकाल के लिए राहत पहुँचाने के सन्दर्भ में उनके प्रयासों के कुछ विवरण मिल जाते हैं। इनके पढ़ने पर पता चलता है कि वे अखिल भारतीय स्तर के एवं राजस्थान के शीर्षस्थ राजनीतिज्ञों के सम्पर्क में आते गये। परिणाम यह रहा कि सन् १९५७ में वे लोकसभा के लिए सीकर निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हुए।

यहीं से उनके जीवन का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ जो सन् १९६७ तक चलता रहा। इन दस वर्षों में रामेश्वर जी दो वार लोकसभा के लिए सदस्य निर्वाचित हुए और कांग्रेस की संसदीय पार्टी के कोषाध्यक्ष के सम्मानित तथा दायित्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित रहे। सरकारी और गैर-सरकारी कई आयोगों और समितियों के सदस्य भी वनाये गये। इन वर्षों की डायरियों में उनके अन्तर्द्वन्द्व की जो रेखाएँ मिलती हैं, उनसे स्पष्ट हो जाता है कि देश की राजनीति के अन्तःपुर का जो रूप उन्होंने देखा उससे उन्हें वड़ी निराशा हुई। सन् १९६७ के चुनाव में भारत के नौ राज्यों में कांग्रेस की हार जनता के असन्तोष एवं आक्रोश की एक प्रतिक्रिया थी। कांग्रेस की राजनीति राष्ट्र कल्याण से हटकर दलगत स्वार्थों में सिमटने लगी और फलस्वरूप श्री टांटिया इस चुनाव में

निर्वाचित नहीं हो सके। उन्हें राज्यसभा अथवा लोकसभा के लिए उपचुनाव में खड़े होने के प्रस्ताव मिले किन्तु उन्होंने समय की गति देखते हुए सक्रिय राजनीति से पृथक् रहना ही उचित समझा।

सन् १९६७ से १९७७ ई० तक का समय उनके जीवन का अन्तिम अध्याय है। दिल्ली की राजनीति ने उनके मन में वितृष्णा उत्पन्न कर दी थी। उनके लिए समाज-सेवा ही समाज-कल्याण का सशक्त माध्यम था। लोकनायक जयप्रकाश नारायण तथा राम-मनोहर लोहिया आदि वरिष्ठ नेताओं के सान्निध्य और सम्पर्क में सन् १९४० से रहने के कारण उनका दृष्टिकोण स्वस्थ समाजवादी था। उनकी राजनीति दलवन्दी की पैंतरेवाजी नहीं थी। संसद सदस्य चुने जाने पर उन्हें आशा थी कि जहाँ से वे निर्वाचित हुए, जिन्होंने उन्हें अपना प्रतिनिधि चुना, कम से कम उनके प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकेंगे। किन्तु दिल्ली की राजनीति मरीचिका-सी लगी और वे उससे जो हटे तो फिर कभी उधर नहीं मुड़े। उन्होंने भ्रमण, अध्ययन और लेखन पर अपने को केन्द्रित करना शुरू कर दिया। इन्हीं दिनों उन्होंने 'मेरा वचपन, मेरा गाँव' नाम से शैशव से किशोरावस्था तक के अपने भावभीने संस्मरण लिख डाले।

किन्तु अध्ययन और लेखन में वाधा पड़ ही गयी। उत्तर प्रदेश के और देश के विशाल उद्योग-समूह व्रिटिश इंडिया कॉरपोरेशन, कानपुर में चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर नियुक्त हुए। भारत का यह एक वृहत् औद्योगिक संस्थान है। इसके अन्तर्गत सूती, ऊनी तथा चीनी मिलें हैं और चमड़े का तथा इंजीनियरिंग उद्योग भी। उन दिनों अव्यवस्था के कारण इस संस्थान की दुरवस्था थी, काफी नुक्सान लगता जा रहा था। श्री टांटिया ने अपनी सूझ-वूझ और व्यापार-कौशल से इसे डूवने से वचा लिया और संचालन-प्रवन्ध को व्यवस्थित कर दिया।

रामेश्वर जी आत्मनिष्ठ उद्योगपति नहीं थे। वे सही अर्थों में समाज-सेवी थे और जन-जन में उनके सुख-दुख के वीच रहना चाहते थे। इसीलिए कानपुर में वी० आई० सी० का कार्यभार सम्हालने पर उन्हें स्थानीय नागरिक एवं स्नेही-जनों के आग्रह से कानपुर के नगर प्रमुख (मेयर) का गुरुतर भार सम्हालना पड़ा। यह दोहरी जिम्मेदारी अनेक समस्याओं से पूर्ण थी। चिन्ता, दौड़-भाग से मन और शरीर पर प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक था। डायरियों को पढ़ने पर आश्चर्य होता है कि वे कैसे इन सवके वीच डटे रहे, यद्यपि स्वास्थ्य गिरता जा रहा था।

रक्तचाप नियन्त्रण के वाहर होने लगा। परिवार और मित्रों की चिन्ता के आगे उन्हें झुकना पड़ा। शरीर भी साथ देने से मुकरने लगा और वे कानपुर छोड़ने के लिए वाध्य हुए।

कानपुर प्रवास में ही श्री टांटिया ने अपने जीवन के दूसरे अध्याय के संस्मरण 'मेरा

संघर्ष, मेरा कलकत्ता' लिखना शुरू कर दिया था। किन्तु समयाभाव और भाग-दौड़ के कारण सन् १९७१ तक बहुत ही कम लिख पाये। कानपुर छोड़ने के बाद उनका स्वास्थ्य क्रमशः टूटता ही गया। फिर भी वे लिखते रहे, नहीं लिख पाते थे तो अजीब सी बेचैनी महसूस करते थे। बार-बार इस परेशानी का हवाला उन्होंने डायरियों में दिया है। इस बीच स्फुट लेख और लघु कथाएँ वे लिखते रहे। सन् १९७६ में जब उनका स्वास्थ्य काफी गिर चुका था तब भी उन्होंने 'मेरा संघर्ष, मेरा कलकत्ता' पूरा कर ही डाला।

रामेश्वर जी की इच्छा थी कि अपने राजनीतिक जीवन के भी संस्मरण लिख डालूं। नाम भी सोच लिया था 'मेरी राजनीति, मेरी दिल्ली' पर विधि को स्वीकार न हुआ। अप्रैल सन् १९७७ से वे लगभग अशक्त हो गये और उनकी इच्छा की पूर्ति नहीं हो सकी। अब तो उनकी राजनीति और दिल्ली की कुछ झांकी डायरियों के पन्नों में मिल सकती है जो अपने ढंग की निराली है।

टांटिया जी जीवन के विविध क्षेत्रों से गुजरे, अत्यन्त साधारण अवस्था से जीवन आरम्भ कर सम्पन्न बने, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में नगण्य से गण्य-मान्य हुए। कहा जा सकता है कि उनका जीवन सफल रहा। देखने से लगता है कि उन्होंने जो चाहा, वह पाया। किन्तु डायरियाँ ही बता सकती हैं, रामेश्वर जी ने क्या चाहा, क्या चाहते रहे। इन्हीं में उनका वास्तविक स्वरूप और व्यक्तित्व उभरा है। सब कुछ पाकर भी उस व्यक्ति का अन्तर्मन बराबर यही कहता है कि वह खोता जा रहा है। निजी भौतिक समृद्धि उसका लक्ष्य नहीं था, वह सबको सुखी देखना चाहता था। समृद्धि के बीच वह दीन-सा रहता था ताकि उसे लोग अपने में से एक समझें, निकट अनुभव करें और बीच में कोई अन्तराल न रहे। फिर भी भौतिक उपलब्धियों को अर्जित करने में क्यों लगे रहे? 'क्या खोया क्या पाया' में यह प्रकट है कि मनुष्य जन्मजात संस्कारों और परिस्थितियों से प्रेरित होता रहता है। जाग्रत विवेक मानव अन्तर्मुख हो कर जब स्वयं को पहचानने की कोशिश करता है तब उसे भौतिक उपलब्धियाँ निःसार लगती हैं। फिर भी सांसारिक मनुष्य संसार से मुँह मोड़ नहीं पाता। परिस्थिति, परिवेश, परिजन, परिवार, इन सबके प्रभाव से वह मुक्त नहीं हो पाता। अन्तरात्मा की आवाज सुनते हुए भी वह भटकने के लिए विवश रहता है। इस भटकन से जो बच निकलता है, वह महामानव बनता है। टांटिया जी न महामानव थे, न योगी या संन्यासी। हाँ, योग और भोग के तत्व को उन्होंने समझा, यह उपलब्धियाँ कम नहीं। इनकी क्या प्रतिक्रियाएँ होती रहीं, डायरियाँ बताती हैं।

एक विशेषता टांटिया जी की डायरियों में देखने में आयी कि उनके अनुमान अवसर सही उतरते। देश की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक अवस्था के बारे में उनके अनुमान आज भी सही साबित होते जा रहे हैं। व्यापार में भी उनके अनुमान सही उतरते,

शायद उनकी पैनी सूझ बूझ के कारण उन्हें सफलता मिलती रही। बस एक क्षेत्र फाटका ही ऐसा था कि सही सोचने पर भी गलत हो जाते, घाटा उठाते। इसके लिए अपने स्वभाव की अधीरता और जल्दीबाजी को उन्होंने कारण बताते हुए अपनी दुर्बलता को स्वीकारा है। साथ ही, अपनी मानसिक एवं शारीरिक अस्वस्थता के लिए भी इसी को कारण माना है।

जीवन को समझने की उनकी जिज्ञासा अन्त तक बनी रही। उपलब्धियों का अनुशीलन और विश्लेषण शेष तक चलता रहा। हमेशा वे विचारते कि मैंने क्या खोया, क्या पाया, क्या खोना चाहिए था और क्या पाना चाहिए था। अपनी यही अनुभूतियाँ और उपलब्धियाँ डायरियों में उन्होंने लिखीं, इनसे निःसन्देह प्रेरणा मिलती है।

डायरियों की भाषा, शैली और घटनाएँ यथावत् हैं। भाषा में कहीं-कहीं राजस्थानी विधा है, किन्तु इससे प्रवाह में बाधा नहीं आती बल्कि लेखक का निजी व्यक्तित्व उभरता है। शुरू के वर्षों की तुलना में बाद के वर्षों की भाषा मँजी हुई लगती है, यह स्वाभाविक है। डायरियों को किंचित् सावधानी एवं सूक्ष्म दृष्टि एवं रुचि के साथ पढ़ने पर एक साधारण संघर्षशील व्यक्ति की असाधारण निष्ठा, क्षमता, ममता एवं अध्यवसाय का परिचय मिल सकता है।

अच्छा होता यदि इन डायरियों की जानकारी उनके जीवनकाल में हो जाती। किन्तु डायरियों का जिक्र उन्होंने कभी किया नहीं। श्री टांटिया के देहान्त के बाद पता चला कि सन् १९४१ से १९७७ तक की प्रायः सब डायरियाँ हैं। इसके पहले की भी रही होंगी क्योंकि सन् १९३२ की भी डायरी मिली और बाकी कहाँ हैं, इसका पता नहीं चला। इस बीच श्री टांटिया के मित्रों ने उनकी स्मृति में एक ग्रन्थ प्रकाशन का निर्णय ले लिया था किन्तु डायरियों का पता चलते ही और उन्हें पढ़ने पर बिखरे मोती मिले जिन्हें एक सूत्र में पिरो देने को प्राथमिकता देना आवश्यक समझा गया। उनके सुपुत्र श्री नन्दलाल टांटिया ने प्रकाशन में दिलचस्पी ली और तत्परता दिखलाई।

श्री बालकृष्ण गर्ग, टांटियाजी के जीवन काल से ही उनकी रचनाओं की प्रेस कापी तैयार करते थे और उनका मुद्रण, प्रकाशन कराते थे। रामेश्वरजी के निधन के बाद भी उसी लगन के साथ इन डायरियों का संकलन, सम्पादन और प्रेस कापी तैयार करने में लगे रहे। उनके अटूट श्रम और निष्ठा के बिना ये 'डायरियाँ' इस रूप में प्रस्तुत नहीं हो पातीं। इसके लिए वह धन्यवाद के पात्र हैं।

आदरणीय रायकृष्ण दास, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, श्री भागीरथ कानोडिया, श्री सीताराम सेकसरिया, श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिहका, श्री कन्हैयालाल सेठिया तथा श्री नथमल केडिया ने डायरी के प्रकाशन के लिए श्री नंदलाल टांटिया को उत्साहित किया और प्रेरणा दी है। सम्पादन कार्य में श्री विश्वनाथ मुखर्जी, वाराणसी के प्रमुख नागरिक

और साहित्यिक, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी के साहित्य सहायक श्री लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी' ने अथक परिश्रम किया। विश्वविद्यालय प्रकाशन के श्री पुरुषोत्तमदास मोदी ने व्यस्त रहते हुए भी प्रकाशन की सारी जिम्मेदारी सम्हाली अन्यथा इसका मुद्रण शायद ही सम्भव हो पाता। इस सन्दर्भ में सम्मेलन मुद्रणालय एवं विशेषतः श्री शिवनारायण झा भी धन्यवाद के पात्र हैं कि विविध बाधाओं के बावजूद उन्होंने 'क्या खोया, क्या पाया ?' के मुद्रण में सहयोग दिया।

हिन्दी में डायरी साहित्य कम ही है। जो मिलता है, उसमें 'क्या खोया, क्या पाया ?' सम्भवतः अलग ढंग का है। शायद यह भी रामेश्वर जी की 'दिनचर्या के संस्मरण' के रूप में लोकप्रिय हो सकेगा।

वसन्तपंचमी, २०३७ वि०
राजेन्द्र नगर, पटना।

⊙

प्रकाशकीय

आज कलकत्ता में ६०-७० वर्ष पूर्व राजस्थान से आये कितने ही राजस्थानी देश के प्रमुख उद्योग तथा व्यवसाय सफलतापूर्वक चला रहे हैं। इस स्थिति तक पहुँचने के लिए उन्हें क्या-क्या संघर्ष करने पड़े, उसकी कहानी कभी आप सुनें तो आँखें सजल हो उठेंगी और उनकी कर्मठता, निष्ठा और संघर्ष की अपूर्व क्षमता के सम्मुख आप नतमस्तक हो जाएंगे। वे उस समय आये जब यातायात तथा यात्रा की सुगम व्यवस्था नहीं थी, उद्योग और व्यापार भी अंग्रेजों के हाथ में था। स्वतन्त्रता के बाद अंग्रेजों से उन्होंने उनके उद्योग तथा व्यापार कैसे हस्तगत किये इस संघर्ष कथा पर कितने ही उपन्यास लिखे जा सकते हैं और उन्हें लिखकर शरत् बना जा सकता है। श्री रामेश्वर जी टांटिया जिन्होंने १४ वर्ष की अल्प आयु में रोजी-रोटी कमाने के लिए राजस्थान छोड़ा था, उनके संघर्ष और सफलता की कहानी कितनी प्रेरणास्पद है, यह पढ़कर ही जाना जा सकता है।

टांटिया जी व्यवसायी के साथ-साथ सहृदय व्यक्ति थे। उन्होंने अपने व्यवसाय के अतिरिक्त अपने जीवन का लेखा-जोखा भी पूरी ईमानदारी के साथ रखा। जीवन में जिन व्यक्तियों और घटनाओं से उनका सम्पर्क हुआ और उनके मन पर जो प्रतिक्रिया हुई, उसे पूरी निष्ठा के साथ उन्होंने अपनी डायरी में अंकित किया है।

'क्या खोया, क्या पाया ?' यह टांटिया जी के सामाजिक, राजनीतिक और व्यावसायिक जीवन की मर्मस्पर्शी स्मृतियाँ हैं, जो देश का, समाज का इतिहास प्रस्तुत करती हैं।

आज इसे प्रकाशित करते हुए टांटिया जी का प्रथम दर्शन स्मरण हो आता है। अत्यन्त साधारण वेश-भूषा में मोटी खादी के कुरते में टाट का झोला लिये एक व्यक्ति मेरे कार्यालय में आ कर खड़ा होता है और कहता है "मैं रामेश्वर टांटिया।" मैं अपनी कुर्सी से घबरा कर खड़ा हो जाता हूँ और अवाक् सा उन्हें देखता रह जाता हूँ। विश्वास नहीं कर पाता, क्या यही श्री रामेश्वर जी टांटिया हैं—बी० आई० सी० के मैनेजिंग डाइरेक्टर, विश्वयात्रा के संस्मरण के लेखक!

कितना सरल व्यक्तित्व था उनका, आज जब स्मरण करता हूँ, मस्तक नत हो जाता है। उनकी यह डायरी प्रकाशित कर हम गौरव का अनुभव कर रहे हैं।

यह डायरी निश्चय ही पाठकों को प्रेरणा प्रदान करेगी।

विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी
२६ जनवरी, १९८१

पुरुषोत्तमदास मोदी

१८ अप्रैल, १९७७ की डायरी का एक पृष्ठ

मैदान नही गया। सुस्ती वहुत थी। तेल मालिश अखवार पढ़ा। गर्ग देर तक नहीं आया। सोता रहा। मन में नाना तरह के खराब विचार आते हैं। मृत्यु का अब मुझे डर नहीं है। भागीरथ जी के घर गया। १ घंटा था।



क्या खोया,
क्या पाया ?



क्या खोया, क्या पाया ?

१९३२ ई०

कलकत्ता

१ जनवरी : आज नया दिन है। सुबह मैदान गया, उधर परेड देखी। ९ बजे गद्दी लौटा। फिर खाना वगैरह खाकर एक्सचेंज गया। उधर सब बन्द था। उधर से गद्दी आया। कुछ खास काम नहीं हुआ। ५ बजे घर आ गया। पिता जी वगैरह कल जायेंगे। महात्मा जी विलायत से आ गये हैं।

२ जनवरी : सुबह मैदान नहीं गया। दीपचन्द आया था। ऑफिस गया था। २ बजे गद्दी आ गया। उधर ४ बजे तक रहा। भाव ३८।।।) बंद होकर ३७।।।) रहा। हम लोगों के कुछ भी नहीं है। रात में स्टेशन गया। पिता जी वगैरह चले गये। १० बजे घर आकर सोया।

३ जनवरी : सुबह ६ बजे उठ कर मैदान गया फिर ८ बजे गद्दी आया। दिन में डालमिया के इधर और दूसरी जगह गया। बाजार सुना जाता है, मंदा है। नेहरू जी तथा अब्दुल गफ्फार पकड़े गये। आन्दोलन फिर जोर से शरू हो गया है, देखें, क्या होता है। दमन बहुत जोर से चलता है। आर्डिनंस जारी हो गये हैं।

४ जनवरी : सुबह ६ बजे उठकर मैदान गया। महात्मा जी पकड़े गए, पटेल भी। बाजार बंद थे। फाटका ३७) से ३९) रहा। कामकाज कुछ नहीं हुआ। किंग साहब आ गया। भाई जी दौलतराम जी जसीडीह में गिर गये, चोट आयी है।

५ जनवरी : सुबह ५ बजे उठा ईश्वर का नाम लिया। मैदान गया। आज से कसरत शुरू की। दिन में २५० गांठ कटिंग का काम किया। शाम को 'शकुन्तला' सिनेमा में गया। बोरे का कुछ काम काज नहीं हुआ। चित्त प्रसन्न है। आन्दोलन बहुत जोर है। राजेन्द्र बाबू, वसंत लाल जी आदि सब पकड़े गये। भाव ३७)-३४) है।

६ जनवरी : सुबह ५।। बजे उठा, ईश्वर का नाम लिया फिर मैदान गया। उधर से ८ बजे लौटा। बाजार समान है, फाटका ३८)-३९) के बीच में खेलता रहा। कामकाज कुछ नहीं है। बाड़े में भी काम कमती है। विशेष, आजकल कामकाज नहीं कर सकता।

७ जनवरी : भाव ३९) से ४०) बंद हुआ। हम लोगों के कुछ कामकाज नहीं हुआ। भाई जी आज जसीडीह चले गये। दौलतराम जी के चोट वेसी है। सुवह मैदान वेसी दूर नहीं गया था। कसरत एक की थी। दिन में चित्त वहुत खिन्न था।

८ जनवरी : वाजार ४०।।=) खुलकर ४१=) विका, वन्द ४०) हुआ। मैंने २७५० गांठ का काम किया। दिन में चित्त ठीक ही था। वाड़े में २००) दलाली के हुए। मानव वावू के वुखार है। हम लोगों के पोते–मत्थे कुछ नहीं है। आन्दोलन कलकत्ते में धीमा है। सुवह मैदान नहीं जा सका।

९ जनवरी : वाजार स्टेडी, फाटका ४०) से ४१) वंद हुआ। दिन में कामकाज विशेष नहीं रहा। २५० गांठ कटिंग का २२।-)।।। में किया।

१० जनवरी : सुवह कहीं नहीं गया। गद्दी गया, उधर से भोजन कर दोपहर में किताव पढ़ता रहा। २ वजे सिनेमा 'थर्ड वाइफ' में गया। ५ वजे लौट कर वंशीधर जी जालान से मिलने गया। उनका ध्यान वाजार पर तेज है।

११ जनवरी : सुवह खून वहुत आता था। ६ वजे मैदान गया। ९ वजे खाना खाकर एक्सचेंज गया। ५०० गांठ मार्च का सट्टा किया। २५० सल्टा लिया। ५०० गांठ कटिंग का २२।।=) में काम किया।

१२ जनवरी : सुवह भाई जी आ गए। दौलतराम जी की तवीयत ठीक है। फाटका ३९।।।) रहा। कामकाज विशेष नहीं था। ३५० गांठ कटिंग का काम किया २३)।

२० जनवरी : १० वजे एक्सचेंज गया। फाटका ३९।=) से ३७।।-) रहा। आन्दोलन का जोर पूरा है। वाजार इसी वास्ते घटा है।

२१ जनवरी : सुवह ५ वजे उठा। शीर्षासन किया। खून वरावर आ रहा है। इस वास्ते मन खिन्न रहता है। २५० गांठ जून का काम किया ३९।।।) में।

२२ जनवरी : सुवह ५:३० वजे भाई जी दौलतराम जी स्टेशन से आए। उनकी तवियत खराव है। पैर टूट गया है। हम लोग १० वजे तक अस्पताल में ही थे। उधर से एक्सचेंज गए। पार्टियों का काम काज सल्टाया। लालचन्द के काम में गलती रह गयी, झगड़ा पड़ गया। रात में अस्पताल नहीं जा सका।

२४ जनवरी : खून आता है। च्यवनप्राश खाया। तवीयत अस्वस्थ थी।

२५ जनवरी : सुवह रिलायन्स मिल में गया। वाजार मंदा है, ३८) से ३६।।।) रहा। हम लोगों के ५०० पोतें हैं।

२६ जनवरी : सुवह खून नहीं आया। द्राक्षासव, च्यवनप्राश रोज लेता हूँ। दूध भी लेता हूँ। २५० गांठ फिर ३५।।) में फरवरी के पोते किया है। भाव ३५।।) खुल कर ३६।।) विक कर ३७) रहा। अस्पताल नहीं जा सका।

२७ जनवरी : सुवह ५।। वजे उठकर क्लाइव मिल में गया। उधर से ७ वजे लौट

कर रामनाथ के पास फिर गद्दी आया। बाजार मंदा था, भाव ३८।।।) से ३६=) रहा। ध्यान मंदा ही है। बाजार तेजी होने से फायदा है।

३० जनवरी : आजकल बीच-बीच में खाना नहीं खाता हूँ। कल और आज खाना नहीं खाया। दूध २ सेर पीता हूँ। दिन में कामकाज कुछ नहीं किया। दिन में २ बजे से ५ बजे तक अस्पताल में था। किताब पढ़ता रहा। शाम को ५ बजे कालीघाट गया। वजन १० स्टोन ८ पाउन्ड है।

४ फरवरी : खाना कभी-कभी बासे में खा लेता हूँ। च्यवनप्राश और दूध नियमित लेता हूँ। एक्सचेंज गया था, उधर से रंगमहल में नया तमाशा देखा। मैंने एक मेडल दिया।

७ फरवरी : तबियत विशेष ठीक नहीं रहती है। फाटका ३६=) सुना था। रुपयों की चिन्ता लगी रहती है।

८ फरवरी : सुबह ६ बजे उठा, ८ बजे जहाज में पहुँचा। गंगा जी में पिकनिक पार्टी थी। उधर खाना खाया। ३ बजे डायमंड हार्बर पहुँचे। सतनारायण डालमिया साथ में था। तबियत प्रसन्न रही। देश की चिट्ठी थी। वाइफ की कोई चिट्ठी कभी नहीं आती।

११ फरवरी : मोटर निकालकर फुटबोर्ड बदलाने को देकर आया। उधर से ८ बजे गद्दी आकर स्नान वगैरह कर एक्सचेंज गया। फाटका ३४।=) है।

१२ फरवरी : सुबह बाजार बहुत मजबूत था। फाटका ३४।।) । मैंने ५०० ३४।=) में पोते कर ली। २५० पक्की पोते ३३।।) में कर ली। बाजार एकदम से घट गया। तबियत खराब हो गयी। एक साथ मुझे इतना काम नहीं करना चाहिए था। १०००) नुकसान के आ गए। अब ये रुपये कहां से आयेंगे? यह विचार करने की बात है।

१५ फरवरी : सुबह ७ बजे उठा। तबीयत खिन्न थी, चिन्ता से चेहरा सुस्त था। रुपयों का कुछ बन्दोबस्त नहीं हुआ। दिन में ५०० गांठ मार्च का ३३।=) में बेचा जो ३३।।=) में वापस लिया। सत्यनारायण का विवाह।

१८ फरवरी : सुबह क्लाइव मिल में गया। तबीयत एकदम अस्वस्थ रहती है। लक्षण भी खराब है, रुपये की भी तंगी है पर कर क्या सकता हूँ? चारों तरफ घाटा ही है। ईश्वर का ही सहारा है, प्रभु रक्षा करें। शाम को भोजन कर के लेट गया था।

२० फरवरी : सुबह ६ बजे उठा। गद्दी गया। बारिश थी। बाजार में भोजन कर के गया। फाटका ३६।) खुल कर के ३५=) बिक कर।=) आना रहा। मैंने १७५० गांठ में ७५० ले ली। १००० और बाकी है। चित्त आज जरा ठीक है। शाम को।=) बजे सिनेमा गया, 'घूंघटवाली' में। आज २५०० गांठ का काम हुआ। ॐ शान्तिः।

२३ फरवरी : रुपये की टान से तबीयत खिन्न रहती है। सुबह चेक दिया पर रुपया उतना बैंक में नहीं था। दिन में कामकाज में कुछ भी मन नहीं लगा। बाकी रुपया लोग

नहीं देते, रुपयों की टान वनी रहती है। मोटर दिखाने फ्रेंच मोटर्स गया। फाटका ऊपर में ३६) नीचे में ३५) रहा।

७ मार्च : रात में फाटके का सपना आता रहा। सुवह रुपयों की टान वहुत रही। कामकाज सलटा रहा हूँ। वाजार समान रहा। कुछ सट्टा सलटा दिया। ३००) मिले। पहले ६००) लगे थे। देश का कागज नहीं था। भाई दौलतराम जी के पास कई दिनों से नहीं जा सका। मैदान रोज जाता हूँ। दीपचन्द के घर भोजन करता हूँ। वाइफ वरावर याद आती है।

१३ मार्च : सुवह इलाहावाद पहुँचा। रात ठीक नींद रही। खून थोड़ा आया था। तवियत विशेष खराव नहीं थी। खाना कुछ नहीं खाया। दस पन्द्रह सन्तरे खा लिए। आगरा पहुँचा, वाजार गया। फिर किला देखने गया।

जयपुर

१४ मार्च : सुवह ४ वजे जयपुर पहुँचा। ६ वजे वगीची आकर ८ वजे नब्ज दिखाई। परसों देखने को कहा है। तवीयत कुछ ठीक है। स्वामी जी को दिखाया हुआ है। शाम को भाई जी आए। उनसे ८ वजे तक वातचीत होती रही।

सरदारशहर

१६ मार्च : सुबह ४ वजे पहुँचा। तवीयत कुछ ठीक मालूम देती थी। सरदी विशेष नहीं है। दिन में ३ वजे उठा, किताव पढ़ता रहा। खून अत्यन्त थोड़ा आया था। शाम को ताल में घूमने गया था।

१७ मार्च : दवा नियम से लेता हूँ। दीपचन्द को कागज दिया, उसका भाई शाम को मिला था। यहाँ झूठ वोलने का काम तो कमती पड़ता है।

१९ मार्च : सुवह लाइब्रेरी गया। १२ वजे तक था। फिर २ वजे तक ताश खेली फिर लाइब्रेरी गया। पतंग उड़ाया। कलकत्ते का तार था, पाट का भाव ३७) हैं।

२२ मार्च : यहाँ आकर वजन वढ़ा है, यह अच्छा है। कलकत्ते का वड़ा फिकर का कागज आया है। सारे दिन तवीयत खिन्न रही। शाम को ४ वजे पतंग उड़ाया।

२३ मार्च : वजन १॥ऽ॥ कलकत्ते के माफिक ही है। तवियत खराव, खून आता है। दूध चार दफे, मक्खन भी दवाई के साथ। तवीयत खिन्न, मन खट्टा। नींद नहीं आती। 'घर और वाहर' किताव पढ़ी।

२५ मार्च : तवियत खराव, खून आया। 'अमृत और विष' के ५० पृष्ट पढ़े। मन नहीं लगता। वर्षा हुई, ठंढ पड़ती है। रतनी वगैरह की याद आती है। हिमकर जी वोले टी० वी० नहीं है। रक्तपित्त से खून आता है।

२७ मार्च : दादा जी कोरे वापिस आ गये, मैंने तो पहले ही कहा था। अपमान हुआ।

तबियत बहुत खराब, विचार आता है धर्मकुट वगैरह चला जाऊं। आज बहुत घबराहट है। पिता जी उदास हैं।

१ अप्रैल : दिन में लाइब्रेरी गया, किताब पढ़ने। वाइफ ३ तक आयगी। यहां रात में बड़ी जोर सर्दी पड़ती है। दवा नियमपूर्वक लेता हूँ। वाइफ के आने पर मन लग जायगा पर अभी तो उसका कुछ पता नहीं।

४ अप्रैल : रात भयानक स्वप्न देखा। कलकत्ते के दुखद समाचार हैं। कंधों में दरद मालूम दिया, कहीं घूमने नहीं गया।

१२ अप्रैल : सुबह उठकर साइकिल पर गया था। तबियत ठीक है, मन लग गया है। ये दिन आनन्द से कट गये। लाइब्रेरी बराबर जाता हूँ।

कलकत्ता

२३ जून : तालाब रोज जाता हूँ, तैरता भी खूब हूँ। बाजार मंदा, भाव २८) काम-काज बिल्कुल नहीं। रुपयों की बहुत टान है। किसी तरह १२००)- का बंदोबस्त हुआ। परमेश्वर लज्जा रखेंगे। मोटर १०००) में बिकने की बात है।

२७ जून : दिन में फाटका २८।) रहा। प्रेस की दलाली अभी तक ५०००) अन्दाज हुई है। मेरे आने के बाद १२००) पक्की गांठों की दलाली हुई है।

१८ सितम्बर : महात्मा जी परसों से अनशन करेंगे। बाजार ३२॥)-३३॥) रहा। भोजन करके रामनाथ की मोटर में कैनवेसिंग में घूम रहा था। वोट भी दस-पांच मिले। रामनाथ बहुत राजी है। ५-५॥ बजे तक खाली कैनवेसिंग में था। तबियत अभी एकदम ठीक नहीं हुई है। बुखार की कमजोरी बनी हुई है।

१९ सितम्बर : कल से महात्मा जी व्रत रखेंगे इसी वास्ते पाट का, हेसियन का सब बाजार बहुत मंदा है। कामकाज मिलों में थोड़ा। मेहताबचन्द सिपानी ने कल रविवार से काम छोड़ दिया। मैंने भी कुछ कामकाज नहीं किया। फाटका ३३।=) है। मेरे बाज़ार गरम जँचता है।

२० सितम्बर : आज हड़ताल है। महात्मा जी आज से व्रत शुरू करेंगे। मैंने भी पूर्ण व्रत रखा। रात में थोड़ा पानी पिया।

२२ सितम्बर : गाड़ी चुन्नीलाल अहीर को ११००) में बेच दी। तबियत ठीक रहती है। पाट पर मेरा ध्यान ५०) है। महात्मा जी के व्रत का तीसरा दिन है। ईश्वर उनकी रक्षा करें।

२४ सितम्बर : बाजार मंदा रहा। कामकाज कुछ नहीं हुआ, मिल में ५०) में काम हुआ। बिरला का ध्यान मंदा है।

१९४१ ई०

कलकत्ता

१ जनवरी : सुवह ६॥ वजे उठा। वुखार नहीं था। फोड़े में दर्द है। सत्यनारायण वगैरह डाली देने गये। करीव१५००) खर्च हुए। मैं दिन भर घर में रहा। वाजार ३९॥) है, हम लोगों के ३००० गांठ अंदाज मत्थे है। दिन में कितावें पढ़ता रहता हूँ। पिछले साल कामकाज वहुत अच्छी तरह चला। इन दिनों वीमारी से तवियत खिन्न है। टामस साहव कलकत्ते में हैं।

३ जनवरी : सुवह अखवार पढ़ता रहा। लड़ाई चल रही है। चीजों के भाव धीरे-धीरे वढ़ रहे हैं। ११ वजे डाक्टर आया। सुई देकर चला गया। कुछ फायदा नहीं हो रहा है। वुखार नहीं है पर घर में रहना पड़ता है, यह वेजा है। इधर का काम सलटाने की चेष्टा में हूँ। काम सलटाने पर वाहर चला जाऊंगा। मौलाना आजाद गिरफ्तार कर लिये गये। लगता है, गवर्नमेंट धीरे-धीरे सव नेताओं को वंद कर देगी।

४ जनवरी : सुवह अखवार पढ़े। टेलीफोन सुने। तवियत उसी तरह है, गांठ भी उसी माफक। आज दूसरे डाक्टर को दिखाने का विचार है। शाम को ६ वजे दीपचंद चांडक आया। ९। वजे तक था। मन लग गया।

६ जनवरी : दर्द उसी माफक है। दवाई लगाई। दिन में 'दत्ता' किताव शरद वावू की पढ़ता रहा। वहुत अच्छी लगी। काम-काज की तो विशेष फिक्र नहीं है, पर गाँठ की वहुत फिक्र है। जैसीडीह में कमरे खाली नहीं हैं। होता भी तो इतने दर्द में जा नहीं सकता।

७ जनवरी : भाई जी ने कहा, डाक्टर से अच्छी तरह इलाज कराओ। अव और क्या करूँ? जैसा कहता है, वैसा करता हूँ। फायदा फिर भी नहीं होता। काशीराम से पूछा। फिर वनमाली डाक्टर के यहाँ गया। वह नहीं मिला। उसका कंपाउंडर मिला। उसको दिखाया। वोला, गांठ वैठ जायगी। पट्टी वांधी। फिर घर आया।

जसीडीह

११ जनवरी : सुवह सव चीज-वस्तु ठीक की। ११ वजे स्टेशन पर आया। ५ वजे जसीडीह आ गया। भवन में आया। तवीयत खराव है, मन भी खिन्न है।

१२ जनवरी : डाक्टर को दिखाया। इधर आने से तवियत कुछ ठीक मालूम देती है। वजन १७४ पौंड है।

१५ जनवरी : आज गांठ में तीसी की पट्टी बांधी। दर्द उसी माफक है।

१६ जनवरी : अखवार पढ़ता हूँ। तास खेलता हूँ। दूध नहीं पिया, मट्ठा लिया। भाई जी का कागज आया। पाट का भाव ३९॥) है। थोड़ा कामकाज है। शाम को देखा, गाँठ में थोड़ा मुँह हो गया है। १२ रोज में फोड़ने का इलाज कर रहे हैं।

१७ जनवरी : मवाद वहुत निकला, दर्द उसी माफक है। सुवह भोजन नहीं किया। ६ वजे शाम को पट्टी वदली। मवाद वहुत निकलता है। रात में नींद ठीक नहीं आती।

२१ जनवरी : तवीयत सुस्त रहती है। यही हालत रही तो कलकत्ते जाना पड़ेगा। शाम को वैद्य जी आये, पट्टी वदल दी परंतु घाव उसी माफक है।

२७ जनवरी : सुवह से तेल मालिश कराया, वाल वगैरह छँटाये, स्नान किया, फिर कम्प्रेस किया। कागली लगायी। दिन में 'चरित्रहीन' पढ़ता रहा। मन लग गया।

२ फरवरी : सुवह वैद्य और डाक्टर दोनों आये। दर्द कमती था। घाव भी भर रहा है। डाक्टर ने गॉज दिया, घाव के भीतर सफाई की। कागली नहीं लगाई। छः-सात रोज में ठीक हो जायगा, कहा। रात में नींद अच्छी तरह आ गयी।

३ फरवरी : भाई जी का कागज आया कि कलकत्ते आना चाहिए। अखवार पढ़ता हूँ। सुभाष वावू के वारे में खवरें तरह-तरह की आती हैं। कांग्रेसी, गवर्नमेंट के खिलाफ लोगों को तैयार कर रहे हैं। अंग्रेजों का रुख कड़ा है।

८ फरवरी : सुवह कागली वदली। वैद्य जी को वुलाया। घाव उसी माफक था। परेशानी है। परमात्मा की यही मर्जी है। दिन में किताव पढ़ता रहा। भाई जी ५ वजे शाम को आये; वोले, कलकत्ते चले जाओ। यही विचार रहा। मेरा भी मन कलकत्ते जाने का हो गया है।

११ फरवरी : १ वजे वनमाली डाक्टर आया। हरचंदराय जी भी थे। उसने देखकर कहा, २० रोज लगेंगे। खैर, देखा जायगा।

१७ फरवरी : घाव धीरे-धीरे ठीक हो रहा है। दिन में आफिस गया। साहव लोग मिले। और भी वहुत से आदमी मिले। पाट की १००० गांठें लीं, ३३।=) भाव। गवर्नमेंट की इंटरफेयरेंस की वातें हैं पर विशेष कुछ होने को नहीं।

२० फरवरी : तवीयत ठीक है। ऑफिस नहीं गया। 'विशाल भारत' की फाइल पढ़ता रहा। हिंदी में 'सरस्वती' ने एक समय में अपना स्थान वनाया था, उसी तरह 'विशाल भारत' काम कर रहा है। वहुत अच्छा निकल रहा है। रात में रेडियो सुना। अंग्रेजों के लिये लड़ाई भारी पड़ती जान पड़ी।

२८ फरवरी : अंग्रेज-जर्मन की लड़ाई की चर्चा वाजार में होती है। गुप-चुप वहुत वातें फैल रही हैं, हिंदुस्तानी फौज वगावत करेगी, जर्मन वाले हिंदुस्तान को आजाद

करेंगे। मेरी धारणा है, चीजें कम मिलेंगी। अंग्रेज अपनी फौज के लिये सब तरह का जुगाड़ बैठायेंगे। भाव ऊंचे होंगे। पाट का भाव ३३॥=) है।

६ मार्च : अखबार पढ़ा। विरजू आ गया। ११ वजे ऑफिस गया। देश का कागज था। बापूजी बनारस आ गये, होली बाद बनारस जाऊंगा। हम लोगों के ५०,००० मन पाट तथा ५००० गांठ कटिंग पोते हैं।

७ मार्च : अखबार रोज पढ़ता हूँ। डेडराज जी आये थे। काशीपुर गया, बरानगर जूट प्रेस देखने। पाट का भाव कल मजबूत था। नारायण गंज टेलीफोन किया। मुझे लगता है, लड़ाई लम्बी चली तो अंग्रेजों को यहां कारखाने खोलने पड़ेंगे। उनके यहां बंबारी की खबरें हैं। समुद्र में जहाज डुबाने की बात भी आती है। यहाँ अंग्रेज कुछ भी घबराये नहीं लगते। गवर्नमेंट कड़ाई बढ़ा रही है। रूबी सिनेमा में 'पुर्नमिलन' देखने गया। किशोर साहू और स्नेहप्रभा प्रधान का पार्ट अच्छा लगा। गाने भी अच्छे थे। सामाजिक फिल्म है।

९ मार्च : सुबह ११.बजे डेडराजजी के यहां गया। उधर से पांचेलाल के तथा और दो आदमी के फिर फिल्म कोरपोरेशन में गये। स्टूडियो देखा। बंगला फिल्म का रिहर्सल चल रहा था। ५ बजे एच० के० दादा के गया।

१० मार्च : बाजार में धूम थी। लाल-पीले रंग लगाने शुरू हो गये। काम-काज नहीं था। फटका ३४।) अन्दाज। मुझे भी रंग लगा दिया। मना किसे करता, सब ही लोग होली की धुन में थे। शाम को कहीं नहीं गया।

१२ मार्च : सुबह उठकर ६ बजे घेलिया के मकान गया, १०॥ बजे लौटा, ताश खेलकर। बाजार गर्म है। काम-काज थोड़ा बहुत होता है तबीयत ठीक है। रात में नींद मजे में आ गयी। दीपचंद को फोन किया कि काम करो, अच्छी तरह से करेगा। हमलोगों के पोते का सब पाट बिक गया है।

१३ मार्च : सुबह ३ बजे उठा। होली पूजन किया। अखबार पढ़े। बड़े-बड़े लोगों को टाइटल, मजाक का दिया है। लड़ाई की खबरें तो हैं पर कोई खास नहीं। घर ही पर रहा। बाहर नहीं गया। दर्द एकदम कमती है, पर अभी ठीक होने में और आठ दिन की देरी है। दिन में १२ बजे गद्दी गया। पाट का भाव ३६॥।) है। ३ बजे पाँचेलाल घेलिया के साथ रूबी सिनेमा गया। शाम के ६ बजे लौटा। ७ बजे चंद्र-ग्रहण था।

●

१९४२ ई०

कलकत्ता

१ जनवरी : सुबह ५। वजे उठा, कितावें पढ़ता रहा। कसरत की। ८ वजे दूध पीकर एंडरसन तथा अलेक्जेंडर के गया। ९। वजे घर लौटा। "मैन विथ इस्टर्न वर्ल्ड" किताव पढ़ी। रात में ११॥ वजे तक पढ़ता रहा।

बनारस

३ जनवरी : सुबह ७॥ मुगलसराय पहुँचा। साथ में वजन-वेसी था। वनारस में १।) दिये, चुंगी के ।।।) दिये। वनारस में भीड़ काफी है।

४ जनवरी : सुबह ६॥ वजे उठा। वच्चों के साथ खेलता रहा। फिर वैजनाथजी केडिया के गया। ११ वजे तेल मालिश कर गंगा जी गया। **गंगाजी पार की।**

कलकत्ता

५ जनवरी : वाजार में काम कम है। जूट में सेल्स टैक्स लग गया है। जरमन रेडियो सुना।

७ जनवरी : जापान की लड़ाई चल रही है पर यहां जल्दी कोई डर की वात नहीं। कामकाज नहीं है। डेलिवरी हो रही है। रात में रेडियो सुना। किताव पढ़कर सो गया।

११ जनवरी : सुबह उठकर मैदान की तरफ गया। १२ वजे खाना खाकर गद्दी गया। ४ वजे मैदान जाकर बैठ गया। विलसन साहव मर गये, ५ वजे उनके दाग में गया। ६॥ वजे लौटा। तवियत सुस्त रही। १० वजे सोया। सपने आते रहे।

१२ जनवरी : सुवह कुछ देर से उठा। प्रेस गया। भाई जी का मन भी काम करने का नहीं है। लड़ाई की हालत खराव है। रात में काफी देर तक किताब पढ़ता रहा।

२० जनवरी : कसरत आजकल नहीं होती। ब्रिटेन हारता है, जापान जीतता है। लोग चाँदी लेने की सलाह देते हैं। पाट वाजार खराव है।

जसीडीह

२५ जनवरी : ५ वजे उठा। ईश्वर-भजन किया। कसरत की। ७ वजे तक मकान

देखकर भवन में आया। मकान अभी वन रहा है। रुपये वहुत खर्च हो गये। अभी दो महीने की देरी है।

१ फरवरी : सुवह उठकर दीपचंद चांडक के घर गया, फिर डाक्टर के गया। गद्दी आकर १२ वजे तक काम करता रहा। ३ वजे 'प्यास' सिनेमा देखने गया। फिर गद्दी लौटा। इंजेक्शन लिया। पेशाव की तकलीफ थी। वुखार आ जाता है। रात में 'दुनिया की सैर' पढ़ी। जापान सिंगापुर के पास आ गया है।

८ फरवरी : सेढ़मल जी वेलिया के साथ १०॥ वजे तक था। फिर गद्दी जाकर काम किया। डेडराज जी की रफ्तानी की फिक्र हो रही है। वनारस ५-४ दिन में आने का विचार है। पेशाव की थोड़ी तकलीफ है।

९ फरवरी : आज अचानक वनारस जाने का विचार हो गया। सत्यनारायण ने जोर दिया। डेडराज जी की रफ्तानी का काम उसके जिम्मे लगा दिया। दिन में उनके ऑफिस गया था।

वनारस

१० फरवरी : यहाँ सव घर में सुस्त हैं। वच्चे वीमार थे। नंदू भी। लड़ाई की खवरें खराव हैं। जापानी वढ़ रहे हैं। दिन में हरचंदराय जी से मिला। उनकी तवियत खराव है। पत्नी की तो ठीक है, पर उदास है। वनारस में कलकत्ते के वहुत लोग आये हुए हैं।

११ फरवरी : रात की थकावट थी, चित्त भी खिन्न। सुवह माँजी और विरजू जसीडीह से आये। कल देश जाने का विचार पक्का है। ११ वजे रात तक चीजें जँचाईं।

१२ फरवरी : सव गये। गाड़ी में वड़ी भीड़ थी। मन कुछ खिन्न-सा था। २ वजे गंगा जी नहाया, नागरी प्रचारिणी गया, फिर टाउन हॉल। मीटिंग थी। रेडियो सुना। सिंगापुर का पतन हो गया। रात दो वजे मुगलसराय में इलाहावाद की गाड़ी में वैठा।

इलाहावाद

१३ फरवरी : सुवह ५॥। वजे पहुँचा। २-३ मील पैदल घूमा, संगम स्नान किया। चौक में फल वगैरह खाये। ११ वजे तक हाईकोर्ट, युनिवर्सिटी, आनंद भवन, खुसरूवाग सव देखा। खुसरूवाग देखकर मन में कई विचार आने लगे। समय वड़ा या मनुष्य ?

११॥ वजे स्टेशन से मिर्जापुर के लिये चला। दो वजे पहुँचा। विंध्याचल गया। विंध्या-देवी के दर्शन किये, पर पहाड़ पर नहीं गया। ५ वजे तक शहर देखा। घाट वहुत सुंदर हैं। मिर्जापुर शहर टूटा-पुराना है। इलाहावाद साफ है। वँगले वहुत सुंदर हैं। मन में आया कि पत्नी के साथ इधर आना चाहिए। रात में ९ वजे जसीडीह के लिये स्टेशन पहुँचा।

कलकत्ता

१६ फरवरी : जसीडीह से सुवह ६।।। वजे पहुँचा। काम-काज सलट रहा है। वाजार सुस्त है। काम एकदम नहीं है। अमेरिका का शिपमेंट मिलने का कोई ठिकाना नहीं है। अखवार में सिंगापुर के पतन की खवर आ गयी। अंग्रेज वरावर हट रहे हैं। लूज जूट जोर से खप रहा है।

१७ फरवरी : एक्सचेंज गया। वाजार सुन्न है। चर्चिल ने शोकपूर्ण भाषण दिया। कसरत वंद है। तबियत खराव मालूम देती है। शाम को दर्मा से आए हुए लोगों से वातें होती रहीं।

१८ फरवरी : कलकत्ते से प्रायः लोग चले गये हैं। काम है ही नहीं। हम लोगों के पाट थोड़ा पोते हैं। ५४), ४१) ३२) सेलर हैं।

२४ फरवरी : मन एकदम लगता नहीं। दूकानें ५०% वन्द हो गयी हैं। कारवार वंद, वाजार मंदा। लोग वनारस, जसीडीह वगैरह चले गये हैं। जापानी जीत रहे हैं। उधर रूस जर्मनी को दवा रहा है। हम लोग कामकाज सलटा रहे हैं।

२ मार्च : रात वेसी खा लिया था। वदहजमी मालूम दी। पानी खूब पिया। अखवार पढ़ा। मैदान गया। ८।। से ९।। तक तेल मालिश करायी, गंगा जी में तैरा। तवियत हरी हो गयी। ११ वजे से ५ वजे तक 'मारवाड़ी जाति का इतिहास' पढ़ता रहा। गद्दी का काम भी किया। शाम को ६ वजे होली जली पर लोगों में उत्साह नहीं था, न कोई धूम थी। सव सूना था।

१३ मार्च : सुवह मैदान नहीं गया। मोटर से प्रेस गया। भाई जी देवघर से आये। ऑफिस गया। पाट वेचने की चेष्टा में हैं, पर कामकाज एकदम नहीं है। रात में गद्दी में ही था। १६०० गाँठ का शिपमेंट मिला है। वहुत सहारा लग जायेगा। पाट का भाव ५२), ३९), २९) है।

२८ मार्च : गद्दी गया। उधर से काशीपुर कई जगह पाट देखा। फिर वांगड़ जी से मिलने गया। कुछ गाँठों का वंदोवस्त किया।

सरदारशहर

२ अप्रैल : लाइब्रेरी गया। हालत अच्छी है। दुलीचंद जी का अस्पताल देखा। रात नौ वजे जोर की आँधी आयी।

५ अप्रैल : वुखार था, तवीयत सुस्त थी। रतनी, नंदू की ८ वर्ष पहले की, पत्नी की १२ वर्ष पहले की, फोटो देखी। अच्छा लगा।...सरदार शहर से जा रहा हूँ।

१३ अप्रैल : 'वेस्ट स्टोरीज ऑफ द वर्ल्ड' खत्म कर 'लंदन रहस्य' पढ़ रहा हूँ। किताव दिलचस्प है।

१७ अप्रैल : कल रात में ११ वजे पहुँचा। नींद आयी। अच्छी जगह है। लौटने में घोड़ी तैयार थी, उस पर स्टेशन आया।

बीकानेर

२५ अप्रैल : बीकानेर २० वर्ष बाद देखा। बड़ा परिवर्तन हुआ। बहुत सुंदर शहर है। हॉस्पिटल गया। सेठिया जी मिले। बंदोबस्त अच्छा है।

कलकत्ता

१९ जुलाई : ८ बजे से १० बजे तक ऑफिस था। पाट का काम किया। बाजार थोड़ा मंदा है। चित्त चंचल रहता है। थोड़ा खाना खाया। दो दिन से संझा को बाजार की चीजें खा लेता हूँ। ९। बजे तक किताब पढ़ता रहा।

२१ जुलाई : लड़ाई में जरमनी रूस में जीत रहा है, पर मिस्र में अंग्रेज जीत रहे हैं। जापान की खास लगती नहीं। काम-काज थोड़ा बहुत हो रहा है।

२३ जुलाई : आजकल घर पर सो रहा हूँ। आराम भी है। आफिस गया। ५००० मन का काम किया।

२५ जुलाई : जीवराज मेहता और देशमुख का लेक्चर सुनने गया एंटी कांग्रेस था। बंबई जाने का विचार कर रहा हूँ।

नालंदा-राजगिरि

६ अगस्त : सुबह बख्तियारपुर पहुँचा। सूर्य-मंदिर देखा। चित्त प्रसन्न हो गया। ब्रह्मकुंड में स्नान किया। बहुत गरम पानी है। नालंदा देखकर चित्त खिन्न हो गया। क्या मिला उजाड़कर? बख्तियार खिलजी की कब्र कहाँ? नालंदा के खंडहर तो हैं।

कलकत्ता

११ अगस्त : बंबई तथा सभी जगह बहुत दंगे हो गये। पुलिस ने गोलियां चलाईं। काफी आदमी सभी जगह मारे गये। कांग्रेस का आंदोलन जोरों पर है।

१३ अगस्त : आंदोलन बहुत जोर, . .चारों तरफ गोलियाँ चल रही हैं। कलकत्ते में भी लाठी चली। मेरे मन में कई तरह के विचार आते हैं। जापान की लड़ाई सुस्त है। हम लोगों के प्रायः ५००० गाँठें मत्थे हैं।

१५ अगस्त : आगज़नी हो रही है। बहुत दंगा हो रहा है। पैदल ही ऑफिस गया। तार काटे गये। रेलें बंद हो गयीं। खबर है, महादेव देसाई मर गये, हार्टफेल हो गया। चारों तरफ अराजकता है।

जसीडीह

२५ अगस्त : सुबह ५॥ बजे घूमने गया। कसरत की। खुले मैदान में सूर्य-स्नान किया, शाम को फुटबाल खेलने लगा तो पाँव में बहुत जोर मोच आ गयी। रात में पैर बहुत दर्द करने लगा और सूज गया।

२६ अगस्त : सुवह उठने पर दर्द वहुत था, मालिश करा रहा हूँ। चित्त खिन्न हो गया। कसरत वंद कर दी। नंदू की माँ नाराज होती रही। कलकत्ते चलने को कहती है।

कलकत्ता

१ सितम्बर : सुवह ५॥ वजे उठा। कामकाज है, वाजार गरम है। पाट कलकत्ते में कम आ रहा है, गांधी जी का आंदोलन जोर में है, चारों तरफ मारकाट है, जापान, जरमनी मामूली चाल से लड़ रहे हैं। हम लोगों के पाट मत्थे है। मानव वावू को फोन किया।

१० सितम्बर : ५ वजे गंगा जी गया, फिर प्रेस। रूस हार रहा है। स्टालिनग्राड की पोजिशन सीरियस है। पाँच वजे शाम को गद्दी आया।

११ सितम्बर : रात में नींद नहीं आयी। कल जो वाद-विवाद हो गया उसके सपने आते रहे। वुखार हो आया। शाम को खाना नहीं खा सका। किसलिये इतना अड़ंगा ? मन पर कावू नहीं रख सकता ?

२० सितम्बर : वुखार दिन में ९९° रहा। शायद परसों तक उतर जायेगा। नन्दू का स्वास्थ्य अच्छा मालूम देता है।

२७ सितम्बर : दीपचन्द के गया। तवीयत सुस्त है। ३ वजे 'एक रात' सिनेमा गया। अच्छा था। वुखार तो उतर गया, कमजोरी काफी है। समय ऐसे ही वीतता जा रहा है। कुछ तकलीफ सुनी कि शांति मिलती नहीं। कारवार में रुपया नहीं आता है।

२८ सितम्बर : नन्दू के कल से थोड़ा वुखार है। फजलुल हक (प्रीमियर) प्रेसिडेंट हो गया, तवीयत ठीक रही, पर मैं तो ढंग से नहीं रह सकता, यही कमजोरी है।

जसीडीह

१२ अक्तूबर : सुवह चीज-वस्तु ले आया। दिन भर गोठ के काम-काज में रहा। १०० आदमी जीमे, ६५) खरच हुए। मैंने भी पक्की रसोई खूव खायी। रात में प्यास लगी। पानी पिया।

कलकत्ता

७ नवम्बर : वाजार वंद। कसरत करने गया, व्यायामशाला में। दिन में बच्चों को साथ लेकर वाजार गया, फोटो लिया। वोरा के शिपमेंट का काम किया है।

९ नवम्बर : वोरा ७१) में वेचा। ११००) नफा था। पाट ५००० मन का काम किया। रुपयों की थोड़ी टान है। फाटका वहुत मजवूत है। कल नारायणगंज जा रहा हूँ। १० वजे सोया। कसरत नहीं कर सका।

१६ नवम्बर : सुवह बुखार नहीं था, खुमार था। ४ वजे गोपाल डाक्टर आया। दवाई ली, कुनैन। शाम तक 'शेप प्रश्न' पढ़ता रहा। ३००० गाँठ का काम किया।

५ दिसम्बर : तबीयत वहुत ठीक है। शाम को 'चंद्रशेखर' वंगला नाटक देखने गया।

१९ दिसम्बर : कामकाज कुछ नहीं हुआ। गणेश टाकीज में महतावचंद जी के साथ 'घर संसार' देखा, अच्छा था।

२० दिसम्बर : दीपचंद के गया, ३ वजे म्यूज़िक कान्फरेंस। रात में भोजन कर वाहर घूमने निकला। तवियत वहुत अच्छी रहती है। पाट में इधर वहुत नुकसान हो गया है। रात में १०। वजे से १२ वजे तक वंवार्डमेंट हुआ।

२२ दिसम्बर : सुवह उठकर खिदरपुर गया। उधर वहुत आदमी जख्मी हुए, मरे भी। घवराहट है। कामकाज नहीं हो रहा है। आदमी भाग रहे हैं। पैदल जा रहे हैं। पाट का वाजार वहुत मंदा हो रहा है। क्या होगा, कौन जानता है? रात में १२। वजे वांविंग शुरू हुई १॥ वजे ऑल क्लियर हुआ।

२५ दिसम्बर : कल वहुत जवर्दस्त वंवारी रही। घवराहट रही। मार्टिन तथा स्टैंडर्ड लाइफ की विल्डिंग पर गोलावारी हुई। उधर देखने गया। काम में वहुत नुकसान होता है। भाई जी वोलते हैं, मोटर में जसीडीह चले जाओ।

२६ दिसम्बर : कलकत्ते के वहुत आदमी वाहर चले गये। दीपचंद के गया। वहुत उदास है। कलकत्ते से वाहर जाने को वोलता है।

२९ दिसम्बर : आज कुछ शांति है। एंड्रिउ साहव पुरी से आ गये। वाजार में काम-काज एकदम नहीं है।

३० दिसम्बर : याददाश्त (१) मनुष्य को मितभाषी होना चाहिए। इसमें झूठ कम वोला जाता है और जो कुछ कहा जाता है, सोचने-समझने का समय मिल जाता है। वाचाल का विश्वास कम हो जाता है तथा मान नहीं रहता है।

(२) चरित्र ही मनुष्य को ऊंचा-नीचा, स्वस्थ या वीमार, दीर्घायु और अल्पायु वना देता है।

(३) जहाँ तक वन पड़े, सत्य वोलने की चेष्टा करनी चाहिए। प्रथम थोड़ा कष्ट मालूम पड़ेगा पर पीछे वड़ा आनंद मिलेगा। सदा सत्य वोलने वाले मनुष्य वाक्सिद्ध हो जाते हैं।

(४) किसी को चुभती वात नहीं करनी चाहिए, वह वरावर दाग वनी रहती है। धन का नुकसान सहा जाता है, पर कटु वचन नहीं।

(५) धन का अपव्यय करने से भी और खाली संचय करने से भी, दोनों दशा में नाश हो जाता है। धन की गति तो सद्व्यय है, अगर कोई कर सके।

(६) मनुष्य एक दिन अवश्य मरेगा, यह निश्चय है, पर जो लोग कुछ करके चले गये, वे चिरकाल तक अमर रहेंगे जैसे कि सुकरात, गौतम, राम, कृष्ण या इधर में सूरदास, तुलसीदास आदि। रुपयेवाले तो इनसे बहुत हैं, कोई जानता भी नहीं, सिवाय उनके दो-तीन पीढ़ी के वंश के। इसलिये, कुछ ऐसा काम करना चाहिए कि मरने पर भी लोगों को याद रहे।

(७) यात्रा से ज्ञान बढ़ता है, यात्रा सपरिवार करनी चाहिए।

१९४३ ई०

कलकत्ता

१ जनवरी : सुबह ६ बजे गद्दी आया। प्रेस में फोन किया। ९॥ बजे न्यू मार्केट जाकर फूल वगैरह लेकर स्मिथ, एंड्रयू के गया। वहाँ से एंडरसन साहब के। और साहबों के भी गया। अंग्रेजों का यह कायदा उन्हें बहुत खुश रखता है। अपने लोगों में भी होली-दीवाली की रामरामी है मगर डाली भेंट करने का हिसाब नहीं। पता नहीं, विलायत में यह कायदा इन लोगों में है या नहीं। बाबू जी परसों बनारस जायेंगे। ४ बजे गद्दी आकर जीमा। अंग्रेज तथा रूसी जीत रहे हैं, जापान तथा जरमनी थोड़े दब रहे हैं। पाट का भाव ६०) था।

४ जनवरी : सूरजमल नागरमल के बंसीधर जी जालान चल बसे। मन में दुख हुआ। भले थे, मेरा उपकार किया। दाह में गया। मन भारी हो गया। आना-जाना सबका होता है। अच्छा काम रह जाता है। 'आँख मिचौली' सिनेमा देखने चला गया। अच्छा लगा। कुछ देर के लिए सब भूल गया।

११ जनवरी : सुबह व्यायामशाला गया। फिर ईडन गार्डेन जाकर गंगाजी गया, फिर ऑफिस गया। आलटरनेट डे गंगाजी जाता हूँ। तेल मालिश भी होती है, तबीयत बहुत अच्छी मालूम देती है। पाट पर ध्यान गरम हो रहा है, हेसियन पर भी, पर भाई जी लेते नहीं हैं। कुछ कसूर मेरा भी है कि बेच देता हूँ।

१४ जनवरी : हम लोगों के ३०००० मन पाट तथा ५००० गाँठ पोते हैं। बाजार गरम है। जसीडीह, बनारस जाने का विचार है।

बनारस

१७ जनवरी : सुबह ९ बजे पहुँचा। स्टेशन पर सत्यनारायण था। दिन में बातें करता रहा। ३॥ बजे 'मेहमान' देखकर आया। साधारण था। उधर से ७ बजे लौटकर ८ बजे मेहताबचंद जी के घर जीमने गया। बनारस में सर्दी कुछ बेसी लगती है।

१९ जनवरी : मेरा मन यहाँ कम लग रहा है। इलाहाबाद जाने का विचार है।

इलाहाबाद

२३ जनवरी : ४।। बजे इलाहाबाद पहुँचे। ५ बजे दीपचंद चांडक के घर। कल वह कलकत्ते चला गया।

२५ जनवरी : ७।। बजे गीगा तथा वाइफ़ के साथ पैदल ही संगम स्नान को गया। चांडक के घर से करीब ढाई मील चला। स्नान किया। बड़ा आनन्द आया। सब ३।।) रुपये खर्च हुए। अक्षयवट के दर्शन किये। यहां गवर्मेंट की बड़ी तैयारी है। मिलिटरी बहुत है। वार मेटीरियल भी बहुत इकट्ठा है। दीपचंद के घर में पूरा आराम है। खुला है, पास में जंगल है, क्लाइमेट अच्छी है। १० बजे रेल में बैठकर ११।। बजे माणिकपुर पहुँचे। २ बजे कारवी पहुँचकर स्टेशन पर सो गये।

चित्रकूट

२६ जनवरी : सुबह ७।। बजे स्टेशन से चले। १०।। पर चित्रकूट पहुँचे। मैं तो प्रायः पैदल ही चलता रहा। २ बजे परिक्रमा को चले। पहाड़ी जगह है, दृश्य अच्छे हैं, जंगल-सा है। पुराने समय में तो बीहड़ जंगल रहा होगा। राम का वनवास-काल याद हो आया। परिक्रमा की। स्नान, दर्शन, पूजन सब १ बजे तक कर लिया था। रामघाट पर स्नान किया। मंदाकिनी पतली-सी नदी है, पर पानी बहुत साफ। धारा भी तेज है। कामद गिरि की परिक्रमा कर ५।। बजे लौटे। रास्ते में मुखारविंद, चरणारविंद आदि के दर्शन किये। बहुत सुहावनी जगह है। दूध, घी, आटा सस्ता है। पनचक्की में गेहूँ पीसकर आटा तैयार करते हैं। यहाँ की आबोहवा बहुत अच्छी है। औरतें सुन्दर, मेहनती और स्वस्थ हैं। धरमशाला में उतरे हैं, मन यहाँ बहुत लग गया है।

२७ जनवरी : ८।।। बजे दो डोलियाँ आयीं। माँ और दुर्गा डोलियों में बैठ गयीं। हम लोग पैदल चले। प्रमोद वन, स्फटिक शिला तथा जानकी कुंड बहुत रमणीक जगहें हैं। हनुमान-धारा जाकर स्नान किया। यहाँ तो पग-पग पर तीर्थ हैं, देखने की जगह है। उधर से सीता रसोई देखने गया, पहाड़ पर काफी ऊँचाई पर है। वहाँ औरतें झरने में पानी लेने को जा रही थीं। अच्छा रूप और स्वास्थ्य था। ऐसा लगता है, अच्छे शरीर के लिये मेहनत ज्यादा जरूरी है, खुराक, घी वगैरह नहीं। चिंता-फिकर भी चेहरे को बिगाड़ती है। चित्रकूट बहुत अच्छा लगा। वहाँ से ५।। बजे माणिकपुर पहुँचे। ९।। बजे रात को इलाहाबाद पहुँचे। १० बजे तक घर आ गये। कुल ७०) खर्च हुए जिसमें ४०) दान के लिये।

कलकत्ता

१० फरवरी : सुबह ८ बजे कलकत्ता पहुँचा। बाजार ११ बजे गया, मंदा है। २ बजे बंद हो गया। कामकाज एकदम नहीं। महात्मा जी के उपवास की खबर है। हिंदुस्तान की पब्लिक में जोश फैल सकता है। मन में कलकत्ता आकर उत्साह नहीं है।

१२ फरवरी : सुबह गंगा जी गया। ३) का ट्राम का पास लिया। ११ बजे खाना खाकर ऑफिस गया। थोड़ा काम आर्डिनरी जूट का १०।।) में किया। बाजार मंदा है। हम लोगों के ४००० पाट तथा ३०० गाँठ हैं। मेरा मन नहीं लगता है। काफी अशांति सी रहती है। सेडमल जी डालमिया मिले थे, शायद आजकल में सगायी की बात हो। मेरा ध्यान पाट का मंदा नहीं है।

१५ फरवरी : महात्मा जी के उपवास का ६ठा दिन है। अखबारों में ज्यादा खबर मिलती नहीं। लोगों में कहना है कि गवर्नमेंट कड़ाई बरतेगी। विदेशों की खबर नहीं आती। जर्मनी हार रहा है, रूस जीत रहा है।

१७ फरवरी : सुबह कसरत करने गया, उधर से गंगाजी, उधर से ऑफिस की तरफ। सत्यनारायण, डाक्टर के गया। फोटो ली गयी। पेट की तकलीफ है। बनारस का मदन का कागज था। महात्मा जी के उपवास को ८ रोज हो गये। हालत खराब है। पर इधर लोगों को कोई चिंता नहीं। लड़ाई में पैसा बनाने की धुन ज्यादा बढ़ रही है। शाम को रेडियो सुनकर ९। बजे सो गया।

१८ फरवरी : अखबार पढ़ा। वायसराय की काउंसिल के मेम्बरों ने इस्तीफा दे दिया। १२ बजे इंडियन चेंबर की मीटिंग में गया, गांधी जी के उपवास पर मीटिंग थी। सब बड़े-बड़े आदमी थे, पर कोई कुछ भी करने को तैयार नहीं है। देखें क्या होता हैं। मेरे मन में न जाने क्यों ऐसी बात से कैसा-सा होता है। पाट का बाजार कुछ तेजी पर है।

१९ फरवरी : गांधी जी की हालत अच्छी नहीं है। आज उपवास का दसवाँ दिन है, चेतना नहीं है। उनको देश की कितनी चिंता है, हम लोग कुछ नहीं करते। ऐसा मालूम देता है, वे जीयेंगे नहीं।

२६ फरवरी : आज हेसियन २ लाख एस० एन० को बेचा १३) में। अच्छा नफा रहने का चांस है। सत्यनारायण की तबीयत ठीक नहीं है।

१४ मार्च : ६ बजे दीपचंद के साथ 'ममता' तमाशा देखा। बहुत रद्दी फिल्म थी। पाट का बाजार समान है। हम लोगों के पाट ६० हजार मन पोते हैं। सत्यनारायण कल बनारस जायगा।

१७ मार्च : तबीयत ठीक है। पेट के लिये कल से दवाई शुरू की है। पाट का बाजार गरम मालूम देता है। शाम को रेडियो सुना। जापान बर्मा में जीत रहा है। रूस खारकोव में हार गया। हेसियन २५।); पाट १३), १२)। हम लोगों के ३७०० मन पोते हैं।

२० मार्च : सुबह व्यायामशाला जा रहा था, केदारनाथ जी पोद्दार मिल गये, मैदान ले गये। उधर से हवड़ा स्टेशन पहुँचा। ९। बजे गाड़ी आयी। रतनी वगैरह नहीं आये। बिरजू आया। निराशा-आशा दोनों हुई। आशा इसलिए कि १०-१५ दिन संयम से और रह सकूँगा तथा खा-पी लूँगा, निराशा इसलिये कि गिगला देखने का बहुत मन था। इस बार होली की धूम एकदम नहीं है।

२१ मार्च : आज होली है। बच्चे इधर नहीं हैं। शायद बहुत वर्षों बाद ऐसा हुआ। इस साल ७ लाख फायदा हुआ।

२२ मार्च : सुवह कसरत करके ऑफिस जाने लगा तो कफ में खून आया। चित्त बहुत खिन्न हो गया। कामकाज २०–३० हजार मन का किया।

२३ मार्च : सुवह कफ में थोड़ा खून आया। गोपाल बाबू डाक्टर के गया। उसने कसरत की मनाही कर दी। दिन में ३२००० मन का काम किया। बाजार गरम है, हेसियन मंदा है। हम लोगों के ३० हजार मन पाट पोते हैं। दिन में छाती में थोड़ा दरद रहा। मन छोटा हो गया, कसरत बंद हो गयी। अडूचे का रस शुरू किया है।

२४ मार्च : सुवह ६ बजे उठा। चित्त स्वस्थ था। सारी दवाई छोड़ दी। अडूचे का रस, शहद, शीतोपलादि ले रहा हूँ। सुवह दरद कमती था। खाँसी के साथ थोड़ा-सा खून आया। दिन में नहीं आया। बाजार समान है। केडीज का काम हुआ। सत्य-नारायण, बाबू जी चित्रकूट गये हैं। माँ जी की तवीयत राजी है। उरद की दाल खाने से दीपचंद की तवीयत ठीक रहती है। कल से आज स्वस्थ हूँ। सुबह प्रेस गया था।

कटिहार

२८ मार्च : ७॥ बजे सुवह कटिहार पहुँचा। काम ठीक-ठीक हो गया। ३५०० अंदाज नंफा रहेगा। दियासलाई फैक्टरी बन रही है, उसे देखा। वर्कशॉप बहुत बड़ा है। ऐसा मालूम होता है, कटिहार में काम की बहुत गुंजाइश है। शहर बढ़ने पर सुविधा भी तरह-तरह की बढ़ेगी। अच्छा ट्रेड सेंटर है। पाट का बाजार गरम है।

कलकत्ता

३० मार्च : अखवार में खवर पढ़ी कि फजलुल हक प्राइम मिनिस्टर ने रिजाइन दे दिया। मुस्लिम लीग की मिनिस्टरी होगी। लगता है, अब झमेला शुरू हो जायगा। हक कुछ समझदार तो था मगर लीग वाले एकदम उजड्ड हैं। लगता है, इस गोलमाल में गवर्नमेंट की चाल रही है। अंग्रेज चतुर होते हैं।

३१ मार्च : अखवार में पढ़ा, वंगाल रेड एरिया हो गया है। इससे लोगों के मन में थोड़ा असर पड़ेगा। मालूम पड़ता है, जापान का जोर अंग्रेजों से काफी भारी पड़ रहा है। हम लोगों के ८ लाख फायदा है। पाट ५०,००० मन पोते हैं। थोड़ा पाट वेचने का विचार है। सुवह काशीपुर गया, वहाँ से मुसद्दी लाल बाबू के जिस काम को कहा था, उसकी रिपोर्ट देने। आफिस में किसी कारण गलती हुई। सारे दिन मन में पछतावा था। खैर, आगे से निगाह रखनी चाहिए।

१ अप्रैल : २७५० गाँठ का काम किया। वाजार थोड़ा मंदा है। फेनी की तरफ जापान का वांविंग हो रहा है। हल्ला है कि काक्स वाजार में जापानी उतर गये। पर यह खवर गलत है। रात में रेडियो सुना, आफ्रिका में अंग्रेजों की जीत हो रही है। हेसियन २४॥) रहा। मिलों में पाट का कुछ काम नहीं हुआ।

४ अप्रैल : सुबह ४।। वजे उठा। डायरी पढ़ी। डायरी लिखना अच्छी आदत है। अपने अच्छे-बुरे का पता चलता है। लड़ाई की खबर समान है। कलकत्ते की तरफ कोई खतरा नहीं। गीगा को देखने का मन होता है।

५ अप्रैल : रात में वेसी खा लेने से तबीयत भारी रही। पेट खराब था। थोड़ा खून भी आया। बाजार की मिठाइयाँ न खाने की प्रतिज्ञा ले ली है।

१३ अप्रैल : सुबह से ही सर भारी रहा, माथा दुखता रहा, जुकाम है। आफिस गया, ५००० मन का काम किया। छाती में धड़कन मालूम देती है। दवा सावधानी से लेता हूँ। मेरा मन एकदम बाहर जाने का हो रहा है, पर अभी तो जाने का कोई रास्ता नहीं है। चित्त खिन्न है। मेरी भी क्या जिंदगी है, जहाँ न आनंद है न और कुछ। रात में खाना नहीं खाया।

२१ अप्रैल : काम-काज करता रहता हूँ। चिंता की बात है, खून कफ में आ जाता है। शीतोपलादि, अडूचे का रस वगैरह लेता रहता हूँ। कलकत्ते से चले जाने का मन करता है, पर कामकाज है, कैसे छोड़ सकता हूँ ? शाम को ५ वजे रतनी वगैरह को लेकर न्यू मार्केट, बंगाल स्टोर्स गया। कुछ सामान वगैरह लाया।

२६ अप्रैल : २४ को बहुत खराब तन और मन लेकर जसीडीह गया था। आज सुबह लौटा हूँ। काफी फरक आ गया। भूख लगती है। मन भी ठीक है।

२ मई : सुबह ८ वजे रतनी के मुद्दे का नेग हुआ। पन्नालाल जी, बजरंगलाल जी सब आये थे। प्रायः १३०० खर्च हुआ।

१३ मई : पिछले कई दिनों से खून आता था। आज कफ में खून कमती है। तबीयत भी इंप्रूविंग है। पाट १६ , १९ में वेचू है।

२५ मई : दिन में बाजोरिया बलदेवदास जी चलते रहे। उनके बैठने को गये। वहाँ से लौट कर 'डेज़र्ट फ़ाइट' देखने सिनेमा में गया। पाट का बाजार थोड़ा मंदी में है।

२७ मई : बाजार कुछ मंदा है। कामकाज कमती। दिन में 'पर्दे की रानी' किताब पढ़ी; अच्छी है।

३ जून : सी० डी० एस० एफ० पी० दोनों को ऑफिस ले जाकर एग्रीमेंट किया। २००० मन पाट यूल को वेचा। बाजार मंदा है।

४ जून : सुबह ऑफिस गया। साहब ने कहा, मैमनसिंह जाओ। इसलिए ४।। वजे रेल से गया।

१० जून : मैमनसिंह, सिराजगंज का काम कर दिया। मन राजी है। बाजार में रूमर है, भाव फिक्स होगा।

१२ जून : आज मिलों की मीटिंग थी पर डिसाइड कुछ नहीं हुआ। ३।। वजे सिनेमा में 'इंसान' देखने चला गया। वहाँ पंडित जी, लक्ष्मीनारायण पोद्दार, वगैरह भी थे। खेल अच्छा नहीं लगा। केदार जी पोद्दार भी आये थे। मैं हाफ टाइम में फिर ती आ गया।

१६ जून : ३०००० मन का काम किया। भाव २८॥) से २८=) आना। पेशाव की तकलीफ हो जाती है। अव थोरौली इलाज कराने का विचार है। ९ वजे सुवह डॉक्टर को खून दे आया।

२० जून : सुबह डूश लिया, दस्त साफ हुआ। उवला साबू लिया। एक फुलका खाया। २५००० मन पाट १४), १७) में वेचा। महताव चंद जी के घर गया, उनकी वाइफ वेसी वीमार हैं। विरजू जैसीडीह गया है। दिन में तवीयत ठीक रही। डॉक्टर को फोन किया; खून में, पेशाव में कोई खराबी नहीं है। मेरा मन होमियोपैथी इलाज की तरफ भी हो रहा है।

जसीडीह

३१ जून : पंजाव मेल में भीड़ थी, पैसेंजर से जसीडीह आज सुवह पहुँचे। १०। वजे भवन गया। आदमी कम हैं, रसोई मामूली होती है। जसीडीह का हवापानी बहुत अच्छा है। दिन में किताव पढ़ी। कल वर्षा अच्छी हुई थी।

३ जुलाई : दिन में ताश-चौपड़ खेलता रहा। शाम को कोठी में गया। विजली का काम हो रहा है। भूतकोठी ५३००) में तय कर लेने का मन है।

६ जुलाई : तवीयत ठीक है। सत्यनारायण का कागज आया। उसकी तवीयत उसी माफ़क है। जर्मनी ने रूस पर हमला वोल दिया है। वाजार कुछ मंदा ही है।

कलकत्ता

८ जुलाई : सुवह विड़ला मिल में गया। १२ वजे फिर ऑफिस। गद्दी में ५ वजे आया। डेडराज जी का ५००० मन पाट वेचा। वाजार में ८९), ८४) में काम हुआ। मानव वावू आये थे। रविवार को आने को कहते हैं। भाई जी आज दुमका गए ५-७ दिन के वास्ते। शेयर मार्केट मंदा है। हेसियन २८॥।) रात में 'नजमा' सिनेमा देखने गये।

१२ जुलाई : अंग्रेजों ने सिसली पर हमला कर दिया और आगे वढ़ रहे हैं। ऐसा लगता है, जर्मनी की ताकत घट गयी। वह वुरी तरह हारेगा। अब तो इटली के निज के घर में अंग्रेज-अमेरिकन घुस गए।

१५ जुलाई : वारिश वहुत जोर हो रही है। ऑफिस गया। सारे दिन जामिनी में विशेशर डागा के भाई की देनी थी, उधर चला गया। १००० की जामिनी थी। काम-काज विशेष कुछ नहीं हुआ।

१७ जुलाई : ३॥ वजे जे० वोस के जमाई के साथ 'महाराज नंदकुमार' देखने गया। वंगला थियेटर अच्छा था। हिंदी थियेटर इसके मुकावले में इतना अच्छा नहीं होता।

२३ जुलाई : सुवह आदम जी मिल में गया। दिन में सूरजमल नागरमल के वाजोरिया के दलाल लोगों के साथ गया, काशीपुर की हड़ताल के वारे में। 'मामा जी' तमाशा देखने गणेश टाकी में गया। हँसी का खेल था। रात में सेलर्स की मीटिंग में गया।

२६ जुलाई : प्रेस गया था। काशीपुर की हड़ताल खुल गयी। बेलर्स लोगों ने जाकर नक्की कर ली। कल से माल उठेगा। कामकाज एकदम नहीं है।

१ अगस्त : सुबह ७॥ बजे वासदेव जी धेंलिया के उधर गया, गद्दी गया। ११ बजे वाजार जाकर चीजें लाकर दीपचंद के घर खाना खाया। ३ बजे तक ताश खेलता रहा। भूत कोठी लेने को तार दिया ५२००) में। हेसियन गरम २७॥=) आना। मदन जी पोद्दार के घर गया। एक जमीन की बात चल रही है।

५ अगस्त : रविवार के बाद से आज की डायरी लिख रहा हूँ। इसलिए पूरी बात याद नहीं रहती। मेरा मन बाहर जैसीडीह जाने का होता है। पर, रास्ता बाढ़ की वजह से बंद हो गया है। अभी शायद १५ दिन और लगेंगे। सत्यनारायण सरदारशहर चला गया है।

७ अगस्त : लड़ाई में अंग्रेज लोग जीत रहे हैं। शायद योरोप की लड़ाई बेसी दिन नहीं चलेगी।

९ अगस्त : सारे दिन वर्षा आती रही। बाढ़ चारों तरफ बढ़ रही है। रेल लाइनें उखड़ रही हैं। चारों तरफ अकाल तथा बाढ़ का प्रकोप हो रहा है। अन्न का अभाव और बीमारी फैलने की और भी तरह-तरह की खबरों का हल्ला है। बंगाल में अंग्रेजों से मिलकर लीग वाले हिंदुओं को तंग करने की तैयारी कर रहे हैं। व्यापारी भी नहीं वचेंगे।

१० अगस्त : शाम को फुटबाल देखने गया। मैदान में मारपीट हो गयी। मोहमडन स्पोर्टिंग और आसाम बंगाल रेलवे में मैच था। रिजल्ट २-३ रहा। मोहमडन एक गोल से हार गयी। बुरी बात है। हर बार ये लोग हारने पर मार-पीट, हल्ला, हंगामा मचाते हैं। खेल का मजा बिगाड़ देते हैं। पाट का बाजार मंदा है।

१५ अगस्त : आज रक्षाबंधन है। तबीयत ठीक है। ११ बजे से २॥ बजे तक गद्दी में था। फिर एंपायर में हवाई डांस देखने चला गया। फालतू में टाइम वेस्ट हुआ। समझ में नहीं आता कि ऐसे नाच में क्या कला है। सिर्फ कपड़ों का फर्क है मछुआ में साग-फल बेचने वाली औरतों के ऐसे हावभाव तो रोज देखने में आते हैं। बेकार में रुपये खरच हुए। एकदम रद्दी तमाशा था। ६ बजे वालचंद जी गुप्त के साथ कॉफी हाउस में चला गया। मन कुछ बदल गया।

२१ अगस्त : सलकिया गया, फिर ऑफिस। कामकाज कुछ है नहीं। ३ बजे काशीपुर गया। बाजार मंदा है। ५ बजे फुटबाल में गया। मोहनबागान एक गोल से हार गया। खेल अच्छा हुआ था। हारजीत दूसरी बात है।

२३ अगस्त : आज जन्माष्टमी है, भगवान् कृष्ण का जन्मदिन। अच्छे लोगों को सब याद करते हैं। मेरे मन में विचार आता है कि मैं भी कुछ बनूँ, कुछ करूँ। मगर कुछ होता नहीं। मन में रुपया कमाने की धुन रहती है। सब भूल जाता हूँ। सुबह बासदेव धेंलिया के उधर गया। ४ बजे तक ताश खेलता रहा। गद्दी आया, फिर वहीं चला गया।

वासुदेव जी सुस्त थे। उनके किसी ने वदमाशों से रुपया उधार ले लिया। वे लोग वदमाशी कर रहे हैं। संगत ठीक रखनी चाहिए, तकलीफ नहीं होती है। रात में पंडित जवाहरलाल नेहरू की जीवनी पढ़ता रहा।

२४ अगस्त : सुवह स्मिथ साहव के साथ ९ वजे मिल में गया। टैक्सी का मीटर खराब था। भाड़ा वहुत चढ़ा। टैक्सी वाला स्मिथ साहव के धमकाने पर गिड़गिड़ाने लगा। उनकी जगह कोई हिंदुस्तानी होता तो ड्राइवर भी अड़ जाता। अंग्रेज साहबों का रुआव सब मानते हैं।

१ सितंबर : अकाल की हालत वहुत खराब है। गोदामों में चावल है वताते हैं, पर अंग्रेजों ने मिलिटरी के लिए जमा कर रखा है, इधर लोग मर रहे हैं। शाम को ६ वजे भागीरथ जी कानोड़िया के गया; चेष्टा, सहायता हो रही है।

६ सितंबर : अकाल की वजह से कलकत्ते में वहुत लोग आ गये। रिलीफ कैंप चल रहे हैं मगर पूरा पड़ता नहीं। सड़कों पर भूखों और वीमारों की लाशें पड़ी रहती हैं। ऐसा दृश्य देखा नहीं जाता। वामन गाछी में झोपड़ियाँ वन रही हैं। उन्हें देखने गया। रात में जीमने की इच्छा नहीं हुई। हम लोगों के पाट पोते-मत्थे विशेष नहीं है। दस रुपये का नोट गुमा दिया।

१३ सितंबर : कामकाज एकदम नहीं है। वहुत सी मिलें कोयले के अभाव में वंद हैं। वनारस से वापू जी का कागज आया, मदन की सगाई के समाचार लिखे हैं। कलकत्ते में और छोटे-छोटे शहरों में अकाल वाली गरीव औरतों और बच्चों के वेचने की खवर से मन कैसा हो जाता है।

१५ सितंबर : सुवह प्रेस गया, ऑफिस नहीं जा सका। स्मिथ साहव नाराज हो गया। कोटेशन में गोलमाल है। अजीत सिंह मुकाम से आया। ७५० गाँठ देसी ७३।) में ली। शाम को ६ वजे 'नगद नारायण' देखने गया। जँचा नहीं, हाफ टाइम में उठ कर चला आया।

१७ सितंबर : सुवह ६।। वजे गद्दी गया। ७। वजे गंगाजी गया पर स्नान नहीं किया। ११ वजे ऑफिस आया। वाजार खुला, वहुत मजवूत। भाव देसी का ७१) रहा। मेरे में नफा करने की वहुत खराब आदत है। दूसरे, भाई जी से विना पूछे काम कर के पीछे संकोच होता है। यह भी वड़ी खराव आदत है। हड़वड़ी नहीं रखनी चाहिए। पाट हम लोगों के एक रकम वरावर है। लड़ाई अंग्रेजों के फेवर में जा रही है। वे लोग खुश हैं।

२० सितंबर : विरजू का लड़का वीमार था, चलता रहा। डॉक्टर वगैरह आये, पर वश चला नहीं। मन वहुत दुखी हो गया। सव कोई मिलने आये।

२१ सितंबर : सुवह मैदान की तरफ गया, फिर प्रेस गया। वहाँ से इस्पहानी के प्रेस गया। चित्त खराव था। दिन में १२ वजे ऑफिस गया। ६००० गाँठ इस्पहानी का काम किया। वाजार समान में स्टेडी है। विरजू का चित्त वहुत सुस्त है।

२६ सितंबर : रविवार था। गद्दी गया। वहाँ से घर आकर दीपचंद चांडक के घर गया। वहाँ से बोटानिकल गार्डन गजराज जी, नथमल जी, दीपचंद और भी सब लोग गये। ६॥ बजे फिरती लौटे। बड़ी मौज रही। रात में खाना नहीं खाया। मारवाड़ी सोसाइटी के कोश में एक लाख के रामेश्वर जी टूववेवाले ने दिये।

२९ सितंबर : कलकत्ते में अकाल से मारे लोग चारों ओर से आ रहे हैं। आदमी सड़कों पर मर रहे हैं, भिखमंगे फिरते रहते हैं। छोटे बच्चे, बच्चियों का चेहरा देखा नहीं जाता। पैसे देने से कुछ होने का नहीं। सुनने में आता है, लड़कियाँ और औरतें बुरे काम के लिये मजबूर हो गयी हैं।

जसीडीह

४ अक्तूबर : जसीडीह आये तीसरा दिन है। तबीयत ठीक है। ताश वगैरह खेलता हूँ। सुबह घूमता हूँ। यहाँ कुछ ठंड लगती है। कलकत्ते का कोई कागज नहीं है। सुबह ७ बजे देवघर गया था। ११ बजे लौटा। सूरजमल नागरमल के घर गया। बैजू बाबू से मिला। आती दफे साइकिल पर आया था। मन में खुशी है, आजकल झूठ बोलने का काम नहीं पड़ता है।

१२ अक्तूबर : दिन में सेडमल जी के घर गये। मिलनी की एक गिन्नी लड़के को दी। लड़का मुझे पहले से कुछ स्वस्थ मालूम देता है। पिता जी को लड़का पसंद आ गया।

कलकत्ता

२१ अक्तूबर : कलकत्ते में मन कम लग रहा है। चार दिन हो गये कोई खास काम नहीं हुआ। मदन की सगाई के बारे में मुसद्दी लाल जी से बात की। बापू जी को बनारस कागज दिया।

२३ अक्तूबर : आज से कसरत करनी शुरू की है। दिन में एक बजे ईस्ट इंडिया जूट की मीटिंग में गया। ४ बजे काशीपुर, वहाँ से 'रामराज्य' पिक्चर। अच्छा लगा। शोभना समर्थ सीता के रूप में जँचती थी। हरचंद राय जी से मिला। मदन की सगाई के बारे में बताया।

२५ अक्तूबर : कामकाज कमती है। मेरा मन फिर जसीडीह-जाने का हो रहा है। बृजलाल कल आ गया।

२६ अक्तूबर : इधर बंगाल में बहुत अकाल है।

भाव	गेहूँ	घी	तेल	चावल
मन का	२४)	१४०)	५०)	३०)

इससे कम में कुछ नहीं मिलता बल्कि ऊपर ही है। गरीब आदमी कैसे बचेगा, समझ में नहीं आता।

२८ अक्तूबर : आज दीवाली है पर यहाँ ज्यादा रोशनी नहीं। मामूली है। पटाके चलाये गये। मदन की तबीयत इधर बहुत अच्छी है।

कलकत्ता

४ नवंबर : गोयनका के ऑफिस में गया। शेयर की बात की। डेडराज जी की सीर में ५॥ लाख के शेयर लिये। एस० एम० डालमिया के ११०००) दलाली के हो जायेंगे। बृजलाल की तबीयत विशेष ठीक नहीं रहती। च्यवनप्राश, द्राक्षासव शुरू किया है मैंने आजकल कसरत छोड़ दी है, पर च्यवनप्राश, द्राक्षासव लेता हूँ। सरदारशहर गौ-शाला को तार दिया चंदे के वास्ते।

७ नवंबर : गौशाला की मीटिंग बुलायी। १७५००) लिखा गया और भी कलम लिखी जायगी। लड़ाई में जर्मनी हार रहा है, रूस जीत रहा है।

८ नवंबर : सुबह ८॥ बजे तक लाइब्रेरी में पढ़ता रहा, फिर गोयनकाजी के उधर ५ लाख के शेयर की बात की। ३ बजे गोयनका के १ लाख शेयर बेचे। ५ बजे घर आया खबर सुनी कि बजरंगलाल जी टाँटिया का देहांत हो गया। चित्त खिन्न हो गया। १५०० गाँठें पाट ७२) में बेचीं।

१३ नवंबर : कामकाज मिलों में कमती है। हिंद बैंक के शेयर्स की चिंता करता रहा। रात में ताराचंद जी के गया, सब कोई बीमार हैं, ४५) दिये। केसरी बहुत बीमार है, १००) दिए। उसके पेट में बहुत दर्द है।

१५ नवंबर : गंगा जी गया। बाजार मंदा, हैसियन २७।=) आना है। पाट समान में मंदा। आमदनी कमती। हम लोगों के ३०००० मन पोते हैं, भाव ७३), ६७), ६१) है। १२ बजे सलकिया प्रेस में आग लग गयी। साहब को ले जाकर सब काम ठीक करा दिया है। शायद कुछ कसर नहीं लगेगी। शाम को ५ बजे फिर प्रेस गया। भाई जी सब सल्टाने को बोले परंतु दिक्कत तो आ ही गयी है।

१६ नवंबर : सुबह मैदान जा नहीं सका। प्रेस गया। एस० मरे साहब के लोग आये। १० बजे तक हिसाब कर के ९४०००) तक पहुँचे। इंसपेक्टर आये। सब रिपोर्ट लिखी। ११॥ बजे घर आया। एस० मरे में जाकर सब केस पर बात की। ४२०००) बीमा कंपनी से मिला। सारे दिन में सिर्फ ४९ गाँठें निकलीं। कुछ भी बचा नहीं। बाजार मंदा था। कामकाज ६५) लूज का हुआ। केसरी सीरियस बीमार है। ७ बजे उसके घर गया। २००) दिये। उसकी हालत बहुत खराब है। पेट में जोर का दर्द है, मालूम देता है, बचेगा नहीं।

१७ नवंबर : सुबह ८ बजे प्रेस गया। पाट जोर से सुखाई हो रहा है। जले और भींगे माल की बछायी-सुखाई का काम प्रायः ५-६ दिन में हो जायगा। कामकाज एकदम ठीक नहीं है। शेयर मार्केट क्वायट है। पाट का बाजार भी मंदा है। हम लोगों के ३०००० मन पोते हैं। उसमें ५-७ हजार मन आज बेचा। प्रेस में, आग से मालूम देता है, खास नुकसान नहीं रहेगा।

५ दिसंबर : सुबह ११ बजे से १२ बजे तक जापानियों ने जबर्दस्त बंबारी की। खिदिरपुर में प्रायः ५०० आदमी हताहत हुए। नुकसान विशेष नहीं हुआ।

१४ दिसंबर : कामकाज एकदम कमती है। मन नहीं लगता है। पर भाई जी के जाने के पहले कहीं जा भी नहीं सकता। तबीयत भी कमजोर रहती है। कई दिनों की बंदी के बाद आज बाजार खुला था।

१६ दिसंबर : सुबह मैदान नहीं गया। डेडराज जी के घर गया। हिंद बैंक के शेयर की बातचीत की। हमारे प्रायः ७००० शेयर पोते हैं, बेचने की चेष्टा में हूँ। आज दिन में ११॥ बजे सायरन बजा। १२। बजे तक कहीं भी गोले नहीं पड़े। अब तो बंबारी का डर भी लोगों में पहले जैसा नहीं रहा। काफी लोग कलकत्ते वापिस आ गये हैं।

२९ दिसंबर : दिन में कोल माइन्स के बारे में छारिया जी से मिला। हिंद बैंक का शेयर ५-है। २००० शेयर कैंसल कराये हैं। अजित सिंह को झरिया भेजा। अर्जुनदास जी को कागज लिखा।

३१ दिसंबर : आज महीने का आखिरी दिन है। के० पी० गोयनका, डी० पी० गोयनका से मिला। हिंद बैंक के बारे में बातचीत की। शाम को अर्जुनदास जी झरिया-वाले के साथ स्टेशन गया।

१९४४

कलकत्ता

१ जनवरी : साल का पहला दिन है। मन में बहुत सी आशाएँ हैं। भगवान् का भरोसा है। सुबह से लेकर प्रायः दिन भर डालियों के काम में लगा रहा। चेस्टर, स्मिथ, लिटिल आदि, सब को गिन्नी भेंट की। दिन में 'पगली' सिनेमा देखने गया। दीपचंद चांडक इलाहाबाद चला गया। उसकी लड़की बीमार है।

२ जनवरी : सुबह से लेकर १२ बजे तक कई जगह डाली देने को गया। सब २३००) खर्च हुए। एंड्र्यू को और ७००)-८००) का घन देना पड़ेगा। मायर, ऑसबर्न, एंडरसन इन सब के घर मिलने गया।

३ जनवरी : सुबह मान साहब के पास गया। गोयनका के उधर मिलने गया। बाजार तेज है। भाव लूज १४॥-) पक्का बेल ७५), ६४), ६२) है। कैंडीज ३६), ३४) है। कामकाज शुरू हो गया है।

४ जनवरी : बाजार बहुत गरम है और भी बढ़ जायगा। प्रेस नहीं गया। भीखम चंद जी मुकाम से आ गये। नौका का पाट ३०० मन निकला है। मेरा ध्यान पाट पर गरम है, पर तेजी का सौदा नहीं होता। यही 'डिफेक्ट' है। शेयर मार्केट गरम है। हिंद बैंक ८) का भाव है।

५ जनवरी : पैर, हाथ में खुजली हो रही है। दस्त आ रहे हैं। बाज़ार ११ बजे खुला, गरम है। ६३।) में काम होकर 'बायर' (लेवाली) से और भी मजबूत होगा। हम लोगों के ३०००० मन पाट पोते हैं। रात में १२ बजे भाई जी का फोन बंबई से आया कि यदि हुंडी आयी तो उसके लिए रुपये का बंदोबस्त करना।

१२ जनवरी : भाई जी से रात में फोन से बातचीत हुई। कल रवाना होंगे। पाट का बाजार मजबूत। रामकुमार जी को काजड़िया का फैसला १४०००) में करा दिया। उनके वास्ते बहुत अच्छा हो गया। चमड़िया का पाट ४०००० मन बिका दिया। हम लोगों ने भी लिया।

१६ जनवरी : पूनमचंद जी दूगड़ के यहाँ भाई जी के साथ जीमने गया। बाजार मजबूत है। शेयर समान है। हिंद बैंक ८), ८॥) है। जुकाम हो रहा है।

१९ जनवरी : एलि साहब बोला, हेसियन मंदा होगा, इसलिए १५ लाख बाहर से २९।=) में बेचा। मकान देखने गये पर जँचा नहीं।

२० जनवरी : फोड़ा-फुंसी मिटी नहीं है। थोड़ा जुकाम भी हो रहा है। रतनी का विवाह चैत वदी २ का फिक्स हुआ है।

२१ जनवरी : देश को, मनी बाई को तथा राधाकिशन जी को कागज दिया। बाजार घटकर मजबूत पर कामकाज नहीं है। सुबह स्नान नहीं कर सका, खाना भी नहीं खाया, इसलिए चित्त बहुत सुस्त था। रात में डेडराज जी भरतिया के घर जीमा। दिन में बिरजू से कहासुनी हो गयी शेयर्स के बारे में। वह थोड़ा नाराज हो गया।

२२ जनवरी : एंड्रयू से १२ बजे का टाइम किया। दिन में स्टार थियेटर में 'दुर्गेशनंदिनी' बंगला नाटक देखा। बहुत अच्छा लगा। शाम को घर लौटकर यशपाल का 'दादा कामरेड' पढ़ा, लिखने का ढंग अच्छा है। मेरे मन में आता है कि समाजवाद उचित है पर कम्युनिज्म का तरीका शायद जोर-जबरदस्ती का है। 'दादा कामरेड' काफी इंटरेस्टिंग है।

२६ जनवरी : आज स्वतंत्रता दिवस था पर यहाँ कोई चहल-पहल नहीं थी, न लोगों के दिल में उत्साह। हो सकता है, गवरमेंट के भय से हिम्मत नहीं पड़ती। इन दिनों कांग्रेस वालों ने भी कोई खास आंदोलन वगैरह नहीं किया। शाम को 'शकुंतला' फिल्म देखी, अच्छी थी। घर आया तब मुझे बुखार था। कामकाज १०,००० मन का किया। बाजार थोड़ा अच्छा है। स्मिथ साहब से कहा-सुनी हो गयी। चित्त खिन्न हो गया।

२८ जनवरी : सर्दी है, बारिश हो रही है। अगर राजपूताना में इस माफिक मौसम होता तो लोग आनंद से नाच उठते, पर यहाँ सब उदास है। मेरा मन भ्रमण के लिये बहुत जोर से कर रहा है। पर जा कहाँ सकूँगा? दिन में 'स्नेहलता' किताब पढ़ता रहा, पहले की पढ़ी हुई थी। रात में राफे साहब का फोन आया। बीमार रहने से झूठ नहीं बोलने का काम पड़ता, मौन रहना पड़ता है, यह अच्छा है।

२९ जनवरी : थोड़ा बुखार-सा था। दिन में ऑफिस नहीं जा सका। जॉन गंथर की 'इन्साइड अमेरिका' पढ़ी। अमेरिका के बारे में खूब लिखा है। बहुत सी जानकारी मिली। कहाँ तक ठीक है यह तो कैसे पता पड़े? पिता जी आज आ गये, बनारस में सब राजी हैं। रात में बहुत जोर बिजली चमकी तथा वर्षा हुई।

३० जनवरी : आज बसंत पंचमी है। सुबह से ही लड़के सरस्वती-पूजा की तैयारी कर रहे हैं। खुश हो रहे हैं, हल्ला कर रहे हैं। काश, मैं भी इनकी तरह छोटी उम्र का लड़का होता। न कोई चिंता रहती, न कोई झंझट। रात में मोटर साइकिल चलाने का स्वप्न आया था।

२ फरवरी : कामकाज एकदम नहीं है। मन उड़ा-उड़ा रहता है। कल बनारस जाऊँगा। मदन की सगाई की बात हुई। पाट का भाव ८३), ७७) है।

बनारस

६ फरवरी : पटना होता हुआ बनारस आया। मन बदला है। कल और आज में ही। वैजनाथ जी और बसंतलाल जी केडिया से मिला।

कलकत्ता

१८ फरवरी : दिन में ५३००० मन का काम लिया। हम लोगों के ४०००० मन पाट पोते हैं। सुबह शाम दोनों टाइम ऑफिस गया। रामकुमार जी का पाट बेच दिया।

२० फरवरी : दिन में १२ बजे लड़की देखने मनसुखराय हजारीमल के गये। लड़की छोटी थी, इसलिये बात आगे नहीं बढ़ी। फिर २ बजे बोटेनिकल गार्डन में मैं बिहारी, गजराज जी सब गये बहुत खेले, कई तरह के खेल। बड़ा आनंद रहा। थोड़ी थकावट तो रही। पर खेले खूब। ५ बजे लौटकर गद्दी आया। ७ बजे घर आ गया। मनी बाई का कागज पढ़ा। पाट का बाजार समान है।

२२ फरवरी : आज शिवरात्रि है, व्रत नहीं किया। दीपचंद के घर थोड़ा नाश्ता किया। सुबह खाना नहीं खाया। कल वि० भरतिया के भात में पक्की रसोई खा ली थी। पक्की खाने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है। दिन में तबीयत ठीक रही। जिस दिन खाने में गोलमाल होता है तबीयत खराब होती है। बाजार में कामकाज एकदम नहीं है। लड़ाई समान चल रही है। लगता है, जर्मनी का खेल थोड़े दिन का रह गया। रात में बाजोरिया जी से मिलने गया। ९॥ बजे लौटा।

२५ फरवरी : सुबह ५॥। बजे उठकर दीपचंद के घर गया। वहाँ से ८ बजे लौटकर गद्दी आया। बाजार गरम है। ९०।),लूज। मिलों में बहुत कामकाज हुआ १३); १६)। हम लोगों ने ७० हजार मन का काम किया। सुबह पिता जी से, भाई जी से दीपचंद के बारे में तकरार हो गयी। मेरा मन अत्यंत खराब हो गया। पिता जी से मदन की शादी के बारे में बातचीत हुई।

३ मार्च : शरीर अच्छा है पर जुकाम है। शाम को चिरंजीलाल बाजोरिया के पास गया, मदन की सगाई की चेष्टा में। रात में बापू जी से बातें कीं। बहुत सी गलत बातें भी करनी पड़ीं। उपाय क्या ?

६ मार्च : रतनी के विवाह के लिए धर्मशाला में आ गये। वहीं खाना-पीना किया। अपने समाज में विवाह खासकर लड़की का विवाह तो बहुत दिक्कतों का बना दिया है।

११ मार्च : आज सुबह ५॥। पर उठे। आज रतनी का विवाह है। दिन में सारे दिन मिलनी और तरह-तरह के रसम-रिवाज होते रहे। शाम को ३॥ बजे कोरथ लेकर प्रायः

३०० आदमी सगों के गये। वहाँ से ६ वजे वारात आयी। रात में ११ वजे तक फेरे होते रहे, वड़ी विधि के साथ। लड़का अच्छा है, सव कोई वोलते हैं। घर भी अच्छा है।

१२ मार्च : आज सजनगोठ का जीमन है। सारे दिन काम की वहुत झंझट रही। सुवह विश्वा वहुत वीमार हो गया। कई डाक्टर आये। मेरा मन उदास हो गया। सजनगोठ में ८०० आदमी अंदाज जीमे। पर मेरा मन सारे दिन विश्वा की तरफ रहा।

१३ मार्च : आज सुवह घर में ही था। गीगा रात में वहुत वीमार था। वचने की उमेद भी नहीं थी। गुलावचंद जी लखोटिया की दवाई से वच गया। दिन में पहरानी होती रही। प्राय: २१०००) की पहरानी दी। सगे राजी हो गये। (शाम को ४ वजे सवों को विदा कर दिया।

१४ मार्च : रतनी का विवाह हो गया। मन में संतोष है। लड़की को अपने हाथ से घर से विदा करते समय मन कैसा-सा हो गया था। मगर यह तो करना ही था। विवाह में ४५०००) खरच हुए। सव लोग राजी हो गये। गीगा की हालत वहुत इंप्रूव्ड है। परमात्मा ने वचा दिया। मिलों में कामकाज हुआ। वाजार मजवूत है। तैयारी का वाजार गरम होगा। रात में जँवाई लोग जीम गये। २०० आदमियों का जमाव था।

१६ मार्च : धर्मशाला से घर में आ गये। शेयर मार्केट गरम है। हम लोगों के जो शेयर पोते हैं, उनमें नफा है।

१७ मार्च : कल रात में नींद अच्छी तरह नहीं आयी। वाजार भाव के सपने आते रहे। फाटका चीज खराव है, पर मेरी आदत सुधरती नहीं। इसमें लोभ है, गँवाई है, कमाई नहीं।

२३ मार्च : जापान मणिपुर में उतर आया। खवर है, आजाद हिंद फौज भी साथ है। हिंदुस्तान में खुशी तो है पर अंग्रेजों की कड़ाई वहुत है। साहव लोग घवराये नहीं लगते। दिन में २०००० मन का काम किया। मेरा मन जसीडीह जाने को कहता है पर पिता जी इधर हैं, इसलिये जाना नहीं चाहता।

२६ मार्च : गंगा जी जाता हूँ, तेल मालिश कराता हूँ। ठीक रहता है। ११ वजे दीपचंद के घर खाना खाया। २॥ वजे तक 'स्वीप' खेलता रहा। रविवार है। २ वजे गद्दी जाकर ६ वजे शाम को घर आया। वर्षा हो रही है। मेरा मन उदास हो रहा है पर ५-७ दिन के लिये वाहर जाना मुश्किल दिखायी देता है। जापान के मणिपुर की तरफ वढ़ने से वाजार क्वायट है। खवर है, सुभाष वावू की फौज ने मणिपुर इंफाल के पास हिंदुस्तान का तिरंगा झंडा फहरा दिया है।

२८ मार्च : १०,००० मन नये पाट का काम किया। मदन की सगाई की कोई तदवीर नहीं वैठती। पिता जी इसीलिए कलकत्ते में ठहरे हैं। माता जी की उदासी की चिट्ठी आयी है। वात २-३ जगह चलती है। जल्दी ही वाहर जाने का मेरा विचार है। एक

महीने के वास्ते। कामकाज प्रायः सलट गया है। १५ ता० से अप्रैल तक संयम से रहने की प्रतिज्ञा की है। दीपचंद आया था। उसको फाइनेंस की ट्रबल है। उसको समझाता हूँ, घर-व्यापार को ठीक करो मगर ध्यान कमती देता है। समाज के काम में मन लगाता है।

२ अप्रैल : आज रामनवमी है। रविवार भी। वंदी का दिन है। १२ वजे राम मंदिर में गये। वहाँ जलसा था। २॥ वजे तक दीपचंद के घर ताश खेलते रहे। ३। वजे हनुमान गार्डन में गये। छात्र निवास का जलसा था। वहां पार्वती हिम्मत सिंहका सितार हुआ।

जसीडीह

६ अप्रैल : सुवह १२ वजे जसीडीह के लिये ट्रेन से चले। ज्वालाप्रसाद भरतिया, तुलसी भाटिया, मानीराम मालोटिया, घनश्याम पोद्दार, रामप्रसाद डालमिया, साँवलराम सराफ, वनवारी लाल सराफ, मालू जी—मैं तथा ८ नौकर, जयदेव पांडेय। रेल में आसनसोल में खूब ख़ाना खाया, फिर ताश खेलते रहे। ९ वजे पहुँचे। भूघर बाबू थे, गौरी थी। दूध गरम तैयार था।

७ अप्रैल : तेल मालिश और स्नान किया। खा-पीकर दिन में ४ वजे तक सोते रहे। जगह सव कोई को थोड़ी जँच गयी हैं। शाम को पक्की रसोई होती है। गाड़ी तापड़िया की है। एक सोन्थलिया के यहाँ से आ गयी है। सव कोई खूब प्रेम से रहते हैं, सिर्फ मालू जी को सव कोई छेड़ते हैं।

११ अप्रैल : रात में सोने में देर हो गयी थी। सुवह ७ वजे उठा। २ वजे रात तक ज्वालाप्रसाद जी भरतिया से वातें करते रहे। ११॥ वजे खाना खाया। वैजनाथ बाबू, ईश्वरी प्रसाद जी गोयनका, खाने पर आये थे। ४॥ वजे तक ताश खेलते रहे। ६ वजे स्टेशन गये। सव कोई को पहुँचा दिया। तवीयत वहुत अच्छी है। लड़ाई की खवर खास नहीं है। जयप्रकाश वावू की खवर इधर नहीं मिली।

कलकत्ता

२१ अप्रैल : सुवह मैदान गया, कसरत की, गद्दी गया। शेयर में विरजू को नुकसान हो गया, मैंने उसे वहुत कड़ी वात कही। नहीं कहनी चाहिए थी। उसका मन उदास हो गया।

२२ अप्रैल : सुवह ६ वजे उठा। कुश्ती लड़ी, कसरत की, गंगा जी गया। ९॥ वजे ऑफिस, १०॥ वजे वापिस घर। दिन में गद्दी गया। कामकाज नहीं, मन उचटा रहा। वाइफ तथा विरजू दोनों नाराज। विरजू वाले काम में मेरी गलती है।

२५ अप्रैल : मदन की सगाई कलकत्ते हो गयी। लड़की अच्छी तरह देख ली, अच्छी है।

२७ अप्रैल : दिन में थोड़ी देर के लिये ऑफिस गया। कामकाज नहीं। मोहन लाल जी जालान से मिला। ३॥ वजे स्टेशन पर आ गये। ४ आदमी थे, पिता जी साथ थे। ४॥ वजे ट्रेन छूटी। १५-२० दिन के लिए जाने का विचार है। साहव लोगों ने कह दिया है।

सरदार शहर

२ मई : यहाँ आये आज तीसरा दिन है। दिन में गरमी और रात को सर्दी पड़ती है। लोगों से मिलता रहता हूँ। अपना गाँव, अपने लोग अच्छे लगते हैं। व्यायामशाला जाता हूँ। कल गौशाला की मीटिंग में टांटियों के १५००) मांढे। आज ६ वजे सुवह गौशाला गया। गौएँ देखीं। वंदोवस्त अच्छा है, फिर वाजार गया। फड़दी मँडाने को गये। २१००) हँसारियों का मंडाया।

५ मई : गौशाला के चंदे की चेष्टा में दिन में रहता हूँ। मन लग गया है। सुवह अछूत पाठशाला में गया। २० लड़के हैं। ३००) दिये। वहुत अच्छा काम है। इन लोगों के लिखाने-पढ़ाने से आगे चलकर छुआछूत हट जायेगी। ४ वजे मनोरंजन नाटक परिषद् का 'प्रताप प्रतिज्ञा' नाटक देखा। ऐतिहासिक नाटक है, पार्ट सामान्य सा हुआ। दो पदक मैंने देने को कहे।

७ मई : कलकत्ते का तार आया। मुझे वुलाया है। जाना पड़ेगा। यहाँ गौशाला के काम में, लाइब्रेरी में भी कितावें और आलमारी का वंदोवस्त करना होगा।

९ मई : दिन में १॥ वजे सरदार शहर से चला। फर्स्ट क्लास का टिकट लिया। डूडेरा उतर गया। नंदलाल जी भुवालका से मिला। वहाँ से ताँगा से महादी वाई के घर गया। वह रो रही थी। वड़ा जी खराव हुआ। वहाँ से घोड़ी से स्टेशन आया। घोड़ी कंट्रोल में नहीं रही। मगर फिर सुधर गयी, स्टेशन पहुँच गया। सरदारशहर की ट्रिप 'ऑन दि होल' वहुत अच्छी रही।

मथुरा

१० मई : दिल्ली होता हुआ मथुरा रात के ८ वजे पहुँचा। धर्मशाला में रुका। यमुना जी में स्नान किया। खाना खाया। वद्रीदास के घर गया, वह मिला नहीं। रात ११ वजे तक शहर घूमता रहा। साधारण-सा शहर है, खाने-पीने की चीजें मिल जाती हैं। इसे देखकर ऐसा नहीं लगता कि कभी यहाँ वहुत वड़ा शहर रहा होगा। मथुरा में पत्थर की कारीगरी वहुत वढ़ी-चढ़ी थी। म्युजियम में देखने में आती है। रात में ११ वजे छत पर सोया। दिमाग में वहुत सी वातें आती रहीं। फिर नींद आ गयी।

वृंदावन-ग्वालियर-झाँसी

११ मई : सुवह ६ वजे वृंदावन चला आया। रमण रेती देखी। प्रायः ४ मील घूमा। वृंदावन वड़ी सुंदर जगह है, पर चित्रकूट के समान नहीं। यहाँ के लोग इस ढंग से वात करते हैं कि लगता है, व्रजभाषा में मीठापन नहीं है। लक्ष्मीचंद सेठ का वहुत वड़ा मंदिर देखा। पुजारी मद्रासी है। जमुना स्नान किया। १०॥ वजे मथुरा लौट आया। फिर स्टेशन गया। ३॥ वजे मथुरा से ग्वालियर पहुँचा। धर्मशाला में सामान रखा। खाना खाकर दुर्गादत्त सरावगी से मिलने गया। शहर खूव घूमा। वहुत सुंदर शहर लगा।

किला वहुत ही वड़ा है। विड़ला की मिल्स भी वहुत वड़ी है। शहर का चौक देखा। कारवार की स्थिति यहाँ अच्छी है। रात ११ वजे गाड़ी से झाँसी पहुँचा।

कानपुर-मुगलसराय

१२ मई : सुवह ७ वजे ट्रेन में नींद खुली। ९ वजे कानपुर पहुँचा। सीताराम को स्टेशन पर छोड़कर वाजार गया, वहुत घूमा। नावेल्टी सिनेमा के सामने पंडित पृथीनाथ का कालेज देखा। अच्छा वड़ा है। मूलगंज, कचहरी आदि सव देखे। मुसलमान यहाँ काफी हैं। कुछ अक्खड़ टाइप भी हैं। गणेशशंकर विद्यार्थी जी की याद आ गयी। कानपुर पहले से वहुत वड़ा शहर हो गया है। अंग्रेजों की वी० आई० सी० कंपनी यहाँ की वहुत वड़ी है। सूत , ऊन, चीनी, चमड़े, वगैरह के कारखाने अच्छा पैदा करते हैं। मेरे मन में आता है, हमारे पास भी इस माफक कुछ होता। वहुत लोग काम करते, हमें भी आज जैसी भाग-दौड़ नहीं करनी पड़ती।

खाना खाकर १। वजे की पार्सल से इलाहावाद पहुँचा, मगर दीपचंद चांडक के उधर जाने का विचार हटा दिया। ९ वजे रात को मुगलसराय पहुँचा। रात में स्टेशन पर ही सो गया।

वनारस

१३ मई : सुवह ६।। वजे की गाड़ी से वनारस पहुँचा। ७ वजे गंगा जी गया। तेल मालिश करायी। गंगा पार की, तैरकर। १२ वजे जीमा। मा जी और लक्ष्मी कुंड में हैं। कुछ ठंड है। परमात्मी भी थी। महादी वाई की वात सुनकर उदास हो गयी। दिन में २।। की गाड़ी से मुगलसराय आ गया। रेल के सफर में अव कुछ थकावट मालूम देती है। ४ वजे ट्रेन मिली। इंटर क्लास में जगह थी। गरम वहुत ज्यादा है, पसीना वहता रहता है।

कलकत्ता

१८ मई : कलकत्ते आये आज पाँचवाँ दिन है। तैरना चालू रखा है। दीपचंद अभी इलाहावाद से नही लौटा है। शादी-विवाह हो रहे हैं। शाम को कई वारातों में गया। शादी-व्याह में दिखावा और रस्म वगैरह में टाइम और पैसा फ़जूल लगता है। समाज को इस पर अव ज्यादा ध्यान देना चाहिए। रात में जोर की आँधी आयी और पानी वरसा, इसलिये ठंड हो गयी है। वाजार में कामकाज एकदम नहीं है।

२० मई : कल २५००० मन का काम किया और आज भी २५००० मन का हुआ। वाजार मजवूत है। ३ वजे तक न्यू मार्केट में चीजें खरीदता रहा। ५ वजे क्रेस्टे साहव की लड़की की शादी में गया। ६ वजे घर लौटने पर पता चला, कोई नथ चुरा ले गया।

२५ मई : घर के सब लड़के तालाब जाते हैं। तैरना सीखते हैं। खुश हैं। मुझे अपना बचपन याद आता है। हम भी अपने गाँव के आसपास के धोरों पर खेलकर कितने खुश होते थे। घोड़े और ऊँट की सवारी और तैरना सीखते थे। बाजार तेज है। काम-काज होता है। हिंद बैंक ५८॥) है। दीपचंद आ गया है, उसके रुपयों की टान है। टान तो रहनी है। कामकाज पर ध्यान कम रखता है।

८ जून : सुबह तालाब नहीं गया, गद्दी चला आया। दिन में बाजार गया। शाम को फुटबाल में नहीं गया। बाजार समान है। रात में पोद्दार के गया। १० बजे तक था। गंगा जी गया था, मालिश करायी, स्नान किया। बृजलाल धूबड़ी से आ गया।

१४ जून : गंगा स्नान किया। १० बजे ऑफिस आया। कामकाज एकदम नहीं है। पाट का बाजार समान। १२००० गाँठ पक्का का काम किया। बिड़ला जी की मोटर कंपनी के शेयर्स लिए। शाम को मोहमडन स्पोर्टिंग का फुटबाल देखने गया। खेलते अच्छा जरूर हैं, पर रफ हैं। मुझे मोहन बागान की टीम का खेल अच्छा लगता है। फुर्ती है, सफाई है। इसी टीम ने अंग्रेजों को सबसे पहले हराया था।

१७ जून : बिड़ला के मोटर शेयर की धूम है। मैंने भी चेष्टा कर रखी है। गरमी बहुत है, टेंपरेचर १०५ डिग्री, ह्यूमिडिटी भी बहुत है। पसीने से बदन चिपचिपाता है।

२२ जून : हिंदुस्तान मोटर के शेयर्स की चेष्टा कर रहा हूँ। ५-६ लाख की बात है। कंपनी की धूम है। मेरा ध्यान है, बिड़ला जी बहुत बड़ा काम कर रहे हैं। हिम्मत का काम है। रोजगार बढ़ेगा। मन फिर बाहर जाने का हो रहा है।

२४ जून : सुबह गंगा जी गया। दिन में दीपचंद के घर ४ बजे तक ताश खेला। ८॥ बजे तक रासलीला का बंदोबस्त किया। ९। बजे लीला शुरू हुई। साधारण सी थी, फिर भी अच्छी हुई। माखन चोरी-लीला थी। रात में १२ बजे तक होती रही। हम लोगों ने डेडराज जी की सीर में ६००० लूज पोते किया है।

३० जून : शाम को ६ बजे 'विजय' बंगला तमाशा देखने गये। अच्छा था। शरद बाबू की विजया का पार्ट मलिना ने किया और नरेन का विश्वनाथ भादुड़ी ने। सिनेमा-थियेटर प्रायः देख लेता हूँ। मन बदल जाता है, पर जब कोई फालतू फिल्म में चला जाता हूँ तो बहुत खराब लगता है। हाफ-टाइम में आना पड़ता है, फजूल में खर्चा होता है।

२ जुलाई : पेशाब की तकलीफ फिर हो गयी। तीन-चार दिनों से है। कल सुई ली। तकलीफ वेसी हो गयी। क्यों ऐसा होता है, समझ में आता नहीं। पेशाब, खून में कोई डिफेक्ट नहीं मिलता। ९ बजे मेडिकल कॉलेज गया। साउंड ली, पर कुछ नहीं हुआ। खून काफी आ गया। १० बजे घर आ गया। बूँद-बूँद पेशाब हुआ। घबराहट है।

८ जुलाई : ऑफिस में कामकाज एकदम नहीं है। बाजार मंदा है और भी मंदा हो सकता है। लगता है, लड़ाई ज्यादा लंबी नहीं चलेगी। स्टोरिंग के काम की चेष्टा जोर से कर रहा हूँ। मार्टिन कंपनी तथा रामनाथ जी बाजोरिया के शू सुबह मार्टिन साहब

के घर गया, उससे मिला। बारिश होती है। शेयर मार्केट बहुत गरम है। पेशाब की तकलीफ कमती है। रात में 'माई कंट्री, माई पीपुल' पढ़ रहा हूँ।

१२ जुलाई : मार्टिन का रामनाथ मुखर्जी नारायणगंज का बोलता है। इस पर सोचना होगा। रात में ८ बजे पेशाब बंद हो गया। गरम पानी में बैठा, बहुत कष्ट हुआ। गार्डनल ली। थकावट बहुत आ गयी। रात में १२ बजे पेशाब हुआ, तब नींद आयी।

१३ जुलाई : दीपचंद का फोन था। उसने साउंड लेने को कहा, पर नहीं ली। शाम को फुटबाल में गया। मोहन बागान और ईस्ट बंगाल में खेल हुआ। कामकाज एकदम नहीं है। कोयले की दिक्कत मिलों में है। लाइटिंग पाट का ७९।=) है। स्टोरिंग एजेंसी अभी तक नहीं हुई, बातचीत चल रही है।

१५ जुलाई : १२॥ बजे हटखोला। वहाँ से काशीपुर प्रेस गया। शाम को ५ बजे साउंड ली, दर्द बहुत हुआ। खून आ रहा था। पेशाब खूब खुलासा होने लग गया। ६ बजे 'विश्वास' सिनेमा में गया।

१८ जुलाई : तीन-चार दिन से बुखार है। आज नहीं हुआ है। मगर इस बार बहुत कमजोर कर दिया। नारायण गंज से सत्यनारायण आ गया है। स्टोरिंग के लिये गोदाम नहीं मिला।

२० जुलाई : बुखार नहीं है। दवाई ले रहा हूँ। दूध पिया, २ फुल्के भी लिये। जसीडीह जाने का विचार है। दीपचंद आया था। उसकी फाइनेंस स्थिति ठीक-ठीक है। जसीडीह की कोठी मैंने बेचने को उस पर ज़ोर दिया।

२३ जुलाई : मानव बाबू के लड़के की बहू देखने गया। उधर से १०॥ बजे लौटा। जर्मनी में हिटलर के खिलाफ विद्रोह की खबर है। शेयर मंदा, पाट तेज है।

२६ जुलाई : सुबह मैदान नहीं गया, गंगा जी भी। दीपचंद की कोठी ९५००) में बाजोरिया को बेच दी। सूरजमल नागरमल से १०००० मन पाट बेचा। पाट का बाजार समान है।

२९ जुलाई : सिनेमा जाने की बात थी, पर नहीं गया—कामकाज में लगा था। गद्दी में ही था। आजकल कमजोरी मालूम देती है।

३० जुलाई : दिन में २ बजे तक गद्दी में था। फिर बंगाल मिल गार्डन में गया। रात में १० बजे तक था। प्रायः २५ आदमी थे। बहुत अम्यूज़मेंट रहा। नारायण स्वामी साधू भी थे। विद्वान् तो हैं, मगर बातचीत में बहुत बेहया। मालूम नहीं लोग क्यों इनको मानते हैं। इन्हें वाक्सिद्ध कहते हैं जो बोलते हैं, होता है। बहुतों को फाटका का भाव बताते हैं। मुझे तो कमती जँचे।

३ अगस्त : बाजार क्वायट है। टर्की ने जर्मनी से रिलेशन तोड़ दिया।

६ अगस्त : दिन में पाट के दलालों का बगीचा था। बाजोरिया का बगीचा है, साधारण

सा है। उसमें प्राय: २५ आदमी गये थे। बड़ा आनंद रहा, ताश खेलते रहे। उधर से ३ बजे लौटे। रात में १० बजे तक गद्दी में काम किया।

९ अगस्त : आँव के दस्त बहुत लगते हैं। वैद्य की दवा ली। कामकाज नहीं है, बाहर जाने का विचार कर रहा हूँ। देवीबाबू का फोन था, सोदपुर पिंजरापोल के मंत्रित्व सम्हालने की बात कहते हैं। मेरे कम जँचती है। सरदारशहर गौशाला का काम करता हूँ। दोनों साथ नहीं चलेगा। आज ९ अगस्त है, 'भारत छोड़ो' आंदोलन की बात आयी-गयी हो गयी। जयप्रकाश बाबू और की कोई खबर नहीं।

१३ अगस्त : बारिश बहुत जोर थी। ११ बजे गद्दी गया। एक बजे घेलिया के २६ नं० तारचंद दत्त स्ट्रीट गया। ६॥ बजे तक ताश खेला। फिर फुचका तेल की कचौरी, बड़ा वगैरह खाया। पेट खराब होगा परन्तु मन पर वश नहीं रखता।

१६ अगस्त : कामकाज थोड़ा किया। बाजार मंदा है। किशनगंज का पाट चढ़ रहा है। मिलों में कामकाज कमती है। सत्यनारायण का शिलांग जाने का विचार है, इसलिए मैंने मिरजापुर जाना पोस्टपोन कर दिया।

२२ अगस्त : रात नींद अच्छी तरह नहीं आयी। तबीयत ठीक रहती नहीं। ११ बजे ऑफिस आया। दीपचंद की कोठी की लिखा-पढ़ी के वास्ते बाजोरिया को फोन किया। गोशाला तथा मंदिर का काम भी अटका हुआ है, मेरे ही लिए। पाट का बाजार समान में मंदा है। कामकाज एकदम नहीं है। मुकाम तेजी है। चमड़िया तथा काजड़िया के काम सलटाने की चेष्टा कर रहा हूँ। अंग्रेजों की लड़ाई की कोई खास खबर नहीं। सुनते हैं, अंग्रेज हिंदुस्तान को लड़ाई के बाद एक रकम की आज़ादी देंगे, शायद पूरी आजादी नहीं।

२७ अगस्त : और रविवार के माफिक आज किसी गोठ में नहीं गया। पेट खराब है, मन भी उदास। दिन में दीपचंद वगैरह ५-७ आदमी आ गये। ६॥। बजे तक ताश खेलते रहे। दीपचंद से ९ बजे तक बात चलती रही। कह रहा था, अब तो लगता है, अंग्रेज लोग जीत रहे हैं। रूमानिया भी उसके साथ हो गया। मैंने कहा, अंग्रेजों की हार-जीत में अपना क्या, कमाई का मौका खोते हो। वह हँसने लगा। उसके तो महासभा की धुन है।

१० सितंबर : दिन में पिंजरापोल की मीटिंग में २ घंटे लग गये। फिर ७ बजे तक ताश खेलता रहा। सुबह गंगा जी गया था। अब कँकड़े कमती हो गये हैं। दीपचंद फाटका बहुत करने लग गया है। मैंने उसे बुराई बतायी। मगर मैं भी तो फाटका कर लेता हूँ। मुझे फाटके के बहुत सपने आते रहते हैं।

१४ सितंबर : मन पर काबू नहीं; जीभ पर भी नहीं। जहाँ-तहाँ खा लेता हूँ। पेट खराब हो जाता है। शाम को १३०० गाँठ डिक्लरेशन में फर्क पड़ गया, २०००) की कसर लग गयी। मन खराब हो गया। फाटका बहुत बुरी चीज है पर छूटती नहीं। अब ६ महीने की प्रामिस करता हूँ, एक बार भी नहीं करूँगा।

गौहाटी

१९ सितंबर : १५ की रात को कलकत्ते से रेल से चला। इंटर क्लास थी, तकलीफ ज्यादा नहीं रही। परंतु गरमी वहुत है। साथ में जगदेव हैं। रात ८॥ वजे किशनगंज, पूर्णिया, कटिहार होता हुआ कल गौहाटी पहुँचा। मिल में ठहरा। वहुत मच्छर हैं।

२० सितंबर : सुवह ६ वजे उठा। हजामत वनायी, तेल मालिश कराके स्नान किया। थोड़ा घूमा भी। घानुका के यहाँ भोजन भी किया। उन्होंने मुझे पहचाना नहीं। १२ वजे पहचाना। खातिर की। १॥ वजे मोटर से वस स्टेशन आया। घनश्याम पोद्दार आदि ७-८ आदमी मिले। थर्ड क्लास लारी में वैठकर ७ वजे शिलांग पहुँचा। रास्ते में दृश्य अच्छे थे। कारवार व्यापार की गुंजायश वढ़ती मालूम पड़ी।

शिलांग

२१ सितंबर : रात में सरदी मालूम पड़ी। सुवह ६ वजे नींद खुली पर उतनी सरदी नहीं थी। दृश्य वहुत अच्छे हैं। हवा साफ और ताजा है। मकान भी सुंदर है। १४ आदमी हैं। मन एकदम लग गया है। ३ वजे हाट देखने आये। अच्छी हाट लगती है। स्त्रियों में स्वास्थ्य और सुंदरता है। परदे का सवाल ही नहीं। सत्यनारायण का फोन था, गौहाटी आ गया है। झावर सुरेका से मिला।

२२ सितंबर : तवीयत ठीक है। दिनमें ३-४ मील घूमने गया। अच्छी वस्ती है। पहाड़ी लोग खसिया जाति के हैं। भाषा समझ में नहीं आती। औरतों के चेहरे पर हँसी-मुस्कान रहती है। इसाई मिशनरी वालों ने वहुतों को इसाई वना लिया। वना रहे हैं, खुद भी यहाँ लोग वनते जाते हैं। इससे काम-काज का सुभीता इन्हें मिल जाता है। दवाई-इलाज भी विना खर्च हो जाता है। शाम को ६॥ वजे काउंसिल हाउस में दो अमेरिकन मिले। उनसे वातचीत हुई। अपने को न्यूज कॉरेसपोंडेंट वताया। कहते थे, शिलांग में कोरप्शन वहुत है। हरेक औरत प्रॉस है। मुझको वुरा लगा। मगर चुप रह गया। अमेरिकन लोग अंग्रेजों को गरीव और पिछड़ा समझते हैं। लड़ाई के वारे में वताया कि जापान जल्दी हथियार डालेगा।

शिलांग, चेरापूंजी

२३ सितंबर : सुवह सत्यनारायण गौहाटी चला गया। वापिस आने को बोल गया है। ९ वजे वस से सव कोई चेरापूंजी गये। रास्ता वड़ा ही खतरनाक है, वारिश हो रही है, होती ही रहती है। दुनिया में सवसे अधिक वर्षा चेरापूंजी में होती है। शहर छोटा सा है। एक पहाड़ी के घर आये। वड़े ही भले आदमी हैं। अच्छा खाना खाया। यहीं पहली वार हाथियों का झुंड देखा। फोटो उतारा। रास्ते में पहाड़ी लोगों का नाच देखा।

शिलांग

२४ सितंबर : पहाड़ पर वहुत दूर ऊँचाई पर चढ़ गया। साथ में टेडीदत्त था। वह ज्यादा ऊपर नहीं चढ़ सका। मैं एकदम ऊँची चोटी तक पहुँच सका। वहुत सुंदर दृश्य देखे। जैसे-जैसे ऊपर चढ़ता जाता था वैसे-वैसे दृश्य भी सुंदर होते जाते थे। ऐसा

लगता कि नीचे की दुनिया छोड़कर किसी नयी जगह जा रहा हूँ। उतरती दफे थोड़ा डर जरूर मालूम पड़ा।

गौहाटी

२८ सितंबर : सुवह ५॥ वजे उठा। शहद लाने निकल गया। यहाँ का शहद मशहूर है। पर यह वड़े ही झंझट का काम है। मोल-भाव वहुत करते हैं। अच्छे शहद के लिए कई जगह भटका परंतु मन माफिक मिल गया। शिलांग से वस में वैठकर गौहाटी आया। रास्ते में सीन वहुत अच्छा था।

कलकत्ता

३० सितंबर : सुवह आलस-सा आ गया। देर से उठा। ऑफिस गया। नानी जी की तवीयत उसी माफिक है। वनारस का कागज था। विरजू के कफ में खून आता है, चिंता हुई।

२ अक्तूबर : सुवह ७। वजे से ही पिकनिक पार्टी में चाँदपाल घाट गए। १२ आदमी थे। जहाज से चंदन नगर गए। दिन भर घूमना, और खाना-पीना चलता रहा। ज्यादा खा लेने से उल्टी हो गयी। मुझे कंट्रोल रखना चाहिए। चंदन नगर फ्रेंच वस्ती है पर यहाँ वंगाली ज्यादा हैं, फ्रेंच वहुत ही कम दिखाई पड़े। साफ सुथरी जगह है। शराव की दुकानें वहुत हैं। कलकत्ते से लोग विलायती शराव और मौज-शौक के लिए भी यहाँ आते हैं। रात ८ वजे वस से वापस आया, इससे तवीयत और भी ज्यादा परेशान हो गयी। वेसी खा लेना खराव ही है, कोई वहादुरी नहीं।

५ अक्तूबर : लड़ाई मिटती नजर नहीं आती। जर्मनी ने पोलैण्ड की राजधानी वारसा ले लिया, वाजार वहुत मंदा है। फाटका ७८=) से ७७।) रहा। दिन में ऑफिस में ८००० मन तोसा का काम किया। न जाने क्यों चित्त उदास रहता है। अभी वाहर शिलांग, गौहाटी से घूमकर आया हूँ परंतु मन दूसरी जगह जाने का रहता है। रात में दुःस्वप्न आते हैं।

८ अक्तूबर : आज रविवार था। कहीं पार्टी और गोठ में नहीं गया। सारे दिन गद्दी के वुहारने में लगा रहा। वाजार में पक्की गाँठ का काम होता है। हम लोगों के ऑफिस में नहीं होता। मेरा मन फिर उचाट रहने लगा है। कुछ निकम्मा-निकम्मा-सा मालूम देता है।

१५ अक्तूवर : सुवह वालचंद जी मोदी के साथ मैदान गया। फिर ९॥ वजे समाज मंदिर में ११ वजे तक व्याख्यान सुना। १२ वजे खा-पीकर घेलिया के मकान में ताश खेलने गया। ६ वजे तक खेलकर घर गया। टाइम खो जाने पर कुछ सुस्ती अनुभव करता हूँ। मगर कामकाज नहीं है, इसलिए ताश खेलता हूँ, सिनेमा चला जाता हूँ।

मेरा मन कहीं दूर रहता है। संसार से कुछ वैराग्य-सा हो जाता है। परंतु कामकाज रहने पर उसी में लग जाता हूँ, सब भूल जाता हूँ।

१६ अक्तूबर : आज दीवाली है। रात में रोशनी साधारण हुई। थोड़ा-बहुत उत्साह था। मुझे लगता है उत्साह केवल पैसेवालों में होगा। गरीब के लिए दीवाली नहीं होती। वह कैसे मनायेगा? हमारे पैदा भी गयी साल अच्छी हुई।

२५ अक्तूबर : आज गोपाष्टमी है। बच्चों को लेकर लिलुआ गौशाला गया। ६ बजे तक था। बच्चे बहुत खुश थे। मैं सोचता हूँ कि कुछ लिखा करूँ। इसके लिए अभ्यास करना होगा। इससे मन पर कंट्रोल भी रहेगा।

२६ अक्तूबर : बाजार मंदा है पर फाटका मजबूत है, मैंने फिर शुरू कर दिया है। यह मेरी बहुत खराब बात है, परंतु आदत छूटती नहीं। काशीपुर गया, ३ बजे 'पत्थरों का सौदागर' देखने गया। रात में १० बजे सोया।

३१ अक्तूबर : व्यायाम चल रहा है, शीर्षासन भी थोड़ा शुरू किया है। चित्त शांत तथा प्रफुल्ल मालूम देता है। दिन में जैनियों का जुलूस था इसलिए बाजार बंद-सा रहा।

१ नवंबर : व्यायामशाला से लौटकर रामनाथ जी बाजोरिया के उधर गया। जैनियों की कांनफ्रेंस हो रही है। बड़े-बड़े आदमी बाहर के आ रहे हैं। १५ हजार मन का काम किया। फाटका ७७।≡)।

११ नवंबर : बाजार में कामकाज कमती है। बी० ट्विल एकदम फ्लैट हो गयी। ५७॥) ऊपर में, लास्ट वीक ६२।) थी। हाजी हबीब पाट लेता है।

१७ नवंबर : सुबह कसरत कर के मैदान गया। बीकानेर महाराज कलकत्ता आ रहे हैं।

२४ नवंबर : कसरत कर के शर्मा जी के उधर गया। इनकमटैक्स का सीरियस केस हो रहा है। कल एली साहब के कहने से हेसियन लिये। शाम को बाजार बढ़ा, पर मैंने भय से सौदा बराबर कर दिया। फिर जोर से फाटका होने लग गया है। शाम को ५ बजे बीकानेर महाराज की मीटिंग में गया।

२९ नवंबर : आज कसरत नहीं कर सका। पेशाब की थोड़ी तकलीफ चल रही थी। १२॥ बजे तक पेशाब नहीं हुआ, बहुत कोशिश की, शरीर थक गया। १२॥। बजे डॉक्टर बाबू ने 'साउंड' दी तब पेशाब उतरा। चिंता मिटी। १ बजे से २ बजे तक ऑफिस में था। २। बजे घर आया। पैर दर्द कर रहे थे। शाम को ४॥ बजे मदन की बारात निकली, ६०० आदमी थे। मदन अच्छा लग रहा था। सगों के यहाँ कुल्फी वगैरह ली।

३० नवंबर : सुबह ४ बजे उठा। पिता जी वगैरह सब कोई फेरे कराकर लौटे। मुझे कमजोरी मालूम दे रही थी, इसलिए नहीं जा सका। सब काम अच्छी तरह हो गया।

दिन में ऑफिस गया। डेडराज जी वैसी बीमार हैं। दीपचंद को फोन किया, ४-५ दिन में आयगा। ३००० गाँठ का काम ७४) में हुआ। शाम को ५ बजे फिर डेडराज जी के गया। उधर से ६ बजे घर आया। रात में १० बजे सर्गों के यहाँ सजन गोठ में गये, जीमे।

६ दिसंबर : इनकम टैक्स के केस की फिकर हो रही है, कोशिश पूरी कर रहा हूँ। दो-चार दिन में अड़ंगा मिट जाएगा परंतु जब तक नहीं मिटता शांति नहीं मिलती। पाट ७७।।।=) आना रहा, बहुत गरम। मुझे बहुत चिंता हो रही है, क्या होगा परमात्मा जाने।

११ दिसंबर : सुबह ६। बजे उठा। माँ के पास बैठा रहा। ७।। बजे कसरत करने गया। ८ बजे तक गद्दी मे था। ९। बजे ऑफिस गया। फिर घर से १२ बजे स्टेशन गया। १२।।। बजे तक था। भगवती, मा जी, पिता जी, जगदेव सब कोई जसीडीह गए। दिन में भाव ७५≡) से ७५।≡) आना तक था। हम लोगों के ४६७५० गाँठ मत्थे रहे। रुपये गद्दी से तथा डेडराज जी से मँगाकर सब कोई के दिये। दीपचंद आ गया।

१२ दिसंबर : रात में १२।। बजे साह जी के यहाँ से फोन आया। हम लोग गये। साह जी का 'हार्ट फेल' हो गया। बड़ा रोना-धोना रात भर रहा। अच्छे थे, पर उपाय क्या? मौत के आगे सुनवाई नहीं, परंतु मन तो दुखी हो ही जाता है।

१३ दिसंबर : सुबह ५ बजे अर्थी के साथ नीमतल्ला गया। १०।। बजे वहाँ से लौटा। मन बहुत खिन्न था। ऐसा लगा, जिसके साख नहीं वह खाली राख रख जाता है और साख वाला साख और राख दोनों छोड़ जाता है। सेठमल जी बहुत ही अच्छे आदमी थे, हम लोगों पर लड़कों की जिम्मेदारी आ गयी।

१८ दिसंबर : इनकम टैक्स का काम सलट रहा है। दिन में दो बार इनकम टैक्स ऑफिस गया। ५१२५) टैक्स लगा है। अफसर ने बड़ी खातिरी की। मन और शरीर स्वस्थ है।

१९ दिसंबर : इनकम टैक्स की झंझट सलट गयी है। दिन में अफसर मिला था, शाम को उसके घर गया। परमात्मा ने यह चिंता मिटा दी। ४-५ दिन में जसीडीह जाने का विचार है। पाट का बाजार ७८।) है। टोन क्वायट है।

२० दिसंबर : बाजार क्वायट है, ७८=)। प्रेस में स्ट्राइक हो रही है। दिन में ऑफिस में थोड़ा काम कवरिंग का किया। शाम को बहुत घूमें, जमीन देखकर आये।

२१ दिसंबर : बाजार गया, कामकाज नहीं है। शाम को दीपचंद के यहाँ जीमा। ७ बजे ही सो गया। रात में पूरी नींद आयी पर इतनी जल्दी सोना अच्छा नहीं फील करता हूँ। शाम को अम्यूजमेंट चाहिए।

२२ दिसंबर : आज ३० सिल चाँदी बेची। भाव २) से ३।) बढ़ गया।

२५ दिसंबर : दिन में क्रिस्टे को, एन्ड्रयू, स्मिथ को—तीन जगह डाली दी। और भी

कुछ पीछे देने की वात है। नंदू का जसीडीह जाने का विचार है। गुलाव के फूल १०) के १३ लिये।

जसीडीह

२६ दिसंवर : सुवह ५॥ वजे जसीडीह स्टेशन पहुँचा। वैजू वावू २ मोटर लेकर आये थे। मौसम अच्छा है। ईश्वरीप्रसाद जी गोयनका के यहां गये। वहाँ से जसीडीह। मा से, पिता जी से, मदन मिला। वैजनाथ जालान की कोठी में ठहरे हैं।

२९ दिसंवर : वाजार कलकत्ते में गरम है। चाँदी १३३) है। प्राय: ४००० का लॉस है।

३० दिसंवर : सुवह ७ वजे सायकिल पर वाजोरिया के साथ जसीडीह आया। वापस साइकिल पर गया। खाना कम कर दिया। कलकत्ते में वाजार गरम है। ज्वाला-प्रसाद जी वगैरह आ गये हैं, ४-५ दिन रहेंगे।

३१ दिसंवर : कलकत्ते का कागज आया है, मुझे वुलाया है।

१९४५

जसीडीह—देवघर

१ जनवरी : साल का पहला दिन है। मन प्रसन्न है। परमात्मा से प्रार्थना है, अच्छा करें। पाट का वाजार तेज आ रहा है।

कलकत्ता

७ जनवरी : रविवार है। कामकाज कोई खास नहीं। दिन में म्यूजिक कॉनफ्रेंस गया। पक्का गाना मेरी समझ में नहीं आता। भजन अच्छा लगता है। पक्के गानों में उस्ताद लोग गले की वहुत कारीगरी दिखाते हैं मगर मैं समझता नहीं, इसलिए मजा नहीं ले पाता।

८ जनवरी : गजराज जी से ८०००) लिया, जॉयेंट अकाउंट के पेमेंट के वास्ते। प्रेस गया, वाजार गया।

९ जनवरी : म्यूजिक कॉनफ्रेंस चल रहा है। मैं भी गया। भजन में इंटरेस्टेड था, इसलिए। वाहर से कई नामी उस्ताद आये हैं।

१० जनवरी : हम लोगों ने २००० मन डेडराज जी की ७८।=) में ली। ११७५० जॉयन्ट अकाउन्ट की ७८।≡) में ली। फाटका ७८।=) आना रहा। चित्त वहुत खिन्न तथा डांवाडोल रहता है। शाम को ऑक्सफोर्ड वुक्स में जाकर कितावें खरीद लाया। खाली समय में पढ़ने-लिखने पर ध्यान दूंगा।

११ जनवरी : भाव ७८॥।=) आना था। शाम को जैन भवन में म्यूजिक कांफ्रेंस में गया। पंडित ओंकारनाथ ठाकुर का वंदेमातरम् वहुत ही प्रभावी लगा। ऐसा लगा कि इतना अच्छा देश, इतनी अच्छी मातृभूमि के लिए हम क्या करते हैं? वंकिम वावू का यह गीत तो पहले भी कई वार सुना था मगर आज इसने मन में एक अजीव लहर पैदा कर दी।

१२ जनवरी : सुवह कसरत की। कामकाज वाजार में कमती है। फाटके का भाव ७९।) खुला, ७८॥।–) आना रहा। चित्त में फाटके से थोड़ी फिकर रहती ही है। डेडराज जी की सीर की चाँदी वरावर की।

१६ जनवरी : कसरत कुछ दिनों से अनियमित है। मेरा कोई भी काम नियमित नहीं रहता, यह बहुत बड़ी कमजोरी है। पाट का वाजार ७८॥) आना है। हम लोगों के ३५००० ज्वाय़न्ट अकाउंट में है।

२६ जनवरी : सुबह अखवार पढ़ा। इधर रूस वहुत जोर से वढ़ रहा है, जर्मनी दव रहा है लड़ाई में जापान् भी हार रहा है। ऐसा मालूम देता है, लड़ाई जल्द ही खतम हो जायगी। इस लड़ाई में खास बात देखने में आयी कि जिसके पास सामान और धन है और आदमी की कमी नहीं, वह लंबी लड़ाई में जीतेगा जरूर। फ्रांस और अंग्रेज अकेले रहते तो नहीं सकते मगर उन्हें अमरिका और रूस का बहुत बड़ा सहारा मिला। जापान को तो विलकुल ही अकेला लड़ना पड़ा। इनको पहले ही सोच लेना था। रात में 'ज्वार भाटा' सिनेमा देखा। मदन आ गया।

२७ जनवरी : रात में भयानक सपने आते रहे। सिनेमा बेसी देखना अच्छा नहीं रहता। दिमाग पर असर पड़ता है। अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ना इससे कहीं अच्छा। समय और पैसा वरवाद नहीं होता, कुछ सीखने को ही मिलता रहता है।

२८ जनवरी : रविवार था। घर पर कसरत की। लोगों से मिलता रहा। भरतिया जी के, ताराचंद जी के, लल्लन जी के गया। ४ वजे श्री सिनेमा में नाच देखने गया, अच्छा था। वहाँ से ६-३० वजे, 'टॉकी ऑफ टॉकी' देखने गया। न जाने अपने आप क्यों चला गया, पहले भी देख चुका हूँ। अच्छा तमाशा है। मगर सिनेमा की लत तो बुरी है।

२९ जनवरी : अखबारों में खवर है, जर्मनी जोर से हार रहा है। अब तो बर्लिन रेडियो सुनने में मजा नहीं आता। ऐसा लगता है, इन लोगों ने शुरू-शुरू से ही बहुत झूठा प्रोपगंडा किया। फालतू की वात थी, इससे इनकी इज्जत पर वट्टा लगा। पाट का वाजार ७७॥≡) रहा। दिन में ऑफिस में थोड़ा काम हुआ। पाट का बाजार मेरे तेज जँचता है। शाम को 'ऑक्सफोर्ड' से किताबें खरीद लाया। आज दिन में बहुत झूठ-सच हँसी में बोला। यह आदत बहुत बुरी है। हँसी में भी झूठ क्यों वोलूँ? परंतु मुझे उस समय नशा-सा आ जाता है। पुरानी बीमारी है, प्रेत के माफिक चढ़ जाती है। राम जी दास जी का कागज था।

अजीमगंज

३ फरवरी : शाम को ७-४५ वजे स्टेशन पर गया, अजीमगंज महेंद्र की वारात में जाने को। प्रायः २० आदमी थे। गाड़ी में भीड़ थी। मैं थर्ड क्लास में जाकर सो गया। ३ वजे सुवह गाड़ी जियागंज पहुँची। वहाँ से नदी पार कर अजीमगंज गये। सरदी कलकत्ते से वेसी है।

४ फरवरी : सुवह ७ वजे घूमने निकला। छोटा सा कस्वा है, गंगा किनारे का। कभी व्यापार रहा होगा। ज्यादा लोग जैनी ओसवाल हैं। वहुत जमाने से वसे हैं। शिव-मंदिर देखा, दर्शन किये। साथ में पुरोहित जी तथा महेंद्र के मामा थे, वड़ी मौज रही।

बाजार घूमा, गंभीर सिंह जी की गद्दी देखी। मुर्शिदाबाद, कठगोला आदि पुरानी जगहें हैं। इतिहास में प्रसिद्ध हैं। नवाबी खतम हो जाने पर अब तो कुछ भी नहीं बचा। लगता ही नहीं कि बंगाल की राजधानी थी। विवाह बहुत सादगी से हुआ ९-३० बजे तक पह-रानी वगैरह। लड़की अच्छी है। खातिर भी अच्छी की।

कलकत्ता

१२ फरवरी : सुबह ७-१५ पर थियेटर से आया। सारी रात तमाशा हुआ। 'ताई तो', 'विदुर छेले' और 'रमा' ये तीन तमाशे थे। इनमें एक्टिंग वगैरह अच्छी थी। रामप्रसाद डालमिया, मदन तथा मैं, तीन आदमी गये थे। ८॥। तक सोया फिर तैयार होकर ऑफिस गया। बाजार समान में मंदा, भाव ७७॥।~)॥ रहा। कामकाज मैक-लियड से ४००० गाँठ का लाइटिंग का हुआ।

१४ फरवरी : मदन के ब्लड प्रेशर हाई है। उसे लेकर गोपाल बाबू डाक्टर के गया। १५५ अंदाज प्रेशर है, दवाई लेनी होगी।

१५ फरवरी : जरमनी जोर से हार रहा है। पर पाट समान ही है। बोरा वगैरह नरम है। कोयला कमती आता है। पाट का भाव ७७॥=) रहा।

२० फरवरी : जुकाम हो गया है। दिन में मिल्स में कामकाज था। मैकलियड में १०,००० मन का काम हुआ। भाव ७४)-७७)। १५०० गाँठें हम लोगों की भी विकीं। बाजार का टोन मजबूत है। लड़ाई की खबर समान हैं। जर्मनी जल्दी दम तोड़ेगा। हिंदुस्तान की आजादी के बारे में अखबारों में खबरें आने लगी हैं। परंतु लीग वाले झंझट जरूर करेंगे। पाकिस्तान की बात बहुत जोर पकड़ने लगी है। अंग्रेज पीछे से उनको सहारा लगाते हैं। बोरा का सब काम सलटा दिया, ५००) अंदाज लॉस लगा।

२१ फरवरी : ११ बजे ऑफिस आया। ५००० गाँठ शिपमेंट का काम ८९)-७६); ७१) में हुआ। हम लोगों ने १७००० गाँठ का काम लिया। मिलों में कोयला बेसी आ रहा है। बाजार का अंडर टोन स्टेडी है। हम लोगों के सारा फाटका उसी माफक रखा है। कल के काम की रिपोर्ट हो गयी, मन में थोड़ी खिन्नता रही।

२७ फरवरी : शिपमेंट का बहुत काम हो गया है। सत्यनारायण गया है। भाई जी का मथुरा से कागज था। मोटर स्मिथ साहब के ४ बजे मंगनी में दी है। केसरी बीमार है, उसको १५ दिन की छुट्टी दी है। ३ लाख हेसियन २७।=) में लिया। लडलो में २५०० गाँठ का काम किया। लूज जूट थोड़ा मजबूत है।

२८ फरवरी : बाजार समान १२॥) १४॥।) से सेप्टेंबर-अक्टूबर का काम हुआ। फेब्रुअरी में प्रायः २३०००), नेट टोटल २५०००) दलाली हुई। सत्यनारा-यण को आसाम में १०-१५ दिन लगेंगे। मुझे अब भी साहबों के पास बात करने में हिचक-सी मालूम होती है। अंग्रेजी का अभ्यास बढ़ाना चाहिए। मनीबाई आयी थी। फाटके का भाव ७५॥।=)॥ रहा।

१२ मार्च : कसरत चालू कर दी है; गंगा जी भी जाता हूँ। जॉयंट अकाउंट का हिसाब किया। बाजार मंदा ७७।), लूज का काम नहीं। प्रेस में काम चलता है। जहाज २४००० गाँठ का आया है। पाँचू बाबू, पालबाबू और मुकर्जी के पास गया। केशरी बोथरा के गया। बहुत ज्यादा बीमार है, रोता था।

१६ मार्च : डेडराज जी की तबीयत बहुत ज्यादा खराब है, बचेंगे नहीं। दिन में उनके यहाँ का फोन आया, बनारस जाना होगा। घर आकर सब तैयारी की और ६॥ बजे उनके घर चला गया। ७॥। बजे स्टेशन में पंजाब मेल से रवाना हुए, ३० आदमी साथ में थे।

बनारस

१८ मार्च : सुबह आदमी आया, डेडराज जी चल बसे। खबर से मन बहुत दुखी हुआ। उनके यहाँ गया। १०। बजे अर्थी उठी। बहुत लोग साथ थे। किसी के मरने पर मेरा मन कैसा हो जाता है। बहुत से विचार आते हैं। डेडराज जी इतने भले थे, मुझे बहुत मानते थे। बहुत सहारा दिया। आज मैं उन्हें कैसा सहारा दे रहा हूँ! गरमी बहुत थी, घाट पर पत्थर तपते थे। कुछ ही देर में सब खतम हो गया। स्नान किया। फिर ३॥ बजे बजरंग लाल जी भुवालका के साथ मुगलसराय में कलकत्ता के लिये तूफान मेल पकड़ा। गाड़ी में केवल डेडराज की बातें दिमाग में घूमती थीं।

कलकत्ता

२३ मार्च : कसरत करता नहीं, आलस आ जाता है। विक्टोरिया, ईडन गार्डन और गंगा जी भी नियमित नहीं जा पाता। मन अशांत रहता है, न जाने क्यों। भ्रमण का मन करता है, जा नहीं सकता। रुपये का लोभ छूटता नहीं। परंतु जो लोग दान-पुण्य करते हैं, रुपये का लोभ नहीं रखते वे भी सुखी नहीं दिखते। समझ में नहीं आता चित्त में शांति कैसे मिले। मनीबाई के घर गया, बहुत साधारण ढंग से रहते हैं। हम लोगों के समाज में भाई-बहन में कितना अंतर है। भाई रुपया वाला मगर बहन गरीब। इसी तरह बहन के घर धन भरा है तो भाई रुपये के बिना ठोकरें खाता है। विवाह के बाद नाम के लिये रिश्ता रह जाता है।

३० मार्च : लड़ाई अब बहुत जल्दी ही खतम होती दिखती है। परंतु हिंदुस्तान में इसके बाद तो आंदोलन का जोर होगा। पाकिस्तान बनाने की बात पर जिन्ना अड़ता है। गवर्नमेंट का रुख कड़ा है।

११ अप्रैल : मिल में कुछ भी काम-काज नहीं हुआ। काशीपुर गरम है, सेलर ७८), ७४), ६८)। सारे दिन झूठ-सच बोलना पड़ता है। बुरा लगता है, पर फाटके की लत छूटती ही नहीं। ५ लाख हेसियन २७॥।-)॥। में लिया। ५ लाख पहले का पोते है।

१५ अप्रैल : दीपचंद के साथ 'दुई पुरुष' तमाशा देखने गया। अच्छा लगा। दोनों पीढ़ियों के सोचने के ढंग में कितना फर्क आ जाता है। हमेशा यही हुआ है। बापू जी जैसा सोचते

हैं, शायद हम लोग नहीं और हमारे लड़के भी इसी तरह हमारे से फर्क सोचेंगे और करेंगे। समय तो आगे बढ़ता ही है। २०००) गौशाला को उधार भेजा। सत्यनारायण आसाम से आ गया। रात में पानी बहुत बरसा।

१७ अप्रैल : कसरत छूट ही गयी, मन में पछतावा रहता है। दोष मैं करता हूँ जानकर और पीछे पछताता रहता हूँ। नहीं मालूम फाटका क्यों करता हूँ। मुझे क्या फायदा ? पर मनुष्य के कुछ-न-कुछ ऐब होना ही पड़ता है। परंतु इसे भी मन के ज़ोर से दूर किया जा सकता है। मैं इस मामले में बहुत कमजोर हूँ। न जाने क्या भूत-सा सवार हो जाता है। बनारस जाने का विचार था पर इस फाटके के कारण नहीं जा सका।

२५ अप्रैल : पाट का भाव ७७॥) है। लड़ाई में जर्मनी जोर से हार रहा है, रूस छोड़कर अब बर्लिन आ गया। पूरब से रूस, पश्चिम और दक्षिण से अमेरिकन, अंग्रेज और फ्रेंच फौजें बढ़ती जा रही हैं। ऐसा लगता है कि 'कौन बर्लिन पर कब्जा करे' होड़ मची है। जर्मनी तो सचमुच टूट गया है। मन में दुख आता है।

२५ अप्रैल : हरिद्वार जाने का मेरा विचार स्थगित-सा है। बाजार ७७॥–)॥ रहा। भुवालका, केदार जी खेला करेंगे। पाट की २००० गाँठें मैंने ७७॥) में बेचीं, शाम को ७८) बिककर ॥।=) रहा। पहले की १३००० गाँठें मत्थे हैं। मेरी फाटके की आदत उसी माफक है, कोई परिवर्तन नहीं। दिन भर फिकर, बेचैनी रहती है। रात में दुःस्वप्न आते हैं, माथा भी दुखता है। सोचता हूँ, रुपयों का क्या होगा, पर नशा है। परमात्मा कब ठीक करेगा, मालूम नहीं।

२७ अप्रैल : जून १९४५, ३० तारीख तक एकदम सौदा नहीं करूँगा, यह प्रतिज्ञा ली। बाजार समान, कामकाज थोड़ा हुआ। फाटका ७७॥–)। भाई जी आज सैदपुर प्रेस देखने को गये। रविवार को वापस आयेंगे। मैं सोमवार को जसीडीह जाने का विचार कर रहा हूँ। और दिन से आज मन में उचाटपन कमती रहा, पर रात में सपने उसी माफक सौदा-फाटके के आते हैं।

२८ अप्रैल : सुबह मैदान, विक्टोरिया मेमोरियल गया। दिन में २॥ बजे मोटर से बंगाल मिल गार्डेन गया, पार्टी थी। ताश खेले, १० बजे वापस आये। फोन आया, जर्मन सरेंडर। बाजार में घटा-बढ़ी हुई। शेयर थोड़े मंदे, पाट थोड़ा गरम; इस माफक।

२९ अप्रैल : सुबह वासदेव जी के घर ताश खेलने लगा। रकम-रकम की बात होती रही, लड़ाई के बारे में। अखबार में जर्मनी के सरेंडर की बात है। १-२ दिन में कोलाप्स हो जायगा।

३० अप्रैल : मुसोलिनी को गोली मार दी गयी। उसके साथ क्लारा पैंटेची उसकी प्रेमिका को भी। एक समय के शक्तिशाली का बड़ा ही बुरा अंत हुआ। हिटलर के बारे में भी तरह-तरह की बात फैल रही है। मन में सुभाष बाबू के लिये चिंता होती है। पकड़े गये तो अंग्रेज उन्हें छोड़ेंगे नहीं। मुसोलिनी को उसके देशवासियों ने मारा और

भी कई अफसर मारे गये। पाट का भाव ७७।।।), ७७।।।-) रहा। कामकाज नहीं। लाइट ७२) का भाव है। बापू जी का कागज था। मेरा विचार बाहर जाने का दस दिन में है। नंदू के बुखार हो गया है। तबीयत मेरी कुछ ठीक है। चिंता भी कम हुई है। हेसियन का फाटका करने का फिर विचार हुआ पर परमात्मा ने बचा लिया।

२ मई : सुबह पक्की खबर आयी, हिटलर मर गया। जर्मन चान्सलरी के तहखाने में छिपा था। हल्ला यह भी है कि मुसोलिनी की तरह वह भी अपनी एक प्रेमिका के साथ मारा गया। और भी अफवाह है कि मरा नहीं, भाग गया। दक्षिण अमेरिका में है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि रूस में ले जाकर उसे गोली मार दी गयी। किसी ने खबर फैला दी कि गोविंद सेकसरिया मर गये। फजूल की बात थी। फाटका ७७।।) रहा, खेलेवाले मजबूत रहे। रात में स्वप्न अब पहले जितने भयानक नहीं आते।

६ मई : ऑफिस के साहबों से अंग्रेजों की जीत की बात चली। वे मन में तो खुश हैं पर ऊपर से कुछ कहते नहीं। छोटे साहब ने कहा, अभी तो जापान रह गया है। अंग्रेजों की गंभीरता सीखने लायक है। बाजार का टोन मंदी का है।

७ मई : सुबह इडन गार्डन गया। गंगा-स्नान किया। घर आकर १६५०० गांठें फाटके की ७६।।)।। में लीं, हेसियन ।।) आना सुना। विचार थोड़े मजबूती के थे। बाजार में जाकर सुना भुवालका गाँठ बेच रहे हैं। चित्त खिन्न हो गया। फाटका मनुष्य के लिये बहुत बुरा है। जानता हूँ, बारबार प्रतिज्ञा करता हूँ फिर भी लालच के वश मूर्ख बनता हूँ। नुक्सान होता है पर मन नहीं मानता।

९ मई : जीत की खुशी में आज 'विक्ट्री डे' की छुट्टी है। साहब लोग खुश हैं, बहुत से हिंदुस्तानी भी। बहुत से पुराने लोग बोलते हैं, अंग्रेज लोगों को कोई हरा नहीं सकता। पहली लड़ाई में भी शुरुआत में ये हारे मगर अंत में जीते। अंग्रेजी मुहल्लों में जगह-जगह 'वी' (V) बड़े हरफों में लिखकर सजाया है। बाजार समान है, फाटका ७५।।।=) है। भागीरथ जी के गया। ५ बजे भालोटिया के गया।

११ मई : सुबह केदारनाथ जी पोद्दार की तरफ गया, मिले नहीं। फिर, ऑफिस गया। गद्दी जाकर टाइम वेस्ट होता है। चित्त में अशांति है। जीवन का कोई उद्देश्य नहीं। इसी माफिक व्यतीत हो जाता है। मन में आता है, एकदम रिटायर हो जाऊँ पर संसारी बंधन से नहीं छूटा जाता।

१६ मई : फाटका ७५=)। से ७५।।-) रहा। रूस तथा डंडी का काम है, हम लोगों ने १००० देसी बेंची। लोहिया की ५००० गाँठें ७०) में सेटल कीं, दलाली नहीं देंगे, १२५०) मिले। शाम को भाईजी को मालूम हुआ, कुछ नाराज मालूम देते थे। पहले ही साफ कह देना अच्छा है।

२२ मई : मेरी प्रतिज्ञा तो कब की टूट गयी। फिर भी नहीं सम्हलता, टूटती ही जा रही है। रहा नहीं जाता। बाहर जाना चाहता हूँ, मगर यहाँ कुछ काम उलझे हैं, छोड़ नहीं सकता।

२५ मई : सुवह मैदान की तरफ जाने का विचार किया पर वासदेव जी के ताश खेलने चला गया। ९। वजे पैदल ही ऑफिस गया। १०। वजे एक हकीम के गया। वह वोला, पेशाव की मेरी वीमारी का इलाज नहीं, वरावर सलाई लेनी होगी। ११ वजे घर आ गया, तवीयत सुस्त थी। २ आम खाकर ऑफिस गया—यहाँ से २ वजे गद्दी आया, वदन दुखता था। ४ वजे घर आया। वहुत तकलीफ हो रही थी, वुखार १०२° था। दीपचंद की दवाई ली, खाना कुछ भी नहीं खाया। रात नींद नहीं आयी, पसीना खूव आता रहा। सवेरे तक कुछ आराम मिला।

२६ मई : सुवह तवीयत कुछ ठीक मालूम दी। मिट्टी का लेप किया, शांति मिली। परंतु प्राकृतिक चिकित्सा में टाइम वेसी लगता है, मैं घर में वँधा नहीं रहना चाहता हूँ। डॉक्टर ९॥ वजे आया। इंजेक्शन दिया। फल खाने को वता गया। फल खाया भी। दिन में वुखार १०० अंदाज था। वाजार समान, फाटका ७४॥), हेसियन २७॥।≡)।

३१ मई : वुखार दो दिन से नहीं है परंतु कमजोरी वहुत मालूम देती है। कुनैन की गरमी से माथा घूमता है। जीभ में स्वाद भी नहीं है। ऑफिस जाता हूँ। हरिद्वार जाने का कैंसिल किया। सुवह गंगा जी गया था। लेया-वेची थोड़ा करता हूँ। वाजार समान है। रात में ९ वजे स्टेशन आया। जसीडीह जा रहा हूँ।

जसीडीह

२ जून : कल सारे दिन शरद वावू का 'शेष प्रश्न' पढ़ता रहा, राहुल जी की 'वोल्गा से गंगा' भी। आज भी पढ़ रहा हूँ। पूरा नहीं कर पाया, कमजोरी है। शरद वावू की किताबों में मुझे नारी का जो रूप मिलता है, दूसरी किसी में नहीं मिला। 'पर्दे की रानी' और 'संन्यासी' अज्ञेय ने लिखी मगर शरद वावू का सा रस नहीं दे पाये। 'शेष प्रश्न' पढ़ते-पढ़ते मेरी आँखें गीली हो जाती हैं। एक वार तो वाइफ ने समझा कि मैं रो रहा हूँ। मैं झेंप गया था। उसने कहा कि ऐसी किताव पढ़ने से क्या फायदा जिससे मन में दुःख हो?

४ जून : 'वोल्गा से गंगा' पढ़ डाली। राहुल जी वहुत वड़े विद्वान हैं परंतु मैं ठीक समझ नहीं पाया वह क्या कहना चाहते हैं। फिर से पढ़ना होगा। शाम को ७॥ वजे गाड़ी में वैठकर वनारस रवाना हो गया। इंटर क्लास में रात में तकलीफ नहीं हुई।

हरिद्वार

६ जून : रात की ट्रेन से सहारनपुर पहुँचे। एक पठान सिपाही से मेरे साथियों की लड़ाई हो गयी। मैंने वीच-वचाव किया। उसने कहा, गोली मार दूंगा, सव चुप हो गये। ९॥ वजे हरिद्वार पहुँचे। गरम कमती है। वद्री जी जाने का विचार है।

ऋषिकेश

७ जून : अच्छा लग रहा है। मन में शांति है। चित्त प्रसन्न है, न फाटका की चिंता न और की। नींद खूव आयी। ऋषिकेश वड़ी अच्छी जगह है। दूर-दूर तक पहाड़ों की लाइनें ऋषि की जटाओं की तरह घिरी हुई लगती हैं। विचार आता है, सव छोड़ दूँ

और अब कुछ बनूं, कुछ अच्छा काम करूँ। परंतु मैं नहीं कर सकता। प्रॉमिस तोड़ता हूँ, गलती करता हूँ, यह बुरी आदत मुझे कुछ नहीं करने देगी।

ऋषिकेश, देवप्रयाग

८ जून : काली कमलीवाला की धरमशाला में ठहरा था। बड़ी भीड़ है। बहुत बड़ी संस्था है। अच्छा काम हो रहा है। बहुत आदमी काम करते हैं। रात में वापस हरद्वार आ गया था। स्वर्गाश्रम में बालमुकुंद जी और सरदार शहर के कई आदमी मिले थे। ७ बजे ऋषिकेश में बस पर बैठा। १२ बजे देवप्रयाग पहुँचा। सुंदर जगह है, पहाड़ों से घिरी है। ऊँचाई अंदाज २००० फुट है। सड़क खराब है। छोटा पहाड़ी कस्बा है। गरीबी तो है ही। मगर शांति है, बड़े शहरों के माफिक बुरी नीयत नहीं। भागीरथी बहती जा रही है, दूसरी ओर से अलकनन्दा आकर मिलती है, जैसे प्रयाग में गंगा से यमुना; परंतु यहाँ दोनों का जल बहुत ठंडा है, धारा भी काफी तेज। बहुत देर तक घाट की सीढ़ियों पर बैठा रहा। दो बार स्नान किया। बरफ का पानी आता है। साँकल पकड़ कर नहाना भी हिम्मत का काम है। एक पंडा के यहाँ ठहरा। सीधे भले लोग हैं।

देवप्रयाग, कीर्तिनगर

९ जून : प्यास बहुत लगती है, पानी बहुत ठंडा है, पर प्यास बुझती नहीं। ११ बजे खा-पीकर बस स्टेशन पर आ गया। गंगा तथा अलकनंदा के संगम पर स्नान किया। बस कीर्तिनगर की ओर चढ़ाई और मोड़ों को पार कर रही थी। डर लगा। भयंकर रास्ता है। सैकड़ों हजारों फुट का खड्ड देखकर मन कैसा-सा होने लगता है। २ बजे कीर्तिनगर पहुँचा। बस रुकी, थोड़ा कलेवा किया। ४ बजे रवाना होकर ५ बजे श्रीनगर पहुँचा। चाय पी, गंगा स्नान किया। छोटा सा कस्बा है। आबादी कम है। गढ़वाल के राजा की जगह है। कोई खास काम-काज नहीं। बाजार में वाइफ के साथ घूमा। लोगों से मिला, बातचीत की। पानी का साधन होने से यहाँ खेती, बागवानी अच्छी हो सकती है। गंगा के किनारे एक बहुत पुराना मंदिर देखने गए। किसने बनाया, कब बना, इसका ठीक पता नहीं चला।

श्रीनगर, रुद्रप्रयाग

१० जून : ४॥ बजे सुबह उठे, ५॥ बजे तक तैयार हो गये, यात्रा शुरू की। ११॥ मील पर एक चट्टी मिली, विश्राम के लिए रुके। बहुत साधारण सी चट्टी है, जगह सुंदर है। थकावट मामूली सी लगी गरमी ज्यादा नहीं है। १०॥ बजे पहुँचे थे। जूते भारी लगने लगे। एक बजे तक स्नान, भोजन कर लिया फिर चल पड़े। अंदाज २ बजे चट्टी पर पहुँचे। गंदी सी जगह लगी, सफाई नहीं थी। झरने का पानी गंदला था। थोड़ी देर रुके, फिर आगे बढ़ गए। दिन के चले शाम को रुद्र प्रयाग पहुँचे। ६ बजे गए थे। बड़ी थकावट मालूम हुई। यात्रा में चलते समय तरह-तरह के विचार आते रहते हैं, इसलिए थकावट इतनी मालूम नहीं पड़ती परंतु रुकते ही लगती है। शरीर थककर

चूर हो गया। जगह की तंगी थी। एक दुकान में रहने की जगह मिल गयी। नदी में स्नान किया। पानी वहुत ठंडा था। मगर स्नान के वाद वड़ी ताजगी मालूम की।

छोटी सी जगह है, मंदिरों में यात्री थे, पंडों का रोजगार वन रहा था, परंतु मैदानी पंडों की तरह पहाड़ के पंड़े ठगते या जवर्दस्ती नहीं करते। सुंदर छोटे-छोटे वच्चे दुकानों के आसपास खड़े हो जाते हैं। यात्रियों से कुछ मिल ही जाता है। परंतु इन सवों को देखकर मन में विचार उठते हैं, विद्या या शास्त्र पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा इन्हें नहीं है, भिक्षा ही एकमात्र सहारा।

चन्द्रावती

११ जून : सुवह ५ वजे रुद्रप्रयाग से चले। ज्यादा ठंड नहीं लग रही थी, हवा चलने पर लगती है। दृश्य अच्छे थे। शांति थी। सिर्फ पहाड़ी झरनों की आवाज और गंगा की धारा की गूंज। इसके वीच-वीच में चिड़ियों की चहचहाहट। जूते मैंने रुद्र-प्रयाग के पहले ही निकाल दिए थे। परंतु अव विना जूते के चलते रहने के कारण पैरों में दर्द होने लगा। अभ्यास था नहीं नंगे पैरों चलने का। जूते कुछ फट भी गए थे। पर पहना नहीं। थकावट से चूर, किसी प्रकार शाम को चंद्रावती पहुँचे। मोची से जूते मरम्मत करवाये। पंडे और लोगों से वातचीत करता रहा। जंगली जानवरों का, खास तौर से चीते का इधर की ओर वहुत खतरा है। रात को या शाम को लोग जल्दी वाहर नहीं जाते। दिन में भी साथ साथ टोली वना कर चलते हैं। आज अखवार देखने की इच्छा वहुत हुई पर मिली नहीं।

गुप्तकाशी, फाटा

५ वजे चंद्रावती से चले। पहाड़ों पर वादल के टुकड़े थे। हलका कुहासा भी था। सड़क भींगी सी थी, रात थोड़ा पानी वरसा था। ७ मील पर एक चट्टी मिली। यहाँ से २ मील की खड़ी चढ़ाई। मन में विचार आते, फजूल में झमेले में पड़े। वहुत महँगा पुन्य है। परंतु और लोगों को देखता, वे मुस्कुराते, वातचीत करते और भगवान् का नाम लेते. चले जा रहे थे। मन में कुछ शरमा गया। चढ़ाई पार कर गुप्तकाशी पहुँचे। छोटा कस्वा है, परंतु सामान सव मिल जाते हैं। कुंड में स्नान किया—१२ वजे तक जीम लिया। २ वजे नारायण कोट पहुँचे। थोड़ा आराम किया। एक वड़ी सी दुकान से द्राक्षासव एक वोतल खरीदी। शाम को फाटा चट्टी पहुँचे। दार्जिलिंग के समान सर्दी पड़ती है। मेरी तवीयत कुछ खराव लगती थी। पेट दुखता था। जीमा नहीं। रात में कई वार हाजत मिटानी पड़ी। पहाड़ी झरने का पानी जहाँ-तहाँ नहीं पीने के लिए सावधान किया था पर मैंने ध्यान नहीं दिया। अव तो लगता है, पेट खराव हो गया। भगवान् पार लगाए।

गौरी कुंड, रामवाड़ा

१३ जून : फाटा चट्टी से रामपुर सुवह ही आ गए। मैं खच्चर की खोज में था पर कहीं

नहीं मिला। पैर जोर से दुखते थे, शरीर थका हुआ। त्रियुगीनाथ जाने की हिम्मत नहीं रही, गया भी नहीं। १२॥ बजे गौरीकुंड पहुँच गया। थका था ही, गरम जल के सोते में पैर डाल कर बैठ गया। बहुत आराम मिला, फिर स्नान किया। स्नान करते समय मन में विचार आते रहे, पाप क्या है, पुण्य क्या है। पाप क्या मिटाया जा सकता है, पुण्य क्या घट सकता है, वगैरह। गौरीकुंड बहुत अच्छा लगा। यहाँ से ३॥ बजे दिन में चले। बड़ी कड़ी चढ़ाई आगे मिली। रामबाड़ा पहुँचे। बहुत जोर ठंड पड़ रही थी। दार्जिलिंग से भी वैसी।

केदारनाथ

१४ जून : रात में सर्दी के कारण नींद ठीक से नहीं आयी। तरह-तरह के विचार आते रहे। कभी-कभी अपनी कमजोरियाँ याद आने लगतीं। ऐसा मालूम होता इन्हें दूर नहीं कर सका तो शांति नहीं मिलेगी। मन की कमजोरी बहुत बड़ा पाप है। सोते-जागते ४ बजे उठा। ५ बजे रामबाग से चला, सर्दी के मारे पैर हाथ बँधे से हो रहे थे। पर चलना तो था ही। पैदल चले, पैर दुखते थे। मेरी तरह और भी यात्री चले जा रहे थे। विचार आया, इन्हें भी तो सर्दी लग रही होगी, हाथ पैर दुखते होंगे फिर मैं क्यों इतना सोचता हूँ? १० बजे केदारनाथ पहुँच गया। यहाँ सर्दी बहुत ही ज्यादा है। परंतु मन में एक रकम का संतोष था कि किसी तरह लक्ष्य पर पहुँच गया, भगवान् ने पार लगा दिया। यहाँ की ऊँचाई ११,५०० फीट है। मंदिर बहुत गंदा है। कैसा ही मन हो गया। पवित्र स्थान को साफ रखना चाहिए। यहाँ के पंडे पुजारी कैसा बंदोबस्त रखते हैं?

दर्शन-पूजन करके वहाँ से १२ बजे वापस गौरीकुंड के लिए चले। फिर उधर से रामपुर आ गये। यहाँ मगराज जी जालान, हरसुखराय जी चौधरी मिले। रात में १० बजे तक उनसे बातचीत होती रही। केदारनाथ के मंदिर के बारे में भी बात हुई। उन लोगों की भी राय थी कि मंदिर के बंदोबस्त में कड़ाई होनी चाहिए।

उषीमठ

१५ जून : सुबह रामपुर से चले, पैरों में बहुत जोर दर्द हो रहा था। पैदल चलना मुश्किल हो गया। इसलिए २ मील डोली पर चला। खीज अपने ऊपर आयी। जीते जी आदमी के कंधे पर जा रहा हूँ, कितना कमजोर हूँ। तीन मील आगे घोड़ा मिला। उस पर बैठा और एक चट्टी तक आया। तबीयत कुछ ठीक हुई। पैरों में तेल मला, स्नान किया। बद्रीजी जाने का विचार हो गया।

इसी माफिक यात्रा शुरू हो गयी। परंतु नारायण कोठी से मैंने घोड़ा कर लिया। प्रायः ६ बजे तक उषी मठ पहुँचा। जगह तो सुंदर है ही। न जाने क्यों गौरीकुंड की तरह यह जगह मुझे बहुत अच्छी लगी बारिश हो रही थी। रात में मंदिर में गया, दर्शन किए। मन में शांति मिली। थकावट भी थोड़ी रह गयी।

वेणियाकुंड

१६ जून : सुवह उठे। मेरा मन यहाँ ठहरने का था परंतु यात्रा की तैयारी करनी थी, इसी में लग गया। घोड़े वगैरह का वंदोवस्त नहीं हो सका। यहाँ के घोड़े छोटे होते हैं। इसलिए इनके मालिक भारी आदमी को लेने को राजी नहीं होते। उपाय भी क्या ? पैदल चले, सुवह के ५ा। वजे थे। वेसी ठंड नहीं थी। अंदाज ६ मील चल कर एक चट्टी पर ठहर गए। कुछ आराम कर वेणिया कुंड के लिए चल पड़े। वड़ी कड़ी चढ़ाई है, रास्ता कटना मुश्किल हो जाता है। साँस फूलने लगती है। मगर दृश्य अच्छे हैं। घने जंगल, हरियाली, झरने मन पर जादू सा असर करते हैं। शायद यह चढ़ाई मेरे से पार नहीं पड़ती, सारा दिन चलना पड़ा। परंतु कल घोड़े पर चलने से पैरों को काफी आराम मिला इसलिए किसी तरह पूरा कर पाया। कुल ११ा। मील चला, कल १४ मील का सफर था।

वेणियाकुंड-गोपेश्वर

१७ जून : रात वहुत सर्दी थी। सुवह वेणिया कुंड से चल पड़े। वारिश थम चुकी थी। सर्दी वढ़ रही थी। जाड़े से वदन काँपने लगा। चढ़ाई कड़ी थी, वदन भी दुख रहा था। थकावट काफी आ गयी। दिन में मंडल चट्टी पर रुके, थोड़ी देर आराम किया, भोजन किया। अगर कठिनाई सहने की ताकत भगवान् दे देता तो इतने सुंदर स्थान की यात्रा का आनंद उठा सकता। परंतु मेरे मन में तो दर्द, थकान और परेशानी की वात उठती थी। मंडल चट्टी पर खाना अच्छा मिला, पेठे का साग, पोदिना भी मिला। भोजन कुछ वेसी किया। ३ा। वजे चले। रास्ता वहुत अच्छा था, ठंड भी ज्यादा नहीं थी। तुंगनाथ नहीं गए। चढ़ाई पड़ती थी। ७ वजे गोपेश्वर पहुँचे। वारिश हो रही थी। मन में वहुत तरह के विचार आते हैं।

गरुड चट्टी

१९ जून : कल रात गरुड़ चट्टी ठहरे। साफ जगह नहीं है। रास्ते में पीपल कोठी की चट्टी इससे कहीं अच्छी थी। सुवह गरुड़ चट्टी से चले और गुलाव चट्टी में ठहरे। साधारण सी चट्टी है। यहीं थोड़ा आराम कर के खाना खाया। २ वजे अकेला ही मैं रवाना हो गया। ६ वजे अंदाज मैं जोशी मठ पहुँचा। उधर धारा में स्नान किया। मामूली सा कस्वा है परंतु इसमें अखवार, पत्रिका वगैरह मिल जाती हैं, कुछ दूकानें भी हैं, एक पव्लिक लाइब्रेरी भी। यहाँ वैठ कर कुछ अखवार-पत्रिकाएं वगैरह पढ़ता रहा। लोगों से कुछ वातचीत की, भले और सीधे लोग हैं। गरीवी समझते हैं, इन लोगों को कष्ट भी है पर मन के गरीव नहीं हैं। गरीवी से परेशान नहीं होते। रास्ते में मैंने देखा, औरतें सुंदर एवं स्वस्थ हैं, इनके तथा वच्चों की आँखों में भोलापन है, गालों पर गुलावी। विचार आया दूध, मेवा, घी खाकर भी हम लोगों को तंदुरुस्ती नहीं मिलती, और शक्ति

भी नहीं है। हम लोगों के घर की औरतों की शकल पीली रहती है उस पर सोने के पीले गहने कितने भद्दे लगते हैं। रास्ते में खुमाणी मिल गयी। खाता रहा। वाइफ को ले जाकर झरने में स्नान कराया। मैंने नहीं किया, सर्दी थी।

जोशीमठ, हनुमान चट्टी

२० जून : जोशीमठ में चित्त प्रसन्न रहा। सुवह चल पड़े। ८ मील चल कर पांडुकेश्वर आ गए। गंगा में स्नान किया। एक यात्री जोर-जोर से गंगा की स्तुति गा रहा था। अच्छा लगा। लाइनें याद नहीं हैं परंतु 'पतित निवारिणि · · त्रिभुवन धन्ये' का उसका स्वर वहुत देर तक मेरे मन में गूंजता रहा। जोशीमठ में आराम था, खुमाणी मिली। प्याज तथा आलू प्राय: मिल जाते हैं। चीनी २॥) सेर, दूध ।॥) सेर में अच्छा मिल जाता है। फल नहीं मिलते।

शाम को २॥ वजे चले। ६ मील चलकर हनुमान चट्टी आ गए। चढ़ाई काफी थी, थकावट आ गयी। वर्षा हो रही थी, ठंडी हवा भी थी।

वदरीनाथ

२१ जून : सुवह ५॥ वजे हनुमान चट्टी से चले। ठंडी हवा चल रही थी। वादल भी थे। डर लगता था कि वर्षा न हो जाए। परंतु नहीं हुई और ९॥ वजे वदरीनाथ जी पहुँचे। जगह सुंदर है। मन में खुशी हुई कि केदार जी के दर्शन के वाद वदरी जी के भी दर्शन का मौका मिला। पहाड़ों पर हरे-भरे घने जंगल और वहते हुए छोटे-वड़े झरने, मन को शांति मिली। मंदिर देर से दर्शन करने गए। भीड़ वहुत थी। हम लोगों ने थोड़ा आराम किया। सामान जँचाया। लकड़ी नहीं मिल रही थी। रसोई की दिक्कत हो जाती। वाजार का खाना पड़ता। किसी रकम थोड़ी सी जुगाड़ कर पाया। सर्दी वहुत है, परंतु दृश्य वहुत ही सुंदर लग रहे हैं। रात ९॥ वजे सोये।

२२ जून : सुवह ५ वजे आँखें खुलीं। नींद से उठने पर विस्तर पर रहने की आदत नहीं परंतु घना कुहासा था और कुछ आलस भी। ठंड वहुत थी, वरदाश्त नहीं हो रही थी। ६ वजे तक विस्तर छोड़ा। तप्त कुंड में स्नान किया। लीला है, या भगवान् की कृपा, इतनी ठंड जगह में गरम पानी की सुविधा प्रकृति ने करा दी। स्नान करने पर थकावट, आलस—सव मिट गया। दर्शन किया। आसपास घूमने लगा। वहुत से साधु-महात्मा थे। जंगलों में भी देखा, नंगे वदन सिर्फ कौपीन पहने हुए महात्मा थे। पता नहीं, इनमें कितने सच्चे थे। परंतु इतनी ठंड में रहने वाले, संसारी लालच से तो नहीं रहते होंगे। इतनी ऊँचाई पर जंगलों में और गुफाओं में कोई आता भी नहीं।

दिन में ८ वजे भोजन किया, दाल भात, कढ़ी तथा मिठाई। पेट खराब हो गया। शरीर कमजोर सा हो गया था। मन खराव हो गया। पर उपाय भी क्या ! शाम को दर्शन-पूजन किए। मुझे ऐसा लगा कि यात्रियों के लिए जगह और व्यवस्था की कमी है।

ठहरने के लिए और भी धर्मशालाएँ होनी चाहिए। ऐसा भी विचार आया कि एक पुस्तकालय अच्छी सी होनी चाहिए जिसमें धर्मग्रंथ वगैरह हों। पढ़ने वाले यात्रियों का मन लग जायगा। मंदिर में भीड़ होने पर बड़ी दिक्कत होती है। इसलिए इसका भी कोई अच्छा बंदोबस्त किया जाय तो ठीक रहेगा। रात में बहुत देर तक इसी प्रकार से और भी दूसरे ढंग के विचार दिमाग में आते रहे, पेट भी दुखता था, परंतु नींद आ गयी।

बदरीनाथ-जोशीमठ

२३ जून : सुबह ६ बजे उठा, तप्त कुंड में स्नान किया। सर्दी बहुत ज्यादा लग रही थी, शायद कमजोरी के कारण। पंडा जी को ६५०) दिए। मेरे मन में विचार आया इतने रुपये चढ़ावे के आते हैं, सोना-चाँदी भी मिल जाता है परंतु इनका क्या होता है। मंदिर का रख-रखाव और दूसरी व्यवस्था ठीक नहीं। परंतु मन में ग्लानि हुई कि ऐसा नहीं सोचना चाहिए। देने के बाद विचार करना ठीक नहीं और फिर इन लोगों की आमदनी और है भी क्या। ८ बजे रवाना हुए। साथ में केडिया बीमार था। एक डोली उसको दे दी। वाइफ पैदल चल रही थी। वह खुश भी थी कि पैदल तीर्थयात्रा का पुण्य बढ़ रहा है। औरतों में भक्ति ज्यादा होती है।

पेट दुखता था, पैर भी। शाम तक जोशीमठ के पास सिंहधारा पहुँचा। १९ मील की यात्रा में २ मील की कड़ी चढ़ाई ने बुरी तरह थका दिया।

जोशीमठ-पीपलकोठी

२४ जून : जोशीमठ से जल्दी ही चल पड़े। सुबह ६ बज रहे थे। शरीर सुस्त था, मन भी इसीलिए खिन्न। परंतु १९ मील का सफर कर लिया। पेट में मरोड़ें आती रहीं, बार-बार शौंच के लिए जाना पड़ता। पैरों में कमजोरी बढ़ती जाती थी। दुख रहे थे, मैं मन में घबरा गया था। परंतु किसी से कुछ कहा नहीं। जल्दी-जल्दी आगे बढ़ता रहा। शाम को 'पीपल-कोठी' आया। अच्छी जगह थी। कई दुकानें भी थीं। एक घोड़ा ठीक किया, कर्णप्रयाग तक के लिए, मील के हिसाब से। ठंड विशेष नहीं थी, रात में नींद आ गयी।

नन्दप्रयाग

२५ जून : 'पीपल-कोठी' से घोड़े पर चमोली पहुँचा। परंतु रुका नहीं, वहाँ से ३ मील आगे की एक चट्टी पर रुका। तबीयत सुस्त हो रही है। बदन ढीला हो रहा है। भूख और प्यास लगती है पर इच्छा नहीं होती। एक तरफ डर लगता है, खाऊँगा तो पेट और भी दुखेगा, पानी पीते ही शौंच जाना पड़ता है। फिर भी जीम लिया।

शाम को नंदप्रयाग आये। राँचीवाले नंदप्रयाग में ही ठहर गए परंतु मैं आगे की चट्टी के लिए बढ़ गया। चट्टी खराब थी। शरीर बहुत दुखने लगा है। रात में किसी तरह खाना खाया। सोने की चेष्टा करने लगा। मगर शौच के लिए २-३ दफे उठना पड़ा। वहाँ

वहुत थोड़े यात्री थे, एक ने कोई जड़ी दी। मैंने चबा कर पानी पिया। पेट दुखना कम हो गया। रात में १० वजे तक नींद आ गयी।

कर्णप्रयाग

२६ जून : कल रात बड़ी गलती हुई। जड़ी का नाम नहीं पूछा और न उससे थोड़ी सी माँग ली। वहुत तकलीफ में था, इसलिए ध्यान नहीं आया। सुबह ४॥ बजे ही चल पड़ा, तवीयत ठीक थी। घोड़े पर था। ९ बजे तक कर्णप्रयाग पहुँच गया। रास्ते भर रातवाले यात्री को ढूंढ़ता रहा पर मिला नहीं। कैसा संयोग बना। सवारी के लिए घोड़े का बंदोवस्त कर लिया था। दिन वहुत सुहावना था। आसमान साफ था। स्नान किया, थोड़ा खाना खाया। पेट नहीं दुखा। २ बजे कर्णप्रयाग से आगे बढ़ा। थोड़ी वर्षा थी पर असुविधा नहीं हुई। घोड़ा एकसार चाल पर था। शाम तक 'गोचर' पहुँचा। वड़ी सुंदर जगह है। वहुत वड़ा मैदान-सा है। हवाई जहाज उतरते हैं। यहाँ से ७ वजे चल कर वनहरी आश्रम में रात के लिए ठहरा। आज २० मील का सफर किया।

रुद्रप्रयाग-शुकता चट्टी

२७ जून : रात थी, हवा चल रही थी। अंदाज ३ वजे वन हरी आश्रम से रवाना हो गया। अंधेरा था, परंतु डर नहीं लगा। इधर यात्रियों के लूटा नहीं जाता : और भी यात्री आते-जाते मिलते रहे। बीच-बीच में वदरी भगवान् की जय बोलते हैं। ९। बजे रुद्र प्रयाग पहुँचा। बस में जगह की चेष्टा की परंतु कोई चांस नहीं लगा। ११ वजे गुलावराय चट्टी पहुँच गए। कोशिश की पर किसी भी वस में हम लोगों को जगह नहीं मिली। ३ वजे पैदल ही चला, ९ वजे रात में शुकता चट्टी पहुँचा। वापू जी वगैरह पीछे ही रह गए। वर्षा का ढंग था। आज २५ मील की यात्रा की। वापू जी वगैरह वहुत वाद में पहुँचे।

कीर्तिनगर-देवप्रयाग

२८ जून : सुवह ४। वजे शुकता से चले। बस में जगह बनाने के लिए मैं आगे जल्दी चढ़ता था। परंतु गलती मेरी है, साथ में तो रहना चाहिए। वारिश होने लगी। हम लोग वहुत भींग गए। श्रीनगर चल कर कपड़े वदले। मैं ज्यादा देर रुका नहीं। घोड़ेवाले के साथ कीर्ति नगर पहुँचा। करीव ५ बजे वस मिली। जगह वन गयी। पिता जी वगैरह भी आ गए। ६॥ वजे हम लोग वस से देवप्रयाग पहुँचे। परंतु यहाँ से सव कोई चले गए। मैं ठहर गया। देवप्रयाग न मालूम क्यों मुझे वहुत अच्छा लगता है। मन में होता है, मैं इस जगह पर कभी शायद वहुत दिन रहा। रात में संगम पर स्नान किया। ठंड नहीं मालूम पड़ी। पानी में उतरा नहीं, लोटे से नहाया, धारा वहुत तेज थी अँधेरा भी था। तवीयत ठीक भी थी, पेट में दरद नहीं था। खाना नहीं खाया। हल्का कलेवा कर घाट की तरफ की ऊँची पहाड़ी पर चला गया। ऊपर एक जगह वहुत देर वैठा

रहा। विचार आते रहे, क्या पाया, क्या खोया, क्या बाकी रहा। रात ११ बजे अंदाज सोया। शायद यहाँ फिर आना पड़ेगा, मन बोलता है।

देवप्रयाग-हरद्वार

२९ जून : सुबह ५ बजे उठा। तबीयत बहुत ठीक थी। बस में जगह मिल गयी। ७ बजे ऋषिकेश पहुँचा। कलकत्ते का कोई खास समाचार नहीं था। मन प्रसन्न था, बदरी-केदार की यात्रा पूरी हो सकी। पता नहीं, फिर कभी आ सकूंगा या नहीं, परंतु चेष्टा जरूर करूँगा।

हरद्वार

२ जुलाई : यहाँ आये दो दिन हो गये। मन लग नहीं रहा है। मंदिरों में दर्शन करता हूँ, भजन उपदेश सुनता हूँ, परंतु मन उचाट हो रहा है। पेट दुखता है। दवा ली, मगर खास फायदा नहीं हुआ। कलकत्ता जाने का मन कर रहा है। स्टेशन जाकर कोशिश की, मगर एकदम जगह नहीं है।

३ जुलाई : पेट में मरोड़ें चलती हैं बार-बार शौच के लिए जाना पड़ता है। बारिश भी जोर से हो रही है। खाने का नियम रखता हूँ, दवा भी लेता हूँ मगर शरीर को आराम नहीं, मन में भी बेचैनी है। शाम को ६ बजे गाड़ी में बैठे। रात में लक्सर पहुँचे। यहीं ठहर गए।

लक्सर, बनारस

४ जुलाई : ४ बजे सुबह मेल पकड़ी। काफी भीड़ थी। पिता जी, मां जी और को तकलीफ रही, कैसा-सा मन हो गया। मगर किसी भी डब्बे में जगह नहीं थी। इंटर क्लास में बैठे-बैठे लखनऊ तक जाना पड़ा। रात में ९॥ बजे बनारस पहुँचे। पानी बरसा था, यहाँ भी काफी ठंड है।

बनारस

५ जुलाई : गंगा जी का पानी बरसात की वजह से साफ नहीं है। वर्षा होती है। नागरी-प्रचारिणी सभा गया। अखबार देखे। पाट का भाव ७५।) आना देखा।

७ जुलाई : कलकत्ते तार कर दिया। ३ बजे स्टेशन गया। गाड़ी में भीड़ थी। वाइफ को सेकेंड क्लास में बैठा दिया। मैं बर्फवाले डब्बे में बैठ गया। रास्ते में तकलीफ नहीं हुई। बापू जी की तबीयत ठीक नहीं है, दस्त लगते हैं। उनका मन देश जाने का है, पर मां का नहीं।

कलकत्ता

९ जुलाई : सुबह गंगा जी गया, मालिश करायी। १० बजे ऑफिस गया। पहले का काम देखा। प्रेस का काम अच्छा चल रहा है। सब कोई मेरी तबीयत सुस्त बतला रहे हैं। शाम को दानमल भूरामल के गया।

११ जुलाई : वैद्य जी को दिखाया। बोलते हैं, खाने-पीने में गोलमाल है। ठीक हो जायगा। दिन में 'महाप्रस्थानेर पथे' बंगला किताब पढ़ी। बदरीनाथ यात्रा बहुत अच्छी लिखी गयी है। मैं भी कुछ ऐसा लिखूं मन करता है परंतु शायद ही कर सकूंगा। लिखने का अभ्यास नहीं और टाइम भी नहीं। शांति और धीरज मुझमें नहीं है। पाट का बाजार मंदा है, फाटका ७५।।) है।

आज किस्टो डॉक्टर आया। बोला, १५ दिन में बीमारी ठीक हो जायगी। मेरा मन फिर बाहर जाने का हो रहा है। कमजोरी बहुत है।

१३ जुलाई : बापू जी को कागज बराबर लिखता हूँ। कागज जाने से वे खुश होते हैं। दीपचंद के घर जाकर उसे अपने यहाँ ले आया। वहीं जीमा, ताश खेला।

१५ जुलाई : वावेल प्लान फेल हो गया, अखबारों में खबर है। अंग्रेजों की चाल है। रूस, चीन और अमरीका हिंदुस्तान को स्वाधीनता देने की बात चर्चिल से कहते हैं तो अंग्रेज एक प्लान बनाते हैं और उसे फेल करा देते हैं। जिन्ना नहीं मानेगा, यह तो पहले ही से समझा हुआ था। इस बार बाहर से आने के बाद फाटका नहीं किया। टेम्पटेशन भी नहीं है। महादी पुरी से कल आ गयी, कांते के सब ठीक है। शामको कई बारातों में गया।

१७ जुलाई : १२ बजे के अंदाज हमारी जूट प्रेस में आग लग गयी। टेलिफोन से खबर मिली। प्रेस गया, हालत देखी। मन खिन्न हो गया, थकान भी मालूम देने लगी। रात में 'दुनिया की सैर' किताब पढ़ता रहा।

२० जुलाई : प्रेस गया। आग वाला काम सलट रहा है। इसमें हम लोगों को १५-२० का फ़ायदा ही रहेगा। ऑफिस में कामकाज नहीं है। भाव ७४।।।) है। रात में नींद उचट गयी, सपने आते रहे।

२४ जुलाई : नारायणगंज में अजीत सिंह के लड़का हुआ। घर के बच्चे लोग कोई तमाशा देखने गए। मैं दीपचंद के साथ मेट्रो में 'बेदिंग ब्यूटी' में गया। तैरने की फिल्म थी। अंग्रेजी फिल्मों में सेक्स को बहुत खुला दिखाते हैं। इसे बुरा नहीं मानते। युवती तैराकियों द्वारा पानी में संगीत के साथ तैरते हुए नाचना वगैरह अच्छा था।

२९ जुलाई : सत्यनारायण सुबह आ गया। पाट की मिल चल रही है। प्रायः १०,००० का फायदा होगा। फायर का काम सलट रहा है। दीपचंद के कल लड़का हुआ, वह इलाहाबाद चला गया। लड़ाई में दम नहीं है। जापान टूट गया है। ऐसा लगता है, जिन मुल्कों को उसने जीता, वहाँ झमेला खड़ा होगा।

३१ जुलाई : सुबह शौच के लिए कई बार जाना पड़ा। पेट एकदम खराब हो गया। दिन में ऑफिस गया, कमजोरी बढ़ती मालूम पड़ी। मिल से ३३००० मन का काम किया। साहब लोगों से बोला, कलकत्ते से बाहर जाऊँगा, तबीयत ठीक नहीं रहती परंतु वे कुछ बोले नहीं, घर जाने को कहा। तबीयत ठीक होने पर जाने को बोलते हैं। ५ बजे घर आ गया। भाई जी कहते हैं, खाने की गड़बड़ी से तबीयत नरम हो गयी है।

२ अगस्त : काम पर रोज की तरह गया। पेट कुछ ठीक है पर कमजोरी बढ़ी मालूम देती है। हरिवख्श जी जोशी को दिखाया। संग्रहणी वताते हैं, दही की दवाई शुरू करेंगे। चक्कर आते हैं, वाहर जाने की हिम्मत नहीं होती। जसीडीह जाने का विचार है। डेडराज जी का काम प्रायः सलट गया है। मदन और मनीवाई वनारस गए।

५ अगस्त : वैद जी की दवा शुरू कर दी है। दही, मट्ठा वगैरह ले रहा हूँ। पर्पटी के मफिक है। वैद जी ने कहा, घवराने की वात नहीं। जुकाम के लिए दवा दी। शाम को कितावें खरीदने कॉलेज स्ट्रीट गया। मन माफिक किताव नहीं मिली।

९ अगस्त : आज वुखार नहीं था। रविवार से दूध के साथ दवा शुरू करेंगे। इन दिनों 'डेविड कॉपरफील्ड', 'कैलास मानसरोवर यात्रा' वगैरह पढ़ी। मन लग गया। अच्छी हैं। सुवह अखवार में पढ़ा, रूस ने जापान से लड़ाई डिक्लेयर कर दी है। जापान तो यों ही हार रहा है। लड़ाई करो या नहीं। रूस को कुछ जमीन हड़पने का मौका मिल जायगा। ४००० गाँठ पाट की ७५) में वेंची।

१० अगस्त : रूस जापान की लड़ाई शुरू हो गयी। रूस कुछ वढ़ा है।

१४ अगस्त : दिन में ऑफिस गया। आज तवीयत कुछ ठीक मालूम दी। जापान के सरेंडर की खवर है। ५ तारीख को अमेरिका ने हिरोशिमा और ९ तारीख को नामासाकी पर एटम वम गिराए। वहुत वड़ी वरवादी हुई, वहुत तादाद में लोग मारे गए औरतें-वच्चे-वूढ़े। नए ढंग का खतरनाक वम है। इसका असर वहुत दिनों तक रहता है।

जसीडीह

१९ अगस्त : सुवह ६ वजे जसीडीह पहुँचा। अकेला हूँ, शायद मन कमती लगे। रामजीदास जी और रतनी साथ हैं। शायद कलकत्ते से और लोग भी आ जायें।

२२ अगस्त : दूध पीता हूँ, अच्छा मिल जाता है। हवा-पानी यहाँ ठीक है। दिन में देवघर गया, २२) की कितावें खरीद लाया। दिन भर पढ़ना, ताश खेलना यही काम है।

२५ अगस्त : तवीयत पहले से ठीक है। कितावें खूव पढ़ता हूँ। लाइब्रेरी चला जाता हूँ। मुझे 'पाटन का प्रभुत्व' वहुत अच्छा लगा। गुजरात के इतिहास और संस्कृति के वारे में जानकारी कम थी। इस उपन्यास में रोचकता है, मेरी जानकारी भी वढ़ी। मुल्कराज आनंद की किताव पढ़ रहा हूँ।

२७ अगस्त : आज दूसरी दवाई ली, मट्ठे के साथ। दूध कल से कम कर दिया। शायद ठीक हो जाऊँ। मेरा ध्यान है कि घूमने जाऊँ, विलायत वगैरह अनेक जगह, पर वंधन से छूटना मुश्किल है। दो दिन से तेल मालिश करा रहा हूँ, कुछ ठीक मालूम देता है। कलकत्ता दीपचंद को, सरदार शहर रामलाल करणानी को और वनारस कागज लिखा। भवन के वैद्य जी की दवा शुरू की है।

२९ अगस्त : कल रात अंदाज एक मील घूमने गया था। नींद अच्छी आयी। तवीयत काफी ठीक मालूम देती है। सुवह साइकिल पर भवन गया।

३० अगस्त : आज सवा मील घूमा। दिन में ताश खेला, चिट्ठियाँ लिखीं। किताबें पढ़ता रहा। लाइब्रेरी भी गया। ग्रामोफोन सुना। साइकिल पर भवन से कोठी आया। तबीयत ठीक है परंतु मन इधर-उधर भागता है। 'गोदान' पढ़ा। प्रेमचंद का यह उपन्यास पहले भी पढ़ चुका था। हिंदुस्तान जब स्वधीन होगा तो 'झूरी काछी' जैसे लोगों पर सब से पहले ध्यान देना होगा। ऐसा लगता है, जयप्रकाश बाबू और समाजवादी नेताओं का अंदाज सही है।

३१ अगस्त : कल रात सपना आया, विलायत जा रहा हूँ। यहाँ वर्षा हो जाती है, ठंडक बढ़ जाती है, मच्छर बहुत हैं। दिन में पपीता खाया, सीताफल भी। पकौड़ी खा ली परंतु नुक्सान नहीं किया फिर भी गलत बात है। 'गोदान' पढ़ रहा हूँ। 'सिलिया' और 'गोबर' गरीबी में भी प्यार से भरे हैं। पढ़ने में अच्छा लगता है। सुबह गुरुप्रताप जी मिले थे, कलकत्ते से आए हैं। पाट ७५॥), चाँदी १२२॥) बतला रहे थे।

३ सितंबर : सुबह पैदल देवघर तीन मील गया। वापिस ८। बजे की गाड़ी से ८॥। पर जसीडीह पहुँचा। स्टेशन से एक मील आया। इस माफिक ४ मील पैदल चला परंतु कोई थकावट नहीं मालूम पड़ी।

६ सितंबर : सुबह नंदन पहाड़ तक गया। आती दफे रेल में आया। तबीयत प्रसन्न है। कोई थकावट नहीं मालूम देती। ऐसा लगता है, १०-१५ दिन में ठीक हो जाऊँगा। तबीयत ठीक हो रही है, मन भी लग गया है पर जीवन में एकरकम स्वाद नहीं है।

८ सितंबर : सुबह २-३ मील घूम कर स्टेशन गया। बापू जी, मां जी आए, साथ में एक पुरोहित। मा बीमार हैं, बापू जी दुबले हो रहे हैं। मेरी तबीयत ठीक है, भूख लगती है। वैद्य जी को १५) दिए। रामजीदास जी को दौरा आया।

१३ सितंबर : तबीयत ठीक है, चार-पाँच दिन से थोड़ी-थोड़ी कसरत शुरू कर दी है। शेक्सपीयर की कहानियाँ पढ़ने में अच्छी लगती हैं। चार्ल्स लैम्ब ने बहुत सरल भाषा में लिखा है। विश्वमित्र में जसीडीह के भवन के बारे में लेख भेजा। लिखने का अभ्यास बढ़ाऊँगा।

१४ सितंबर : भवन में आज कलकत्ते से बहुत से आदमी आए। शाम को स्वामी सत्यदेव जी से मिलने गया।

२० सितंबर : तबीयत काफी सुधर गयी। कसरत करता हूँ, घूमने भी जाता हूँ। कलकत्ते जाने का रविवार को विचार है, पर पक्का नहीं है।

२२ सितंबर : सुबह घूम कर आया फिर कसरत की। शाम को भी कसरत की ६० डंड, ६० बैठक। तेल मालिश करा कर स्नान किया। तबीयत बहुत इंप्रूव्ड है। दूध दोनों टाइम लेता हूँ। दवा बंद है। बापू जी की तबीयत भी ठीक है। कलकत्ते जाने का विचार कैंसल कर दिया।

२६ सितंबर : किताबें पढ़ता हूँ। घूमना और कसरत करना चालू है। मन लग जाता है। कलकत्ता नहीं गया, अच्छा किया। वापिस चिंता-फिकर शुरू हो जाती है, फिर

बीमारी बढ़ती है। बैडमिंटन आज शाम को भवन में खेला। पाट का भाव ७३) का है। रिपोर्ट ७१ लाख की निकली।

२७ सितंबर : रात में पूरी खा ली, इसी से उल्टी हो गयी। गलती करता हूँ, पक्की नहीं खानी चाहिए। मैं नियम नहीं रखता, खराब बात है। स्वप्न बहुत आते हैं। वैद्य जी ने कहा, फजूल सोचने से और पेट की खराबी से स्वप्न आते हैं, वायु का विकार कारण है।

३० सितंबर : सत्यनारायण का कागज था, बाजार बहुत मंदा है, कामकाज कमती है। मेरा मन अब यहाँ नहीं लगता। तबीयत एकदम ठीक है। कामकाज में मुझे ध्यान देना चाहिए, सम्हालना तो होगा। बापू जी ने कलकत्ते जाने को ना कर दी। 'तुम्हारा क्षय' पढ़ रहा हूँ, बहुत अच्छी किताब है। पटना जाने का विचार है पर गया भी जाऊँगा। थोड़ा घूमना हो जायगा, मन भी प्रसन्न रहेगा।

पटना

५ अक्तूबर : ट्रेन लेट थी। ७ बजे आयी, पटना १॥ बजे पहुँचा। बाजार गया, कोई खास बात नहीं परंतु व्यापारी मंडी है। पटना मैदान देखा, एक्जिबिशन रोड के पास है, यहीं गोलघर है। अकाल के समय इसमें अन्न रखा जाता था। मगर इतने थोड़े से क्या होता होगा। आज तो गवर्मेंट के एक गोदाम में इससे कहीं ज्यादा अनाज रहता है। गोलघर अंग्रेजों का बनाया बताते हैं। बाँकीपुर गया, हाईकोर्ट देखा। यहाँ काफी तादाद में बंगाली हैं। पिंटू होटल में रसगुल्ले खाये। यह भी एक बंगाली का मशहूर होटल है।

किसी समय मगध साम्राज्य की राजधानी पटना थी परंतु उसका कुछ भी चिह्न नहीं बचा। रेलवे लाइन के दक्षिण में किसी टीले के नीचे कुछ खंडहर बताते हैं। उधर गया, पानी भरा था। रात में राजेंद्र बाबू को देखा। शहर में उनके लिए बहुत बड़ा जलसा हुआ। राजेंद्र बाबू जैसे आदमी याद रह जायेंगे। संत-महात्मा का नाम लिया जाता है, धनी सेठों का नहीं।

गया

६ अक्तूबर : पटना सिटी गया, पुराना हिस्सा है। यहीं सिखों का गुरुद्वारा है, गोविंद सिंह जी का। 'पटना साहब' कहते हैं। राधाकृष्ण जालान की क़िला कोठी देखने गया। किला नहीं है, गंगा के किनारे का सुंदर मकान है। जालान जी का पुरानी कीमती चीजों का संग्रह है। वे कुछ काम कर रहे थे। मैं बीच में ही चला गया। कुछ नाराजगी के टोन में बोले, मैं वापस आ गया। गलती मेरी थी। खैर, ११ बजे पटना से इंटर क्लास में बैठा। २ बजे गया पहुँचा। शहर अच्छा है, बड़ा भी परंतु पटना जितना नहीं। बाजार है। सूरजमल की धर्मशाला बहुत बड़ी है, बंदोबस्त अच्छा है। शहर घूमा। रामशिला पर्वत देखा। मंदिर और भी देखे परंतु बुद्धगया नहीं जा सका। रात में मार-

बाड़ी वासा में खाना खाया। गलती की। फल वगैरह खाना था या दही। रात १० वजे स्टेशन आया। जसीडीह के लिए।

जसीडीह

९ अक्तूबर : आज दिन में डगरिया पहाड़ पर गया। ४ मील गया, ४ मील आया, २ घंटे लगे। थकावट नहीं आयी परन्तु जुकाम हो गया। पहाड़ पर जाने में बड़ी मौज आयी।

१३ अक्तूबर : जुकाम कमती है। कल पहाड़ पर जाने की बात पक्की है। आज शाम को कई आदमी आये, पक्की रसोई बनी।

१४ अक्तूबर : ६॥ बजे उठा। सर्दी थी। ९ बजे ३२ आदमी भवन के देवघरिया पहाड़ के ऊपर चढ़े। दाल, चूरमा की रसोई बनी। मैंने बंदूक चलायी। शाम को ५ बजे लौटती दफे काफी पानी बरसा। हम लोग भींग गये। ७॥ बजे घर पहुँच कर पैरों में गरम तेल मालिश कराया और दूध पीया। आज कसरत नहीं की। रात में कसरत करने का स्वप्न आया।

कलकत्ता

१७ अक्तूबर : सुबह हवड़ा पहुँचा। सत्यनारायण, मदन आये थे। ऑफिस का कामकाज देखा। स्मिथ साहब विलायत से आ गया। पाट का बाजार मंदा है, कामकाज बहुत कमती है। लोगों से मिला। सब कहते हैं कि मेरी तबीयत खास ठीक नहीं हुई।

२० अक्तूबर : कसरत बंद है। ऑफिस जाता हूँ। विशेष काम नहीं। कल २००० गाँठों का काम हुआ, परंतु आज नहीं। दिन में 'शकुंतला' सिनेमा देखने गया। बीच में फिरती आ गया। उधर से मानव बाबू के गया। मौसम खराब है, वर्षा बहुत होती है। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित की 'प्रिजन डायरी' पढ़ रहा हूँ। इंटरेस्टिंग है, सरल भाषा है।

२४ अक्तूबर : इलाज चल रहा है पर कमजोरी बढ़ रही है। मेरा मन वापिस जाने पर हो रहा है।

२६ अक्तूबर : ऑफिस गया, छोटा ऑफिस था। कमजोरी बढ़ती जा रही है, मन नहीं लगता। डॉक्टर के गया, मेसाज किया। घर वापस आकर किताब पढ़ने में लग गया। सत्यनारायण, बिरजू जसीडीह चले गये।

३० अक्तूबर : वजन हुआ, ११ स्टोन ७ पाउंड। दवा शुरू की है, नियम से ले रहा हूँ। चित्त शांत है। जुकाम है परंतु पेट की तकलीफ नहीं रही, दर्द नहीं हुआ। बेलिंग का काम समान सा ही चलता है, रफ्तानी हो रही है। एक कागज पर सब काम लिख लिए थे। इससे काफी सुविधा रहती है। कल पाट २५०० मन लिया।

ऐसा लगता है, दवाई फायदा करेगी। ऑफिस से लौटने पर डॉक्टर के गया, सलाई दी। दर्द नहीं हुआ पर 'इरिटेशन' हुआ है।

२ नवंबर : बुखार नहीं था, पर कमजोरी है। डॉक्टर से कहा। बोलता है, ऐसा होता है, ठीक हो जायगा। ४ बजे ऑफिस गया, ५ बजे वापिस आकर डॉक्टर के गया, मेसाज ली। गद्दी नहीं गया। बापू जी का कागज है, दीपावली बाद आयेंगे।

४ नवंबर : सुबह ७॥ बजे २६ ताराचंद दत्त स्ट्रीट गया। मकान छोड़े काफी दिन हो गए मगर मन अभी भी वहीं लगता है। बड़े भले लोग हैं, हँसी खेल में टाइम बीत जाता है। तकलीफ याद नहीं रहती। तबीयत वैसे तो ठीक है पर खून नहीं बनता। ९। बजे डॉक्टर के गया। रास्ते में भाईजी मिले, उनको बताया कि आर्य समाज में गया था। मन में थोड़ा दर्द हुआ, झूठ बोलना पड़ा। रात में दीवाली देखने गया। बाजार खूब सजा था, अच्छा लगा। परंतु तन और मन ठीक नहीं होने से आनंद नहीं आता है।

७ नवंबर : तबीयत इंप्रूविंग है। सुबह मैदान गया, एक मील घूमा, गंगा-स्नान भी किया। ९॥ बजे ऑफिस गया। पिता जी सरदार शहर से आ गये, दुबले हैं।

१२ नवंबर : बदरी, केदार की बहुत याद आती है। यहाँ आकर झंझट में फँस गया। शरीर बीमार रहता है। मेरे १०,००० गाँठें मत्थे हैं, ७२॥=)॥ की। दीपचंद की ४००० गाँठ ७२।)॥ में बेची। फाटका बुरी लत है, वह अब इसमें फंसा है, चाँदी का भी करता है। मेरे मन में डर है, इलाहाबाद से आने पर उसे कहूँगा।

१६ नवंबर : इलाज-दवाई चालू है। पूरा फायदा नहीं होता। कभी ठीक होता है, वापिस खराब। डॉक्टर के गया, मेसाज किया। फालतू झंझट है मगर उपाय क्या। तबीयत एक रकम ठीक है। नागरमल भुवालका बोलता है, मेरे पास लेक रोड में रहो ठीक हो जाओगे।

१८ नवंबर : २-३ दिन में सैदपुर जाने का विचार है। दीपचंद मिला, गंगा बिसन मिला था। मैं गौशाला के बारे में देरी करता हूँ, मेरी बहुत भूल है। ट्रस्ट बनाने में इतनी देर की क्या बात है, रुपये रुल जायेंगे। अपनी गलती दिखाई नहीं देती, कोई दूसरा करता तो गुस्सा आता है। मुझे अपने पर चौकस रहना चाहिए। दीपचंद, लाला जी के साथ ताश खेलता रहा। सेंगर जी आये थे। बहुत भले हैं, विद्वान् हैं, उनमें दिखावा नहीं है। उनकी बात अच्छी लगती है।

१९ नवंबर : तबीयत उसी तरह है, हरारत नहीं है। बापू जी का और मेरा सैदपुर जाने का विचार है। लड़ाई तो खतम हो गयी परंतु चीजें बहुत-बहुत महँगी हो रही हैं। कपड़ा, चावल किरासन वगैरह कुछ भी ठीक से नहीं मिलता। ट्रांसपोर्ट की तकलीफ पहले के माफिक ही है। जहाज, रेल कुछ भी नहीं मिलता।

इंडोनेशिया में लड़ाई हो रही है। जापानी कब्जा तो हट गया। अब वे लोग डचों का कब्जा नहीं चाहते, स्वाधीनता चाहते हैं। डॉ० सुकर्नो इनका नेता है।

२१ नवंबर : ऑफिस में कामकाज एकदम नहीं है। फाटका ७१॥।) रहा। वेलिंगटन स्क्वायर में पुलिस ने गोली चलायी। ३ आदमी मारे गये, हल्ला है, बहुत लोग घायल

हुए। आज आई० एन० ए० का दिन मनाया गया। लगता है, हिंदुस्तान में भी झगड़ा मचेगा। कांग्रेस का दवाव वढ़ रहा है, लीग अड़ंगा लगाती है।

२२ नवंबर : ऑफिस जाकर गद्दी गया। आज हड़ताल कर दी गयी। स्कूल-कालेज के लड़के लोगों का काफी अड़ंगा था। मोटर भी नहीं चलने देते थे, ट्राम, बस सब कुछ वंद हो गयीं। 'सुभाष वावू की जय', 'वंदे मातरम्', 'महात्मा गांधी की जय' छोटे-छोटे वच्चे भी जोर-जोर से कहते थे। वहुत लड़के पकड़े गये।

२३ नवंबर : घेलिया के घर गया, दीपचंद के जीमा। मिलखीराम जी को २०००) भेजे। दिन में नलों में पानी नहीं है। चारों तरफ दंगा हो रहा है। कांग्रेस के उपदेशक लोगों को शांत कर रहे थे। गोली चली, कई घायल हो गये। हवड़ा स्टेशन पर रेलें नहीं आयीं। लोग पटरियों पर लेट गये थे। दिन में दंगा थोड़ा शांत हुआ। हवाई जहाज उड़ रहे थे। ऐसा मालूम देता था, दंगा 'आउट ऑफ कंट्रोल' है। लोग कहते हैं, गवर्मेंट ने सिंगापुर में सुभाष वावू को पकड़ रखा है।

२४ नवंबर : शहर में आज शांति रही। वहुत लोग पकड़े गये। गोली से घायल होने और मरने की खवर है। पुलिस का पहरा वहुत जोर में है। परंतु कांग्रेस चुप नहीं वैठेगी। महात्मा जी हिंसा करने को मना करते हैं। परंतु जोश के आगे इनकी कौन सुनता है।

तवीयत काफी इंप्रूव्ड है। गंगा स्नान किया। ऑफिस १० वजे गया। १२ वजे वकील के गया। मकान १,६५,०००) में नक्की किया। फाटका ७१॥=) है।

२६ नवंबर : व्यायामशाला में थोड़ी कसरत की, फिर गद्दी गया। ११॥ वजे ऑफिस गया। फाटका ७१।=) रहा। हम लोगों के १०.७५० मत्थे है। प्राय: ११,०००) का फायदा है। पाट ५०,००० पोते है, उसमें नुक्सान है। घुवड़ी का माल चढ़ता है। वाजार में कामकाज नहीं है। वी० ट्रविल में गजराज सक्सेसी हो गया है। दीपचन्द को भी ४०००) का फायदा है। इससे उसको कुछ सुविधा हो जायगी।

२७ नवंबर : टी० सी० वनर्जी से १,६५०००) में नकी किया। शाम को इसके वारे में भाई जी से काफी मतभेद हो गया। कुछ गरम वातें भी हुईं। आपस में मनोमालिन्य हुआ। मैं भी तेज हो गया, उनका स्वभाव भी कुछ कड़ा है ही। रात भर चित्त खराव रहा।

२८ नवंबर : भाई जी से मकान के वारे में वापू जी बोले, ले लो।

२९ नवंबर : के० के० दत्त के गया। मकान मंगलवार को नक्की हो जायगा। ३ वजे नीलाम में गया। ४ वजे से ६ वजे तक वारातों में गया। लोग वहुत आडंवर करने लग गये हैं। अपने समाज में इससे आगे चलकर वहुत नुकसान होगा। रुपये वरवाद होंगे, फैशन वढ़ेगा।

आजकल वहुत ज्यादा वोलता हूँ, झूठ भी निकल जाता है। पीछे पछताता भी हूँ, पर क्या करूँ।

३० नवंबर : कसरत नहीं की। खाने में गोलमाल किया, २ जलेवियाँ खायीं। दिन में तवीयत सुस्त रही, थोड़ा पेट भी दुखता था।

सुवह मैदान गया। अकेला घूमना अच्छा रहता है। अपने वारे में सोच सकता हूँ, परमात्मा मुझे सुवुद्धि दे, कम वोलूँ। ज्यादा वोलने से आयु और मन दोनों घटता है। वाजार जनवरी-फरवरी में तेजी जँचता है।

२ दिसंबर : भाई जी जसीडीह गये। महात्मा जी आये हुए हैं। सोदपुर आश्रम में उनके दर्शन को जाने की वात थी, नहीं गया।

४ दिसंबर : वर्मा में गोलमाल जोर से वढ़ रहा है। एंटी फासिस्ट पीपुल्स लीग लड़ाई कर रही है, उधर कम्युनिस्टों के कई दल भी लड़ते वताये जाते हैं। मलाया में भी अड़ंगा चालू है। अंग्रेज लोग इन्हें उपद्रवी वताते हैं। चीन में आपस में लड़ाई चल रही है, कुओमिन तांग और कम्युनिस्टों में। ऐसा लगता है, अंग्रेज लोग अपने राज में लड़ाई से थक गये हैं, दवाने में ढीले लगते हैं। ११॥ वजे ऑफिस गया।

१३ दिसंबर : फाटका प्राय: ७२=) रहा। हम लोगों के २० हजार गाँठें मत्थे हैं। लूज का वाजार काफी मजवूत है। दिन में १॥ वजे गंगा जी में स्नान किया। एम० जी० पोद्दार के साथ हिंदुस्तान क्लव का मेंवर हुआ।

१७ दिसंबर : सुवह ६॥ वजे मैदान गया। ९॥ वजे ऑफिस गया। वाजार का टोन स्टेडी है। मुसद्दी लाल जी के गया, उधर से वाली मिल। १॥ वजे ऑफिस। वाजार फाटका नीचे में ७१।।।), वंद ७२)। हम लोगों के मत्थे ही रखा है। शाम को ६॥ वजे मेसाज शुरू करायी।

२० दिसंबर : आज दिन में काफी जोर से काम हुआ। दवाई ली, मसाज करायी। जसीडीह से वजन २ सेर घट गया है। माहेश्वरी भवन की मीटिंग में गया। ३-४ सौ आदमी थे। मैंने भी थोड़ा वोलने की चेष्टा की, कुछ वोला भी, पर अभ्यास नहीं है। वापू जी जसीडीह गये, नंदू भी साथ में गया।

वंगाल में सव नेता लोग इकट्ठा हो रहे हैं। उधर मुस्लिम लीग वाले समझौता किसी भी रकम से नहीं करना चाहते, वात पलटते रहते हैं। हिंदुओं में एका नहीं है। मेघराज सेवक से वात हुई, धनवानों के काफी विरोध में हैं।

सैदपुर

२३ दिसंबर : सुवह ६ वजे पार्वतीपुर पहुँचा, ७॥ वजे सैदपुर। प्रेस गया। काफी जगह है। कामकाज एकदम गोलमाल। पाट लेने में ठेका भाव भी ऊँचा, पड़ता नहीं। १४००) का गोलमाल भी पाट लेने में हुआ है। शाम को वाजार घूमा। सिनेमा 'परख' देखा। रात में कलकत्ते के लिये गाड़ी में वैठा। सैदपुर के काम की चिंता है, जँचाना होगा।

२५ दिसंबर : वड़ा दिन है। सुवह विक्टोरिया मेमोरियल गया। फिर ज्वाला प्रसाद जी भरतिया के घर होता हुआ ९ वजे गद्दी आया। फाटका ७३=) से ७२।।।≡)।

दिन में स्मिथ, एन्ड्रयु, अलेक्जेन्डर के डाली देने गया। एन्ड्रयु, को २१००) स्मिथ को १७००), अलेक्जेंडर को १५००) का रहा। फूल जसीडीह से मँगा लिये थे।

२७ दिसंबर : दिन में रेस गया। किंग्स कप था। बड़ी रेस थी। सब कोई मिले। मैं कभी नहीं जाता, आज सब कोई थोड़ा ताज्जुब करने लगे। रेस में १०) हारा, प्लेस खेला था। रेस खेलना मुझे कभी नहीं जँचा। घोड़ा दूसरे का, मैदान भी दूसरे का। सिखाता कोई और है, दौड़ता भी कोई और है, मगर रुपया अपना लगता है। अपनी अकल क्या काम आये?

२८ दिसंबर : सुबह विक्टोरिया मेमोरियल गया। मन में उदासी थी। फाटका ७३।) रहा। ७३=) में १००० गाँठ बेची। बाजार का टोन स्टेडी है। हम लोगों के पाट मत्थे है।

१० बजे फोन आया कि अपने प्रेस में आग लग गयी, ५ नं० गोदाम में। रात १२ बजे प्रेस से लौटा। चित्त खिन्न हो गया।

२९ दिसंबर : सुबह ७॥ बजे प्रेस गया। आग रात में बुझ गयी थी। नुकसान ९०,०००) का हुआ है। पुलिस का आदमी आया। फायर का इंस्पेक्टर आया। एक रकम सलट जायगा परंतु नाम बहुत खराब होता है।

३१ दिसंबर : जसीडीह से भाई जी, बिरजू कल आ गये। प्रेस का काम सलट रहा है। प्राय: १० हजार का नुकसान रहेगा। काम का हरजा काफी हुआ। जसीडीह में बापू जी इंप्रूव कर रहे हैं। हवा अच्छी है।

१९४६

कलकत्ता

१ जनवरी : सुवह ६॥ वजे उठा। ८ वजे चीजें खरीदने वाजार गया। फिर केलेन के, ऑसवर्न के, एंडरसन के घर गया। डाली दी। १५००) खरच किये। इस डाली में ६०००) अंदाज खर्च होंगे। पिछले साल अंदाज ४-५ लाख रुपया फायदा मालूम देता है। अभी कामकाज खूव चलता है। ३ वजे फिर वाजार जाकर फल ले आया। रात में लेवे, एली, तथा एंड्रू साहव के घर गया। रात ९ वजे जीमा।

२ जनवरी : सुवह विक्टोरिया मेमोरियल होता हुआ डेडराज जी मरदा के साथ रिजेंट पार्क की जमीन देखने गया। प्रायः २० मील घूमा। ९॥ वजे ऑफिस आया। टामस साहव लड़ाई से आ गया। टामस साहव व्यापारी है मगर अपने देश के वास्ते लड़ाई पर गया। अंग्रेज अपने मुल्क को कितना वड़ा मानते हैं। शाम को ५ वजे प्रेस गया। आग का काम सव सलट रहा है। प्रायः १०-१५ हजार का नफा रहेगा। शाम को ६॥ वजे घर आया। फाटका से दीपचंद को, अजीत सिंह को सव को नुकसान हो गया है। हम लोगों के पाट प्रायः वरावर हैं।

५ जनवरी : ९ वजे ऑफिस गया। पाटका भाव ७३।।।=) वंद हुआ, ७४=) फिर रहा। चित्त एकदम खिन्न हो रहा है। शाम को ३ वजे 'डेविड कॉपर फील्ड' देखने गया। उसमें मुझे अपनी गरीवी याद आ जाती है। कई वार डिकेंस की इस किताव को पढ़ा, मन नहीं भरता।

आग का रुपया १५ दिन में मिलेगा।

६ जनवरी : फाटका ७४।) सुना था। वाजार मजवूत ही हो रहा है। दीपचंद आया नहीं, मन उदास हो रहा है। फाटके की मेरी भी आदत नहीं छूटती इसका क्या उपाय। दीपचंद ने गांठ मत्ये घटा दी। उसके भी काफी नुकसान हो गया है यद्यपि १०-२० हजार में कुछ वनती-विगड़ती नहीं परंतु चित्त को कितना दुख होता है। गंगा-वक्श जी कानोड़िया का रामायण सुनने गया। ५ वजे सिखों का जुलूस देखा। वास्तव में वीर जाति है। गद्दी से घर आया। मास्टर नहीं आया, थोड़ी कसरत की। ९ वजे [illegible] गया।

७ जनवरी : आदमी की आदत छूटनी वहुत मुश्किल हो जाती है। दूसरों पर कमेन्ट करना ईजी है, पर निज पर आने में देखी जाती है। पाट का वाजार ७४) खुलकर ७४।) वन्द हुआ। हम लोगों के प्रायः ४० हजार का लॉस हो गया है। पाट भी काफी गरम

है। ८००० गाँठें मत्थे हैं। मिलों में प्रायः ३ लाख मन का काम हुआ। चित्त अशांत है। मनुष्य का मरना अवश्यंभावी है। इसे जानते हुए भी तृष्णा बढ़ती ही जाती है। इतना प्रोपेगेंडा, इतना-झूठ-सच, किसलिये ?

८ जनवरी : शाम को ५। बजे टामस साहब के घर गया। फूल ले गया था। १॥ घंटे तक था। बहुत तरह की बातें हुईं। जो कुछ सुना, उनसे अंग्रेजों की देशभक्ति और धीरज की तारीफ करनी पड़ती है। अंग्रेजों को हम लोग बनिया-व्यापारी कहते हैं पर वे सच्चे राजपूत भी हैं, यह मानना पड़ता है।

१० जनवरी : दीपचंद के घर मैदान से आती दफे गया। उससे सब बातें कीं। पूरा लॉस उसको नहीं बतलाया, मेरे ही लगेगा पर उपाय क्या। अपनी भूल है, उसे क्यों फाटका कराया।

११ जनवरी : फाटका ७५।=) से ७४।=) के बीच में था। मैंने २५०० गाँठें ७४।=)॥ में ली। दिन भर मन अशांत रहा। मेरी आदत कब छूटेगी परमात्मा जाने। मन को काबू में नहीं कर सकता, यही ऐब है। मेरे कारण प्रायः ४० हजार का लॉस फर्म को हो जायगा। उपाय क्या ? अभी भी ६-७ हजार गाँठ मत्थे। एस० मरे का काम प्रायः ५५) में हो गया, मालूम देता है।

शाम को शर्मा जी के साथ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी में गया। बहुत ही पुरानी संस्था हैं। पांडुलिपियाँ तो भरी पड़ी हैं। विद्वानों का तीर्थ हैं। बड़े-बड़े विद्वान इसके मेंबर हैं।

१३ जनवरी : सुबह आर्डिनेंस आया कि १०००), ५००) के नोट इल्लीगल टेंडर। हम लोगों के कुछ हैं, इन्हें पलटाना और सलटाना पड़ेगा। बट्टा लगेगा। बहुत से जमींदार, बड़े व्यापारी और अफसर के कसर लगेगी।

१५ जनवरी : चारों तरफ अशांति, मेरे मन में भी काफी अशांति। १०००), ५००) के नोटों के भाव काफी गिर गये हैं। अखबारों को पढ़ने से और भी उत्तेजना होती है। झगड़ा, दंगा, कहीं शांति नहीं। कल रात में 'नरसी भगत' तमाशा देखने गया, साधारण सा था, परन्तु मन को शांति मिलती है। नरसी के पास कुछ नहीं था, भगवान् ने दिया। परंतु उसने अपनी भक्ति नहीं छोड़ी, पहले जैसा ही बना रहा। कल रात में २ बजे नींद आयी। मेरी आदत नहीं छूटने से शांति कभी नहीं मिलेगी।

१८ जनवरी : नोटों का भाव आज अत्यंत गिर गया। आगे और भी गिरेगा। पाट की आमदनी बंद है, भाव ऊँचा है। सैदपुर में भी उलटा पड़ता है। जैसी ईश्वर की मर्जी।

२० जनवरी : आजकल रातभर बुरे सपने आते हैं, मन भी ठीक नहीं रहता। मेरे मन में न जाने क्यों दुश्चिता रहती है, बायीं आँख फड़कती है। नोटों को लेकर कल भाई जी से कहा-सुनी थोड़ी सी हो गयी। अपने नोट सलटाने हैं। ऊपर से जान पहचान-वालों की सलटवाता हूँ। गलती थोड़ी मेरी है, भाई जी का कड़ा होना वाजिब है। परंतु उपाय क्या।

२२ जनवरी : दिन में ऑफिस में ३०,००० मन का काम हुआ। बाजार आज बहुत गरम। फाटका ७५।~) आया। हम लोगों के फाटका में ५००० गाँठें मत्थे हैं, चिंता होती है। पाट भी ३०००-४००० गाँठें मत्थे हैं, कसर लग रही है। क्या किया जाय। अशांत मन को भुलावा देने को लिये जान-पहचान वालों के घर फिरा करता हूँ, मगर इससे क्या होता है ?

२३ जनवरी : फजूल चिंता करता हूँ, मन खराब होता है, शरीर गलता है। फाटका करता हूँ तो घटा-बढ़ी सहनी चाहिए। मगर कमजोरी मन की है। कुछ तो पाट बढ़ रहा है, कुछ नोटों की फालतू फिकर हो रही है। यद्यपि नोटों में हम लोगों को १०) दीपचंद को भी १५ तथा सब आदमियों को १-२ का फायदा होगा। परंतु खास चिंता तो पाट की है। जब तक मन में मजबूती नहीं आयगी, कभी शांति नहीं मिलेगी। मुझे रुपयों का क्यों इतना मोह है, नहीं मालूम।

२६ जनवरी : मनुष्य की आयु अपने हाथ की बात है, आजकल इन दिनों मैं जिस तरीके से रहता हूँ, बहुत खराब है। अपना ध्यान नहीं रखता, रुपयों की चिंता। कसरत छूट गयी है, नींद आती नहीं, सपने बुरे आते हैं। रुपये ५०-६० हजार, १-१॥ महीने में फाटके में तथा १-१॥ लाख और तरफ लग गये। फाटके के रुपयों की बेसी चिंता है। आदमी की तृष्णा मिटती नहीं फिर क्या उपाय. .आदमी का क्या भरोसा, आज है, कल नहीं।

२८ जनवरी : गद्दी गया। १९०००) लिये, भाई जी को कुछ नहीं बोला। मन में दुश्चिंता रही।

२९ जनवरी : पाट का भाव ७६॥|=) आया। गद्दी गया। फिर ऑफिस। दिन में डर के मारे भाई जी से बात नहीं की। १० लाख हेसियन ।॥)-॥) आने में दीपचंद के लिए लिया। शायद २००० मिल जायेंगे। मन स्थिर नहीं है। फाटका भाव नीचे में ७६) होकर ७६॥=) बंद हुआ।

३१ जनवरी : ऑफिस गया, ७६॥|) खुला, हेसियन २७॥|~)। बंद हुआ ७६।=) आना। मिल में ५०००० का काम १३॥|)-१६॥) आना में किया, टी० एन० का और काम ॥|) में हुआ। चित्त आज कुछ ठीक था। आइंदा फाटका नहीं करूँ, तब अच्छा है और पाट फिर ७१) हो जाय तो लगा रुपया सब वापिस आ जाय। फर्म पर बेलिंग में पाट पोते हैं। शाम को स्मिथ साहब के साथ डेंटिस्ट के गया, उसके घर गया।

३ फरवरी : डेडराज जी के साथ 'मेवाड़ पतन' बंगला थियेटर देखने गया, अच्छा था। मन की मजबूती चरित्र को ऊँचा उठाती है, महाराणा इसी से पूजे गये। मैं तो गिरता ही जाता हूँ। रात में सपने तो खराब आते ही रहते हैं। मन में कई दफे होता है, भ्रमण करने जाऊँ, मेरी आत्मा कुछ इधर में कमजोर हो गयी है।

५ फरवरी : काशीपुर में लूज का बाजार बहुत तेज है। टामस साहब भी पाट में इंटरेस्ट ले रहा है। न्यू ऑप का कुछ काम-काज नहीं है।

बिरजू का एक्स-रे का फोटो आया। बीमारी टी० बी० की लिखी थी, बड़ी चिंता हुई। डॉक्टर को दिखाया, बोला फर्स्ट स्टेज पार कर गयी है।

६ फरवरी : सुबह ६। बजे उठा, मैदान गया। आज वसंत पंचमी है। लोग बसंती कपड़े पहने घूम रहे थे परंतु मेरे मन में चिंता की आँधी उठ रही थी। पाट बाजार की चिंता और बिरजू की बीमारी की फिकर। डेनहम व्हाइट १२ बजे आया, देखकर बोला कि टी० बी० है, थूक में भी टी० बी० के कीड़े आये। बोला, जल्दी सनेटोरियम ले जाओ। केदार जी पोद्दार हरिकिशन जी जालान से मदनपल्ली तार दिलाया। घर में सब कोई को चिंता हो रही है। बापू जी को समाचार लिखा। बिरजू के बुखार भी हो रहा है।

७ फरवरी : सुबह डॉक्टर आया। मिरज २ तार दिलाये। दिन में डॉक्टर उकील आया। देखकर बताया फर्स्ट स्टेज तो करीब खत्म हो चुका है पर चिंता की बात नहीं। कसौली का जोर दिया। दीपचंद को कसौली भेजने का बंदोबस्त कर रहे हैं। हवाई जहाज का शाम को टिकट लाये।

दिन में बाजार गया। फाटका समान है, रात स्टेशन गया, बापू जी भी जसीडीह से आए, रात २ बजे।

८ फरवरी : ८ बजे सुबह डॉक्टर राम अधिकारी आये। बिरजू को देखकर कहा, कोई खास चिंता की बात नहीं। कसौली के लिए उन्होंने भी कहा। दीपचंद को हवाई जहाज से १२ बजे भेजा। उसने संकट में साथ दिया, दूसरा कोई नट जाता।

९ फरवरी : ८ बजे सुबह बापू जी के साथ मैदान गया। धानुका जी के साथ ज्योतिषी के उधर कालीघाट गया। उसने कहा, राहु तथा मंगल की दशा ५ महीने और हैं। दिन में थोड़ी देर ऑफिस गया, ३०,००० मन का काम किया। बाजार तेज है, १७=) फाटका रहा। हम लोगों के सब बराबर हैं। जयप्रकाश बाबू के राजी-खुशी की खबर है, जल्दी आयेंगे।

१३ फरवरी : दंगा बढ़ गया। गोली चली, मिलिट्री का सब जगह बंदोबस्त है। कसौली से सत्यनारायण का तार आया, राजीखुशी पहुँच गये। हम लोगों के फाटके में ४२००० का लॉस है। इधर दंगे के गोली कांड में बहुत आदमी मरे हैं। ट्रामे, बसें बंद हैं।

१५ फरवरी : सुबह पैदल ही घर से गंगा जी आया, ३ मील। कलकत्ते में आज शांति है, परंतु खबर है लीग वाले बहुत बड़े अडंगे की तैयारी कर रहे हैं। कांग्रेस को हिंदुओं की पार्टी बताते हैं, अंग्रेज भी लीग को मानते हैं। ४ बजे धर्मचंद जी सरावगी और कुछ लोगों के साथ स्कूलों के चंदे लिखाने गया। तीन-चार कलमें लिखी गयी। मुझे ऐसे काम में शांति मिलती है। बच्चे पढ़ेंगे, समाज बनेगा। परंतु समय नहीं दे पाता। शाम को घर आया। भाई जी के सामने क्लब का आदमी ३५०) चंदा माँगने आया। भाई जी कुछ नाराज से मालूम दिये।

१९ फरवरी : कुछ दिनों से कभी-कभी इन्फीरियारिटी महसूस करता हूँ। मैं ठीक से रहता नहीं, कपड़े, जूते गंदे रहते हैं। जहाँ कहीं बैठ जाता हूँ, खा लेता हूँ। कई आदमियों

ने पहले भी मुझे कहा परंतु आदत है कि मुझे ऐसा कुछ मालूम नहीं पड़ता। वाजार का रुख गरम है। शार्टेज अभी से मालूम देती है। शायद भाव नहीं टूटेंगे। हम लोगों के २-३ हजार गाँठ मत्थे का सौदा है।

खवर है नौ-सेनावालों ने विद्रोह कर दिया। वहुत वड़ी हिम्मत का काम है। अभी तक लड़ाई चल रही है। गवर्मेंट की इतनी वड़ी ताकत के सामने कितने दिन टिक सकेंगे परंतु हिंदुस्तानियों की इज्जत वढ़ी।

२१ फरवरी : रुपया वहुत वड़ी चीज है।

२३ फरवरी : वम्वई में सेल्स टैक्स की हड़ताल हो गयी। २५० आदमियों के मारे जाने की खवर है। सेल्स टैक्स भी अजीव ढंग का है। खरीददार को चुकाना पड़ता है पर 'विक्री कर' कहलाता है। इससे तो चीजें महँगी होगी, वेईमानी भी वढ़ेगी। मगर गवर्मेंट के आगे उपाय क्या।

३० फरवरी : कामकाज कोई खास नहीं। हेसियन-वोरा गरम है। विरजू इंप्रूव कर रहा है। परमात्मा का भरोसा है।

व्रिटिश प्रधान मंत्री क्लीमेंट एटली भारत आ रहे हैं, मंत्रिमंडल के सदस्यों के साथ। चर्चिल रहता तो हिंदुस्तान की आजादी की वात नहीं हो पाती।

१ मार्च : अखवारों में कैविनेट मिशन के वारे में तरह-तरह की वात है। कांग्रेस के नेताओं की वैठकें इसके वारे में हो रही हैं। मास्टर तारासिंह के रुख का अंदाज ठीक नहीं, वताते हैं। मुस्लिम लीग तो अड़ंगे वाली है ही।

८०।) आने से ८०॥) आना पाट का भाव रहा। शिपर्स में ८१॥) आना –॥) आना में 'लाइट' का काम हुआ, मीलों में काम नहीं था। न्यू क्राप का काम हुआ। शाम को खवर आयी कि एक्सपोर्ट कोटा १५ लाख का फिक्स हो गया। जे० टामस ने ४००० गाँठ का काम किया। न्यू क्राप १४)-१७) में वायर्स के माफिक ही है। फाटका ५००० गाँठें मत्थे हैं, ८५०००) का लॉस हो गया।

सैदपुर, सिलीगुड़ी, जलपाईगुड़ी

१० मार्च : सुवह ५ वजे सैदपुर में उतरा। ७॥ वजे तक उधर कामकाज पाट वगैरह देखी। ७॥ वजे की गाड़ी से सिलीगुड़ी पहुँचा। वाजार, गोला वगैरह देखा। ५॥ वजे की गाड़ी से ६ वजे जलपाईगुड़ी पहुँचा। शहर अच्छा है, वाजार भी वड़ा है। मारवाड़ी काफी हैं। वैंक वहुत हैं। नाहटों के उधर जीमा। रात में ९॥ वजे कलकत्ते के लिए थर्ड क्लास में वैठा।

सैदपुर में लोग कहते थे, मुसलमान हिंदुस्तान का वँटवारा कराने की पूरी कोशिश करेंगे, वंगाल, आसाम, पंजाव अलग हो जायेंगे। मुझे कैसा-सा लगा।

कलकत्ता

१३ मार्च : रूस और अंग्रेजों का संवंध थोड़ा विगड़ रहा है। मुसीवत की दोस्ती से मुसीवत पैदा होती ही है। स्वार्थ टकराता है। इन वातों का असर वाजार पर थोड़ा पड़ रहा है। शेयर वगैरह मंदे हैं।

कैबिनेट मिशन के बारे में आशा-निराशा, दोनों रुख है। बर्मा, लंका, मलाया को भी ब्रिटेन छोड़ देगा, ऐसी बातें आ रही हैं। शायद नहीं सम्हाल पा रहा है।

१६ मार्च : हनुमान गार्डन गया। दलाल व्यापारियों की गोठ थी। मैं तो नहीं चाहता पर जाना पड़ता है। रात दस बजे तक रहा, मदन भी साथ था।

१७ मार्च : सुबह लेक रोड मकान देखने गये। लाला जी के साथ जमीन भी देखी। ११ बजे ट्राम से घर आया। बापू जी वगैरह सब राजी हैं।

१९ मार्च : रतनी बीमार है, मूर्छा आ जाती है। बड़ी चिंता की बात हो रही।

२३ मार्च : फाटके में गलत हो जाता हूँ। गलतियों पर गलती करता जा रहा हूँ। ऐसा मालूम देता है, मैं जोर से डाउन हो रहा हूँ।

२५ मार्च : बाजार थोड़ा मजबूत ७८॥)। मेरी 'नर्वसनेस' उसी माफिक है। गजराज जी का काम अभी नहीं हुआ। मेरी भी गलती है। काफी चिंता हो रही है। मेरा मन इधर इतना डाउन हो रहा है कि बात करते ही डर मालूम देता है। आज के जमाने में रुपया-पैसा बहुत बड़ी चीज है, साधन है, परंतु उससे भी बढ़ कर चरित्र है। रुपया-पैसा आता-जाता है पर आत्मा के पतन से सब चला जाता है, लौटता नहीं।

२६ मार्च : फाटका ऊपर में ७९) था। ओंकार जी, गजराज जी का नक्की हो गया। मेरे ६६ हजार का नुक्सान होगा। धनराज जी की गाँठें नक्की हो गयीं। कुछ शांति मिली। इस साल के अंत तक एकदम सौगंध ले ली है, फाटका नहीं करूँगा।

२ अप्रैल : फाटका छोड़ देने से काफी शांति है। ऑफिस गया। दिन में १८००० मन का काम किया। बाजार क्वायट है। पाट का भाव ७७॥-) आना रहा। पक्की गाँठ मंदी है।

८ अप्रैल : बैजनाथ जी केडिया के गया। गोपाल जी की तबीयत उसी माफिक है। डॉक्टर ने टायफायड बताया है, टाइम लगेगा। चिंता होती है। परमा को समझाया। मिलों में काम-काज खास नहीं है। पाट टामस साहब का ५५)-९०) में १००० बिका।

९ अप्रैल : अखबारों से मालूम होता है, केबिनेट मिशन फेल है। जिन्ना अपनी ज़िद पर अड़ा है, सिख भी अडंगा लगाते हैं। मुसलमान अपने को हिंदू और हिंदुस्तान से अलग कैसे मानते हैं, समझ में नहीं आता। इनके बाप-दादा तो हिंदू ही थे। सिख धर्म भी हिंदू नानक ने चलाया। इनके धर्म-ग्रन्थ में हिंदू देवी देवताओं की बातें हैं। ओंकार को बड़ा मानते हैं तो फिर अड़ंगा क्या? सब झमेला स्वार्थ का है, इससे बहुत नुकसान पहुँचता है। अजित सिंह को फोन किया। पाट की डिलेवरी का बंदोबस्त कर रहा हूँ, शायद सब हो जायगा। एंड्रयू साहब १३ को विलायत जाता है। अजित सिंह को रखने का मन नहीं है।

१४ अप्रैल : रतनी ऊपर से गिर गयी, ३ तल्ले से। घबराया हुआ गया। परमात्मा की दया से चोट नहीं आयी।

१७ अप्रैल : ऐसा मालूम देता है, अंग्रेज हिंदुस्तान से हटना चाहते हैं, कारण कुछ हो, लेबर पार्टी की गवर्मेंट है। ये लोग शुरू से उदार रहे। शाम को बारातों में गया।

पाट के मुकामों में जाने का विचार कैंसिल कर दिया, पर ४ दिन की छुट्टी पर कहीं जाने का विचार तो जरूर कर रहा हूँ।

पाट पुराना थोड़ा पोते हैं। नया मत्थे।

२० अप्रैल : अखबार पढ़ा। कांग्रेस ने एक रकम पाकिस्तान मंजूर कर लिया, इस तरह की खबर है। मन को कैसा-सा लगा। जिन्ना की जीत हुई। कांग्रेस ने एक रकम से अपने को हिंदुओं की संस्था मानी और हिंदू तथा मुसलमानों को एक हिंदुस्तानी नहीं माना। अब तो हिंदुस्तान का बँटवारा होगा ही। कांग्रेस ने शुरू में कम्युनल अवार्ड मानकर जो गलत बीज बोया, वह हाथ-पैर फैला रहा है। हिंदू महासभा की कौन सुनता है! भले ही हल्ला करो हिंदू उसके साथ नहीं के माफिक हैं। कांग्रेस के इस निर्णय से काफी असंतोष-सा हो रहा है, सुनते हैं। बंगाली नेता लोग बंगाल का पार्टिशन चाहते हैं। इस मामले में श्यामा बाबू का कहना मुझे ठीक जँचता है। शायद कांग्रेस में भी दो मत हैं।

न मालूम क्यों सुबह से ही मन खिन्न रहा। हम लोग तो धन कमाने की मशीन हैं। भाव समझते हैं पर भावना नहीं।

२३ अप्रैल : मन में शांति जरूर है, फाटका भी बंद-सा है, कोई झंझट भी खास नहीं है। घूमने की इच्छा जोर से है।

समाज में धीरे-धीरे फैशन बढ़ रहा है। खाली दिमाग में चोर की तरह यह घुसता है। मुझे पढ़ना-लिखना रेगुलर करना होगा।

२४ अप्रैल : ऑफिस गया। वहाँ से आने पर धूप थी। छोटी ऑफिस में बाथरूम में पेशाब कर के आ रहा था तो वहीं बेहोश होकर गिर गया। शायद २-३ मिनट तक नहीं उठा। चश्मा टूट गया। दिन में कुछ कमजोरी सी मालूम हुई, शायद ब्रेन की कमजोरी या गरमी बेहोशी का कारण है। ५।७ दिन पहले भी ऐसा मालूम दिया था।

२६ अप्रैल : गद्दी से ८ बजे ऑफिस गया। बाजार मजबूत, भाव ७९॥) से ७९।~) रहा। १००० गाँठें बेचीं, ७९।~)॥। में। सौगंध तो नहीं टूटी। १९) -१७) में २०,००० मन का काम किया। ऑफिस में १२,५००००) का नफा हो गया है। मेरा मन खुश है, मेहनत की। परंतु मेरा दिमाग फाटके के चक्कर में क्यों फेल होता है।

३० अप्रैल : मेरे दिमाग में कमजोरी है, चक्कर आते हैं। लैंडर गार्गन के हस्ते रूस को पाट बेचा हुआ है, उसमें झमेला हो रहा है। इस ढंग की बातों से मन में चिंता बढ़ जाती है। बेबस सा होने लगता हूँ।

२ मई : इन दिनों फाटका नहीं किया। सावधान रहता हूँ फिर भी दुश्चिंताओं से छुटकारा नहीं मिलता। पर उपाय क्या? पहले के किए हुए पाप हैं।

पाट का भाव ७९।=) आना है। बाजार मजबूत, शिपिंग बहुत से आ रहे हैं।

शाम को ६ बजे स्टेशन गया। सेकेंड क्लास में थोड़ी सी जगह मिल गयी। रात में कोई खास तकलीफ नहीं हुई। साथ में एक परिचित अपनी पत्नी को लेकर सुजानगढ़ जा रहा था। अभी कच्ची उमर का ही था। मुझे अपने बीते दिन याद आ गये। पत्नी के

साथ जाना तो दूर की बात है, बात तक करने का मौका नहीं मिलता था। मेरा बचपन ना-जानकारी में ही बीत गया।

दिल्ली

३ मई : रात नींद अच्छी आयी। मुगलसराय से कुछ पहले उठा। बाहर देखा। खेत, गाँव, भोर की रोशनी में नहा रहे थे। मिरजापुर में नाश्ता लिया। शिकोहाबाद के एक मारवाड़ी सज्जन श्री टिकमाणी थे, उनकी ससुराल से गरम रसोई आयी थी। मेरे पास मिठाइयाँ थीं। रसोई मिठाई का अच्छा मेल बैठा, खूब खाये। कानपुर में एयर कंडिशंड क्लास में चला गया १७।) आने बेसी लगे, अलीगढ़ तक के, परंतु आराम पूरा हो गया। गरमी से भी बचा रहा।

कसौली

४ मई : सुबह सूरजपुर में जगा। वहाँ से कालका ६ मील है। ७ बजे पहुँचा। एक बार मन में आया कालका जी के दर्शन कर लूँ परंतु नहीं गया। ८॥ बजे मोटर में बैठा और १० बजे कसौली पहुँचा। रास्ते में दृश्य बहुत सुंदर हैं। बदरी-केदार की याद आ जाती है। दार्जिलिंग से कम ठंडक यहाँ है। कसौली से शिमला की रोशनी दिखाई देती है।

दिन में कसौली के आसपास ५-६ मील घूमता रहा। कलकत्ते की भीड़ और झंझटों से बच गया। मन में शांति है। मेरा विचार यहाँ १५ दिन रहने का है, फिर घूमने जाऊँगा। माजी के खून की खराबी हो रही है। पर उपाय क्या? उनके तो सब जगह ही ऐसा रहता है। बिरजू का हेल्थ अच्छा मालूम देता है। कॉटेज अच्छा है। यहाँ का बाजार छोटा सा है। लोग भले हैं।

५ मई : नींद खुली, सुबह ४॥ बजे थे। अँधेरा था। ठंडी हवा थी। शरीर और मन में एक अजीब सी फुर्ती महसूस की। उखी मठ की तरह सरदी मालूम दी। तैयार होकर खिड़की के पास बैठ गया। सोचने लगा, सचमुच किन्नरों की भूमि है। प्रकृति सुंदर, लोग सुंदर। कसौली ६००० फीट की ऊँचाई पर है। छोटा सा कस्बा है। घूमने निकला। देवदार, चीड़ और बाँस के घने जंगलों से ढके पहाड़ों पर सबेरे का सूरज आया नहीं था। हलकी रोशनी थी। पता नहीं क्यों यहाँ विचार एकदम बदल जाते हैं। बदरी-केदार में भी ऐसा ही हुआ। मैं दूसरा आदमी बन जाता हूँ। मन में दुश्चिंता नहीं रहती। लगता है, अपने घर आ गया जहाँ से मुझे किसी ने जबर्दस्ती निकाल दिया था।

सैनेटोरियम गया, बिरजू की तबीयत ठीक लगी। टी० बी० भी कैसी बीमारी है! कितनी खर्चीली और शरीर गलाने वाली।

शिमला जाने का विचार कर रहा हूँ। धरमपुर तक पैदल, फिर रेल में। 'व्हेन ब वुमन मैरीज' खतम नहीं कर पाया। पढ़ाई में मन कम लगता है, घूमना अच्छा लगता है।

शिमला

६ मई : सुबह ५॥ बजे तैयार हो गया। घर से निकलकर नीचे सड़क पर आ गया। ६ बजे रामपुर वाले रामकुमार के साथ पैदल धरमपुर को रवाना हुआ। ६ मील का रास्ता, २ घंटे में आराम से पहुँच गये। साथ में सामान ढोने के लिए कुली था।

धरमपुर से चार मील दूर डगशाई है। देखने की इच्छा थी पर नहीं गया। वहाँ मिलिटरी की छावनी है इसलिए शायद कुछ रोक-टोक है। कहते हैं, कसौली से भी सुंदर जगह है। ८॥ बजे मोटर में बैठकर सोलन गए। कसौली से कुछ बड़ा शहर है। बहुत से लोग शिमला न जाकर यहाँ आते हैं क्योंकि कम खर्चीली जगह है। यहाँ स्कूल-कॉलेज भी हैं। व्यापार की अच्छी मंडी है। बाजार में ताजी सब्जियाँ और तरह-तरह के फल देखे। इन्हें बाहर भेजा जाता है। अंग्रेजों, एंग्लोइंडियनों की अच्छी बस्ती यहाँ है। कुछ फल खरीदे। ९॥ बजे एक कार में बैठे और ११ बजे शिमला पहुँच गये। कुल ८) लगे।

रास्ते के दृश्य बदरी-केदार की तरह के हैं। भेड़ चराते गड़ेरिये, रंग-बिरंगे कपड़े पहने सर पर घास का बोझ लादे पहाड़ी स्त्रियाँ-स्वस्थ और सुंदर। सीढ़ीनुमा खेतों में काम करते किसान, फलों के बाग, बगीचे। शिमला ठंडी जगह लगी। एक धर्मशाला में ठहरा। एक जैन-बासा में खाना खाया। ठीक था। १॥ बजे तक आराम कर फिर शहर घूमने निकला। हिंदुस्तान की दूसरे नंबर की राजधानी होने के कारण इसका भी ठाठ है। अच्छा बड़ा शहर है। सब अप-टु-डेट औरतें और आदमी घूमते हैं। दुकानें सजी हुई हैं। एक घोड़ा कर लिया, २) लगे। जाखू यहाँ की सब से ऊँची जगह है, ८००० फीट। यहाँ से हनुमान जी के मंदिर में गया। बंदर और लंगूर बनारस की तरह यात्रियों के पास चले आते हैं। स्थान रमणीक है। उत्तर की ओर हिमालय की बर्फीली चोटियाँ दिखाई देती हैं।

शाम को 'चाँद चकोरी' सिनेमा देखा। बाजार घूमा। मन खूब लग गया है।

७ मई : रात नींद अच्छी आयी। सवेरे उठा। शरीर में फुर्ती थी। थोड़ी कसरत की। तैयार होकर घूमने निकला। शहर अभी पूरी तौर से जगा नहीं था। शिमला घोड़े की नाल के आकार की पहाड़ी पर है। माल रोड चौड़ी और शानदार है। दुकानें बंद थीं। पहाड़ी लोग छोटी-छोटी दुकानों में चाय पी रहे थे। मैदान से आये लोग ऊपर से नीचे तक गरम कपड़ों में ढँके घूम रहे थे। अंग्रेजीपन की नकल यहाँ खूब देखने में आती है। अंदाज ३ मील घूमा। कांग्रेस के कई नेताओं को देखा। मौलाना आजाद को इतने पास से कभी देखा नहीं था। सुंदर गोरा चेहरा, घनी तीखी मूंछें बहुत अच्छी लगीं। धर्मशाला में वापस आकर गरम पानी से स्नान किया। बाजार में कुछ खाया। लाइब्रेरी में अखबार पढ़ा।

प्रायः ३॥ मील पैदल चलकर चिकविक पहुँचा। यहाँ महात्मा जी ठहरे हैं। बहुत से नेता भी आये हुए हैं। कैबिनेट मिशन के बारे में बातचीत चल रही है। पंडित जवाहरलाल नेहरू, सीमान्त गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ, कृपलानी जी, सरोजनी नायडू और बहुत

बड़ी तादाद में लोग आये हुए हैं। महात्मा जी की प्रार्थना जीवन में पहली वार सुनी : वड़ी अच्छी लगी। कुछ व्याख्यान भी हुए।

पैदल ही लौटा। विचार आये, धन महात्मा जी के पास नहीं मगर धन की कमी नहीं, एक होकर भी सारे हिंदुस्तान को साथ लेकर चलते हैं, हथियार नहीं पर गवर्मेंट घवराती है। कितनी महान् उनकी आत्मा है। मुझे कुछ तो ऊपर उठना चाहिए। क्या करूँ।

शिमला, कसौली

८ मई : रात देर से नींद आयी परंतु अच्छी तरह सोया। सुवह ५ वजे उठा। २ मील पैदल घूमा। सोचता रहा, धन तो कमाता हूँ, यह तो आने-जाने की चीज है। फाटका, ताश, सिनेमा, थियेटर में समय और पैसे खोता हूँ, शक्ति भी खर्च होती है। इसे किसी अच्छी तरफ लगाऊँ, मन में शांति रहेगी। उत्तेजना मेरे स्वास्थ्य को वहुत नुकसान पहुँचाती है।

आज भी लाइब्रेरी में जाकर अखवार पढ़े, कितावें भी। कुछ अच्छी कितावें देखीं, नाम नोट कर लिये हैं। १२ वजे जीम कर सो गया, फिर २ वजे उठा। थोड़ी देर वाजार में घूमा। ४। वजे मोटर में वैठा। ५।।। वजे सोलन, फिर ६।।। पर धरमपुर। कसौली के लिए यहाँ वस में वैठा और ७।।। वजे पहुँचा।

आने पर मालूम हुआ ठाकुर वीमार है, जगदेव आया नहीं। माँ जी तो रोज बीमार रहती ही हैं। परेशानियाँ सोचकर मन दुखी हुआ। शिमला के तीन दिन कितने अच्छे बीते। कुल ७०) खर्च हुए, जिसमें ३०) की चीजें कितावें वगैरह ले आया हूँ।

९ मई : ठाकुर वीमार होकर चला गया। रसोई की तकलीफ हो रही है। धन बड़ा साधन है, सुख देता है, परंतु दूसरों पर भरोसा रखना एक वुरी आदत है। बनारस, देश, कलकत्ता जगदेव को कागज लिखा, ठाकुर नौकर भेजने के लिए।

आज करीव ४ मील घूमा। एक अस्पताल देखा, साँप, पागल कुत्ते या जानवरों के काटने पर खून में जहर चढ़ जाता है, इसका इलाज यहाँ होता है, उसकी दवा, सुई वगैरह भी वनती है। चेचक, हैजा, टायफाइड के टीके तैयार किये जाते हैं और ऐसी बीमारियों पर खोज भी होती है।

पैरों में छाले हो रहे हैं। नये जूते लाया, वे भी छोटे हो गये। दिन में 'कज्जाक' किताव खत्म कर दी। 'हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड'-एच० जी०, वेल्स की शुरू कर दी है। अच्छी लग रही है। पंडित नेहरू की 'ग्लिम्पसेज ऑफ द वर्ल्ड' की तरह का विषय है परंतु विस्तार ज्यादा है। छाले की वजह से घूमने का मजा विगड़ गया।

१० मई : ८ दिन कलकत्ते छोड़े हो गये। शांति-चैन है, स्वास्थ्य भी अच्छा है। विचार भी अच्छे आते हैं। ५ वजे सुवह उठा, ५।। वजे घूमने निकल गया, विना जूतों के। सनेटोरियम गया। विरजू के ९९° वुखार था। डॉक्टर ने वताया कोई खास वात नहीं।

वापस आकर जीमा। वेल्स की 'हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड' पढ़ी। इस्लाम और मुहम्मद के बारे में वहुत खुलासा लिखा है। अव तक इतनी सचाई से लिखी वातें पढ़ी नहीं थीं। इस्लाम में यदि शांति, संयम की शिक्षा होती तो जहाँ कहीं भी इस्लाम गया वहाँ खून-खरावी, लूट और दवर्दस्ती मुसलमान वनाने की वात नहीं होती। वहुत देर तक इन पर विचार करता रहा, फिर न जाने कव नींद आ गयी। ४ वजे उठा। सेनेटोरियम गया।

चश्मा टूट गया, मेरी गलती के कारण। वेकार १०) खर्च हुए।

११ मई : रात नींद ठीक से नहीं आयी। मारकाट, लूट, आग, मन्दिरों को गिराने के सपने आते रहे। दिमाग में इस्लाम के वारे में विचार थे और पेट भी कुछ खराव था, शायद इसी कारण से।

४।। वजे उठा, पानी पिया, थोड़ी कसरत की और घूमने निकल गया। ताजी खुली हवा में चित्त प्रसन्न हो गया। शायद इसीलिए सुवह का घूमना स्वास्थ्य के लिए अच्छा वताया है।

९।। वजे वुकस्टाल से २ कितावें खरीदीं, अखवार वगैरह देखे। आज पढ़ा नहीं। ३ वजे 'भाई चारा' सिनेमा देखा। हिंदू-मुस्लिम मेल का था। विचार होता है कि ऐसी फिल्मों से क्या होने का। यहाँ के मुसलमानों का दिमाग काफी खराव कर दिया गया है। वे अपने को हिंदुस्तान में पैदा हुआ तो मानते हैं पर हिंदुस्तानी अपने को नहीं समझते, ऊपर से भले ही कुछ कहें। मुस्लिम लीग वालों की वात से यह वात साफ हो जाती है।

मा जी के कुछ खाज सी हो रही है, जाने को वोलती हैं। समझ में नहीं आता, क्या करूँ।

'मंकी पायंट' कसौली की एक ऊँची चोटी है। सुवह उठा, कसरत की और ६। वजे वहाँ पहुँचा। दृश्य अच्छे लगे। पहाड़ियाँ एक दूसरे के पीछे छिप रही थीं। घने जंगल, सनसनाती हवा। एक सुगन्ध सी आ रही थी। सोचता हूँ, आदमी क्यों इतनी सुंदर जगहों पर नहीं रहता। माया का चक्कर है। देखकर भी नहीं देखता।

सेनेटोरियम गया। विरजू उसी माफिक है। नौकर रख लिया है, रसोई वना लेगा।

१३ मई : सुवह ५-३० वजे मोतीलाल जी मूदड़ा के साथ लेडी इरविन सेनोटिरियम देखने गया। कसौली से ५ मील पर है। कसौली के सेनेटोरियम जितना अच्छा नहीं है। कॉटेज और जेनरल वार्ड भी इतने अच्छे नहीं लगे। कुछ कम खर्चीला जरूर है। डाक्टर लोग यहाँ की वहुत तारीफ करते हैं। यहाँ के डाक्टर की पत्नी भी डाक्टर है। ३००) महीना लेते हैं। यह रकम वहुत ही कम है। इनमें सेवा-भावना अधिक है, रुपये का मोह कम है। मन लगाकर काम करते हैं। अपने वारे में सोचता हूँ कि मेरा तो एक ही लक्ष्य है, रुपया कमाना। कमाता भी हूँ, पर क्या पाया अव तक? स्वास्थ्य विगाड़ा, शांति खो दी। परंतु आदत नहीं छूटती, उपाय क्या।

सेनेटोरियम आने पर पता लगा, विरजू के कफ में खून आ रहा है। भगवान् पर खीज आ गयी। क्यों इतना सताता है, विना कारण। चिंता हो रही है। इधर मां भी अमृत-

सर जाने का कह रही हैं। मैंने ना कह दी। सारे दिन अपनी बीमारी की बात करती हैं। मुझे ना नहीं कहना चाहिए था। क्रोध को दबाना चाहिए। मा जी अपनी तकलीफ और किससे कहेंगी?

१४ मई : ६॥ बजे सनेटोरियम गया। मालूम हुआ, रात में भी बिरजू के ब्लीडिंग हुई। काफी उदास दिखाई दे रहा है। मुझे भी तो कफ में खून आने पर चिंता हो जाती है। वह तो अभी कमउम्र का है। जानता है, उसकी बीमारी चिंता की बात है।

दिन में ११ बजे काफी ब्लीडिंग हुई। मेरे मन में काफी चिंता है। सब प्रोग्राम उलटा हो गया। उपाय क्या, ऐसी हालत में उसे छोड़कर कैसे जा सकता हूँ? खबर कलकत्ता या सरदारशहर को नहीं लिखी। डाक्टर से बात की। उसने कहा १-२ दिन में खून बंद हो जायगा। मगर मन मानता नहीं। परमात्मा ठीक करेगा। कहीं बाहर दूर घूमने नहीं गया, इच्छा नहीं थी। दिन भर पढ़ता रहा। गोरी महिला का नीग्रो से संबंध का उपन्यास था। सेक्स की बातें थीं। इसे पढ़ते समय ऐसा लगा था कि दिमाग पर जरूर प्रभाव पड़ेगा। इसलिये पढ़ना एक बार छोड़ दिया था परंतु दबी हुई वासना जीत गयी और मैंने किताब पढ़ी।

१५ मई : रात नींद ठीक नहीं आयी। गलती मेरी थी, भुगतना पड़ा। ऐसी किताबें क्यों पढ़ें जिससे मन की कमजोरी को भड़कने का मौका मिले। ये किताबें तो साहित्य नहीं हैं, फिर अपने को मैं क्यों धोखा देता हूँ।

सुबह उठा, कसरत की। तबीयत ठीक मालूम पड़ी। ७। बजे सेनेटोरियम गया। बिरजू का खून निकलना कमती हुआ। केजड़ीवाल के उधर गया। डाक्टर ने बताया कि बचेगा नहीं। उसका बूढ़ा बाप रोता था। फिर जालान के गया, वह ठीक है।

३॥ बजे बिरजू के बहुत खून आया, वह रोने लगा। मैं भी घबरा गया। डाक्टर के पास गया। उसने बताया हेमोपटिसिस जाने में टाइम लगेगा, इलाज चल रहा है। बाजार में एक डाक्टर के पास गया। उसने भी यही कारण बताया। मन नहीं माना, एक वैद्य के पास गया, देशी दवा ली। वापस सेनेटोरियम आया। सोच रहे हैं, एक-दो दिन और देखेंगे फिर कोई व्यवस्था करेंगे।

१७ मई : नींद ठीक से आयी नहीं। खटमल बहुत हैं, शरीर सूज जाता है। दवाई छिड़कनी होगी। थोड़ी कसरत की, सुस्ती मिटी। मेरा स्वास्थ्य तो यहाँ आकर काफी सुधरा मालूम देता है। परन्तु बिरजू की चिंता है, परमात्मा बिरजू को ठीक कर दें तब ही। लगता है, सारा महीना यहाँ बीत जायगा। मास्टर भी घर जाना चाहता है, जगदेव आया नहीं। माजी भी जाने को कहती हैं। नौकर ठाकुर की तकलीफ भी एक परेशानी है। कलकत्ते फोन मिलाया लाइन खराब। शिमला में बहुत बारिश होने की खबर है।

दीपचंद को, राम जी दास जी को कागज लिखा। वैसे, बिरजू की तरफ की चिंता आज कम है।

१८ मई : रात सरदी वहुत थी। एक-दो बार जाग भी गया। इन दिनों अंग्रेजी की किताबें खासतौर पर पढ़ रहा हूँ। यहाँ हिन्दी की किताबें कम मिलती हैं। पढ़ाई और चिंता एक साथ नहीं चलतीं, मजा नहीं आता। मगर उपाय क्या।

सेनेटोरियम से ७ बजे मास्टर जी आये। बोले, रात में खून नहीं आया। सुबह कफ में काला धब्बा सा था। चिंता कम हुई।

जो सोचा था, कुछ भी नहीं कर सका। मेरा जाना अभी १०-१५ दिन नहीं हो सकेगा। कांग्रेस, लीग और सिखों में कोई समझौता नहीं हो सका। बहुत बुरा हुआ। ६ वर्ष पहले लाहौर में लीग की मीटिंग में जिन्ना ने यह पायंट साफ कर दिया था कि हिंदू और मुसलमान एक नहीं हो सकते। उनकी अलग-अलग सामाजिक व्यवस्था हैं। कांग्रेस के राजा जी ने भी सी० आर० फारमूला में हिंदुस्तान के बँटवारे का तरीका वता दिया था। समझ में नहीं आता, कांग्रेस क्या चाहती है। उसे तो नेहरू के पूर्ण स्वराज्य पर अड़ना चाहिए था, बात करने के पहले।

२० मई : वारिश में पहाड़ का मजा कम हो जाता है। वाहर निकलना प्रायः बंद। सेनेटोरियम गया। विरजू के कफ में थोड़ा धब्बा अब भी आता है। वैसे ठीक है। सेनेटोरियम में फंक्शन था। फैंसी ड्रेस, म्यूजिक, टग ऑफ वार वगैरह। मैंने रस्सा खींचा, कैप्टेन था। हमारी टीम ३ वार जीती।

घर आया, पढ़ता रहा। माजी को रसोई बनानी पड़ रही है, ठाकुर नहीं है। तकलीफ तो होती है।

सुना, कैबिनेट मिशन हिंदुस्तान की आजादी के वारे में कोई नया प्लान वना रही है। मुझे लगता है, हेर-फेर के साथ लार्ड वावेल की बात आयेगी।

२२ मई : २ वजे की बस पकड़नी थी। परन्तु छूट गयी। ५ वजे शाम की बस में बैठा, ६। वजे कालका पहुँचा। विरजू के कफ में थोड़ा धब्बा आता है। यद्यपि मेरा चला आना उचित तो नहीं, परंतु मन नहीं लग रहा था। इस बार फिर कालका जी के दर्शन नहीं हुए, पता नहीं कब होंगे। ट्रेन पकड़नी थी। अमृतसर का टिकट लेकर इंटर क्लास में बैठ गया। भीड़ नहीं थी। ऊपर वाली सीट पर सो गया। नींद आ गयी। सपने आते रहे। भाई जी नाराज हैं, बहुत लोग मुझे पकड़ने दौड़े हैं, मैं भागता जा रहा हूँ, हवा में उठता जा रहा हूँ। अच्छा हुआ, कुछ सरदार जी लोग लुधियाना में चढ़े। हल्ला-गुल्ला से नींद खुल गयी।

अमृतसर-लाहौर

२३ मई : सुबह ६ बजे अमृतसर पहुँचा। धर्मशाला में सामान रख दिया। तैयार होकर घूमने निकला। सिक्खों का स्वर्ण मंदिर देखा। राजपूती ढंग का मंदिर है, गुंवद के कलशों पर सोने का पानी चढ़ा है। जगह साफ, शांत, मंदिर भी सुंदर। वुर्ज पर चढ़कर शहर देखा।

चश्मा ठीक कराया, घड़ी का कांच बदलवाया। ।॥) में साइकिल भाड़े पर लेकर शहर घूमने निकला। भोजन नहीं किया। दही खाया, फल खाया। गरमी काफी थी। जलियांवाला बाग देखने गया, बंद था। सँकरी सी जगह है, तीन ओर से घिरी हुई, मन कैसा हो गया। कितने बच्चे-औरत-मर्द गोलियों से मारे गये! गुलामी सजा है। अत्याचारी मनुष्य मरता है परंतु मनुष्य का अत्याचार नहीं।

शहर अच्छा है। तिजारत काफी है, मारवाड़ी भी काफी हैं। दुर्ग्याना मंदिर देखा, स्वर्ण मंदिर जैसी सफाई नहीं है परंतु इसे भी उसी तरह का बनाया जा सकता है। शहर की आबादी २॥ लाख की है।

३ बजे की बस से ४-१५ बजे लाहौर पहुँचा। रास्ते में बिरजू की याद आती रही। एक गंदी सी धर्मशाला में सामान रखा। अनारकली बाजार की तरफ चला गया। शहर को हिंदुस्तान का पेरिस कहा जाता है। शायद इसलिए कि यहाँ पर्दा कम और फैशन ज्यादा है। मुसलमान औरतें कम दिखीं, एकाध ही, वह भी बुर्के में। फल, चाट की दुकानें बहुत हैं। दूध-दही, मिठाइयों की भी। मैंने चाट खायी, शर्बत पिया। लाहौर पंजाब की राजधानी है। स्कूल, कॉलेज कोर्ट, कटहरी, अस्पताल बहुत हैं। आर्यसमाज का जोर ज्यादा दिखाई पड़ा। बस में बैठकर शालीमार बाग गया। अच्छा है, परंतु मुझे इडन गार्डन से ज्यादा अच्छा नहीं लगा। वहाँ से फिर माल रोड होता हुआ धर्मशाला वापिस आया। सामान लेकर होटल में एक कमरा लिया। रात में १० बजे घूमता हुआ एक जलसे में चला गया। किसी प्रॉस का विवाह था। कोई एंट्री फी नहीं थी। मैं भी दरी पर बैठ गया। बहुत से लोग थे। मुजरा हुआ, नाच भी। कव्वाली बहुत अच्छी लगी। दिन निकलने तक जलसा चलता रहा। मैंने भी २) दिये। लोग तो बहुत रुपये दे रहे थे।

लाहौर-जालंधर

२४ मई : रात भर सोया नहीं था। आँखों में नींद और बदन में थकावट। सुबह की ठंडी हवा में पैदल चलकर होटल आया। बगैर ताला लगाये कमरा खुला छोड़ गया था, अपनी हड़बड़ी की आदत पर खीज आयी। स्नान वगैरह कर लिया, थकान मिटी। ताला लगाकर बाजार की तरफ निकल गया। किताबों की बहुत सी दुकानें हैं, हिन्दी, संस्कृत और उर्दू की। अंग्रेजी की भी हैं। पंजाबी देखने में सुंदर लगते हैं पर इनकी हिन्दी में सफाई नहीं। संस्कृत के शब्द शुद्ध नहीं बोल पाते। सुंदर को सूंद्र और सुरेन्द्र को सुरिन्दर, सुनकर हँसी सी आ जाती है। 'महाशय' बहुत चलता है।

बस से जहाँगीर का मकबरा और बड़ी मस्जिद देखने गया। मकबरा अपने जमाने की बड़ी बात रही होगी। आज भी सुंदर लगता है। मन में बहुत ही बातें इतिहास की आ जाती हैं। बड़ी मस्जिद की बुर्ज से लाहौर शहर देखा। घना बसा हुआ है। तंग गलियां, तांगे, साइकिल, मोटर। नये हिस्से में चौड़ी सड़कें। बुर्ज पर से नमाज के लिए मुल्ला जी आवाज देते हैं। लाहौर को श्री रामचंद्र जी के पुत्र लव ने बसाया, बताते

हैं। वहुत मजवूत किला यहाँ वनाया गया था, इसीलिए लाहौर 'लौहकोट' कहा जाता था। कोई-कोई इसका पुराना नाम 'लवपुर', 'लौहपुर' भी वताते हैं। प्राचीन काल का कुछ भी यहाँ देखने में नहीं आया। मालूम पड़ा, राजपूताना से कॉलिज के कुछ लड़के यहां आये हैं। पता लगाकर उनसे भेंट करने गया, सभी सरदार शहर के थे। वड़ी खुशी हुई। अपने गाँव की भाषा में वातचीत हुई। आनंद आया।

मॉडल टाउन देखा। फिर दयाल सिंह लाइव्रेरी गया। कैटलॉग देखा, ६२००० कितावें हैं। वड़ी भारी लाइव्रेरी है। वैठकर पढ़ने लग गया। ८ वज गये, उठना पड़ा। अपने सरदार शहर की लाइव्रेरी को भी ऐसा वनाना कोई मुश्किल नहीं। गाँव वाले सहयोग दें तो वहुत वड़ा काम हो सकता है। ज्ञान का भंडार वनाना और सवके लिए खोल देना कितनी वड़ी सेवा है।

लाहौर अच्छा लगा। मुसलमान काफी हैं और सिख भी। चीजों की कीमत खास ज्यादा नहीं। ताँगे सस्ते हैं, शहर में वसें हैं। स्त्रियाँ सुंदर हैं, लोग स्वस्थ, मगर वोली रद्दी है। मारवाड़ी वहुत कम हैं। लोग खुशहाल हैं, शौकीन भी।
रात ९। वजे थर्ड क्लास का टिकट लेकर जालंधर के लिए रेल से रवाना हुआ।

जालंधर-अंबाला-लुधियाना

२५ मई : कल रात ११॥ वजे जालंधर पहुँचा, स्टेशन पर सोया। वहुत सवेरे पैदल शहर घूमने निकला। वाजार गंदा है, आवादी एक लाख। मारवाड़ी भी हैं। इक्का से कैंटोनमेंट की तरफ गया। दही पिया। स्वादिष्ट था। वैसे, यह जगह वहुत हेल्दी और सुंदर है पर लोगों में सफाई का ज्ञान कमती है।

९ वजे स्टेशन आ गया। गाड़ी में वैठकर १०॥ वजे लुधियाना पहुँचा। वाजार काफी वड़ा है, १॥ लाख की आवादी है। चीजें सव मिल जाती हैं। लुधियाना को भी किसी समय का प्राचीन शहर वताते हैं पर वैसा कुछ देखने में नहीं आया। पंजाव में प्राचीन काल का कुछ वचता भी कैसे? विदेशियों के आक्रमण वरावर होते रहे, यहाँ अशांति वनी रही, मुसलमानों ने तो वहुत ही उजाड़ा। यहाँ की सभ्यता, संस्कृति, एक रकम मिट गयी। पंजाव में उर्दू लिपि ज्यादा चलती है, वोली में भी। पहनावा भी वदला है पुरुषों-स्त्रियों का। धोती वहुत कम लोग पहने दिखाई पड़े।

१ वजे गाड़ी में वैठा और ३ वजे अंवाला सिटी पहुँचा। वस अड्डे पर गया। कालका की वस छूट चुकी थी। अंवाला कैंटोनमेंट आ गया, फिर वापिस शहर। गरमी वहुत थी। धर्मशाला में सामान रखा। स्नान वगैरह किया। तवीयत ताजा हो गयी। ढावे में खाना खाया। कच्ची रसोई थी। ठीक थी। थोड़ी देर आराम किया। शहर घूमने निकला। वाजार एक रकम ठीक है। चीजें मिल जाती हैं। गंदगी वहुत है। सँकरी गलियाँ, सटे-सटे मकान। प्याज, मांस की गंध। गलती से प्रासेज के मुहल्ले की तरफ निकल गया। दलाल पीछे लग गये। खुल्लमखुला आवाज और संकेत। एक रास्ते से दूसरे पर निकलता तो वहाँ भी वैसा ही मामला। नाजानकारी से खतरा हो सकता है।

परंतु मेरे साथ कोई घटना नहीं हुई, मैं वहुत ही चौकस रहा। शायद मिलिट्री की छावनी के कारण शहर में औरतों के शरीर की मांग अधिक रहती है। लोग कहते हैं, कैंटोनमेंट अच्छा और वड़ा है। कालका के लिए गाड़ी पकड़नी थी। १० वजे कैंटोनमेंट आ गया। १२ वजे की गाड़ी से ३ वजे कालका आ गया।

कसौली

२६ मई : सुवह ३ वजे कालका पहुँचा। डव्वे में खास भीड़ नहीं थी। थोड़ी नींद आयी थी। स्टेशन से मोटर अड्डे आकर सो गया। ७ वजे उठा, तैयार होकर वस में वैठ गया। ७॥। पर छूटी और ९ वजे कसौली पहुँचा। विरजू की तवीयत ठीक है, थूक में खून के धव्वे नहीं आते। चिंता मिटी। पंजाव की इस यात्रा में ५५) खर्च हुए। प्रायः आराम ही रहा। कुछ तो असुविधाएँ होती ही हैं, वह मामूली वात है।

विरजू खुश दिखाई पड़ता है। मेरे मन का संकोच मिट गया। सरदार शहर जाने का विचार कर रहा हूँ। एक रकम पक्का है।

२७ मई : एक जगह रहना अच्छा नहीं लगता। मन में आता है, आदमी इससे पेड़ वन जाता है। फलता-फूलता है, मगर चलता नहीं। दुनिया कितनी वड़ी है, कितनी सुंदर, जो भी देखो, थोड़ा है।

कलकत्ते, वापूजी को कागज लिखा। फिर ३ वजे फोन पर सेनेटोरियम से वातचीत की। वापूजी वाहर जाने के एकदम अगेंस्ट हैं। मैंने भी विचार टाल दिये परंतु रात में फिर मन में वाहर जाने के विचार आने शुरू हुए।

यहाँ आने के वाद से कलकत्ते की चिंता लग गयी। कुछ दुःस्वप्न भी आये। 'कांट हेल्प सिंगिंग' अंग्रेजी फिल्म देखी।

२८ मई : मन नहीं लगता है, रुटीन लाइफ में मजा नहीं। विरजू इम्प्रूव कर रहा है, संतोष की वात है।

वारिश रुकी। मैं घूमने निकला। नीचे घाटी की ओर उतरा। पीठ पर भारी वोझा उठाये कुछ आगे की ओर झुककर तीन-चार वोझी ऊपर की ओर चढ़ रहे थे, मेरी वगल से निकले। कुछ मुस्कुराये भी। मैदान की तरह यहाँ गाँव नहीं मिलते। प्रायः लोग खेतों के वीच में दो-चार घर वनाकर रहते हैं। दो तल्ले का घर होता है। नीचे पशु वँधे रहते हैं, ईंधन, चारा, दाना वगैरह रखते हैं। ऊपर के तल्ले में रहते हैं। दरवाजे छोटे और छत सात-आठ फुट से ऊँची नहीं होती। इसी ढंग से मकान वदरी-केदार की यात्रा में देखे थे। पानी का झरना जहाँ रहता है, वहीं खेत और मकान वनाते हैं। मोटा चावल, जौ, मक्के की रोटी, दाल, सव्जी, इनका मुख्य भोजन है। फल उपजाते हैं, परंतु पैसे के लिए प्रायः सव वेच डालते हैं। शिलांग की पहाड़ियों से इनके रहने के ढंग में फरक है। वोली भी समझ में आ जाती है परंतु 'भोट' लोगों की नहीं। यहाँ ईसाई धर्म का प्रचार ज्यादा नहीं हो पाया लगता है।

३० मई : विरजू की तबीयत ठीक हो रही है। भाई जी का पत्र था। अमृतसर लाहौर वगैरह जाने पर उन्होंने उलाहना दिया, परंतु लिखा है १०-१५ दिन और भी कसौली रह सकता हूँ। मेरा विचार है, मुझे जाना चाहिए, कलकत्ते के काम-काज का हर्जा हो रहा है।

३१ मई : माँ जी को साथ ले जाने का विचार किया, उन्हें तकलीफ है। विरजू को छोड़ने का मन नहीं था परंतु दूसरे काम भी जरूरी हैं। ६ वजे की वस से ७॥ वजे कालका आया। १०॥ वजे अंवाला में ट्रेन पकड़ी। वहुत भीड़ थी। मा जी को लेडीज इंटर क्लास में वैठाया। मैं भी दूसरे इंटर में वैठा।

१ जून : सुवह मा जी की सम्हाल के लिए मुरादावाद में गया। इंटर में उन्हें वहुत तकलीफ रही। उन्हें सेकेंड क्लास में वैठा दिया। मुझे भी रातभर तकलीफ रही। आदमी से ज्यादा सामान। धक्का-शोर सव कुछ। मुझे इंटर का एक दूसरा डिव्वा मिल गया। इसमें भीड़ कम थी, वदली कर लिया। परंतु लखनऊ तक यहाँ भी हालत खराव हो गयी। थर्ड क्लास वाले घुसते-उतरते रहे। डव्वा गंदा हो गया। वदवू और मक्खियों ने काफी परेशान किया। हम लोगों में शिक्षा और सफाई की वहुत वड़ी कमी है। वनारस २ घंटे लेट पहुँचे। मैंने डव्वा वदली कर दी और सेकेंड क्लास में आ गया।

कलकत्ता

२ जून : सुवह झाँझा में आँख खुली। स्नान वगैरह कर लिया। थकावट मिटी। सेकेंड क्लास में काफी आराम रहा। थर्डक्लास में तकलीफ तो होती है मगर वहुत तरह की वातचीत सुनने को मिलती है। धर्मशास्त्र और राजनीति वगैरह पर वात और वहुत रकम के विचार चलते रहते हैं। लखनऊ से एक आदमी वैठे थे, शायद गवर्नमेंट के भक्त थे, वताते थे अंग्रेज अगर चले गये तो विजली, रेलगाड़ी वगैरह अपना सव कुछ उठा लेंगे। हिंदुस्तानियों के पास इतना दिमाग कहाँ कि इन चीजों को वना सकें। हँसी तो आयी पर मैं वहस में पड़ा नहीं।

२॥ वजे हवड़ा पहुँचे, ३ वजे घर। रतनी का मुकलावा नहीं हुआ। मुझे पहले मालूम होता तो मैं कसौली कुछ और दिनों के लिए रह जाता। पाट का वाजार गरम है। मेरा मन यहाँ नहीं लगता, वहुत गरमी है।

३ जून : जूट में काम होने की एकदम उम्मेद नहीं है, हम लोगों के पुराना पाट वरावर है, नया पाट मत्थे है, उसमें कम-से-कम एक लाख का नुक्सान तो समझना ही चाहिए। टामस साहव से मिला। शाम को लाला जी के पिता से मिलने गया, वीमार हैं।

८ जून : कामकाज है नहीं। हाथ-पर-हाथ रखे मुझसे वैठा नहीं जाता। मन भी नहीं लगता। फालतू वातें दिमाग में आने लगती हैं। विरजू इंप्रूव कर रहा है। दिन में ज्वालाप्रसाद जी भरतिया के गया।

११ जून : विरजू के इंप्रूवमेंट है, ऑपरेशन नहीं करना पड़ेगा। नारायणगंज से फोन पर वात की, वहाँ जाने का विचार किया था परंतु छोड़ दिया।

१४ जून : पहले कोर्ट कचहरी पुलिस में 'ऊपरी' बँधी थी परंतु अव 'ऊपरी' का नाम 'ब्लैक' हो गया और व्यापार में जोरों से चल पड़ा है। आज एक जूट प्रेस में जगह की वात करने गया। २१०००) ब्लैक के लगेंगे।

१५ जून : रात में १०॥ वजे सुना कैविनेट मिशन फेल हो रहा है। कांग्रेस नट गयी। तवीयत तो एक रकम ठीक है परंतु यहाँ मन नहीं लगता।

१७ जून : रतनी के मुकलावे का दिखावा किया। प्राय: २८०००) का दिया गया। ७०००) हरचंद राय जी के और २१०००) हमारे। भाई जी नाराज-से थे। रतनी की माँ की गलती थी। फजूल की पुरानी रीतियों को छोड़ना चाहिए, परंतु अपने समाज में औरतों को विना शिक्षित किए ऐसा होना मुश्किल है।

२० जून : रतनी का मुकलवा है। नेहरू जी के कश्मीर में गिरफ्तार होने की खवर है। मेरी समझ में नहीं आता कि वात क्या है। अभी १६ जून को ही मिशन ने अंतरिम सरकार वनाने की वात कही है। कांग्रेस नट तो गयी मगर उनका रुख साफ नहीं लगता। एक तरफ यह कहती है कि नया कानून वनाने में साथ देगी परंतु दूसरी तरफ अंतरिम सरकार में साथ नहीं देगी। महात्मा जी कहते हैं, उनकी कोई सुनता नहीं, पटेल और राजेंद्रवावू भी नहीं। इधर लीग वाले तो वहुत गरमी दिखाते हैं। तलवार खोलकर जुलूस निकालते हैं। कुछ वड़ा गोलमाल जरूर होगा, मालूम देता है।
सत्यनारायण वगैरह वालीगंज चले गये; मेरा मन कुछ उदास सा है।

२१ जून : आज टामस साहव से काफी देर वात करता रहा। मुझे ताज्जुब होता है। हिंदुस्तान में इतना उलट-फेर चल रहा है परंतु साहव लोग कोई वात उसकी नहीं करते। हम लोगों में तो हर जगह वड़े जोरों में हिंदुस्तान-पाकिस्तान की वातचीत चलती रहती है। मछुआ वाजार में आज 'पाकिस्तान लॉण्ड्री' देखी। मालूम होता है, मुसलमानों को पक्का विश्वास है कि पाकिस्तान वना लेंगे।
सत्यनारायण वगैरह वालीगंज चले गये, पिता जी का कागज मनाही का था। मुझे कुछ भी नहीं कहा। कामकाज एकदम नहीं है।

२२ जून : सुवह ८ वजे तक लाइब्रेरी में अखवार पढ़ता रहा। खवर है, नेहरू जी को छोड़ दिया।

२३ जून : गौशाला के चंदे के लिये ७-८ जगह गया, राजा मुरारका के साथ। २०००) चंदे का लिखा गया। आजकल गौशाला के चंदे के लिए लोग वात नहीं करते। लगता है, इस काम में उसमें पहले जैसी भावना कम होती जा रही है।

२६ जून : सवेरे ६ वजे मोटर चलाना सीखने मैदान गया। शेयर मार्केट की तरफ गया। वाजार वहुत तेज है। कामकाज भी वहुत है। पाट में तो ब्लैक है ही, हम लोगों के नुकसान हैं। पिता जी को कागज दिया, सव समाचार लिखे।

२६ जून : सुवह लाला जी के चाय पी। मुझे वहुत अच्छे लगते हैं। उतावलापन नहीं है। इन्होंने कितना काम किया देश के लिये किसी को पता नहीं। साइलेंट वर्कर

हैं। मुझे इनसे सीखना चाहिए। मैं मन में कुछ सोचता हूँ और करता कुछ हूँ। इससे ऊपर नहीं उठ सकूँगा। सेंगर जी के साथ केदार चटर्जी के गया। उनका कहना है, हिंदुस्तान आजाद होगा परंतु अंग्रेज इसे तोड़ेंगे।

हम लोगों ने भारत एयरवेज के शेयर की काफी अप्लिकेशन दी है। रतनी के नाम की १००९ की दी है।

३० जून : जीवन का उत्तम समय वरवाद जा रहा है। वारात, जीमन, गोठ वगैरह में जाना और ताश खेलना, सिनेमा, फुटवाल देखना। कामकाज नहीं है, व्यापार में नुकसान। परमात्मा जाने क्या होगा।

६ जुलाई : दिन में 'भरत मिलाप' सिनेमा देखा। वैसे ऐक्टिंग साधारण है परंतु भक्तिभाव के कारण लोगों को वहुत पसंद आया। सीन अच्छे जरूर हैं।

विरजू की तवीयत ठीक है। मेरा स्वास्थ्य भी अच्छा है।

१० जुलाई : शाम को ४॥ वजे राइटर्स विल्डिंग में गया, ५ आदमी और भी थे। प्राइम मिनिस्टर सुहरावर्दी से पाट के वारे में वात की। काफी तेज आदमी हैं। सुनने को उसने हमारी वात सुन ली। पर करेगा कुछ भी नहीं, इस्पहानी, हवीव वगैरह से सलाह जरूर करेगा। मैं तो समझता था शायद ठीक से वात नहीं करेगा परंतु मिला वहुत ठीक से, भले ही जवाव साफ नहीं दिया।

शेयर गरम है। हम लोगों के २५००० मत्थे हैं।

१५ जुलाई : छाती में पिछले कई दिनों से थोड़ा-थोड़ा दर्द उठता था। सुवह कफ में थोड़ा खून आया। मन खराव हो गया, सुस्ती आ गयी।

ऑफिस गया। दीपचंद के ८००० गाँठ फाटका पोते करा दिया, शायद ३०००) उसे मिल जायेंगे, ऐसी धारणा है।

आज २५००० का काम किया।

१७ जुलाई : चिंता, वीमारी शायद कभी नहीं साथ छोड़ेगी। आज भी कफ में थोड़ा खून आया। ९९° टेंपरेचर था। डाक्टर के गया, एक्जामिन कराया। फोटो ली। रेस्ट का वोलता है पर यहाँ रहने पर तो आराम नहीं कर सकूँगा।

डेडराज जी मरदा के गया, उनका दोहिता चलता रहा। ज्वाला जी भरतिया के घर सुवह ९ वजे गया। जगन्नाथ सर्राफ की सीर में वोरा लेने की वात की। वी० मधुकर के गया, १००००० वोरा ८=) में लिया। ऑफिस गया। कामकाज कोई खास नहीं। फाटका ८१॥=) मालचंद को ३६०० गाँठें ले दीं, दीपचंद को ८००० गाँठें। दोनों को रुपया आ जाएगा। मुझे तो फाटका की सौगंध है।

१८ जुलाई : तवीयत सुस्त, कामकाज एकदम नहीं। वोरे में फँस गये से मालूम देते हैं। रात ९॥ वजे स्टेशन गया। ज्वालाप्रसाद जी भरतिया, तुलसी वावू, घनश्याम पोद्दार, नंदलाल पंसारी, मनीराम भालेटिया, ठाकुर दास जी थरड़, लाला जी वगैरह सव १४ आदमी हैं। रात में गाड़ी में सो गये।

देवघर

१९ जुलाई : सुवह ६।। वजे स्टेशन पहुँचे। वैजूवावू आये थे। ७।। वजे देवघर पहुँचे। मन एक रकम लग गया परन्तु साथी लोग वहुत वोलते हैं।

२० जुलाई : काम कुछ नहीं, पूरा आराम है। खाना, पीना, घूमना और तास खेलना। २-३ दिन में तवीयत इम्प्रूविंग मालूम देती है।

वागमारा कोठी में गये। वहीं चाय-नाश्ता किया। दीमक वहुत लग गयी है, वंदोवस्त करना होगा।

२८ जुलाई : घनश्याम जी, मानीराम जी आज चले गये, हम लोग परसों जायेंगे। वाजार काफी गरम है। यहाँ भी वाजार ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। दिमाग में वैठा रहता है। वैसे मन खूव लग गया है। डाक की हड़ताल है, टेलिफोन की भी। अध्ययन मेरा एकदम वंद है। मोटर सायकिल खूव चलाता हूँ। मर्दानी सवारी है।

२५ जुलाई : ठाकुर दास जी सर्राफ अस्वस्थ हैं। काफी कमजोर हो गये हैं। परसों मिला था, आज भी मिलने गया। वहीं पता चला मेरी धोती फटी है, झेंप तो आयी। मुझे सावधान रहना चाहिए।

सात दिन में यहाँ हेल्थ काफी सुधरा। मोटर सायकिल चलाना सीख गया। वजन वढ़ा है। शेयर वाजार काफी गरम सुना। कलकत्ते के लिये रवाना हुआ।

कलकत्ता

२७ जुलाई : सुवह मैदान नहीं गया, परंतु गंगाजी गया। अखवारों से पता चलता है ब्रिटिश गवर्मेंट हिंदुस्तानी सरकार वनाने पर ज़ोर दे रही है। कांग्रेस और लीग का अड़ंगा वाधा है। परंतु विचार आता है, अभी आजादी मिली नहीं, परंतु झंझट चालू हो गयी तो मिलने पर हालत कैसी वनेगी ? स्वराज्य, गुलामी, हंगामा की वातें इंटरेस्टिंग लगती हैं मगर इसमें झमेला वहुत है। फिर भी स्वराज्य के लिये मन में ऊँचे विचार आते हैं। शायद इसलिए कि ये लोग औरों के लिए अपना सव कुछ छोड़े बैठे हैं। पंडित जी, राजेन वावू, पटेल जी चाहते तो वहुत रुपये की कमाई कर सकते।

दिन में गद्दी आया, काफी पाट लिया, फाटका भी, परंतु मन वहुत डर रहा था। मालूम नहीं कौन क्या वोल दे। मेरी आदत तो छूटती नहीं, परंतु सौगंध इतनी कड़ी खायी है कि लाभ तो मैं लूँगा नहीं।

२९ जुलाई : दुकानें वंद, वाजार वन्द, पूरी हड़ताल रही, सव बंद। दिन में कुछ भी नहीं किया, सुस्ती रही। छाती में दर्द और कफ, कुछ खाँसी, कमजोरी मालूम देती है। रात में नाहटा दीपचंद आया मकान के वास्ते। दीपचंद चांडक नहीं आया।

५ अगस्त : मन कमजोर, तवीयत सुस्त, चित्त खराव है। कफ में परसों थोड़ा खून आने के कारण डर छिपा वैठा है। वैसे शेयर्स में हम लोगों के कुछ खास घाटा नहीं है। वायसराय लार्ड वावेल के रुख से साफ पता चलने लगा है कि ब्रिटेन हिंदुस्तान से जाना चाहता है। मगर रास्ता नहीं वैठ रहा है। शायद कांग्रेस को मनाने की चेष्टा होगी, क्योंकि इसके विना गवर्नमेंट कौन चलायेगा ? कांग्रेस के लोग भी ऐसा ही कहते हैं।

६ अगस्त : गंगा स्नान कर ९ बजे तक ऑफिस गया। शर्मा के साथ डाक्टर के गया। शर्मा की पत्नी के टी० बी० है। गरीब आदमी है, कहाँ से रुपया लायगा? टी० बी० राजरोग नहीं, दरिद्र रोग है। आदमी तन, मन, धन से दरिद्र हो जाता है। सुहरावर्दी से मिले, मैं, गजराज जी, सुवालाल जी वगैरह। जूट के बारे में बात की। वह कल दिल्ली जायगा। १० ता० को फिरती आयगा, तब जूट के बारे में डिसाइड करेगा। हम लोगो के २५००० मन पाट मत्थे है। सेलर लोग सब बहुत लॉस में हैं। तबीयत सुस्त है, टेम्परेचर ९८° है, अडूचे का रस पीया। कलकत्ते में रहने का मन नहीं करता।

११ अगस्त : डॉ० राम अधिकारी को दिखाया। आज गोपाल बाबू के भी गये। उसने कहा, क्रॉनिक ब्रोंकाइटिस है। दवा दी। खून तो आ ही जाता है, मन में डर होता है, भले ही किसी से कुछ कहूँ नहीं।
मुसलमानों का रंग-ढंग ठीक नहीं मालूम देता। आज ताराचंद दत्त स्ट्रीट जाते समय केला बागान की उनकी एक मीटिंग में कुछ देर खड़ा रहा। धोती में मुझे देखकर कैसी-सी कर रहे थे।

१३ अगस्त : वायसराय लार्ड वावेल ने सरकार बनाने के लिये कांग्रेस के प्रेसिडेंट को बुलाया है। पंडित जी शायद मंजूर कर लेंगे परंतु कांग्रेस के बहुत से नेता चाहते हैं कि सरदार पटेल काम-चलाऊ सरकार बनायें। मुझे भी कुछ जँचता है, जिन्ना से लोहे का आदमी ही टक्कर ले सकता है।

१४ अगस्त : थोड़ा खून कफ में आ रहा है। मन कुछ खराब सा है। बाजार भी फेवर का नहीं। शरीर और मन खराब होने से सब खराब लगता है।
'डाइरेक्ट एक्शन' के बारे में अखबारों में है। 'डान' और लीगी बहुत जोश की बात लिखते हैं।

१६ अगस्त : बुखार-सा था। सुबह १० बजे ऑफिस गया। लीग वालों की बहुत बड़ी मीटिंग थी। वहाँ से लौटते हुए लीगवालों ने लूट-मार शुरू कर दी। चौरंगी, धर्मतल्ला मौलाली वगैरह मुसलमानी मुहल्लों में हिंदुओं की दुकानें लूट ली गयीं, बहुत लोग मारे गये। भाई जी वगैरह सब ज्वाला प्रसाद जी भरतिया के घर आये। डेडराज मरदा के थोड़ी चोट आयी। हिंदू मुहल्लों में लोग जान बचाकर आ रहे हैं। पुलिस कुछ नहीं कर रही है। हालत खराब होती जा रही है। औरतों को बेइज्जत करते हैं, नंगा कर मार डालते हैं। कर्फ्यू लगा दिया है पर मुसलमान लोग 'अल्ला हो अकबर' वगैरह बोलकर रात में भी हमला कर रहे हैं।
भाई जी ने मुझे बाहर नहीं निकलने दिया। मन खिन्न हो गया है।

१७ अगस्त : रात भर एक नींद सो नहीं सके। हत्या, लूट, आग की खबरें, मदद के लिए टेलिफोन की घंटी बजती रही। हम कुछ कर नहीं सके। कुछ भी संभव न था। कर्फ्यू ने उपद्रवियों को एकतरफा मौका दिया।

ताराचंद दत्त स्ट्रीट, जकड़िया, कोल्हूटोला, केला वगान की हालत वहुत सीरियस है। दूसरे मुसलमानी मुहल्लों की, पता नहीं, क्या हालत है। सुना कि खिदिरपुर, मटियाबुर्ज, वाटगंज में वड़ी तादाद में हिंदू मारे गए। औरतें, वच्चे, वूढ़े, इन्हें किसी तरह बचाने की कोशिश हो रही है, रुपयों की मांग पर छोड़ते हैं।

हम लोग कुछ भी नहीं कर रहे हैं, यह वात वड़े शर्म की है। हमारा खून विलकुल ठंढा और वेकार है। औरतों की नंगी लाशें, वच्चों के कटे सिर सड़कों पर हैं। शर्मा की पत्नी किसी तरह वच कर आयी। सव लुट गया। वेचारा रो रहा था।

पुलिस को फोन किया, और भी कई जगह, मगर कोई सुनवाई नहीं। जाजोदिया वगैरह कुछ कर रहे हैं। हिंदू मोर्चा बाँध रहे हैं मगर पुलिस की गोली के आगे क्या उपाय? आज प्राय: ४०० आदमी मारे जाने की खवर है। दीपचंद की कोई खबर नहीं, चिंता की बात है। वह वहुत वेपरवाह है।

१८ अगस्त : दंगा का काफी जोर है। इसे दंगा नहीं, कत्लेआम कहना चाहिए। १० अप्रैल को जिन्ना ने दिल्ली में लीग की कान्फ्रेंस वुलायी थी। वड़ी गरम मीटिंग हुई, पाकिस्तान के अलावा दूसरे किसी पायंट पर समझौता नहीं होगा। शहीद सुहारावर्दी ने कहा था कि मुसलमान लोग वहुत सहन कर रहे हैं। फिरोज खान नून ने तो वड़े जोश के साथ कहा था कि यदि मुसलमानों के लिए अलग देश नहीं वनाया गया तो ऐसा कत्लेआम, खून-खरावा मचेगा कि मंगोल हलाकू भी पिछड़ जायगा। वात सही निकली। उन लोगों की पूरी तैयारी थी जव कि हम इसे वकवास समझते रहे।

वुखार है, मुँह का स्वाद भी विगड़ा है। वाहर निकल नहीं सकता, भाई जी जाने देंगे नहीं। चुपचाप वैठा नहीं जाता, मन खराव हो रहा है। ८॥ वजे सवेरे लेक रोड से गाड़ी आयी। सव समाचार कह दिये। लोग सड़कों पर खींच खींच कर मारे जा रहे हैं। हिंदुओं ने भी वदला लेना शुरू कर दिया है। देर से उठे, शायद अव मुसलमानों का होश और जोश ठीक होगा। ताराचंद दत्त स्ट्रीट से कई फैमिली वचकर आ गयी, हम लोगों के यहाँ हैं। दीपचंद दिन में आया था। मानता नहीं है, २६ नं० में रहेगा, कहता था। रतनलाल जी वहुत काम कर रहे हैं, लारियों में हिंदू स्त्रियों को मुसलमानी मुहल्लों से निकाल कर ला रहे हैं। हिम्मत का काम है।

पठान पुलिस वालों ने वहुत अत्याचार किया। मिलिटरी वुलायी गयी है।

१९ अगस्त : टामस स्मिथ साहव वगैरह आये, हम लोग घर पर ही थे। भाई जी थोड़ी देर के लिए वाहर गये थे। कामकाज कुछ नहीं है। सवाल ही नहीं। वांगड़ विल्डिंग पर कई वार जोरदार हमले हुए, जलाने की कोशिश हुई। तुलापट्टी, मछुआ के खटिक, दरवान वगैरह ने कड़ा मोर्चा लिया। शोभा वाजार, काशीपुर में मुसलमानों पर वड़ी मार पड़ी, मानिक तल्ला में भी। औरतों, वच्चों को तो छोड़ दिया मगर वाकी वहुत मुसलमानों को मारा।

खवर है, काफी तो पहले ही १५ ता० को चुपचाप भाग गये थे। हिंदुओं की चोट भारी पड़ी तो सुहरावर्दी ने मिलेटरी वुला ली है। शाम तक मार-काट कुछ कम हो गयी।

परंतु गरीब लोग कलकत्ता छोड़कर रेल से और पैदल ही भाग रहे हैं। इन दिनों कलकत्ते की जैसी हालत देखी और सुनी, पहले कभी जानकारी नहीं थी। पढ़ा था, चंगेज, नादिर के बारे में मगर 'डाइरेक्ट ऐक्शन' दिखाकर लीगवालों ने नया एक्जांपुल रख दिया। मन बहुत खिन्न है, खाना नहीं खाया।

२० अगस्त : सवेरे निकला, मछुआ तक गया। बड़ी सड़क पर लोग नहीं थे, मिलिटरी का पहरा हरेक मोड़ पर था। सड़कें गंदी, दुर्गंध, लाशें पड़ी थीं, सड़कर फूल गयी थीं। पता नहीं, कब सफाई होगी। मनुष्य में ही देवता और राक्षस छिपा बैठा है। अच्छे संस्कार से देवता बनता है। स्टैट्समैन ने लीग मिनिस्टरी के विरोध में काफी लिखे हैं। ३००० आदमी मरे, ८००० घायल हुए हैं। हिंदू-मुसलमानों की संख्या बराबर है। धन का नुकसान हिंदुओं का ज्यादा हुआ है। बाजार बंद है।

२१ अगस्त : सुबह देखा, सड़कों पर लाशें पड़ी हैं। क्या कसूर था इनका ? धर्म मनुष्य ने बनाया और उसी के लिए अधर्म करता है। बुरों में भी अच्छे होते हैं। सुना, हिंदुओं ने मुहल्लों में मुसलमान छिपाये रखा, मुसलमानों ने भी ऐसा किया। खबर देकर पहरे के साथ बचाकर निकाला। ऐसे काम के लिए इन पर मार भी पड़ी। कई मारे भी गये दीपचंद वगैरह कई लोग आये। कहते थे, मुसलमान डरपोक हैं। सामने नहीं आते। पुलिस की लारी के पीछे से हमला करते हैं। रात में निकलते हैं।

दिन में कॉलेज स्ट्रीट, वेलिंगटन, धर्मतल्ला, भवानीपुर गया। खिदिरपुर नहीं जा सका। वातावरण डर का है। दुकानें खूब लूटी गयी हैं। खबर बताते थे कि शुरू-शुरू में अचानक हमले में हिंदू ज्यादा मारे गये, परंतु बाद में मुसलमानों के मरने की संख्या ७०% है। भाई जी नाराज होंगे, मैं बाहर उनको बिना बोले निकल गया। सत्यनारायण ऑफिस गया था, टामस साहब मेरे लिए पूछ रहा था।

२२ अगस्त : आज कुछ शांति रही, फिर भी १०-१५ आदमी मारे गये। मेरी तबीयत कुछ इंप्रूव कर रही है।

२४ अगस्त : इन आठ दिनों में मुसलमानों ने शुरू में तो हिंदुओं को जान-माल का काफी नुकसान पहुँचाया मगर बाद में इन पर बहुत मार पड़ी। इनकी हिम्मत भी ढीली पड़ गयी, लगती है। सुलह की बात चलने लगी है। हो जाय तो अच्छा है। समझदारी की बात रहेगी। हिंदुस्तान का बँटवारा तो होना ही है। स्टैटस्मैन मुसलमानी मिनिस्ट्री के बारे में बहुत कड़ी बातें लिखता है। शायद यह मिनिस्ट्री नहीं रहे। इंटरिम गवर्मेंट बनने की बात है। शायद जल्दी ही बन जाए।

२५ अगस्त : सुबह विक्टोरिया मेमोरियल गया। कोई नहीं मिला। उधर से पार्कसर्कस चला गया। मुसलमान काफी थे। थोड़ा डर मालूम हुआ। वहाँ से गंगा जी चला आया तेल मालिश करायी। खून तो कफ में थोड़ा आता है पर चित्त ठीक है। तबीयत दुरुस्त है। ३ बजे शहर घूमने निकला। हाजरा रोड, लैंसडाउन रोड, लोअर सर्कुलर रोड, सेंट्रल एवेन्यू के इलाकों में घूमा, गलियों-बस्तियों में भी गया। मिलिट्री का पहरा है, शांति

है। ४ वजे मीटिंग हुई, मुझे मंत्री बनाया गया। मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ, पर ठीक से कुछ भी नहीं कह सका। झेंप सी हुई। २१००) रुपये इकट्ठा हुए।

२७ अगस्त : कामकाज कोई खास नहीं था। ऑफिस में वैठकर कांट्रेक्ट वगैरह वनाये। वापू जी का कागज था। विरजू के फ्रेनिक ऑपरेशन हुआ। परमात्मा उसे ठीक कर दें।

२९ अगस्त : कांग्रेस और लीग के वीच समझौता नहीं हो पाया। लीगवालों ने गुस्सा उतारा वेकसूर लोगों पर। दंगे में ५००० के मारे जाने और १५००० के घायल होने की खवर है। कितनों की रिपोर्ट नहीं होगी, इसका क्या ठिकाना। वायसराय भी परेशान दिखता है। उसने इंटरिम गवर्मेंट वनाने के लिए कांग्रेस को एक हफ्ता पहले कह दिया। शायद इसमें पंडित नेहरू, सरदार पटेल, राजेंद्र वावू, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, आसफ अली रहेंगे। सिखों के वलदेव सिंह, ईसाइयों के जॉन मथाई भी होंगे। शफात अहमद, अली जहीर, जगजीवन राम और शरदचंद वोस के भी लिए जाने की वात है।

३० अगस्त : जोड़ासांकू क्लव का कुछ भी काम नहीं होता है। मन में दुख है। फालतू समय जाता है। लोगों में उत्साह कमती है।

सेंटर में कांग्रेस गवर्मेंट वन रही है। मुसलमान साथ नहीं दे रहे हैं। इंटरिम सरकार २ सितंवर को चार्ज लेगी।

शेयर वाज़ार समान है। हम लोग काम-काज सलटा रहे हैं। पाट हम लोगों के मत्थे ही है, प्राय: ५००० मन। ब्लैक काफी हो रहा है। यह रोग तो अब जाने का नहीं लगता।

३ सितंवर : कल इंटरिम गवर्मेंट वन गयी। पंडित नेहरू प्रधान मंत्री वने। मुस्लिम लीग नाराज तो हैं ही। खवर आयी, वम्बई में मुसलमानों ने दंगा किया। मुस्लिम प्रेस काफी उत्तेजना की वातें लिखते रहे हैं, हिंदू प्रेस वाले शांति समझौते की। इस हालत में शांति कैसे रहेगी ? लगता है, वहुत वड़ा गोलमाल मचेगा और इंटरीम गवर्मेंट को मुसलमान फेल कर देंगे।

४ सितंवर : सुवह ६॥ वजे शुक्ला जी के साथ मैदान गया। कुछ लोग मिल गये। वहुत रकम की चर्चा हुई। लोगों की धारणा है, इंटरिम सरकार चल नहीं पायगी। अंग्रेज इसमें मुस्लिम लीग को घुसायेंगे।

कलकत्ते में शांति है पर वंवई में दंगा हो गया।

५ सितंवर : सुवह ५-२० वजे वाहर घूमने निकला। सड़कें सुनसान। स्टेट्समैन खरीदा, पढ़ा। जिन्ना की स्पीच वहुत खराव है। वंवई में १५० मरे। नासिक में भी दंगा हो गया। १ वजे घर लौटा। पता चला, भाई जी मुझे खोजने निकले थे। वे कुछ वोले नहीं, परंतु लगा कि नाराज-से हैं। मेरी गलती है, मुझे कहकर जाना चाहिए परंतु मेरी आदत सुधरती नहीं।

कामकाज कुछ खास नहीं है। शाम को जोड़ासाँकू संघ में गया। मुहल्लों में घूमा। लाला बाबू के घर गया। कलकत्ते में शांति तो है मगर टेंशन उसी माफिक है। आज भी ५-६ आदमी मारे गये।

९ सितंबर : शाम को ५ बजे संघ की मीटिंग थी। ठीक से बोल नहीं पाया। फिर भी कह दिया कि काम करने के प्रति लोगों में उत्साह नहीं है। समय नहीं देते और रुपए भी नहीं। सेवा का काम कैसे चलेगा? लोगों को मेरी बात पसंद आयी पर इससे क्या होता है? बात में दिलचस्पी और काम में उदासी से चलने का नहीं।

१० सितंबर : सुबह से ही बारिश हो रही है। तबीयत एकदम ठीक है। बाजार गरम है।

रतनी बीमार है, राम जी दास भी बीमार है।

सुनने में आया कि वायसराय लार्ड वावेल मुस्लिम लीग को इंटरिम गवर्मेंट में लाना चाहते हैं।

१४ सितंबर : ६ बजे सुबह लाला जी के साथ मैदान गया। थोड़े आदमी आते हैं। २५०० मन का काम किया। मीटिंग २०-२१ सितंबर को होगी। सेलर्स लोग अभी भी मत्थे में हैं। मेरे को बाजार मजबूत जँचता है।

दिन में कामकाज तो रहता है परंतु मन उदास रहता है। बिरजू का कागज नहीं आया। व्यापार में ब्लैक मुझे अच्छा नहीं लगता। मगर उपाय नहीं। सब करते हैं, भाव भी उसी रकम चलता है। नहीं करूँ तो व्यापार नहीं चलेगा। अजीब बात है।

१९ सितंबर : सपने बुरे आते हैं। नींद भी ठीक से नहीं आती। बिरजू की तबीयत उसी माफिक है। सारे दिन वर्षा होती रही। इतनी जोर की बारिश मैंने तो अपनी उमर में नहीं देखी। बाजार, बैंक सब बंद।

ट्राम, बस, मोटर भी बंद। रिक्शा भी नहीं चल पायी। पैदल बिना जूतों के ऑफिस गया। एक रकम अच्छा जरूर लग रहा था। सड़कों पर पानी जमा था। उसी में से जाते समय बच्चों को देखकर मुझे भी अपने बचपन की याद आ गयी। कपड़े बिल्कुल भींग गये। ऑफिस नहीं जाता तो हर्जा नहीं था परंतु घर से निकलते ही पग अपने आप बढ़ने लगे थे।

२० सितंबर : शेयर मार्केट वापिस थोड़ा मजबूत रहा।

बंगाल असेंबली के चुनाव में कांग्रेस हार गयी। सुहरावर्दी की पार्टी जीत गयी। कांग्रेस वाले आदर्श की बात ज्यादा करते हैं। मुसलमानों का संगठन बहुत मजबूत है और वे प्रैक्टिकल हैं।

२२ सितंबर : पाट की खबर मंदी की दिल्ली से बिरला की आयी। कुछ सौदा नहीं किया। बाजार का ढंग बहुत तेजी का है।

दिन में थोड़ा हिंदू-मुस्लिम दंगा हो गया। हिंदुओं में खास जोश नहीं है। मुझे लगता है, इस रकम से दंगा-उपद्रव करते हुए मुसलमान पाकिस्तान बनाने की जरूरत बताना चाहते हैं। हो सकता है, अंग्रेजों का भी इसमें कुछ स्वार्थ हो।

रात में पाट के बारे में बहुत बुरे सपने आते हैं। इससे डिस्टरबेंस काफी हो जाता है।

३० सितंबर : बाजार सुबह काफी गरम खुला। भाव कल टूट गया। अखबार में डिक्लेयर हो गया कि गवर्मेंट भाव बाँधेगी। हेसियन ३५), बोरा ६०) अंदाज है। मेरा मन तो तेजी पर है।

१ अक्तूबर : दिन में ३५२००० मन का काम किया। बाजार में बहुत तेजी-मंदी रही। कामकाज ६-७ लाख मन का हुआ। जैसा मालूम देता है, भाव टूटेंगे। शाम को एक रकम थक गया था। कफ में ब्लड थोड़ा आता है। शेयरों में काफी रुपया डूब गया है। चित्त प्रसन्न नहीं है। पूजा में नारायणगंज जाने का विचार है।

५ अक्तूबर : पेशाव में आराम है। बापूजी, माजी आयीं। विरजू की तबीयत ठीक बताते हैं। वजन १५२ पौंड है। ऑफिस में इस साल दलाली पिछले साल के समान है। पाट का भाव १११), १०७) है।

आज विजया दशमी है। छुट्टी है। 'संग्राम' बंगला सिनेमा देखा। साधारण था। पूजा का काफी जोश है। हर साल बढ़ता जा रहा है। शुरू में जब कलकत्ता आया था इतने पंडाल नहीं बनते थे। केवल जमींदार या राजाओं के यहाँ पूजा बैठायी जाती थी। अब तो चंदे इकट्ठा कर के दुर्गा पूजा, काली पूजा की जाती है। अच्छा लगता है, सभी लोग मिलते-जुलते हैं, उत्साह रहता है। बड़े, छोटे, बच्चे, जवान, सभी प्रसन्न रहते हैं।

८ अक्तूबर : खबर है कि पंडित नेहरू ने वावेल से कहा कि मुस्लिम लीग को इंटरिम गवर्मेंट में लिया जा सकता है। वायसराय ने जिन्ना से बातचीत शुरू कर दी है। पूर्वी बंगाल में मुसलमानों को काफी उकसाया जा रहा है। मौलाना भसानी जिहाद की बात चला रहा है।

नारायणगंज

११ अक्तूबर : सुना, जिन्ना से बातचीत टूट गयी। सुबह मैदान घूमने गया था। आया तो स्टीमर छूटने को था। खैर १॥ बजे नारायणगंज पहुँचा। २॥ बजे टी० एन० की गद्दी में गया। मीटिंग में गया, सबों से मिला।

वैसे तो इधर शांति है पर मुसलमानों में उत्तेजना है। गोलमाल होने का चांस है, ऐसा लगता है।

१२ अक्तूबर : नारायणगंज ५ वर्ष बाद आया हूँ। काफी चेंज हुआ है। सुबह नदी में स्नान किया। अच्छा लगा। मन में विचार आया कि पाकिस्तान बनने पर क्या बदल जायगा। आसपास पाट के मुकामों में गया। मुसलमानों का व्यवहार अच्छा है।

अशिक्षित और सीधे हैं परंतु इन्हें इस्लाम के नाम पर भड़काया जा रहा है। पता नहीं, इससे किसका भला होगा!

कलकत्ता

१४ अक्तूबर : दिन में मिलों में २२-२५ में काम हुआ। बाजार काफी गरम है। 'एक्साइटेड' है। फाटका १२०) से १२६) रहा। मैंने ५०० गाँठ १२३॥) में बेची। भाई जी को नहीं बता सका क्योंकि बाजार शाम को गरम हो गया था। बहुत गलती कर रहा हूँ। करना ही नहीं चाहिए था। बिल्टियाँ काफी आयी हैं।

सपने खराब आते रहते हैं। मानसिक उत्तेजना है। जी चाहता है, रिटायर कर जाऊँ।

२१ अक्तूबर : चित्त खराब रहता है। फाटके में बेसी घाटा दे दिया। आदत सुधरती नहीं। बाजार काफी तेज है।

नेहरू जी ने वावेल का प्लान स्वीकार कर लिया। लीग इंटरिम मंत्रिमंडल में आ जायगी। जिन्ना राष्ट्रीय मुसलमानों को मंत्रिमंडल से निकालने पर जोर दे रहा है। वह खुद मिनिस्ट्री में नहीं रहना चाहता।

नोआखाली, फेनी, नारायणगंज में बहुत बड़ी मारकाट मची है। पूर्वी बंगाल का कांड हिंदुओं के हक में बहुत खराब हुआ। मेरा चित्त खिन्न हो रहा है।

२६ अक्तूबर : पूर्वी बंगाल में हिंदू बहुत मारे गये। कोई बचाने वाला नहीं। बहादुरी से मुकाबला करते हुए कइयों के मारे जाने की खबर अखबारों में देखी। औरतों की इज्जत लूटी जा रही है। वे जबरदस्ती मुसलमान बनायी जा रही हैं।

मैं क्यों चित्त खराब करता हूँ। कुछ कर नहीं सकता।

२७ अक्तूबर : बाजार कुछ तेज होकर मंदा हो गया। उधर मन लगता नहीं। मन में चीख-पुकार, खून-खराबे की बात उठती है। दिन में कई जगह मिलने के वास्ते गया। कलकत्ते में दंगा भड़क उठा है, पर पहले जैसा नहीं होगा। मुसलमान डर गये हैं। परंतु नोआखाली वाले दंगे की खास बात है। गांधी जी का शांति मिशन क्या करेगा? आग पर राख है। उनकी अहिंसा संतों की है। सब साधु-संत नहीं हो सकते। अन्याय रोकने के लिए ताकत चाहिए। हिंदुओं में कभी संगठन की ताकत नहीं रही। हमेशा भोगना पड़ा।

कई जगह चंदे मँडाने गया। प्राय: ४५०००) सब चंदा मँडा लिया है। रिलीफ में लगेगा। पब्लिक वर्क जैसा होता है, कर रहा हूँ। हिंदुस्तान पर दुर्भाग्य आ गया।

२८ अक्तूबर : दिन में इंडिया चेंबर में गया। मैंने भी कहा कि हड़ताल होनी चाहिए। बड़े-बड़े आदमी अगेंस्ट में थे। मैंने काफी समझाने की चेष्टा की। कुछ लोग नाराज भी हुए परंतु अंत में स्ट्राइक होना निश्चित हुआ। इससे कुछ होना-जाना नहीं परंतु मालूम तो होगा कि अत्याचार के खिलाफ कुछ किया गया। चेत हो जाय तो अच्छा।

२ नवंबर : मेरे कारण फर्म को काफी नुकसान हो रहा है। आदत छूटती नहीं। भाई जी नाराज हैं, कुछ बोलते नहीं। मन में कैसा-सा होता है।

सुबह गांधी जी से मिला। थोड़ी-बहुत बात भी की। बहुत कुछ कहना चाहता था परंतु उनके आगे कुछ बोल नहीं पाया। पता नहीं उनकी ताकत ज्यादा है या मेरी कमजोरी। साथ में लोहिया जी थे, केदार बाबू भी। मैं पूछना चाहता था कि गांधी जी हमें शांति रखने को कहते हैं जब कि मुसलमान अत्याचार करते जा रहे हैं। देवताओं को भी दानवों के खिलाफ हथियार उठाना पड़ा था। उन्होंने पहले ही कह दिया था कि अन्याय को अन्याय से नहीं दबाना चाहिए। कुछ बोलने के लिए रहा नहीं।

३ नवंबर : मनुष्य दुख को स्वयं बुलाता है। फाटका काफी गरम हो रहा है। ३०,००० का नुकसान कर दिया। मेरे लिए कितनी गैरजिम्मेदारी की बात है। परंतु उपाय क्या, मन तो बस में रहता नहीं। कभी सौगंध ली थी, परंतु मन चलायमान हो गया।

५ नवंबर : बर्ड कंपनी में ५ लाख मन का काम किया। हम लोगों ने एक लाख मन का किया। फाटका १८६) से १७८) रहा। बाजार काफी तेजी पर है।

कलकत्ते का दंगा कमती है परंतु बिहार में अभी शांति नहीं। मुजफ्फरपुर, गया, मुंगेर, दरभंगा में काफी दंगा मचा। कलकत्ते के मुसलमान डक मजदूर इन्हीं जगहों के हैं। इनकी अच्छी कमाई है। इन्हीं लोगों ने मारकाट शुरू की थी परंतु कलकत्ते की तरह मार खानी पड़ी। फालतू में हजारों जानें गयीं, बेघर-बार हुए।

६ नवंबर : पूर्वी बंगाल में बहुत से लोग जान बचाकर आ रहे हैं। रास्ते में कई बीमार हो जाते हैं, मर जाते हैं। लालाजी के साथ ४ अस्पतालों में गया। बड़ी बुरी हालत है। किसी बच्चे के माँ-बाप का पता नहीं। किसी की पत्नी नहीं, पति नहीं। चोट घाव बन चुके हैं। देखा नहीं जाता। ५ बजे बंगाल सेंट्रल रिलीफ की मीटिंग में गया। मैंने बताया कि काम बड़ा है, रुपये की बहुत ज्यादा जरूरत पड़ेगी। लगता है, यह समस्या बनी रहेगी।

१२ नवंबर : शाम को डॉ० राममनोहर लोहिया आये। उनसे बात करना अच्छा लगता है। विचार स्पष्ट है, अध्ययन भी काफी। समाजवाद लाने के लिए कम्युनिस्टों से उनका मतभेद है। उनकी धारणा है कि हिंदुस्तान का बँटवारा अंग्रेज कर देंगे। उन्हें अपनी घड़ी दे दी। नहीं मान रहे थे पर शेष में मंजूर किया। कह रहे थे हिंदुस्तान के आजाद होने पर बड़ी जिम्मेदारी आ जाएगी। काम बढ़ेगा। मुझसे पब्लिक वर्क करने को कहते हैं। नहीं कर सकूँगा, फाटका करता हूँ। मेरी बुद्धि ठीक नहीं।

लालगोला-नवद्वीप

१७ नवंबर : सुबह ६ बजे लालगोला पहुँचा। ७॥ बजे की गाड़ी से जियागंज गया। लोगों से मिला। स्नान, भोजन कर लिया। पाट की जँचाई की। ११ बजे जीप में बैठकर कासिम बाजार पहुँचे। अच्छी जगह है, काफी घर हैं, बड़ी बस्ती है। नवाबी जमाने

में इसका महत्व ज्यादा था। यहाँ के जमींदार राजा मणींद्रचंद्र नंदी विद्या-व्यसनी रहे। उनका कलकत्ते में काफी नाम है। यहीं पास में खगड़ा और रामपुर भी हो आया। पीतल, काँसे के वर्तन के लिए खगड़ा प्रसिद्ध है। वहुत जगह इन्हें वनते देखा। वहरामपुर में पाट मुकाम के अलावा कोई खास वात नहीं देखी।

शाम को ५ बजे नवद्वीप पहुँचा। वंगाल का वृंदावन इसे मानते हैं। संस्कृत के अध्ययन का केंद्र था। इनकी पाठशाला को 'टोल' कहते हैं। लोगों ने वताया कि अव तो 'टोल' कमती होते जा रहे हैं। चैतन्य महाप्रभु यहीं के थे। गंगा का किनारा और सीन अच्छे हैं, मगर गलियाँ, सड़कें वहुत गंदी हैं। मच्छर वहुत हैं। भजनाश्रम में ठहरा। रात में जीमा नहीं, ९ वजे तक घूमता रहा। पैरों में दर्द था, पैर दववाये, सिर मालिश करवाया।

२२ नवंबर : अखवारों में कांग्रेस-लीग में खचखच की चर्चा चल रही है। पंडित नेहरू और जिन्ना, दोनों ने छोड़ने की धमकी दी है। हिंदुस्तान में सव ओर भीतर-भीतर अशांति का वातावरण वढ़ रहा है। शेयर वहुत मंदे रहे।

२३ नवंबर : मेरठ में नेहरू जी ने काफी कड़ा भाषण दिया। वाजार कुछ मंदे से ही रहेंगे। हम लोगों का काम थोड़ा-थोड़ा सलट रहा है।

२६ नवंबर : वाजार समान में क्वायट है। फाटका अंदाज १५२) रहा है।

कैविनेट फिर से वनायी गयी। लीग के आदमी लिये गये। परंतु अडंगे तो हैं ही। वावेल के मान का नहीं दिखता। लीग वाले जरूर किसी जोर पर झमेला करते हैं।

२८ नवंबर : इधर काफी काम सलटा सका। चिंता काफी कम हो गयी है। पहले का अड़ंगा प्राय: सलट गया है।

प्रभुदयाल जी के गया, लाला जी साथ थे। व्यापार-व्यवसाय के साथ प्रभुदयाल जी कितना काम कर लेते हैं। स्वास्थ्य भी अच्छा है। मुझे सीखना चाहिए। मैं फजूल चिंता करता हूँ। सामाजिक काम अधिक करूँ तो मन उधर लगा रहेगा। परंतु मेरी आदत खराव है।

किसनगंज

२९ नवंबर : लाला जी के साथ पहुँचा। २००० गाँठें वेचीं। भाव ३०) से २९॥)॥ रह गया।

चिंता कम है। लाला जी के साथ रहना अच्छा लगता है। सुलझे विचार हैं। कांग्रेस में रहकर इन्होंने वहुत काम किया। अभी भी करते हैं। मैं नहीं कर पाता, सोचकर रह जाता हूँ। मुझे आगे वढ़ना चाहिए। मेरे हेल्थ के लिए जरूरी मालूम पड़ता है।

कटिहार

३० नवंबर : कटिहार मिल में गया। कटारुका भले आदमी हैं। मेरे कपड़े साधारण हैं, जूते टूटे हुए। फिर भी खतिरदारी हुई। मन में झेंप गया।

फार्बिसगंज

१ दिसंबर : सुबह ६ वजे पहुँचा। स्नान कलेवा कर वाजार गया। पाट की जँचाई देखी। कटिहार के लिए ३ बजे गाड़ी में बैठा। टिकट गुम गयी थी। चेकर को ३) दिए। कटिहार में इंटर क्लास में बैठा। मन कैसा-सा होने लगा। रुपये की रसीद लेनी चाहिए थी। वेईमानी को बढ़ावा दिया। इससे बचा जा सकता था। ११ वजे पारबतीपुर पहुँचा। ट्रेन में वहुत भीड़ थी। किसी तरह वेंडर के डव्वे में घुस पाया।

कलकत्ता

२ दिसंबर : ७॥ वजे स्टेशन पहुँचा। टिकट के १५) अधिक लगे। रात भर तकलीफ रही। वरफ के डव्वे में था।

८ दिसंबर : तबीयत एक रकम ठीक है। शाम को डॉक्टर राम मनोहर लोहिया की मीटिंग में गया। अच्छा भाषण था परंतु ऐसा लगता है, लोहिया जी की बातें सिर्फ़ पढ़े-लिखे लोगों की समझ में आती हैं, मामूली आदमी शायद ही समझे। नेहरू जी सब को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

१३ दिसंबर : कर्फ्यू आज से उठा लिया गया। मगर मन में सफाई नहीं है। खतरा रहेगा। मुसलमान मुहल्लों में हिंदू जाते हैं पर मुसलमान इधर वहुत कम आते हैं। उर्दू पढ़ना शुरू किया।

१६ दिसंबर : ११ वजे असोशियेटेड चेंवर ऑफ कामर्स में पंडित नेहरू आये। बड़ी भारी मीटिंग थी। हिंदुस्तान की उन्नति करने के लिये सब को सहयोग देने की वात कही। मुझे लगता है कि ज्यादा लोग उन्हें देखने के लिए बैठे थे। सेंगर जी की वात ठीक जँचती है, हिंदुस्तानी अभी अपने देश की वात सोचते नहीं।

२३ दिसंबर : वहुत भूल जाता हूँ। आषाढ़ में वाइफ से ५०००) लिए थे। उसका हिसाव नहीं मिल रहा है। वह तो कुछ वोलती नहीं परंतु मेरी गलती है।

२४ दिसंबर : कल रात लोहिया जी आये थे। काफी देर तक बात हुई। उनकी धारणा है हिंदुस्तान को आजादी मिल जायगी परंतु यह केवल पोलिटिकल होगी। साधारण आदमी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ने का। पूंजीवादी सिस्टम हटाये बगैर आजादी का मतलब कुछ भी नहीं। नन्दू कुछ कमजोर मालूम देता है।

२५ दिसंबर : टामस, स्मिथ और दूसरे साहवों को डालियाँ दे आया। प्राय: १५००) खर्च हुए। टामस से वात हो गयी है। दो महीने की छुट्टी पर वाहर जाऊँगा।

२९ दिसंबर : उर्दू सीखता हूँ। मुश्किल है। जवान हिंदी, लिपि फारसी। भाषा में कोई खास फर्क नहीं। अरवी-फारसी के शव्द ज्यादा लगाते हैं। लिपि वहुत अड़ंगे वाली है, अपनी मुड़िया से भी ज्यादा शार्टहैंड। मन वैठता नहीं, पर सीखना चाहिए।

१९४७

कलकत्ता

१ जनवरी : वर्ष का पहला दिन है। बुधवार है, बंदी का दिन है। पिछला वर्ष बड़ी उलझनों में बीता। विचार अच्छे आये, अपने को सुधारने की प्रतिज्ञा कई बार की मगर असफल रहा। नीचे भले ही नहीं गिरा परंतु ऊपर नहीं उठ सका। कमाई भी कोई खास नहीं रही। फाटके में नुकसान दिया। हमलोगों के ४५०० गाँठें पोते हैं। एंड्र्यू साहब के घर गया। शरद बाबू की 'विराज बहू' सिनेमा में देखी। अच्छी लगी। बंगाली सिनेमा और अभिनेताओं में गंभीरता है, वे मेहनत भी ज्यादा करते हैं। पाट का बाजार बंद था। भाव १४८), मैंने कई आदमियों को तेजी बता दी पर तेजी होती नहीं मालूम देती है।

७ जनवरी : कारबार में झमेला तो रहेगा। बचा नहीं जा सकता। कर्सियांग की कोठी लेने का समाचार दिया, २६०००) में। परंतु मेरा मन देश जाने का हो रहा है। वहीं राहत मिलेगी, ऐसा लगता है। चित्त में उत्साह नहीं है, सेक्स से इधर कई महीनों से मन हटता जा रहा है। वैराग्य नहीं है, फिर ऐसा क्यों होता है? शायद मन और शरीर की कमजोरी है।

१३ जनवरी : सुबह एंग्लो-इंडिया मिल में गया था। वहाँ क्रिस्टो ड्राइवर से झगड़ा हो गया। गलती उसकी थी। परंतु मुझे शांत रहना चाहिए था। नीचे के लोगों से उलझना अपने को नीचा बनाना है। उपाय क्या? मन में बहुत उत्तेजना रहती है। ताकत घट गयी है। मेरा ध्यान फाटके पर गरम है। आजकल उर्दू की पढ़ाई खास नहीं हो रही है। ठाकुरदास जी सर्राफ चल बसे। मेरा मन एकदम खराब हो गया। ३ वर्ष पहले विवाह किया था। अब विधवा के लिए उम्र भर की तपस्या है।

१९ जनवरी : रात में सपना आया। फाटके का भाव ५४) है, नींद में ही खुशी हुई। बहुत बड़ी कमजोरी की बात है। दिनभर फाटके की सोचता हूँ, नींद में भी छुटकारा नहीं। मन में रुपये का लोभ बैठ गया है। मालूम नहीं यह कैसे निकलेगा।

मैदान में बैजू बाबू को देखा। एकदम बीमार-से कमजोर-से, मालूम देते थे। रुपये की इनके पास कमी नहीं। परंतु रुपया बेशी होने से क्या आदमी की तंदुरुस्ती अच्छी हो

जाती है? हर समय रुपये की चिंता शरीर को गला देती है। साधन रहने पर भी सुख नहीं मिलता।

२० जनवरी : आज के बाद मार्च १९४७ तक फाटका नहीं करूँगा। अगर करूँ तो बुरी से बुरी सौगंध है। इससे वेशी क्या करूँ?

२१ जनवरी : सुबह बैजू बाबू ने २५०० गाँठें पाट का लेने को कहा। बहुत ऊँचे में आया ६२॥) अंदाज। दिन में २५००० मन का काम ३४), ३७) अप्रैल—जून किया। १०००० मैंने रखा। फाटका १२५० गाँठ मत्थे था, वह ले लिया। कुछ काम रखा है, वह आलस के वश कर नहीं सकता हूँ। शाम को थोड़ी देर तक उर्दू किताब पढ़ता रहा। कुछ तरक्की हुई है। जल्दी ही बाहर जाने का विचार है।

२४ जनवरी : किसी से धोखा खाने पर आदमी उसे बुरा बताता है मगर अपने को जानबूझ कर धोखा देता रहता है और खुश होता है। नुकसान होने पर पछताता है, फायदे में खुश होता है और अपने को होशियार समझता है। इसी तरह का मैं भी एक नासमझ हूँ। आर० एम० के सीर में फाटका २५०० गाँठ ६१।=) में बेची। सौगंध नहीं टूटी। सीर में काम किया था। यह तो साफ धोखा है परंतु मन की कमजोरी ने फँसा दिया।

२५ जनवरी : ऑफिस के बाद २॥ बजे सेंगर जी के साथ बंडेल रेल से गया। वहाँ से टेक्सी में शरद बाबू के देवानंदपुर गाँव में गया। शरद बाबू का घर बहुत ही साधारण था। काशीनाथ भी यहीं का था। सरस्वती नदी देखी, छोटी साधारण-सी। परंतु दृश्य बहुत अच्छे लगे। मन की सारी चिंता मिट गयी। छोटा-सा गाँव है, बाजार नहीं था। शांत जीवन है, भाग दौड़ नहीं। गरीबी में भी कितने अमीर हैं ये लोग। हमारे पास पैसा है पर हम दरिद्र की तरह उसी के पीछे भागते हैं। शरद का साहित्य मुझे बहुत अपील करता है। मैं जिन्हें खोजता हूँ, उसमें पाता हूँ। इसीलिए बार-बार पढ़ता हूँ। परमात्मा जाने मैं कभी कुछ लिख सकूँगा या नहीं। विश्वमित्र में बाजार भाव बहुत लिखे पर इससे क्या होता है? आई० एन० ए० दिवस था। कैप्टेन ढिल्लन का लेक्चर सुना। ८॥ बजे तक घर वापस आ गया। काफी रिक्रियेशन हुआ।

२६ जनवरी : रविवार है, छुट्टी का दिन। स्वाधीनता दिवस भी है। पूर्ण स्वराज्य की प्रतिज्ञा आज ली गयी थी। हिंदुस्तान आजाद होगा, ऐसा लगता है, मगर अंग्रेजों के 'डिवाइड एंड रूल' की वजह से 'डिवाइड एंड क्विट' होगा। हमलोगों के क्या फर्क पड़ेगा, कोई भी गवर्नमेंट में आये। दिन में एक बजे गंगा जी गया। धूप निकली थी। स्नान में आनंद आया। २॥ बजे घर लौटा। ४ बजे · · · · · के गया। काफी भीड़ थी। धनवान् लोगों के काफी चोंचले होते हैं। मिलने-जुलनेवाले इसमें बढ़ावा भी देते हैं। दिखावा तो मन की एक दबी इच्छा है, हर पैसेवाले में हो जाता है। यह बहुत खतरनाक है। डाह पैदा होती है। मुझे याद है जब शुरू-शुरू में मोटर में बैठता था

तो इधर-उधर देखता था कि मुझे कोई देखता है या नहीं। आदमी की अजीब कमजोरी है।

२८ जनवरी : बाजार दिन में बहुत गरम, फाटका ६४) रहा। हम लोगों के पाट प्राय: बराबर २०,००० मन है उसमें घाटा-नफा नहीं है। उर्दू की पढ़ाई चल रही है। तबीयत वैसे ठीक है। रुपयों की बरीज़ नहीं हैं, अब और सौदा नहीं करूँ तो सब ठीक हो जायगा। जे० टामस से इस साल ४/५ लाख रुपये मिल जायेंगे, लगता है। फिर से देवानंदपुर जाने की बात है।

२ फरवरी : ११ बजे तक खाने-पीने का सामान लेकर देवानंदपुर गया। साथ में १४ आदमी थे। बंडेल का गिरजाघर देखा। १६वीं शताब्दी में पुर्त्तगालियों ने बनाया बताते हैं। वहाँ का गंगातट बहुत सुंदर है। सैर करने की जगह है। गिरजा साफ-सुथरा और शांत है। अच्छा लगा। पूजा के स्थान पर शांति होनी भी चाहिए। हम लोगों के मंदिरों में तो बहुत गंदगी और शोर होता है। मन उचटता है। इमामबाड़ा हुगली में देखा। बड़ा और अच्छा है। परंतु लखनऊ जैसा नहीं। हाजी मुहम्मद मोहसिन ने बनवाया। अपनी सारी संपत्ति और पुस्तकें इसे दे दी थीं। इस्लामी पढ़ाई यहाँ होती है। देवानंदपुर ३ बजे पहुँचे। शरद की स्मृति में जलसा था। शरद ने सादा जीवन बिताकर ऊँचा साहित्य दिया। साधारण जलसा था किंतु शरद बाबू के जीवन एवं उनके साहित्य पर बड़े अच्छे विचार कहे गये। रात ९।। बजे वापस लौटा। बड़ा आनंद आया। कुल १२०) खर्च। अच्छे काम में लगे। पाट का भाव ६५) सुना था। रात में फिर सपना आया। मैंने सौगंध तोड़ी अच्छा काम नहीं किया।

१२ फरवरी : दिन में सेंगर जी की वंगीय हिंदी परिषद गया। कलकत्ता विश्व-विद्यालय के प्रो० सुकुल हिंदी के लिए बहुत कोशिश कर रहे हैं। अलग डिपार्टमेंट बनाना चाहते हैं। उनमें मिशनरी स्पिरिट है। काफी देर तक बात हुई। अंग्रेजी, संस्कृत, हिंदी के अच्छे विद्वान् हैं।

जसीडीह

१५ फरवरी : कल थका-हारा जसीडीह आया। यहाँ की हवा मुझे माफिक होती है। आज ताजगी मालूम पड़ी। सुबह नदी तक गया, बिना जूते पहने ही अंदाज २ मील घूमा होऊँगा। एक आदमी 'सीताराम', कहने से चिढ़ता है, सब उसे चिढ़ाते हैं। अकेले में मैंने पूछा, भगवान् के नाम से क्यों चिढ़ है? उसने हँसकर बताया कि असल में वह चिढ़ता नहीं, बहाना करता है। इसी तरह से लोग भगवान् का नाम लेते हैं और वह सुनता है। उसने 'नाम' का महत्व बताया। गंभीर बात है, पर मेरी समझ में ठीक से नहीं आयी। वृंदावन लाल वर्मा की 'झाँसी की रानी' पढ़ रहा हूँ। काफी अच्छी किताब है। मन लग गया है।

१६ फरवरी : वजन २ मन १४ सेर यानी १४ स्टोन है। पेशाब की तकलीफ हो रही थी। शाम को पैदल देवघर जाकर साउंड लिया। कलकत्ते से आये····से

मुलाकात हुई। अंधे लड़के की स्त्री पुत्र को देखकर मन कैसा हो गया। पैसेवाले न्याय-अन्याय नहीं देखते। पैसे से सब कुछ हो सकता है। अन्धे की पत्नी सुंदर और स्वस्थ है। विवाह के समय उससे पूछा नहीं गया होगा। गलत कदम रख दे तो दोनों कुलों की वदनामी। हो सकता है, वह प्रसन्न हो, शायद मैं ही उल्टा सोचता हूँ।

१९ फरवरी : महाशिवरात्रि है। संयोग नहीं बना, मैं पशुपतिनाथ के दर्शन करता। सुबह देवघर ९ बजे गया। मंदिर में इतनी भीड़ थी कि दम घुटने लगा। एक ही दरवाजा है, उसी से आना-जाना। अँधेरा बहुत है, रोशनी का प्रबंध नहीं। भीड़ घुसती है, पंडे भी धक्कम-धक्का करते हैं। स्त्रियों के साथ मंदिर में ही अन्याय हो जाता है। गहने तक छिन जाते हैं। पता नहीं बाहर निकलने के लिये क्यों एक और दरवाजा नहीं बनाते। इससे धर्म कोई घट नहीं जायगा बल्कि लोगों का भला होगा। किसी तरह १२ बजे वैद्यनाथ जी के दर्शन कर सका। वापस घर आने पर सुना, पंडों और पुलिस में बहुत जोर लड़ाई हो गयी।

२२ फरवरी : लीग के नेशनल गार्ड ने पंजाब और सीमाप्रांत में झमेला बढ़ा रखा है। झगड़ा और अड़ंगा तो रोज होता ही है। सुना कि ब्रिटिश प्रधान मंत्री एटली ने घोषणा की है कि हिंदुस्तान को १९४८ के जून तक आजादी दे दी जायगी। वॉवेल को वापस बुला लिया जायगा और लार्ड माउंटबैटन नये वायसराय होंगे। पंजाब में प्रधानमंत्री खिज्र हयात खान ने इस्तीफा दे दिया है। अब तो लीगवाले खुलकर उत्पात करेंगे। कसरत शुरू कर दी है, फायदा है। तबीयत बहुत ठीक रहती है।

कलकत्ता

२६ फरवरी : जसीडीह में शांति थी, यहाँ वैसी नहीं। मन खास लगता नहीं। काम-काज भी विशेष नहीं है। न्यू क्रॉप मंदा है। बजट की बात बाजार में है। मुझे लगता है, फाइनेंस मिनिस्टर लियाकत अली झमेला डालेगा। व्यापारी ज्यादातर हिंदू हैं। कांग्रेस को इन्हीं से समर्थन मिलता है। फाटका गरम है।

२ मार्च : बाजार में फाटके का भाव कमती हो गया। अपने लिए तो कहना बेकार है, आदत सुधरती नहीं।

रात में सेंगर जी के पास बैठा। साहित्य और राजनीति पर बहुत बातें हुईं। मन लग गया। हिंदी परिषद् के लिये उन्हें १००) दिये। अच्छा काम है। आदमी मर जाता है, साहित्य नहीं। उससे तो दूसरे जी जाते हैं। सेंगर जी ने बताया, परिषद् ने मीरा पर खोजपूर्ण ग्रंथ निकालने की योजना बनायी है।

३ मार्च : टामस साहब से हैसियनवालों की बात हुई। मैंने रिस्क का प्रोपोजल रखा पर शायद उनको जँचा नहीं, काम कमती करने को कहा है।

पाट का भाव १६१।।।), फाटका न्यू क्रॉप १३४) है, बोरा १००।।) है। रात में उर्दू की किताब पढ़ी।

९ मार्च : कुछ सामाजिक काम करना चाहिए परंतु रुपयों का बहुत बड़ा लोभ फाटके में फँसा देता है। बड़ा बाजार के कुछ पुराने लोगों से जब मिलता हूँ तो देखता हूँ, वे मुझसे ज्यादा सुखी हैं, इज्जत वाले हैं। भले ही पैसा कम है परंतु शरीर और मन से स्वस्थ हैं। समाज के लिए इन लोगों ने कितना बड़ा काम किया।

११ मार्च : नोवाखाली वाले चंदे का काम किया। और भी रुपयों का इंतजाम करना है। बहुत बरबादी हुई और भी शायद होती रहेगी। कमजोर रहना एक पाप है। दंगे की स्थिति पंजाब, युक्तप्रांत में भी बनती लगती है। लीगी मुसलमानों का संगठन बहुत मजबूत बन रहा है। बाजार समान में स्टेडी रहा। पाट लेने के वास्ते सैदपुर फोन किया। कामकाज होने का पूरा चांस है। सब ठीक है।

१२ मार्च : हाथ में दर्द बहुत जोर हो रहा था। गरम पानी से सेंक किया। दिन में मिलों में काफी काम हुआ। हम लोगों ने ५००० मन का किया।

शाम को ५ बजे छगनमल तोलाराम की गद्दी में बीकानेर नागरिक सभा की मीटिंग हुई। पंजाब के दंगों के बारे में बातचीत हुई। बहुत बुरी हालत दिन-पर-दिन होती जा रही है। पंजाब का गवर्नर भी मुसलमानों का साइड लेता है। मैंने संगठन पर सुझाव दिया। रुपये की मदद तो चाहिए ही। फाइनल नहीं हुआ, शनिवार को फिर से मीटिंग बुलाने का तय हुआ। हिंदुओं का राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ कुछ काम कर रहा है परंतु छोटे संगठन से कितना होगा ?

१४ मार्च : वाइफ बीमार है। ७००० गाँठें इस्पहानी का काम किया, ४०० गाँठें प्रेस का बेंची। कलकत्ते में दंगे का वातावरण बन रहा है, सुनने में आया, हिंदुओं से छेड़छाड़ शुरू हो गयी है। मुसलमानों ने हिंदू मुहल्लों में जाना-आना बन्द कर दिया है, परंतु हिंदू जा रहे हैं। दमदम के मकान की दुकानें तैयार हो गयी हैं।

१५ मार्च : कई जगह चंदे के लिए फोन किये। पंजाब रिलीफ के जो सहायता के रुपये मेरे पास हैं उन्हें मैं पूछकर देना चाहता हूँ। तबीयत कल से एकदम नहीं लगती है। पंजाब जाकर कुछ काम करना चाहता हूँ।

१६ मार्च : शाम को ७।। बजे दीपक सिनेमा में '१८५७' देख रहा था। दंगे की खबर आयी। सनसनी फैल गयी। डर कर लोग घर जाने लगे। मुझे भी डर लगा परंतु मैं १० बजे वापस लौटा। मेरा खतरे का रिस्क लेना ठीक नहीं था।

१८ मार्च : मन लगता नहीं, बाहर जाना चाहता हूँ। टामस साहब बोलता है, अभी मत जाओ।

२१ मार्च : टामस साहब २१ मई को ६ महीने के लिये विलायत जा रहा है। मेरे मन में विचार आया। मुझे १५ दिन के लिये भी जाने को मना कर दिया। बजट को लेकर बहुत रकम की बात है। लियाकत अली ने टैक्स इस ढंग से लगाया है कि व्यापारी लोग परेशान हो रहे हैं। टैक्स चोरी के मामले में अंदाज १५० बड़े-

बड़े लोगों पर इन्क्वायरी बैठने की बात से कुछ चिंता भी फैली है। लीग वाले इसे समाजवादी बजट कहते हैं परंतु उनकी नीयत सिर्फ हिंदुओं को तंग करने की है, साफ मालूम पड़ता है। हाजी हबीब, इस्पहानी के आदमियों से बात करने पर पता लगता है मुसलमानों को चिंता नहीं है।

२३ मार्च : एस० एन० के गया। ५१००) चंदा पंजाब फंड में लिखाया। सब मिलाकर २००००) तक लिखाये। ३॥ बजे मास्टर तारासिंह का भाषण सुनने बालीगंज गया।

२४ मार्च : वावेल की जगह नया वायसराय लार्ड माउंटबैटन आया है। राजघराने का है।

२७ मार्च : कलकत्ते में फिर कल से दंगा शुरू हो गया। पाँच के मारे जाने की खबर है। कर्फ्यू लगा है।

२८ मार्च : पता नहीं किसलिए भाई जी न कहने योग्य बात कर रहे थे। मेरी जानकारी में मुझसे कोई गलती नहीं हुई। नुकसान नहीं किया। आज मेरा मन विद्रोह-सा कर रहा है। अपनी फिकर मैंने कभी नहीं की, अपने लिए कुछ भी नहीं किया। फाटका करता हूँ, खोता हूँ परंतु कमाई भी पूरी कर देता हूँ। बाहर जाना चाहता हूँ। स्वतंत्र नहीं हूँ। चित्त पढ़ने में लगा। मन उसी में रम गया। बीकानेर सभा का चंदा मँडाना स्थगित-सा है।

३० मार्च : रविवार है, रामनवमी। कलकत्ते में दंगा काफी बढ़ गया। रोज ८-१० आदमियों के मरने की खबर है। दिन में ११ बजे पीस मीटिंग थी। वहाँ से एक बजे घर आया, फिर बालिका विद्यालय की मीटिंग में गया। वहाँ से ५ बजे घर आया। भाई जी नाराज-से हो गये। बोले, गद्दी क्यों नहीं आया? मैंने कह दिया, काम क्या था? दिल में विचार हुआ, उनका स्वभाव कड़ा है।

१ अप्रैल : रात में कई बार फोन आये। काशीपुर में बड़े जोर का दंगा हुआ। घर के लोगों को डिस्टरबेंस पहुँचता है, मेरे पास फोन आते हैं। कैसे सहायता पहुँचाऊँ? कर्फ्यू है, जाने का साधन नहीं। पुलिस पास भी नहीं देती। पुलिस ने काशीपुर, टीटागढ़ में हिंदुओं पर बहुत जुल्म किये फिर भी हिंदुओं ने डटकर मुकाबला किया। बहुत बड़ा नुकसान हुआ, घर जल गये; लोग काफी मारे गये। बाजार ३०), २९), इस माफक पड़ा है।

२ अप्रैल : गांधी जी और वायसराय की मीटिंग चल रही है। मेरी समझ में वावेल लीग का पक्ष लेने लगा था। बजट के मामले से यह बात साफ है। दंगे-हंगामे की शिकायत पर भी कोई कड़ा एक्शन नहीं लेता। लार्ड माउंटबैटन की नीयत ठीक लगती है। पुरानी डायरियाँ देखता रहा। समय कैसे बीत गया। परमात्मा ने बहुत कुछ करा दिया : मीटिंग में लोग मेरी तारीफ करते हैं। मैं जानता हूँ, पैसे की तारीफ है। मुझे

अपने लिये वहुत दुख है, कुछ भी नहीं वन सका। उपाय क्या? लिखा कर लाया हूँ।

५ अप्रैल : वाइफ की तवीयत ठीक नहीं है। खून गिरता है। लेडी डॉक्टर कहती है, वच्चा है। लाला जी के साथ वाजार गया। २५० गाँठें ३५।।=) में वेंचीं। भाव ३६) विक कर ३५।) रहा। २ वजे से ६।। वजे तक चंदे के लिये घूमता रहा। प्रायः ४०००) मंडे। सव मिलाकर आज ८०००) तथा पूरे ५४०००) हो गये हैं। शायद ७०-७५ हजार हो जायेंगे। मन को कुछ शांति है।

६ अप्रैल : वाइफ के खून गिरना वंद नहीं हुआ। रात का जगना, ऊपर से गरमी। सवेरे से ३ वजे दोपहर तक वोनफील्ड लेन में दवा के लिए चक्कर लगाता रहा। ४ वजे से ८ वजे तक डॉक्टर और नर्स के था। परमात्मा ठीक कर दे।
फाटका ३५।।), ३५) रहा। चंदे का काम ज्यादा नहीं कर सका, सिर्फ २१००) लिखे गये।

७ अप्रैल : रात को जागता रहा। उर्दू तथा अंग्रेजी दोनों कितावें पढ़ीं। वाइफ के ढाई महीने का नष्ट हो गया। नर्स ने दिखाया तीन इंच लम्वा एक इंच चौड़ा मांस का एक लाल पिंड। वाइफ के कमजोरी वहुत आ गयी। नींद तो आ गयी है। परमात्मा का खेल समझ में नहीं आता। जीव को ढाई महीने का कितना कष्ट रहा होगा, वाइफ को अलग भोगना पड़ा। वाजार वंद था। दिन में कई जगह चंदेवालों के गया। सत्यनारायण कसौली जायगा।

१० अप्रैल : वाइफ को रातभर तेज वुखार रहा। काफी कमजोरी है। दो दिनों से दंगा वढ़ गया है। दिन-रात कर्फ्यू है। आना-जाना वंद। घर में ताश खेला, पढ़ने की कोशिश की। मन नहीं लगता। वीमारियाँ फैल रही हैं। सड़कें गंदी पड़ी हैं। तुलापट्टी की तरफ हैजा फैला है। फाटका ३३) रहा।

११ अप्रैल : ऑफिस गया, १०,००० मन विरला मिल का काम किया। मन तेजी में है। नये काम होते ही रुपया हो जायगा।

१४ अप्रैल : ऑफिस गया, वाइफ की तवीयत सुधार पर है। दंगे की हालत भी कुछ सुधरी है परंतु भरोसा नहीं। शाम को ५ वजे सिखों के स्कूल गया। मास्टर स्वर्णसिंह को पापड़ और २५०००) के चेक दिये, वड़े राजी हुए। अच्छे काम में रुपया लगेगा, मन में संतोष है।

२० अप्रैल : सुवह १० से १२ वजे तक चंदे वालों के साथ गया। २०००) मंडा। कुल ८००००) हो गये हैं और २००००) करने हैं।

१ मई : चंदे के कुल ८५७००) हो गये हैं, १४३००) और घटते हैं। चेष्टा चालू रखनी होगी। हिसाव मिलाया, देना-लेना मिटाकर मेरे पास १००००) वच जायेंगे। आगे

पर फाटका करने की सौगंध। मेरा ध्यान अब और तेज नहीं है। बाजार ३९।) रहा। शनिवार को किसनगंज जाने का विचार है।

५ मई : रुपये मिल गये हैं, चित्त में एक रकम शांति-सी है। ऑफिस में कामकाज नहीं था। पढ़ाई एकदम बंद है, कसरत भी नहीं होती। मन में वासना उठती है, उधर बिलकुल इच्छा नहीं होती थी। सब मन का फेर है। इसे रोकना ही ठीक रहता है। सुबह गंगा जी जाकर तेल मालिश कराया। पाट १३७) था।

१३ मई : शाम को ५।। बजे सोदपुर गांधी जी की सभा में गया। ७।। बजे तक था। २१०) दिये।

२८ मई : हिंदुस्तान के बँटवारे की बात एकरकम तय है। नये वायसराय लार्ड माउंटबैटन को पंडित नेहरू और सरदार पटेल जी की स्वीकृति मिली है। उपाय भी क्या? लीगवाले काम चलने देते नहीं। भीतर अड़ंगा, बाहर दंगा, रोज की बात हो गयी है। परंतु गांधी जी और सीमांत गांधी बँटवारे की बात से खुश नहीं हैं। शाम को लाला जी के साथ धरमतल्ला घूमने गया। टेंशन था।

रेल-दिल्ली

२६ मई : कल रात ट्रेन में भीड़ बहुत थी। जगह मिल गयी। सो गया। सुबह ६।। बजे मुगलसराय में नींद खुली। ११ बजे कानपुर पहुँचा। गरमी बहुत थी, भीड़ भी। डब्बे में २-३ स्त्रियाँ थीं, देखने में सुंदर और सभ्य। सब समय इनके चेहरे पर मुस्कान। कौन इनकी तरफ किस निगाह से देखता है, इसकी परवाह नहीं। मेरा मन इन्हें देखकर अपने में अभाव-सा महसूस करने लगा। मनुष्य गरीब होता हुआ भी आराम से रह सकता है। रुपया ही सुख का साधन नहीं है। मन बहुत बड़ी बात है। रात में ८ बजे दिल्ली पहुँचा। नन्दू बसंती को लेकर बाजार गया। दूध पिया। १० बजे स्टेशन लौटा। ११ बजे गाड़ी छूटी।

कसौली

२७ मई : सुबह ६ बजे कालका पहुँचे। ८ बजे मोटर करके ९।। बजे कसौली पहुँचे। कांता इधर ही है। कमजोर-सा मालूम देता है। ४ बजे बिरजू से मिला। हेल्थ तो अच्छा मालूम देता है। वजन भी २ मन परंतु बीमारी अभी है। रात में सैनिटोरियम से वाइफ के साथ बाजार आया। उसे थकावट है। काफी आदमी यहाँ आये हुए हैं, पानी की तकलीफ है।

२८ मई : 'जर्नी टू द ईस्ट' पढ़ता रहा, नींद आ गयी। मेरा मन अब हिंदुस्तान के बाहर जाने के लिये बेचैन हो उठता है। घूमना भी एक अध्ययन है, ज्ञान बढ़ता है। माँ जी ने कहा कांता को भी बीमारी का शक है। कुछ चिंता हो गयी। ठंढ मामूली है। मच्छरों का उपद्रव बहुत है।

१ जून : पहाड़ी नौकर ने चोरी कर ली। डाँट-फटकार कर उसे छोड़ दिया। अभाव से स्वभाव विगड़ जाता है। लोभ मुझ में भी है, सौगंध लेता हूँ पर फाटका करना नहीं छोड़ता। रुपये का अभाव महसूस करता हूँ। मन पर काबू नहीं रख सकता। नौकर की समस्या रहेगी। हम खुद काम कर नहीं सकते फिर उपाय क्या? कांता को डॉक्टर ने विश्राम करने के लिए कहा है।

३ जून : दिन में 'साइकोलोजी ऑफ सेक्स' पढ़ता रहा। 'सेक्स' के प्रति भारतीय और पाश्चात्य दृष्टिकोण में वहुत अंतर है। काम को हमने जिस रूप में देखा है, युरोपवाले शायद ही समझ सकें। 'साइकोलोजी ऑफ सेक्स' मनुष्य के मन की विकारजनित चेष्टाओं का विश्लेषण करता-सा लगा। शायद इससे ऊपर उठना उनके लिए संभव नहीं। रेडियो सुना। वंगाल का पार्टिशन होगा। हिंदुओं के हक में यह अच्छा हुआ। देश का वँटवारा जव मुस्लिम-वहुल संख्या के नाम पर हो रहा है तो प्रांत का होना भी उचित है। जितना वच जाय, वही ठीक। मगर भारत का भूगोल कुछ ऐसा है कि संस्कृति की एक-सी धारा यहाँ सदैव वहती रही है। कुछ समय और मिल जाता, अंग्रेज नहीं आते तो शायद शक, हूण, गुर्जरों, यवनों की तरह मुसलमान भी भारत की सांस्कृतिक गंगा में मिल जाते। शिमला जाने के लिये मोटर रिजर्व करायी।

शिमला

६ जून : लाइब्रेरी गया, अखवार पढ़े। विश्वमित्र में भाव १३४) देखा। शिमला में वाइफ का मन लग गया है।

९ जून : शिमला में साढ़े चार दिन रहे। खूव घूमे। नन्दू कमजोर है। ज्यादा चल नहीं सकता। उसे घोड़े पर और वाइफ को रिक्शे पर घुमाया। जाखू गये, स्केटिंग वगैरह भी देखी। इस खेल में खतरा है। यहाँ कुल खर्च ४९०) हुए जिनमें ३००) की तो चीजें थीं। वाकी भोजन, भाड़ा आदि में लगा। वाइफ को खूव जँचा, नन्दू को भी। शिमला में कसौली से ज्यादा ठंड है।

दिल्ली

१६ जून : सुवह स्टेशन पहुँचे। यात्रा में कोई खास तकलीफ नहीं हुई। ४) रोज पर होटल में एक कमरा मिला। अच्छी जगह है, वाजार के वीच। भोजन वगैरह कर ११ वजे वाइफ के साथ घूमने निकले। ट्राम वस में शहर का पुराना हिस्सा देखा। सँकरी गलियाँ, सफाई कम। सैकड़ों वर्ष का इतिहास इन गलियों में करवटें ले रहा है। नादिरशाह, अहमद शाह की खून-खरावी में क्या हालत हुई होगी। वाइफ से वताया तो उसे कुछ अच्छा नहीं लगा। ताँगे से विड़ला मंदिर गये। वाइफ थक गयी थी। अच्छी जगह है। वहीं कुछ देर आराम किया। कुतुव दिखाया। मेहरौली गये। उसे वताया कि यहाँ सूर्य का मंदिर था। इसे तोड़कर मस्जिद वनायी गयी। शिलालिपि पढ़कर सुनायी। भीड़ नहीं थी। वाइफ को वहुत अच्छा लगा। होटल लौटे, हम थक

गये थे। मैंने तेल मालिश करायी। उसका मन प्रसन्न था। मैंने उसकी भी मालिश कर देने के लिए कहा तो नट गयी। कहने लगी, थकावट तो मिटेगी पर पाप नहीं मिटेगा। मन में विचार आता है कि इनके पुराने संस्कार हिलाये नहीं जा सकते। पता नहीं अच्छे हैं या बुरे। दिल्ली में कुल २३) खर्च हुए पर मौज बहुत आयी।

१७ जून : सुबह नन्दू, भगवती को स्टेशन जाकर गाड़ी में ठीक से बैठा दिया। ९॥ बजे पांडवों का किला देखने गये। इसे 'पुराना किला' भी कहते हैं। शायद इसीलिए पांडवों का नाम जुड़ गया है। लगता है, प्राचीन हिंदू राजा का होगा। गरमी बहुत थी। हुमायूँ का मकबरा देखने गया। मुगल इमारतों में शायद यह अपने नये ढंग का पहला है। बाद में जो बनाये गये इससे प्रभावित जान पड़ते हैं। चश्मा ठीक कराने बाज़ार गया। १६०) चोरी हो गये। काफी चिंता-सी हो रही है।

सरदार शहर

२२ जून : पाट का बाजार गरम सुना। यहाँ मन लग गया है। वाइफ का भी। लाइब्रेरी से किताबें ले आता हूँ पर जल्दी खत्म नहीं कर पाता। बहुत लोग मिलने आते हैं। गोशाला भी देखी। गरमी ज्यादा है।

सुजानगढ़-सालासर

२८ जून : ९॥ बजे सुबह सुजानगढ़ पहुँचा। स्टेशन पर मूलचंद जी सेठिया दूध लेकर आये थे। कंदोई भी थे। २५) में मोटर किराये पर ली, तेल मूलचंद जी से लिया। १२ बजे सालासर पहुंचे। गरमी बहुत थी। पंडे अच्छे नहीं हैं। लोभी हैं ही। ५१) भोग में लगे। पंडे अशिक्षित तो होते हैं, फिर यात्रियों से ज्यादा-से-ज्यादा लेने की भी आदत बन गयी है। इसे समझते हुए बहस में नहीं पड़ना था। मन में बात आती है कि तीर्थों में शिक्षित पंडों का रखा जाना जरूरी है, नहीं तो आगे चलकर लोगों में श्रद्धा नहीं रह जायगी। समय बदल रहा है।

मथुरा-वृंदावन

३० जून : सुबह ५ बजे उठा। जमुना जी में स्नान किया। मन प्रसन्न हो गया। वृंदावन में मंदिरों में दर्शन करके बिहारी जी के मंदिर गया। वृंदाबन अच्छा लगा। मथुरा की अपेक्षा शांति है, गंदगी भी कम। वाइफ का मन काफी लग गया, मेरा भी। कृष्ण की स्मृतियों से जुड़ा होने के कारण भक्तों का जमाव यहाँ रहता है। भजन-कीर्तन चला ही करते हैं। ६॥ बजे जमुनाजी में स्नान किया। बड़ा आनंद आया। कछुए कम थे। ७॥ बजे तक रेत पर पड़े रहे। शाम की ठंडी हवा, ठंडी रेत, तबीयत बहुत प्रसन्न हो गयी। वाइफ मंदिरों में दर्शन करने चली गयी। मैं इधर-उधर घूमता रहा।

२ जुलाई : सुबह जमुना में स्नान किया। बहते पानी में स्नान करना शरीर और मन के लिये अच्छा है। शायद, इसीलिये हमारी संस्कृति में इसको धार्मिक रूप दिया गया है। घाट पर काफी लोग थे। बच्चे, बूढ़े, स्त्रियाँ सभी। मन में एक तरह की स्फूर्ति आ जाती है। ९ बजे बस में बैठकर ११ बजे आगरा आ गये। धर्मशाला में काफी गरमी थी। परेशानी हुई। खाने की तकलीफ भी थी। खा-पीकर बाजार गए। शहर बड़ा है, मगर सफाई नहीं। वहाँ से पैदल ही किले की तरफ से होते हुए ताजमहल गये। सफेद पत्थरों का यह मकबरा हरियाली के बीच सुंदर लगता है। धन, वैभव, अधिकार सब कुछ काल के गाल में समा जाता है। शाहजहाँ और उसकी बेगम की असली कब्रें देखीं, पास-पास हैं। अपनी बेगम के प्रति बादशाह के अमर प्रेम की भावना ताज में है। यह बहुत कुछ हुमायूँ के मकबरे के ढंग पर है। ताज के ऊपर का कलश हिंदू प्रभाव रखता है। एक घने पेड़ की छाया में कुछ देर तक सो गया। यहाँ के सदर बाजार फिरती आकर किला देखा। दिल्ली के किले से यह मुझे ज्यादा अच्छा लगा। मालूम नहीं क्यों? आठ आने पैसे गाइड को दिये। उसने अच्छी तरह सब बता दिया। जहाँगीरी महल, दीवाने आम, दीवाने खास। बादशाह का महल, जोधाबाई का महल और बेगमों के महल, हरम देखे। शान-शौकत की क्या बात है। मगर बेगमों के कमरे बहुत छोटे-छोटे अँधेरे-से लगे। आज के जमाने में तो साधारण घरों की औरतें ऐसे में रहना शायद ही पसंद करें, यह किला अकबर का बनवाया हुआ बताते हैं, फतेहपुर सीकरी में पानी के अभाव के कारण अकबर ने इस जगह को चुना और किसी हिंदू राजा के पुराने किले को नया रूप दिया। पता नहीं, बात कहाँ तक सही है मगर मेहराब और उस पर किये गये काम देखकर कुछ तो सचाई मालूम देती है। गाइड को दो आने और भी दे दिये। वह बहुत खुश हुआ। यहाँ हिंदू और मुसलमान गाइड अलग-अलग ढंग से इतिहास के बारे में यात्रियों को बताते हैं। धर्मशाला वापस आ गये। दुर्गा को बुखार जोरों से चढ़ गया। मुझे चिंता हुई। रात में बाजार नहीं जा सके। गरम उकाली करके दी। उसे कुछ शांति मिली। उसके पास ही नीचे गरमी में सोया। उसका भी मन उदास हो गया। रात में काफी पसीना आया, उसका बुखार उतर गया। थोड़ी नींद भी आयी।

३ जुलाई : सुबह ५॥ बजे उठा। दुर्गा की तबीयत कुछ ठीक थी। परंतु कमजोरी थी। मैं बाजार गया। १० बजे लौटा, उधर ही कुछ खा लिया। दयालबाग देखा। राधास्वामी पंथ वालों का मंदिर बन रहा है। कहते हैं, ताजमहल से भी सुंदर बनेगा। पत्थरों पर काम बहुत ही सुंदर हो रहा है। मंदिर के चारों ओर ताज की तरह लंबी-चौड़ी हरियाली रहती तो सुंदरता बढ़ती। १०॥ बजे ईदगाह स्टेशन पर पहुँचे। गरमी बहुत थी। गाड़ी एक बजे आयी, दो घंटे लेट थी। वाइफ के दस्त आ रहे थे, तूफान मेल पकड़ी। वाइफ को इंटर क्लास के जनाना डिब्बे में बैठाया और मैं सेकेंड क्लास

में बैठा। गाड़ी में जगह मिल गयी। नींद आ गयी। वाइफ को जरूर तकलीफ हुई। मैंने महसूस किया कि जनाना डिब्बे में बैठाकर उलटे भूल हुई। तकलीफ ज्यादा हुई। यह ठीक नहीं रहा।

कलकत्ता

१० जुलाई : सुबह लाला जी के साथ मैदान गया। सब कोई मिले। अंग्रेज तो जा रहे हैं। तरह-तरह की बातें होती रहीं। कुछ लोगों ने कहा कि यह सब ब्रिटिश का दिखावा है, चाल है। यहाँ झगड़ा मचेगा, वे लोग फिर आ जायेंगे। मुझे यह फालतू बात लगी। हिंदुस्तान का बँटवारा मुझे ठीक नहीं लगता लेकिन उपाय भी क्या। ७५० गाँठ फाटका का १४३) में लिया। बाजार समान में स्टेडी है।

२० जुलाई : सुबह ५ बजे उठा। पैरों में थोड़ा दर्द था। बारिश काफी हो रही थी। फाटके ने मुझे मन और शरीर से बरबाद कर दिया है। अगर मेरा फाटका बंद न हुआ तो उम्र कम-से-कम १० वर्ष तो कम हो ही जायगी। इधर सेक्स लाइफ प्रायः खत्म-सी है। फाटके की वजह से हर समय एक चिंता सी रहती है जो दिमाग पर असर करती है। रात-दिन की फिक्र से मन टूट जाता है, तो शरीर क्या साथ दे? बहुत बुरी बात है। मुझे डर लगता है कि मानसिक चिंता से शरीर में और भी खराबियाँ न आ जायें। मगर लोभ पर काबू नहीं पाता। भोग के योग्य न रहना भी क्या जिंदगी है। पढ़ता हूँ तो मन फाटके पर उड़ जाता है, सोता हूँ तो भाव, सौदा की बातें। पता नहीं, परमात्मा यह भूत कब उतारेगा। बहुत झूठ बोलना पड़ता है, घर वालों और बाहर वालों से।

५ अगस्त : तबीयत ठीक नहीं रहती। डॉक्टर अलग-अलग बात कहते हैं। कोई खास तकलीफ नहीं बताते। मेरी समझ में फाटके की चिंता से शरीर बिगड़ता जाता है। पेट खराब रहता है, पैरों में दर्द और सेक्स में रुचि नहीं होती। ऑफिस में कामकाज एक मन का भी नहीं। बाजार ३९=) तक बिका। काजड़िया की ५०० गाँठें ४०) में बेचीं। लूज पाट की ७५० गाँठें बेचीं। नाजिमुद्दीन लीडर चुना गया। सब एक-से ही हैं। मगर क्या फर्क पड़ता है। अंग्रेज जा रहे हैं। ये लोग भी अपने बनाये देश पाकिस्तान में चले जायेंगे।

१० अगस्त : सुबह ६ बजे सोदपुर आश्रम में महात्मा जी के दर्शन किये। उनके चेहरे पर दुख की छाया-सी है। थके-से लगते हैं। मेरा पेट दुखता है, लोग बोलते हैं कमजोर हो रहा हूँ। पाट का बाजार मंदा है। लूज जूट २७॥)-३०॥)।

१४ अगस्त : सुबह ६ बजे मैदान गया। ८ बजे गद्दी आया और ९॥ बजे ऑफिस। बाजार समान, फाटका १३७॥)। तबीयत और दिनों से ठीक है। शाम को ५ बजे घर आया। २००० मन पाट लाला जी का लिया २५॥) २५।) में। फाटका १०,००० गाँठ का हम लोगों के पोते है। शाम को ७ बजे रोशनी देखने निकला। बहुत जबर्दस्त

सजावट हुई है। हिंदू-मुसलमानों में मेल हो गया। वहुत महँगा मेल है, देश का टुकड़ा हो गया। यह कितने दिनों तक रहेगा, मालूम नहीं। मुसलमान अपने संस्कार के कारण गैर-मुस्लिम से झगड़ेंगे। इतिहास यही वताता है। कमजोर पाने पर चढ़ वैठेंगे। मगर अव क्या? परमात्मा जाने, आगे क्या होगा। जकड़िया स्ट्रीट, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, मछुआ, वेलेजली वगैरह मुसलमानी मुहल्लों में गया। खूव सजावट थी, इत्र, सेंट लगा रहे थे, हिन्दुओं को। हिंदू मुहल्लों में भी वड़ी जोरदार सजावट हुई। तिरंगे झंडे सभी मकानों पर, सड़कों पर। मिठाइयाँ भी वाँटी गयीं। रात में ११ वजे लौटा, थक गया था।

१५ अगस्त : ऑफिस वंद था। रात में रेडियो सुना। १२ वजे के वाद १५ अगस्त की शुरुआत के साथ हिंदुस्तान आजाद हुआ। पंडित जी, राजेंद्र वावू और सरदार पटेल का भाषण हुआ। पंडित जी का भाषण वहुत ही भावनापूर्ण था, सरदार पटेल का तथ्यपूर्ण ठोस। राजेंद्रवावू ने महात्मा जी की प्रशंसा की और आश्वासन दिया कि स्वतंत्र भारत में गरीवी, भुखमरी, शोषण और ऊँच-नीच के भेद-भाव मिटाने के लिये हमलोग कोशिश करेंगे। मगर उन्होंने हिंदुस्तान के टुकड़े होने पर खेद भी प्रकट किया। लार्ड माउंटवैटन को गवर्नर जनरल रहने दिया गया। पंडित जी प्रधान मंत्री वने। राजेंद्र वावू संविधान परिषद् के प्रेसिडेंट। दिल्ली में लाल किले पर हिंदुस्तान का तिरंगा झंडा पंडित जी ने फहराया। वहुत वड़ी भीड़ थी। रेडियो से सारी वातें वतायी जा रही थीं। सुभाष वावू का दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा फहराने का सपना पूरा हुआ। आज वह रहते तो कितनी खुशी होती। रेडियो सुनते समय भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, वीर सावरकर, खुदीराम वोस की तपस्या और त्याग की वातें याद आ गयीं। वस में वैठकर विभिन्न मुहल्लों में घूमा। वच्चे तिरंगा झंडा लिये 'जयहिंद' कह रहे थे। सभी जगह तिरंगे की धूम। रात में रंग-विरंगी रोशनी में कलकत्ता वहुत सुंदर लग रहा था। आज का दिन याद रखने का है।

जसीडीह

१७ अगस्त : सुवह वाजार में चीज-वस्तु लाने गया। हवड़ा स्टेशन, फेयरली प्लेस गया। २००) टिकटों के लगेंगे। तीन फर्स्टक्लास, वाकी सव इंटर क्लास। १॥ वजे रेल में वैठे, कोई तकलीफ नहीं थी। ८ वजे जसीडीह पहुँचे। थोड़ी वर्षा हो चुकी थी। ज्वालाप्रसाद जी, डेडराज जी, ओंकारमल जी भरतिया, रामकिशन जी धानुका, रामदेव जी, घनश्याम जी पोद्दार, नन्दलाल जी आदि १३ आदमी थे। मेरा विचार रविवार तक रहने का है।

२२ अगस्त : मन काफी लगा। जसीडीह की हवा मेरे माफिक आती है। जुकाम और वुखार ने कुछ गड़वड़ी कर दी। सुवह कमर में कुछ दर्द-सा था। रात में फाटका १३९॥) आया। सुवह वैजू वावू आये। पाट ३०), हेसियन ६२॥)। हेसियन में ५५०००) घाटा लग गया।

ढाका, नारायणगंज

३१ अगस्त : सुवह ६ वजे एयरोड्रोम पहुँचा। जहाज में वैठा। नीचे का दृश्य वहुत सुहावना लगा। हिंदुस्तान और पाकिस्तान की सीमा पहचानने की कोशिश की, मगर क्या पता चलता? वरती एक है, देश वँट गया। एक घंटे में ढाका पहुँच गया। दिन में काम-काज सलटाने में रहा। शाम को रिक्शा में वैठकर शहर खूव घूमा। पाकिस्तान वन जाने से यहाँ के मुसलमान खुश हैं। वहुत से हिंदू तो पहले ही भाग गये। वचे-खुचे भी रह नहीं पायेंगे। अभी पूरी शांति है। व्यवहार भी ठीक है। पूर्वी पाकिस्तान में वंगाली हिंदुओं के प्रति खास असंतोष है। परंतु मारवाड़ी या गैर-वंगालियों के प्रति कोई रोष नहीं दिखाई देता। ढाका का रमना मैदान अच्छा है। शहर वड़ा है। वहुत-से मंदिर देखे। शिव और काली के ज्यादा हैं, कुछ कृष्ण के भी हैं। आवो-हवा अच्छी है। मन लग जाता है। फोन फ्री है। कई गोदामों में गया। आमदनी वहुत जोर है। हम लोगों का गोदाम वहुत छोटा-सा है। इससे कम काम हो पायेगा। यहाँ व्यापार जोरों से चल रहा है।

१ सितंबर : वहुत सवेरे नदी में स्नान किया। तेज धारा थी। अच्छा लगा। गोदामों में गया। भूख जोर की लगी। खूव खाना खाया। २ वजे टेक्सी में बैठकर नारायणगंज से ढाका आ गया। ज्यादा दूरी नहीं है। सड़क भी अच्छी है। ४ बजे हवाई जहाज उड़ा। ५ वजे दमदम पहुँच गया। कलकत्ता पहुँचकर रास्ते में मालूम हुआ कि दंगा जोरों में हो गया है। अभी तो पंद्रह दिन पहले हिंदू-मुसलमान गले लगे, इत्र लगाये गये, मिठाइयाँ वँटीं। भाई-भाई में वँटवारा भी हो गया। फिर झगड़ा किस वात का? पंजाव में मुसलमानों ने वचे-खुचे हिंदुओं पर अत्याचार किया था, उसकी प्रतिक्रिया में यहाँ पंजावी लोग वदला लेना चाहते थे। खिदिरपुर डक में कुछ पंजाबियों से मुसलमानों ने गाली-गलौज कर दी थी। दंगा भड़कने का यह भी एक कारण बताते हैं। ढाका की ट्रिप अच्छी रही।

कलकत्ता

३ सितंबर : मिलों में कामकाज एकदम ही नहीं। दंगा कुछ कमती हुआ है। महात्मा जी अनशन कर रहे हैं। जुलूस निकला था, शांति के लिए। इसका प्रभाव पड़ेगा। परंतु महात्मा जी कितने दिनों तक अनशन से हिंसा को रोकेंगे, समझ में नहीं आता। पाकिस्तानी भावनावाले उत्पात रोकने से रहे। महात्मा जी हिंदुओं को दवा सकते हैं परंतु मुसलमानों को कौन समझाएगा? मन मेरा खिन्न हो रहा है। सैदपुर से पाट का वहुत शिपमेंट हो रहा है।

दौलतपुर-कलकत्ता

१४ सितंबर : सुवह ५ वजे उठा। थोड़ा घूमा। स्टेशन पर थोड़े डंड किये। ७ वजे तक दौलतपुर के गोदाम देखे। ८। वजे खुलना मोटर वस में गये। ९।। वजे खाना

खाया। ११ बजे तक उस पार गोदामों में पाट देखा, भीगा था। ११।। की गाड़ी से रवाना हुआ। ६ बजे कलकत्ते पूग गया। भाई जी बोले, सैदपुर की ५०० गाँठों की प्रायरटी मिली है। मैंने भाई जी से कहा, पूर्वी पाकिस्तान में कमाई की अच्छी गुंजाइश है, मेहनत करनी होगी। रात में हजारीप्रसाद जी द्विवेदी और एक प्रोफेसर आये। हमारे यहाँ ही ठहरे हैं। मुझे ऐसे लोगों से बात करना अच्छा लगता है। समय बरबाद नहीं होता, ज्ञान बढ़ता है और मन की चिंता हट जाती है। राजनीति के प्रति इन लोगों में रुचि नहीं होती, इसीलिए पैसेवालों की तरह चिंता से घिरे नहीं होते और अच्छी बातें सोच सकते हैं।

२० सितंबर : सुबह कसरत नहीं की। बालीगंज गया, उधर से तीसी के बाड़े की मीटिंग में। ९। बजे ऑफिस। फाटका ४२।=) से ४४।।) बिक कर ४३।।।=) रहा। बाजार की टेंडेंसी स्टेडी है। ५ बजे डेडराज जी के साथ श्री सिनेमा में म्यूजिक कॉन-फ्रेंस में गये। सब शास्त्रीय संगीत का प्रोग्राम था। ठुमरी, भजन तो कुछ समझ लेता हूँ पर ख्याल नहीं के बराबर। कोशिश करता हूँ। उस्ताद लोग मुँह बहुत बनाते हैं। मेरी समझ में नहीं आता, गाने से इसका क्या मतलब, परंतु लोग वाह-वाह करते हैं। तबला के साथ किसी बाजे की होड़ मुझे अच्छी लगती है। संगीत का कुछ ज्ञान जरूर कर लेना चाहिए। परंतु इतनी फुर्सत कहाँ ? पढ़ने का समय भी इन दिनों कम मिल रहा है।

२४ सितंबर : सुबह जल्दी उठा। नारायणगंज फोन किया। कसरत नहीं की कारण कफ में खून आने लगा। खून आने से मेरे मन में उदासी आ जाती है। एक अनजान डर लगता है। डॉक्टरों को कई बार दिखाया, एक्सरे कराया कुछ भी खराबी नहीं बताते। वैद्य लोग भी तरह-तरह की बात कहते हैं। कुछ तो खराबी होगी ही। खून कहाँ से आता है ? कमजोरी आती है, बुखार भी हो जाता है। मगर जल्दी ठीक हो जाता हूँ। सब भूल जाता हूँ। हो सकता है, गले की कोई नस कमजोर है जो फट जाती है।

३ अक्तूबर : बाजार बहुत गरम है। सैदपुर का काम चल रहा है। इस तरह चलने से काफी फायदा होगा। आज भी २५ आदमी जायेंगे।

११ अक्तूबर : तबीयत ठीक नहीं, सुस्ती आ जाती है। कभी-कभी कफ में खून। कोई खास बात नहीं। यह तो हुआ ही करता है। मुझे मानसिक दुर्बलता का बड़ा भय लगता है। सारे काम बिगड़ते जाते हैं। शाम को ६ बजे गद्दी से घर गया। तेल मालिश कराया, भोजन किया। रात ८ बजे स्टेशन। कहीं भी जगह नहीं मिली। बरफ के डब्बे में बैठ गया। रात में थोड़ी-थोड़ी ठंड लगती रही।

सैदपुर

१२ अक्तूबर : सुबह ५।। बजे शांताहार पहुँचा। गाड़ी प्रायः ४ घंटा लेट थी। पार्वती-पुर १०।। बजे और सैदपुर ११ बजे पहुँचा। कामकाज यहाँ एक रकम चल रहा है।

गति धीमी है। कुली कम खटते हैं। भाव सस्ता है। दिन में दो घंटे सोया। कुछ अपच मालूम पड़ती है। बाजार भी गया। यहाँ के पाटवालों के मन में ईर्ष्या-सी है। रेल के डब्बे कम मिलते हैं। बंदोबस्त पूरा रखना होगा। आज गाड़ी लदी।

हजारीबाग

२३ अक्तूबर : सुबह नारायणगंज सैदपुर फोन की चेष्टा की। लाइन नहीं मिली। ११।। बजे कार से रवाना होकर ३ बजे बर्दवान पहुँचे। गाड़ी कुछ तकलीफ दे रही है। ६। बजे आसनसोल। रास्ते का हराभरा दृश्य मन में शांति लाता है। घूमना-फिरना इसीलिए ज़रूरी हैं। ७ बजे बराकर पहुँचे, रात १०।। बजे हजारी बाग। पहाड़ी दृश्य अच्छे थे। धनवाद के बाद से ही पहाड़ों का सिलसिला बढ़ता है। अँधेरा बढ़ता जा रहा था। हेडलाइट में सड़क के किनारे के पेड़ और उनके पीछे पहाड़, मैदान। जंगली जानवर नहीं दिखे। खरगोश, गीदड़ कहीं-कहीं दिखाई पड़े। इस तरफ गरीबी बहुत है। १०-१२ आदमियों की हमारी पार्टी में मौज था। अच्छी यात्रा रही।

कलकत्ता

२६ अक्तूबर : रात ९।। बजे कलकत्ता पहुँचे। हजारी बाग से दिन के ११ बजे चले थे। हजारीबाग स्वास्थ्यप्रद जगह है। किंतु शहर में सफाई नहीं। सीतागढ़ा पहाड़ देखा। ईसाइयों का एक बहुत बड़ा फार्म है। संथाल और अन्य गरीबों को तेजी से ईसाई बनाते हैं। स्कूल में पढ़ाते हैं। अस्पताल भी है। फार्म में काम देते हैं। पास ही में कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी की गौशाला है। इसके पास बहुत बड़ी जमीन है। परंतु शायद प्रबंध ठीक नहीं। मिशन की डेयरी और इनकी तुलना नहीं हो सकती, खेती-बागवानी की भी नहीं। हमारे में भावना है, पर हम काम नहीं करते। लोगों ने बताया मेंबर लोग आपस में झगड़ा करते हैं। इसीलिए कुछ भी काम ठीक से नहीं होता। यात्रा बहुत अच्छी रही। बर्दवान, रानीगंज, आसनसोल, धनवाद, इसूरी में काफी नये-नये लोगों से परिचय हुआ। इधर मारवाड़ी काफी बस गये हैं। कुल १००), १२५) खर्च हुए। साथियों को काफी इंटरेस्ट आया।

२८ अक्तूबर : बहुत बुरी आदत मुझ में है। लोग रुपये माँगते हैं, मैं दे देता हूँ। फिर लौटाने में ढिलाई करते हैं। रुपये फँस जाते हैं। भाई जी और घरवालों से छुपाकर बहुत रुपये इस तरह दे दिये। मन खराब हो जाता है। पता चलने पर बात भी सुननी पड़ती है। फाटके की तरह यह भी मेरी बहुत कमजोरी है, पर उपाय क्या ?

३१ अक्तूबर : ५००० मन का काम किया बंगाल मिल में। फिर १०,००० मन का काम किया लडलो में। दिन में फाटका १५९) रहा। चित्त खराब हो गया। सैदपुर का फोन था। ११ गाड़ी मिली। बाजार गरम हो गया है। पड़ता पड़ रहा है। कुछ और भी ट्रबल तो है ही। सुबह अखबार पढ़ा। कश्मीर की खबरें उसी तरह हैं। यह झगड़ा

लग ही गया। पाकिस्तानी कभी चैन से रहेंगे नहीं और हिंदुस्तान को रहने भी नहीं देंगे। बाजार ५८॥) खुलकर ५६॥) बिका ५६।) रहा।

९ नवंबर : लाला जी के साथ सुरेश बनर्जी, लेबर मिनिस्टर के यहाँ गया। परंतु वे काम के लिए नट गये। जे० पी० आये हैं। काफी बातचीत हुई। उनके विचारों में पहले से फर्क आ रहा है, ऐसा लगता है। स्वतंत्र होने पर भी समाजवाद के लिए पंडितजी कुछ भी नहीं कर रहे हैं, इसलिए जे० पी० का कहना है आजादी तो अमीरों की है, गरीबों के लिए नहीं। मुझसे प्रसन्न हैं, काम करने को कहते हैं। परंतु मैं किस काम का हूँ सिवाय रुपया देने के। ११ बजे जे० पी० के भाषण में गया। काफी भीड़ थी।

११ नवंबर : परमात्मा की सौगंध करता हूँ, नवंबर से बगैर भाईजी को पूछे फाटका नहीं करूँगा।

१२ नवंबर : ९॥ बजे ऑफिस गया। ११ बजे तक था। टामस साहब से काफी बातचीत हुई। रात में दीवाली देखने निकला। रोशनी की सजावट थी। तुलापट्टी, सूतापट्टी, पूरा बड़ाबाजार सजा था। अमीरों का त्योहार है, गरीब तो रोशनी देखकर संतोष कर लेते हैं। परंतु होली सबका उत्सव है, बहुत रँगीला। अन्नकूट का प्रसाद लेने मंदिर में ही जीमा। मन अब शांत रहता है, चिंता नहीं के माफिक है।

१४ नवंबर : पाकिस्तान ने ३) मन ड्यूटी पाट पर लगा दिया है। हम लोगों के विशेष घाटा-नफा नहीं। पेमेंट होने की बात नहीं है। कामकाज एकदम बंद था। ड्यूटी बायर्स पर होगी या क्या होगा पता नहीं।

१६ नवंबर : ड्यूटी बायर्स पर कर दी गयी है। तबीयत ठीक नहीं है। ६१) में ५००० मन बेची। बाड़े की मीटिंग में गया था। ५ बजे तक जोरों से बुखार चढ़ आया। गरम पानी में नीबू पिया। जाड़ा भी लगा।

१८ नवंबर : कमजोरी एक दिन में ही काफी आ गयी है। मोहनलाल जी, मनसुखराय जी, नेवर जी वगैरह सब का काम सलटा दिया। ६४॥) फाटका रहा। मैंने १००० गाँठें ६२) में बेची। प्रतिज्ञा कुछ टूटी कुछ नहीं, तो भी नहीं करनी चाहिए। खैर काम सलटने से बाजार में मेरी काफी इज्जत हुई। शाम को एक्सचेंज में गया। भाई जी को सैदपुर फोन किया। रात में काफी देर तक फोन आते रहे। माथा दुखता था।

१९ नवंबर : सुबह बुखार नहीं था पर कमजोरी है। ७ बजे जूट प्रेस गया। ९॥ बजे लौटा। जीम कर स्टेशन गया। १०॥। बजे बिरजू तथा बच्चे आ गये। पौने दो वर्ष बाद। जी बड़ा खुश हुआ। उन्हें घर पहुँचा कर ऑफिस गया। कामकाज एकदम नहीं। फाटका १६११) रहा। मैंने २७५० गाँठें १६३=) में बेच दीं। ड्यूटी शायद शिपर लोग देंगे। विलायत १५०० गाँठ बिककर फरवरी की आयी। १८२), १७८) में। रात में कई आदमी मिलने आये। ३ बजे सेलर्स मीटिंग में गया था।

९ दिसंबर : हरचंद राय जी, वाइफ जसीडीह हैं। रतनी, बसंती भी। उनका कोई पत्र नहीं आया। कृष्णलाल जी पोद्दार मैदान में मिले। उनका लड़का वेशी बीमार है। ड्यूटी घटने की बिड़ला के यहाँ से खबर आयी।

१० दिसंबर : अखबार पढ़ा। पाकिस्तान-इंडिया में समझौता हो गया है। कश्मीर का मामला मेरी समझ में नहीं आता। हम लोगों को कड़ा रुख रखना चाहिए, सरदार पटेल वाला। शेयर बाजार बहुत गरम हो गया। १७५० गाँठें फाटका ६६।।।) में लीं। भाव ६५।।।) रहा। मन खराब हो गया है। टामस साहब से बातचीत हुई। सैदपुर में ५) गाँठ की पड़ती ऊँची हो गयी है। भाव २१।।।) का है। रात में ९ बजे अंग्रेजी फिल्म 'फ्रेंच फॉर लव' देखने गया। बहुत अच्छा लगा। पूरी तौर पर समझ में नहीं आती। उन लोगों के बोलने के ढंग में भी फरक है।

१५ दिसंबर : १०।। बजे हवड़ा पहुँचा। वहाँ से गद्दी आ गया। १२-२५ बजे नेहरू जी बंगाल चेंबर में आये। देश के प्रति व्यापारियों को जिम्मेदारी समझने के लिए कहा। हम लोगों में अभी व्यापारी तो पहले रुपये बनाने की बात सोचेगा। २।। बजे मैदान में नेहरू जी की मीटिंग थी। बहुत बड़ी थी परंतु लाउड स्पीकर फेल कर गये। मीटिंग जमी नहीं। सैदपुर का काम ठीक चल रहा है। पड़ता उतना नहीं है। नारायणगंज पाट जा रहा है। नन्दू सुस्त मालूम देता है। परीक्षा हो रही है।

२१ दिसंबर : बंगाल एशियाटिक सोसाइटी में महादेवी वर्मा का भाषण सुना। बहुत विदुषी हैं, कविता तो अच्छी करती ही हैं। मेरे मन में आता है, मैं कुछ भी लिखूं-कौन मुझे याद रखेगा? डायरी के आजवाले पन्ने पर लिखा है 'विदुष पुजै सर्वत्र' बात सही है। मुझे कुछ व्यापारी लोग जानते होंगे परंतु विद्वान् को तो गाँव-गाँव के बच्चे भी जानते हैं, इज्जत करते हैं। मुझे थोड़ा समय पढ़ने-लिखने में देना चाहिए।

२२ दिसंबर : बैजनाथ जी केडिया का बनारस में शरीर शांत हो गया। अच्छे कांग्रेसी थे। हिंदी में प्रेमचंद को उर्दू से लाये। बच्चों के लिये बहुत अच्छी-अच्छी किताबें लिखीं। बहुत ही उदार थे, समाज के लिये भी इन्होंने बहुत किया। भगवान् की मर्जी।

२६ दिसंबर : सुबह ६ बजे सैदपुर पहुँचा। ९।। बजे सिलीगुड़ी। वहाँ से माल लॉरी में बैठकर किशनगंज प्राय: १२ बजे पहुँचा। बातचीत की। स्टेशन मास्टर से मिला। उसने कहा, प्रायरिटी कैंसिल हो गयी।

कलकत्ता

२७ दिसंबर : सुबह ७।। बजे पारबती पुर में आसाम मेल के इंटर क्लास में बैठा। रात नींद नहीं आयी। बहुत सरदी थी। ५ घंटे खुले स्टेशन पर सोया रहा।

३१ दिसंबर . आज वर्ष का आखिरी दिन है। कमाई हुई पर जिंदगी के एक वर्ष की गँवाई। सैदपुर का काम चल रहा है। आजकल हम लोगों को अच्छा फायदा है।

१९४८

कलकत्ता

१ जनवरी : सुबह ४ बजे उठा। आज से कसरत शुरू कर दी। 'चिकित्सा चंद्रोदय' पढ़ता रहा। नयी बातें जान सका। हमारी जड़ी-बूटियों में काफी प्रभाव है। सस्ती और जल्दी असर करने वाली। ६। बजे मैदान गया। ७॥ बजे गद्दी। १२ बजे न्यू मार्केट। चीजें घर ले आया फिर टामस, एंड्रयू, एंडरसन और दूसरे साहबों के घर गया। नव वर्ष की बधाई दी। ७००) खर्च हुए। परमात्मा यह साल ठीक रखें।

६ जनवरी : कमाई होती है परंतु फाटके में जब खोता हूँ तो बर्दाश्त नहीं होता। फाटका में कमाई खोने के लिये मन से तैयार रहना चाहिए परन्तु मुझे तो खोने पर बहुत अफसोस होता है। मुझे फाटका ठीक से आता नहीं परंतु लोभ बुद्धि भ्रष्ट कर देता है। बाजार में लोग मुझे बहुत होशियार समझते हैं, पैदा देखकर। उड़द की खीर, लड्डू और पौष्टिक चीजें खा रहा हूँ। कुछ फायदा है मगर ज्यादा खा लेता हूँ।

२६ फरवरी : ईडन गार्डन गया। धूप थोड़ी आ गयी थी। अकेला घूमा। याद आया, शुरू-शुरू कलकत्ते आने पर कभी-कभी यहाँ घूमने आता था। किशोर और बच्चे खेलते थे। मेरा भी मन होता था। पैसे के अभाव से कितना दुखी था। आज धन है परंतु अभाव मिटा नहीं, बढ़ता जाता है, चिंताएँ भी बढ़ रही हैं। फिर इतनी कमाई से क्या पाया? ९ बजे ऑफिस गया। शाम को ५॥ बजे ८४) का पेन लेकर केदार बाबू के घर गया। लड़की की शादी थी। केदार बाबू मुझसे बहुत स्नेह रखते हैं। बहुत से लोग आये थे। सभी ऊँचे-बड़े, पढ़े-लिखे। इनकी कितनी इज्जत होती है, ऐसी जगहों पर पता चलता है। लोगों से मुलाकात करायी, मन प्रसन्न हो गया।

२७ फरवरी : कलकत्ते में इंडस्ट्रियल एक्जिबिशन हो रही है। बहुत भीड़ होती है। रेलवे के नये डिब्बे देखे। बहुत अच्छे हैं। मुसाफिरों को आराम रहेगा। मुझे याद आयी, दिल्ली से गौहाटी की पहली यात्रा में कितना कष्ट हुआ था। अब पंखा और पानी की अच्छी व्यवस्था थर्ड क्लास में हो जायगी।

ग्वालंदो

७ मार्च : ७॥ बजे सुबह लंच से जहाज पर गया। माल काफी जल गया है। हम लोगों के १०-१२ हजार का नुकसान हो ही जायगा।

कलकत्ता

८ मार्च : गद्दी गया। बाजार १६८।) खुला, शाम को १७२।) बिका। मिल में १२५० गाँठों का काम किया। ५२५० गाँठ एल० टी० का काम किया २००) में। मेरी भी बेचने की इच्छा थी, पर भाई जी नट गये। ३००० गाँठें तीसी के बाड़े में बेचीं, फिर ली, ।) सट्टा किया।

१५ मार्च : अखबार पढ़ रहा हूँ। हिंदुस्तान में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। गांधीजी के बाद कांग्रेस के गुटों में शायद दूरी बढ़ेगी। घनश्यामदास जी का काफ़ी प्रभाव है। सोचता हूँ कि उनकी तरह मैं भी कुछ कर सकूँ। काफी ठंढ पड़ती है, बारिश भी होती है। बाजार की टेंडेंसी समान है। मेरा ध्यान अभी पाट में मंदा नहीं है। कामकाज सलट रहा है। सट्टा जोर से घट रहा है। दो-चार दिन में काम सलट जायगा। पाट का भाव सुबह १८०॥) खुला। मैंने बहुत-सी गाँठें बेचीं। खूब काम किया।

२४ मार्च : आज होली है। रंगों का त्योहार है। सब ओर उत्साह है। मेरा मन सुस्त। किससे कहूँ ? चिंताओं का ठिकाना नहीं। मैं महसूस कर रहा हूँ कि गिर रहा हूँ। शाम को घर आया तो भाई जी से डर-सा लगा। सौदा पक्की गाँठ का प्रायः सलटा लिया है।

२५ मार्च : सुबह ६ बजे उठा। बाहर नहीं गया। आज भी धूप काफी है। धुरखेली-छांरडी है। आज विवाह को २८ वर्ष हो गये। अंग्रेज लोग तो जुबली मना लेते।

२८ मार्च : ३॥। बजे दिन में बस में बैठकर रिजेंटपार्क के मकान में आया। ४५ आदमी थे। भाई जी ने मकान खूब सजाया है।

१ अप्रैल : पाकिस्तान ने टैक्स बढ़ाये। ४) मन कर दिया है। हम लोगों के सैदपुर में ४०,०००) का नुकसान लगेगा। ऐसा लगता है, पाकिस्तान पाट और दूसरी चीजों का व्यापार पूरे रकम से मुसलमानों के हाथ में धीरे-धीरे दे देगा। भाई जी से मैंने कहा है।

७ अप्रैल : चित्त की खिन्नता का कहना ही क्या है। मेरी आत्मा को शांति नहीं मिलती मानसिक कमजोरी की वजह से। फाटका १५८।=) खुला। दिन में ११ बजे ऑफिस गया। २५० गाँठें १७१) में बेचीं, फिर ५०० गाँठें १६०।≡) में बेचीं, ३००० गाँठें १६१।-) में बेचीं। प्रायः ३०००) सब लगे पर शांति मिल गयी। राधाकिशन जी कानोड़िया के सामने प्रतिज्ञा की कि अप्रैल तक नया सौदा नहीं करूँगा। परमात्मा अगर निभा दे तो बहुत ही अच्छा हो। बापू जी को एक चिट्ठी लिखी थी, जेब में ही रह गयी।

बनारस

१३ अप्रैल : बनारस अच्छा लग रहा है। काफी आराम मिला। कल रात भूतों का डर लगा। ऐसा क्यों, पता नहीं। ७ बजे स्वामी जी से मिलने गया। टाइम कुछ कम-सा था। बातचीत ज्यादा नहीं हुई। ८ बजे लौटा। शाम को नौका में गंगा पर घूमने गया। परमा, महादी आदि थीं। सत्यनारायण भी था। अच्छा लगा। ८॥ बजे अन्नपूर्णा और चिरंजी को लेकर बाजार गया। प्राय: १० बजे लौटा। 'चंद्रप्रभा' नियम से ले रहा हूँ। पेशाब ठीक हो रहा है। यहाँ सरदी काफी हो जाती है।

१४ अप्रैल : किताबें पढ़ता हूँ, शरद बाबू की। अच्छी हैं। गंगा पार की लौटती दफा आधी दूर तक आया, थकावट खास नहीं आयी। ३ बजे बनारस कैंट से इंटर क्लास में बैठा। जगह मिल गयी। गया उतरने का विचार था पर उतरा नहीं। १२ बजे रात तक के० एम० मुंशी की 'अभिशाप' किताब पढ़ता रहा।

कलकत्ता

२४ अप्रैल : दिन में सुना, हमारे मकान में चूहा मर गया। कलकत्ते में प्लेग जोरों से फैल रहा है। हम रीजेंट पार्क आ गये। रात में मच्छरों के उत्पात से परेशान रहे।

२६ अप्रैल : मेरा मन रीजेंट पार्क में नहीं लगता। मच्छरों से रात में बहुत परेशानी रहती है। बाजार गरम। कलकत्ते में प्लेग फैलता जा रहा है। कारपोरेशन सफाई चला रही है, मगर यह तो पब्लिक को खुद करना चाहिए। बड़ाबाजार, काशीपुर, नीमतल्ला, खिदिरपुर वगैरह के गोदाम बहुत खराब हालत में हैं।

२७ अप्रैल : प्लेग का टीका ले लिया। दरद काफी रहा। बुखार भी। सेंगर जी, बालचंद जी से मिला।

ग्वालन्दो

२ मई : रात में १० बजे ग्वालंदो पहुँचा। रेल में सोने की जगह मिल गयी। स्टीमर में थकावट नहीं आयी। सफर में चिंता मिटती है, अच्छा लगता है। मन में होता है, सफर करता रहूँ, दुनिया देखता रहूँ। परंतु इससे काम कैसे चलेगा? दस-बारह केले खा लिये। इधर के ढाकाई केले बड़े और मीठे होते हैं। पेट भर जाता है। चाय भी पी ली, एक नमकीन के साथ। नारायण गंज में भाव १८८॥) का सुना। मन खराब हो गया। क्या मालूम क्या हो जाता है; मन में स्थिरता नहीं रहती।

कलकत्ता

५ मई : बाजार समान में स्टेडी है। ऑफिस में १५०० गाँठ कटिंग का काम किया, लूज का नहीं। टामस साहब ने कल कहा कि मेरे नाम फाटके की रिपोर्ट है। मन खराब हो गया। ऑफिस का काम ठीक करता हूँ, पैदा कराता हूँ। फाटका तो मेरा लेन-देन है मगर बुरा काम है। बदनामी भी होती है।

१४ मई : चीन में च्यांग काय शेक हार रहा है। चीजें बहुत महँगी हैं। कम्युनिस्ट बढ़ रहे हैं। हो सकता है, जीत जायें। हिंदुस्तान में भी कम्युनिस्ट प्रोपगंडा बढ़ा रहे हैं। तेलंगाना में गोलमाल बढ़ायेंगे, ऐसी खबर है। इन दिनों विदेश जाने की बहुत इच्छा जोर से हो रही है, पता नहीं क्यों ?

२० मई : वाइफ की तबीयत सुस्त रहती है। दरद सा रहता है। हरचंदराय जी की तबीयत भी ठीक नहीं रहती। सत्यनारायण को आखिर नर्सिंग होम जाना पड़ा। उपाय भी क्या ? बहुत इलाज कराया कोई फायदा नहीं। ६ बजे नर्सिंग होम गया। ७।। बजे तक था। डॉक्टर ने कहा, कोई खतरा नहीं, ठीक हो जायगा। घर आया। आज एक घड़ी खरीदी। चीजें खो देता हूँ। आदत बुरी है। किताब पढ़ता रहा।

२१ मई : बसंती, वाइफ सभी ६।। बजे नर्सिंग होम में गये। १० बजे तक था। ऑपरेशन सक्सेस हुआ। काफी चिंता थी। परमात्मा सब ठीक करेगा। बाजार १९४।) था। ऑफिस में १५०० गाँठें नयी, ७५० गाँठें पुरानी का काम हुआ। पिता जी माँ जी देश से आये। ५।। बजे शाम को नर्सिंग होम गया। सत्यनारायण के कुछ चेत-सा था। ७।। बजे घर आया। १००० गाँठें पाट की लीं। १९२।।।) में। भाव १९२।।) का रहा।

२९ मई : १ बजे अंदाज सत्यनारायण के पास गया। साथ में परमा तथा वाइफ भी। २५००० मन पाट का काम किया। बाजार स्टेडी-सा ही है। हमने सब पाट बेच दिया। ३ बजे एंपायर में 'आई निउ सूजी' देखा। ठीक-ठीक था। मन में शांति है।

३१ मई : नर्सिंग होम से सत्यनारायण को घर बालीगंज ले आया। मन में खुशी हुई। बाजार गरम है, स्ट्राइक चल रही है।

५ जून : सुबह ५ बजे बजरंगलाल जी के साथ हेस्टिंग्स मिल में गया। १० बजे तक ऑफिस में था। खाना नहीं खाया। गाड़ी दिखाने एक मुसलमान मेम के पास गया। खूब अंग्रेजी बोलती थी। मुझे अभ्यास करना चाहिए। लोग मेरे नाम से बदनामी कर रहे हैं। मुझे फाटके के झमेले में नहीं पड़ना चाहिए। २ बजे वाइफ के साथ 'काजल' देखने गया। अच्छी फिल्म है।

८ जून : अखबारों में फाटके के बारे में लिखा-पढ़ी हुई है। टामस साहब ने पूछा। मैं नट गया। मन काफी खराब हो गया।

जलपाईगुड़ी

१० जून : सुबह ६।। बजे स्टेशन गया। बरसात जोरों से हो रही थी। **दूध,** निमकी, बुँदिया सबों को दिये। मन में खुशी थी, अच्छा काम करने जा रहे हैं। जलपाईगुड़ी बातचीत करते पहुँचे। १२ बजे डेरे पर। काफी स्वागत हुआ। मारवाड़ी समाज में सुधार हो रहा है, अच्छी बात है। मगर हमारी स्पीड कम है। स्नान करके १। बजे जीमे। ६ बजे फेरे हुए। एक बेबस विधवा का जीवन सुधरा। भगवान् सुखी रखे।

७॥ बजे जीमने के पहले मैं भी कुछ बोला, परंतु मुझे स्पीचे देना कम आता है। ९ बजे रात कलकत्ते वापस के लिए गाड़ी में बैठा। कांग्रेस में आपसी मनमुटाव उभर रहा है।

कलकत्ता

११ जून : सोने के बटन खो दिये। लोग सोना पाना और खोना अशुभ मानते हैं। पता नहीं क्यों? खोने से दुख तो जरूर होता है पर पाने में तो खुशी होनी चाहिए।

१२ जून : फाटका काजल की कोठरी है। फालतू बदनामी लग जाती है। लोग मेरे नाम से खेले का सम्बन्ध बताते रहे हैं, बुरा-भला कह रहे हैं,। मुझे बुरा लगता है, परंतु क्या करूँ, फाटका छूटता नहीं। मन खराब रहता है। रात में सपने में भाई जी फाटके के बारे में कह रहे थे।

१३ जून : ५ बजे सुबह मैदान गया। विधवा-विवाह की बहुत बातें हुईं। लोगों को अच्छा लगा। परंतु इस काम में बहुत लोगों के आगे बढ़कर सहयोग देने की जरूरत है।

१७ जून : मनी बाई के यहाँ कांता का व्याह है। सारे दिन भात की तैयारी करते रहे। २॥ बजे ऑफिस गया। काम से निकल गया। ६। बजे फुर्सत मिली। सीधे सगों के यहाँ जैन धर्मशाला आया। भाभी कुछ नाराज सी हुईं। ठीक बात थी मगर क्या करता?

२१ जून : ऑफिस में कामकाज कमती रहा। सिन्हा के साथ प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका के गया। सामाजिक कार्य में ये बहुत उत्साह रखते हैं। मैं काम करता हूँ पर उतावलापन मुझमें बहुत रहता है। पाट का भाव तेज हो रहा है।

२६ जून : टामस साहब से आजकल डर-सा मालूम देता है। कुछ गलती मेरी भी है। फाटका बहुत बड़ी गलती है। बाजार समान में स्टेडी, तैयारी मंदा। नयी क्रॉप में शिकायत आ रही है। गंगाबख्श जी कानोड़िया का स्वर्गवास हो गया। पुराने लोगों में काफी इज्जतदार थे।

नारायणगंज—ढाका

३ जुलाई : ऑफिस से बस में बैठकर एयरोड्रोम गया। प्लेन खराब था। इसलिए देर हुई। ९ बजे उड़ा और १० बजे ढाका पहुँचा। कामकाज देखा। शहर में घूमता रहा। जूते खराब थे। तकलीफ हुई। पूर्वी बंगाल की बोली में रूखापन है, व्यवहार में भी। जनता अधिकतर मुसलमान है। शिक्षा है नहीं। व्याह ज्यादा करते हैं, बच्चे बहुत होते हैं। बंगाली हिंदुओं ने इनका एक रकम शोषण किया था। इससे इनमें असंतोष रहा है। कश्मीर की तरह यहाँ के भी ज्यादातर मुसलमान कनवर्टेड हैं।

नारायणगंज में पाट का काम देखा, फिर ढाका लौट आया। रहने की जगह अच्छी नहीं थी, गंदी थी। मगर उपाय क्या, रात विता दी।

४ जुलाई : रात नींद ठीक से नहीं आयी। फालतू में १६) लगे। सुवह ५ वजे उठा। वस में वैठकर ७।। वजे नारायणगंज आ गया। १०। वजे तक था। माल १७०००) तक का तजवीजा। ११।। वजे मोटर से ढाका वापस आ गया। ४ अनरस खा लिये। भोजन नहीं किया। १।। वजे हवाई जहाज में वैठकर २।। वजे कलकत्ता आ गया। शाम को विधवा-विवाह में गया। ९ वजे तक दीपचंद जी पोद्दार के घर था।

५ जुलाई : सुवह ५ वजे वाइफ के साथ मैदान गया। दिन उग गया था। घास पर ओस की वूंदें थीं, अच्छी लगीं। वाइफ के लिए घूमना फायदा करेगा, मगर यह चलेगा कितने दिन? ऑफिस में कामकाज खास नहीं था। आजकल विधवा-विवाह में काफी टाइम देता हूँ।

९ जुलाई : २०००० मन का काम किया। फाटका १८०) अंदाज पड़ा था। ४ वजे अयोध्याप्रसाद जी के घर गया। उन्हें लेकर आर्य समाज आया। ५ वजे बगीचा पहुँचा। विवाह में बहुत से आदमी आये थे। सवों का सहयोग मिला। ९ वजे वापिस घर आया। आज मैं भी ठीक से वोल सका। मन में एक रकम की खुशी हुई।

१० जुलाई : सुवह ५ वजे लडलौ मिल में गया। ९। वजे आया। ऑफिस में टामस साहव से कुछ कहा-सुनी हो गयी। गलती वेसी मेरी थी, फाटका कारण है। परन्तु टामस साहव से फालतू वातें मेरे वारे में कही जाती हैं। आफिस के काम में पूरी चौकसी रखता हूँ फालतू नुकसान नहीं होने देता। मुझे साहस के साथ साहव को बता देना चाहिए कि मेरे विरुद्ध प्रोपगंडा हो रहा है। न जाने क्यों हिम्मत नहीं होती? वहुत भारी कमज़ोरी है।

११ जुलाई : सुवह मैदान नहीं गया। लाला जी की वेटी के विवाह में लगा रहा।

१६ जुलाई : ऑफिस में टामस साहव कुछ नाराज-सा हुआ। फाटके वाले फालतू में मेरे पास आ जाते हैं। गलती मेरी है। आगे से सावधान रहूँगा। शर्म उठानी पड़ती है। दिन में वोगड़ावाले आये। उनकी लड़की के पहले ससुराल वाले आये हैं, गहने माँगते हैं। क्या होगा, मालूम नहीं। विधवा-विवाह में यह भी एक अड़ंगे की वात है। विवाह होने पर लड़के के यहाँ से दिया गया गहना तो लड़की का हो जाना चाहिए क्योंकि उसको दे दिया जाता है। परन्तु यह भी ठीक है कि लड़के की मृत्यु के वाद यदि वह ससुराल में न रहे और दूसरे घर की हो जाय तो फिर गहने पर उसका अधिकार कैसे माना जाय? यह सव वातें भी सामाजिक रूप से विचार कर कुछ निश्चित कर लेना चाहिए।

१७ जुलाई : दिन में वोगड़ावालों के गहनों का काम सलटाया, सव दे-दिला दिये।

३१ जुलाई : ऑफिस में कामकाज वंद सा ही है। करांची की मीटिंग के वास्ते वेट कर रहे हैं। मुझे लगता है पाकिस्तान के साथ व्यापारी समझौते में दम नहीं। उन

लोगों के वादे का कोई भरोसा नहीं। हिंदुस्तान को अपने ऊपर व्यापार का बंदोवस्त रखना होगा। पाट के काम में फायदा बहुत है। वे लोग इसमें हिंदुस्तान को फायदा नहीं देंगे। अंग्रेज व्यापारियों के हटने से पोजीशन साफ हो जायगी।

२ अगस्त : शाम को गद्दी में भाई जी से कामकाज की काफी वातें हुई। सत्यनारायण सरदार शहर जा रहा है, वहाँ से वीकानेर जायगा। हम लोगों की वुवड़ी मिल वंद है। पैदा का काम काफी है परंतु भाई जी का मन काम करने का नहीं होता है।

९ अगस्त : 'जय सोमनाथ' पढ़ना शुरू किया। अच्छी किताव है। मुंशी जी ने काफी अध्ययन किया है। गुजराती में पढ़ता तो शायद और भी आनंद आता। अनुवाद अच्छा हुआ है।

११ अगस्त : प्रेस का काम वंद है। सैदपुर भी शुरू नहीं हुआ। विरजू वनारस आ गया है, २-४ दिन में कलकत्ते आएगा। नंदू कॉलेज में भरती हो गया। मन में खुशी होती है, हमारे बच्चे हमसे ज्यादा शिक्षा पा रहे हैं, उनके लिए साधन मौजूद हैं। मुझे महसूस होता है कि कमती पढ़ाई के कारण कितनी असुविधा होती है। शिक्षा मनुष्य के लिए आँखों सी जरूरी है।

१५ अगस्त : एक वर्ष हो गया हिंदुस्तान आजाद हुआ। कोई खास फर्क महसूस नहीं होता। मकानों पर, सरकारी भवनों पर तिरंगे झंडे हैं। एक रकम की खुशी लोगों में है जैसे त्योहारों पर होती है। रविवार है, छुट्टी का दिन। बच्चों के हाथ में तिरंगा झंडा, लोगों के सर पर गांधी टोपी, वदन पर खादी का सफेद कुर्ता, पायजामा या धोती, अच्छा लगता है। मुसलमानों में कोई खास उत्साह नहीं है, दिखावा भले ही हो।

१८ अगस्त : शाम को राजस्थान-मोहनवगान फुटवाल मैच में गया। राजस्थान की टीम हार गयी, बहुत ही घटिया दर्जे का खेल था। इनकी हार से मन में कैसा सा होता है।

२३ अगस्त : पाट में मेरे १२,००० रु० का नुकसान हो गया है। मन इतना दुखी नहीं है पर कुछ इनफीरियैरिटी फील कर रहा हूँ। खवर है कि वावूलाल जी जालान ने २१ लाख रुपये नेहरू जी को दिये। लोग इसे पागलपन का काम वताते हैं। वुरी वात है। सुपात्र को दान देना पागलपन नहीं। नेहरू जी के हस्ते अच्छे काम में रुपये लगेंगे। शायद ईर्ष्या से वुरा वताते हैं। परसों एलेक्शन के काम से वीकानेर जा रहा हूँ। आजकल टामस साहव एक रकम राजी रहता है।

पटना-दिल्ली-रेल

२५ अगस्त : सुवह ७ वजे प्लेन उड़ा। ९ वजे पटना पहुँचे। ७००० फुट की ऊँचाई से प्लेन उड़ रहा था। नीचे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। गंगा एक रुपहली सर्पिणी सी कभी-कभी लगती थीं। १२ वजे लखनऊ से १॥ वजे दिल्ली। ताँगा से स्टेशन आया। चाँदनी चौक गया, वाजार से १००)रु० की चीजें खरीदीं। ५॥ वजे शाम को गाड़ी में वैठा। मन में चुनाव समझौते की वात उठती रही। कैसे पार पड़ेगा?

बीकानेर

२६ अगस्त : चूरू में ४ वजे आँख खुली । नींद अच्छी आयी । १० वजे बीकानेर पहुँचा। रास्ते में देखता जा रहा था। दोनों ओर रेत ही रेत, टीले, सूखी झाड़ियाँ। राजपूताना में कब बंगाल की तरह हरियाली आयगी ? १० वजे बीकानेर। डाक बंगले में ठहरा । दो-तीन कार्य करने हैं । परमात्मा निभा दे । कई लोग आये । चौधरी हरिश्चन्द, रामचन्द, हीरा सिंह आदि । हरदत्त सिंह, कुंभाराम, मान्धाता सिंह से मिला। काफी जान-पहचान हुई। ६ वजे बाजार गया। गौरीशंकर जी मिले। लहरचन्द जी सेठिया के यहाँ जीमा। साह जी रामकिशन दास जी मिले, जुगल जी भी मिले। चहल-पहल है। चुनाव को लेकर एस० एन० सराफ भी मिला। धरमानन्द स्वामी से मिला। राजपूताना में काफी तेजी से परिवर्तन हो रहा है, यहाँ आने पर मालूम होता है। प्रजा मण्डल का वहुत जोर है। एक वर्ष में रजवाड़ों में इतना फर्क आ जायगा, मैंने सोचा नहीं था।

२७ अगस्त : सोमनाथ, तुलसीराम सरावगी, हीरालाल शास्त्री, गोकुल भाई आये। चुनाव के बारे में बातचीत की। मिनिस्ट्री में इज्जत तो है ही। ८ वजे मीटिंग में गया, काफी भीड़ थी। रात में १॥ वजे सोये। कांग्रेस ने एलेक्शन का वायकाट कर दिया है। ओसवाल लोगों से अभी तक समझौता नहीं हुआ।

२८ अगस्त : सुबह ७ वजे हीरालाल जी से मिलने गये। वहाँ से ताँगा लेकर संतोषचन्द जी को ढूंढ़ने निकले। मिले नहीं। ९। वजे फिर हीरालाल जी से मिले। फिर सन्तोष-चन्द जी के आया। समझौता हो गया, परमात्मा ने इज्जत रख ली। मेरा उत्साह बढ़ा। वहुत कुछ सीखने में आया । ३॥ वजे गौरीशंकर जी के गया। कांग्रेस के मिनिस्टर और कार्यकर्त्ता वहुत से थे। वहाँ से डाक बंगला आ गया, ५॥ वजे स्टेशन। काफी आदमी थे। मन में एक रकम खुशी होती रही। वहुत आदमियों से नयी जान-पहचान हुई। हरदत्त सिंह, कुंभाराम, रामचन्द्र, हरिश्चन्द्र, गोयल जी, सूर्यकरण, लहरचन्द जी सेठिया, सत्यनारायण सराफ वगैरह आये थे।

रतनगढ़

२९ अगस्त : छापर तक रेल से आया । ७ वजे पहुँचा । वहाँ से दिन में २ वजे रतनगढ़ कार से पहुँचा। लोगों से बातचीत की। ८ वजे मीटिंग में गया । ५०० आदमी थे। मुझे सभापति वनाया। पहला मौका था, कुछ डर सा रहा था। सब जान-पहचान के आदमी थे। मैं कुछ बोला परंतु मन में झेंप सी थी।

कलकत्ता

१६ सितंबर : बाजार की टोन स्टेडी है । जुकाम हो रहा है। गरम पानी में नीबू लिया, भोजन नहीं किया। हैदराबाद में इंडियन आर्मी बढ़ रही है। इस बार सरदार

पटेल अगर नेहरू जी को प्लान वता देते तो पहले की तरह मामला टल जाता। परंतु मिलिटरी के वढ़ जाने के वाद उनको पता चला।

१७ सितंवर : निजाम हैदरावाद सरेंडर कर गया। लोगों में वहुत खुशी है। वहुत वड़े जुल्म वहाँ किये गये थे। रजाकारों ने वहुत उत्पात मचाया था। आतंक फैला दिया था। जनरल जे० एन० चौधरी का वहुत नाम हुआ। कन्हैयालाल माणिक लाल मुंशी जी ने वहुत समझदारी से काम लिया। इतने वड़े विद्वान् और साहित्यिक होने पर भी राजनीति में वहुत अच्छा अनुभव दिखाया। वंवई में प्रधान मन्त्री के रूप में भी शासन अच्छा चलाया था।

१९ सितंवर : हैदरावाद के मामले को लेकर पाकिस्तान झमेला कर रहा है। सुनते हैं, वीस करोड़ रुपये निजाम ने पहले ही पाकिस्तान में भेज दिये थे। विदेशी लोगों की मार्फत जवाहिरात भी भेजा है, और भी भेज रहा है। रात में 'गुड अर्थ' देखी। पर्ल वक का लिखा उपन्यास है। वहुत अच्छा लगा। हिंदुस्तान की गरीवी और रईसों की मौज शौक की वात याद आ जाती है। अगर हम लोगों ने अपनी हालत नहीं सुधारी तो वरवादी देखनी पड़ सकती है।

२४ सितंवर : डॉ० राममनोहर लोहिया का लेक्चर सुनने गया। काम की वात वोलते हैं। जव तक अमीर और गरीव की दूरी कम नहीं होगी, स्वाधीनता वेमतलव है। उन्होंने एक रकम कांग्रेस गवर्मेंट की आलोचना की। गांधी जी के सिद्धांत को छोड़कर हम लोग इंग्लैंड, रूस, अमेरिका की नकल करना चाह रहे हैं, इससे पैसेवाले तो उन्नति करेंगे परंतु गरीव और भी कष्ट में फंसते जायेंगे। मुझे लगता है कि गाँवों की उन्नति पर ज्यादा जोर देना चाहिए। छोटे-छोटे कारवार वहाँ खोलने चाहिए। गांधी जी की नीति इस मामले में ठीक थी।

२८ सितंवर : भाई जी सैदपुर से आये। कह रहे थे, सव काम ठीक से चल रहा है। मेरे लगती है कि जितना काम हो जाय ठीक है, मुस्तैदी रखनी चाहिए। पाकिस्तान हिंदुओं को आगे काम करने नहीं देगा। शाम को ६ वजे न्यू मार्केट गया। कुछ कितावें खरीद लाया। पढ़ना नियम से चालू रखूँगा। रात ९ वजे डॉ० लोहिया से मिला। वहुत वातें हुईं। पार्टी का संगठन ठीक करना है। रुपयों का वंदोवस्त भी। लोहिया कहते थे कि मिनिस्टर लोगों की नीयत साफ नहीं। नेहरू जी अफसर लोगों की ज्यादा सुनते हैं, जनता से दूर होते जा रहे हैं।

१ अक्तूवर : सिराजगंज में ६१ मारवाड़ी व्यापारी पकड़े गये। पूर्वी पाकिस्तान में काफी डर है। ऑफिस आया। ४००० मन का काम किया। दाम वहुत वढ़ रहा है। शाम को सत्यनारायण ढाका से आ गया, चिंता मिटी।

३ अक्तूवर : सुवह ८॥ वजे रिलीफ सोसाइटी की मीटिंग में गया। १०॥ वजे सोसाइटी सिनेमा में 'फॉर एवर एंवर' देखा। वहुत ही अच्छी पिक्चर लगी। हमारे यहाँ की फिल्में

टेकनिक, आर्ट और ऐक्टिंग में इनके मुकाबले नहीं आतीं। मैंने देवकी वावू और धीरेन गांगुली से इसके वारे में पूछा था। उनका कहना है, वहाँ रुपयों की वहुत छूट मिलती है। पव्लिक भी गंभीर फिल्मों को समझती है।

४ अक्तूबर : सिराजगंज के मामले को लेकर वड़ी मीटिंग हुई। वहुत भीड़ थी। मैं भी वोला, शायद अच्छा वोला। मीटिंग सक्सेस रही। मेरा डर धीरे-धीरे कम हो रहा है। गवर्मेंट से लिखा-पढ़ी होगी। परंतु मेरा मन कहता है, कुछ खास नतीजा नहीं निकलेगा। पाकिस्तान को किसी वात की परवाह नहीं।

ढाका

६ अक्तूबर : प्लेन दो घंटे लेट था। वैठकर अखबार पढ़ता रहा। हिंदुस्तान के खिलाफ यहाँ के अखबार में लिखा-पढ़ी होती है। हिंदू तो डरे-डरे से रहते हैं। बंगाली लोग अभी भी भाग कर इंडिया चले आ रहे हैं।

कलकत्ता

८ अक्तूबर : सुवह सैदपुर फोन किया। काम जोर से करने को कहा। कर्सियांग जाने का विचार है। दिन में २०,००० मन का काम किया। शाम को वेलर्स असोसियेशन की मीटिंग में गया।

कर्सियांग

९ अक्तूबर : सुवह सैदपुर ६॥ वजे उतरा। काम-काज देखा। एक रकम चल रहा है। परंतु वुकिंग वंद होने से काफी नुक्सान है। वाजार में खाना खाया। यहाँ वेजिटेबल वरतते हैं। स्टेशन पर ९। वजे आ गया। गाड़ी ११। वजे आयी। रेल में कर्सियांग के भजनलाल जी, लक्ष्मीनारायण जी मिले। उनकी मोटर में ही कर्सियांग आया। रात में तास खेला, चाय पी। खाना नहीं खाया। पानी पीकर सो गया।

१० अक्तूबर : ५ वजे सुवह उठा। सरदी थोड़ी है। छोटा-सा गाँव है। ईसाइयों की मिशनरी, नेपाली, लेपचा और भोटिया लोगों को ईसाई वनाने का काम जोर से कर रही है। स्कूल और कुछ कुटीर उद्योग भी खोल रखा है। ढाई मील घूमा। सीन अच्छे हैं। लोगों का स्वास्थ्य भी अच्छा। परंतु गरीवी है, गंदे रहते हैं। कसरत की। दिन में तास खेलता रहा। शाम को वाजार घूमने निकला। यहाँ के जीवन में भाग-दौड़ नहीं। चिंता-फिकर भी नहीं, चुपचाप वैठे मन ऊव जाता है।

११ अक्तूबर : सुवह ८ वजे कार से दार्जिलिंग पहुँचा। माल रोड गया। वहुत आदमी मिले। काफी अच्छी जगह है। जिमखाना क्लव में गए। वहुत वड़ा क्लव है। खर्चीली जगह तो है ही। अंग्रेजी तरीके का है। वाजार में ही भोजन किया। घूमता रहा। घोड़े पर सवारी की। अच्छा लगा। सीधा घोड़ा था। कुछ दूर अपने आप उसे चलाया।

७ बजे कर्सियांग वापस आ गया। दार्जिलिंग जाकर कुछ दिन ठहरने का मन होता है पर रहने का बंदोबस्त नहीं है।

१२ अक्तूबर : आज विजया दशमी है। कलकत्ते में बहुत रौनक होगी। तबीयत काफी ठीक है। कसरत की। ६॥ बजे से १०॥ बजे तक घूमता रहा। डॉ० हिल का स्कूल फॉर गर्ल्स, देखा। ६०) महीने में बहुत अच्छा बंदोबस्त। हमारे स्कूल वालों को इनकी व्यवस्था सीखनी चाहिए। हम लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजकर छुट्टी पा जाते हैं। यह ठीक बात नहीं है। जीम कर सो गया। ४ बजे उठा। बाजार गया। पहाड़ी लोगों से बात चीत की। हिन्दू हैं, मगर कुछ भी जानते-समझते नहीं। यहाँ मिशनिरियों की तरह हिंदू प्रचारकों को आना चाहिए। बहुत बड़ा काम होगा।

१३ अक्तूबर : विक्टोरिया स्कूल देखा। यहाँ भी पढ़ाई का अच्छा बंदोबस्त है। २०० लड़के पढ़ते हैं। स्वस्थ शरीर, प्रसन्न चेहरा। एक हमारे लड़के हैं, मरियल। स्कूल बहुत ही सुंदर जगह पर है। ६००० फुट ऊँची पहाड़ी पर है।

१४ अक्तूबर : पाँच बजे सवेरे जगा। फोड़े में दरद हो रहा था। कसरत की। ८ बजे दार्जिलिंग पहुँचा। शहर घूमा। शाम को स्केटिंग देखने गया। मन लग गया। रात में कर्सियांग वापस आ गया।

१५ अक्तूबर : ५ बजे जगा। फोड़े में बहुत दरद था। सेंक किया। आज कसरत काफी की। दिन में तास खेलता रहा। शरद बाबू की 'शुभदा' किताब पढ़ी। कर्सियांग की टूर में रामप्रसाद डालमिया, उसका लड़का साँवलराम, परसरामपुरिया, घनश्यामजी पोद्दार और मैं, ५ आदमी हैं। जगह तो अच्छी है किंतु चहल-पहल दार्जिलिंग की तरह नहीं, बाजार भी छोटा है।

१९ अक्तूबर : सुबह ५ मील घूमा। तबीयत काफी तंदुरुस्त मालूम देती है। यहाँ हरी पत्ती की चाय चखी। अच्छी नहीं लगी। मोटर से ६॥ बजे सिलीगुड़ी पहुँचे। लाला जी के जँवाई के घर जीमा। टिकट का और सब बंदोबस्त उन्होंने ही कर दिया, काफी सुभीता रहा। कुल २५०) लगे पर टूर बहुत अच्छा हुआ। तबीयत भी ठीक रही।

कलकत्ता

२० अक्टूबर : ९ बजे सुबह कलकत्ता पहुँचा। इधर गरमी मालूम देती है। ऑफिस में कामकाज देखा। ३५,००० मन का काम हुआ। सिराजगंजवाले अभी तक नहीं आये हैं। कब छूटेंगे, पता नहीं।

२४ अक्टूबर : दिन में सिराजगंज वालों के बारे में ग्रांड होटल प्रिंसेज में मीटिंग थी। बंगाली काफी आये थे। असंतोष है मगर उपाय क्या। मैं भी बोला। बुरा नहीं बोला। शायद लोगों ने पसंद भी किया। मुझे काफी राहत मिली। काम आसान नहीं। पाकिस्तान अब विदेश है, हिंदुस्तान से वैर भी रखता है।

३० अक्टूबर : बालीगंज गया। भगवती का हाथ जल गया है। कल से आज कुछ आराम मालूम हुआ। चिंता की बात नहीं है परंतु तकलीफ तो है ही।

३१ अक्टूबर : मन में चिंता रहती है, आजकल चक्कर आ जाते हैं। आज दीवाली है। बसंती को ५००) का गहना और एक घड़ी दी।

९ नवंबर : दिन में चिरंजीलाल जी के साथ गोपाष्टमी मेला, सोदपुर गया। ६॥ बजे तक था। उधर २००) रु० चंदे के दिये। बहुत भीड़ थी। गायों को जलेबी और पूरी खिलाते थे। इससे गायों के बीमार होने का डर रहता है।

१८ नवंबर : सुबह हनुमान मिल गया, पाट देखने। माल खराब और भीगा था, नारायणगंज का। वजन बढ़ाने के लिए पानी डालना बुरी बात है परंतु कोई सुनता नहीं। मुनाफाखोरी बढ़ती जा रही है। बाजार समान है।

२३ नवंबर : दो दिन हो गये यहाँ आये। तबीयत कुछ ठीक हैं। किताबें पढ़ता रहा। 'काउंट ऑफ मान्टेक्रिस्टो' पढ़ी। रोचक है। 'गुजरात के नाथ' पढ़ रहा हूँ। राजपूताना और गुजरात के बारे में बहुत कम जानकारी लोगों में है। कितनी बहादुरी, त्याग और बलिदान का इतिहास अनजाना पड़ा है।

अयोध्या

२६ नवंबर : ९ बजे अयोध्या पहुँचे। नौकर साथ में अच्छा है। स्टेशन पर सामान रख कर सरजू में स्नान किया। फिर हनुमान गढ़ी, कनक महल, रामचंद्र जी का महल देखा। सरजू के किनारे बनी मस्जिद भी देखी। मंदिर को तोड़कर बनायी गयी है। मन खिन्न हो गया। पता नहीं, मुसलमान हिंदुओं के मंदिर तोड़ने और जबर्दस्ती मुसलिम बनाने, लूटने, मारने में क्यों लगे रहे। हमारी कमजोरी थी। हम गले लगाते रहे, अंत में हमारा देश ही टूट गया। शहर गंदा लगा। मक्खियां और बन्दर बहुत हैं। मंदिरों में सफाई भी कम है। वृंदावन इससे बहुत अच्छा है। २॥ बजे लखनऊ पहुँचे। होटल एकदम साधारण। रात में घूमने निकला। काफी चहल-पहल। बातचीत में मुसलमानी ढंग है। कुछ दिखावा भी ज्यादा करते हैं। वैसे बोलने का ढंग अच्छा है, भाषा में मिठास है। अमीनाबाद देखा, चौक गया। गाने-नाचने वाली बहुत हैं। दलाल घूमते रहते हैं। मुझे भी इशारा किया पर मैंने साफ कह दिया मेरे पास पैसे नहीं है। मुँह बनाकर चला गया। देखने में वह भला रईस लगता था। मुँह में पान, आँखों में सुरमा।

२७ नवंबर : नवाबी जमाने की सब इमारतें देखीं। दिल्ली आगरे के मुकाबले की नहीं लगीं। बड़ा इमामबाड़ा जरूर कुछ अच्छा लगा। नवाबों ने अपने मौज-शौक के लिए बहुत किया। थोड़ा बहुत अपने धर्म के लिए। परंतु अपनी प्रजा के लिए कितना किया ? फिर भी इनकी बातें बढ़ा-चढ़ा कर लोग कहते हैं। वाजिदअली नवाब बहुत ऐयाश रहा होगा। अपनी गद्दी बचाने की इन लोगों को फिक्र थी जिससे मौज-बहार

चला करे। बादशाह और नवाब एक-से रहे। हिंदुस्तान को विदेश समझते थे और अपने को तुर्किस्तान, ईरान का। इसीलिए इनमें भारत के प्रति प्रेम नहीं रहा। पेंशन लेकर बादशाह-नवाब बने रहे। ऐसे लोगों की तारीफ करना मेरी समझ में नहीं आता। ९ बजे स्टेशन आया। इंटर क्लास में बहुत भीड़ थी, थर्ड क्लास में बैठा। गाड़ी में तकलीफ हुई। चिरगाँव में मैथिलीशरण जी और वृंदावनलाल वर्मा जी मिले। ५॥ बजे शाम को झाँसी आया। काफी आराम मिला। जगह सुंदर और स्वच्छ। गपशप करता रहा। शायद आज बहुत दिनों बाद झूठ नहीं बोला। मन में शांति रही। अच्छे लोगों के संग-साथ का फल है।

झाँसी

२८ नवंबर : ईश्वरचंद जी त्रिपाठी के यहाँ ठहरा हूँ। बहुत भले सज्जन हैं। पुराना शहर देखने गया। रानी लक्ष्मीबाई का महल देखा। बहुत धार्मिक मन की थीं। वृंदावन लाल जी वर्मा से मिला। आधे घंटे तक बात हुई। बहुत भले हैं, घमंड नहीं है। इतिहास के प्रति विशेष रुचि है। शिकार का भी शौक है। खूब घूमते हैं। मैंने पूछा, इतना कैसे लिख लेते हैं ? हँसकर बोले, मैं नहीं लिखता, मेरा मन मुझसे लिखवाता है। उन्होंने यह भी बताया बुंदेलखंड और बघेलखंड के इतिहास के बारे में लोगों में जानकारी बहुत कम है। मैथिलीशरण जी गुप्त से मिला। मकान लिया है। बहुत ही सज्जन हैं। भगवान के प्रति भक्ति भी बहुत है। कलकत्ते आयेंगे। झांसी का किला देखा। बाजार गया। साइकिल किराये पर लेकर शहर घूमा। रात में सेकेंड क्लास में गाड़ी में बैठा। भीड़ बहुत थी।

नागपुर

३० नवंबर : ७ बजे नागपुर पहुँचा। धर्मशाला में ठहरा। बाजार गया। साइकिल किराये पर ली। २ घंटा सारा नागपुर घूमा। शहर अच्छा है परंतु गंदा है। मराठों का एक जमाने में यहाँ बहुत जोर था। अब तो कोई खास नहीं। साड़ियों के सूत का बहुत बड़ा कारबार है। लगता है, शहर और भी बढ़ेगा। शाम को ३ बजे की गाड़ी से वर्धा पहुँचा। यहाँ से साइकिल लेकर सेवाग्राम, ५ मील है। महात्मा जी की कुटी देखी, मन भर आया। गांधी जी ने कितना कष्ट उठाया, त्याग किया। संत थे। उनके लिये मनुष्य बड़ा था, जाति नहीं। उनकी राजनीति भी इसी माफिक थी। अंग्रेजों का विरोध किया किंतु उनसे घृणा या द्वेष नहीं रखा। हिंदू-मुसलमान में भेद नहीं समझा। शायद उनके लिए मनुष्य देश से भी बड़ा था। उनके जाने के बाद से अभाव-सा खटकता है। तीन स्थान देखे नागपुर, वर्धा और सेवाग्राम। तीनों ही सुप्रसिद्ध हैं।

जलगाँव

१ दिसंबर : ७ बजे सुबह भुसावल पहुँचे। बिस्तर गुम गया। ८ बजे जलगाँव। साधारणतया अच्छा सा टाउन है। बाजार देखा। बस स्टैंड गया। अजंता की बस

नहीं मिली। दूसरे दिन के लिए प्रोग्राम छोड़ना जँचा नहीं। ९ वजे की एक्सप्रेस से नासिक के लिए रवाना हो गया। रास्ते के सीन वहुत अच्छे लगे। २ वजे नासिक पहुँचकर गोदावरी में स्नान किया। जल्दी-जल्दी मंदिरों में दर्शन किये। त्र्यंवकेश्वर बस जाती हैं, थोड़ी दूर है। अच्छी जगह है। ऊँचे पहाड़ पर गोदावरी निकलती है। छोटा-सा मंदिर है। बूँद-बूँद जल टपक रहा था। एक गुफा में पानी भरा था। चारों तरफ का सीन बहुत अच्छा है। मगर चढ़ाई थकानेवाली है। पहाड़ से उतर कर त्र्यंवकेश्वर के मंदिर गया। पेशवा ने वनवाया है। शिवलिंग से गोदावरी की धारा निकलती है। छोटा सा वाजार है। तीर्थयात्री आते रहते हैं। त्र्यंवकेश्वर के रास्ते में मछुओं की वस्ती है। सूखी मछलियों की गंध उबकाई लाती है। वहुत बुरा लगा।

२ दिसंबर : गाड़ी में भीड़ थी। रात में कल्याण पहुँचकर स्टेशन पर सो गया। १२ वजे पूना पहुँचा। वहुत वड़ा शहर है। मराठों के पेशवा लोगों की राजधानी थी। किला देखा। कुछ भी वचा नहीं। सिर्फ चारों तरफ की टूटी-फूटी दीवारें हैं। वाजार गया। पूना कभी विद्या का केंद्र था। अव शायद संस्कृत की पढ़ाई उतनी नहीं रह गयी। समय भी वदल गया है। एक वदमाश वस में मिल गया। मेरी वुद्धि कैसे खराव हो गयी, मालूम नहीं। १५) उसको दे दिये, ठगा गया। १२०) रुपये भी खो दिये। मन वहुत ही खराव हो गया। रात में ११ वजे तक शहर में घूमता रहा। अच्छा लग रहा था। मराठों का इतिहास मन में आता था।

महावलेश्वर

३ दिसंबर : सुवह ७॥ वजे की वस से महावलेश्वर गया। पश्चिमी घाट को सह्याद्रि पर्वत कहते हैं। पहाड़ी रास्ता घुमावदार है। हरियाली है परंतु कर्सियांग-दार्जिलिंग की तरह नहीं। फिर भी दृश्य सुंदर है। हवा में ताजगी। रास्ते में पंचगनी देखी। ठंढक थी। स्वास्थ्य की जगह है। सुंदर भी है। महावलेश्वर कोई खास नहीं लगा। यहाँ से कुछ दूर पर दो पुराने मंदिर हैं—महावलेश्वर और अतिवलेश्वर वहुत टूटी-फूटी हालत में हैं। शिवाजी यहाँ पूजन के लिए आते थे, वताते हैं। पास में ही प्रतापगढ़ का किला है। नहीं जा सका।

बंबई

४ दिसंवर : पूना से ७॥ वजे रेल में वैठा। १०॥ वजे बंबई पहुँच गया। १२ वजे आर० मोर की गद्दी में पहुँचा। वे लोग स्टेशन पर आये थे। तार दे देना अच्छा रहा। जीम करके वंवई रेस में गये। काफी भीड़ थी। लोगों में जोश भी। पर मुझे तो रेस अच्छा नहीं लगता और थका भी था। रात में घूमने निकला समुद्र के किनारे। ताजमहल होटल देखा। सव पैसे की माया है।

५ दिसंवर : सुवह ६ वजे उठा। एलिफेंटा जाने को निकला। जहाज नहीं मिला। वापस म्युजियम चला आया। कलकत्ते के मुकावले छोटा है। विशेष अच्छा नहीं लगा।

चित्रों की गैलरी में मन लग गया था। बाद में रेल से जूहू चला गया। समुद्र का तट प्रसिद्ध है। शाम का टाइम था। रविवार होने के कारण भीड़ भी बहुत थी। बंबई में औरतों में खुलापन ज्यादा है। फैशन भी है। कलकत्ते या और शहरों में इतना नहीं है, पंजाब और दिल्ली में भी नहीं।

७ दिसंबर : तुलसी तालाब घूमने गया। दिन में हरचंदराय जी के जीमा। छाछ पी। शाम को मरीन ड्राइव की तरफ घूमने निकल गया। ताजमहल होटल में गया। इन होटलों में मौज-शौक में बहुत खर्च किया जाता है। एक प्रकार की शान समझी जाती है। मेरी समझ में ऐसा करना बहुत बड़ा धोखा है। परंतु लोग ऐसा धोखा देना और खाना पसंद करते हैं। यह ताज्जुब की बात है।

९ दिसंबर : तास बहुत खेलता हूँ। मन लग जाता है। कोई खास काम नहीं है। ५ बजे सेकसरिया के उधर कोरथ में गया। देवी बाबू मिले। ८॥ बजे बारात आयी। बहुत लोग थे। शादी-ब्याह आजकल सब रुपयों की माया है। यही शान बढ़ाती और घटाती है।

१० दिसंबर : सुबह बस में बैठकर 'गेटवे ऑफ इंडिया' आया। टोस्ट खाये, चाय पी। जहाज में बैठकर समुद्र में ६ मील 'एलिफेंटा केव' देखने गया। कोई खास नहीं है परंतु घूमने के लिए एक रकम ठीक है। १५ आदमी थे, तास खेली, काफी अम्यूजमेंट रहा। आज ८०) के नोट फिर खो दिये। शायद चोरी हो गये। मेरी ही भूल है। अभी तो बहुत यात्रा करनी है। रुपये कम हो रहे हैं।

सूरत-अहमदाबाद

११ दिसंबर : सुबह ६ बजे सूरत पहुँचा। बाजार गया। एक कप चाय पी। ताप्ती नदी देखी। मूल नाम शायद 'तपती' है। पुराना शहर है। कभी बहुत बड़ा बंदरगाह रहा है। हिंदुस्तान का समुद्री व्यापार यहीं से होता था। ९। बजे बड़ौदा के लिए चल पड़ा। अच्छी जगह है। शहर बढ़ रहा है, व्यापार भी। महाराजा का पुराना महल देखा। कीमती चीजें थीं। राजा का राज होता था। धन-संपत्ति भी सबसे ज्यादा उसके पास। प्रजा के लिए बहुत कम राजाओं ने खर्च किये हैं। परंतु बड़ौदा के राजा ऐसे नहीं थे। गायकवाड़ों ने विद्या-प्रचार के लिए अंग्रेजी जमाने में बहुत कुछ किया, इतना राजपूताना के राजाओं ने नहीं। बीकानेर दरबार ने तो कुछ भी नहीं।

बड़ौदा साफ-सुथरा लगा। ५ बजे बड़ौदा से अहमदाबाद के लिए रवाना हुआ। ८ बजे पहुँचा। रात का समय था, कुछ खास देख नहीं सका। बड़ी मस्जिद देखी। मंदिर को तोड़कर मस्जिद खड़ी की गयी है, मुगलों के जमाने में। कपड़े की मिलें यहाँ हैं, कारबार भी है।

आबू

१२ दिसंबर : ७॥ वजे सुवह आवू रोड पहुँचा। सरदी काफी थी। ८ वजे वस में वैठा, आवू ९-१५ वजे पहुँचा। वहुत ही सुंदर झील देखी। रघुनाथ जी का मंदिर और धर्मशाला देखी। भोजन अच्छा मिला। पेशाव में थोड़ा खून आया। २ वजे अर्वुदा देवी पहुँचा। पुरानी मूर्ति है। २॥ वजे दिलवाड़ा मंदिर। देखने लायक है। जैनियों का है। पत्थरों का काम वहुत सुंदर है। अर्वुद पर्वत ऐतिहासिक स्थान है। पुराणों में भी इसका नाम आया है। राजा-महाराजों की वहुत सुंदर कोठियाँ भी हैं। स्वास्थ्य की जगह है।

नाथद्वारा-उदयपुर

१३ दिसंबर : नाथद्वारा स्टेशन से वस में ७ मील नाथद्वारा कस्वा आ गया। साधारण सा है, गंदा भी। मंदिर वंद था, दर्शन नहीं हुए परंतु ।–) में खाना वहुत ही अच्छा खाया। थोड़ी देर इधर-उधर घूमता रहा। पुष्टिमार्गी वैष्णवों का तीर्थ है। कहते हैं कि मथुरा पर जव मुसलमानों का आक्रमण हुआ तो श्री जी को यहाँ ले आये। ११ वजे वस में वैठा। उदयपुर २ वजे पहुँचा। रास्ते में एकलिंग जी के दर्शन किये। सीसोदिया राणाओं के पूज्य हैं। एकलिंग महादेव की वड़ी प्रतिष्ठा है। उदयपुर में महल वगैरह देखे। वहुत ही सुंदर हैं। शांत जगह है, दृश्य भी अच्छे। सूरज महल देखा। पिछोला झील और उसके वीच जलमहल देखने लायक है। शहर अच्छा लगा। लोग भले और ईमानदार। राजपूती शान यहाँ अव भी दिखायी पड़ती है। चीजें सस्ती मिल जाती हैं। शाम की गाड़ी से चित्तौड़ के लिए रवाना हो गया। १० वजे पहुँचा। रात थी, ठंड भी। स्टेशन पर ही सो गया। अच्छी नींद आयी।

चित्तौर

१४ दिसंवर : वाजार मामूली सा है। ९ वजे के अंदाज देखने निकला। १० वजे ताँगा लेकर चित्तौड़गढ़ देखने गया। पहाड़ पर है। साथ में ४ आदमी राजनांद गाँव के मिल गये। किला देखते हुए १२॥ वज गये। काफी वड़ी जगह है। कितनी चोट सही इस किले ने। जयमल-पत्ता, मेवाड़-चित्तौड़ की साकाओं की वातें, राजपूतों के वलिदान की गाथाएँ दिमाग में घूम रही थीं। मीरावाई का मंदिर, गोमती, गंगा, सांगा का महल, पद्मिनी के जौहर का स्थान और भी वहुत कुछ देखा। लौटकर जैन-गुरुकुल में भोजन किया। अच्छा सुस्वादु था। स्टेशन आ गया। १॥। वजे की गाड़ी में वैठकर ८ वजे अजमेर आ गया। सेकेंड क्लास में वैठा, आराम रहा। फिर ८॥ वजे जयपुर के लिए ट्रेन पकड़ी। रास्ते में काफी ठंढ थी। शाम को खाना कुछ नहीं खाया। तवीयत वहुत दिनों वाद कुछ ठीक मालूम पड़ी।

१५ दिसंबर : बहुत गहरी नींद आयी। सुबह ५ बजे अंदाज आँखें खुलीं। बस में बैठकर गांधी नगर आया। रेडियो जी के घर डेरा लगाया। बहुत लोग आये थे, एक मजमा-सा लगा था। रिलीफ सोसाइटी में गया। आर० मोर मिले। उनके साथ बैठकर बाजार आ गया। कांग्रेस का जुलूस देखा। बहुत बड़ा था। लोगों में उत्साह बहुत है। फिर गांधी नगर आ गया। कपड़े वगैरह लेकर आर० मोर के आ गया। जयपुर शहर घूमा। पहले से बड़ा हो गया है। राजपूताने में जागृति आ रही है, ऐसा मालूम होता है।

१६ दिसंबर : दिन में कांग्रेस की सबजेक्ट कमिटी की मीटिंग थी, पंत जी का भाषण बहुत जोरदार रहा। नेहरू जी भी बोले। बात ठीक है, हिंदुस्तान को बढ़ाने के लिए सबका सहयोग चाहिए। सारी जिम्मेदारी अब हम लोगों की है। आर० मोर के यहाँ ठहरने पर मुझे काफी आराम हो गया है। मन भी लग गया है। शाम को पृथ्वी थियेटर्स का 'पठान' देखा। अच्छा लगा।

१७ दिसंबर : सुबह गांधी नगर गया। कांग्रेस की मीटिंग में भी। मेरा मन करता है कि कुछ काम करूँ। राजनीति में आने से बहुत लोगों के लिए कुछ किया जा सकता है। मेरे लिए तो हमारे गाँव के लिए काम करना ठीक रहेगा। बहुत पिछड़ा है। परंतु मुझ में इतनी योग्यता कहाँ? भाषण देना नहीं आता। झेंप भी आती है। फिर जानकारी भी इतनी नहीं। पार्टी में जीमा। काफी चहल-पहल रही। त्रिलोकचंद चोपड़ा और मदन लाल जी दूगड़ भी थे। लाला जी बराबर आते रहते हैं। मोहनलाल जी जालान के साथ एक्जिबिशन देखी।

१८ दिसंबर : कोई खास बात नहीं। पृथ्वीराज कपूर की पार्टी में गया। कह रहे थे, हिंदी में नाटक अभी ऊँचे स्टैंडर्ड का नहीं है। लिखे भी बहुत कम गये हैं। मराठी का स्टेज अच्छा है, बंगला का रंगमंच भी ठीक-ठीक है।

१९ दिसंबर : रतन भरतिया के साथ घूमता रहा। लाला जी के साथ गांधी नगर आया। लोग मुझसे राजनीति में काम करने कहते हैं। परंतु मेरा मन अभी कमती है। आमेर गया। पुराना शहर है, पुराना नाम अंबर या आंबेर है, शायद अंबामेर से बना। यहाँ बहुत पुराना एक मंदिर देखा। पहले मीना राजाओं का राज था। पुराना किला देखा। चित्तौड़ वाली बात नहीं है। रात में ९ बजे पृथ्वीराज का 'दीवार' देखा। कुछ कमती जँचा। पृथ्वीराज के माफिक नहीं था। सिर्फ बंटवारे की भावना को उभार कर रखा था।

२३ दिसंबर : राहुल जी से वातें हुईं। वताते हैं, तिव्वत में संस्कृत, पाली और तिब्बती में वहुत पुराने ग्रंथ हैं। टेकनिकल, मेडिकल, तंत्र वगैरह के हैं। इन पर काम कराना जरूरी है। अव तक सिर्फ बौद्ध साहित्य पर थोड़ा काम हो सका है।

२४ दिसंबर : राहुल जी तथा सेंगर जी के साथ सुवह लेक गया। वातचीत होती रही। सेंगर जी कह रहे थे, एशियाटिक सोसाइटी में वहुत कीमती मैनस्क्रिप्ट हैं। अंग्रेज अव चले गये। इन पर ध्यान नहीं दिया गया तो सव नष्ट हो जायेंगे या चोरी चले जायेंगे। मुझे वात जँचती है।

३१ दिसंबर : वंदी थी। दिन में वंगाल मिल गया। ३।। वजे फिरती आकर वाइफ के साथ न्यू मार्केट में चीजें खरीदने गये। तवीयत ठीक रहती है। इस वर्ष अंदाज १० लाख पैदा किया है। परमात्मा की मर्जी है।

१९४९

कलकत्ता

१ जनवरी : सुबह ७ बजे उठा। मैदान गया। ८ बजे से चीजें खरीदनी शुरू कीं। १२ बजे अंदाज एंड्र्यू के। १ बजे स्नान कर १॥ बजे क्रिस्टी के, २ बजे अलेकजेंडर के घर गये। केइलर के भी। सब १०००) की चीजें दीं। भाई जी दौलतराम जी काफी बीमार हैं। ७॥ बजे टामस साहब के गया। सब जगह सत्यनारायण साथ था। ८॥ बजे तक टामस साहब के था। काफी बातचीत हुई।

२ जनवरी : १२ बजे से १ बजे तक गद्दी में था। फिर बेलिया के उधर ताश खेला। ४॥ बजे मदर से फोन पर बात कर खाँ साहब के घर तिलजला रोड पहुँचा। उधर कोढ़ी लोगों को देखा। मदर बहुत सेवा का काम कर रही हैं। चमारों की बस्ती में गया, खाँ साहब काफी काम करते हैं। हमारे धर्म के आचार्य लोग दीन, दुखी और बीमारों की सेवा मिशनरियों की तरह क्यों नहीं करते? इनके पास धन की कमी नहीं। अगर काम करें तो और भी मिलेगा। परंतु हिंदुओं का दुर्भाग्य है। यहाँ के काम से खुशी हुई। मैंने १००) दिये। बस्ती में काफी समय लग गया। सिनेमा नहीं जा सका। पाट का बाजार समान है।

४ जनवरी : जालान के घर गया। उनकी पुत्रवधू विधवा है। १७ वर्ष की, उसका भतीजा विधुर है सगाई के वास्ते। १२ बजे ऑफिस गया, १०,००० मन लडलौ का काम किया, तोसा का। बाजार काफी मंदा है। पढ़ना-लिखना है नहीं, मन में दुश्चिंता हो जाती है।

५ जनवरी : विधवा-विवाह-सहायक-सभा में गया। कुछ संबंधों की बात की। ऑफिस में ४००० डी० आर० का काम किया। ४१% में। बाजार की टेंडेंसी समान में स्टेडी है। बोरा हेसियन मंदा है।

८ जनवरी : गोरखन जी का देहांत कल रात १२ बजे हो गया। साथ गये, ९ बज गये। सुबह उनकी स्त्री और माँ रो रही थीं। बड़ा हृदय-द्रावक दृश्य था। मन बहुत दुखी हो गया। मनुष्य जन्म लेता है तो खुद रोता है, मरता है तो सबको रुलाता है।

९ जनवरी : १ वजे हिंदुस्तान क्लव में गया। परदा-निवारक सभा की मीटिंग थी। ऐसा लगता है परदा की समस्या अब कोई वड़ी नहीं रही। लिखने-पढ़ने से आप से आप कम हो जायेगी। परंतु देस-गाँव में परदा-निवारण वहुत ज़रूरी है। वहाँ कोई खास काम नहीं हो रहा है। 'श्रीरंगम' में ६॥ वजे से ९॥ वजे तक 'विप्रदास' देखा। वहुत ही अच्छा लगा। आजकल कुछ पब्लिक वर्क कर रहा हूँ।

१४ जनवरी : मैथिलीशरण गुप्त के लिए हिंदुस्तान क्लव में पार्टी थी। मेरा नाम भी था। आदमी जितने वुलाने चाहिए उससे वेशी वुला लिये। भीड़ काफी थी, आयोजन भी सक्सेस रहा। मैंने तो रात में १० वजे आकर हलवाई के खाया।

१६ फरवरी : सुवह चंदेवालों के साथ गया। इसके वाद १२ वजे एक मोटर में वैठकर सेंगर जी, नत्थू, महावीर, मैं, रामकुमार जी सव कोई देवानंदपुर गये। कई वार आ चुका हूँ। मन नहीं भरता। शरद का यह गाँव मेरे लिये तीर्थ है। शरद के चरित्रों में अपने मन की वात पाता हूँ। वहुत शांति मिलती है। हम लोगों ने फल लिये। रघुनाथ जी खेतान वगैरह थे। उन्होंने ५००) दिये। शाम तक वापस आ गये। मैथिलीशरण गुप्त के साथ स्टार थियेटर में गये। ९। वजे तक घर आ गये। खेल अच्छा था।

१८ जनवरी : विश्वमित्र में मेरे नाम से खवरें निकली हैं, काफी वड़े टाइप में। लोगों ने मुझसे कहा 'एडवांस' में भी निकली हैं, परंतु वह इतनी ज्यादा नहीं।

१९ जनवरी : सुवह से ही विवाह के कार्य में लगे रहे। अखवारों में भी विधवा-विवाह की खवर थी। ३॥ वजे वसंतलाल जी मुरारका के घर प्राय: २००० आदमी और ४०० औरतों का अच्छा जमाव हुआ। वाइफ और मनीवाई भी गयी थी। काफी वड़ा फंक्शन था। रात में ९ वजे लौटा। किताव मेरे नाम से निकली थी। मेरा काफी हाथ था। मैं कुछ वोला भी पर खास अच्छा नहीं वोल सका। फिर भी मुझे आज वहुत संतोष है, खुशी है।

२१ जनवरी : कामकाज कुछ खास नहीं। वी० ट्विल का भाव काफी मंदा है। कुछ पब्लिक वर्क करता हूँ किंतु वोलता वहुत हूँ, कमती वोलना चाहिए।

२४ जनवरी : आज झूठ नहीं वोलने की प्रतिज्ञा की, पर शायद चली नहीं।

२७ जनवरी : लालाजी के साथ मैदान गया। सारे रास्ते मोटर चलाकर ले गया। ड्राइविंग में हड़वड़ी करता हूँ, ठीक नहीं। ऑफिस में कुछ खास काम नहीं। वी० ट्विल का वाजार समान है। मेरे सौदा रखा है। राधाकृष्ण जी कानोडिया का चंदा लिखा गया। फिर मदन जी सेकसरिया से भी लिया। उनका लड़का विधवा-विवाह कर रहा है।

३० जनवरी : महात्मा गांधी को गये एक वर्ष हुआ। हम सोचते थे, महात्मा जी के वाद क्या होगा परंतु दुनिया का काम चल रहा है। अगर सव कुछ अपने हाथ में वे रखते

तो गोलमाल होता परंतु उन्होंने सब कुछ पाकर कुछ भी अपने हाथ में नहीं रखा। संतों के लक्षण हैं। फिर भी फर्क कुछ पड़ रहा है। उनके व्यक्तित्व के सामने सब छोटे थे, अब अपने को बड़ा मानते हैं।

२ फरवरी : ५ बजे सुबह उठा। कई जगह फोन किये। शांति भवन गया। लोग इकट्ठा हो रहे थे। करीब २५ मोटर, ३ वैन गयी। सब २०० आदमी और स्त्रियाँ कलकत्ते से रानीगंज गये। मैं सुगला जी को उनके घर से लेकर रेल से गया। मेरे पास से ५०) खर्च हुए। १॥ बजे ट्रेन पहुँची। मेरे मन में एक रकम चिंता होती है। विधवा-विवाह में मेरा नाम होता है। कइयों को ईर्ष्या होती है। उपाय क्या ? मैं नाम देने और लिखने को मना करता हूँ पर लोग सुनते नहीं। विवाह के अवसर पर किताब बँटी संयोजक में मेरा नाम था। विवाह काफी धूमधाम से हुआ। मोटर से १०॥। बजे कलकत्ता वापस आ गया।

७ जनवरी : गंगा जी गया, तेल मालिश और स्नान किया। ऑफिस गया। इसाक साहब से काफी बातचीत हुई। ५ बजे बिड़ला पार्क गया। काफी भीड़ थी। विधवा-विवाह की चर्चा हो रही थी। ५॥। बजे भँवरमल जी के घर गया। काफी लोग आये थे। प्रायः १००० आदमी होंगे। विवाह खुशी से हुआ। जयप्रकाश बाबू भी आये थे। मैंने भी कुछ कहा। मन में संतोष-सा हो रहा है। कामकाज सुचारु रूप से चल रहा है।

१२ फरवरी : विधवा-विवाह में काफी इंटरेस्ट ले रहा हूँ। काम भी आगे बढ़ रहा है। लोग चर्चा करते हैं, अखबारों में नाम छपता है। परंतु बात भी बहुत रकम की सुननी पड़ती है। एक पंडित ने कहा, विधवाओं का व्याह करवाते हो क्वाँरी कहाँ जायँगी ? मैंने कह दिया कि समस्या विधवा की है, क्वाँरी की नहीं। ७ ता० के विधवा-विवाह का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। खास काम पुरुषोत्तम जी और मैं, दोनों करते हैं। लोग कहते हैं, नन्दू की सगाई करेंगे क्या ?

१५ फरवरी : विधवा-विवाह था। लड़की वालों ने कुछ भी खरच नहीं किया। सभा के ५००) -६००) खर्च हुए। रात में घर जाकर मन में काफी संतोष हुआ। उत्साह भी बढ़ा। और भी विवाह होंगे। मुझे विधवा कन्या के विवाह पर उसके चेहरे से दुख हटता सा दिखाई पड़ता है, इससे खुशी होती है।

१६ फरवरी : मैदान जाता हूँ। बेशी घूमना होता नहीं, कसरत भी नहीं। सबसे मिलना जरूर हो जाता है। परंतु ऐसा घूमना ठीक नहीं। खुली हवा में नंगे पैर हरी घास पर मौन रहकर घूमना चाहिए। मैं मौका खोता हूँ, गोल में बैठ जाता हूँ, बात बहुत करता हूँ। ऑफिस गया, साहब लोग वेट कर रहे थे। सैदपुर का काम ठीक चलता है। मेरा मन क्या चाहता है, कोई समझता नहीं, शायद मैं भी नहीं।

१७ फरवरी : लड़के से मिला। वह कहने लगा, जिस लड़की से मेरी सगाई की बात चल रही है, वह दुराचारिणी है। मुझे कैसा सा लगा, वह झूठ कह रहा था। मैंने उससे कहा

कि तुम्हें पसंद नहीं, मत करो, परंतु किसी के चरित्र पर लांछन लगाने का हक नहीं। वह कुछ नाराज-सा हो गया। मैं और लोगों के पास वातचीत के वास्ते गया। मेरा घरेलू जीवन एकदम नीरस हो गया है, वातचीत भी कम होती है। शायद धन और प्यार एक जगह नहीं रह सकते।

१९ फरवरी : वाइफ भी खिंची सी रहती है। वातचीत पूरी तरह नहीं करती। कल रात कहती थी, नन्दू का विवाह किसी तरह हो जाना चाहिए, चर्चा हो रही है। इन लोगों को डर है कि मैं उसका विधवा विवाह करा दूँगा। बिना वापू जी की आज्ञा के मैं कैसे कर सकता हूँ? मेरी कोशिश रहती है, विधवा-विधुर के लिए। गद्दी गया। भाई जी नाराज से हो रहे थे। शादियाँ हो रही हैं, विवाहवालों के गया। शादियों में दिखावे पर रुपये पहले से ज्यादा खर्च होने लगे हैं। नतीजा अच्छा नहीं होगा।

२१ फरवरी : विक्टोरिया निज में गाड़ी चलाकर ले गया। लाला जी साथ थे। लौटती दफे चिरंजीलाल जी वाजोरिया के गया, वीमार हैं। ऑफिस गया। कामकाज तो है ही नहीं।

चटगाँव

२२ फरवरी : ६ वजे सुबह सत्यनारायण के साथ एरोड्रोम गया। ७ वजे प्लेन उड़ा। काफी आराम था। ८।। वजे चटगाँव पहुँच गया। काफी अच्छी जगह है। एक तरफ समुद्र, दूसरी तरफ पहाड़। अच्छा बंदरगाह है। ऑफिस अच्छी जगह पर है। वाजार साधारण है, पर कारवार काफी वड़ा मालूम देता है। खाना अच्छा नहीं मिला। वेजिटेवल का था। खा नहीं सका, फीका सा लगा। दिन में लोगों से मिलता-जुलता रहा। हिंदू तो धीरे-धीरें एक रकम सेकेंड क्लास सिटिजेन होते जा रहे हैं। व्यापार में पंजावी और विहारी मुसलमान ज्यादा आ रहे हैं, पुलिस में भी। कुछ लोगों ने वताया कि चटगाँव में हिंदू ज्यादा थे। अगर इंडिया कोशिश करती तो यह हिस्सा पाकिस्तान में नहीं आता। मगर अव क्या होता है? चटगाँव की यात्रा ठीक रही।

कलकत्ता

२४ फरवरी : दो विधवा-विवाह भँवरमल जी सिंघी के मकान में एक साथ हुए। पहले में काफी धूमधाम थी पर दूसरा विवाह जव हुआ तव लोगों ने काफी आलोचना की। कारण समझ में नहीं आया। फिर भी, विवाह में काफी आदमी थे, लोगों में उत्साह था।

३ मार्च : टामस साहव की पार्टी में शाम को ५ वजे गया। २५-३० आदमी थे। विधवा-विवाह के काम में जिम्मेदारी वहुत है। लड़कों के चुनाव में काफी टाइम लग जाता है। दिन में गउशाला की 'ट्रस्ट डीड' रजिस्ट्री करा दी।

६ मार्च : दिन में गउशाला की मीटिंग थी, चौधरी की गद्दी में, उधर गया। मैं समझाना चाहता हूँ कि चंदे और दान के रुपयों पर गौशालाएँ ज्यादा दिन नहीं चलेंगी।

इन्हें अपनी व्यवस्था करनी पड़ेगी। पुराना तरीका बदलना होगा। २।। बजे कई जगह चंदे के लिए गया। काफी सफलता मिली। 'गाय' और 'धर्म' नाम पर लोग चंदा दे देते हैं। कोई भी नहीं पूछता कि किस वास्ते रुपये लगेंगे, आज भी लोगों में गो-भक्ति है। शाम को तुलसीराम जी के भाई के विवाह में गये। लड़की रिफ्यूजी थी। विवाह कराने में मेरा काफी हाथ था। मुझे बहुत शांति मिली।

७ मार्च : सुबह बिरधी चंद जी करवा के साथ गौशाला के चंदे में गया। काफी सफलता मिली। ऑफिस में आजकल कामकाज एकदम नहीं है। मन उचट जाता है। और भी कामकाज की कोशिश करनी चाहिए। बिरजू बुवड़ी है। सैदपुर में पहले की तरह पैदा नहीं रही।

१४ मार्च : काफी धूम सी थी। आज होलिका-दहन है। प्रह्लाद की कथा-कहानी में कितनी सचाई है, मालूम नहीं। परंतु तत्व यही है कि सत् का असत् कुछ बिगाड़ नहीं सकता। ९। बजे ऑफिस गया। एंड्रयू साहब भी था। विलायत ऑफर दिया। रात में कवि-सम्मेलन तथा नाच देखने युनिवर्सिटी इंस्टीच्यूट गया। मुझे भी प्रोग्राम में लिया गया। मैंने छोटी सी हँसी की। आजकल 'गृहदाह' पढ़ रहा हूँ। अच्छी किताब है।

१५ मार्च : बैजनाथ जी केडिया के गया। कल शाम को ८ बजे उनका लड़का २६ वर्ष का चलता रहा। बहुत दुख हुआ। मीठा स्वभाव, हँसमुख चेहरा। स्वास्थ्य भी अच्छा था। दो छोटे बच्चे, एक लड़की है। पता नहीं, भगवान् की कैसी मर्जी है।

१९ मार्च : ८ बजे मीटिंग थी, विधवा-विवाह-सभा थी। ९।। बज गये। समाज में अब ऐसे विवाह का विरोध धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। यह अच्छी बात है। परंतु इस काम में बड़े लोगों को और सभी जाति के लोगों को आना चाहिए। शाम को ४ बजे डा० लोहिया का भाषण सुनने गया। बहुत ही अच्छा था। रात में बहुत देर तक लोहिया जी की बातें सोचता रहा। शायद पब्लिक उनकी बातों को कम समझेगी। शिक्षा कम है, धर्म के लिए ज्यादा झुकाव है।

२० मार्च : ११ बजे त्रिपाठी जी, सेंगर जी, बिरधीचंद जी करवा वगैरह जीमने आये। समाजवाद पर काफी बात चली ; मैंने रातवाले अपने विचार सुनाये। रात ९।। बजे डा० लोहिया आये। ११ बजे तक थे। बहुत विद्वान् हैं, पढ़ते रहते हैं। इसीलिए जो बोलते हैं, उसमें नुक्स नहीं होता। बहुत तरह की बातें हुईं। वे कहते हैं, शक्ति और अधिकार का एक जगह या कुछ लोगों के हाथ में रहना बहुत खतरनाक है। चाहे वह धन की हो या शासन या विद्या की। इससे शोषण बढ़ता है। कम्युनिज्म और सोशलिज्म में बहुत फर्क है। सोशलिज्म मनुष्य को विकास करने का जितना मौका देता है, कम्युनिज्म और कैपिटलिज्म उतना नहीं। बहुत अच्छी तरह समझाते रहे। मेरा मन करता है कि इनकी तरह कुछ करूँ। परंतु अच्छे काम अच्छे लोगों से होते हैं, सबसे नहीं।

२६ मार्च : रात ८ बजे मुशायरा में गया। १२ बज गये। 'जोश' की कविताएँ अच्छी लगीं। औरों की कोई खास नहीं। अरबी, फारसी के कठिन शब्द लगाकर सबके

लायक नहीं रखते। उर्दूवाले इश्क छोड़कर दूसरे विषय पर शायद कम लिखते हैं। सब में कलेजा, जिगर, खून, आँसू रहता है। खंजर-कटारी से घायल पड़े रहकर रोते-चिल्लाते हैं।

२७ मार्च : भंवरमल सिंघी के उधर सेंगर जी का व्याख्यान सुनने गया। काफी अच्छे लोग आये थे। स्त्रियाँ भी थीं। २-३ महिलाओं को देखा कि कितनी होशियार और सुंदर लग रही थीं। गरीब तो जरूर हैं पर धन और रूप से सुंदरता नहीं आती। गुण चाहिए। उसमें चमक और तेज निजी होता है। सेंगर जी 'लाइट हाउस फॉर द ब्लाइंड' की मार्फत अन्धों की बहुत सेवा करते हैं। बहुत अच्छा काम है।

१ अप्रैल : कामकाज तो आजकल एकदम नहीं है। १५००००) दलाली के और ५००००) बिरजू के हिसाब के होकर २ लाख अब तक हो जायेंगे। विधवा-विवाह का काम कर रहा हूँ। परंतु आजकल फालतू खर्च भी करने लगा हूँ। नेहरू जी की सही की हुई तस्वीर को ६५०) में लेना ठीक नहीं रहा। ऐसे नाम और काम से क्या फायदा ?

३ अप्रैल : टामस साहब और उनकी पत्नी को पार्टी दी थी। ५ बजे उसमें गये। बहुत से लोग आये थे, करीब ७॥ शाम को प्रोग्राम खत्म हुआ। ५००)-६००) खरच जरूर हुए परन्तु आनंद बहुत रहा। अच्छे लोग आये थे। समाज में प्रभाव एवं संबंध बनाने के लिए आजकल इस ढंग का प्रोग्राम करना जरूरी है। बाजार मंदा है।

८ अप्रैल : बाजार मेरे ध्यान में मंदा है। बी० ट्विल में काफी घटाबढ़ी सी है। टामस साहब के घर गया, वे लोग बहुत राजी हैं।

१० अप्रैल : मेरी डायरी में आज के पृष्ठ के ऊपर लिखा है, 'अपने क्षण-क्षण का लेखा अवश्य रखो।' बहुत कठिन काम है। दिन, महीना, बरस का लेखा नहीं सरता, मिनट का कौन कर सकता है ? साधु महापुरुषों का काम है। यदि सर जाये तो मनुष्य गलती कर नहीं सकता। भँवरमल जी सिंघी के घर ताराशंकर बाबू का प्रवचन सुना। अच्छी गोष्ठी थी। मुझे ताराशंकर बाबू और प्रेमचन्द की बहुत सी बातें एक सी लगती हैं। परंतु प्रेमचन्द ने जो गरीबी देखी वह शायद इन्होंने नहीं। ७॥ बजे पुरुषोत्तम जी केजड़ीवाल के गया। बहुत सी लड़कियाँ और औरतें आयीं हुई थीं। काफी गाना-बजाना हुआ। १०॥ बजे घर वापिस आया। आज का, रविवार का दिन फालतू सा ही गया। लेखा-जोखा है कि ताराबाबू के साथ का समय ज्ञान बढ़ाने का रहा।

१३ अप्रैल : फालतू समय बीतता है। मैं समय का उपयोग नहीं करता। बहुत बोलता हूँ। मुझे पढ़ना चाहिए। मन ठीक रहता है। ९ बजे रात स्टेशन पर आया। इंटर क्लास में बैठा। काफी तकलीफ पायी। गाड़ी में बैठे-बैठे विचार आया, इस तरह तक-

लीफ पाना तो शरीर और मन के लिए अच्छा नहीं। थोड़े पैसे बचाने की कोशिश में बाद में स्वास्थ्य और पैसा दोनों को खोना पड़ेगा।

भागलपुर

१६ अप्रैल : सुबह ५ बजे ही उठ गया। आसमान साफ था। थोड़ा घूमा। अच्छा लगा। खुली हवा में चित्त प्रसन्न हुआ। दूध बहुत अच्छा मिला। कलकत्ते के बहुत से दोस्त आये। काफी उत्साह रहा। शाम को नाटक हुआ। मैंने 'श्रृंखला की कड़ियाँ' किताब सब लड़के-लड़कियों को देने का वादा किया। वैसे यहाँ मेरी पूछ भी है। झेंप होती है परंतु अच्छा लगता है। कल मेरा भी भाषण होगा।

१७ अप्रैल : सुबह ५ बजे उठा। रात की नींद थी, थोड़ी सी थकान भी। अभिनव भारती बच्चों के स्कूल में गया। मन लग गया। मैं भूल गया कि ४० वर्ष का हूँ। फिर गंगा जी गया। पानी साफ है, कलकत्ते की तरह गँदला नहीं। डटकर स्नान किया। २॥ बजे मीटिंग में गया। ३ बजे अंदाज मैं भी बोला। परंतु मुझे अपना भाषण जँचा नहीं। मन खिन्न हो गया। मैं चाहता था कि यह बताऊँ कि अब समाज की जिम्मेदारी बढ़ गयी है, आजादी के बाद से। इसलिए हमलोगों का हर काम इसका ध्यान रखकर होना चाहिए। इस बात को ठीक जँचा कर समझा नहीं सका।

कलकत्ता

५ मई : बिरजू की तबीयत खराब है। खाँसी बहुत आती है, चिंता की बात है।

९ मई : सुबह मैदान गया, थोड़ा घूमा। ऑफिस गया, २०००० मन का काम किया। मन एक रकम प्रसन्न था। बिरजू ठीक है, ३ पौंड वजन बढ़ा है। शनिवार को जायगा। दिन में सगाई वाले २-३ आदमियों से बातचीत की। रात में खर्च का हिसाब लिखा।

१२ मई : परसों जाने का विचार है। विवाह वाले बहुत दबाव दे रहे हैं। पर उपाय तो कुछ है नहीं। ऑफिस में कामकाज भी नहीं है। जाना ही होगा।

रेल-दिल्ली

१५ मई : मुगलसराय सुबह पहुँचे। महादी बाई आयी। मा जी को ३००) दिये। महादी, परमा को १००), बच्चों को ७१)। रास्ते में गरमी बहुत लगी। रात को ९ बजे दिल्ली पहुँचे। १ बजे की गाड़ी से कसौली के लिये बैठे। बिरजू की तबीयत वैसे ठीक बताते हैं। परंतु खाँसी आती है, टेंपरेचर भी रहता है। रास्ता ठीक से कट गया। राहुल जी की किताब पढ़ता रहा। नींद एक रकम आ गयी।

कसौली

१६ मई : अंबाला में दिन उग गया। भोर को दिन उगता देखने पर मन में अच्छे विचार आते हैं। मनुष्य अपने को खोज सकता है। मेरे कई बार इस तरह हुआ।

परंतु मैंने अपने को पाकर भी वार-वार खोया है। इसी कारण ऊपर उठ नहीं पाता हूँ। किताव पढ़ता रहा। ९ बजे ट्रेन कालका पहुँची। मास्टर जी कालका में मिल गये। १०।। वजे कसौली पहुँचे। विरजू के लिए मन में वहुत रकम के विचार आ रहे थे। कसौली में मुस्तफी वावू मिले। जुगल जी मिले। बहुत भले आदमी हैं। करीव ५ बजे डाक्टर जोसेफ से मिला। फोटो देखकर वोला कि रोग जिस हालत में है शायद थोरोकोप्लास्टिक हो सकती है। चिंता काफी हुई। पसलियों की हड्डियाँ काटनी मामूली वात नहीं, परंतु उपाय क्या।

१७ मई : रात नींद नहीं आयी। क्लाइमेट अच्छी है परंतु मन में अशांति रही। सुवह २।। मील घूमा। शाम को सिनेमा देखा। विरजू की वात मन से हटती नहीं थी। इंटरवल में जाकर खाना खा लिया। कलकत्ते को, भाई जी को चिट्ठी लिखी। शाम को वाजार गया, पहले से कुछ वढ़ा है। लाइब्रेरी जाकर अखबार पढ़ता रहा। नेपाल की खवरें हैं। राणाशाही तो हटेगी पर राजा का राज रहेगा। त्रिभुवन शाह को प्रजा का पूरा सपोर्ट है।

डलहौजी

२२ मई : सुवह अमृतसर पहुँचा। नाश्ता-पानी किया। फिर ११। वजे पठानकोट। काफी गरमी मालूम पड़ी। भूख भी लग आयी थी। खाना मामूली मिला। छोटा सा कस्वा है परंतु स्ट्रेटेजिक जगह है। लगता है, यहाँ व्यापार वढ़ेगा। पाकिस्तानी रिफ्यूजी काफी वस गये हैं। कश्मीर जाने का विचार था परंतु परमिट की दरकार पड़ती है। थोड़ी-बहुत कोशिश की परंतु निराशा हुई। हिंदुस्तान का हिस्सा होकर भी इसे अलग वनाये रखना, ठीक नहीं। इससे तो नेपाल आना-जाना आसान है। हम लोगों को पाकिस्तान के ढाका, नारायणगंज, सैदपुर आने-जाने में दिक्कत नहीं होती। १ वजे की वस में बैठकर डलहौजी चला। रास्ते में गरमी वहुत लगी। पहाड़ी दृश्य दार्जिलिंग, शिलांग के माफिक नहीं है। जगह भी वैसी नहीं। ५ वजे डलहौजी पहुँचा। होटल में ठहरा। १) रु० रोज पर अच्छा कमरा मिल गया। शाम को वाजार में घूमा। वाजार छोटा है। मारवाड़ी नहीं दिखाई पड़े। वाजार शिमला की तरह नहीं, कसौली के माफिक भी नहीं। लगता है कि यहाँ पैसे वाले कम आते हैं। मध्यम श्रेणी के लोग आया करते हैं। चीजें कम महँगी हैं। इस पहाड़ी कस्वे पर ध्यान दिया जाय तो अच्छी जगह वन सकती है। दो-ढाई मील घूमा। ठंढ कसौली में ज्यादा है। वहुत आदमी दिखाई पड़े। विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर एवं सुभाष वावू यहाँ काफी समय तक रहे।

डलहौजी-ज्वालामुखी

२३ मई : ४।। वजे नींद खुली। कुछ-कुछ अँधेरा था। ठंढी हवा चल रही थी। हाथ मुँह धोकर थोड़ी कसरत की। कुछ पढ़ने की कोशिश की परंतु मन दूसरी ओर चला गया।

बिरजू के बारे में सोचने लगा। जवान है, धन की कमी नहीं परंतु कुछ भी नहीं, यदि तंदुरुस्ती नहीं। मैं इन्हें देखकर भी अपने को नहीं सम्हालता। अनियम करता हूँ। पेट खराब रहता है। परंतु भाग-दौड़ में कमी नहीं करता, खाने-पीने में परहेज नहीं रखता। मेरा क्या होगा? उपाय क्या, बुरी आदत छूटती नहीं, लोभ सवार रहता है। करीब ८ मील घूमा। दृश्य अच्छे लगे। शतधारा देखी। मुझे ऐसा लगा कि यह जगह शायद सदा से उपेक्षित रही है क्योंकि यहाँ कोई प्रसिद्ध तीर्थ अथवा देव-मंदिर नहीं है। मोटर अड्डे आकर पावरोटी-मक्खन खाया। ९ बजे रवाना हुआ और १२॥। बजे पठानकोट आ गया। एक बार मन में आया कि वैष्णोदेवी चला जाऊँ परंतु ज्वालामुखी का विचार आया और नगरोटा की बस में बैठ गया। आधे-पौन घंटे में ६ बजे तक ज्वालामुखी पहुँचा। मंदिर की धर्मशाला में ठहरा। स्नानादि कर तैयार हो गया। व्यस्त जगह नहीं है, यात्री भी कम। चारों ओर पहाड़ियाँ और जंगल सा। मंदिर में गया। कई जगह आग की छोटी-छोटी लपटें निकलती हैं। प्रकृति की लीला के प्रति भारतीय मन हमेशा झुका है। ज्वाला देवी शक्ति-पीठ मानी जाती हैं। यूँ यह ज़गह मुझे ऊपरी तौर पर कोई खास प्रभावित नहीं कर सकी। परंतु भावना के आगे सर झुक ही जाता है। रात नींद अच्छी आयी। थकान थी। दिन भर गरमी से परेशानी रही। रात को कड़ी सरदी, ओढ़कर सो गया।

मनाली

२६ मई : सवेरे ४॥। बजे उठा। सरदी थी। कसौली से बहुत ज्यादा। मुझे कुछ और गरम कपड़े और कंबल लाना चाहिए था। ७॥ बजे मोटर में बैठ कर मनाली को चला। रास्ते के सीन बहुत ही सुन्दर लगे। दार्जिलिंग, शिलांग से भी ज्यादा। दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़, घने जंगल, हरियाली। व्यास नदी चाँदी सी चमक रही थी। ९। बजे मनाली पहुँचा, होटल में ठहर गया। ठंढ बहुत है, कपड़े उस मुताबिक साथ में नहीं हैं। मुझे लगता है, यहाँ ज्यादा ठहरना नहीं हो पायेगा। घूमने निकल गया। दो मील पर थोड़ी ऊँचाई पर वशिष्ठ कुंड है, गरम पानी का स्रोत। खौलता पानी निकलता है। आस-पास कुंड बने हैं। काफी लोग एक साथ नहा सकते हैं। बर्फ पड़ते रहने पर भी यहाँ पानी उबलता है। कुंड में नहाया, तबीयत प्रसन्न हो गयी। थकान भी मिटी। कपड़े धोकर सुखाये। रोहतांग जाना चाहता था। वहाँ पास में ही व्यास ऋषि का स्थान है। यहाँ से व्यास नदी निकलती है। परंतु कपड़ों की कमी और ठंढ की वजह से नहीं गया। चेष्टा करूँगा, फिर कभी आऊँ, जरूर।

मनाली, कुल्लू मंडी

२७ मई : सवेरे से वर्षा हो रही थी। सरदी भी बहुत पड़ी। परंतु **दृश्य** सुहावना लग रहा था। पहाड़ की ढलान से वर्षा का जल तेजी से नीचे व्यास से मिलने जा रहा था,

सैकड़ों-हजारों झरनों के रूप में। मेरा बाहर निकलना नहीं हुआ। १२ बजे तक वर्षा का जोर कम हो गया। १२॥ बजे बस में बैठकर ३ बजे कुल्लू पहुँचा। बहुत सुंदर जगह है, सचमुच देवताओं की घाटी, जलवायु न बहुत गरम, न बहुत ठंढी। सुंदर दृश्य, शांत वातावरण, व्यास का साफ और ठंढा जल। पहाड़, हरियाली, मैदान, लोगों की शकल-सूरत भी खूबसूरत, मन में मस्ती। गरीबी बहुत है शायद इसीलिए यहाँ बुढ़ापा जल्दी आ जाता है। अभाव में कठिन परिश्रम शरीर को तोड़ देता है। हमारे रजवाड़ों ने अपने मौज-शौक पर बहुत खर्च किये, परंतु प्रजा का कुछ भी ध्यान नहीं रखा। ऐसी सुंदर जगह, इतनी हरियाली, इतना पानी फिर भी न तो खेती है, न बाग-बगीचे। कोई खास धंधा भी नहीं। अंग्रेजों ने इतने दिनों राज किया मगर उनके अफसर मौज उड़ाकर चले गये। गुलामी की ठोकर कितनी बुरी होती है।

मंडी

२८ मई : ४॥ बजे नींद खुली। सरदी बहुत थी, कसौली से बहुत बेशी। होटल मामूली था परंतु दूध मिल गया, पीकर निकला। बाजार छोटा-सा है परंतु मंडी अच्छी है। पहले मंडी रियासत की राजधानी थी। आसपास पुराने मंदिर बहुत हैं परंतु इनकी हालत अच्छी नहीं। व्यास नदी के बायें किनारे पर यह शहर बसा हुआ है। पहाड़ी लोग आसपास के गाँवों से आकर जरूरत की चीजें खरीदते हैं।

कसौली

३० मई : कल यहाँ आ गया था परंतु डॉ० जोसेफ से बात नहीं हो सकी। आज मुलाकात हुई। उसने कहा कि बृजलाल को अभी और १५ दिन आराम करना होगा फिर फोटो लेंगे। ५ ता० को जाने का मेरा विचार है। मेरी तबीयत ठीक रहती है।

कलकत्ता

२२ जून : विधवा-विवाह का काम आजकल कम हो रहा है। बाजार मंदा है। काम-काज कोई खास नहीं है। एक आदमी के मामले का फैसला किया। झूठ बहुत बोला। परंतु यदि नहीं बोलता तो सलटता नहीं। कमज़ोर के पास प्रमाण नहीं था, पायंट भी नहीं। उसको नुकसान हो जाता। बाद में पछतावा हुआ कि मुझे क्या दरकार थी झूठ बोलने की। फिर मन को समझा लिया कि अच्छे काम के लिए झूठ बोला।

२५ जून : जीम कर ऑफिस गया, बदन दुखता था। इसलिए १२ बजे गंगा जी गया। तेल मालिश कराया और खूब नहाया। उचित नहीं था। मुझे सुबह ही मालूम देता था बुखार होगा। बस में बैठकर घर वापस आया। बहुत जोर बदन दुखने लगा। बुखार १०३ डिग्री हो गया। मन में कई रकम की चिंता हुई। कई आदमियों को बुलाया। रात में बुखार कुछ कम हुआ।

१३ जुलाई : बिरजू की तबीयत बेशी खराब है। भाई जी हवाई जहाज से कसौली गये। सारे दिन मन खराब रहा। मैं जानेवाला था परंतु रुक गया, भाई जी ने मना कर

दिया। एंड्रयू साहब विलायत गये। उनको पहुँचाने गया। दिन में ३५००० मन का काम किया। बाजार समान में स्टेडी है।

१५ जुलाई : विरजू का कागज आया। तबीयत खास चिंता करने की नहीं है। दिन में २५००० मन का काम किया। बाजार समान है।

१७ जुलाई : पिकनिक पार्टी के साथ बेलूर से नाव में लौट रहा था। बहुत जोर का तूफान आया। काफी घबराहट-सी रही। नाव उलटने से कैसे बची, नहीं कह सकता। औरतें भी थीं। नाव से आना उचित नहीं था। वैसे पार्टी अच्छी रही।

१९ जुलाई : विरजू को शायद स्विटजरलैंड ले जाना होगा। वैसे तबीयत ठीक है। डॉ० लोहिया से मिला। कल शाम को साथ जीमने के लिए न्योता दिया। ६५०० मन लूज का काम किया। बाजार मजबूत। हेसियन बोरा बहुत ही गरम है।

२२ जुलाई : राँची जाने का मन है। बाहर जाने से तबीयत ठीक हो जायगी। बी० ट्विल के सट्टे में काफी घाटा हो गया है। मन में कुछ चिंता तो होनी स्वाभाविक है। वैसे चिंता से कोई छुटकारा नहीं पा सका। नेहरू जी, लोहिया जी के भी फिकर तो होती है पर हम सट्टेवालों की चिंता शरीर को गलानेवाली रहती है।

२३ जुलाई : भाई जी का फोन कसौली का था। विरजू की तबीयत ठीक नहीं है। चिंता हो रही है। मन उचाट सा है। मेरा वर्ल्ड टूर का प्रोग्राम कैंसल सा ही हो गया। 'मेरे मन कछु और है, कर्त्ता के कछु और'। सिंदूर देखा। अच्छी फिल्म है विधवा-विवाह पर।

२९ जुलाई : भाई जी कसौली से आये। उदास से थे। विरजू के बारे में बातचीत हुई। खास चिंतावाली बात तो मालूम नहीं देती। कल की मीटिंग के बारे में तैयारी करता रहा।

३० जुलाई : चंदेवालों के साथ कई जगह गया। कुछ लोग मेरी बुराई चंदे के लिए करते हैं। ईर्ष्या है, मुझे फिकर नहीं। पब्लिक वर्क में बदनामी होनी कोई खास बात नहीं। भगवान् की मर्जी, मेरे से कुछ अच्छा काम होता रहे।

२ अगस्त : हेसियन-बोरे में नुकसान-सा तो है ही। रुपयों का भी अड़ंगा-सा हो रहा है। शाम को जयप्रकाश बाबू से मिला। उनके पास हजामत का सेट नहीं है। मैंने कुछ कहा नहीं, बाजार से लाकर दे दिया। मुस्कुराकर बोले, मेरी हजामत का इंतजाम कर दिया? रात में 'साकेत' पढ़ता रहा।

४ अगस्त : इनकम टैक्स का अड़ंगा सीरियस-सा हो रहा है। अफसर लोग एक्सप्लेनेशन नहीं मानते। मनमानी आइडिया बना लेते हैं। थोड़ा तो निष्पक्ष होना चाहिए। मगर उपाय क्या। थोड़ी देर लाइब्रेरी में पढ़ता रहा। कमजोरी-सी फील कर रहा हूँ। कल सौदा बराबर कर दिया।

६ अगस्त : खेलिया के गया। तास खेला। गंगा जी पर तेल मालिश कराया परंतु

वदन में दर्द सा हो रहा है। पाट में हम लोगों के ५०००० रु० का नुक्सान है। इनकम-टैक्स का काम सलट रहा है परंतु चिंता सी तो है ही।

७ अगस्त : सुबह मैदान गया। वहाँ से लौटकर चीजें इकट्ठी कीं। ९। वजे स्टीमर घाट पहुँचे। १० वजे स्टीमर चला। १५० आदमी पार्टी में थे। काफी उमस सी थी। २।। वजे चंदन नगर पहुँचे। खाना-पीना चलता रहा। रविवार को इसी तरह गोठों में टाइम निकलता है, निकालना पड़ता है। हर बार मुझे अच्छा नहीं लगता परंतु हामी भरनी पड़ती है। ना करने से लोग घमंडी समझेंगे। ३।। वजे रेल से कलकत्ता वापस आ गया। ६ वजे तक घेलिया के तास खेलता रहा। फिर घर आ गया। ७।।। वजे लाला जी और जयप्रकाश जी के जीमने गया। जे० पी० को १०००) रु० चंदे के दिये। संकोच होता है; वहुत वड़ा काम है, इतने रुपयों से क्या होगा? रात में मन सुस्त रहा। सोशलिस्टों में आरगनाइजर नहीं हैं। केवल सिद्धांत से क्या होने का?

१० अगस्त : सुवह ५ वजे उठा। तवीयत खराव लग रही थी। रात में मास्टर भी पढ़ाने नहीं आये। दिन में वाजार तेज था। १०,००० मन का काम किया ३४।।)-३३।।)। मन में काफी कमजोरी और उदासी सी थी। सुवह आर० मोर के गया। आजकल मन में ईर्ष्या भी होती है। पता नहीं यह रोग क्यों मुझमें आ गया? वुरी वात है। पाट मत्थे है, उसमें घाटा है ही। मुकामों में आमदनी कमती है। दिन में वीच-वीच में 'लोपामुद्रा' पढ़ता रहा।

११ अगस्त : चिरंजीलाल वाजोरिया को स्विटजरलैंड में फोन किया। वात की। तार भी दिया। सत्यनारायण, विरजू आदि जायेंगे। विरजू की तबीयत वेशी खराब है। पाट का वाजार काफी गरम है—भाव ३२।।)-३२) का है। हमारे कुछ मत्थे ही है।

१७ अगस्त : शाम को जयप्रकाश वावू की पार्टी में हिंदुस्तान क्लब गया। काफी लोग थे, सोशलिस्ट विचारों के। कुछ लीडरों से आपसी बातें हुईं। उन लोगों का विचार कांग्रेस को हटाने का है। कहते हैं, मंत्री लोग आराम तलब हो गये, पैसे बनाते हैं। रात में शिवनाथ वनर्जी को हवड़ा छोड़कर घर वापस आया।

ढाका, नारायणगंज

२० अगस्त : प्लेन से १० बजे ढाका पहुँचा। ११ वजे अंदाज नारायणगंज आ गया। विल वगैरह की वात की। रात में ८।। वजे तक वैठकर चेक ले लिया। हनीफ से मिला। वाजार इधर काफी तेज है। रात में वी० ट्विल मंदा आया। इधर का जैसा ढंग है, पाट वहुत कमती मालूम पड़ता है। रात में १० वजे सोया।

ढाका, कलकत्ता

२१ अगस्त : मस्से में दरद है। गंगा में खूव स्नान किया। गंगा, पद्मा, भागीरथी, मेघना कुछ भी हो, गंगा ही है। सब नदियों का जल इसमें समाकर गंगाजल हो जाता है। ९।। वजे कलकत्ता फोन किया। मदन ने कहा, विरजू का लेफ्ट लंग अफेक्टेड है।

रिजेंट पार्कवाले जमादार ने धतूरा खा लिया। हालत खराब सी है। मन कैसा-सा हो गया। जब पैदा होना अपने हाथ में नहीं तो मरना कैसे हो सकता है ? मारने और बचाने का मालिक तो परमात्मा है फिर क्यों कष्ट पाना ? प्लेन से कलकत्ता ५॥। पर पहुँचा। ढाका की यात्रा ठीक रही। घर आकर डॉक्टर अधिकारी के गया। बिरजू के बारे में बात की। सत्यनारायण कल कसौली जा रहा है। मैं नहीं जा सकूँगा। जुकाम है, पेशाब की तकलीफ भी। पासपोर्ट का बंदोबस्त भी करना है।

२६ अगस्त : घर में उदासी है, बिरजू की तबीयत की बात पर। मेरे पेशाब की तकलीफ ठीक नहीं हुई साउंड ली। ६ बजे जैन के घर जीमने गया। काफी बात-चीत हुई। अनुभवी हैं, काफी पढ़े-लिखे भी। बातचीत का तरीका प्रभाव डालता है।

२८ अगस्त : कसौली की चिट्ठी थी। कुछ इम्प्रूवमेंट का लिखा है। परंतु यह फजूल है। बिरजू को भेजना होगा। सोचता हूँ, गरीब आदमी का इलाज कैसे होता होगा, सिवाय मरने के। गोपी मोहन बाबू, काली बाबू और बहुत लोग थे, कांग्रेस के बारे में काफी बात हुई, जेनरल भी। ऐसा लगता है, दलबंदी बढ़ रही है। पद का लोभ सब में आ गया। अब सेवा-भावना कमती हो गयी। गांधी जी के बाद यह फर्क साफ-साफ दिखाई दे रहा है।

२९ अगस्त : मैदान से आकर ज्वाला प्रसाद जी के घर कलेवा किया। ऑफिस गया। स्टेटमेंट देखे। बाजार समान में स्टेडी है। हेसियन बोरा में ८०००) कमाया है, शेयर्स में भी ३-४ हजार का फायदा है। रतनी का १३०००), उसकी माँ का १२०००) है, वह देना है।

३१ अगस्त : सुबह मैदान गया। बातचीत होती रही। राजेन बाबू और नेहरू जी में इधर में कुछ तनाव बढ़ा है। केदार बाबू के घर गया, थे नहीं। १। बजे ऑफिस गया। बाजार समान में मजबूत। कामकाज कटिंग का १२१) में किया। लूज का भाव ३४।) है। हेसियन ५०॥।) बोरा १३८।) मेरे एक महीने में, हेसियन-बोरे में १०,०००) प्रॉफिट रहा। शेयर्स में भी ४-५ हजार।

१ सितंबर : ज्वाला प्रसाद जी के गया। बाजार काफी मजबूत रहा। ४०००० मन जंगली पाट का काम किया, ३३)-३९) में। १३००० दिया ॥) व्याज में। मन उचाट सा है।

२ सितम्बर : दलाली एक रकम चल रही है। कोई अच्छी इंडस्ट्री चलानी चाहिए। घर के लोगों को काम मिलेगा। फाटका-दलाली इतने भरोसे का काम नहीं। बिरजू के पासपोर्ट का सब काम हो गया है।

५ सितंबर : बाजार समान में गरम होता जा रहा है। मिलें पाट लेती हैं। हेसियन-बोरा भी गरम होता जा रहा है। टिकट के वास्ते कोशिश करता रहा। बिरजू का मन

जाने का हो रहा है। टिकट २० तारीख तक नहीं मिल रही है। भाई जी को फोन किया, कल आयेंगे।

६ सितंबर : वंवई जाने का विचार था, नहीं जा सका। भाई जी सैदपुर से आ गये। टी० डब्लू० ए० में १६००) वेसी लगे, टिकट लिया। काफी हैरानी रही।

७ सितंबर : गंगा जी नहीं गया। घर में तेल मालिश कराता हूँ। दिन में एयर टिकट तथा पासपोर्ट के झमेले में रहा। वाजार गरम होता जा रहा है। १० ता० को वंवई जाने का है। ११४००) टिकटों में लगेंगे। ऐसा लगता है, मेरे मन और तन की शक्ति घट गयी है, कोई उत्साह नहीं है।

८ सितंबर : मैदान से फिरती आकर मनीवाई के घर गया। रामगोपाल के भी गया। टी० वी० से वीमार है। दवा का दाम पास में नहीं। तिल-तिल कर मर रहा है। देख-कर मन कैसा हो गया। २००) दिये। टिकटों और पासपोर्ट के झमेले में लगा रहा। वापू जी का तार आया। औरतों की मनाही लिखी है।

९ सितंबर : पाट का वाजार गरम है, काफी। वंवई कल जा रहा हूँ। और कोई नहीं जा रहा है। मदन की वाइफ वीमार है। वैजनाथ जी जालान को फोन किया, बोले विरजू की फोटो रिपोर्ट खराव है। जल्दी जाना चाहिए। मन एकदम सुस्त और शरीर भी गिरा जाता है। चिंता मुझे जल्दी वूढ़ा करेगी।

१२ सितंबर : १०॥ बजे स्टेशन गया। विरजू वगैरह आये। चेहरा सुस्त था। मुझे रोना आ गया। उसको सावधानी से रिटायरिंग रूम ले गये। काफी आराम था। दिन में चीजें खरीदने वाजार गये। ५००) की चीजें खरीदीं। ४ बजे उसे धीरे-धीरे एयरोप्लेन पर ले गये। ६॥ वजे सव कोई चले गये। विरजू राजी मालूम देता था। पार्वती रो रही थी। कई आदमी पहुँचाने आये थे। पुरुषोत्तम जी भी थे। काफी उदासी सी थी। परंतु डर था वह मिटा। शाम को काजड़िया जी के उधर जीमा।

१४ सितबर : शाम को मैदान घूमने गया। काफी देर हो गयी। फिर बैजनाथ जी जालान के पास बैठ गया। उन्होंने मन को धीरज दिया। ९ बजे अंदाज घर आया। सत्यनारायण का तार आ गया। विरजू राजी-खुशी पहुँच गया। वापू जी को कसौली तार दिया।

१५ सितंबर : हुकुमचंद मिल में सेठिया के साथ गया। पाट खराब था। सत्य-नारायण का तार था—एक्सरे फोटो मँगवाया है। वाजार थोड़ा मंदा था। मानव वावू से मिला, वहुत दुखी से थे।

रांची

१८ सितंबर : सुबह ५॥ बजे मुरी पहुँचे। वस में ४० मील रांची पहुँचे। सीन अच्छे लगे। जगह थोड़ी ठंढी है। ९ वजे नोपानी जी के साथ विरला जी की उनकी और सोसाइटी

की जगह देखने गये। ९-१० मील दूर पर सस्ती जमीनें हैं। विरला जी की कोठी भी देखी। जीमकर नागरमल जी मोदी के गये। शाम को ५ वजे तक जगलाल वावू की अध्यक्षता में मीटिंग हुई। ५॥ वजे मुरी के लिए वस में वैठे। ७ वजे पहुँच गये। सव १८ आदमी थे। ट्रिप ठीक ही रही।

कलकत्ता

१९ सितंबर : अखवारों में देखा, पौण्ड डीवेल्यू होगा। वाजार में काफी उथल-पुथल मची हुई थी। वी० ट्विल, हेसियन काफी मंदे।

२० सितंबर : मिलों ने भाव वाँधने का निश्चय किया है। पाकिस्तान की रिपोर्ट के लिए वेट कर रहे हैं। मेरे लगता है, पाकिस्तान अपना रुपया डीवेल्यू नहीं करेगा। इसमें उसका फ़ायदा है।

२६ सितंबर : पाकिस्तान ने अपने रुपये का डीवेल्युएशन नहीं किया। इसलिये वाजारों में काफी उथल-पुथल है। मिलें भाव वांध देंगी, ऐसी रिपोर्ट है। हम लोगों के खास नफा-नुक्सान नहीं है।

२७ सितंवर : चंदेवालों के गया। वाजार की उथल-पुथल का असर है ही। अभी जाना नहीं चाहिए था। मैंने मना किया परंतु साथ में जाना पड़ा। दिन में ज्वाला प्रसाद जी के घर गया। वापिस घर ४ वजे आ गया। भाई जी पर वारंट है। शाहजहाँपुर वालों ने अड़ंगा किया है। फ़ालतू की वात है परंतु सलटाना होगा ही।

२८ सितंवर : सवेरे चंदेवालों के गया। मेरे मन में एक रकम की फुर्ती सी है। लाला जी के चाय पी। ऑफिस में प्राय: २ वजे तक था। पाकिस्तान के डीवेल्यू नहीं होने से पाट का काम-काज़ वंद हो गया है। मेरे लगता है, पाकिस्तानी ऐसा चाहते थे। हो सकता है, अंग्रेजों की सलाह से अपने सिक्के का भाव नहीं गिराया। हम लोगों के भी कुछ घाटा है ही, पर उपाय क्या। भागीरथ जी के साथ जी० डी० के गया।

२९ सितंवर : सुवह ८ वजे रिलीफ सोसाइटी की मीटिंग में गया। मित्र लोग मुझे मंत्री के लिए खड़े होने को वोले परंतु मेरा विचार नहीं, स्थिति ऐसी नहीं है। सभापति का पद मिलता था पर स्वीकार नहीं किया। काम में मेरी रुचि है, पद में नहीं। कुछ 'विटरनेस' सी मीटिंग में आयी। २। वजे रघुनाथ जी के साथ जी० डी० के गया। ११०००) मिले। जी० डी० के चेहरे में एक रकम का तेज है। ४००० गाँठ हाजी हवीव को वेची। २०२) में १००० और २०५) में ३००० हजार। २००० सी० टी० सी० से २००) में लिया। प्राय: २००००) नफा किया। कानपुर में जूट मिल के लेने की वात सोच रहे हैं।

१ अक्तूवर : शाम को वहुत देर तक देवी का भसान देखता रहा। भावना वहुत वड़ी है। मिट्टी को शक्ति का रूप देती है। वहुत रात तक काफी भीड़ थी। लोगों में उत्साह काफी था।

२ अक्तूबर : राहुल जी आये हैं। मेरे घर में ही हैं। उनको दिन में 'अंदाज' सिनेमा दिखाया। शाम को फिर 'रामेर सुमति' में गये। रात में काफी देर तक बातचीत होती रही। राहुल जी कहते हैं, दक्षिणपूर्व एशिया से संपर्क बढ़ाने का मौका हिंदुस्तान खो रहा है। बौद्ध संस्कृति की मारफत बढ़ सकता है।

३ अक्तूबर : शाम को सेलर्स की मीटिंग हुई जिसमें गजराज वगैरह सब थे। कोई नतीजा नहीं निकला। पाट लोगों का खराब पहुँच रहा है। बाजार में एक रकम झमेला पड़ गया है।

५ अक्टूबर : सेलर्स की नीयत खराब है। जी की खास कर के। हम लोगों के काफी रिक्त है। माथा एकदम खराब-सा हो रहा था। सेकंड क्लास का टिकट लिया, जसीडीह के लिए चल पड़ा। मन क्लांत, उदास।

जसीडीह

७ अक्तूबर : सुबह तेल मालिश, स्नान। दिन में किताबें पढ़ना। सवेरे-शाम घूमना। भूख यहाँ बेशी लगती है। पेट साफ रहता है। मन प्रसन्न है। कलकत्ते की चिंता एकदम नहीं है। ऐसी हालत में यहाँ रहने से आदमी की आयु बढ़ जाती है।

११ अक्तूबर : सत्यनारायण का फोन आया। बिरजू के थोड़ा खून ३ दिन तक आया। मन में काफी चिंता सी है। माँ जी बहुत उदास हो रही हैं। मेरे भी काफी हैरानी सी है। कामकाज में मन लगता नहीं।

२० अक्तूबर : चिट्ठियाँ खास नहीं आ रही हैं। चिंता सी तो है ही। सुबह हबड़ा मिल में गया। कामकाज कमती है। मनसुखराय जी के ऑफिस में गया।

२२ अक्टूबर : आज दीवाली पूजन की रामरामी करने कई जगह गया, ऑफिस और गंगा जी भी गया। रात में बड़े ही दुःस्वप्न आये, बिरजू के बारे में भी। मन खराब रहा। मन में भावना को दबाकर नहीं रखना चाहिए। जागते में चिंता और सोते में सपना आना बड़ी बात नहीं। परंतु चिंता हटाऊँ कैसे? पढ़ाई बन्द है। पब्लिक वर्क भी कोई खास नहीं।

२३ अक्तूबर : मैदान गया। वहाँ से मुरारी के, भागीरथ जी के तथा मनसुखराय जी के गया। शाम को ५॥ बजे स्मिथ साहब के साथ उदयशंकर का नृत्य देखने गया। शरीर का मूवमेंट बहुत साफ है। आँखों से भावनाएँ समझ में आ जाती हैं किंतु उँगलियों की मुद्राएँ नहीं समझ पाया। स्मिथ साहब को अच्छा लगा। मुझसे नाच के भाव पूछता था, मैंने जैसे-तैसे समझा दिया।

२४ अक्तूबर : आज मुहर्रम है। सवेरे बाहर नहीं गया। लाला जी से गप्पें करता रहा। बातचीत का अंत तो होता नहीं परंतु दिशा जरूर होती है। अच्छी दिशा, अच्छा नतीजा। लाला जी के साथ यही लाभ है। १०॥ बजे भाई जी का फोन आया। धुबड़ी में डाका पड़ गया प्रायः चालीस-पचास हजार रुपये। मन खिन्न हो गया। भाई जी

धुवड़ी गये। शाम को घर आकर लेख ठीक किया। एक प्रति 'माया' इलाहावाद को भेज दी। रात में फिर दुःस्वप्न आये।

२६ अक्तूवर : हरिसन रोड में जालानों के मकान के सामने वहुत वड़ा दंगा हुआ। असंतोष तो पहले से ही था। कॉलेज वायर में काली पूजा के चंदे को लेकर। वहुत वुरी वात है। चंदा एक रकम का दान है। दाता की मर्जी पर है। टैक्स के माफिक जवर्दस्ती वसूलना उचित नहीं। परंतु आजकल यह तरीका वढ़ता जा रहा है। आपस में मन-मुटाव वढ़ता है। सुनने में आया चंदा माँगनेवालों से रूखा वर्ताव किया गया था। फोन किया वात नहीं हो सकी।

२७ अक्तूवर : सुवह रिलीफ सोसाइटी में मीटिंग थी। मैं भी गया। ९॥ वजे तक था। १२ वजे लाला जी के साथ कार में ऑफिस गया। २ वजे फिर सोसाइटी में आ गया। मीटिंग हुई। सम्मेलन में मैं भी वोला, रुपये वालों के अगेन्स्ट में। लोगों ने पसंद भी किया। विरोध में वोलना आसान है, रोव भी जम जाता है। एक नया अनुभव हुआ।

२८ अक्तूवर : आर० मोर के गया, मैदान होता हुआ। 'हिंदुस्तान स्टैंडर्ड' ने मारवाड़ियों के अगेन्स्ट में एडिटोरियल लिखा। मैं वहुत वोलने लगा हूँ, यह गलत है। ५ वजे रिलीफ सोसाइटी की मीटिंग में गया। काफी आदमी थे। मैंने भी वोलने की कोशिश की परंतु वोल नहीं सका। कुछ भद्द सी हुई। एडिटोरियल ने हवा वदल दी। पव्लिक का रुख पहचान कर वोलना चाहिए। मन सारे दिन अस्तव्यस्त रहा।

३० अक्तूवर : ३ वजे विशुद्धानन्द विद्यालय की मीटिंग में और ४। वजे छात्रनिवास की मीटिंग में गया। ५। वजे घर आया। वाइफ ने ताना दिया। दुनिया की करता हूँ, पर घर के लिये टाइम नहीं। वात से जी जल जाता है। परंतु गलती तो मेरी है ही।

१ नवंवर : कामकाज शुरू होगा। 'कोटा' मिल गया है। पाट की आमदनी पाकिस्तान से वंद है। परसों कर्सियांग की तरफ जाने का मेरा विचार हो रहा है। जे० पी० कलकत्ता आये हुए हैं।

२ नवंवर : सुवह जे० पी० से मिलने गया। वातचीत हुई। आकर वि० चोरड़िया को फोन किया। रात में उसके यहाँ जीमने का वंदोवस्त किया। २० आदमी थे। आंदोलन के वारे में वातें हुईं। ११ वज गये। उसने २१००) जे० पी० को दिये। खाना मैंने नहीं खाया। रुपयों वाला काम नहीं हो पा रहा है। लोगों का मन सोशलिस्ट पार्टी को रुपये देने का नहीं है।

जलपाईगुड़ी

३ नवंवर : सुवह स्मिथ को फोन कर एयरोड्रोम पहुँचा। साथ में लाला जी, दीपचंद नाहटा तथा मालचंद वैद थे। ९ वजे उड़े और १० वजे वागडोगरा। उधर पूरा वंदोवस्त

था। ११ बजे सिलिगुड़ी मिल में पहुँचे। १ बजे मीटिंग में गये। साधारण सी थी। २।। बजे जलपाईगुड़ी गये। लोगों से मिलते रहे। ६ बजे बड़ी भारी मीटिंग हुई। ८ बजे तक चली। मुझे सभापति बनाया गया। ११ बजे सैदपुर फोन किया।

दार्जिलिंग-कर्सियांग

५ नवंबर : रात ३।। बजे दो कार लेकर घूम से भोर ४। बजे टाइगर हिल पहुँचे। अँधेरा सा था, ठंढ भी थी। मगर मौसम साफ था। कुहासा धीरे-धीरे हट रहा था। सूरज की पहली किरणों की आभा पहाड़ी के पीछे से उठती-सी जान पड़ी। लाल, गुलाबी, बैंगनी कौन सा रंग था, कहना मुश्किल है। ऐसे सुंदर दृश्य शब्दों में बाँधे नहीं जा सकते। अपनी-अपनी भावना और अनुभव की बात है। टाइगर हिल के बारे में एक किंवदंती है कि एक बाघ प्रतिदिन उस पहाड़ी पर आकर उगते सूर्य को प्रणाम करता है। मुझे ऐसा नहीं दिखा। परंतु सूर्योदय का जो दृश्य देखा, वह अपूर्व था। ६। बजे घूमकर लौट आया। फिर पैदल २ मील चला। ९ बजे दार्जिलिंग पहुँचा। जे० पी० से और लोगों से भेंट की। कुछ नहीं दिया गया, मन में उदासी सी हुई। रात में प्रभावती जी वगैरह के साथ खाना खाया। जे० पी० के बुखार हो आया था।

कर्सियांग-सिलीगुड़ी

६ नवंबर : ठंढ काफी थी। सुबह दो-तीन मील घूमा। कुहासा-सा था और घाटियाँ बादल से ढंकी-सी थीं। अच्छा लगा। जे० पी० सुबह ही चले गये। पता नहीं, बुखार उतरा या नहीं। मेरी तरह वे भी अपना ध्यान कम रखते हैं, ठीक नहीं। परंतु किसका जोर चले। ३ बजे की मोटर से सिलिगुड़ी रवाना हुए। रास्ते में मोटर खराब हो गयी। ठीक करने की कोशिश बेकार रही। एक बस में बैठ कर सिलिगुड़ी आये। ७ बजे स्टेशन आकर फर्स्ट क्लास में बैठा। नींद अच्छी आयी। जे० पी० हवाई जहाज से चले गये थे।

कलकत्ता

७ नवंबर : ११ बजे सुबह सियालदह पहुँचा। घर आकर स्मिथ से फोन पर बात की, फिर ऑफिस गया। बाजार में काफी काम हुआ। एंड्र्यू से मिला। कुछ बोला तो नहीं परंतु नाराज जरूर था। दार्जिलिंग मेरा जाना एक रकम व्यर्थ हुआ। वैसे, इस यात्रा से मेरी तबीयत कुछ ठीक जरूर हुई है।

९ नवंबर : सुबह हवड़ा मिल गया। लौटती बार हवड़ा स्टेशन तक पैदल आया और वहाँ से टैक्सी ली। पाट प्रायः नक्की कर दिया। कामकाज १६००० मन का किया। दिन में ऑफिस में था। शाम को गद्दी आया। भाई जी से सैदपुर के बारे में बातचीत हुई। उनका विचार २१ रुपये में लेने का है। जे० पी० का काम आगे नहीं बढ़ पा रहा है। मुझे तो संकोच-सा मालूम देता है। जिसके पास अधिकार और सत्ता है, उससे संपर्क बढ़ाने में लोगों का उत्साह है। सिद्धांत की बात कौन सोचता है?

१० नवंबर : ऑफिस गया। ४०००० मन का काम किया। पाट का बाजार मजबूत है। मिलें पाट लेती हैं। ऐसा मालूम देता है, एक महीने में बेचने वाले कम हो जायँगे। वाइफ की तबीयत ठीक नहीं रहती, पतले दस्त लगते हैं। कमजोर हो गयी है। ८॥ बजे रात में जे० पी० के पास जाने को था पर नहीं जा सका, फोन से खबर कर दी। मन में उलझन सी रहती है। किताब वगैरह भी पढ़ने या लिखने का मन नहीं करता।

११ नवंबर : शाम को जे० पी० के गया। काफी देर तक था। प्रॉबलेम तो है परंतु उपाय क्या? सारा संगठन अब कांग्रेस में चला गया। नये सिरे से जमाना होगा। लोगों का रुख बदल रहा है। अब पहले जैसी बात नहीं रही। पाकिस्तान में जूट बहुत सस्ता है १८॥) मन। हम लोग पाट ले रहे हैं। कल ढाका जाने का विचार है। रात में लाला जी के साथ आर० मोर के गया।

१५ नवंबर : ढाका में इस्पहानी से बात हुई थी। पाट का अच्छा पड़ता पाकिस्तान में है। काम हो सकता है। सी० एल० बाजोरिया से मिला। स्विजरलैंड जाने का मेरा मन बहुत होता है। शायद मुझे फायदा भी हो, वहाँ अच्छे डॉक्टर को दिखाने का मौका मिलेगा। बाजोरिया ने बताया, बहुत ही सुंदर जगह है। ९। बजे ऑफिस गया। कामकाज कमती है। दूसरे दलालों से अच्छे भावों में ४१०० गाँठ विलायत में बेची। सैदपुर में पड़ता है। पेशाब फिर एकदम कमती होने लगा है। शायद पूरा इलाज कराना होगा।

१७ नवंबर : ऑफिस में मामूली कामकाज है। पाकिस्तान में हम लोग काम बहुत जोरों में कर रहे हैं। इधर विधवा-विवाह का काम कमती पर है। ऐसा लगता है, लोगों का ध्यान कांग्रेस को ज्यादा फेवर करने पर बढ़ रहा है। अफसर और मंत्रियों के मन के खिलाफ कोई काम करना नहीं चाहते। जे० पी० के काम में इस वजह से रुकावट आती है।

२० नवंबर : सुबह ८ बजे से ११ बजे तक घेलिया के घर तास खेला। वाइफ के मस्सों की बहुत जोर तकलीफ है। इलाज चल रहा है पर फायदा नहीं। गजराज जी को फोन किया। उनके साथ नारायणगंज में बेलिंग करने का विचार कर रहे हैं।

बिजगापट्टम

२४ नवंबर : ११ बजे विजगापट्टम पहुँचा। स्टेशन पर शास्त्री आया था। बातचीत हुई। उसके पाट के सैंपल देखे। खाना गुजराती खाया। शहर देखा। काफी लोगों से मिला। यहाँ मूंगफली, काजू तथा पाट आता है। पाट की किस्म बहुत अच्छी नहीं है। खद्दर बहुत बिकता है। शहर साधारण है, आदमी गरीब से मालूम देते हैं। मुझे और ठहरना चाहिए परंतु नारायणगंज जाना है। ७ बजे स्टेशन गया और वापस कलकत्ते के लिए गाड़ी पकड़ी।

२७ नवंबर : ७॥ बजे सुबह रिजेंट पार्क में आर० के० धानुका से आदमजी मिल्स के बारे में बातचीत हुई। सारे दिन गद्दी में रहा। ४॥ बजे आर० मोर के घर गया। दो

वाजी ताश खेला। ऑफिस में एंड्र्यू कुछ नाराज-सा लगता है। आदमजी मिल्स लेने का मेरा मन बहुत है, वाकी देखा जाय। सैदपुर को फोन किया। वहाँ का काम काफी सुंदर रूप से चलता है। रात में कई तरह के स्वप्न आये। वैसे तबीयत ठीक है।

३० नवंबर : मैदान लाला जी के साथ गया। वापिस सिंघी जी के आया। दिन में काम-काज कमती-सा ही है। पाट का बाजार काफी मजबूत सा है। मिल अपनी पुरानी दरों पर मजबूत सा है। हाजी हबीब वाले में भी नुक्सान हो गया। पाकिस्तान में पाट मंदा है। कामकाज सैदपुर में एक रकम ठीक चलता है। नवंबर में ७१५६ गाँठें वेचीं। दिसंबर में भी ६००० अंदाज हो जायंगी। पड़ता २०) गाँठ की एवरेज में है। शाम को ५॥ वजे रघुनाथ जी खेतान के घर राधाकिशन-विवाह में काफी संख्या में लोग शामिल हुए। मन प्रसन्न हो गया था।

१ दिसंबर : सुवह इस्पहानी से मिलने एयरपोर्ट गया। आदमजी वगैरह की सारी वातें कीं। ९ वजे वापिस घर पहुँचा। ९॥ वजे सिंघी जी के वहाँ से ऑफिस गया। काम-काज प्राय: नहीं था। एक रकम बंद-सा है। मिलों के पास पाट दो महीने का है। उसके वाद बंद हो जाती मालूम देती हैं। शायद मार्च तक चले। शाम को 'श्रीरंगम' गये। विधवा-विवाह सभा की तरफ से 'परिचय' बंगला खेला था। मैंने इसके लिए वहुत कोशिश कर टिकटें वेचीं। लोगों को खेल पसंद आया। सक्सेस होने की खुशी हुई। कभी-कभी अपने अंदर ऐसा महसूस करता हूँ कि मेरा जीवन उद्देश्यहीन है। कैसा निराश सा जीवन होता जा रहा है।

१९ दिसम्बर : सुवह मैदान नहीं गया। घर ही पर था। लाला जी के चाय पी। यहीं समय मिलता है जव समाज और देश के वारे में कुछ वातचीत शांति से कर लेता हूँ। भागदौड़ के जीवन में फुर्सत और चैन नहीं, रुपया जरूर है। लाला जी के उधर से आर० मोर के गया। वाजार के वारे में वातचीत होती रही। फाटके का इनका तजुरवा अच्छा है। परंतु मैं अपने पर जव वैठाता हूँ फेल हो जाता हूँ। कहीं गलती कर वैठता हूं। हड़वड़ी की आदत है। ऑफिस में कामकाज थोड़ा वहुत कभी-कभी हो जाता है। भाभी की तवीयत ठीक नहीं है। पेट में दरद वैसा ही है। शाम को मैं नर्सिंग होम में उनको देखकर घर आया। वाइफ के दर्द था। १० वजे अस्पताल ले गया। १०॥। वजे लड़का हुआ। वेशी दरद नहीं हुआ। भगवान् ने कृपा की। घर में आकर ५) दरवान को और ५) जमादार को दिये।

२० दिसंबर : सुवह ५ वजे उठा। लाला जी के साथ हेरिंगटन नर्सिंग होम गया। भाभी की तवीयत वैसी ही थी। वेचैनी है, वच्चा नहीं हो रहा है। विक्टोरिया मेमोरियल गया। चिम्मन जी से वात की फिर आर० मोर के गया। चाय पी। ९॥ वजे मानव वावू के गया। चाय और तेल दे आया। दिन में ११५ गज कपड़ा लाया, वाँटने के लिए।

गलती हो गयी कारण लोगों को पसंद नहीं आ रहा है। कामकाज मिलों में हुआ। पैदा तो हमारे एक रकम ठीक है पर बीच-बीच में घाटा लग कर कमती हो जाता है। रात में ९ वजे तक नर्सिंग होम में था। भाभी के ऑपरेशन की बात हो रही है। चिंता काफी है। मेरे मन में बहुत अशांति है। भाभी के एक लड़का हो जाता तो मन में चैन आता। हर औरत में माँ बनने की भावना रहती है। वाइफ की तबीयत एक रकम ठीक है। नया बच्चा काफ़ी ठीक है। रतनी यहीं है। कामकाज सैदपुर में ठीक चल रहा है।

सैदपुर-धुबड़ी

३ दिसंबर : सुबह सैदपुर ६ वजे पहुँचा। प्रेस गया, कामकाज देखा, संतोषजनक है। बाजार गया, पाट खरीद किया। थोड़े भाव मुझे तुरंत ही बढ़ जाते मालूम देते हैं। भोजन के बाद मोटर से निलफामारी गया। उधर कामकाज देखा। ४ वजे अंदाज सैदपुर वापस आ गया। ६ बजे की गाड़ी से पार्वतीपुर गया। फिर वहाँ से धुबड़ी चला गया।

धुबड़ी-कूचबिहार

४ दिसंबर : सुबह ५।। वजे धुबड़ी पहुँचा। शंकर टांटिया की माँ जी से मिला। ५०) दिए फिर थोड़ी पूरी खायी। यहाँ आने पर अपने बचपन की पहली सफर की बात याद हो आती है। कितना संघर्ष करना पड़ा, कितना निराश होकर गाँव वापस चला गया था। समय बहुत बदल गया। परमात्मा ने बदल दिया। मनुष्य के किये का कुछ भी नहीं। बाजार आकर लोगों से मिला। ९।। वजे माल जहाज में बैठ कर कूचविहार पहुँचा। १ वजे हवाई जहाज में कलकत्ते के लिए उड़ा। ट्रिप अच्छी रही। काम भी सम्हाला गया। धुबड़ी की मिल ठीक चलती है।

कलकत्ता

५ दिसंबर : वाइफ की तबीयत ठीक नहीं चलती। शाम को घर आकर राँची जाने की बात कही तो काफी नाराज सी हुई। एक रकम वाजिब है। सब काम होता है, सब के लिए करता हूँ पर उसके लिए समय नहीं दे पाता। उपाय क्या, जाना जरूरी है। स्टेशन आया, जे० पी० वगैरह थे। काफी चहल-पहल-सी रही। रात में ९।। वजे ट्रेन छूटी। प्राय: ५० आदमी थे।

मुरी

६ दिसंबर : सुबह ७ वजे अंदाज मुरी पहुँचे। ५०-५५ आदमी थे। बस से ८ वजे रांची पहुँचे। विवाह खूब धूमधाम से हुआ। शाम को ४ वजे बारात निकली। दिन में खाना श्यामा भरतिया के खाया। शाम को नहीं जीमा, ३ कप चाय पी। फिर सीधा बस में बैठकर स्टेशन आ गया। इंटर क्लास में बैठकर कलकत्ते के लिए वापस चला। इस विधवा-विवाह में लोगों का उत्साह काफी था। जे० पी० के होने से रौनक बढ़ गयी।

७ दिसंबर : सुबह ४ बजे हवड़ा पहुँचा। उचक्कों ने न जाने ट्रेन में कब जूते चुरा लिये। नंगे पैर हवड़ा में उतरा। सीधे मैदान चला आया। वहाँ कई लोग मिले। राँची वाले विवाह की चर्चा हुई। ऑफिस में काम-काज कमती है। बसंती की तबीयत ठीक नहीं रहती। उसे लेकर डॉक्टर डेनहम ह्वाइट के गया। ४॥ बजे तक इंतजार किया, फिर मैं तो स्टेशन चला गया। फर्स्ट क्लास में बैठकर विजाग को रवाना हुआ। किताबें पढ़ता रहा।

११ दिसंबर : ९ बजे चाय पी। डॉ० लोहिया के पास गया। एक घंटे था। काफी बातें हुईं। लोहिया जी और जे० पी० में फर्क है। ऐसा लगता है, जे० पी० के माफिक डॉ० लोहिया पार्टी आरगेनाइज कर नहीं सकते। उनका निजी प्रभाव लोगों पर जरूर पड़ता है मगर इससे काम तो आगे बढ़ नहीं सकता। पाट में ब्लैंक-सा हो गया है। मेरी २००० गाँठें हाजी हवीब वाली मत्थे हैं। मनसुख राय जी मिले थे। बहुत तेजी बताते थे।

१३ दिसंबर : बसंती को लेकर डॉ० डेनहम ह्वाइट के गया। काफी देर तक जाँच करने के बाद बताया कि अँतड़ियों की खराबी है, टी० बी० हो सकती है। वाइफ को बताया, वह काफी चिंतित हो गयी। परंतु मेरे को लगता है, डॉक्टर रोग को पकड़ नहीं पाया। बड़े डॉक्टर बड़ी बात कहते हैं।

१५ दिसंबर : दिन में बसंती को दिखाने डॉ० राम अधिकारी के ले गया। सारा दिन इसी में बीत गया। फोटो करवाये। ८ फोटो हुए। उसने बताया कि कुछ खराबी नहीं मालूम देती है। परंतु मन में चिंता सी लगी है। खराबी नहीं मालूम देती परंतु तबीयत क्यों खराब है?

१६ दिसंबर : सुबह डॉ० लोहिया को एयर पोर्ट में चढ़ाने गया। लखनऊ गए। ऑफिस में कामकाज कुछ खास नहीं हुआ। पाट के बाजार में काफी तेजी हो रही है।

२१ दिसंबर : सुबह नर्सिंगहोम गया। भाई जी बहुत उदास से थे। ९॥ बजे ऑफिस गया। मन में भाभी की चिंता थी। उसे सेप्टिक हो गया बताते थे। ११॥ बजे दौलतराम भाई जी का फोन आया। मरा बच्चा भाभी के निकाला गया। दुःख तो हुआ परंतु एक रकम की शांति मिली। भाभी के प्राण का संकट निकल गया।

२९ दिसंबर : शेयर्स में इन दिनों काफी लॉस हो गया है। इससे पैदा में कमी आ गयी, वैसे कुल मिलाकर ठीक है।

३१ दिसंबर : बंदी थी, कामकाज होता ही क्या। दिन में कुछ चीजें खरीदने को गया। आज वर्ष खत्म हो रहा है। यह साल एवरेज से अच्छा ही रहा। परमात्मा की कृपा है।

१९५०

कलकत्ता

१ जनवरी : सुबह मैदान में परेड तो थी नहीं। ८।। वजे गद्दी गया। आर० मोर के घर पंडित उमाशंकर के साथ गया। वहाँ से उनके साथ दो-तीन जगह गया। १० वजे से १२।। वजे तक तीन चार साहबों के गया। ५ वजे लाला जी के साथ आर० जटिया के वगीचे गया। ९। वजे तक घर वापस आ गया। हम लोगों के पास इस समय ५० लाख रुपये और प्राय: २० लाख की प्रापर्टी है। नफा भी चलता है। परमात्मा की कृपा रहे। विरजू की तवीयत उसी तरह है।

२ जनवरी : सुवह मैदान गया। दीपचंद के साथ गौशाला के चन्दे के लिए गये। प्राय: २०००) लिखा गया और की भी आशा है। शाम को ६। वजे एन्ड्रयू साहव के घर पिता जी के साथ गया। 'नया समाज' का दो-एक लेख पढ़ा। सेंगर जी काफी अच्छा लिख रहे हैं।

३ जनवरी : सुवह मैदान गया था। ८ वजे सिंघी जी के यहाँ आया। वे चंदा माँगते थे, कुछ देना ही होगा। शरद साहित्य के लिए उन्होंने ६०००) किया है, चेष्टा कर रहे हैं। दिन में केनेडी साहव से मिला। काफी वातें हुईं। हम लोगों ने प्राय: ४०००० मन का ऑफर किया है। वाजार में और भी काफी ऑफर हुए हैं। कल काम होगा। दिन में ओंकार मल जी भरतिया के साथ कई जगह गया। २००० गाँठें एच० जी० एस० आई० की सेटल कीं। इस सौदे में २०,०००) मिलेंगे। रात में दु:स्वप्न आते रहे। क्यों?

४ जनवरी : कंट्राक्ट का वाइंग चलता है। हम लोग प्राय: काम कर नहीं पा रहे हैं। जैसा मुझे लगता है, काम मुझे शायद छोड़ देना होगा, कुछ खास मन भी नहीं लगता और कुछ पब्लिक काम में भी अड़चन सी पड़ती है। ऑफर पक्की गाँठों के एकदम कम मिल पा रहे हैं, पड़ता भी उलटी है इस तरह कैसे काम होगा?

५ जनवरी : सुबह ऑफिस गया। स्मिथ साहव से एक रकम नाराजी-सी ही हुई। दिन में काम हम लोगों के प्राय: ४०,००० मन का हुआ। कुल काम एक लाख मन का। वाजार मजवूत-सा ही था। काम कमती है। शाम को एंड्रयू और स्मिथ से काफी कहा-सुनी हो गयी। सिंघी जी के गया था। शरत वावू के साहित्य के लिए १०००) माँगते

हैं, इतना तो मेरे पास से नहीं होगा। शेयर्स में ३०००) का घाटा हो गया है। पाट देखने गया था, देरी से लौटा, ऑफिस नहीं जा सका।

१० जनवरी : भाई जी सैदपुर गये हैं। कामकाज विलायत में १,५०० गाँठों का हुआ और भी चेष्टा हो रही है।

१३ जनवरी : कल दो विधवा-विवाह हैं। इस काम की प्रगति एक रकम चल रही है। हीरालाल जी शास्त्री कल आयेंगे। लोग काले झंडे भी दिखायेंगे। मैं एक चाय वगीचा लेने की वात कर रहा हूँ। विलायत जाना शायद मेरा जल्दी ही होगा।

१४ जनवरी : मैदान नहीं गया। आसाम जाने को था, गया नहीं। मेरा मन था भी नहीं। एयर पोर्ट से वापिस आ गया। सिंघी जी के गया। फिर विवाह वाले घर गया। २ वजे गंगा जी में स्नान कर आया। तुलसीराम जी से मिला। हीरालाल जी शास्त्री से मिला। लोग काले झंडे ले गए थे। शाम को ३ विधवा-विवाहों में गया। हिन्दू समाज में सदियों के संस्कार हैं। लड़कियों में हिचक समा जाती है। एक लड़की सहमी और उदास थी, उसे समझाया। राजी हो गयी। रात में सोचता रहा कितनी विधवाएँ मजबूरी से बुरे रास्ते गयी होंगी, ईसाई-मुसलमान वनी होंगी। अपने समाज पर बहुत वड़ा कलंक है।

१५ जनवरी : १० वजे हीरालाल जी शास्त्री का व्याख्यान सुनने गया। १ वजे ग्रेट ईस्टर्न होटल में गया। मैंने कुछ नहीं खाया, सिर्फ फ्रूट सलाद लिया। पार्टी साधारणतया ठीक थी। ३॥ वजे पटेल जी का भाषण सुनने गया। वहुत अच्छा लगा। साफ-साफ वात कहते हैं। हिन्दुस्तान को ऐसे ही नेता की जरूरत है। मुझे लगता है कि लोग भाषण सुन तो लेते हैं आजकल परंतु अव देश के काम के लिए समय नहीं देते, कोशिश भी नहीं करते। सारे अच्छे नेता मंत्री वन गयें। पब्लिक को साथ कौन ले चलेगा?

१७ जनवरी : शाम को हीरालाल जी शास्त्री की पार्टी में हिंदुस्तान क्लव में प्रायः ४० आदमी थे। मुझे शायद ही उन्होंने पहचाना, खैर। दो-एक जगह जा कर ८॥ वजे सिंघी जी के घर गया। वहाँ शास्त्री जी से मैंने भी कई सवाल पूछे। आदमी मुझे ईमानदार मालूम देते हैं। वैसे जानता हूँ, राजस्थान में इन्होंने सामाजिक और राजनीतिक वहुत ठोस काम किये हैं। कामकाज उसी माफिक है। ऑफर अभी मिलना मुश्किल ही मालूम देता है। पाट का वाजार काशीपुर में गरम है। किशनगंज का ३९=) है। सैदपुर का काम चलता है।

१८ जनवरी : वुखार साधारण सा है। पेशाव रुक गया है। दिन में खेमाणी जी और लड़कीवाले आये। सुवह विड़ला मिल का फोन था। शनिवार को विवाह तय हो रहा है। शायद रविवार को दो विवाह होंगे। सुवह मुकर्जी साहव के साथ महावीर जी सरावगी के घर गया था। पाट का ऑफर आज प्रायः तीन लाख मन का हुआ है। हम लोगों को ६५,००० मन का मिला है। ऑफर कम मिलते हैं।

२० जनवरी : तबीयत कुछ सुस्त जरूर है। चाँदी का भाव १८२।) था। शेयर ३१) थे, मंदे थे। पाट का काम प्रायः ३,५५,००० मन का हुआ। साहब लोग थोड़े नाराज हैं, मेरा मन भी उचाट सा है। कल बिड़ला मिल में विवाह है। दिन में १ बजे वाइटवे लेडलाँ गया, चीजें खरीदीं। ६००) गुम गये, पर मिल गये। ५॥। बजे घर लौटा। मिलें मई-जून तक चलेंगी, ऐसा मालूम देता है। मेरा विचार लंदन जाने का है पर भाई जी का क्या मालूम। रात में १०॥ बजे तक सेंगर जी से बात करता रहा।

२१ जनवरी : दिन में बिड़ला मिल में गये। प्रायः ३५ आदमी थे। विवाह खूब मजे में हो गया। लड़की-लड़का अत्यन्त साधारण से थे। मैंने भी थोड़ा कहा, ज्यादा नहीं बोला। विवाह में तो मेरा पूरा हाथ था ही। सुबह एंड्रयू-स्मिथ से ऑफिस में मिला था, खास बातचीत नहीं हुई। पक्की गाँठ के एस्टिमेट में बराबर गलत जा रहा हूँ। सैदपुर का काम कमती है।

२२ जनवरी : ८ बजे बालिका-शिक्षा-सदन की मीटिंग में गया। ९। बजे बाँगड़ जी के, फिर १० बजे मारबल हाउस गया। घर आकर ११॥ बजे सिंघी जी के यहाँ गया। १ बजे तक था। फिर कार से ३२ मील पर देवानंदपुर गया। कई मारवाड़ी, बंगाली थे। काफी बड़ा जलसा हुआ था। १२,०००) हम लोगों ने दिए। शरत बाबू के सम्मान में हमारे इस सहयोग का प्रभाव बंगालियों पर अच्छा पड़ा। मेरी समझ में ऐसे कामों से काफी लाभ होता है। आचार्य हजारीप्रसाद आये हुए हैं। उनसे मिला। विलायत शायद फरवरी तक जा सकूँ।

२३ जनवरी : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साथ काफी साहित्य-चर्चा हुई। बहुत अच्छा लगा। सुनते रहने की इच्छा बनी रहती है। मेरा मन आजकल न जाने क्यों सुस्त रहता है। कामकाज तो खास कुछ है ही नहीं। जो फोटो आज उतरवाया, वह बहुत ही सुस्त है।

१ फरवरी : भाई जी की तबीयत ठीक नहीं चलती, डॉ० डेनहम व्हाइट देखने आया। बोला, दाँत खराब हैं, इन्हें ठीक कराना होगा।

डिब्रूगढ़

४ फरवरी : सुबह जल्दी ही उठा। सरदी बहुत है। ७ बजे राय साहब कनोई आये। दो मोटरों में आठ आदमी चले। १० बजे अंदाज लुकवा गार्डेन पहुँचे। काफी बड़ा है कुछ बेसम्हाले का सा। मशीनें अच्छी, साहब भले हैं। वहीं कलेवा किया। ४ बजे तक खूब देखा। रास्ता खराब था। रास्ते में वही विचार करते रहे कि कैसे होगा। डिब्रूगढ़ शहर बहुत अच्छा है, सुंदर भी। बगीचा भी सुंदर है। बँगला है, ठहरने का आराम है। रुपयों का बंदोबस्त हो जायगा। मोटर में १५० मील चला।

डिब्रूगढ़—तिनसुकिया

५ फरवरी : सुबह घूमने गया। आज इतनी सरदी नहीं थी। ८॥ बजे अंदाज गणेश वाड़ी गया। वहाँ दो चाय वगीचे देखे। काफी अच्छे थे। ११ बजे चलकर १२ बजे तिनसुकिया। जमनालाल मन्नालाल के राधाकिशन जी से मिला। सनेहीराम डूंगरमल के गया। १ बजे अंदाज डिगवोई रवाना हुआ। २ बजे पहुँचे। सारी रिफाइनरी देखी। अस्पताल और दूसरी देखने लायक जगहें देखीं। इस जगह की बढ़ोतरी हो रही है। काफी साफ-सुथरी जगह है, बहुत सुंदर बँगले हैं। चटगाँव के माफिक पहाड़ी जगह है। आज मोटर से १२५ मील गया। कल हवाई जहाज से कलकत्ता वापस जा रहा हूँ। डिब्रूगढ़ की यात्रा अच्छी रही। बहुत सी चीजें देखने को मिलीं। नया अनुभव आया।

कलकत्ता

७ फरवरी : ११ बजे मैकलियड में गया। उसको साढ़े सत्तरह का ऑफर दिया। फिर एयरवेज गया। माई जी वगैरह आ गये। ४ बजे फिर फोन मैकलियड का आया। शेयर्स के १७॥।) और १८९५००) में वगीचा नक्की किया, मन में काफी उत्साह आया। गद्दी ५ बजे आया। वगीचे से प्रायः चार-पाँच लाख की पैदा तो होनी ही चाहिए।

८ फरवरी : कल वगीचा ले लिया है। ४॥ बजे मैकलियड के ऑफिस गये। कागज-पत्र देखे। दिन में कई आदमियों से बातचीत की। पाकिस्तान-भारत संबंध खराब हो रहा है। सैदपुर में हम लोगों की प्रायः बीस लाख की रिस्क है। चाय-बगीचा का काम तो अच्छा मालूम देता है। विलायत कौन जायगा, डिसाइड नहीं है। शाम को गद्दी गया था। शेयर बाजार समान है। १००० शेयर ३१।) में बेचा।

९ फरवरी : सुबह ५ बजे उठा। ६। बजे एयरपोर्ट पहुँचा। ७॥ बजे राहुल जी कलिंगपोंग गये। ११॥ बजे घर खाना खाकर आर० बाजोरिया के गया। वहाँ से ऑफिस। दिन में सुना, चैनसुख गंभीरमल फेल हो गये। मन कैसा सा हो गया। पुरानी फर्म है। दिन मान का क्या भरोसा। चाय बगीचे के फाइनेंस का बंदोबस्त कर रहा हूँ। थोड़ा बुखार भी मालूम दे रहा है। विलायत जाने का विचार मेरा पक्का ही होता मालूम देता है। हिंदू-मुसलमान का तनाव बढ़ा सा है, थोड़ा दंगा सा हो रहा है।

१२ फरवरी : पाकिस्तान के दंगे की चिंता सी हो रही है। इस तरह दंगा-फसाद कर वे लोग बंगाल से हिंदुओं को निकाल देंगे, ऐसा लगता है। हिंदुस्तान कड़ा रुख नहीं रखेगा, वे खूब समझते हैं। कलकत्ते में शांति है पर ढाके में लोग फँस गये हैं।

१३ फरवरी : टामस कुक के ऑफिस गया। सारे दिन पासपोर्ट के झमेले में लग गया। कांता आ गया; चिंता मिटी। सैदपुर में काम चलता है, कोई खास फिकर वाली बात नहीं। परंतु क्या भरोसा? टी० गार्डन में झमेला पड़ गया। एसेट जो वे लोग बोलते थे, वह नहीं है। फिकर तो होगी ही। शाम को एंड्रयू के घर गया।

१५ फरवरी : चटगाँव के दंगे की खबर से आज यहाँ गोलमाल हो गया। सैदपुर में काम कमती करने का विचार कर रहे हैं। दिन में हाजी हबीब के गया, इस्माइल के गया। मालचंद जी को २८३०) की दलाली का काम बताया।

१६ फरवरी : रात नींद ठीक से नहीं आयी, चिंता थी, सोचता रहा। दिन में कुछ कामकाज सलटाया। २० ता० को बंबई जा रहा हूँ। टामस कुक में टिकट हो गया है। बिरजू का तार था, २३ ता० को ऑपरेशन है।

कलकत्ता-बंबई

२० फरवरी : सुबह मैदान नहीं गया। दाँत में काफी दर्द था, सूजन भी है। बुखार भी हो आया। काफी हैरानी महसूस करता रहा। ११ बजे एयर पोर्ट आया। बहुत से दोस्त पहुँचाने आए थे। दीपचंद नहीं था। सी० पचीसिया, श्यामा जै०, गोविंद जी, सिंह जी, सेंगर जी, पुरुषोत्तम जी, प्रभुदयाल जी, शिवचंद जी, ओंकारमल जी वगैरह बहुत से लोग आये थे। पहली विदेश-यात्रा थी। मन में एक रकम खुशी तो थी परंतु बिरजू की चिंता भी लगी थी। कैसा-सा महसूस कर रहा था। ६ बजे बंबई पहुँचा। दाँत कढ़ाने के कारण मुँह में सूजन थी, थोड़ा टेम्परेचर भी। शाम को बंबई घूमता रहा। रात में सोया, सरदी लगी कंबल तो था नहीं।

बंबई

२१ फरवरी : तबीयत कुछ ठीक सी थी। ८ बजे मोरों की गद्दी में गया। नमक की सेंक की। फिर टामस कुक और एयर इंडिया होता हुआ होटल वापस आया। एक डाभ तथा मौसमी का रस लिया। २॥ बजे एयर पोर्ट पहुँचा। १ घंटे तक कस्टम और पासपोर्ट की चेकिंग चली। कस्टम वालों ने खास देखा नहीं। डॉक्टर ने भी खास नहीं देखा, सूजन और बुखार के बारे में पूछा। साधारण सा अड़ंगा था, निकल गया। ३॥ बजे प्लेन उड़ा। रास्ते में चार-पाँच घंटे तो आराम से बीते, पीछे दर्द शुरू हुआ। बेचैनी बढ़ी। पेशाब भी कम होता है। रात १२ बजे कैरो पहुँचा। काफी ठंढी हवा चल रही थी। होटल में जाकर चार पत्र दिये, ४) लगे। २ बजे फिर प्लेन उड़ा।

जेनेवा-लेजाँ

२२ फरवरी : सुबह २ बजे कैरो से उड़ा। नींद तो आ गयी परंतु सूजन वैसी ही है। दर्द भी है। कुछ चिंता भी है। जहाज में मेरे पास डॉ० बरुआ हैं। कहते थे, शायद सेप्टिक हो गया। एक सीनियर इंजीनियर भी हैं दामोदर वैली कॉरपोरेशन के। महारानी पटियाला की पार्टी है। वे काफी सुंदर, गोरी और स्वस्थ हैं। महाराज सिंह गवर्नर, बंबई की मर्ताजी हैं। और भी दस-बीस हिंदुस्तानी हैं। खाना कुछ खास मैंने खाया नहीं। बिस्कुट खाये। १० बजे जेनेवा पहुँचा। मेरी टिकट मूल से लंदन की थी।

एयर इंडिया में माल उतर गया। १५) खर्च हो गए हैरानी हुई। १ वजे की ट्रेन में लेज़ां के लिए बैठे। पासपोर्ट की काफी चिंता है। मुझे पहले ही चेक कर लेना चाहिए था। यात्रा के पहले सावधानी रखने से परेशानी नहीं रहती। जेनेवा बहुत सुंदर शहर है, देख न सका, पासपोर्ट के कारण। टेक्सी-किराया बहुत है। लेज़ां ३। वजे पहुँचा। मन में बहुत तरह के विचार आते हैं। विरजू को देखा, उसकी तवीयत काफी ठीक है। कल ऑपरेशन होगा। पेट भर भोजन किया, मन राजी हो गया, रात अच्छी तरह सोया।

लेज़ां

२३ फरवरी : सुबह ५ वजे उठा। यहाँ कुछ कब्जियत सी मालूम पड़ती है। बिस्तर पर पड़ा रहा। झपकी सी आयी। ७ वजे उठा। खिड़की के बाहर पहाड़ों के सुंदर दृश्य देखने लगा। यहाँ सब फ्रेंच बोलते हैं। ९। वजे डॉक्टर लाहिरी ने खबर दी, सब ठीक है, ऑपरेशन हो गया। चार पसलियों की हड्डियाँ काटी गयी हैं। मन में कैसा सा लगा परंतु इलाज को तो मानना पड़ता है। तार किया, पत्र लिखे। १० वजे बिरजू को देखने गया। उदास सा था। ११ वजे खाना खाया। आधा मन का भारी बक्स ऊपर ले आया। मुंह से खून आने लगा। मैंने बड़ी गलती की। चिंता हुई, एकदम उदास-सा हो गया। शाम को फिर बिरजू से मिला परंतु अपनी बात उसे नहीं कही। रात में खून नहीं आया। शाम का खाना खाकर ७॥ वजे ऊपर आ गया। किताब बहुत देर तक पढ़ता रहा। स्विटजरलैंड के पर्यटन पर किताबें भी उलट-पलट कर देखीं। यहाँ लेडी फ्रेंच जानती है। दिन में डॉ० लाहिरी से मिला था। 'यूरोप' पढ़ी। 'सरिता' पढ़ी। हिंदी की पत्रिका पाकर मन में खुशी हुई। खून आने की चिंता है वरना तबीयत ठीक मालूम देती है। विरजू बहुत मजबूत मन का है। मेरे से तो ऐसा ऑपरेशन सहन नहीं हो पाता।

२४ फरवरी : सुबह ५ वजे उठ गया था। जब आदमी के काम नहीं रहता है तो आलस आप-से-आप आता है। किताबें पढ़ता रहा। ८॥ वजे विरजू के पास गया। तबीयत ठीक है। १०॥ वजे तक कमरे में था। फिर गोयनका जी के गया। बर्फ गिर रही थी। खून आज नहीं आया, चिंता मिट गयी। मेरा चेहरा आजकल सुस्त, सूखा हुआ-सा मालूम देता है। एक डेढ़ महीने में ठीक हो जायेगा। १२॥। वजे खाना खाकर सो गया। फिर २ वजे तक विरजू के पास था। फिर अपने कमरे में आकर सेंगर जी को एक लंबा पत्र लिखा। दोपहर को किताब पढ़ते-पढ़ते सो गया। जब आँखें खुलीं तो अँधेरा हो चुका था। कपड़े पहने, विरजू के पास गया। उसे थोड़ा दर्द था, थोड़ी बेचैनी थी। कलकत्ते का तार आया था। घंटे भर उसके पास था फिर वापस आ गया। समय का उपयोग ठीक नहीं होता। जंचाना होगा। सरदी काफी पड़ती है।

२५ फरवरी : नींद रोज ५ वजे ही आप से खुल जाती है। विस्तर पर पड़ा रहता हूँ। पढ़ता हूँ। परंतु आज उठते ही तैयार हो गया। ७॥ वजे बिरजू के पास गया। उसकी

तबीयत कल से ठीक है। डॉक्टर कहता है कि दर्द कम हो जायगा। देश को चिट्ठी लिखी, तार दिया। वापस आकर डायरी लिखी। सरदी बहुत है, चारों तरफ बर्फ। नया अनुभव होता है। विदेश में देश बहुत अच्छा और प्यारा लगता है। अपनों को देखने की, अपनी भाषा सुनने और बोलने की बहुत इच्छा होती है। यहाँ अंग्रेजी जानने बोलने वाले बहुत कम हैं। हिंदी का सवाल ही नहीं उठता। आज धूप निकली है। कुछ अच्छा लग रहा है। सोचने-विचारने का यहाँ काफी समय मिलता है। झूठ भी नहीं बोलना पड़ता है। २ बजे से ४ बजे तक बाजार गया। प्रायः एक मील घूमा। ५ बजे गोयनकाजी के चाय पी। ६ बजे बिरजू के पास गया। कुछ सुस्ती है परंतु कल से ठीक मालूम देता है। ८ बजे तक था। अपनी तबीयत में इंप्रूवमेन्ट महसूस कर रहा हूँ। घर आकर सब को पत्र लिखे, किताब पढ़ता रहा।

२६ फरवरी : रात काफी बर्फ गिरी। सुबह ५ बजे जब उठा बर्फ गिर रही थी। रूई के फोहे जैसे गिर रहे हों। अपने को रोक न पाया, ८॥ बजे बाहर घूमने निकला। काफी ठंढ थी। टेम्परेचर देखा। शून्य पर था। ९॥ बजे गोयनकाजी के उधर गया। ११॥। बजे तक तास खेलता रहा। १२ बजे बिरजू के पास आया। आज मेरे पीला-सा कफ आया था। दाँत का दर्द कम है। घर पर पढ़ता रहा। ऐसा मालूम देता है, मेरा स्वास्थ्य सुधर रहा है, वजन बढ़ रहा है।

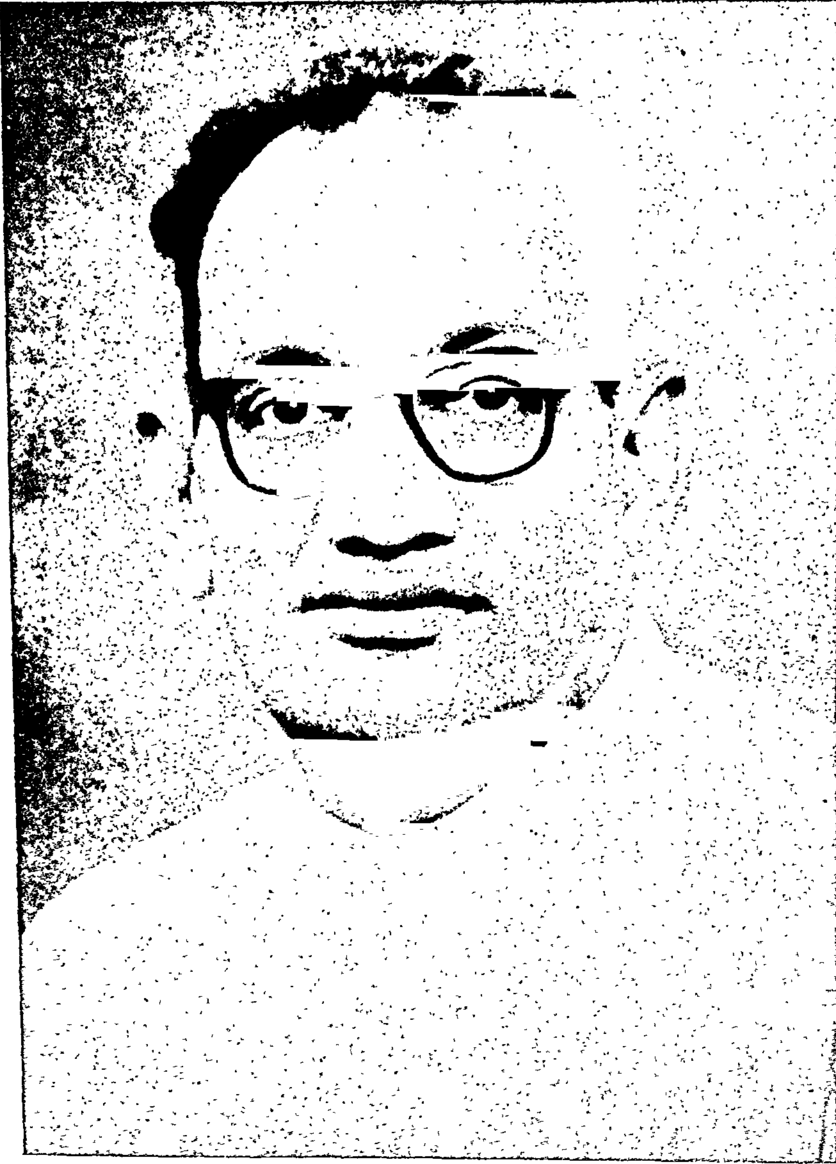
२७ फरवरी : मेरा कमरा गरम नहीं है, परंतु खास तकलीफ नहीं। सरदी और बर्फ की वजह से घूमना-फिरना नहीं हो पाता। बिरजू कुछ चीयरफुल दिखायी दिया। लेजां में कुल ९ हिंदुस्तानी हैं, जिनमें हम लोग ३, गोयनका ३, एक बंगाली, एक पारसी और एक शायद बिहार के हैं। गोयनकाजी और उसकी वाइफ भले हैं।

२८ फरवरी : थोड़ी सी कसरत की। मामूली-सा खून आता है, शायद दाँतों से। ९ बजे तक खूब घूमा। सरदी तो है पर कल जैसी नहीं। खाना खाकर फिर बिरजू के पास गया। उसकी तबीयत ठीक लगी। मुझे कलकत्ता छोड़े ८ दिन हो गए।

२ मार्च : बिरजू की तबीयत कल से ठीक है। रेडियो में सुना, पाकिस्तान में फिर गोलमाल हो गया। मन में चिंता हुई। उपाय क्या। आज सरदी नहीं थी। ओवरकोट नहीं पहना, घूमने निकल गया। मन यहाँ एक रकम लग गया है। दूध नियम से लेता हूँ।

४ मार्च : आज छारंडी है। कल अपने देश में होलिका जली होगी। यहाँ कौन जानता है? बिरजू के पास गया था, प्रसन्न था। डॉक्टर से मिला उसने कहा, दूसरा ऑपरेशन १५ ता० के लगभग होगा। चिट्ठी बराबर दे रहा हूँ। डाक भी आती है। पाकिस्तान की खबर खराब ही है। पान यहाँ नहीं मिलता। दाँत काफी साफ हो गए हैं। वजन बढ़ रहा है।

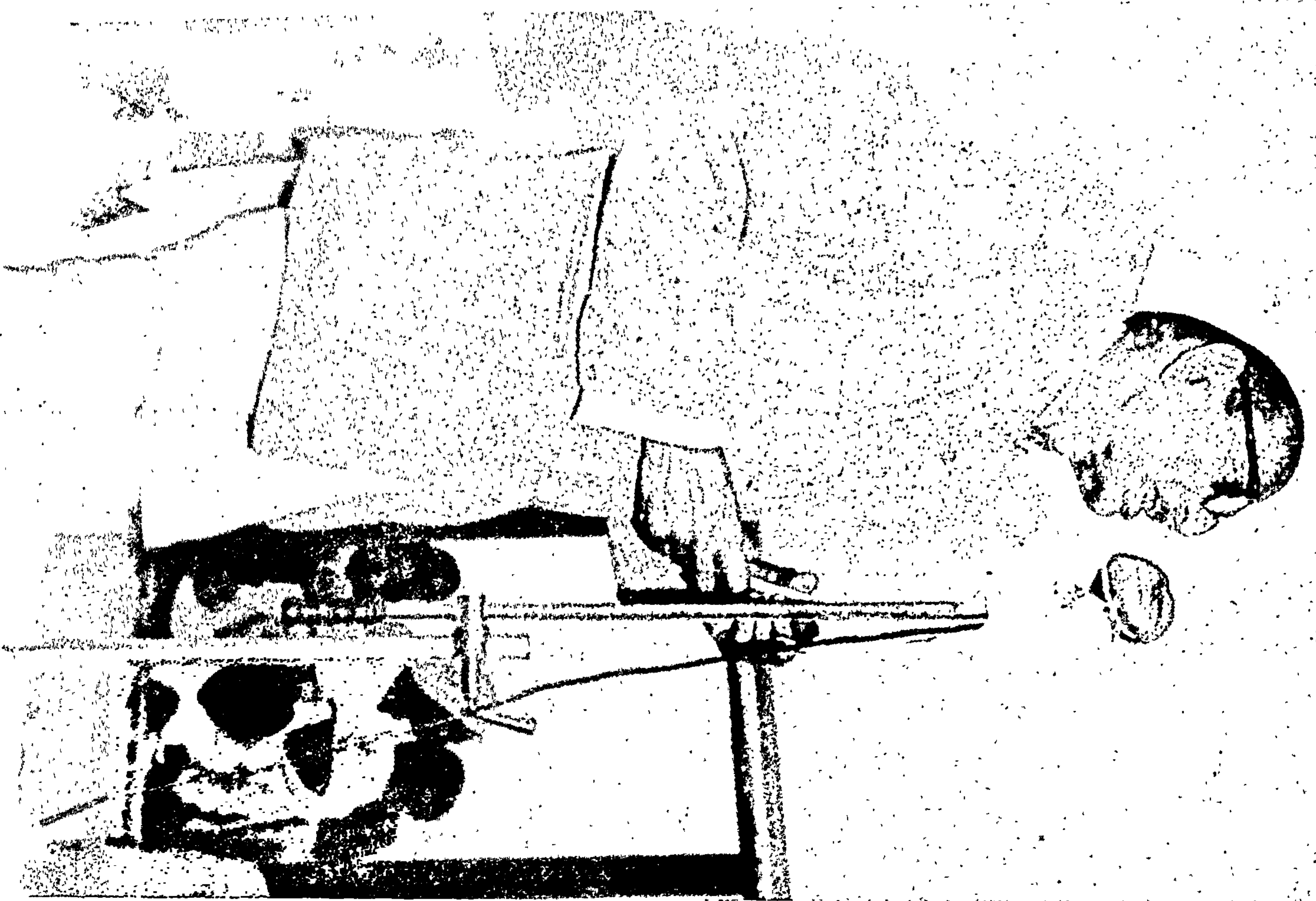
५ मार्च : बिरजू काफी ठीक है। उसने कहा, कहीं घूम क्यों नहीं आते। कल रात में



रामेश्वर टांटिया, १९४१ ई०



रामेश्वर टांटिया : युवावस्था



कर से संसद सदस्य के प्रत्याशी (१९५७ ई०)



रामेश्वर टांटिया, १९७६ ई०



पौत्र चि० अशोक के प्रथम जन्मोत्सव पर सपरिवार

बायें से (खड़े हुए) श्री रामजीदास डालमिया (ज्येष्ठ जामाता) चि० राजेन्द्रकुमार, चि० नन्दलाल, सुश्री सुशीला बाई (रतनी बाई की कन्या) (बैठे हुए) श्री रामेश्वर टांटिया, गोद में चि० अशोक श्रीमती दुर्गादेवी (पत्नी) सुश्री वेला, श्रीमती शारदा, श्रीमती रतनीबाई (ज्येष्ठा पुत्री)



सहोदर

बायें से : श्री बृजलाल, श्री रामेश्वर, श्री शिवप्रताप
श्री सत्यनारायण तथा श्री मदनलाल टांटिया



राजस्थान के सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री सोहनलाल दूगड़ तथा
श्री सुमेरमल आंचलिया के साथ



अमेरिकी उद्योगपति मि० आर० ए० हॉज (कैजर अल्युमिनियम इन्टरनेशनल)
के साथ श्री रामेश्वर जी तथा श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका



सिंगापुर एसेम्बली हाउस के स्पीकर के साथ श्री रामेश्वरजी



पोद्दार छात्र-निवास, कलकत्ता का वार्षिकोत्सव
सांसद श्री फिरोज गांधी (भाषण करते हुए) प्रभुदयाल
हिम्मतसिंहका तथा श्री टांटिया



ज्ञान भारती विद्यापीठ, कलकत्ता का शिलान्यास करते हुए उपराष्ट्रपति
डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, साहू शान्तिप्रसाद जैन, टाँटिया जी.
अध्यक्ष तथा श्री नथमल केडिया

सिनेमा देखा, 'जिब्राल्टर' परंतु कुछ समझा नहीं। मन भी नहीं लगा। बीच में ही उठकर चला आया।

६ मार्च : सब कोई की चिट्ठी आती है, हम लोगों की नहीं। पाकिस्तान की खबरें खराब हैं, शायद काम बंद हो गया होगा। बिरजू की तबीयत ठीक है परंतु बोलता ज्यादा है, डॉक्टर मना करते हैं।

८ मार्च : सुबह घूमने निकला। अच्छा लगा। यहाँ के लोगों का स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। चेहरे पर चमक है। बातूनी भी नहीं लगते। मेरी तबीयत पहले से बहुत ठीक है, २८ ता० से २ सेर बेशी वजन बढ़ा है। कान्ता का कागज था। लकुवा चाय बगीचा नहीं हुआ। पाकिस्तान का काम प्रायः बंद ही हो गया है। कामकाज कम है। कल लूजान जाऊँगा।

९ मार्च : सुबह बिरजू के पास गया। ९॥ बजे मांट्रेंचू पहुँचा। बड़ा और सुंदर शहर जेनेवा झील के ऊपर है। तीन-चार मील पर चिलोन का किला देखा, काफी पुराना है। इसके बारे में बहुत पहले एक कविता पढ़ी थी, शायद बायरन की लिखी थी। थर्ड क्लास में ट्रैवेल करता हूँ। एक छोटे से कस्बे में खाने का थोड़ा सामान लिया। हाथ की किताबें वहीं भूल गया। पीछे गया तो मिल गयीं। यहाँ छोटे-छोटे कस्बे पास-पास हैं। सफाई का तो क्या कहना। लूजान ४ बजे अंदाज पूगा। ट्रंक हाथ में लिए घूमता रहा। इधर हिंदुस्तानी कमती आते हैं, शायद लोग मेरी ओर देखते थे। ट्रंक लेकर चलने के कारण तकलीफ हुई परंतु खर्च की तंगी के कारण ऐसा करना पड़ा। एक होटेल में ठहरा, साधारण सा था। सामान रखा, खाना खाया और शहर घूमने निकला। बहुत ही सुंदर शहर है। मन में विचार आया कि हम लोग अपने शहर, कस्बे और गाँव ऐसे साफ क्यों नहीं रख पाते।

लूजान-फ्राइबर्ग

१० मार्च : रात में सपना आया कि भारत वापस चला गया हूँ। कल चलना बहुत हुआ, पैर जोरों से दुख रहे थे। थोड़ी सी कसरत की। ९ बजे शहर घूमा। चित्रशाला देखी, बाजार में कुछ चीजें खरीदीं। होटेल आकर खाना खाया। १॥ बजे की गाड़ी से फ्राइबर्ग ३ बजे पूगा। बहुत ही सुंदर शहर है। लोहे का कारखाना है। यहाँ शक्ल-सूरत से पता नहीं चलता कि कौन फ्रेंच है, कौन जर्मन या इटालियन। वैसे, मजदूरी के लिए इटली से लोग यहाँ आते हैं। ४॥ बजे यहाँ से चल कर ५। बजे बर्न पहुँचा। यह राजधानी है, बड़ा शहर है। ज्युरे होटेल में ठहरा। काफी आराम रहा। यहाँ अंग्रेजी जाननेवाले मिले, इससे सुविधा रही। रात में दूध पिया और अंजीर खाये। ९ बजे एक फ्रेंच ऑपेरा देखने गया। समझ में नहीं आया परंतु यात्रा की थकान मिट गयी। १० बजे वापस आ गया। बाहर बहुत ठंढ थी। गरम कपड़े साथ में कम थे। शेरवानी पहने था, भारतीय

पोशाक में होने के कारण लोग बहुत इज्जत करते थे। कहीं-कहीं हिंदी में बोलता था। समझते कैसे ? फिर अंग्रेजी में बात करता। एक अच्छा अनुभव रहा।

बर्न, लेजां

११ मार्च : देर से नींद खुली, ७ बजे थे। तैयार हो गया। ९ बजे कलेवा किया। आठ-दस रोटियाँ, मक्खन जेली, उबली गोभी, दूध। पेट भर गया। दूध बहुत स्वादिष्ट और शुद्ध मिल जाता है, ९। बजे शहर घूमने निकला। भारतीय दूतावास गया। कार्यकर्त्ता सभ्य एवं शिष्ट हैं। ऐसा लगता है हमारी सरकार की ओर से यहाँ पुस्तकें पत्र-पत्रिकायें, हिंदी की कम ही भेजी जाती हैं। फिर म्युजियम और आर्ट म्युजियम देखा। हिंदुस्तान की तरह प्राचीन चीजें तो यहाँ नहीं हैं परंतु जो भी हैं, उन्हें खूब सजा कर, संवार कर रखा गया है। पूछने पर जानकारी भी मिल जाती है। बर्न पुराना शहर है, लूजान की तरह सुंदर भी। गिरजा तथा घंटाघर भी देखा। अच्छा लगा। होटेल से सामान लेकर ४ बजे निकला, ट्रेन पकड़ी। लूजान में लगेज और टिकट खो दिया। खैर, बिना ट्रवल मिल गयी। ११ फ्रैंक लगे। अपने देश में तो बहुत झंझट होता, सामान शायद ही मिल पाता। ७॥ बजे की गाड़ी से लेजां पहुँचा।

१२ मार्च : सुबह काफी थका-सा उठा। कसरत नहीं की। पैर दुखते थे। इन तीन दिनों में काफी थकावट आ गयी। देश का कोई पत्र भी नहीं आया। बिरजू से मिला। तबीयत ठीक है। 'प्राइड एंड प्रेज्युडिस' पढ़ता रहा, अच्छा उपन्यास है। पिछले दिनों घूमने में कुल ११७ फ्रैंक खर्च हुए। जरूर बेशी हुआ, ख्याल रखना चाहिए। ३२ फ्रैंक की चीजें ले आया, ८५ फ्रैंक रहने, खाने और यात्रा में खर्च हुए।

१४ मार्च : सुबह ८॥ बजे बिरजू को देखने गया। डॉ० लाहिरी के साथ चाय पी। १० बजे बिरजू को नीचे ले जाया गया। मुझे डर लग रहा था, आज उसका दूसरा ऑपरेशन होगा। ११ बजे ऑपरेशन हुआ। चेत नहीं हुआ। ११॥ बजे कलकत्ता तार दिया। १॥। बजे खाना खाने गया, तब तक बिरजू के चेत नहीं आया था, परंतु बेचैनी थी। डॉक्टर कहता है, बेचैनी तीन-चार दिन रहेगी। कुछ दुःख तो होता है, उसे कितनी तकलीफ होती होगी।

१५ मार्च : सुबह ७॥। बजे उठा। रात में 'प्राइड एंड प्रेज्युडिस' दो-तीन घंटे पढ़ता रहा। ९। बजे बिरजू के पास गया। वहीं वजन लिया, दो मन नौ सेर। काफी है, बढ़ने की दरकार नहीं। स्वास्थ्य ठीक है। बिरजू की तबीयत शाम को ठीक रही। बगीचा २३ लाख में स्टोर्स के साथ हो गया है, सत्यनारायण तथा बापू जी का पत्र था। और भी सब समाचार ठीक है। यहाँ से अंदाज २८-२९ मार्च को जाऊँगा। भाई जी को मई के पहले सप्ताह में आने को लिखा।

१९ मार्च : कसरत रोज करता हूँ। अंगूर का रस पीता हूँ। तीन-चार मील घूम भी लेता हूँ। पत्र-पत्रिकाएँ भी पढ़ता हूँ। कलकत्ते से पत्र आते हैं, रेडियो से खबरें मिलती

हैं। जूट की खबरें प्रायः मिल जाती हैं। वैसे, मेरा मन तो स्वस्थ है, परंतु निठल्ले बैठे कुछ आलस्य सा होता है। सोचता हूँ, स्त्रियाँ कैसे दिन निकाल लेती हैं।

२० मार्च : दो पत्र मोदी जी के हैं, एक भरतिया जी का, परंतु घर का नहीं। बड़ी निराशा सी हुई। ११ बजे तक बिरजू के पास था। तबीयत सुधर रही है। प्रभुदयाल जी जुहारमल जी, एस० एन० तथा सिंघी जी को चिट्ठियाँ लिखीं। मेरा मन अब फिर उड़नेवाला हो गया है।

२४ मार्च : पाकिस्तान की हालत जैसी सोची थी, उससे भी खराब है। सैदपुर का काम चलेगा नहीं। हम लोगों को कुछ नया काम करना चाहिए। मेरा मन स्विटजरलैंड घूमने का करता है। प्रोग्राम बनाऊँगा। बिरजू को ऊपर ले आये हैं, इंप्रूव कर रहा है। शाम को कलकत्ते की चिट्ठी मिली। टी गार्डेन ले लिया है। भाई जी की तबीयत नरम है, और सब राजी हैं।

२६ मार्च : बुधवार तक जाने का विचार है। भारत जाने के पहले कुछ घूम लूं, फिर पता नहीं कब आना हो। परंतु सब कुछ विजा और टिकट पर डिपेंड करता है। अब चला जाना है, मन कैसा सा बिरजू के लिए करता है। उसके पास अधिक रहना चाहिए।

२७ मार्च : चीजें जँचा ली हैं। यात्रा की तैयारी एक रकम कर ली। कलकत्ते तार दिया। कल जाने का है। लाला जी, मोदी जी, अजित सिंह, दिल्ली का पत्र आया था। कलकत्ते में एंड्रयू यूल का बड़ा साहब मारा गया। हम लोगों के चिंता हो गयी, कारबार की। बिरजू के कुछ दरद-सा था, वैसे ठीक इंप्रूवमेंट हो रहा है।

लेजां-मॉन्ट्र्यू-इन्टर लेकन

२८ मार्च : बिरजू के पास सुबह आया। बड़े भाई जी से फोन पर बात हुई। सब राजी-खुशी हैं। टी गार्डन फर्स्ट वीक अप्रैल से अपने मैनेजमेंट में आयगा, कांता का कागज था, नन्दू का भी। बसंती,बसंती की माँ दोनों दवाई लेती हैं। १२ बजे खाना खा कर १ बजे मॉन्ट्र्यू पूगा। इस बीच कई छोटे-छोटे क़स्बे भी घूम लिए। इधर ज़र्मन भाषा बोलते हैं। मैं जानता नहीं। दूकान में फ्रेंक रख देता और चीज बता देता हूँ। वाजिब दाम वे लोग ले लेते हैं। ठगाई नहीं है। व्यवहार भी मधुर। दुकानों में स्त्रियाँ अधिक हैं। एक केला एक आने का और आधा सेर दूध दस आने का लिया। पास का कलेवा साथ में किया। पेट भर गया। ८।। बजे इनतरलैकेन पहुँचा। होटेल में ठहरा। कुक का आदमी मिल गया था। कमरा अच्छा है। प्रायः ६ मील घूमा। बायरन ने अपनी 'मैनेफ्रेड बेजने' यहीं लिखी। दृश्य बहुत ही मनोरम हैं।

इनतरलैकन, युंगफ्राऊ

२९ मार्च : सुबह ८।। बजे से शहर घूमने निकला। शहर के दोनों तरफ झीलें हैं। इसलिए 'इंटरलेक' इंतरलैकन नाम पड़ा। सामने बर्फ से ढका, सफेद पहाड़। शायद यह

स्विटजरलैंड की सब से खूबसूरत जगह है। बहुत से पर्यटक आये हुए हैं। खूब घूमा, ऐसा लगा कि सुंदर दृश्य को देख कर जीवन सार्थक हो गया। विचार आया, वाइफ को साथ लाता तो बहुत अच्छा होता। स्केटिंग और स्की के खेल यहाँ बहुत होते हैं। अत्यंत कठिन और साहस का खेल है। मैंने कोशिश की पर असफल हुआ। डर भी लगा, हाथ-पैर टूट न जायें। यहाँ से युंगफ्राऊ चला। साथ में कई विदेशी पर्यटक भी थे। हिंदुस्तानी जान कर उन्होंने मेरी बड़ी इज्जत की। बहुत तरह के सवाल पूछे, अजीब-अजीब भी। हिमालय के बारे में मैं कुछ भी खास बता नहीं सका। कुछ झेंप आयी। यूरोप की स्त्रियों में पर्दा तो है ही नहीं, बहुत निस्संकोच और स्पष्ट बात करती हैं। मुझसे परिवार-नियोजन पर प्रश्न पूछ रही थीं। ट्रेनें यहाँ बिजली से चलती हैं। रास्ते में वेनजेन में सूर्यास्त का बहुत सुंदर दृश्य देखा। ट्रेन सुरंगों से गुजरती हुई शेइदेग पहुँची। यहाँ ट्रेन बदलनी पड़ती है। फिर सुरंगों से होती हुई आयज़मीर (हिम सागर) पहुँची। करीब १०,३६८ फीट ऊँचाई पर है। स्विस इंजीनियरिंग कौशल का नमूना है। पत्थरों को काट कर यह स्थान बनाया गया है। बहुत ठंढ थी। १२। बजे युंगफ्राऊ, ११,४०० फीट की ऊँचाई पर पहुँच कर एक ऊँचे होटेल 'बर्ग हाउस' में नाश्ता किया। लिफ्ट के सहारे सब से ऊँची चोटी पर गया। नन्दू को कार्ड भेजा। बहुत बड़ी दूरबीन लगी है, इससे आसपास के देश देखे। यहाँ एक बर्फ का मकान है। इसमें मेज, कुर्सी, मोटर, सब बर्फ के। परी देश की तरह की जगह लगी। बर्फ यहाँ कभी पिघलती नहीं। वापिस इंतरलाकेन चला आया। थोड़ी बारिश थी। होटेल में बहुत आराम था।

इन्तरलैकेन

३० मार्च : थकावट नहीं है। ९ बजे कुक के ऑफिस गया। १२। बजे की गाड़ी से बर्न आया। कुछ देर तक घूमता रहा। १२॥ बजे फ्रेंच कौंसल में गया, विज़ा के वास्ते। बस से न्यू शैटेल गया। बहुत ही सुंदर शहर है, लेक पर बसा हुआ। प्रायः २ मील घूमा। फैनीकूलर में चढ़ा। ४॥ बजे बेजेल आ गया। कुल १५० मील की यात्रा से कुछ थकान सी महसूस करने लगा। मेरे बक्स का वजन बहुत बेशी है। बेजल व्यस्त शहर है। राइन नदी पर बसा हुआ व्यापारिक केंद्र है। बहुत से कारखाने हैं। सीबा की फैक्टरी यहीं है। डायरी तथा खरचे का हिसाब लिखा।

३१ मार्च : सारे दिन की ट्राम की टिकट ले ली थी। खूब घूम कर शहर कम खर्च में देखा। 'वोमन हेटर' एक सिनेमा भी देखा। मन बहुत प्रसन्न था। आर्ट म्यूजियम देखा, जूलॉजिकल गार्डन भी। दोनों ही अच्छे लगे। बिरजू को फोन किया, राजी हैं। बोलता था, भाई जी की चिट्ठी है, कलकत्ते में सब ठीक है।

ज्यूरिख

३ अप्रैल : सुबह ६ बजे उठा। तैयार होकर घूमने निकला। पिछले दो दिनों से छोटे-छोटे कस्बों में घूमता रहा हूँ। बहुत कुछ देखा, सीखने और समझने का मौका

मिला। हम लोग इनके मुकाबले काफी पिछड़े हैं, इंडस्ट्री और ट्रेड में। वेलजियम, स्पेन और फ्रांस के कौन्स्युलेट्स में गया, विज़ा के लिए। ज्यूरिख बहुत सुंदर और बड़ा शहर है, आवादी करीव साढ़े तीन लाख। घड़ियों और मशीनरी के कारखाने हैं परंतु धुंआ-धूल नहीं है। विजली से सव काम होते हैं। आस-पास के प्राकृतिक दृश्य भी सुंदर हैं। शहरों में मुझे अव तक वर्न वेशी पसन्द आया। स्विटजरलैंड बहुत ही सुन्दर है। वातचीत व्यवहार सब मधुर। खाने-पीने, रहने की सुविधा, चीजें सुलभ, लगता है नंदन-कानन है।

४ अप्रैल : कसरत तो छूट गयी है। तैयार हो कर ७ वजे निकल पड़ा। डेढ़ फ्रैंक की एक टिकट ले ली। खूब घूमा। स्पेनिश विज़ा मिल गया। मिलान फेयर १२ अप्रैल को है। इसलिए पहले फ्रांस जाऊँगा। ९० फ्रैंक की तीन ट्रावेलर्स चेक ली। शाम को ६ वजे आकर मटर की खिचड़ी वनायी। वड़ी स्वादिष्ट लगी। ८ वजे तक किताब पढ़ता रहा। फिर लेक के किनारे घूमने गया। स्टीमर वड़े साफ और सुंदर हैं, आरामदेह भी। खर्च आज कुछ वेशी हो गया।

ज्यूरिख

५ अप्रैल : कलेवा कर ८।। वजे होटेल से निकला। ३।। वजे फ्रेंच कौन्सिल में विज़ा तैयार हो जायगा। समय निकालने के लिए लेजिन चला गया। छोटा कस्वा है। एक घंटा घूमा। २ फ्रैंक टिकट के लग गए, ट्राम के। फजूल ही लगा। १। वजे गाड़ी में वैठ कर २ वजे ज्यूरिख वापस आया। होटेल आकर चीजें जँचाई। विल चुकता कर ३। वजे फ्रेंच कौन्सिल गया। विज़ा मिल गया। ५। वजे की गाड़ी में वैठ कर १० वजे लेजां पहुँचा। थकावट खास नहीं आयी थी।

लेजां

६ अप्रैल : विरजू की तवीयत ठीक है। कलकत्ते का समाचार मिला। वगीचे का प्रायः काम नक्की हो गया है। शाम को कई पत्र लिखे डेडराज जी मरदा, भवँरुजी किल्ला, अजित सिंह, दौलतराम जी को। कपड़े वगैरह जँचाये।

७ अप्रैल : सुवह ९ वजे विरजू के पास गया। डॉक्टर लाहिरी से मिला। विरजू की तवीयत ठीक है, स्टेडी इंप्रूवमेंट है। गोयनका जी तथा और लोगों से मिला। होटेल का विल देकर स्टेशन आ गया। १२ वजे की गाड़ी में वैठा, ३ वजे जेनेवा पहुँचा। पेंशन होटेल में ठहरा। ९ वजे तक घूमता रहा। मुझे शहर वहुत जँचा। वहुत भव्य शहर है। जेनेवा झील के किनारे वसा है। टामस कुक और एयर इंडिया ऑफिस गया, वंद थे। तीन कितावें सेकेंड हैंड खरीदीं। एक गोयनका जी को भेजी, दो अपने लिए रख लीं। रात में होटेल वापस आया। कमरा गरम नहीं था। परंतु नींद आ गयी। भूख लगी थी, दूध

पी लिया, एक सेव खाया। आगे का प्रोग्राम कल बनाऊँगा। इटालियन विज़ा की चेष्टा करूँगा।

जेनेवा

८ अप्रैल : सुवह २ फ्रैंक की टिकट लेकर ट्राम में घूमा। पूरे २ फ्रैंक का फायदा नहीं उठा सका। ९ वजे हिंदुस्तान स्टैंडर्ड का वंगाली संपादक मिला। कुछ घमंड से वात की। कैसा-सा लगा। विदेश में अपने देश के लोगों में भेदभाव नहीं रहना चाहिए। परंतु अपना-अपना स्वभाव है। १० वजे एयर इंडिया गया। उन्होंने लंदन ले जाना मंजूर किया। ११ वजे एयर पोर्ट पर पहुंचा। १२॥ वजे प्लेन में वैठा। परंतु प्लेन खराव हो गया। वापिस उतरे। एयरपोर्ट पर वेट करते रहे फिर ३ वजे शहर आया। होटेल में ठहर गया। कल जाना होगा। विरजू को २५० फ्रैंक भेजे।

जेनेवा, लन्दन

९ अप्रैल: सुवह ९ वजे तक जेनेवा में खूव घूमा। १० वजे एयर पोर्ट पहुँचा। ११॥ वजे प्लेन उड़ा। १ वजे लंदन एयर पोर्ट जी० एम० टी० पहुँचा। १॥ वजे तक पासपोर्ट वगैरह देखा। मेरी चावी गुम गयी, ताला तोड़ना पड़ा। शहर में होटेल में जगह नहीं मिल रही थी। वहुत खोजने पर एक रद्दी से होटेल में ठहरा। थोड़ी वारिश थी। इंडियन स्टूडेंट्स व्यूरो में गया। वस वहुत सस्ती है। शहर पैदल ही घूमा, शायद ६ मील। विरजू को फोन किया, राजी है।

लन्दन

१० अप्रैल : सुवह वाजार निकल गया। कुछ वारिश थी। वस से ट्रेफलगर स्क्वायर की नेशनल आर्ट गैलरी देखने गया। वहुत विशाल भवन है। ५०० वर्षों के वड़े-छोटे चित्रों का सुंदर संग्रह है। शाम को पिकाडिली पहुँचा। फैशन, रोशनी, सजावट देखते वनती है। दिल्ली का कनाट और कलकत्ते का पार्क स्ट्रीट, चौरंगी इसके मुकावले कुछ भी नहीं। रात में ८ वजे स्टीम वाथ लिया। वहुत आराम मिला। कुल ६ रु० लगे। यहाँ लोग नंगे होकर नहाते हैं। मैं भी नंगा हो गया। गरमी काफी रहती है। लंदन वहुत वड़ा शहर है। कम-से-कम एक महीने में देखा जाय, इतना वड़ा। सारे दिन घूमता हूँ। कल से तो काम है। वैंक में रुपये देने हैं।

११ अप्रैल : होटेल रद्दी है, असुविधा है ही। परंतु सोने के लिए तो जगह चाहिए। ८॥ वजे तैयार होकर निकला। कुछ घूमा। फिर डगलस के १० वजे गया। ११ वजे आइजक्स के। प्रेम से मिले। लंदन जूट एक्सचेंज में ले गये। कई लोगों से जान-पहचान हुई। १॥। वजे से २ वजे तक के० सी० वोथरा के ऑफिस में गया। वहाँ चाय पी, कलेवा किया। ३ वजे से ६ वजे तक वेस्ट एंड में नदी के पार चला गया; काफी दूर

तक। ९ वजे घूमता हुआ एक क्लव में गया। जानकारी नहीं थी। एकदम नंगा नाच हो रहा था, देखा। अजीव सा लगा, विचार भी बुरे-अच्छे आए। नया अनुभव हुआ। वाहर निकला। खराव-सा मुहल्ला था। कुछ डर तो जरूर लगा परंतु पुलिस का पूरा वंदोवस्त था। रात १२। वजे होटेल पहुँचा। १२॥। वजे पिकाडिली आ गया। काफी रौनक थी। रास्ते में जगह-जगह वेश्याएँ भी थीं। पुलिस वाले पास में खड़े रहते हैं परंतु कुछ वोलते नहीं। आज पता नहीं कहाँ डेढ़ पाउंड गुम गया, बहुत हैरानी है। सेंट पाल का गिरजा दिन में देखा था, काफी वड़ा है। होटल की कोशिश में हूँ, शायद वदल सकूंगा।

१२ अप्रैल : होटेल का वंदोवस्त हो गया। ११ वजे माउंट रॉयल में आ गया। काफी वड़ा कमरा, रसोई, वाथ सव है, परंतु चार्ज बहुत वेशी; ३५ शिलिंग है। मेरा विचार यहाँ रहने का नहीं है। दिन में काफी घूमा। वेलजियम, हॉलैण्ड का विज़ा वनवा लिया है। रात में ७ वजे लंदन से १४ मील दूर सेठिया के घर गया। अच्छा भोजन मिला। १०॥ वजे वापस आकर पिकाडिली घूमने निकला। रात १२। वजे होटेल वापस आकर सो गया।

१३ अप्रैल : ११ वजे डगलस के गया। चेक ली, ११॥ वजे आइजक्स के गया फिर १॥ वजे मार्टिन वैंक में रुपये जमा कराये। शाम को घूमता रहा। होटेल में खाना खाया, फिर शहर घूम कर ९ वजे वापस आ गया।

१५ अप्रैल : सुवह कुछ किताबें खरीदीं। दिन में ब्रिटिश म्यूजियम वगैरह देखता रहा। दो-तीन ऑफिसों में गया। शनिवार है, मिलना नहीं हुआ। एक फल वाले से अंगूर लिए, उसने डेढ़ शिलिंग मांगे, मैंने नहीं दिए, अंगूर रख दिए। वह कुछ बुदबुदाया। मुझे अपमान-सा लगा। ऐसा ही अनुभव कोहिनूर में हुआ। यहाँ वाले मोल-भाव नहीं करते। खरीददार भी चीज एक वार उठाकर वापस नहीं रखते। एक थियेटर में २ शिलिंग का टिकट लिया। सीट विलकुल रद्दी थी। वहुत इनफीरियरिटी सी फील हुई। आज गोयनकाजी के लिए ३५) की किताबें लीं। उन्हें पढ़ने का शौक है। कल वेलजियम जा रहा हूँ। लंदन में खर्च काफी हुआ।

लंदन-डोवर, ब्रूजे, घेंट

१६ अप्रैल : सुवह ७ वजे उठा। आज लंदन की घड़ियाँ एक घंटा आगे हो गयीं। पार्लियामेंट-हाउस देखा। दो-तीन जगह घूमा। १०॥ वजे होटेल आकर विल चुकाया और वक्स लेकर विक्टोरिया स्टेशन पहुँचा। टिकट लिया ४ पौण्ड लगे। १२॥ वजे डोवर पहुँचा। जहाज से इंगलिश चैनल पार कर ऑस्टेंड पहुँचा। ४॥ वजे थे। ६० मील की दूरी है वेलजियम का वंदरगाह है। मछली-व्यवसाय का केंद्र है। घंटे भर शहर में घूमा। यहाँ अंग्रेजी जानने-समझने वाले काफी मिले। दिक्कत नहीं हुई। ५॥ वजे अंदाज ब्रूजे पहुँचा। खूव घूमा, पुराना शहर है, नहरों पर वसा हुआ है। वहुत

सिपुल हैं। किसी जमाने में यह शहर पेरिस की तरह वढ़ा-चढ़ा माना जाता था। गिरजे वहुत हैं, पुराने: एक से एक सुंदर। सेंट साब्युर का गिरजा देखा। पादरी ने इतिहास की जानकारी दी। ९॥ वजे घेंट पहुँचा। होटेल में ठहरा, १०) चार्ज है। साधारण सा कमरा है। ट्रेन से आया हूँ। रात में शहर घूमा। मुहल्ले छोटे-छोटे द्वीपों जैसे लगते हैं। नहर और पुलों का शहर है, पुराना। वेवो और सेंट निकोलस का गिरजा देखा, काफी पुराना है। घेंट के क्लाक टावर की ऊँचाई ३०० फीट है।

घेंट, ब्रुशल्स, एन्टवर्प

१७ अप्रैल : घेंट में पेट भर कलेवा किया। होटेल का सव समेत चार्ज हुआ १२)। १० वजे तक शहर देखा। विश्वविद्यालय में गया, अच्छी लाइब्रेरी है। तीन लाख से ऊपर किताबें हैं। इंजीनियरिंग और आर्ट् स की पढ़ाई होती है। पिछले युद्ध में शहर को वहुत नुकसान पहुँचा था। ११। वजे की ट्रेन से १२ वजे ब्रूशल्स पहुँच गया। वड़ा शहर है। तीन-चार लाख की आवादी, काफी रौनक। इन्डस्ट्री तो स्विटजरलैंड की तरह वढ़ी-चढ़ी नहीं लगी, प्राकृतिक सुंदरता भी वैसी नहीं। फिर भी, लोग खुश हैं, स्वस्थ भी। गरीवी नहीं हैं। काफी भव्य शहर लगता है। लोग खाने के शौकीन मालूम देते हैं। प्राचीनता को पसंद करते हैं, लंदन की तरह यहाँ भाग-दौड़ नहीं है, ये दिन मेरे लाइफ में याद रहेंगे। थक तो जाता हूँ क्योंकि घूमता रहता हूँ। खर्च वहुत कम करता हूँ। विरजू को फोन किया, राजी है। वापू जी का कागज १३ तारीख का था। भाई जी टी गार्डेन गए हुए हैं। ७ वजे एंटपर्व पहुँचा। होटेल में ६० फ्रैंक में ठहरा। कमरा अच्छा है। दूध, मक्खन, दलिया और शहद मिला कर खाया। मेवे और केले भी खाए। खर्च लिखा। चीजें सस्ती हैं।

एंटवर्प-रॉटरडम, हेग-अमस्टर्डम

१८ अप्रैल : सुवह एंटवर्प के २४ मंजिले मकान पर चढ़ा। सारा शहर खिलौने-सा दिख रहा था। शहर के वाहर हरियाली में शेल्ड नदी का पानी हीरों की तरह चमक रहा था। गिरजों के ऊँचे वूर्जों पर सूरज की किरणें वहुत अच्छी लगीं। वापस आकर हीरों के व्यापारी से मिला। फिर पटसन के आढ़तिये से। वहुत सी जानकारी मिली। ४ वजे ट्रेन से राटरडम पहुँचा। शहर देखा। पिछली लड़ाई में वहुत नुकसान हुआ। वहुत से हिस्से वमों से टूटे-फूटे हैं परंतु जल्दी-जल्दी नए वनाये जा रहे हैं। ७ वजे हेग पहुँचा। वड़ा ही सुंदर शहर है। समुद्रतट देखने लायक है। ३-४ आने में दूध, रोटी, मक्खन खाया, रेस्तराँ में। तृप्ति हुई। फिर १०। वजे एमस्टर्डम वापस आ गया। एक सस्ते होटेल में ४ रु० रोज में ठहरा। वहुत साधारण कमरा था।

१९ अप्रैल : सुवह ८ वजे निकला। थोड़ा घूमा, फिर होटल के सामने एक मोटर वोट पर सैर के लिए वैठा। गलती हो गयी थी, कारखाने की वोट थी। समुद्र के वीच कारखाने में ले गया। दूसरी वोट से वापस आया। डैनिश, नारवेजियन कौंसुलेटों में विजा के

लिए गया। टामस कुक की ऑफिस और स्वीडिश, कौंसुलेट में गया। तीनों देशों के विज़ा मिल गए। शहर अच्छी तरह देखा। शाम को 'इंस्पेक्टर जेनरल' अंग्रेजी फिल्म देखी। यहाँ अंग्रेजी समझने वाले मिल जाते हैं। फिर भी डच न जानने के कारण थोड़ी कठिनाई होती है। अमस्टर्डम हालैंड की व्यापारिक राजधानी है। पहले यह दलदल था, अब तो बहुत सुंदर शहर। इसे उत्तर का वेनिस कहते हैं। फूल, दूध और सब्जियाँ बहुत हैं। साइकिल और कबूतर भी।

अमस्टर्डम, ब्रिमेन, हमवर्ग

२० अप्रैल : सस्ता होने के कारण होटल का कमरा साधारण है। कुछ तकलीफ हुई। आइंदा मैं अच्छा कमरा लूंगा। परंतु यहाँ होटलों में जगह ही नहीं मिलती। ९ बजे की गाड़ी में बैठ कर ४। बजे ब्रिमेन पहुँचा। खाना जरमनी में मँहगा है। शहर तो बमों की मार से टूटा-फूटा है। सड़कों पर लँगड़े, हाथकटे लोग चलते-फिरते दिखते हैं। लड़ाई में चोट आयी है, शायद। यहाँ तो बहुत खराब दशा मालूम देती है। केले, दूध, बिस्कुट और काफी लिया। पेट भर गया। शहर में लड़ाई का जो नतीजा देखा, मन खराब हो गया। आदमी देवता और राक्षस दोनों बन सकता है। ७॥ बजे ट्रेन से हमवर्ग पहुँचा। ६॥) में बहुत ही अच्छा कमरा होटल में मिल गया। लंदन में २०) रोज के माफिक है। केतली खराब हो गयी है। खाना बनाने में दिक्कत होगी। कल दूसरी लूंगा। जरूरी है, वरना खाने में तो खर्च बहुत लगता है। ८॥ बजे तक कपड़े धोये। स्नान भी कर लिया। कल कोपेनहैगन जाऊँगा, शहर घूमा। यहाँ भी युद्ध की बरबादी देख कर मन दुखी हो गया। परंतु जरमन लोग बहुत हिम्मती हैं। तेजी से अपने को सम्हाल रहे हैं। यहाँ दिक्कतें हैं। अंग्रेजी जानने वाले नहीं मिलते। मैंने योंही हिंदी में कुछ लोगों से रास्ता पूछा, मेरा मुंह देखते रह गए। खेद प्रकट किया। अंग्रेजी में पूछने पर किसी तरह पता चला। बहुत शिष्ट और रिजर्व भी हैं।

हमवर्ग, कोपेनहैगन

२१ अप्रैल : ९ बजे सुबह निकला। कमजोरी सी लगती है। निरामिष भोजन की दिक्कत है। पानी शायद यहाँ कम पीते हैं, बियर की चाल है। ९॥ बजे जाईगर से मिला, उसके पार्टनर से भी। दोनों खुश हुए। बहुत सी जानकारी मिली। काम सम्हल रहा है। युद्ध से बरबादी बहुत हुई। जरमनी को हरजाना पूरा करना है। टाइम लगेगा। इन लोगों के मन में मजबूती है। कॉडेना से मिला। बहुत भला है। ८ वर्ष भारत में रहा। अब और भी बूढ़ा लगता है। प्रेम से मिला। ११ बजे से ४ बजे तक शहर घूमता रहा। बंदरगाह गया। जहाजों पर कोयला, लोहा वगैरह लद कर जा रहा था, डिसिप्लिन से काम करते हैं। ५॥ बजे हवाई जहाज से कोपेनहैगन पहुँचा। एक अच्छे होटल में ठहरा। रात में शहर देखने गया। बड़ा सुंदर है। काफी घूमा। थक-सा जाता हूँ। यहाँ नाइट क्लब बहुत हैं। दूध-फलों का देश है। बहुत सस्ता। स्वभाव से अच्छे

जान पड़े। बहुत से विदेशी दिखाई पड़े, अरब वाले भी। परंतु ये लोग कैबरे नाच, गाने और शराबखानों में बहुत जाते हैं।

२२ अप्रैल : सुबह २५) में एक केटली ले आया। कुछ सामान खरीदा। १० बजे तक खिचड़ी और साग बना लिया। स्वादिष्ट बना। तबीयत प्रसन्न हो गयी। खूब घूमा। डेनमार्क छोटा-सा देश है, परंतु बहुत धनी। डेयरी और मांस-अंडे के व्यापार से बहुत आमदनी होती है। विदेशी यात्रियों से भी। हम लोग गाय की पूजा करते हैं, ये लोग गो-मांस खाते हैं, परंतु इनके यहाँ गो-वंश की तरक्की हो रही है, दूध बहुत है। हमारे यहाँ भक्ति में दिखावा है, इनके यहाँ गो-सेवा सही तरीके से करते लगे। हर दुकान पर दूध, मक्खन, अंडे, पनीर और मांस, बड़ा ताज्जुब-सा हुआ। २॥ बजे स्टीमबाथ और शावरबाथ लिया। नंगे होने की झेंप अब पहले जैसी नहीं है। ५॥ बजे प्लेन से स्टॅकहॉम के लिए उड़ा और ७ बजे पहुँच गया। होटल में ठहरा। खाना बना कर खाया फिर १०॥ बजे रात में शहर घूमने निकला। चारों ओर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ और झीलों के बीच बसी यह राजधानी है। चारों ओर घने जंगल भी हैं। स्टाडेन पुराना हिस्सा है। गलियाँ बनारस की तरह सँकरी और चक्करदार हैं। डर नहीं लगा। लोग भले हैं। उचक्कापन नहीं है, शायद धनी देश होने के कारण।

स्टॉकहॉम, किरुना

२३ अप्रैल : सुबह ८ बजे जागा। कमरा आरामदेह था। गहरी नींद आ गयी थी। ९ बजे तैयार होकर कलेवा किया। बाहर निकला। खूब घूमा। नीले रंग की ट्राम ही आने-जाने का रास्ता और बढ़िया साधन है। रहन-सहन लोगों का ऊँचे स्टैंडर्ड का है। डियर पार्क, स्कासन म्युजियम, लाइब्रेरी देखी। एक जगह दो ग्लास दूध पिया, मक्खन, डबर रोटी खायी। २ बजे स्टीमर से शहर का चक्कर लगाया। ५ बजे ट्रेन में किरुना के लिए बैठा। थर्ड क्लास का डब्बा मगर सुंदर, सजा हुआ है। खर्च इन दिनों कुछ बेशी करता हूँ, कारण ३००), ३५०) बेशी जरूर लगेंगे आराम रहेगा, यात्रा में तबीयत खराब नहीं होगी। कुछ पुरानी किताबें शहर में खरीदी हैं। डब्बे में १०॥ तक पढ़ता रहा। एक और आदमी भी था। थोड़ी-बहुत बातचीत हुई, कुछ जानकारी मिली।

किरुना-नारविक

२४ अप्रैल : सुबह ८ बजे उठा। खिड़की का पर्दा उठाया। चारों तरफ बर्फ ही बर्फ। वैसे तो तीन बजे रात को ही यहाँ रोशनी हो जाती है। सोया था, पर्दे गिरे थे, कुछ पता नहीं चला। डब्बे में अकेला ही था। लाला जी, गोयनका जी की चिट्ठी पूरी की। दृश्य देखता गया, परमात्मा ने क्या दुनिया बनायी है, जितनी देखो, थोड़ी है। २ बजे किरुना पहुँचा। उत्तरी वृत्त से ६० मील है लैप लोगों का देश है। साधारण-सा परंतु सुंदर कस्बा है। लोहे की खानें हैं। क्रीम पिया, भूख मिटी। एक बहुत भले पादरी मिल

गये। परिचय हुआ। अपने घर ले गये। चाय पिलायी। दो बच्चे थे, उन्हें मैंने प्रेजेंट्स दिये। बहुत खुश हुए। बहुत सी बातें लैप लैंड के बारे में बतायीं। ११ वर्ष चीन में रह चुके हैं। मुझे शहर घुमाया। भारत के बारे में पूछा। ५॥ बजे शाम को नारविक के लिए ट्रेन में सेकेंड क्लास में बैठा। ९॥ बजे पहुँचा। आरामदेह कमरा, अच्छे होटल में मिल गया। शहर घूमा। यहाँ के बंदरगाह में गल्फस्ट्रीम की गरम जलधारा के कारण पानी नहीं जमता। बड़े-बड़े जहाज यहाँ से स्वीडेन के लोहे के सामान और लकड़ी ले जाते हैं। यहाँ तोरेनत्रास्क झील गया। पानी चट्टान की तरह जमा था। रेनडियर (एक तरह का हिरन) स्लेजगाड़ी खींच रहे थे। यहाँ रेगिस्तान के ऊँट के माफिक रेनडियर बर्फ के जहाज हैं। बहुत उपयोगी हैं, इसे खाते हैं, चर्बी से खाना पकाते हैं, दीपक जलाते हैं। इसकी खाल पहनते और उससे तंबू बनाते हैं। झील पर गया, रात २ बजे थे परंतु सूर्य क्षितिज पर उगा हुआ था। परमात्मा के लिए भक्ति हो आयी। अपने यहाँ के पाँच-छह बजे जैसी रोशनी थी। मुझे खुशी हुई, मैं पृथ्वी की उत्तरी छोर पर खड़ा हूँ।

नारविक-नोमसोम

२५ अप्रैल : सुबह ४॥ बजे नींद खुल गयी। काफी धूप निकली थी। समझा, घड़ी ख़राब है। परंतु फिर ध्यान आया उत्तरी ध्रुव है। विचार आया, ट्रेन में स्वीडेन आया, अब जहाज, बस या कार से ओसलो जाऊँगा। बहुत कुछ देखने का मौका मिलेगा। टूरिस्ट ऑफिस में पता किया, दो दिन बाद जहाज जायेगा। डीलक्स टूरिस्ट वैगन में कुल नौ सीटें थीं। दो ड्राइवर गाइड का भी काम करेंगे। ५००) लगे ७०० मील की यात्रा के, परंतु इसी में खाने-रहने का खर्च। यात्रियों में दो अमेरिकन बूढ़ी औरतें भी थीं। दृश्य तो अच्छे थे परंतु रास्ता बहुत खतरनाक, उतार-चढ़ाव वाला। कहीं-कहीं फेरीबोट से बस को पार करना पड़ा। तीन घंटे में सौ मील तय किया। रात में ठहरने के लिए होटल अच्छा था। खाना भी निरामिष मिल गया। यात्रियों ने खूब नाच-गान किया। यहाँ के लोग मेहनती हैं। प्रायः सभी लिखे-पढ़े रास्ते में ग्रोटे का ग्लेशियर देखा।

२६ अप्रैल : यूरोप आने के बाद आज पहला दिन है कि एक दिन बाद हजामत बनायी। वजन कुछ घट गया है परंतु वैसे तबीयत ठीक है। हिंदुस्तानी होने और निरामिष होने के कारण सब जगह इज्जत होती है। यूरोप में दूध को आमिष और अंडे को निरामिष मानते हैं। कई जगह प्रश्न करते हैं, बहुत सावधानी से जवाब देना पड़ता है। लोगों ने भारत के बारे में भ्रम भी कई रकम का फैला रखा है। एक जगह फियर्ड में यात्री तैरने उतरे, मुझसे भी कहा। मैं नहीं गया, बहुत ठंढा पानी था। जैसे दृश्य रास्ते में देखे, शायद ही कहीं हों। स्विटजरलैंड सुंदर है, सजा हुआ। परंतु यहाँ बर्फ के सीन निराले हैं। ९॥ बजे रात में ओसलो पहुँचा। बड़ी मुश्किल से एक सराय (पेंसन) में जगह मिली। घटिया कमरा था। होटल की कमी यहाँ रहती है। पहले से बुकिंग करा लेनी चाहिए। रात १२॥ बजे तक शहर घूमता रहा। रात में वापस आया तो कमरे में एक लड़की

सिगरेट वेचने वाली आयी। मुझे अच्छा नहीं लगा। उसे जाने को कहा, परंतु उसका मतलव ठीक नहीं था। कड़ी आवाज में कहने पर चली गयीं। मन में कैसा-सा हुआ।

२७ अप्रैल : सुवह मालकिन से रात की वात कही। उसे ताज्जुव नहीं हुआ। कहती थीं, तवीयत वहलाने आयी थी। शायद यात्रियों के लिए पेंसनों में इसी माफिक होता है। सवेरे विरजू से फोन मिलाया, वात नहीं हुई, करीव ५।।। वजे शाम को हुई। उसने कहा, भाई जी ने ६ तारीख तक पहुँचने को लिखा है। मेरे लिए इंपॉसिवल है। खैर, कुछ जल्दी करनी होगी। आज तीन रुपये की ट्राम टिकट लेकर शहर खूव घूमा। जहाज वनाने का कारखाना, जीन्स गेट, म्यूजियम, नेशनल लाइव्रेरी वगैरह; शहर ज्यादा अट्रेक्टिव नहीं लगा परंतु लोग मेहनती जरूर हैं। आवारागर्दी नहीं है। फ्रेंच, जरमन और अंग्रेजी तो वहुत से लोग जानते हैं। नेशनल लाइव्रेरी में सव भाषाओं की पुस्तकें हैं, हिंदी की नहीं। मैंने वताया ५० करोड़ की भाषा है। काउंटरवाली ताज्जुव करने लगी। हम लोगों को अपनी भाषा की जानकारी विदेशों में देनी चाहिए।

२९ अप्रल : ओसलो में प्रायः सव देख डाला। हैरानी है, नार्वे की आवादी ३६ लाख की, सात लाख टेलीफोन, पाँच लाख ट्रक और मोटरें। इनके जीवन का स्तर वहुत ऊँचा है हम लोगों से जव कि युद्ध ने इन्हें वरवाद किया था। वुढ़ापा, वेकारी और वीमारी के लिए पेंशन सरकार देती है। १६ से १८ तक के हर जवान को मिलिटरी ट्रेनिंग लेनी पड़ती है। ओसलो में थक-सा गया हूँ, खाने-पीने की सुविधा तो है परंतु खिचड़ी खाते-खाते तंग आ गया हूँ। शाम ५ वजे प्लेन से ग्लासगो १२ वजे रात को पहुँचा। २।। वज गए होटल पहुँचते। लगभग ३।। वजे नींद आयी।

ग्लासगो, डंडी

३० अप्रैल : सुवह १० वजे तक ग्लासगो शहर देखता रहा। फिर ट्रेन में वैठ कर ११।। वजे डंडी पहुँचा। थोड़ी वारिश थी। अच्छा शहर है। ग्लासगो वड़ा है पर लंदन की तरह नहीं। होटल का चार्ज काफी लगा। स्मिथ साहव के घर गया। अच्छा खाना खिलाया। सारे दिन मोटर में घुमाने ले गया। सव जगहें दिखायीं। वेकर साहव से मिला, खूव हृष्ट-पुष्ट मालूम देता था। वहुत खुश हुआ। ७ वजे थर्ड क्लास में वैठ कर लंदन वापस आ गया। एंड्रयू का कागज स्मिथ को दे दिया था। रुपया मंगलवार को जमा हो जायगा। लेजां भेजने के लिए कह दिया है।

लन्दन, पेरिस

१ मई : सुवह ७।। वजे लंदन पहुँचा। स्टेशन पर सामान रखकर सारे दिन चक्कर लगाता रहा। खूव ही घूमा, इतना कि दौड़ता रहा। डगलस, आइजक्स, सेठिया वगैरह से मिला, शाम को ७ वजे प्लेन से पेरिस पहुँचा। सिर्फ एक घंटे की उड़ान है। एक साधारण होटल में ठहरा। ११।।) रोज कलेवा सहित, चार्ज है। रात में १२ वजे

खिचड़ी बना कर खायी। बिरजू को यहाँ आकर फोन किया। सब राजी है। १२॥। बजे तक रात में पेरिस घूमता रहा। साक्षात् स्वर्ग है, बड़ा ही भव्य, बड़ा ही सुंदर, सुंदर, रमणीक। पेरिस के सामने लंदन वगैरह कुछ नहीं।

पेरिस, जेनेवा

३ मई : सुबह ९ बजे वर्साई देखने गया। ११॥। बजे लौटा। फ्रांस के बादशाहों ने जितनी मौज की, वह लिखा ही नहीं जा सकता। इसके मुकाबले मुगल बादशाहों का मौज-शौक हल्का और भोंड़ा सा लगता है। जो सुंदर महल बनाये हैं, शायद दुनिया में नहीं। वर्साई पेरिस से बारह मील है। वर्साई के राजमहल में हर एक चीज देखने लायक है। शीश महल तो बेजोड़ है। हम लोग समझते हैं, दिल्ली, आगरा के किले, महल वगैरह के मुकाबले का दुनिया में कहीं कुछ नहीं। यह गलत है, बिना देखे पहले से आइडिया नहीं बना लेनी चाहिए। परंतु राजा, नवाबों के इस मौज-शौक के लिए सब जगह गरीब लोग पीसे गये। फ्रांस में भी यही हुआ। उसका फल भी भुगतना पड़ा। विद्रोह हुआ, लुई और मेरी अंतोनिता को सड़क पर खड़ा कर उनकी गर्दनें उड़ा दी गयीं। पेरिस तो इंद्रपुरी है। जितना खर्च किया जाय कम है। वैसे शिक्षा, संस्कृति का, फ्रांस का ही नहीं, युरोप का भी केंद्र माना जाता है। शाम को ७ बजे प्लेन से जेनेवा पहुँचा। एक साधारण पेंसन में ठहर गया। खिचड़ी बना कर खायी। वजन कुछ घट गया है। ठीक करना होगा। १३ ता० को कलकत्ते पहुँचना है। पेरिस की बहुत याद आती रही। फिर कभी।

जेनेवा, लेजाँ

४ मई : जेनेवा में सुबह ७ बजे की ट्रेन में बैठा और १० बजे लेजाँ आ गया। २ ट्रंक जेनेवा में छोड़ दी है। सब हिसाब लिखा। बिरजू की तबीयत काफी ठीक मालूम देती है। देश की चिट्ठी देखी, सारे अखबार देखें। पेशाब की तकलीफ हो रही थी। एक डॉक्टर को दिखाया परंतु सलाई पास नहीं हुई। खैर, अपने आप फिर ठीक हो गया। कुछ थकान और कमज़ोरी है, यात्रा के नोट्स तैयार किए।

लेजां, जेनेवा, मिलान

५ मई : सुबह थोड़ी वर्षा थी। डॉ० लाहिरी से मिला। काफी देर बात करता रहा, बिरजू के लिए चिंता की बात नहीं रही। १२॥ बजे की ट्रेन में बैठा, ३। बजे जेनेवा पहुँचा। टी० डब्लू० ए० में खाना खाया। काफी अच्छा निरामिष भोजन मिला। १० बजे मिलान पहुँच गया। होटेल मारिया में ठहरा, काफी अच्छा है। परंतु यहाँ के एक्सचेंज रेट के बारे में भ्रम होता है। चीज़ों का दाम मुझे ज्यादा मालूम देता है। रात में ११ बजे तक मिलान घूम कर देखता रहा। विक्टर इमान्युयल का बाजार बहुत सुंदर है।

मिलान, वेनिस

६ मई : सुबह ८ बजे शहर घूमने निकला। शहर बनावट में बहुत कुछ पेरिस के माफिक लगा, परंतु उतना भव्य नहीं है। संत अंब्रोजियो और ड्यूमा कैथड्रेल देखा। ड्यूमा बहुत बड़ा है। ५०० वर्ष इसके बनाने में लगे बताते हैं। ल्योनार्दो का 'अंतिम भोज' देखा, बहुत सुंदर चित्र है। आर्क ऑफ पीस और स्काला थियेटर देखा। बहुत सुंदर बने हैं। मिलान व्यापार-उद्योग का केंद्र है। बम से यहाँ भी बहुत नुकसान पहुँचा परंतु अब सुधर रहा है। यहाँ का शेयर बाजार देखा। शाम को ६ बजे वेनिस चला आया। जैसा सुना था, वैसा पाया। छोटे-छोटे द्वीपों पर बसा खूबसूरत शहर है। बहुत पसंद आया। यहाँ बाजार में मोलभाव चलता है। 'सान मारको' बाजार बहुत प्रसिद्ध है। मैंने चाय का सेट खरीदा और भी कुछ चीजें खरीदीं। वैसे, युरोप के और देशों के मुकाबले इटली में गरीबी है। वेनिस में दुनिया के सब तरह के लोग आते हैं। मौज-शौक में बहुत खर्च करते हैं। धनी औरतें यहाँ गोन्दोला, एक रकम के बजरा में मल्लाहों के साथ रात बिताती हैं। बहुत सजीले बजरे लगे। आने-जाने के लिए मोटर बोट और नाव बहुत हैं। बहुत पुराने भवन और गिरजे हैं। रात में वेनिस पर नोट तैयार किया।

७ मई : सुबह ११ बजे तक शहर घूमता रहा। कारीगरी की चीजें एक-से-एक बढ़ कर मिलती हैं, खास तौर पर शीशे की। वेनिस का समुद्र-तट अच्छा लगा, बगीचे भी अच्छे हैं। शहर मुझे बहुत जँचा। मन खूब प्रसन्न रहा। दुनिया में अकेले ढंग की जगह है। ट्रेन से मिलान ४ बजे पहुँचा। ५ बजे टैक्सी लेकर एयरपोर्ट। ७ बजे प्लेन उड़ा, ९ बजे रोम पहुँचा। होटल में अच्छा कमरा नहीं मिला, इतना खराब कभी नहीं मिला था। गलती मेरी थी, सस्ते होटल के लिए कहा था। खैर, रात में १२॥ बजे तक शहर देखा।

रोम, वैटिकन, रोम

८ मई : सुबह टामस कुक की बस में बैठ कर 'वैटिकन' देखने गया। काफी जोरदार जगह है। ईसाइयों के लिए तो बनारस है। बहुत से गिरजे, मठ और पादरी हैं। यहाँ की व्यवस्था पोप करते हैं, इटली का कोई हुक्म नहीं चलता। डाक, तार, पुलिस, रेडियो सब अलग हैं। दुनिया के कैथोलिकों के सब से बड़े धर्मगुरु पोप हैं। सेंट पिटर का गिरजा देखा। बहुत भव्य है। गिरजों में संसार के दुर्लभ चित्र और चीजें हैं। वेटिकन ठीक से देखने के लिए बहुत टाइम चाहिए। मुझे तो चार दिनों में कलकत्ते पहुँचना है। रोम वापस आ गया। शहर घूमता रहा। प्राचीन शहर है। ऐतिहासिक इमारतें हैं परंतु खंडहर हो रहे हैं फिर भी बहुत भव्य हैं। वैसे, शहर में ज्यादातर आधुनिक वातावरण यूरोप की अन्य जगहों की तरह है।

रोम, नेपल्स

९ मई : सुबह ६ वजे उठा। ७॥ बजे नेपल्स पहुँचा। पांपियाई के लिए बस पकड़ी। नेपल्स से १४ मील पर है। पांपियाई में एक ओर समुद्र है, दूसरी ओर विसुवियस ज्वालामुखी। सन् ७९ में ज्वालामुखी फूटा और यह सुंदर शहर खंडहर बन गया। सब मर गए। यहाँ की संस्कृति-सभ्यता बहुत बढ़ी हुई थी। मोहनजोदड़ो और हडप्पा की तरह यहाँ भी सड़कें, मकान, स्नानागार थे। म्युजियम में पुरानी चीजें देखीं। मन कैसा-सा हुआ। नेपल्स वापस आ गया। कुछ देर बाजार में घूमा। एक जगह चाय पीने गया तो मालूम हुआ जेब में १६० पौण्ड का चेक और ४५०० लीरा नहीं है। पता नहीं कहाँ पाकेट मारी हुई या गुमा दिया। एथेंस जाना है, कलकत्ता पहुँचना है। कैसे क्या होगा ? रोना आ गया। टामस कुक जा कर घड़ी २९०० फ्रैंक में बेची। ७००० फ्रैंक की थी। ३। बजे ट्रेन में बैठ कर रोम अपने होटल में आया। टेरेसा घड़ी १०,००० लीरा में गिरवी रखी। मन बहुत छोटा हो गया। मन में आया एथेंस का प्रोग्राम कैंसिल कर दूं परंतु टिकट बन चुका था। कैरो के लिए विज़ा भी नहीं था। खैर, ९ बजे एथेंस के प्लेन के लिए एयरपोर्ट गया।

एथेन्स, कैरो

१० मई : सुबह ४ बजे एथेंस पहुँचा। मन खराब था ही। मालूम हुआ, इटालियन लीरा के बदले ग्रीक रुपया की बदली नहीं होगी। झंझट पड़ी। खैर, एक अमेरिकन ने बदल लिया। ११ बजे तक उसके होटल में रहा। इजिप्शियन कौन्सल में गया, विजा बनवायी। सामान टी० डब्लू० ए० में ही रखा रहा। मैं घूमने निकला। एथेंस यूनान की दिल्ली है। आर्कोपोलिस पहाड़ी पर गया। ३००० वर्ष पुराना शहर था, जरूर सुंदर रहा होगा, शानदार। एथीना के मंदिर में गया। चारों तरफ संगमरमर की मूर्तियाँ टूटी-फूटी हालत में हैं। इतिहास का गौरव अब ये खंडहर बताते हैं। इसी माफिक अपने देश में भी जगहें हैं। एथेंस का म्यूजियम भी देखा। नया एथेंस नयी दिल्ली के माफिक है। यहाँ के लोग कुछ ज्यादा सुंदर लगे। टी० डब्लू० ए० के ऑफिसर के घर गया, अच्छी खातिरी की। शहर की आबादी ४-५ लाख की है। तुर्की औरतों को देखा, पर्दा नहीं था। रात में ११ बजे की प्लेन से क़ैरो (काहिरा) के लिए रवाना हुआ।

काहिरा

११ मई : रात में नींद अच्छी आयी। सुबह ७ बजे उठा। गर्मी महसूस हुई। तैयार होकर घूमने निकला। बाजार हिंदुस्तानी ढंग के हैं, दिल्ली की फतेहपुरी, कलकत्ते की जाकड़िया स्ट्रीट के माफिक। मकान वगैरह भी अच्छे नहीं। नील नदी के किनारे आया, नहा लिया। एक अरब से परिचय हुआ। बहुत सी जानकारी हुई। उसने कॉफ़ी पिलायी। फिर ७ मील पर गिजे पिरामिड देखने गया। वहाँ ऊँट कर लिया, डेढ़ मील

का रास्ता है। ऊँटवाला बहुत बातूनी था। पिरामिड देखा, ताज्जुब होता है। ५५०० वर्ष पहले के बने बताते हैं। बहुत गरमी लगी। स्पिंक्स की विशाल मूर्ति १८९ फीट ऊँची है। सारा शरीर सिंह का परंतु सिर मनुष्य का। वापस लौटने पर ऊँटवाला झमेला करने लगा। ३) की जगह १०) माँगता था। सब ऊँटवाले उसकी तरफ हो गए। ५) में सलटाया। काहिरा में खास कुछ देखने लायक नहीं लगा। म्यूजियम देखा, मस्जिद देखी, परंतु दिल्ली की तरह नहीं है।

काहिरा, बम्बई

१२ मई : सुबह ६ बजे बंबई पहुँचा। रात नींद एक रकम आ गयी थी। कस्टम वगैरह में दिक्कत नहीं हुई। यूरोप की यात्रा ठीक-ठीक रही। नये अनुभव हुए। बिरजू इंप्रूव कर रहा है। मन में शांति है।

कलकत्ता

१४ मई : सुबह मैदान गया। सब से मिला। मित्र लोग यात्रा के बारे में पूछते हैं। सब कहते हैं कि कमजोर-सा हो गया हूँ।

२७ मई : तबीयत में सुस्ती है। कामकाज खास नहीं है। १ बजे ऑफिस गया फिर गद्दी गया। महावीर की सगाई के बारे में बातचीत की।

ढाका, नारायणगंज

३० मई : ८। बजे की प्लेन से उड़ा। साथ में इस्पहानी था। १२॥ बजे नारायणगंज पहुँचा। खाना खाकर जूट बोर्ड गया। फिर हनीफ से मिला। नारायणगंज में काम काफी जोर से चलता है। इधर गरमी भी एकदम कमती है।

नारायणगंज, ढाका, कलकत्ता

३१ मई : हनीफ से, सिन्हा से, मार्शल से मिला। जूट बोर्ड गया। हवा-पानी बहुत अच्छा है। पाकिस्तानी गोलमाल का ढंग नहीं मालूम पड़ता, परंतु क्या भरोसा। २। बजे तक हनीफ के साथ था। रुपयों का सौदा किया, उसमें ११७५) मुझे मिलेंगे। शाम को प्लेन तूफान में पड़ गया, आधा घंटा बाद उतरा। ७॥ बजे घर पहुँचा।

१ जून : सुबह उठ कर बालीगंज गया। महावीर के साथ था, उसके लिए दो लड़कियाँ देखीं। १२ बजे ऑफिस आया। हनीफ की बिल्टी का कुछ नक्की नहीं हुआ।

१० जून : डेडराज जी के गया। उनके हैजा हो गया है। चिंता होती है। नन्दू वगैरह आसाम नहीं जा सके। काफी तूफान और बारिश है। ठंढ हो गयी है। टेंपरेचर घट गया है।

१८ जून : एस० एन० आ गया है। उसने बताया बगीचा में, काम में काफी झंझट सी हो रही है। काम पूरा चल नहीं पा रहा है। अरेंजमेंट की कमी-सी है।

१८ जुलाई : दिन में ५०० गाँठों का काम किया। बाजार काफी मजबूत है। पाट में, हैसियन में बहुत ब्लैक हो गया है। टी सेल ऊँचा गया है।

२१ जुलाई : दिन में एली साहब से मिला। ५% में ६ लाख की बात की। हुकुमचन्द को १०% में दे दी ३०,०००) का फायदा रहा।

नारायणगंज

२२ जुलाई : सुबह ५ बजे उठकर गद्दी गया। महावीर को, मदन जी डागा को लिखा। ६। बजे की प्लेन से ७। बजे ढाका। १० बजे लोकल टाइम नारायणगंज। खाना खाकर जूट बोर्ड गया। १०,५०० मन पाट रिलीज कराया। फिर गजराज जी के गोदाम गया। उसके बाद हनीफ से मिला। एली को फोन कर के नौ लाख ठीक किए। गजराज जी को साढ़े ग्यारह में दे दिये। कुल नव्वे हजार बचेंगे।

बाउसी, सिरसाबारी

२३ जुलाई : सुबह ५ बजे बाउसी पूगा। कामकाज खूब चलता है। भाव भी मंदा है। बाउसी से नौका से सिरसाबारी आया। रामलाल जी मूंधड़ा के ठहरा। काफी भले आदमी है। शाम को गोदामों में गया।

सिरसाबाबारी, मैमनसिंह

२४ जुलाई : सुबह सिरसाबारी में गोदाम वगैरह का सब बंदोबस्त किया। ५ बजे रेल से मैमनसिंह पहुँचा। १५०००) की हुंडी ८% में ली, भाव ११)-१२) का है। सिरसाबारी में काम जँच जायगा। पड़ता भी है।

ढाका, कलकत्ता

२५ जुलाई : ढाका ६ बजे सुबह पहुँचा। एयर पोर्ट आया। ८ बजे की प्लेन से कलकत्ता आ गया। ११ बजे ऑफिस गया। पीछे से काफी काम-काज था। एली से मिला। सब काम ठीक है। १० हजार कर के तीनों बहिनों को देने को बापू जी को कहा। उन्होंने मंजूर भी किया है। कांता मुकाम में है।

२६ जुलाई : एली से मिला। रुपये वाला सब ठीक है। भाव १२।-), १३) का है। जेनरल प्रोड्यूस वाला काम भी ठीक हो गया है। ऑफिस में कामकाज खास नहीं है। जुलाई महीने में दलाली का १७५०००) हो जायगा। बाजार काफी गरम है। विलायत का काम जोर से चलता है। शेयर २००० स्टील बेचा। बाजार गरम रा ही है।

११ अगस्त : वाजार गरम हो रहा है। किताव पूरी नहीं पढ़ पा रहा हूँ। सिकलेर मरे का 'अकाउंट' प्राय: सलट गया।

१५ अगस्त : आज स्वतंत्रता-दिवस है। छुट्टी है। झंडे वगैरह लगते हैं परंतु पहले के माफिक उत्साह नहीं है। सभाएँ होती हैं। ३ वजे 'मेट्रो' में 'किस्मत' देखने गया।

२१ अगस्त : शाम को क्रिस्टो वावू के यहाँ गया। उसको कसरत कराने के लिए १५५) महीने में ठीक किया।

२४ अगस्त : दिन में कामकाज ऑफिस में एकदम नहीं है। बाजार काफी तेज है। ब्रह्मपुत्र टी कंपनी लेने का तार दिया। हम लोगों ने कुछ शेयर्स वेचे हैं। 'पाइन की ऑफिस में गया। ६ वजे किस्टो वावू के गया।

२५ अगस्त : काफी कमजोरी मालूम देती है। सुवह चंदे में कई जगह गया। चाय राधाकिशन जी के पी। ऑफिस में वहुत देर तक था। वदन दुखता है। कामकाज ऑफिस में नहीं है।

२६ अगस्त : सुवह मैदान गया। चंदे में गया, राधाकिशन जी कानोड़िया के साथ। तवीयत काफी सुस्त है। जुकाम और कमजोरी है। डिवैलुएशन की खबरें जोर से आ रही हैं।

७ सितम्वर : डिवैलुएशन का हल्ला जोर से हो रहा है परंतु अभी देरी मालूम देती है। कामकाज एकदम नहीं है। एली से मिला।

१४ सितम्वर : शाम को भाई जी का फोन आया। कुछ नाराज से थे, शेयर का पन्ना देख कर। धानुका जी से वगीचों के वारे में वात करनी छोड़ दी है।

१५ सितम्वर : भाई जी से शेयर को लेकर कुछ कहा-सुनी हो गयी, मन खिन्न है। ४००० शेयर ३०।।=) में ले लिया। हम लोगों के शेयर पोते हैं।

१६ सितम्वर : शेयर २९) है। कल लिया उसमें ६०००) का घाटा हो गया है। रात में दीपचंद आया था।

२१ सितम्वर : दिन में वाजार गया। कामकाज एकदम नहीं है। दौलतपुर की विल्टी आ गयी है। के० पी० गोयनका के पास गया था, टी गार्डन के लिये। फिर कानोड़िया जी के पास आया। उनसे कुछ कहासुनी हो गयी। गलती मेरी थी।

२२ सितम्वर : सुबह मैदान गया। १०।। वजे हवड़ा स्टेशन। जयप्रकाश वावू आए। अखवार का प्रोपोज़ल है। वोले, पार्टी में तुम्हीं धनवान हो। १ वजे खाना खा कर ऑफिस गया। शेयर वाजार समान में स्ट्रांग है, मेरे मत्थे ही है। हवड़ा मंदा है। ५ वजे प्रभुदयाल जी के मकान पर गया। काफी भीड़ थी। रास्ते में सत्यनारायण जी की सवारी थी।

२८ सितम्बर : थानुका के गया, ब्रह्मपुत्र टी कंपनी की चेष्टा कर रहा हूँ। झूठ वहुत वोलना पड़ता है। डर्टी ट्रिक्स भी करनी पड़ती है, वुरी चीज है। मेरी आत्मा डाउन-सी हो रही है। सुवह मिल में जाना भूल गया। एंड्र्यू काफी नाराज था। मुझे झूठ वोलना पड़ा। उदासी काफी आ गयी। सारे दिन चित्त खराव रहा।

११ अक्तूवर : डायरी तो वहुत दिन हुआ, लिखना भूल गया। मन उसी तरह उदास-सा ही रहता है।

जसीडीह

२३ अक्तूवर : दिन में मांगीलाल पोद्दार ने चाट वनायी, खूव खायी, परंतु उससे नुक्सान हुआ।

डिब्रूगढ़-लुकवा

५ नवम्बर : सुवह हवाई जहाज से डिब्रूगढ़ गये, हनुमान जी, गोविंद जी और मैं। सामने विरधीचंद जी की कार आयी थी, परसराम भरतिया भी आया था। हनुमान जी के नहीं जँचा, लड़की तो वहुत ही अच्छी थी। ५॥ वजे लुकवा चाय वगीचा पहुँचे। रात में वहीं रहे। काम ठीक चलता है।

८ नवम्बर : मैं काफी आगे वढ़-सा गया हूँ। पाट के वाजार में काफी उथल-पुथल सी है। मेकेनन मेकेंजी में अजमेरा के साथ गया।

१० नवम्बर : दीवाली खूव अच्छी है। मन में एकरकम खुशी है। शाम को भाई जी के यहाँ रीजेंट पार्क में गया।

२६ नवम्बर : २॥ वजे सेंगर जी के साथ सिनेमा गया। साधारण हँसी का था। सुवह चंदे में भी गया था। रात ९ वजे तक सेंगर जी के साथ रहा। रविवार का दिन ठीक वीत गया।

३० नवम्बर : कसरत सुवह रोज करता हूँ। आइजक्स विलायत से आया हुआ है। शाम को टी० एन० और मदनलाल के साथ अलायंस और टीटागढ़ मिलों में पाट देखने गया। पाट साधारणतया ठीक था। पाट के ८०,००० मन का मैं वेल्युअर नक्की हुआ हूँ।

१ दिसम्बर : सुवह सुवालाल जी के साथ एंड्रयुल की ५ मिलों में जूट प्राइस वैल्युएशन के लिए गया। ९॥ वजे वापस लौटा। मारवाड़ी रिलीफ् सोसाइटी की मीटिंग में गया। काफी गरम-गरम वहस थी। तुलसीराम जी निज में सेक्रेटरी होना चाहते थे। मेरा नाम उप-सभापति के लिए प्रोपोज किया। लोगों ने सेक्रेटरी के लिए कहा। आखिर में राधाकिशन जी सभापति और मैं सेक्रेटरी चुन लिये गए। तुलसीराम जी राज़ी नहीं हुए। दिन में अवार्ड वगैरह लिखाए। तबीयत आजकल ठीक रहती है।

२ दिसम्बर : सुबह मिलों में गया, यूल की दो मिलों में। १० वजे लौटा। २ वजे गद्दी आकर श्यामा जी जयपुरिया के, प्रभुदयाल जी के गया। शाम को नोपानीजी के गया। ८ वजे सियालदह स्टेशन वैजनाथ शर्मा, महावीर, एस० एन० ९ वजे आए। तुरंत हवड़ा गया। मुगलसराय पैसेंजर में सेकेंड क्लास में वैठा। साथ में दो-तीन किताबें भी ले लीं। डब्बे में हम लोग तीन थे। नींद खूब आयी।

जसीडीह

३ दिसम्बर : ९ वजे सुबह जसीडीह पूगे। वैजनाथ जी वकील और महावीर साथ थे। भागलपुर १२ वजे मोटर से पिता जी औरों के साथ भागलपुर रवाना हुए। २।। वजे भागलपुर पहुँचे। ३।। वजे अंदाज लड़की देखी, जँच गयी, पिता जी के भी। काशीराम जी जयपुरिया से मिला। वे संवंध में राजी हैं। शाम को ६ वजे खाना खाया। वैद्य जी आए थे। फर्स्ट का टिकट लिया। सोने को जगह मिल गयी। ट्रिप वहुत अच्छी रही।
५ दिसम्बर : सुबह वरानगर और काकीनाड़ा मिल में किशनलाल जी के साथ गया। फिर ऑफिस आ गया। आइजक्स से मिला। वाजार काफी गरम सा है। स्थिति नाजुक है। शेयर समान हैं। भाई जी टी गार्डन से शाम को आ गए। काशी वावू गद्दी आये थे। काफी देर तक वात सोसाइटी के वारे में होती रही। तुलसीराम जी ने उप-सभापति होना स्वीकार कर लिया है। सुवह धर्मचंद जी सरावगी आये थे। उनके घर मैं गया, १२ वजे जीमा। रात में श्यामा जी जयपुरिया से मिला। तवीयत ठीक रहती है।
६ दिसम्बर : सुवह मोरों के जीमा। विरजू एक्जामिन कराने को कलकत्ता आया है। सुवह कलेवा कर वेवरली और अलेकजेंड्रा मिलों में गया। नारायणगंज का पाट देखा। आजकल तवीयत वहुत ठीक रहती है। कसरत नियम से करता हूँ। भागलपुर चिट्ठी लिखी। मोहनलाल जी जालान से सोसाइटी के सभापति के लिए मिला, श्यामदेव देवड़ा के साथ। तुलसीराम जी नाराज से ही हैं। पाट की प्राइस वैल्युएशन में काफी टाइम देना पड़ता है।

७ दिसम्बर : सुवह वाली मिल्स में गया। ३ मिलों का पाट देखा। अवार्ड भी भेज दिया। कुछ सेलर्स की तरफ पक्ष करता हूँ। ८ वजे बंगाल मिल्स में गया। वाजोरिया आये नहीं थे। १०।। वजे तक ऑफिस था। १२। वजे गद्दी आया, पैदल। १००० शेयर स्टील वेचा २७।।।-) में। पाट का बाजार गरम है, भाव ३) ब्लैक का है। शाम को वाँगड़ के तथा गोयनका के गया। सुवह धेलिया के गया था। उनका दामाद चलता रहा।

सिरसाबारी

१० दिसम्बर : नारायणगंज से सुवह ४।। वजे अंदाज सिरसावारी पहुँचा। एक घंटे तक घूमता रहा। फिर ६।। वजे अंदाज गोदामों में गया। सव चीजें देखी। ओंकार-मल भरतिया के गोदाम में भी गया। दिन में साइमन और वैक्टर वातचीत की। काफी

कड़ाकड़ी-सी हुई परंतु आखिर में सेटलमेंट हो गया। सिरसावारी में काम करने से बहुत अच्छा स्कोप है।

नारायणगंज

११ दिसम्बर : सुबह ८ बजे नारायणगंज पहुँचा। १०॥ बजे जूट बोर्ड गया। ४ गाड़ी का कोटा लिया। कटिंग की बातचीत की। तबीयत काफी ठीक मालूम देती है। ३॥। बजे गजराज जी के साथ एयर पोर्ट आया। टिकट मिलने की संभावना दिखायी नहीं पड़ी। परंतु शेष टाइम में मिल गयी। दीपचंद से मिला।

कलकत्ता

१३ दिसम्बर : सुबह मैदान गया, फिर सिंघी जी के। उसके बाद मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में गया। तुलसीराम जी को लोगों ने बहुत कुछ कहा, मैंने भी कुछ कहा। पीछे सोचा, कहना नहीं चाहिए था। खाने में गड़बड़ी की। दिन में के० डी० जालान, सी० एल० बाजोरिया, से मिला। कसरत रोज करता हूँ।

२१ दिसम्बर : सुबह मैदान गया। तुलसीराम जी से बातचीत हुई। प्लेन क्रैश हो गया, हिम्मतसिंह काजी के बैठने गये। रात में ९ बजे की ट्रेन से टाटानगर रवाना हो गया। महावीर चटगाँव से आ गया है।

टाटानगर

२२ दिसम्बर : सुबह ४ बजे पूगे। फिर जुगसलाई बाजार से रुंगटा के गए। काफी आराम रहा। सुबह मोटर लेकर सारी जगह घूमा। बहुत ही विशाल और बड़ा कारखाना है। टाटा ने मामूली एक लोहारखाना से कितना बड़ा कारखाना खड़ा कर लिया था, अंग्रेजों के मुकाबले। टाटा का कारखाना देखते ही बनता है। ६०००० मजदूर काम करते हैं। इनके लिए आराम की सुविधा भी है। सफाई बहुत है, ऐसा कलकत्ते के कारखानों में नहीं दिखता। ४ बजे कॉनफ्रेंस में गया। खास मन नहीं लगा।

२३ दिसम्बर : यहाँ कोई खास सर्दी नहीं है। सुबह ५ बजे उठा। तुलसीराम जी के साथ ३ मील घूमा। टाटानगर बड़ा अच्छा शहर है। १० बजे स्टेशन गया, गाड़ी लेट थी, वापस आ गया। बस में बैठकर शहर देखने लगा। काफी सुंदर और बड़ा शहर है, ठीक ढंग से बना हुआ। भविष्य में और भी बढ़ जायगा। कारबार बढ़ रहा है। मारवाड़ी काफी संख्या में बस गए हैं। ५ बजे की ट्रेन में बैठा। १ बजे कलकत्ता पूगा। ट्रिप बहुत अच्छी रही। तबीयत ठीक रही। तुलसीराम जी से मेल हुआ।

कलकत्ता

२८ दिसम्बर : सुबह मैदान गया। कसरत नहीं की। चंदेवालों के साथ बालिका-शिक्षा-सदन के लिए गया।

१९५१ ई०

कलकत्ता

१ जनवरी : वर्ष का पहला दिन है। मन प्रसन्न है। तवीयत भी ठीक है। परमात्मा सब ठीक रखें। कसरत रोज करता हूँ। सुवह मैदान गया। उधर से वेलिया के ताश खेलने गया। कामकाज एक रकम चल रहा है। शाम को धर्मचंद जी के साथ रंगमहल में "कथा वोलछि" थियेटर देखने गया।

२ जनवरी : ऑफिस गया। ऑफर में मैंने खास इंटरेस्ट नहीं लिया। स्मिथ साहव वहुत ज्यादा वीमार हो गया है, हार्ट ट्रवल है, काफी चिंता सी हुई। शाम को १० वजे तक आर्य समाज में लेक्चर सुना। ५००) धर्मादा में दी।

३ जनवरी : अन्नपूर्णा की सगाई के लिए एक जगह गया। दिन में कामकाज तो खास था नहीं। आर० मोर के गया, चौधरी का विल दे दिया। शेयर समान है। ऑफिस गया था। चंदे के वास्ते सरदार शहर वालों के साथ गया। तवीयत आजकल काफी ठीक रहती है। राधाकिशन जी कानोड़िया का फोन आया था, सोसाइटी में मेरा मेंवरशिप कार्ड नहीं है। किताव आज विशेष पढ़ नहीं सका।

६ जनवरी : दिन में ३ वजे सोसाइटी की मीटिंग में गया। काफी गरमा-गरमी रही। प्राय: ५० आदमी थे। परंतु निर्विरोध चुनाव हो गया।

९ जनवरी : सुवह ९॥। वजे सोसाइटी गया। मातादीन, पुरुषोत्तम, तुलसीराम जी आदि आए थे। ऑफिस गया, कटिंग का ऑफर किया। दिन में सी० एल० वाजोरिया के साथ मारवाड़ी वालिका विद्यालय में आया। पाट का, शेयर का वाजार गरम है। मेरे ११०००) का घाटा है।

११ जनवरी : पाट के 'डील' की वात चल रही है। भाई जी ने कहा शेयर वरावर कर लो। मैंने ३४॥।-) वरावर कर दिया।

१५ जनवरी : सुवह रिलीफ सोसाइटी गया। कल डेडराज जी पंसारी आए थे, उनके

साथ सुवह एक-दो जगह गया। कामकाज तो प्राय: है ही नहीं। विलायत के काम काफी वढ़ रहे हैं। महावीर की शादी की तैयारी हो रही है।

१७ जनवरी : कसरत वंद है, तबीयत खराब रहती है। फोटो में नार्मल आया है। कफ जाँच के लिए दिया है। दिन में २ वजे तक गद्दी में था। कामकाज वहुत थोड़ा है। कफ में खून थोड़ा-थोड़ा आता है। एंड्रूय से वात हुई।

१९ जनवरी : सुवह मैदान गया। दिन में काफी हरारत सी रही। खून अधिक आया। स्वास्थ्य एकदम टूटा सा जान ड़ता है। शाम को सोसाइटी में गया था। रात में तुलसीराम जी आदि से मीटिंग हुई, ११॥ वज गए।

जसीडीह

२३ जनवरी : तबीयत यहाँ ठीक मालूम देती है। पाँच-सात दिन में एकदम ठीक हो जायगी। सुवह ३ वजे उठकर प्राय: डेढ़ घंटे "लेडी चैटलीज लवर" पढ़ी। कफ में थोड़ा खून आता है। छाछ पी, सब्जी ज्यादा खाता हूँ। च्यवनप्राश ले आया हूँ। रात में अखवार में भाव देखे। जो छोड़ कर आया था उससे ७००) और घाटा है। आयरन ३७) हवड़ा ३९।=) है।

२७ जनवरी : तबीयत बहुत अच्छी है। कफ में खून नहीं आया। दिन में दो-तीन मील घूमा। देवघर गया, भागलपुर जाना है। कलकत्ते का कागज आया था। दिन में वैद्य जी से थोड़ी सी भांग ले ली थी। रात में १० वजे पेशाव करने वाहर गया। ३ सीढ़ियों से उतरते समय वेहोश होकर गिर गया। चार दांत एकदम हिलने लने। रात भर तकलीफ रही। कान में भी चोट आयी।

जसीडीह-भागलपुर

२८ जनवरी : सुवह कान में वहुत दर्द था। ७। वजे कार से रवाना हुआ। आधा घंटा देवघर में ठहरा। फिर ८॥ वजे देवघर से चला। ११ बजे भागलपुर पहुँचा। डेरा वहुत अच्छी जगह था। सब कोई से मिला। रात में फेरे में नहीं जा सका। वहुत तकलीफ थी और वुखार भी था। डॉक्टर आए थे, वैद्य भी। विवाह का काम ठीक से रहा। विवाह में काफी सादगी रही। लोग खुश थे।

कलकत्ता

३० जनवरी : सुवह ७ वजे पुगे। मैं सोसाइटी गया। वहाँ से ऑफिस गया। काम देखा। खास कुछ था नहीं। कान में दर्द है। कफ में ललाई अभी तक थोड़ी-वहुत है।

७ फरवरी : सुवह मैदान कार से गया, थोड़ा घूमा। तबीयत साधारण है। ऑफिस में कामकाज नहीं। ८ वजे से १०॥। वजे तक रिलीफ सोसाइटी में था, कुछ परिवर्तन किए। तुलसीराम जी नहीं आए थे। दिन में मातादीन खेतान आये थे। एस० एल०

पचीसिया के उधर गया था। शेयर ३५) और ३८।।।) हावड़ा है। मुझे इस हफ्ते में १९७५) का लॉस है। पहले ३७००) दे चुका हूँ। मन खिन्न रहता है। पाक के रुपयों का भाव बढ़ रहा है।

८ फरवरी : सुबह ४।। बजे उठा। ठंडे-गरम पानी से सेंक किया। मिट्टी का लेप किया। कान का दर्द कुछ कमती है। डायरी लिखी बहुत दिनों बाद, यह आदत कुछ छूटती सी जाती है, रोज लिखनी चाहिए। १० बजे ऑफिस गया। एंड्रयू ने कहा, मैं काम में ध्यान कम दे रहा हूँ। मन कैसा सा लगा। तबीयत ठीक रहती नहीं परंतु काम तो इसे सुनेगा नहीं। मौका निकल जाता है। १२ बजे ऑफिस होकर गद्दी गया। दिन में १४००० मन का काम ४०००) की दलाली का हुआ। शाम को ऑफिस गया। रात में सोशलिस्ट पार्टी के जलसे में था। अच्छा प्रोग्राम था।

१३ फरवरी : विधवा-विवाह का काम कुछ हो रहा है। कई जगह लड़के देखने गया। दिन में मातादीन जी खेतान के साथ आई स्पेशलिस्ट के गया था।

१४ फरवरी : सुबह दर्पण में अपने चेहरे पर गौर किया। इकतालिस वर्ष की आयु में काफी वृद्ध-सा मालूम हुआ। अनियम लापरवाही और चिंता से स्वास्थ्य खो बैठा। आगे भी सावधान रह सकूं तो ठीक है। ४ बजे बैजनाथ जी शर्मा, प्रभुदयाल जी डाबड़ीवाला, बाथवाला जी, जयपुरिया जी और हीरालाल जी खेतान के विवाहों में गया। तबीयत आज कुछ ठीक रही।

झरिया

१७ फरवरी : दिन में १२ बजे सोसाइटी गया। १।। बजे मोटर से रवाना हुआ। ४।। बजे बर्दवान, ६।। बजे आसनसोल, ७।।। बजे झरिया। अर्जुनदास जी मिले, उन्होंने ३०,०००) चंदा दिया। मन एकदम प्रसन्न हो गया। रात में वहीं खाना खाकर गेस्ट हाउस में सोये। सरदी बहुत थी। कंबल ओढ़ी। धरमचंद बैसे अच्छे आदमी हैं।

पारसनाथ, हजारीबाग

१८ फरवरी : सुबह ६।। बजे झरिया से मोटर से चले। ८ बजे इसुरी पहुँचे। ९ बजे अंदाज पारसनाथ पहाड़ के नीचे मधुवन पुगे। मंदिर वगैरह का दर्शन किया। गजराज जी आदि से मिले। वहाँ से हजारीबाग गए। रास्ते के दृश्य अच्छे लगे। पारसनाथ में चंदे का काम नहीं बनने से मन में कैसा-सा जरूर लगा था। परंतु देनेवाले पर लेनेवाले का जोर कैसा ? हजारीबाग से ७ बजे वापस कलकत्ते के लिए चले। रात में १।। बजे आ गए। थकावट काफी ज्यादा आ गयी।

कलकत्ता

२० फरवरी : जे० पी० का तार आया है, वे गुरुवार को आ रहे हैं। तबीयत मेरी काफी खराब सी हो रही है। पाट का बाजार समान है, ब्लैक ९) अंदाज हो गया है।

२१ फरवरी : शाम को बजरंग लाल जी लाठ के लड़के के विवाह में रिजेंट पार्क गया। तबीयत काफी सुस्त है। वहाँ के० पी० गोयनका जी से नाजिरा कोल कंपनी के बारे में बातचीत हुई। दाँत नये बंधा लिये हैं।

२३ फरवरी : सुबह मैदान गया। वहाँ से साग बाजार जा कर ३०) का साग, फल वगैरह ले आया। १० बजे स्टेशन गया। जे० पी० आए। ११ बजे घर पहुँचे। सारे दिन प्रायः कार में ही जे० पी० के साथ रहा। ११ बजे रात में सोया। जे० पी० की तबीयत ठीक है। नीचे की बैठक में बिछायत की है।

२४ फरवरी : दिन में काफी देर तक जे० पी० के पास था। सुबह एक बार ऑफिस गया था। तबीयत एकदम सुस्त सी रहती है। कफ में खून आता है। कुछ खाँसी सी आती है। जे० पी० को १०००) दिए। लेते नहीं थे परंतु काम कैसे चलेगा, समझाने पर मुश्किल से मान गए।

२६ फरवरी : ज्यादा समय जे० पी० के पास रहता हूँ। अच्छा लगता है। विचारशील हैं। परंतु ऐसे लोगों की अब सुनता कौन है? स्वतंत्रता के बाद समाज और देश की बात पर लोगों का ध्यान कम जाने लगा है। बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहा है। जे० पी० भी इस बात को मानते हैं। कहते थे, जब 'हैव और हैव नाट' का फासला बढ़ जायगा तो बहुत बड़ा खतरा सामने आयगा इसलिए जिनके पास है, उनके लिए समाज और देश का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। प्रभावती जी कल रात में चली गयीं। घर में भीड़ काफी रहती है। इससे एक रकम हमारी प्रतिष्ठा बढ़ती है। रिलीफ सोसाइटी नहीं जा सका। पाट का बाजार बहुत गरम है। जे० पी० कल जायेंगे।

२७ फरवरी : दस हजार शेयर नाजिरा कोल के १०) के भाव में लिए। बाजार समान में स्टेडी है। मुझे इतने ऊँचे दाम में नहीं लेना चाहिए था। रिपोर्ट एकदम खराब है।

२८ फरवरी : तबीयत खराब रहती है। जे० पी० के रहने से मानसिक शांति थी। दिन में शॉ वालेस की ऑफिस गया तथा के० पी० गोयनका जी की ऑफिस भी। नाजिरा कोल के बारे में बातचीत की। ९) का ऑफर देने की बात है।

१० मार्च : पाट का काम होना शुरू हो गया है। हम लोगों ने ७७,००० मन का काम ६५) में किया। बाजार बहुत तेजी पर है। मेरी तबीयत ठीक नहीं है। थकावट आ जाती है।

११ मार्च : पाट बाजार में २०) २५) मन की तेजी आयी। लोगों के बहुत बेशी रुपया आया। सब पाट वाले मालदार हो गए हैं। कलकत्ते में जो पाट लिया था उसमें हम लोगों के एक लाख रुपया आयगा। दिन में घर में ही था, सुबह 'समस्या' तमाशा देखने गया, काफी अच्छा था। वहाँ से घरमचंद जी के अमृतान्न खाने गया।

१२ मार्च : वाजार में वहुत बड़ा काम हुआ। एक लाख मन जात पाट वेचा, २० हम लोगों ने रखा। पुराना का काम एस० एन० का किया इसमें सवा लाख रुपए डिफरेंस निकालने के नाम के मिल जायेंगे। सब लोगों को थोड़ा-थोड़ा हो जायगा।

१४ मार्च : ऑफिस कमती जाता हूँ। फिर भी एक्जर्शन तो होता ही है। दवाई भी वैद्य की लेता हूँ। इस वार खून वहुत दिनों तक जाता रहा है। पाट का वाजार तेजी पर ही है। हम लोगों ने काफी बड़ा काम किया है।

१८ मार्च : दिन में गद्दी गया, उधर वहुत देरी तक था नाजिरा के शेयर के भाव ९।।) अंदाज है, प्रायः नक्की सी ही है। तवीयत कुछ सुस्त तो है परंतु खून नहीं आता है। मुझे रेस्ट की पूरी दरकार है परंतु लालच के वश ले नहीं पा रहा हूँ। शिमला जाने का अप्रैल में विचार है।

२३ मार्च : सुवह मैदान नहीं गया। तवीयत सुस्त सी रही है। होली थी, रंग नहीं खेला। कफ में खून आता है। पिता जी का कागज आया। वहुत से समाचार हैं। मुझे ऐसा मालूम देता है कि मेरी उमर वेशी नहीं है। सम्हल कर चलना चाहिये।

२५ मार्च : सुवह मैदान नहीं गया। दिन में घर में था, ३ वजे अंदाज छात्र-निवास के जलसे में गया। उधर से ५ वजे डा० लोहिया के पास गया। एक घंटा था। वातचीत करता रहा। मुझे ऐसा लगता है, मेरा जीवन वेकार गया। अपने लिये कुछ कमाया नहीं। रुपया जरूर कमाया पर यह तो साथ जायगा नहीं, शायद रहेगा भी नहीं। परंतु जे० पी० वगैरह की कमाई रह जायगी। उनके साथ ६ वजे हवड़ा मैदान में कारपोरेशन के एलेक्शन में गया। आज खून वहुत ही थोड़ा आया। मन में एक रकम प्रसन्नता-सी थी। आती दफा ट्राम से तथा वस से आया। छाती में थोड़ा दर्द-सा है। पाट का वाजार रोज-रोज गरम होता है।

२७ मार्च : आज पांच हजार मन का काम किया। वाजार वहुत मजवूत है। दलाली मार्च में तीन लाख रुपये ऑफिस में मेरे होगी।

२८ मार्च : मैदान गया था। तवीयत खराव है। नहीं मालूम , कव ठीक होगी। नन्दू के कपड़े वगैरह ढंग से नहीं रहते।

२९ मार्च : खून वहुत थोड़ा आ ही रहा है। सुवह मैदान नहीं गया। कल टी गार्डन का सेल है। हम लोगों ने भी लेने की सलाह की है, साढ़े आठ लाख तक। रुपये इस साल हमारे तीस लाख आयेंगे।

३१ मार्च : सुवह मैदान गया। सोसाइटी की मीटिंग में गया। चंदा इकट्ठा करने की वात चल रही है। ९।। वजे ऑफिस गया। शाम को जे० पी० के चंदे में गया, कुछ नहीं हुआ। रात में मनोहर जी मालवीय जीमने आये थे। अच्छे पत्रकार हैं, भले हैं। दिन में कटिंग में १५) गांठ की तेजी आयी। कल से खून नहीं के वरावर आता है।

दवा टाइम से लेता हूँ। शेयर बाजार गया, गद्दी भी गया था। पाट एक वार तेज होकर फिर मंदा हो जायगा। ऐसी मेरी धारणा है।

४ अप्रैल : सुवह जयप्रकाश नारायण जी के साथ, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की रसायनशाखा में गया। उधर से ११ वजे लौट कर ऑफिस गया। वाजार लगातार गरम चलता है। मेरी तबीयत पहले से ठीक है। दीपचंद कलकत्ते आ गया है।

८ अप्रैल : सुवह मैदान से होकर नत्थू के साथ मानचंद जी मुरारीलाल के गया। १०,०००) कहीं गुम गया, मन में चिंता रही परन्तु शाम को मिल गया। ४ बजे छात्र-निवास की मीटिंग थी। पाटोदिया हार गया। आज दिन में कफ में खून तो नहीं आया। गरमी वहुत मालूम होती है, कमजोरी भी है।

१७ अप्रैल : १ बजे ऑफिस गया। गरमी ज्यादा थी। काफी घवराहट सी थी। ४ वजे तक छोटा ऑफिस। ५ बजे तक बैजनाथ जी जालान के साथ था। वे चन्दा शायद मांड देंगे। मेरी गलती से काम आगे नहीं वढ़ रहा है। स्वास्थ्य साथ नहीं देता।

२१ अप्रैल : पाट का बाजार वहुत ही मंदा। ३०,००० मन का काम जार्डिन से वहुत ही सस्ते में किया। हेसियन-बोरा भी मंदा है।

२४ अप्रैल : चंदे में गया। शांति प्रसाद जी से २५०००) लिखाये। मनसुखरायजी, और भी लोगों के पास गये। दिन में बड़े ऑफिस में रहता हूँ। भाई जी, वापू जी देश हैं।

२५ अप्रैल : दिन में विश्वनाथ मोर के साथ जे० टामस के ऑफिस। ब्रह्मपुत्र टी के लिये वातचीत की। ऑफिस में काम-काज होता है। बाजार मजवूत है। एस० एन० का थोड़ा पाट वेचा।

२६ अप्रैल : सुवह ऑफिस गया। उधर से ८ वजे आर० के० कानेड़िया के साथ चंदे के लिये जाने का विचार था, गया नहीं। दिन में ऑफिस गया। एस० एन० की डेलि-वरी का काम देखा। झंझट है परंतु सलट रहा है। सव आंक मिलाना होगा।

२७ अप्रैल : सुवह सोसाइटी के चंदे में गया परंतु कुछ भी नहीं लिखा गया। पांच-छः जगह गया। मन में कैसा सा हुआ। लोगों की मनोवृत्ति वदल रही है। दिन में वड़े ऑफिस में एस० एन० का आंक मिलाता रहा। मन में कुछ चिंता सी बन रही है। उनकी विल्टियां भी नहीं आ रही हैं। ३०० गांठ वोरा बेचने को कहा।

२८ अप्रैल : एस० एन० की डेलिवरी का काम करता रहा। तवीयत एक रकम ठीक है। दिन में १॥ वजे तक 'उन्मुक्त प्रेम' पढ़ता रहा। पाट का वाजार समान, वोरा का वाजार भी।

२ मई : एक न एक झंझट ले लेता हूँ। एस० एन० के काम में यद्यपि कुछ फायदा होगा परंतु मन की अशांति की सीमा नहीं है। सोसाइटी का चंदा भी नहीं हो पा रहा है। वोरा-हेसियन मंदा है। हम लोगों के मत्थे है।

११ मई : सुबह एक-दो जगह चंदे वालों के गया। फिर ७॥ वजे सोसाइटी में आया। चन्दा लिखा नहीं जा रहा है, चिंता ऊपर से हो रही है। रुपये विना तो काम कैसे चलेगा? सार्वजनिक सेवा के काम में रुपयों का खर्च वढ़ता जाता है। ९ वजे तक सोसाइटी में था। फिर ऑफिस गया। १०,००० मन पाट ९७) में वेचा है।

१५ मई : सुबह मैदान गया। वहाँ से वंगाल मिल। वहाँ पाट न देख सका। वे लोग आये देरी से। मैं भी गुस्से में हो गया, मुझे नहीं होना चाहिए था। क्रोध करना मन की दुर्बलता है। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, इससे स्वभाव में उतावलापन वढ़ जाता है। सावधान रहना चाहिए। शाम को सिंघी जी के घर गया। २०००) सीताराम जी को सिद्धराज जी ढढा के लिये दिये।

१७ मई : सुबह मैदान से घर आकर रिलीफ सोसाइटी गया। ९॥ वजे ऑफिस गया। पाट, हेसियन का वाजार गरम रहा। २५०००) मनसुखराय जी का चंदे में मँडाया।

१८ मई : वाजार मजवूत। कामकाज नहीं। न्यू क्रॉप की १९०) की मांग है। हम लोग नहीं वेच रहे हैं। हेसियन में ७५०००) का नफा, वोरा में २०००) का घाटा है।

२६ मई : सुबह मैदान गया, फिर वालीगज की तरफ चंदे में। ९॥ वजे ऑफिस गया। वाजार दिन में थोड़ा मंदा सा था। वीस हजार मन पाट ९५)-९३) में वेचा। मेरा ध्यान और भी मंदा का है। भाई जी, नन्दू सुबह कोलियरी देखने गये, शाम को वापिस आये। अच्छी वतलाते हैं।

२७ मई : सुबह मैदान गया, फिर दो-तीन चंदे वालों के गये, ७५००) मंडाये। दिन में ३ वजे सोसाइटी जाकर घेलिया के घर गया। ७॥ वजे तक उधर था। ताश में ६०) खोये। मन में कुछ अन्यमनकता सी आयी। रात में खाना नहीं खाया।

३० मई : सुबह मिल गया। चंदे में नहीं जा सका। एंड्र्यू साहव साथ था। दिन में कामकाज पुराने का किया। नन्दू की सगाई के लिये लड़की देख रहे हैं। मन में उत्साह सा नहीं है। पता नहीं क्यों?

२ जून : रिलीफ सोसाइटी के चंदे का काम प्राय: रुका सा ही है। शाम को सिंघी जी के उधर गया था। रात में उर्दू के मुशायरे में गया, नन्दू भी था। मुशायरा अच्छा जमा। फारसी-अरवी के शव्दों से लदी गजलें या शेर मुश्किल से समझ में आते हैं। साधारण उर्दू जाननेवालों को भी कठिनाई होगी, ऐसी मेरी धारणा है। परंतु वाह-वाही सभी करते हैं। मुझे तो शेर और दोहों की खूवी एक सी जान पड़ती है। फर्क जरूर इतना है कि उर्दूवाले एक्टिंग के साथ शेर पढ़ते हैं। प्राय: दो वजे रात तक सुनते रहे फिर घर वापस आ गये।

वाराणसी

९ जून : गंगा जी पर तेल मालिश स्नान किया। ११ वजे मा जी के साथ वगीचे गया। जगह सुन्दर है, कमरे वड़े हैं। मा जी आती दफे रोने लगीं। स्नेह तो है ही। महावीर को शिमला का टिकट दिया और उसकी विनणी को भी जाने का कहा। मैंने शिमला जाने का विचार छोड़ दिया।

जयपुर

१० जून : आगरा फुलेरा होता हुआ शाम को जयपुर। मालूम किया, व्यास जी इधर ही हैं। जयपुर रुक गया लक्ष्मी होटेल में। रात में सोहन लाल जी दूगड़ के जीमा। गरमी वहुत पड़ती है। शाम को जयचंद लाल जी सराफ से मिला। तवीयत ठीक है, मन लग गया है।

११ जून : १२ वजे व्यास जी से मिला। उन्होंने मिनिस्ट्री के वारे में कोई वात नहीं की। मन में विचार आया, फजूल जयपुर वुलाया। मेरा तो स्वयं विचार नहीं था। ५ वजे की ट्रेन से रवाना हुआ। गाड़ी में भीड़ थी। रात में १० वजे सीकर पहुँच कर धरमशाला में सो गया।

सरदार शहर

१३ जून : सुवह गौशाला गया। वेशी दिन काम चलेगा नहीं। गोभक्ति कहने के लिये रह गयी, पद सभी चाहते हैं नाम के लिये। चंदा उगाहने में वहुत कठिनाई होती है। उमाशंकर जी नहीं हैं। शाम को सात-आठ मील घूमा। कुंवे की तरफ गया। गांधी विद्या मंदिर की जमीन भी देखने गया। वहुत अच्छी है। आज मौसम वहुत अच्छा रहा। गरमी नहीं लगी। लाइब्रेरी में १०००) की कितावें दीं।

कलकत्ता

१७ जून : दिन में ४। वजे हवड़ा पूगा। आज अन्नपूर्णा का विवाह है। ४।।। वजे वसंतलाल जी केडिया के घर गया। वारात वगैरह का काम हो चुका था।

नारायणगंज

२४ जून : परसों का टिकट मिलता है, वुक करा लिया। दिन में वातचीत की परंतु ढंग वैठता नहीं जँचता है। जूट वोर्ड वाले लोग एकदम मतलवी हैं। पाट की डेलिवरी नहीं देंगे। देखा जाय क्या होगा। तवीयत एकदम ठीक है।

३ जुलाई : भरतिया के दाह-संस्कार में गया था। सुवह ५।। वजे घर आया। थकावट सी थी। धर्मचंद जी और काशीवावू के साथ चंदे में गया, तीन चार जगह। कुछ खास मिला नहीं। ५१०१) कन्हैयालाल जी के लिखे। कमती चंदा मिलने पर मन में कुछ उदासी आ जाती है। रात में महामाया वावू आये।

८ जुलाई : ११ बजे गंगाबाबू आये और भी दस-बारह दोस्त आये। ३ बजे तक कविता का आयोजन रहा। इसके बाद बहुत से चले गये। गोष्ठी अच्छी रही।

१२ जुलाई : सुबह मैदान गया। वहाँ से बंगाल जूट मिल गया, पाट देखा। शाम को बसंतलाल जी के घर गया। दो विधवा विवाह एक साथ थे, काफी उत्साह था। इन विवाहों में मेरा खास हाथ नहीं था। पाट का बाजार मंदा है, कामकाज कमती है।

१४ जुलाई : तीन बजे तक ऑफिस। विधवा-विवाह था, सारी तैयारी करायी। ५ बजे बसंत लाल जी के घर गया। ७।। तक था, विवाह अच्छी तरह से हो गए। इधर विवाह बहुत हो रहे हैं।

२० जुलाई : पाट का बाजार बहुत ही मंदा होता जा रहा है। पाकिस्तान से संबंध बिगड़ता जा रहा है। यह तो होना ही था। मेरी तबीयत खास ठीक नहीं है। ५।। बजे नन्दू को लेकर आर० सी० अधिकारी के घर गया। उसने कहा कि खास बीमारी नहीं है। नन्दू को लेकर कुछ फिकर सी हो रही है।

२१ जुलाई : सुबह स्टेशन गया। जे० पी० आये। ७ बजे तक उनके साथ था। शाम को जे० पी० की मीटिंग में गया।

२३ जुलाई : सुबह घर में सिंधी जी वगैरह १० आदमियों की मीटिंग चुनाव के बारे में थी। ८।। बजे दमदम वनिता-आश्रम देखने गये। ९। से १० तक रिलीफ सोसाइटी, फिर ऑफिस। १२ बजे घर से बाजार। रात में १० बजे तक श्री एम० पी० कोइराला के पास था। नेपाल में राष्ट्रीय आंदोलन का ढंग बन रहा है। शायद-भारत सपोर्ट नहीं करेगा। पाट का बाजार काफी मंदा सा है, हेसियन बोरा भी।

९ अगस्त : कसरत एकदम छूट गयी। शरीर में अवसाद सा मालूम पड़ता है। मैदान जाना भी छूट सा गया है। पाट का बाजार रोज मंदा हो रहा है। पाकिस्तान की लड़ाई की रोज खबरें आ रही हैं। एस० एन० का हिसाब नहीं हो पा रहा है, चिंता है। मेरे खरचा बहुत बेशी हो जाता है।

१० अगस्त : एक घंटा मातृका बाबू के पास बैठा। कामकाज इस महीने में कम है। भाव भी ।।=) हो गये, इसलिये दलाली कम बन सकी। हम लोगों के नये पाट में २० लाख का नफा है और प्राय: २० लाख प्रापर्टी और कारबार में लगा हुआ है। ६ बजे शाम को गद्दी गया। भाई जी से टी गार्डन के बारे में काफी कड़ी बातें सुननी पड़ीं। मैं चुप रह गया, बात बढ़ाने से क्या फायदा? रात में 'बाणभट्ट की आत्मकथा' पढ़ता रहा।

१२ अगस्त : मारवाड़ी हास्पिटल गया। थोड़ी देर घेलिया के उधर ताश खेली। दिन में तीन बजे तक घर में थे। फिर एम० पी० कोयराला और मित्रों के साथ थियेटर देखने गया, 'विजया'। अच्छा था, अभिनय भी स्वाभाविक था।

१४ अगस्त : पाट ६००० मन, १०४०००) में सेटल किया और भी पाट बेचा। ध्यान मंदा है। महावीर के पिता जी बेशी बीमार हैं, वे आज बनारस गये।

१५ अगस्त : सुबह मातृका बाबू के साथ गप्पें करता रहा। पुरानी बातों की याद में एक आनन्द-सा मिलता है। बीते दिन तो आते नहीं बस याद रह जाती है। अच्छे काम की याद से सुख मिलता है। ७ बजे बालिका-शिक्षा-सदन में गया। थोड़ी देर था। छात्राओं को स्वतंत्रता-दिवस में उत्साह से काम करते देख खुशी हुई। ९॥ बजे काशीपुर पूगा। वहां बहुत से लोग थे। डा० अहमद, मिनिस्टर तथा डेपुटी सेक्रेटरी आदि भी थे। लोगों ने मेरी जय बोलनी शुरू कर दी। बड़ी झेंप आयी। बसंत लाल जी भी आये थे। मैंने साधारण-सा भाषण दिया आज बोलने में झेंप नहीं आयी। मुझे भी अच्छा लगा। २। बजे रिलीफ सोसाइटी गया, ३ बजे हरेकृष्ण मेहताब आये। यहाँ भी मैंने छोटा सा भाषण दिया।

१९ अगस्त : मातृका बाबू के हमारे यहाँ ठहरने से मन काफी लग जाता है। काफी लोग मिलने आते हैं। कल वे जायेंगे। सूनापन आ जायगा। शाम को ७। बजे नेपालियों की मीटिंग में था। नेपाली भाषा समझने में ज्यादा कठिनाई नहीं होती। हिंदी और बंगला की मिलावट जैसी लगती है।

पटना

१८ नवम्बर : सुबह पटना पहुँचा। काफी रौनक रही। जयप्रकाश बाबू, गंगाबाबू, सबसे मिला, राजेंद्र बाबू से भी। पटना की यात्रा काफी अच्छी रही। बहुत आदमियों से जान-पहचान हुई।

कलकत्ता

२५ नवम्बर : सुबह सोशलिस्ट पार्टी में गया। केदार बाबू मिले थे। पार्टी के पास धन नहीं है, साधन कहां से हो ? जनता का झुकाव कांग्रेस की ओर बढ़ा है, पंडित जी का प्रभाव है ही। गाँवों में समाजवाद की बात कौन समझता है ? शहरों में किसी को फुर्सत नहीं। पाट का बाजार कुछ तेजी पर है। पाकिस्तान में काम-काज अच्छा चल रहा है। सुबह दो-चार जगह चंदे में गया था।

२७ नवम्बर : दिन में २५००) एक चंदे में मंडाया। ६४००० मन का काम किया। शाम को चुनाव के दौरे पर निकला। लोग बोलते हैं, भुवालका जी का चांस कमती है। रात में डा० बनर्जी का फोन आया।

२८ नवम्बर : सुबह मैदान गया, काफी पंचायत भी हुई। दिन में आफिस में कामकाज हुआ प्रायः ८००० मन का। पाट का बाजार कुछ मजबूत था।

जयपुर

३० नवम्बर : सुबह ८ बजे जयपुर पहुँचा। अकाल-सेवा-समिति में ठहरा। स्थान सुंदर है। १ बजे अंदाज बड़ी जीप में बैठ कर रवाना हुए। २३ मील बढ़ने पर गाड़ी खराब हो गयी। वापिस ४। बजे जयपुर आ गये। माणिक्य लाल जी वर्मा

मिले। उधर और भी बहुत से आदमी थे। वर्मा जी सज्जन हैं। सीताराम जी का मकान देखा, छोटा-सा सुंदर है। जयपुर के आसपास की बस्ती बढ़ रही है।

जयपुर-बूंदी-कोटा-बारां

१ दिसम्बर : सुबह अंदाज ९ बजे जीप से चले। ११ बजे टोंक के आसपास खाना खाया। मन में बार-बार यही भाव आते रहे कि रजवाड़ों की उपेक्षा से इस अंचल की उन्नति नहीं हो सकी, दुर्भाग्य है। टोंक देखना चाहता था पर समय नहीं था। बूंदी १ बजे पहुँचे। यहां पानी का बंदोबस्त और खेती की शिक्षा की व्यवस्था कर दी जाय तो उपज की कमी नहीं रहेगी, ऐसी धारणा है। गन्ने की खेती कुछ हुआ करती है। बूंदी पुराना शहर है। यहां के किले के बारे में पढ़ चुका था। पर अब तो वे पुरानी बातें हैं। रेल नहीं है। यहां आने का काम पहली बार ही पड़ा। कोटा ५ बजे पहुँचे। राजा बहुत ही सज्जन हैं, उनकी इज्जत भी है। शिक्षा के लिये कोशिश भी करते हैं। विचारों में पुरानापन नहीं है। बताया कि चंबल बांध की योजना पूरी की जा सकी तो खुशहाली हो सकेगी। कोटा से रात ९ बजे बारां पहुँचे। रास्ते में गाड़ी खराब हो गयी थी। सर्दी काफी थी परन्तु दृश्य बहुत अच्छे थे। रास्ते में गायें तथा उनके साथ आदमी जाते देखे। कैमरा साथ था, फोटो ले लिया। इधर अकाल ने बड़ी भयावनी हालत कर दी है।

केलवाड़ा, बारां

२ दिसम्बर : सुबह अंदाज ११॥ बजे केलवाड़ा पहुँचे। कोटा से लगभग अस्सी मील पर है। [illegible] तहसील की ऊंचाई वाले हिस्से का गांव है। इसके आगे ढलान है। गांव में गरीबी बहुत है। छोटी-सी झोंपड़ी में पूरे परिवार फटेहाल किसी तरह रहते हैं। पेट भरने लायक भी नहीं मिलता। मंदिरों में वही हालत रही है। जंगलों में गया। एक मील पर सूरजकुंड है, वहां स्नान किया। पानी गरम सा था। खूब नहाया, थकान मिट गयी। मन को शांति मिली। जगह बहुत अच्छी बन सकती है, यदि ध्यान दिया जाय। ३ बजे तक जंगलों में घूमता रहा। रास्ते बहुत ही खराब हैं, मोटर उल्टी-उल्टी हुई [illegible]। अंदाज ६ बजे बारां लौट आये। यहां आकर मोटर खराब हो गयी। [illegible]। [illegible] भोजन किया, साधारण था परंतु अच्छा। [illegible]। केलवाड़ा के [illegible] है। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

३ दिसम्बर : ४ बजे कोटा पहुँचे । बूंदी की पहाड़ियों को देखते हुए अंदाज ९ बजे वनस्थली । शास्त्री जी से बातें हुई । वनस्थली के बारे में काफी जानकारी मिली । भागीरथ जी महापुरुष हैं । कितना दान देते हैं और कितना करते हैं !

४ दिसम्बर : सुबह ८ बजे श्री रत्नजी आ गए। १० बजे तक सारी वनस्थली देखी। बहुत ही अच्छा लगा। स्वतंत्रता के पहले से ही इन लोगों ने लड़कियों की शिक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण काम किया है। ऐसी संस्था हरेक प्रांत में होनी चाहिए।, मैंने १२ महीने तक १००) महीना देने का कहा है। १२॥ बजे जयपुर पहुँचे। नेहरू जी आ रहे थे, रास्ते में भीड़ थी। १ बजे मीटिंग शुरू हुई। माणिक्यलाल जी वर्मा आये थे, सोहनलाल जी दूगड़ भी थे। बहुत से मिनिस्टर भी थे। मीटिंग काफी देर तक चली, ५ बजे अंदाज तक। तबीयत ठीक है।

५ दिसम्बर : सुबह ६ बजे उठा। प्रार्थना की। रात में सरदी काफी थी। रात में शायद २ बजे थे, राधाकृष्ण जी बजाज ने एक और कंबल उढ़ा दिया। स्वभाव बहुत अच्छा है। दो मील घूमा। ९ बजे वापस आया। मीटिंग शुरू हो गयी थी। एक ठाकुर साहब जोगनेर हैं, सारी जागीर कॉलेज में लगा दी है।

६ दिसम्बर : यहाँ आकर कई अच्छे कार्यकर्ताओं से मिलना हुआ। राधाकृष्ण जी बजाज, ब्रह्मदत्त जी, रामगोपाल जी और बद्रीनारायण जी सोढानी, वर्मा जी से जान-पहचान हुई। यात्रा अभी तक ठीक रही। ११ बजे अजमेर पूगे। गर्ग जी के साथ खाना खाकर अजमेर की दरगाह देखने गए। मुसलमान लोग इसे अपना तीर्थ स्थान मानते हैं। बहुत से हिंदू भी आते हैं, भेंट वगैरह चढ़ाते हैं। कहते हैं, मनोकामना यहाँ आने पर पूरी होती है, शांति मिलती है। मुझे कोई खास बात नहीं दिखाई पड़ी, अगर-धूप की सुगंध जरूर अच्छी लगी। पुरी के जगन्नाथ मंदिर की तरह यहाँ भी भोग-प्रसाद चढ़ता है। इसे 'देग' कहते हैं। दरगाह के पास बहुत धन है, बाहर से आया भी करता है। शहर देखा, पुराने समय से प्रसिद्ध है।'अजमीर' इसे साबित करता है।'मीर' शब्द समुद्र या झील के लिए आता है। पुष्कर तीर्थ तो आज भी प्रसिद्ध है। अजमेर शहर में जहाँगीर की बारहदरी देखी। 'ढाई दिन का झोंपड़ा' देखा। पहले यह संस्कृत पाठशाला थी। कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे तुड़वा दिया और सात मेहराबों का एक स्मारक खड़ा कर दिया। इन पर कुरान की आयतें लिखी हैं। परंतु इस स्मारक के पीछे तोड़ी गयी पाठशाला का बचा-खुचा भाग अब भी हैं। इतने ऊँचे खंभे हैं कि मैंने शायद ही कहीं हिंदू मंदिर में अब तक देखे होंगे। मुसलमानों के बाद अंग्रेजों ने भी ईसाई धर्म प्रचार के लिए अजमेर को ही राजपूताना में चुना था। अजमेर से तीन बजे चला। रास्ते में ब्यावर थोड़ी देर के लिए ठहरे। शहर साधारणतया अच्छा है। अनाज और ऊन की मंडी है। पानी का अभाव है परंतु बताते हैं जमीन के नीचे बहुत पानी है। निकालने की कोशिश अभी तक नहीं हुई है। रात में ८

बजे पाली पूगे। सोहनलाल जी गुप्ता और महावीर जी से मिले। काफी भले आदमी हैं। आज सब मिलाकर १९५ मील का सफर किया।

पाली-नागौर

७ दिसम्बर : सुबह पाली में मीटिंग की। प्रायः १० आदमी आये थे, तहसीलदार भी आये थे। प्रायः ११ बजे तक बातें कीं। एक बात महसूस की कि वर्षों तक सूखा और अकाल की स्थिति बनी रहने की वजह से राजपूताने में लंबी योजना से राहत पाने पर ध्यान कम देते हैं। मेरी धारणा है कि सब मिलकर यदि काम करें तो पानी का अभाव नहीं रहेगा और यह प्रदेश जरूर अनाज और रुई की उपज में आगे बढ़ सकता है। जयपुर में मैंने इस बात पर जोर दिया था कि सूखी जगहों पर उगनेवाले ताड़, खजूर, युक्लिपटस, बबूल, खेजड़े जैसे पेड़ लगाने की योजना बना कर रेत की आँधियों को बहुत कुछ रोका जा सकता है। बरसात के पानी को भी इकट्ठा करने पर ज्यादा ध्यान देना होगा। छोटे-छोटे कुँओं से कितना काम निकलेगा ? परंतु लोग इन सब कामों को सरकार पर छोड़ना चाहते हैं। देखें क्या होता है। नागौर पहुँचा, रास्ते में जोधपुर दो-तीन घंटे के लिए रुका था। मीठालाल जी करवा नहीं मिले, बीमार हैं। काबरा के घर गया, वह मिला नहीं। लोगों से बातचीत की। पुराना शहर है। बरसात के दिनों में अरंड और सूरजमुखी की खेती यहाँ खूब अच्छी तरह हो सकती है। लोगों ने कहा, चूहे, दीमक और कीड़े फसल को बरबाद कर देते हैं। इस पर भी बात हुई। जोधपुर से नागौर ९ बजे पूगे। रात में धरमशाला में रहे। छोटी-सी कोठरी मिली। पूरियाँ बनवा कर खा लीं। रात में सोते समय सर्दी लग रही थी परंतु रास्ते में देखा था मजदूर काम कर रहे थे, ठंढे से ठिठुर रहे थे।

नागौर-लाडनूँ

८ दिसम्बर : ७। बजे अंदाज शहर में गया। डेढ़ मील घूमा। किला देखा। टूटे मकान-हवेलियों में न जाने कैसे इतिहास दिखते हैं। किला पुराना है। राजस्थान में अनगिनत गढ़, किले और खंडहर पड़े हैं। रजवाड़ों में पुरानी पोथियाँ पड़ी हैं इन पर रिसर्च कराना जरूरी है। डॉ० कालिदास नाग से मैंने कहा था, उन्होंने बताया कि कलकत्ते की एशियाटिक सोसाइटी में भी बहुत मैनुस्क्रिप्ट हैं। इनकी कैटलॉगिंग तक ठीक से नहीं हो पायी है। सब नष्ट हो जायेंगे। किसी को दिलचस्पी नहीं है। किला देखकर सुजानमल जी काबरा, चमनलाल जी लोढ़ा, धन जी के घर गया। धन जी ने चाय पिलाई। काफी सजावट कर रखी है। नागौर पुराना शहर है, एक हजार वर्ष पुराना। नागौर से डीडवाना के रास्ते गोगदेव ठहरा कुछ देर के लिए। मंदिरों को देखा, तालाब देखा, स्नान कर लिया। डीडवाना ४ बजे पूगे। बांगड़ जी के गया। मौसमी का रस पिया। उनके बनवाए अस्पताल और स्कूल देखे, अच्छे थे। बाँगड़ जी से बातचीत की। उधर ६। बजे अंदाज चल कर लाडनूं। जोधराज जी के गए। रात में ९ बजे एक मीटिंग हुई। पंद्रह-बीस

आदमी आए। फिर, पुराना मंदिर देखा। लाडनूं तरक्की कर रहा है। यहाँ पानी बहुत है, ऐसा बताते हैं।

जसवन्तगढ़-रतनगढ़

९ दिसम्बर : सुबह लाडनूं से चले। जसवंतगढ़ ७।। बजे पूगे। तापड़िया जी से मिले। कांग्रेस की कमिटी में एक मीटिंग थी, काफी अच्छा रेस्पांस मिला। वहाँ से मंदिर गया। वहाँ भी काफी लोगों से मिला, प्रायः बीस-तीस थे। २ बजे छापर पहुँचे। रास्ते में देखा, लोग सड़क बनाने में लगे हैं। पूछने पर पता चला कि पैसे मिल जाते हैं पर अनाज नहीं मिलता। अनाज और दाल का इन लोगों के लिए बंदोबस्त किया। प्राब्लेम इस ढंग के और जगहों पर भी बताते हैं। बीदासर गए। मंदिर में गया, मीटिंग की। बीस आदमी आए थे। यहाँ लोग कुछ करते नजर नहीं आते। ज्यादा लोग देसावरों में रहते हैं, शायद इसलिए उत्साह की कमी है। ४ बजे छापर पूगे। तालाब देखा, लोगों से मिला। ६।। बजे रतनगढ़ पूगे। सर्दी काफी है। मोहनलाल जी के बगीचे में आए। रात में कलकत्ता एस० एन० को फोन किया, सब ठीक है। बाजार समान था। मैंने पाँच-छः दिनों में जाने को कहा है। बीदासर में गायों को चारा देने का कहा, ६०)-७०) और दिए। तायी से मिला, घर देखा।

रतनगढ़-चूरू

१० दिसम्बर : सुबह व्यायामशाला और पार्क देखने गए। पार्क देखा। प्रायः दो लाख लगेंगे हनुमान पुस्तकालय में। ९ बजे चले, १०।। बजे सरदार शहर के गांधी विद्या-मंदिर में पूगे। काम अच्छा है, सफलता जरूर मिलेगी। भागीरथ जी साथ हैं। १ बजे सभा की। बीस-पचीस आदमी थे, सुबह खबर दे दी थी। ३।। बजे तक सरदार शहर में रहे। के० दूगड़ से मिले। संस्थाएँ देखीं। ४ बजे खाना होकर ६।। बजे अंदाज चूरू पूगे। रात में दो-तीन जगह चंदे के वास्ते गए, तजवीज नहीं बैठी। भागीरथ जी के साथ रहने से मालूम पड़ा कि उनका स्वभाव बहुत ही अच्छा है। चूरू जिले में पानी का अभाव आसानी से नहीं जाएगा। पब्लिक और गवर्मेंट दोनों को लगना पड़ेगा। कुएँ छोटे-छोटे हैं पर इनमें पानी खारा निकलने लगता है। जोहड़ों में बरसात का पानी इकट्ठा होता है परंतु वर्षा नहीं होने से सूखे पड़े हैं। मवेशियों को बहुत कष्ट होता है। दिसावर ले जाए जाते हैं। बहुत से मरते हैं, यहाँ के लोगों को कोई खास फिकर नहीं। यहां हिसार से रेल से पानी मँगाया जाता है, बताते हैं। तारानगर में खेती हो सकती है, मिट्टी अच्छी है, थोड़ी सी बरसात में वहाँ कीचड़ हो जाती है।

रामगढ़-मुकुन्दगढ़

११ दिसम्बर : रामगढ़ ९ बजे पूगे। खेमका के गए। रामगढ़ कॉलेज देखा। बड़ी बिल्डिंग है। सुबह लोहिया कॉलेज देखा, बहुत बड़ा परंतु लड़के सिर्फ सौ-सवा सौ।

रामगढ़ लाइब्रेरी देखी। शहर भी घूमा, चूरू से सुंदर है। ४०) गुम गए। वाई से मिला। १५) दिए। रामगढ़ से १२ बजे चलकर १। बजे मंडावा पहुँचे। हाईस्कूल देखा, बाजार देखा। ३।। बजे मुकुंदगढ़ पूगा। रात में ९ बजे खाना खाकर कैम्प फायर देखने गए। एक रकम अच्छा लगा। कानोड़िया कॉलेज के ५०० लड़के अंदाज थे।

कलकत्ता

२३ दिसम्बर : गंगाबाबू ६ बजे गए, गाड़ी में भेजा, ८०००) दिए। मैं तो कुछ काम नहीं करता इनके जरिये कुछ हो जाता है, यही संतोष कर लेता हूँ। एक रकम हम लोग फालतू हैं, समाज या देश के लिए कुछ सोचते-करते नहीं। हम सुख के लिए जीते हैं, जीने का सुख नहीं जानते। ८ बजे सिंघी जी के जुलूस में गया। काफी देर तक था। बहुत ही सुंदर ढंग से जुलूस निकला। प्रचार काफी हो रहा है।

२५ दिसम्बर : बंदी थी, बड़ा दिन की। दिन में ४ बजे जयप्रकाश बाबू आसाम से आए। मैं स्टेशन गया। ९ बजे रात तक उनके साथ था। रुपयों की उन्हें काफी टान है।

२७ दिसम्बर : दिन में ज्यादा देर चंदे के काम में नहीं रह सका। सिर्फ ५०००) बी० कानोड़िया का मंडा। राधाकृष्ण जी कानोड़िया से बात हुई। बांगड़ जी के पास गया था। तबीयत मेरी एक रकम ठीक रहती है, पर मन प्रसन्न नहीं रहता है।

२८ दिसम्बर : ९ बजे ऑफिस गया। पाट के ऑफर देने में देर हुई, इसलिए मिस हो गया, केवल ३४,०००मन काम हुआ। एंड्र्यू साहब थोड़ा नाराज भी हुआ। क्या करूँ, समझ में नहीं आता। ७। बजे सी० एल० बाजोरिया के घर गया। वहाँ जैन, गोयनका जी आदि सब बैठे थे। चुनाव के बारे में बातें हुईं। उन लोगों ने ध्यान से सुना।

कलकत्ता-रानीगंज

२९ दिसम्बर : सुबह जल्दी ही ऑफिस गया। ३४,००० मन का काम किया। बाजार मजबूत है। पाट का भाव शायद और भी बढ़ जाय, यह भी धारणा है। ८।।। बजे बड़ी तकलीफ के बाद रानीगंज पूगा। चिरंजीलाल जी से मिला। एलेक्शन के बारे में बातचीत की।

रानीगंज-कलकत्ता

३० दिसम्बर : दिन में १२।। बजे कलकत्ता पूगा। सीधे गंगा जी गया, तेल मालिश कराया और स्नान किया। २ बजे घर आया फिर गद्दी गया। ३ बजे सिंघी जी की मीटिंग में गया। ५ बजे सोशल हाइजिन स्कूल में गया। वहाँ से ७ बजे घर आया, सेंगर जी भी थे। ९।। बजे सोशलिस्ट पार्टी वाले आए, २०००) दिए।

१९५२

१ जनवरी : आज वर्ष का प्रथम दिन है। ६ बजे अंदाज एंड्रयू के घर गया, और भी लोगों से मिला। काफी बातचीत हुई। पिछला वर्ष हम लोगों के लिए फाइनेंस के हिसाब से अच्छा रहा। इन १२ महीनों में प्रायः चंदे में या इंस्टिच्युशंस में काफ़ी खर्च हुए। मुझको थोड़ा सम्हल कर चलना चाहिए। रुपयों की एकदम टान-सी हो जायगी। रिलीफ सोसाइटी गया। नेहरू जी की मीटिंग में भी गया। बोलते अच्छा हैं, सुनते समय अभिभूत हो जाना पड़ता है, तर्क मन में आता नहीं। मुझे ऐसा ही अभ्यास करना चाहिए।

२ जनवरी : बाजार काफी गरम है। कल एक मीटिंग में थोड़ा बोला, पर हिचक तो थी ही। मुझे ऐसा मालूम देता है कि कलकत्ते से बाहर जाकर रहना चाहिए। शाम को सिंघी जी के घर गया था। इलेक्शन का काम एक रकम चल रहा है। किताबें वगैरह पढ़ने का काम होता नहीं।

३ जनवरी : बाजार बढ़ रहा है। दिन में काम-काज नहीं था। शाम को सिंघी जी के घर गया, उनके ऑफिस भी। सिंघी जी जीतते नहीं दिखते। मैं बोलता बहुत हूँ। यह ठीक नहीं है। फिजूल में ज़िद कर लेता हूँ। इसको कंट्रोल करना चाहिए। ताकत कुछ घटती भी है, ऐसा मालूम देता है।

५ जनवरी : हाइड्रोसिल का आपरेशन कराया। दिन में १२॥ से १ बजे तक होता रहा। खास दर्द नहीं हुआ था। एक सेर पानी निकला, काफी आराम मिला। ४०) डॉक्टर को दिए। शाम को घर पर ही थे। किताबें और अखबार पढ़ता रहा।

६ जनवरी : दर्द कमती-सा है। दिन में किताबें पढ़ता रहा। पाट-बोरे का बाजार काफी गरम है। कांग्रेस हार रही है। केदार बाबू आए, कहते थे, पी० डी० हिम्मत सिंह जी का चांस है। राजस्थान में राजा लोग जीत रहे हैं। इलेक्शन में मेरे काफी खर्च हो रहे हैं।

१० जनवरी : जे० पी० कलकत्ता आए हैं। मेरे पास फोन आया था। बहुत ही उदास-से हैं। पार्टी सारी जगहों में हार रही है।

११ जनवरी : सिंधी जी के चुनाव में लगा हूँ। आशा बहुत कम है। मेघनाथ साहा या प्रभुदयाल जी आते दिखाई देते हैं। मैं क्यों इतना अड़ंगा करता हूँ, मालूम नहीं। मेरी यह आदत बहुत ही खराब है। मुझे इन चीजों से ऊँचा उठना चाहिए।

१२ जनवरी : मन में खिन्नता सी है। ऑफिस १२ बजे तक गया। फिर जे० पी० के पास शाम को ५ बजे भी गया।

१३ जनवरी : बंबई में सोशलिस्ट पार्टी के सब लीडर हार गए, जे० पी० सुस्त हैं। प्रभुदयाल जी के विरोध में परचे निकल रहे हैं। गंदी बात है।

२१ जनवरी : सुबह अखबारों में देखा, कांग्रेस जीत रही है। लोगों का झुकाव भी उसी तरफ है। दिन में सिंधी जी की चेष्टा में रहा। रुपया भी २-३ लाख से कम खरच नहीं होगा। सिंधी जी की शायद जमानत जब्त हो।

२२ जनवरी : आज चुनाव का दिन है। दो घंटे जे० पी० के साथ घूमा। सिंधी जी हार जायेंगे, ऐसा लगता है। शाम को भागीरथ जी, सीताराम के साथ सब जगह गए, देखा। पी० डी० का भी चांस मुझे तो अब नहीं लगता।

२३ जनवरी : कल वोट तो नक्की हो गए। दो बातें स्पष्ट हो गयीं। एक तो जिसके पास झूठे वोट हैं, वही जीत सकता है; दूसरे जो मक्कारी करेगा, वही जीतेगा। सिंधी जी के प्राय: १५००० वोट आयेंगे। पी० डी० और डॉ० साहा का बराबर का जोड़ है। चुनाव में मुझे इतना ज्यादा भाग नहीं लेना चाहिए था।

२४ जनवरी : काम-काज कमती है, बाजार समान है। सारे दिन लोग चुनाव की बातें करते रहे। लोग प्रभुदयाल जी के जीतने की बातें करते हैं, झूठे वोट मिलों से बहुत आए। रामकुमार जी के जीतने की आशा है।

२५ जनवरी : प्रसन चंद जी बोथरा का कल देहांत हो गया। जूट के पुराने दलालों में थे। हार्ट फेल हुआ। अपने काम के अच्छे जानकार थे। काफी प्रभाव था। कोई भी जान-पहचान का आदमी मरता है तो मेरे मन में एक डर-सा मालूम देता है। हवड़ा में चुनाव हो रहा है। रामकुमार भुवालका जीत रहे हैं, ऐसी मेरी धारणा है।

२६ जनवरी : चुनावों के रिजल्ट आ रहे हैं। सुनते हैं, व्याज जी हार गए। कामकाज कमती देख पाता हूँ। पाट का बाजार समान में स्टेडी है।

२८ जनवरी : खर्च वेशी लग रहा है, पैदा कमती है। व्यास जी हार गए। कामकाज कमती है। 'देश-विदेश' पढ़ रहा हूँ। आनंदी लाल पोद्दार और बी० सी० राय जीत गए। पी० सी० सेन हार गए।

२९ जनवरी : बाजार में मंदी चल रही है। गद्दी का सारा हिसाब किया। आर० के० भुवालका हार गए। मन में एक रकम उदासी है। पसली में दर्द है, डॉ० गौर मोहन को दिखाया। बंगाल की सोशलिस्ट पार्टी का एक भी आदमी चुनाव में नहीं आया।

३० जनवरी : चुनाव में कांग्रेस जोरों से जीत रही हैं। पाट का वाजार काफी मंदा है। ६॥ वजे से ८ वजे तक गांधी जी की मीटिंग में गया। गांधी जी के नाम जपने वालों की संख्या वढ़ रही है, मगर तपने वालों की संख्या बहुत तेजी से घट रही है। मुझे तो इन चार वर्षों के तलपट से ऐसा लगता है। सोसाइटी में न जा सका, अमर वावू और हेमंत वावू के पास गया। हेसियन वाजार में भी गया। पी० डी० हारेंगे, ऐसी आशा है। सिंघी जी वीमार हैं, सुवह उनके घर गया।

३१ जनवरी : आज वसंत पंचमी की छुट्टी थी। सोसाइटी की वार्षिक मीटिंग थी। मैं फिर सेक्रेटरी चुना गया।

६ फरवरी : वाजार मंदा है। हम लोगों के पाट मत्थे, पोते खास नहीं है। मिलों में थोड़ा काम तो होता है। सुवह लेक रोड गया था, मकान दिन में नक्की हो गया है। मकान अच्छा है।

७ फरवरी : शाम को डॉ० लोहिया के साथ शुक्लजी के जीमने गया। वादशाह मर गया, इसलिए सव जगह वंदी थी। चुनाव में सव जगह कांग्रेस जीत रही है।

फार्बिसगंज

८ फरवरी : हवाई जहाज से भागलपुर १०॥ वजे पूगे। वहाँ से फार्विसगंज। पाट १०५०० मन वेचा, २५०० मन हम लोगों ने रख लिया। तेजी-मंदी भी खायी। लोगों के मन में एक रकम की धाक सी जम गयी है। धन जी सेठिया का भी इधर कामकाज है। वद्रीवावू के काफी वड़ा कारवार है। यहाँ का मुकाम पैदा का है। सर्दी काफी पड़ती है, मच्छर भी हैं।

कलकत्ता

१८ फरवरी : वर्ड कंपनी में रात में २ लाख मन का काम किया, ४००० मन हम लोगों ने रखा, काफी फायदा है।

२० फरवरी : भगवती प्रसाद को टी० वी० हो गयी। इलाज होना मुश्किल है, कारण उनके पास रुपया नहीं है। चारों तरफ लोगों में वीमारी फैल रही है, गरीवी है ही। इस तरह से कम्युनिजम नहीं आयगा तो और क्या होगा?

४ मार्च : वाजार वहुत ही मंदा है। काम-काज एकदम नहीं है। आज अंदाज २०००० मन पाट ३५) में लिया। मेरा ध्यान पाट पर और मंदा नहीं है।

५ मार्च : सुवह मैदान गया, वहाँ से रिलीफ सोसाइटी गया। मन में एक डर सा है, वाजार का। अमर वोस के घर, हेमन्त वोस के घर गया। पाट आज ३००० मन ३५% रु० में लिया। वाजार में आज कुछ तेजी सी थी। वनारस जाने का विचार छोड़ दिया। स्मिथ साहव के गया नहीं। शाम को 'लाइफ ऑफ वुद्ध' फिल्म देखी। मन में थोड़ी सी ग्लानि हुई, अपने से तुलना करने पर।

१० मार्च : दिन में ३००० मन पाट गोविंद जी को ३१) / ३२) में लेकर दिया बाजार समान से कुछ अच्छा था। हेसियन की थोड़ी चिंता है। बाजार सुधरने का ढंग नहीं है।

फार्बिसगंज

१३ मार्च : बाजार काफी मंदा है। पाट ले रहे हैं। ४००० मन २५) विथ प्राफिट कवर किया। अब प्रायः १८००० और माथे हैं। पेमेंट की चर्चा सारे दिन होती रही। रात में ११ बजे तक मीटिंग थी। लोग आधा देना चाहते हैं। मेरा मन तो है, ले लेना चाहिए, ठीक रहेगा। सारे दिन लोग बद्रीबाबू के यहाँ इकट्ठा रहे। मेस्ता का भाव १२)-१८), सादा का १८), २२) है।

कलकत्ता

१६ मार्च : पाट का भाव आसाम का २७), नये का २४) है। हेसियन ४९), बोरा १२५) है। बोरा में मेरा ध्यान तेज नहीं है। ज्वालाप्रसाद जी भरतिया से मिला।

१८ मार्च : बाजार का रुख तेज़ है। हेसियन ५१॥), बोरा १५७) रहा। मेरे हेसियन बोरा में बराबर हो गया। पाट नया १४००० पोते हैं उसमें २५०००) का लॉस है। पुराना पाट समान है। मेरे में एक रकम रुपये देने की कमज़ोरी है। मुझे पाट-हेसियन की तेजी-मंदी छोड़ देनी चाहिए। मन में एक रकम चिंता-सी रहती है।

२१ मार्च : बाजार मजबूत है। हम लोगों ने ८००० मन अपना बेचा। मेस्ता का भी भाव बहुत बढ़ गया है। कांग्रेस के जलसे की तैयारी हो रही है। पाट का बाजार तेज-सा ही है।

२३ मार्च : ८॥ बजे सुबह कांग्रेस में गया। बहुत से आदमी थे। मुझे खास जँची नहीं। मेला का-सा वातावरण बन गया है। देश की सोच-फिकर किसी को नहीं, ऐसा लगता है, ज्यादा लोग अपने को औरों से कुछ अलग समझते हैं। शाम को ६ बजे वाइफ के साथ 'ढोला-मरवण' देखने गया।

२४ मार्च : ८ बजे सुबह रिलीफ सोसाइटी में कांग्रेस के बहुत से नेता आये। श्री टंडन जी तथा माणिक्यलाल जी, व्यास जी आये। टंडन जी को देखकर पुराने ऋषियों की याद आती है।

२५ मार्च : सुबह मैदान नहीं गया, तबीयत खराब है, जोरों से जुकाम है। ७। बजे अमर बोस के साथ लोगों के घर गया, एलेक्शन के लिये। दिन में काम ५०,००० मन का किया। बाजार मजबूत। ३ लाख मन हेसियन ५७।) में बेंचा।

२७ मार्च : ११ बजे अन्दाज घर से बाहर गया कारपोरेशन एलेक्शन देखने के लिये। कांग्रेस जीतेगी, ऐसी संभावना है।

२८ मार्च : जुकाम है। शाम को ७॥ बजे नेचर क्योर किया। रात में खाना नहीं खाया। तबीयत ठीक रही। किताब पढ़ी। परसों जयप्रकाश बाबू आयेंगे।

२९ मार्च : एंड्रयू साहब के १२ बजे गया। अंग्रेज लोग रिटायर होते हैं पर मारवाड़ी नाम तक नहीं लेते।

३१ मार्च : दिन में स्मिथ साहब से कल जाने की कही, मंजूर कर लिया। सुबह सोसाइटी में गया था। बनारस जाने की सारी तैयारी कर ली है।

१५ अप्रैल : मन में यूरोप जाने की सी लग रही है। 'लेडी चैटरली' पढ़ रहा हूँ और फील कर रहा हूँ कि यदि मुझ पर घटती तो कैसी बीतती। मैथिलीशरण जी का पत्र आया है, पुरी जाकर आये हैं, मैं तो नहीं जा पा रहा हूँ।

२२ अप्रैल : सुबह जे० पी० के पास गया था। उनकी तबीयत ठीक है। लगता है, रुपयों की टान हो रही है, कुछ कहते नहीं। कुछ सहारा लगाना चाहिए।

५ मई : मनमें एक रकम उदासी रहती है। सोसाइटी में ८ बजे थिरुमल राव आये। मद्रास के अकाल के बारे में उन्होंने कहा। मैं भी बोला, एक रकम ठीक ही बोल पाया हमने २५,०००) सेंक्शन किये। पाट का बाजार मंदा है। ऑफिस में काम-काज कमती है।

७ मई : अखबारों में मद्रास के अकाल के बारे में सोसाइटी की सहायता की चर्चाएँ हैं। चुनाव को लेकर काफी झंझट सी हो रही है। पाट का बाजार आज खास तेज नहीं था। हड़ताल बहुत बड़ी थी। ट्रामों, बसों का आना-जाना बंद था।

१५ मई : दिन में धूप बहुत थी। चंदे में घूम रहा था। प्रायः ३०००) मिले होंगे।

१६ मई : महादी बाई का देहांत हो गया। हम भाई बहनों का बचपन से, सुख-दुख का साथ था। मन में कैसा-सा होता है। जाना सभी को है, मैं भी जाऊँगा। मायामय संसार का मोह सत्य को छिपाकर भावना को उभारता है। सोसाइटी जाकर बाबूलाल जी के साथ ईश्वरदास जी के गया। शाम को ७ बजे बाबूलाल जी मीटिंग में आये। न्यू मार्केट से मैंने कुछ किताबें खरीदीं। इन्हीं में खो जाने में शांति मिलती है।

१७ मई : ३ बजे दहेज की मीटिंग में गया। उधर मारपीट हो गयी। परंतु मीटिंग होती रही। मैं भी बोला। गुस्सा दोनों तरफ था। मगर इस तरह समस्या का समाधान संभव नहीं। संयम रखना चाहिए।

२२ मई : सुबह मैदान गया वहां ६००० मन २५) के भाव में आसाम बॉटम की तेजी खा ली। अच्छा काम नहीं किया। भाव बाजार में २३) का है। मुझे शायद नुकसान ही उठाना पड़ेगा। धर्मचन्द जी मद्रास अकाल के इलाके रायलसीमा से आये हैं, हिसार जाने का जल्दी ही विचार कर रहे हैं। चंदे का काम ढीला सा है। रात में मोहनलाल जी जालान के पास चंदे के लिए गये।

२३ मई : कल सुंदरवन जाने का प्रोग्राम हो रहा है। पार्टी काफी वड़ी रहेगी, प्रायः ३२ आदमी। आजकल प्रायः ही मेरा नाम अखवार में आ जाता है।

२४ मई : रुपये का हिसाव लिखा। फाटका दुतरफा खाया, गलती किया। वाजार में हल्ला है, घरवालों से भी नाराजी होती है। दिन में १००० मन पाट सेटल कर लिया, शायद कुछ वचेगा।

२५ मई : २२ सोसाइटी के, १३ प्रेस रिपोर्टर सुंदरवन इलाके में वढ़े। संदेशखाली और हसनावाद वगैरह का वड़ा हृदयद्रावक दृश्य है। लोग भूखे रहते हैं, कपड़े भी नहीं हैं। अन्न, वस्त्र वाँटे। काम शुरू करना ही है। वहुत वड़ी समस्या है। इसका कोई स्थायी समाधान ढूँढ़ना चाहिए। ऐसी मदद से कितने दिन, कितनी वार चल सकती है? थकावट है, मन में कैसी सी उदासी भी। रात में मच्छर परेशान करते हैं। यहाँ आकर विचार आते हैं, एक तरफ रुपयों का भंडार है, दूसरी तरफ गरीवी और अभाव। सोहन लाल जी दूगड़ ने काफी मदद की। यहाँ आने पर जीवन का एक दूसरा ही रूप देखा।

२६ मई : सोसाइटी के काम की अखवारों में काफी चर्चा है। पाट का वाजार गरम है। मुझे पाट का दुतरफा नहीं करना चाहिए। कल हिसार धर्मचंद जी के भेजने की वात थी, पीछे मुझे ही जाना हुआ, अव सरदारशहर भी हो आऊँगा। संदेशखाली के अन्नाभाव के वारे में लोगों से वात की। शायद कुछ काम वन पड़ेगा। मेरा मन कुछ विचित्र-सा हो रहा है। क्यों इतना अड़ंगा कर लेता हूँ? वाद में सम्हालना मुश्किल हो जाता है। मगर आदत से लाचार हूँ।

हिसार

२७ मई : सुवह ५॥ वजे एयर पोर्ट पूगा। साथ में लाला जी थे। ३ वजे की वस से हिसार। रास्ते में कई आदमी मिले। ७ वजे हिसार पूगा। लाल हरदेव सहाय मिले। वहुत से और भी कार्यकर्त्ताओं से मिला। जैसा सुना था, वैसा भीषण अकाल नहीं है, पर ध्यान देने लायक है ही। ५०-६० हजार पशु मर चुके हैं। रात में ११ वजे तक विचार-विमर्श होते रहे।

भिवानी

२८ मई : हिसार से भिवानी। भिवानी वड़ा शहर है। काफी लोगों से जान-पहचान हुई। काम करने का रास्ता भी वैठाया।

सरदार शहर

३१ मई : सुवह गोशाला गया। काम अच्छा है पर समय के अनुसार व्यवस्था में परिवर्तन लाना जरूरी है। मेरा मन कहता है कि अव आगे लोगों में ऐसे काम के प्रति उत्साह कम हो जायगा। मैंने लोगों से कहा कि गोशाला को आधुनिक वैज्ञानिक ढंग अपनाना चाहिए। मगर कार्यकर्ता नहीं मिलते, समय कौन लगाये? केवल धर्म के

नाम पर गोरक्षा कितने दिन चलेगी ? गांधी विद्यामंदिर देखने गया। बहुत ठोस काम है, रुपये भी बहुत चाहिए। मुझे लगता है, ऐसी संस्थाओं को गांधी जी की पद्धति से स्वावलंबी बनाने पर अधिक जोर देना ठीक रहेगा। बहुत लोग मिलने आये थे। हिसार, सरदारशहर की ट्रिप अच्छी रही, एक रकम की शांति मिली। बाहर जाने से जान-पहचान बहुत बढ़ती है।

कलकत्ता

३ जून : कलकत्ते में गरमी एकदम नहीं है। बाजार हेसियन-पाटका मजबूत है। सोसाइटी का काम चारों तरफ हो रहा है। चंदा भी जरूर इकट्ठा हो जायेगा।

१० जून : रात में काफी थकावट आ गयी थी। परंतु चंदे में अकेले ही घूमता रहता हूँ, सफलता भी मिली है। अब तक कुल ८०००) हो गये हैं। मन में एक रकम से संतोष है कि मारवाड़ी रिलीफ् सोसाइटी का काम कर पा रहा हूँ। भाई जी कुछ खिंचे से रहते हैं, कारण गद्दी का काम नहीं देखता हूँ।

सुन्दरबन

१४ जून : सुबह ४॥ बजे तैयार हो गया। मोटर ५॥ बजे आयी, देर हो गयी। ३ कारों में १४ आदमी गये। ८॥ बजे सुंदरबन अंचल में पहुँचे। ९। बजे स्टीमर लेकर भीतर-भीतर के कई गाँवों में गये। बहुत करुणाजनक दृश्य। भूख, भूखमरी औरतों के बदन पर कपड़े नहीं। सोसाइटी का काम जोरों में हो रहा है। समस्या इतनी बड़ी है कि समझ में नहीं आता कि कैसे पार पड़ेगा। मेरे मन में एक प्रकार की ग्लानि और निराशा सी छायी जा रही है। बंगाल का अकाल पहले भी देखा था, कहीं वैसा फिर न चारों तरफ छा जाये ! इस क्षेत्र में भारत-सेवाश्रम-संघ भी खूब काम कर रहा है। एक स्वामी जी से मिला। मेरा मन उसी तरह होने का हो रहा है।

२५ जून : शाम को सेंगर जी और सुशीला जी जीमने आये। करीब ९ बजे। मैं थोड़ा गुस्सा हुआ क्योंकि वे लोग बहुत देरी से आये। मुझे अपना असंतोष और तरह से प्रकट करना चाहिए था। चंदे का काम सुचारु रूप से चल रहा है। सोसाइटी का काम इधर में काफी संतोषजनक है।

३० जून : इस महीने में काफी काम सोसाइटी का किया। प्रायः एक लाख तीस हजार चंदा इकट्ठा किया। मन में एक संतोष होता है। अपने लिये करना और दूसरों के लिए करने में बहुत फर्क है। इस महीने में ६-७ जगह पब्लिक मीटिंगों में बोला। दान में प्रायः २५००) दिये। खुदरा का ठीक हिसाब नहीं रखा। रखना चाहिए।

२४ जुलाई : बुखार है, पेट में आंव भी। किताब पढ़ता रहता हूँ। 'मनुष्य के रूप में' यशपाल का। ऐसा लगता है प्रच्छन्न रूप से कम्युनिज्म का प्रचार करने की कोशिश है। वैसे मनोरंजक है, शैली भी अच्छी और नये तरीके।

५ अगस्त : आज रक्षाबंधन है। दिन में घर आकर राखी बँधाई। आज के व्यस्त-जीवन में इस पवित्र और मधुर त्योहार के लिये समय निकालना कितना कठिन हो गया है। मन में कैसा सा लगता है जब सिर्फ दक्षिणा के लिए ब्राह्मण एक धागा लिये खड़े रहते हैं। तबीयत सुस्त सी है, काम-काज कम देखता हूँ। बाहर जाने की बहुत इच्छा हो रही है। जा नहीं पाता हूँ।

८ अगस्त : सुबह ५। बजे सत्यवाला जी को लेने स्टेशन पर गया। अच्छी कार्यकर्त्री हैं। हिसार में परिचय हुआ था।

२१ अगस्त : १ बजे ग्रान्ड होटल में गया, अतुल्य घोष, पी० सी० सेन की पार्टी में। मेरी समझ में राजनीतिक नेताओं के लिये ऐसी मीटिंग ठीक नहीं। इससे वे जनता से दूर होते जायेंगे।

१० सितम्बर : मकान बन रहा है परंतु खरचा बहुत लग रहा है। दिन में ऑफिस गया, काम बहुत कम है। सैदपुर का काम भी खास चल नहीं रहा है। शाम को ८ बजे गवर्नर हाउस डिनर में गया।

१२ सितम्बर : सुबह डॉ० लोहिया के यहाँ चाय पीने गया। इनके प्रति मेरे मन में श्रद्धा होती है। विद्वान हैं, बहुपठित, मगर इनके पास कार्यकर्त्ता जुटाने की हिकमत नहीं। सोशलिजम का इतना बड़ा काम कैसे पूरा होगा अगर नये-नये लोग नहीं आयेंगे। इन पुरानी पीढ़ी के लोगों के बाद तो काम सम्हालने वाला कोई दिखता नहीं। डॉ० लोहिया के साथ कैफेटेरिया में चाय पी। उनका विश्वास है, लोग खुद आगे आयेंगे। उनके सामने समस्याएँ उभार कर रखना है, उन्हें जानकारी देनी है।

कैनिंग, गोसाबा-सुंदरबन

१४ सितम्बर : सुबह ६ बजे ट्रेन से कैनिंग, वहां से संदेशखाली, गोसाबा। नाम तो बहुत सुन रखा था। साधारण सा कस्बा है। लोगों ने बताया यहाँ मछली पालने की बड़ी-बड़ी झीलें जमींदारों की थीं। अब कुछेक रह गयी हैं। खारा पानी आ जाता है, काफी नुकसान हो जाता है। गरीबी का बड़ा करुण दृश्य यहाँ देखा। ३० आदमी साथ थे, हेमंत बाबू और कई अखबार वाले थे। मुझे ऐसा लगता है, इस अंचल में सड़कें या आने-जाने के साधन बढ़ाने चाहिए जिससे कलकत्ते से संपर्क बढ़े। कामकाज के पुराने ढंग को भी छोड़ना होगा।

१६ सितम्बर : १२। बजे पी० सी० सेन से मिलने गया। सुंदरवन में सोसाइटी के काम की बात की। अपने सुझाव भी दिये। उनका कोई स्पष्ट उत्तर नहीं था। कहते थे, सरकार की भी अपनी समस्याएँ हैं, जहाँ तक बन पड़ता है, करते हैं। नैतिक जिम्मेदारी सबकी है, इसलिये सेवा तो सामाजिक कर्त्तव्य है। १२। स्मिथ साहब के गया। थोड़े नाराज से थे। मेरी गलती है, काम में एकदम ध्यान नहीं देता। मुझमें यह कमी है,

जिधर झुकता हूँ, पूरी तरह झुक जाता हूँ। आज काजकाज ७५०० मन का किया। पाट का, हेसियन का सब चीजों का वाजार गरम है। शेयर में मुझे नुकसान लगा है, भाई जी नाराज होंगे।

२२ सितम्बर : शाम को ५॥ बजे जब ऑफिस आया, मन एकदम उदास था। रोने की मन में भावना आ रही थी। ५।।। बजे मेट्रो में 'कुओ वादिस' अंग्रेजी फिल्म देखने गया। नीरो पर बनी है। प्राचीन रोम साम्राज्य का वैभव, नीरो की मनमानी तो महमूद तुगलक से भी गयी-बीती लगी। सभ्य कहलाने वाले रोमन कितने असभ्य और बर्बर थे ! इन्हें देखकर मन कुछ बदल गया।

२६ सितम्बर : आज २ बजे सोसाइटी की मीटिंग हुई। मैं फिर सेक्रेटरी चुना गया।

रांची

२८ सितम्बर : रांची में तुलसी जी सरावगी, बजरंगलाल जी लाठ, राधेजी आदि सब कोई हैं।

कलकत्ता

२ नवम्बर : सुबह सोसाइटी की मीटिंग हुई। दिन में सेंगर जी का नाटक देखा, बहुत ही अच्छा था', 'जनता का शत्रु' सेंगर जी में प्रतिभा है। प्रचार से दूर रहते हैं। जीवन में उनका भी अपना एक मिशन है। चाहते तो औरों की तरह अपनी स्थिति ऊँची बनाते, संपन्न बनते। मैंने कई बार उनसे कहा, मगर हँस कर टाल गये। कभी भी उन्हें जी हजूरी करते नहीं देखा, यह बहुत बड़ी खूबी है।

६ नवम्बर : प्राकृतिक चिकित्सा शुरू की। सुबह रखी रोटी खायी, दिन में फल, चाय नहीं पी। रात में भी खाना नहीं खाया। जुकाम हो रहा है। डा० कुलरंजन मुखर्जी से इलाज शुरू कराने का सुबह निश्चय किया है।

राजगिरि

२२ नवम्बर : सुबह बख्तियार पुर होते हुए ९ बजे अन्दाज राजगिरि पूगे। अच्छी जगह लगी। प्राकृतिक दृश्य भी अच्छे हैं। कुंड पर स्नान करने गये। सरदी कुछ पड़ती है। कुंड में स्नान करना बहुत अच्छा लगा। मंगतूराम जी जालान, मातादीन जी खेतान तुलसी राम जी सरावगी, बजरंगलाल जी, किशोरीलाल जी ढाँढनिया, धरमचन्द जी सरावगी आदि सब कोई थे। मन लग गया। ट्रिप अच्छी रही। मन में कुछ शांति रही। रात नींद कुछ देर से आयी। बहुत से विचार आये।

२३ नवम्बर : आज सुबह पैदल काफी घूमे। रमणीक स्थान है। किसी समय घोर जंगल रहा होगा। गुफाएं देखीं। मुनि-ऋषि तपस्या करते होंगे। पाटलीपुत्र दूर नहीं।

फिर भी वहां का वैभव इन्हें खींचता नहीं था। वल्कि लोग इनके चरणों में वैभव लुटाने आते होंगे और ये ठुकराते होंगे। मन का इतना जोर कैसे पाया जा सकता है? नालन्दा में विश्वविद्यालय देखा, खंडहर रह गया है। यदि इसके बारे में पढ़ा न होता तो कुछ भी समझ में नहीं आता और न आनंद ही मिलता। अब तो शायद ही ऐसे विश्व-विद्यालय बने जहाँ सर्वस्व त्यागी आचार्य और विद्या की साधना में विद्यार्थी मिलें। मालवीय जी ने काशी विश्वविद्यालय शायद इसी भावना से बनाया था पर अब तो उसका रूप बदल गया है।

२६ नवम्बर : १। बजे जैन दीक्षा में गया। काफी प्रभावोत्पादक दृश्य था। मुझे लगता है, समाज के लिये इनके आचार्य अथवा मुनि जितना इस जमाने में करते हैं, उतना अन्य समाज में शायद ही होता है। अपने सनातनियों में तो साधु-संतों की भरमार है। परन्तु इतने शिक्षित और दीक्षित कम ही मिलते हैं। इस युग में भी पैदल चलना, केवल भिक्षा पर निर्भर करना, पास कुछ भी न रखना, फिर समाज में घुलना-मिलना अपने आप में एक बड़ी विशेषता है। २॥ बजे जयप्रकाश बाबू आये, ४ बजे तक थे काफी बात-चीत हुई। जे० पी० की विचार-धारा में निश्चितरूप से मोड़ आ गया है। क्रांति की उग्रता नहीं रही वे अधिकाधिक गांधीवादी होते जा रहे हैं। नैतिक आचरण पर बल देना चाहते हैं पर मुझे लगता है यह काम आसान नहीं।

कलकत्ता

९ दिसम्बर : मन में एक रकम दुश्चिता सी है। शरीर में झुर्रियाँ पड़ गयी हैं। लोग कहते हैं, बीमार जैसे मालूम देते हो। ऐसा कहने वालों से तंग-सा आ गया हूँ। सुबह घूमने का नियम -सा है, परंतु शरीर में कमजोरी मालूम देती है। इधर मैं कम से कम १० वर्ष बूढ़ा मालूम देने लगा। कोई रिक्रियेशन नहीं है।

१२ दिसम्बर : कल डा० राम अधिकारी के पास गया था। एक्सरे भी कराई। आज फिर गया। कहते थे, कोई खास बात नहीं है। परंतु मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती, चिंता और उदासी। लोग भी कहते हैं कि तुम कमजोर होते जा रहे हो।

जसीडीह

१४ दिसम्बर : यहाँ आने पर तबीयत कुछ सुधरती सी लगती है। सुबह ३ मील, शाम को २ मील घूम लेता हूँ। भूख भी लगती है। तेल मालिश कराता हूँ। दूध दो बार लेता हूँ। दिन में किताब पढ़ता रहता हूँ। रात में रेडियो सुनता हूँ। यहाँ रहने से आदमी की आयु बढ़ जाती है, ऐसा मेरा ख्याल है। कलकत्ते में शाम को शरीर में जो कमजोरी सी मालूम देती थी, वह यहाँ एकदम नहीं है।

२५ दिसम्बर : कलकत्ते से कल जसीडीह लौट आया। तबीयत ठीक है। डा० रामचंद्र अधिकारी भी यहीं हैं। उनके साथ आज शाम को श्री बसंत कुमार चटर्जी के घर गया।

वहुत साधारण सा मकान इन्होंने भाड़े पर लिया है। परंतु आदमी वहुत विद्वान हैं। डा० अधिकारी भी वहुत विद्वान हैं। डाक्टरी के अलावा अंग्रेजी, बंगला और संस्कृत साहित्य का उनका ज्ञान वहुत ही गंभीर है। नाटकों के प्रति विशेष रुचि है। ऐसे व्यक्ति कम ही होते हैं। विवाह किया नहीं, कोई बंधन नहीं। खूब कमाते हैं, छात्रों की मदद करते हैं।

२७ दिसम्बर : सुवह ९॥ वजे साइकिल पर कुंडा चला गया। थकावट सी तो आयी। परन्तु आनंद आया। हरियाली, छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, ऊँची-नीची पगडंडी पर अकेला चला जा रहा था। जीवन में भी शायद ऐसी ही पगडंडियाँ हैं पर हरियाली भाग्यवानों को ही मिलती है। ११ वजे वापस घर गया। सात-आठ आदमी आए हुए हैं। कहीं और जाने की इच्छा नहीं हुई।

३१ दिसम्वर : वर्ष का शेष दिन है। सोचता हूँ, इस सारे वर्ष में क्या खोया क्या पाया। हिसाव मिलता नहीं। सुख की ख़ोज में दौड़ा, दुख ही पाया, अशान्ति और उदासी। मुझे सुधरना चाहिए। थोड़ा बुख़ार हो गया है।

———

१९५३

जसीडीह

१ जनवरी : सुवह उठकर काफी देर प्रार्थना की। जीवन में सफलता और असफलता परमात्मा के हाथ है। आज यह मन में किया कि झूठ नहीं वोलूंगा। शायद वोला भी नहीं। प्रायः ४३ वर्ष का हो गया हूँ। जसीडीह में तवीयत अच्छी ही रही। १९५२ के साल में रुपयों की वढ़ोतरी तो शायद नहीं हुई, कुछ नुकसान ही हुआ होगा। प्रायः १६ दिन जसीडीह में रहा।

कलकत्ता

७ जनवरी : शाम को सेंगर जी, लाला जी, जीमने आये। गाजर का सीरा करवाया रात में सिनेमा जाने की वात थी पर गये नहीं। दिन में ऑफिस में कामकाज एकदम नहीं। सोसाइटी पर कुल १०,०००), मेरा ५०००), मातादीन जी का इतना कर्जा हो गया है।

१० जनवरी : रात में वहुत ही खराव स्वप्न आया जैसे मैं वहुत वीमार हो गया होऊँ। मन में एक रकम उदासी सी तो आती ही है। सुवह ऑफिस गया। थोड़ा वुखार सा था। सोसाइटी भी गया। २॥ वजे शिशिर वेजिटेवल फैक्टरी देखने गया। वहाँ से ४ वजे एयर पोर्ट पर, कर्वा जी आये नहीं। पिता जी आजकल राजी हैं।

१४ जनवरी : सुवह ६ वजे उठा। प्रायः एक मील घूमा। तवीयत ठीक थी। शाम को खराव सी हो गयी। दिन में फल नहीं खा सका। कामकाज थोड़ा वहुत हुआ। वांयीं आंख फड़कती है। इसे अपशकुन मानते हैं। क्या होने वाला है, मालूम नहीं। पाट का वाजार काफी मंदा है। भाव आसाम के, २२॥) के हैं। शाम को कुछ ठंढ भी मालूम पड़ी। पुरुषोत्तम जी के साथ लड़की देखने गया। सोसाइटी सुवह सवा घंटे था।

१५ जनवरी : सुवह गंगावावू का ६॥। वजे फोन आया। मैदान नहीं गया था। इसलिये गंगावावू के पास गया। वहां से स्टेशन गया। ८॥। वजे पूगा। नन्दू पर खीजा, उसने देरी कर दी थी। पिता जी जसीडीह गये हैं। १०॥ वजे गंगावावू को लेकर घर आया।

१२।। वजे उनके साथ ही भोजन किया। १ वजे ऑफिस गया। कामकाज एकदम कमती है। वाजार वहुत मंदा है। शाम को ८००० मन का काम किया, रात में गंगावावू के साथ १०।। वजे तक वातें करता रहा।

१६ जनवरी : सुवह गंगावावू के साथ मैदान गया। वहां से लेक रोड के मकान पर नाश्ता किया। फिर नये मकान पर गये। ३।। वजे एयर पोर्ट गया, वहां से जे० पी० के साथ आया। प्रेस कांफ्रेंस में गया। शाम को फिर जे० पी० के उधर गया। स्टेशन गया उनको पहुँचाने। ५०) नरेनवावू को देना होगा, मीटिंग में जे० पी० ने कहा। महावीर जी केडिया ने सब रुपया चैरिटी कर दिया, ऐसा सुना। मेरे भी मन में इच्छा होती है। सुरेश देसाई ने कहा कि मेरे हाथ में आगे वहुत अच्छा लिखा है।

१७ जनवरी : सुवह गंगावावू के साथ मैदान गया। वहां से भागीरथ जी के घर कलेवा किया। पेट ठीक है। ऑफिस आया, साहव से वात की। सोसाइटी आया। ११।। वजे डाक्टर लोहिया के गया। २ वजे गद्दी गया। वहाँ ४ वजे तक मीटिंग में था। फिर सिंघी जी के घर की मीटिंग में गया।

२२ जनवरी : सुवह मीटिंग थी। फिर ऑफिस गया। स्मिथ साहव का फोन आया, केस हार गये। ३३०००) लग गये। काफी मन में उदासी सी आयी। दिन में के० के० दत्त के पास गया, शनिवार का फिर टाइम किया है। केस की मन में काफी चिंता है। और भी मामले चल रहे हैं। रात में काफी देर तक जागता रहा।

२३ जनवरी : आज सुभाषवावू की जन्म तिथि है। कुछ लोगों की धारणा है कि वे जीवित हैं। मुझे ऐसा नहीं लगता। सुवह सोसाइटी की मीटिंग में गया। शाम को 'महाराज नंदकुमार' देखने गये, गंगावावू साथ में थे। नाटक अच्छा था परंतु हॉल खराव। आनंद नहीं आया।

२४ जनवरी : दो लोगों की लड़कियों के विवाह में सौ-सौ रुपये दिये। ३।। वजे से ६।। वजे तक लाला जी की लड़की के विवाह में काम करता रहा। ८ वजे सुवह तक विवाह कार्य होते रहे। लड़का अच्छा मिल गया है। चाय ज्यादा पी ली है, इसलिये गरमी मालूम देती है।

६ फरवरी : आज लोग जीमने आये, प्रायः २००-२५०। सगे सुवह पूग गये। स्टेशन गये थे। सव वंदोवस्त करने में प्रायः १० वज गये। इन दिनों रात में सोने में काफी देर हो जाती है।

७ फरवरी : घर में आज काफी लोग जीमने आये, इतने आदमियों की दरकार नहीं थी। मैं क्या करता ? न्यौता दे दिया गया था। वाजार में इस वात को लेकर काफी चर्चा हो रही है।

८ फरवरी : कल नन्दू का विवाह है। घर में आज जमाई और जीमे। जीमनेवाला अड़ंगा कुछ वेशी हो गया। लोग नाना तरह की वातें करते हैं। गलती मेरी है, नहीं तो

इतना कुछ नहीं होता। परन्तु पिता जी और बड़ों के आगे कुछ कहने की हिम्मत मुझमें नहीं है।

९ फरवरी : सुबह मैदान आया। दिन में एक वजे जीमा। लोगों ने ५।। वजे घर आना शुरू कर दिया। दिन में सी० एल० वाजोरिया भी आये थे। शाम को काफी आदमी आये। लोगों ने सादगी की बड़ाई की। आज से ३३ वर्ष पहले इन्हीं दिनों में मेरी शादी हुई थी। एक जमाना वीत गया। आज नन्दू की हो रही है, इसी तरह उसके लड़के की होगी।

१० फरवरी : सुबह ८।। वजे मैदान आया। कल के वास्ते लोगों को निमंत्रण दिया। सिंघी जी के घर चाय पी। दिन में थोड़ी देर ऑफिस गया। शाम को सगों के घर गये। रात में पहरावनी हुई। १।। वजे घर पूगे। रात में सगों के यहां खाना खाया।

१३ फरवरी : पाट का वाजार वरावर मंदा चल रहा है। मेरी तवीयत तो ठीक है, पर मन नहीं लग रहा है। ऑफिस में केसेज की चिंता लगी रहती है।

१४ फरवरी : मन में न मालूम किस चीज का अभाव-सा खटकता है। शाम को ७ वजे भूतनाथ के मंदिर गया। आधे घंटे तक रहा। आसपास वहुत गंदगी है। पवित्र स्थान को हम साफ नहीं रख सकते। गिरजा और मस्जिदों में ज्यादा सफाई रहती है। मन कैसा-सा हो गया।

१५ फरवरी : दिन में 'कामायनी' का नाट्य-रूपक देखा। वहुत ही सुंदर था। मन प्रसन्न हो गया। हिंदी में रंगमंच काफी आगे वढ़ रहा है। १ वजे पाट की मीटिंग में गया। मैं भी वोला, अच्छा ही वोला।

१६ फरवरी : मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की मीटिंग में गया। इसके वाद ऑफिस। थोड़ा कामकाज हुआ। कन्हैयालाल जी लोहिया की स्त्री चली गयी। इसी तरह सव जायेंगे, मैं भी। पैदा होने से मरने तक के समय का भरोसा क्या? जो कुछ अच्छा हो जाये, वही रह जाता है परंतु मैं कुछ नहीं कर पा रहा हूं।

१७ फरवरी : मैदान में गया। दिन में सोसाइटी में भी। तवीयत ठीक रहती है परंतु मन में अभाव-सा खटकता है। दिन यों ही वीतते जा रहे हैं। मन लगता नहीं। कुछ करना चाहिए। पर क्या करूं? कारवार में नफा तो नहीं है पर उसकी खास जरूरत भी अव नहीं है। वहुत रुपये रखे हैं। परंतु रुपया ही तो सव कुछ नहीं।

२१ फरवरी : ११।। वजे गद्दी से स्टेशन गया। गाड़ी में भीड़ काफी थी। पिता जी नार्ट की मेल गये। १ वजे ऑफिस गया। कामकाज नहीं है। शाम को यशपाल जी के साथ अंग्रेजी सिनेमा में गया। अच्छा था।

२३ फरवरी : ९।। वजे सोसाइटी गया। कामकाज देखा। सेवा-संस्थाओं के पास काम बहुत है, परंतु साधन कम। यही बड़ी समस्या है। कार्यकर्ताओं में मेल रहे तो

साधन जुट सकता है, काम भी बढ़ सकता है। दिन में के० के० दत्त और कानेड़िया जी के ऑफिस में गया। ऑफिस में कामकाज है नहीं। शाम को के० डी० जालान के गया। पाट का भाव २१॥) है। मेरा ख्याल गरम सा है। केस की चिंता कुछ कम हुई है।

२४ फरवरी : सुबह रिलीफ सोसाइटी की मीटिंग में गया था। दिन में बाजार समान था। रात में जार्डिन में काम हुआ। मैं आजकल सेलर्स से बातचीत बहुत कम कर पाता हूँ।

२३ फरवरी : २००० मन घुबड़ी का पाट २३) में बेचा है। खास तेजी नहीं है। शाम को वसंती के साथ 'झांसी की रानी' सिनेमा में गया। अच्छी थी।

२७ फरवरी : दिन में ऑफिस में कुछ कामकाज तो था नहीं। ३ बजे तक था। ४। बजे वी० दास के गया। एक साधु का स्वांग बनाया। काफी अच्छा रहा। ५॥ बजे सोसाइटी की मीटिंग में गया। लोग पहचान नहीं पाए, सिर्फ़ कुछ ने पहचाना। वहां से बजरंग जी के घरमचंद जी के ओसवाल नवयुवक समिति, माहेश्वरी भवन होकर इंद्रचंद जी केजड़ीवाल के गया। फिर लालाजी के पास से रात १०। बजे घर आ गया।

१ मार्च : सुबह मैदान गया। फिर वहाँ से बजरंग जी के घर चाय पी। १० बजे तक होली खेलता रहा, बहुत सी जगहों पर। साथ में तुलसीराम जी और ईश्वरदास जी थे। ११। बजे भोजन करके थोड़ी देर सोया। फिर १२। बजे 'नदी के द्वीप' पढ़ता रहा। बाहर जाने की सोच रहा हूँ। आज होली का रंगभरा त्योहार है। परंतु पता नहीं मेरे मन के अंदर एक अभाव-सा लगता है, उदासी सी आ जाती है। नन्दू ने कहा कि दादी जी १०,०००) रुपयों की मांग कर रही हैं। शायद खर्च कर ही देंगी। परंतु इससे क्या, उन्हें हक है, उनका रुपया है।

३ मार्च : आज 'सोसाइटी डे' था। अच्छा रहा। काफी लोग आये थे। जुगल किशोर जी से बहुत बातें हुईं। उनके विचार और व्यवहार शुद्ध हैं। अनुभव भी बहुत हैं। दयावान हैं, इसीलिए भगवान की इन पर कृपा रहती है। मैंने सोसाइटी की सभा में भाषण दिया परंतु खास अच्छा नहीं बोल पाया। मन में कुछ झेंप सी आयी।

१२ मार्च : सुबह मैदान गया परंतु तबीयत सुस्त रही। सोसाइटी से ऑफिस। बाजार समान। ३०००० मन का काम २०॥) में किया। दिन में पाट के व्यापारियों की एक सभा हुई। मैं भी बोला, शायद अच्छा बोला। ऐसी सभाओं में बोलना कोई खास बात नहीं परंतु मैं पब्लिक में ठीक नहीं बोल पाता। शाम को द्विवेदी जी और रामवृक्ष जी बेनीपुरी आये थे। कुछ साहित्यिक चर्चा रही। दोनों ही अच्छे लेखक हैं।

१५ मार्च : १० बजे रॉक्सी में देवीलाल साँभर का राजस्थानी लोकनृत्य देखने गया। एक रकम अच्छा था, परंतु लोगों को पसंद नहीं आया। सिनेमा ने जो मिलाजुला ढंग चलाया है उसके आगे सब फीका हो रहा है। मेरी धारणा है, सांभर अच्छा काम कर रहे

हैं। लोक-साहित्य और लोक-नृत्य को भुलाना ठीक नहीं। ४। वजे से ५।। वजे तक बड़ा वाजार युवक-सभा में गया। अच्छा लगा। मुझे अपने पुराने दिन याद आ गये। अव तो मारवाड़ी युवकों में व्यायाम के लिये उत्साह कम दिखायी देता है। वहां से यशपाल जी के साथ एम० आर० ए० का खेल देखने गया। साधारण सा था, प्रोपगंडा ज्यादा मालूम दिया। मोरल रिआर्मीमेन्ट के इस तरीके से नैतिकता के लिये मन नहीं वदला जा सकता। राम, कृष्ण, वुद्ध, ईसा और गाँधी जी जैसे महापुरुष ही इसे कर सकते हैं।

१६ मार्च : रात में ८-९ आदमी जीमने आये। देवीलाल जी सांभर, रवीन्द्र भंडारी, वोहरा जी आदि। काफी वातें हुईं। मुझे उनके नाच में रुपया होना मुश्किल जँचता है।

१९ मार्च : आसाम जाने का विचार है, शायद ही जा सकूं। दिन में डनकन में ११५००० मन का काम किया। पुष्पा की सगाई की वात चल रही है।

२० मार्च : ९। वजे डा० लोहिया से मिला। रुपयों की समस्या तो है ही, अव लोग कांग्रेस की तरफ ज्यादा झुकते हैं। १० वजे से ११ वजे तक ऑफिस में था। वाजार समान, कामकाज नहीं। सारे दिन गद्दी नहीं गया। पाट का काम सैदपुर में फिर से शुरू किया है। चाय का वाजार भी इस वर्ष अच्छा है। ५२ की साल में रुपया नहीं आया, ५३ साल में जरूर आयेगा, ऐसा अनुमान है।

२१ मार्च : दिन में वांगड़ जी के गया। २५००) जेनरल फंड से मिला। सोसाइटी का काम ठीक चल रहा है। मेरे रुपये कुछ कम होते जा रहे हैं। शाम को हरदेव सहाय जी से मिला, पोद्दार जी से भी। तवीयत आजकल ठीक है।

२२ मार्च : सुवह मैदान गये। वहाँ से मदन गोपाल जी रूँगटा के यहाँ जाकर नाश्ता किया। जेनरल फंड में २०००) लाये। वहाँ से गोविंद जी कनोड़िया के गया। वहाँ से घर आया। फिर छात्रनिवास में गया। मैंने भी भाषण दिया। वड़ी मीटिंग थी। माहेश्वरी भवन भी गया। वहाँ से जमीन पर आया। भाई जी आये थे।

२३ मार्च : दिन में वाजार काफी मंदा। कामकाज १७।।)। आसाम १८।।-)। से १९।।-)। नया का हुआ। ४०० शेयर डफ के लिये, भाव २५।-) है। पाट में हम लोगों के प्राय: ५००००) का घाटा है और भी लोगों के वहुत हैं। ३ वजे मीटिंग हुई। शाम को वजरंग जी के साथ वद्री वर्मन के गया, जमीन के लिये। विलायत जाने का विचार है पर सव भाई जी पर डिपेंड करता है।

२४ मार्च : भाई जी को देश के अकाउंट की कुछ चिंता हो रही है। शाम को जमीन पर गया। काम एक रकम हो रहा है। दीपचंद के यहां जीमा, खिचड़ी वनाकर खायी। रात में हरचंदराय जी, सांभर जी वगैरह आये।

२८ मार्च : सुवह महावीर जी वजाज की माँ ७९ वर्ष की अवस्था में चल वसीं। ९।। वजे ले गये। मैं भी गया। धूप वहुत थी। श्मशान में वहुत विचार आते हैं। संसार

में सार नहीं दिखता। परन्तु वहां से आते ही सब विचार हट जाते हैं। यह विचित्र बात है।

३० मार्च : सुबह ४॥ बजे नीमतल्ला स्मशान गया। रामसहाय जी का लड़का प्रह्लाद २१ वर्ष की आयु में हार्टफेल से तालाब में डूब गया। रात से ही मन में दुःख हो रहा है। उपाय क्या? मौत पर किसका जोर चलता है? गंगा जी से वापस आकर सोसाइटी की मीटिंग में गया। वहां से ऑफिस आकर मोर जी के गया। शाम को डा० बी० सी० राय से टाइम था परंतु मुलाकात नहीं हो सकी।

३१ मार्च : दिन में २००० शेयर २४॥–)॥ ले लिये। अंदाज १९००) मिला। पाट का बाजार बहुत मंदा, भाव १८) आसाम; बोरा-हेसियन सब बाजार मंदा। एली साहब के घर गया था। रात में थोड़ी देर 'आजाद कथा' पढ़ता रहा। सोसाइटी का काम ठीक चलता है।

२ अप्रैल : वाइफ के बुखार है, गीगा की तबीयत भी खराब है। वैद्य जी की दवा दी। शाम को डा० बी० सी० राय से मिलने गया था, पाटवालों के डेपुटेशन के साथ। सिन्क्लयर मर्रे से बिल ले आया।

३ अप्रैल : ९॥ बजे जूट बेलर्स असोसियेशन की मीटिंग में गया। थोड़ी गरम बहस हो गयी। मेरी गलती थी। मुझे अपने को रोकना चाहिए। क्यों स्वभाव में उत्तेजना रखूं?

७ अप्रैल : शाम को गद्दी में इकट्ठे हुए। अकाउंट की बातचीत की। फाइनेंस के बारे में भी बात हुई। भाई जी, एस० एन० मदन, हम सभी थे। पाट का बाजार अत्यन्त खराब है, लोग सब घाटे में आ गये हैं।

गौहाटी, नवगाँव

११ अप्रैल : सुबह सोसाइटी गया, सब-कमिटी की मीटिंग थी। हवाई जहाज से तीन बजे गौहाटी। वहाँ से ४। बजे टाउन में पूगे। शाम को एन० के० के यहाँ जीमा। अच्छा मकान बनाया है। ८ बजे नवगाँव कार से चले। १० बजे पूगे। आसाम में बारिश, ठंड भी है, फिर भी मौसम अच्छा है।

१२ अप्रैल : रात अच्छी नींद आयी। सुबह उठकर तीन-चार मील घूमा। डांगा की गद्दी में गया। बहुत लोगों से मिला। समाज में उत्साह है, लोग काम करना चाहते हैं। मेरा अनुमान है, इस जमाने में रूढ़िवाले विचार के नहीं रहे, लोग यह समझते हैं। फिर भी बड़े-बूढ़ों के आगे साहस नहीं करते। कई जगह जाना पड़ा। चाय ज्यादा पी ली। ९ बजे लालचंद जी के यहां स्नान किया था, ठंड तो काफी पड़ती है रात सर्दी भी मालूम पड़ी थी। आसाम में पाट कमती है, बाजार तेज रहेगा। दिन में यहां के नेता आये, अच्छी तरह से बातचीत हुई। ४ बजे मीटिंग हुई, मैं अच्छा बोल सका, मुझे निज में

भी सतोष है। डेढ़ घंटे बोलता रहा। और लोग भी बोले। रात में जीमकर फिर मीटिंग में गया, ५००) मैंने भी लिखे। एक डेपुटेशन की योजना बन रही है।

नवगाँव, सिलघाट, तेजपुर

१३ अप्रैल : सुबह कई लोगों से मिला। सरदार शहर के भी थे। मेरी तरह अपने गाँव के लिये इनके मन में प्रेम है, अच्छा लगा। गाँव से सम्बन्ध बना रखा है। ७ वजे कार में बैठा, ८॥ वजे सिलघाट। ब्रह्मपुत्र का दृश्य बहुत अच्छा लगा, काफी सुन्दर स्थान है। ९। वजे फेरी बोट में बैठा। अन्दाज दो घंटे लगे। तेजपुर में जहाज घाट पर कई आदमी आये थे। ४॥ बजे टाउन हाल में मीटिंग हुई। यात्रा अच्छी रही। परंतु इस बीच एका-एक पेशाब के रास्ते बहुत खून आया। घबराहट सी हुई। अपने को किसी तरह संभाल लिया। मीटिंग में काफी आदमी थे परन्तु नवगांव जितने नहीं। काफी सक्सेसफुल रही। मैं ही ज्यादा बोला। मीटिंग से ६ बजे तेजपुर शहर देखने निकला। लोगों से परिचय होता गया।

तेजपुर, नवगाँव, शिलांग

१४ अप्रैल : सुबह ५ वजे उठ कर घूमने निकला। मामूली सर्दी थी। ७ बजे मट्ठा पीकर जहाज घाट पर आया। चाय ज्यादा नहीं पिऊँगा। पेट को गरम करती है। परंतु जहाँ कहीं भी जाता हूँ, चाय मिलती है। जहाज से ९। बजे सिलघाट आया। मोटर से तुरंत रवाना हो गया। १०॥ पर नवगाँव पहुँचा। जीमकर १०॥ बजे चले। ३ वजे शिलांग पूगे। कई आदमियों से मिले। पीछे पीक होटेल में ठहरे। साथ में लालचंद, जी तोदी थे। शाम को ७ बजे मेंहदी से मिले, प्रायः एक घंटे बातचीत हुई। उन्होंने खास आशा नहीं दिखायी। वापस होटल आकर गोयनका के जीमने गये। शाम को शिलांग गॉल्फ ग्राउन्ड देखने गये। अच्छी सुंदर जगह है। शिलांग में मामूली सरदी पड़ती है परंतु जगह अच्छी है। दृश्य सुहावने। मारवाड़ी काफी हैं। ६-७ वर्ष पहले आ चुका हूँ। खसिया के पहाड़ी तो ईसाई बनते जा रहे हैं। ये बाहर वालों को पसंद कम करते हैं। किंतु इनसे संपर्क बढ़ाने की चेष्टा रखनी होगी; नहीं तो आगे चलकर झमेला खड़ा हो सकता है। मैंने लोगों से कहा कि अपने सामाजिक प्रोग्रामों में इन लोगों को शामिल जरूर करना चाहिए।

१५ अप्रैल : सुबह ४॥ बजे उठ गया। प्रायः चार मील घूमा। वापस होटल में आकर स्नान कर अर्जुन दास जी सुरेका के यहाँ ९ बजे जीमने पर गया। वहाँ से ११ बजे कामाख्या लाल जी तथा रामेश्वर जी गोयनका के साथ चेरापूंजी एक बजे पूगे। चेरा फॉल देखा। आज बारिश नहीं थी। शिलांग वापस आकर ४ बजे चले, ६ बजे जोरहाट। वहां हिसारिया जी से मिले। ८॥ बजे नौगांव वाएस आ गये। कुछ खाया नहीं। यात्रा में कोई खास थकावट नहीं रही।

नवगाँव, जोरहाट, कलकत्ता

१६ अप्रैल : सुबह ४। बजे उठा। तैयार हो गया। बड़ी मोटर से जोरहाट के लिये चल पड़े। ९९ मील का सफर था। रास्ते में काजीरंगा जंगल आया। बड़ा जंगल है, लंबी ऊंची घासें, कहीं-कहीं कीचड़ भी। गैंडा देखने में नहीं आया। वहां से सहदेव जी की मिल में आया, स्नान किया। जोरहाट में पींचा जी से मिला। २ बजे प्लेन में बैठा। रास्ते में तेजपुर, अगरतला में प्लेन उतरा। आसाम की ट्रिप बहुत अच्छी रही। गया, तब वजन था, दो मन ग्यारह सेर और आया तब दो मन साढ़े बारह सेर देखा। तबीयत भी ठीक रही। बोलने का अभ्यास बढ़ा। नये-नये आदमियों से जान-पहचान हुई।

१७ अप्रैल : मैदान होता हुआ सुबह मा० रि० सो०। वहां से ऑफिस। साहब लोगों से मिला। कामकाज आसाम का २०) तक हुआ। आज बाजार बी० ट्विल मंदा पर पाट मंदा नहीं। पाकिस्तान का पाट सुनते हैं, मंदा ऑफर होता है। यहाँ के पाट में मंदी की कोई बात नहीं। दिन में भागीरथ जी के साथ बांगड़ जी के गया। शाम को गद्दी आया। बापू जी, भाई जी, एस० एन०, मदन से जनरल बातचीत हुई। स्कूल गया, बिल्डिंग बन रही है। इकमिक कुकर में रसोई बनाकर खायी। नन्दू दार्जिलिंग जाने को कहता है। बीकानेर में अकाल पड़ गया है। राजस्थान वैसे ही सूखा प्रांत है, अकाल से तो बहुत नुकसान होगा, खेती, गाय, बैल का खास तौर पर।

२१ अप्रैल : रात में १२॥ बजे तक बैठकर 'विश्वमित्र' के लिये पाट का लेख लिखा। दिन में कामकाज हुआ। पाकिस्तान का पाट २१) बड़ी क्वांटिटी में। इससे बाजार मंदा होगा, बोरा भी मंदा होगा।

२२ अप्रैल : सुबह मैदान गया, वहाँ से सोसाइटी की कमिटी की मीटिंग में गया। काम पूरा नहीं कर सकता हूँ। कैसा सा लगता है। मुझमें कमी है। कुछ तबीयत भी नहीं लग पाती। गरमी बहुत है। गाड़ी गंगाबाबू के पास है। दिन में के० पी० गोयनका के गया। १०८ मशीनें सिलाई की उनसे मांगी हैं। रात में थियेटर गया, गंगा बाबू के साथ था। फिर सी० एल० बाजोरिया के गया, ५० मशीनें मिलीं। वहाँ से प्रभुदयाल जी के घर जीमने गया।

२३ अप्रैल : 'विश्वमित्र' में मेरा लेख निकला, खूब बड़े हेडिंग में। शाम को ६ बजे 'गीत-गोविंद' देखने गया। साधारणतया अच्छा था। तबीयत सुस्त है। रात में १२ बजे तक बेलिया के ताश खेलता रहा। जुकाम हो रहा है। सोसाइटी के चन्दे का सब बोझ मेरे पर पड़ा हुआ है, दूसरे कोई भी चेष्टा नहीं करते। अकाल का बहुत बड़ा काम है, मेरा मन उचटता है, शायद जून तक छोड़ दूंगा। दिन में किताब नहीं पढ़ सका।

२४ अप्रैल : ५००) छात्र संघ, ५०)-५०) दो लोगों को, २५) अखबारों का, २०) टिकटों का दिया; इस तरह इतना खर्च कर दिया। मन में सोचता हूँ, खर्च बेशी करता

हूँ। परंतु हो ही जाता है, ना नहीं कर सकता। गंगाबाबू के साथ थोड़ी देर गीतगोविंद पर चर्चा हुई। बहुत विद्वान हैं।

२५ अप्रैल : बाजार काफी तेज है। हेसियन ३९।), बोरा ८७॥) है। दौलतराम जी भाई जी ट्राम से गिर पड़े। मन में कुछ चिंता हुई। ६ बजे 'एक दो तीन' सिनेमा में गया, खास अच्छा तो नहीं था परंतु मन बहल गया। ८॥ बजे वापस घर आया, गंगाबाबू बैठे थे उनसे एक घंटा बातचीत की। इन दिनों रात में एक उदासी सी आ जाती है। पता नहीं कैसा अभाव सा महसूस करता हूँ। ऐसा लगता है, कुछ कर नहीं पा रहा हूँ। अकाल पीड़ितों की बातें मन में आने लगती हैं।

२६ अप्रैल : दिन में ६ लाख हेसियन ४०) में लिया।

२७ अप्रैल : कृपालानी जी को जिमाने का लेकर के मकान में अरेंज किया। प्रायः ४० आदमी थे। भागीरथ जी आदि भी थे। काफी अच्छी सी पार्टी रही। नये आदमियों में किसन जी, मदनलाल जी और नथमल जी भुवालका थे। कृपालानी जी की बातें काफी इंटररेस्टिंग लगी। बातों में चुटकी लेते हैं, अनुभवी तो हैं ही। देश के आजाद होने पर गांधी जी के इन साथियों का ठीक उपयोग नहीं हो रहा है।

२८ अप्रैल : तीसी के बाड़े में भागीरथ जी के साथ गया। काफी बातें हुईं। मैं भी शायद अच्छा ही बोला। ४५००) उसी समय हो गये और १५००) अंदाज हो जाने की आशा है। दिन में बाजार नरम था। मिलों में कामकाज था। हेसियन-बोरा भी गरम था। बोरा ३०० गाँठें फिरती बेच दिया।

२९ अप्रैल : बाजार काफी गरम था। मिलों में दो-तीन लाख मन का काम हुआ। चंदे के लिए, कहीं जा न सका। बीकानेर का काम एक रकम चल रहा है। स्कूल जोर से बन रहा है। पाट हम लोगों के ५०००० मन पाकिस्तान में, २४००० मन इंडिया में पोते हैं।

३० अप्रैल : दिन में कहीं भी चंदे में नहीं जा सका। ऑफिस में कामकाज था। बाजार बहुत गरम था। १५००० मन पाट नोपानी जी का लिया। पाट बहुत सा पोते है। शाम को इन दिनों में तबीयत खराब-सी हो जाती है। कई पत्र लिखे। शाम को सिनेमा भी गया। आधी देर बाद लौट आया। सोसाइटी की पूरी-मिठाई की दूकान की मीटिंग में गया। १० बज गये। नन्दू का दार्जिलिंग का फोन आया। सब राजी-खुशी हैं।

१ मई : सुबह काकीनाड़ा मिल में गया। पाट देखा, ६००० मन सैदपुर का पाट बेचा, २५॥) में। बाजार १, मन मंदा, हेसियन भी मंदा। दिन में १३००), १४००) चंदा करके लाया। मन में एक रकम का उत्साह हो रहा है। शाम को ४॥ बजे हेसियन बाजार आया। वहां से ५॥ बजे पैदल घूमता-घूमता हिंदी पुस्तक एजेंसी में किताबें

लीं। पहले का रुपया दिया। ७ वजे लालाजी की मोटर में घर आया। 'झांसी की रानी' वृन्दावनलाल वर्मा का पढ़ता रहा। आज दिन ऐसा मालूम दिया, तबीयत खराब हो रही है। जीवनी-शक्ति घट सी रही है। मुझे हेल्थ का ख्याल रखना चाहिए।

२ मई : सुवह मैदान नहीं गया, केल्विन मिल में गया। यहाँ सी० एल० बाजोरिया भी थे। वहाँ से आकर ७ वजे सोसाइटी गया। दिन में बाजार मंदा। ६००० मन पाट सैदपुर का वेचा, डनकन को। शाम को हिंदुस्तान क्लव से वापसी पर जोर का पानी वरसा। घेंलिया के चला गया। १२ वजे रात तक ताश खेलता रहा। टाइम फालतू खराब किया।

३ मई : सोसाइटी में ९ वजे से मीटिंग थी, राजस्थान अकाल के वारे में। काम तो करना है परंतु रुपयों की व्यवस्था जरूरी है। राजस्थान में पानी की व्यवस्था और हरियाली वढ़ाने का भी काम होना चाहिए। इस पर वहां के लोगों में जानकारी देनी जरूरी है। मैंने कहा, राजस्थान सरकार से भी वात करनी चाहिए। १ वजे स्कूल की मीटिंग में गया। विल्डिग जोर से वन रही है। एक मकान अक्टूवर तक और दूसरा दिसंबर तक तैयार हो जायगा। भाई जी पूरी चेष्टा कर रहे हैं। शाम को ६ वजे नत्थू और लाला जी के साथ इटालियन वैले देखने गया। अच्छा था।

७ मई : डायरी लिखने में देर हो जाती है। यह ठीक नहीं। पीछे वातें याद नहीं रहतीं। वाजार समान में स्टेडी है। सुवह भागीरथ जी के घर गया। १५००) चंदा मैंने भी देने को कहा है। शाम को कपड़े के वाजार में गया, तीन-चार हजार चंदा मँडाया।

१० मई : सुवह लाला जी के घर कलेवा किया। कई दोस्त थे। ९। वजे रवींद्र संगीत सुनने को गये। ठीक-ठीक लगा। रवींद्र की कविता अच्छी है ही। परंतु इसको 'रवींद्र गीति' कहना ठीक रहेगा। मेरे विचार से यह एक रकम की आवृत्ति है। तुलसीदास जी की चौपाइयाँ भी एक खास ढंग से गायी जाती हैं, परंतु उनको 'तुलसी संगीत' नहीं कहा जाता। रात में थोड़ी देर किताब पढ़ी।

१७ जून : सुवह छात्र संघ के जलसे में गया। १५०) मैंने दिये। २॥ वजे मारवाड़ी वालिका विद्यालय के जलसे में गया। ४॥ वजे पी० डी० हिम्मतसिंह काजी के घर गया। अवला आश्रम की मीटिंग थी। वहां दो-तीन अच्छे-अच्छे सज्जनों से मुलाकात हुई। शाम को मि० केलविन के घर मिलने गया। वहीं गाड़ी आ गयी थी। वाइफ और वच्चों को लेकर मैदान गया। तवीयत एक रकम ठीक चलती है।

१८ मई : १॥ वजे आफिस गया, वाजार मंदा। न्यू क्रॉप का काम था, २५००० मन का हम लोगों ने भी किया। स्कॉट साहव से मनी कंट्रॉक्ट के वारे में वातचीत हुई। शाम को ऑफिस से केल्विन के घर गया। वहाँ से घर आकर तेल मालिश कराया, स्नान किया। सेंगर जी से १० वजे रात तक वातें करता रहा। भारत की राजनीति में तेजी

से परिवर्तन हो रहे हैं। प्लानिंग ठीक नहीं। गरीव ज्यादा गरीव हो गये, अमीर ज्यादा अमीर हो रहे हैं। नैतिकता गिर रही है।

१९ मई : सुवह ट्रेन पर ७।। वजे गया। जे० पी० आये। उस समय केवल मैं ही था। ८। वजे प्रभुदयाल जी के घर पूगे। ४ वजे फिर उनके साथ था। उनके साथ लोकसेवक ऑफिस में गया। पर्सनल खरचे के लिये ५००) उनको दिये, ले नहीं रहे थे। एक रकम जवर्दस्ती ही दे दिया। खर्च की तंगी रहती है, पर वे वोलते नहीं, रुपये लेने में संकोच करते हैं। परंतु वड़े-वड़े मिनिस्टर और अफसर इसके लिये वैठे रहते हैं। जे० पी० के वास्ते मैं कुछ भी नहीं करता, कितने त्यागी और महान हैं। रात में उनके साथ ९।। वजे तक स्टेशन में था। मुझ पर वहुत स्नेह रखते हैं। दिल्ली की सीट को लेकर काफी चर्चा चल रही है। १०००) कृपालानी जी के चुनाव के लिये दिये। मेरा मन भी राजनीति में आने के लिये होता है, यह गलती है। मुझे सावधान रहना चाहिए।

२१ मई : आज मीटिंग वुलायी थी। मातादीन जी और केदारनाथ जी ने अपना सव काम वताया। दिन में वाजार गरम था और भी गरम होगा। जयप्रकाश वावू की चिट्ठी आयी। वीकानेर जाने का मेरा विचार पक्का सा ही है। दिन में ऑफिस में काफी देर तक वैठा काम करता रहा। चंदे के लिए आज कई जगह गया और मँडाया।

२२ मई : वद्रीवावू के पिता के चलने का समाचार आया। इसलिये गंगा जी गया। सर पर वड़ों के रहने से एक रकम सहारा वना रहता है। आज मन कुछ उदास सा रहा।

दिल्ली

२४ मई : सुवह ४ वजे उठा। स्नान वगैरह कर लिया। दो-तीन मील घूमा। सुवह जमुना जी गया था। दिन में ११ वजे से १२ वजे तक चौधरी जी के साथ नयी दिल्ली में घूमता रहा। फिर वापस आकर सो गया। ५।। वजे लाला जगतु राम के साथ किंगकांग और दारा सिंह की कुश्ती देखने गया। अच्छा मनोरंजन रहा। रात को ९। वजे की गाड़ी से रवाना हो गया।

वीकानेर, रतनगढ़

२५ मई : सुवह रतनगढ़ पहुँचा। कई आदमियों से मिला। तवीयत ठीक है। रात में दुःस्वप्न आया था। परंतु मन अव ठीक है। ९।। वजे वीकानेर पूगा। १० वजे ऑफिस आया। रिलीफ का कामकाज ठीक सा चल रहा है, काफी ईमानदारी और होशियारी से। लालगढ़ गौशाला में गया। जानवरों की देख-रेख ठीक है। वहाँ से रामकिशनदास जी की दुकान पर गया। डागा जी के घर कलेवा करने गया। शाम को रामकिशन दास जी के घर जीमा। तवियत में कुछ चेंज सा मालूम देता है।

बीकानेर, नोखा

२६ मई : सुवह ६। वजे चले। रास्ते में काफी गरमी मालूम दी। सोसाइटी की जीप में था। रेत, वालू उड़ रही थी। मन में कई रकम के विचार आये। यहां का जीवन कितना कठिन है। हमारे पूर्वजों ने कितना कष्ट उठाया। इन टीवों पर कितनी लड़ाइयाँ हुईं। कहीं हरियाली नहीं। नंदलाल जी भुवालका का कुवाँ वगैरह देखा। काफी खरचा किया है। वहुत पुण्य का काम है। लोक कल्याण का हर काम पुण्य है। नोखा एक वजे पूगे। वहां से वापिस गंगानगर आकर खाना खाया। वाजार तेजी पर सुना। मीना पर जाकर पूज जी महाराज से मिले। बीकानेर ६॥ वजे वापस आ गया।

बीकानेर, कोलायत, गजनेर

२७ मई : सुवह ५॥। वजे दो मोटरों से हरदेव सहाय जी के साथ गया, रास्ते में अपने कैंप देखे। काम ठीक चल रहा था। फिर जैसलमेर के वार्डर पर मियाकर गया। वावली एकदम उजाड़ है। पानी तो है ही नहीं। मन में कैसा सा दुख भर गया। हम प्रवासी राजस्थानी धन कमाते हैं, वगीचों में मौज-शौक करते हैं और यहां हमारे पूर्वजों की जमीन में गरीवी, भुखमरी और पीने को पानी नहीं ! हमारी कमाई से क्या फायदा ? लोंगों से मिला, हिम्मत वहुत है। एक वावड़ी की खुदाई हो रही है, वह देखी। आती दफे कोलायत ठहरा। मीठा पानी पिया। फिर गजनेर आये। मन में विचार आता है, अकाल तो मिट जायेगा परंतु हरियाली यहाँ कैसे आयेगी ? खेती-वाड़ी नहीं होगी तो यह इलाका वढ़ेगा नहीं। कुछ पक्का वन्दोवस्त होना चाहिए। वापस ४ वजे तक वीकानेर आ गया। लोगों से राय वात की।

२८ मई : वीकानेर से ६ वजे मोटर से चले। रास्ते में कई गांवों में ठहरे। वहुत लोगों से मिला। एक जगह एक आदमी मिला। झूठे ही खेजड़ी का आटा दिखा रहा था। मन में कैसा सा विचार आया, दरिद्रता आलस लाती है मन को खराब करती है, इसमें आदमी को क्यों दोष दिया जाय ? समाज इनके लिये क्या करता है ? इस इलाके में शिक्षा भी नहीं है, दरवार जी की हजूरी और चुगलखोरी ने वहुतों का स्वभाव वरसों से विगाड़ दिया। ११ वजे कालू पूगे। वड़ी गरमी थी, गला सूख रहा था, चमड़ी जैसे फट रही हो काफी आदमी इकट्ठे हुए थे, सव के मन में वहुत आशा थी। मुझे संकोच हुआ, मैं कितना कर सकूँगा ? विचार भी आया कि कलकत्ते में चंदा मंडाने में कितना अड़ंगा आता है। पैसेवालों को यहां लाकर हालत दिखानी चाहिए। परंतु कौन आना चाहेगा, कामकाज छोड़कर ? लोगों से वात कर कैंप देखने गया। रिलीफ का काम एक रकम चल रहा है। ५ वजे अन्दाज कार में वैठकर सरदारशहर पूगे। रात में ताल में गया और जम्मड़ जी से मिलने गया।

सरदार शहर, रेमी, राजगढ़

२९ मई : सुबह ५ वजे उठा। नहा लिया। गाँधी विद्यामंदिर देखा। हरदेव सहायजी, रामनारायण जी और साथ में सोढानी जी भी थे। दिन में मेला सा लगा रहा। काफी लोग आते-जाते रहे। सरकारी अफसरों से लोग खुश नहीं, विधायकों से भी असंतुष्ट से हैं। मुझे राजनीति में आने को कुछ लोगों ने कहा। परंतु मैंने कोई वात नहीं कही। यहाँ मेरे २०००) खरच हो गये होंगे। कुछ लोगों से मिलने भी गया। पानी की व्यवस्था और हरियाली वढ़ाने की वात कही। वीकानेर के दौरे का अनुभव भी वताया। मेरे मन में एक रकम का उत्साह सा था। सारे दिन वाजार में भी गया। १० वजे रेडियो जी के घर जीमा, फिर स्टेशन गया। गाँव में गरीवी वहुत ही ज्यादा है। विचार होता है, कोई कॉटेज इंडस्ट्री का प्रोग्राम यहाँ चलाया जाय। रोजगार वढ़ेगा। कार से रतनगढ़ ९ वजे पूगे, १२॥ वजे राजगढ़।

जयपुर

३० मई : सुवह जयपुर ९॥ व पूगा। रास्ते में कुंमाराम जी साथ थे, उससे वातचीत की। दिन में उनके घर पर ही ठहरा। सुखाड़िया जी से, चन्दनमल जी वैद से मिला। अकाल के वारे में सारी वातें तय हो गयी हैं। व्यास जी से रात में ११ वजे तक वातचीत करता रहा। कुंभाराम जी के घर खाना खाया। सोसाइटी के दफ्तर में गया। हिसाब-किताव देखा, लोगों से वातचीत की। कलकत्ते फोन किया। भाई जी ने कहा कि शिशिर फैक्टरी आठ लाख रुपये में ले ली है। मन में एक रकम संतोष हुआ। ११ वजे स्टेशन आकर फर्स्ट क्लास में वैठ गया।

दिल्ली

३१ मई : सुवह ७॥ वजे दिल्ली पूगा। ८॥ वजे ट्रेन में वैठा, सेकेंड क्लास में। भीड़ थी पर खास तकलीफ नहीं हुई। सारे दिन वीकानेर के दौरे की वात मन में आती रही। एक रकम संतोष भी रहा कि अपनी पूरी कोशिश लगा दी। वहुत वड़ी समस्या है। सरकार, समाज और पब्लिक सभी को जुटना पड़ेगा। अखवार और कुछ कितावें भी पढ़ता रहा। खाना कुछ खास नहीं खाया।

कलकत्ता

१ जून : सुवह १० वजे हवड़ा पूगा। भाई जी आये थे। वाजार समान था। ऑफिस गया। भागीरथ जी से मिला। वीकानेर के अकाल के वारे में वातें हुई। पता नहीं, यहाँ मन क्यों उचट रहा है। शाम को ६ वजे सोसाइटी थी। वहाँ एक भूख हड़ताल करनेवाले को देखने गया। रात में १० वजे कन्हैयालाल मिडा घर पर आये, उनसे वातचीत करता रहा।

३ जून : वाजार समान है, कामकाज चालू है। वेजिटेवल फैक्टरी की लिखा-पढ़ी हो रही है।

४ जून : दिन में वाजार काफी गरम था। २५०० मन पाट अपना बेंचा ३१) में, नया सब काम एक लाख मन अंदाज का हुआ। शाम को गद्दी नहीं जा सका। पुरुषोत्तमजी के साथ पुरी रवाना हो गया। वहुत गलती सी हुई। मन जाने का हो गया था। पिता जी, स्मिथ साहब, सभी नाराज होंगे। पुरी जाने का और संग-साथ का मोह सा हो गया।

पुरी

५ जून : सुवह ८॥ वजे हम पुरी पूगे। वहाँ से पैदल ही कोठी पर गये। अच्छी कोठी है। दो तल्ला, ६००) किराये में। पुरी कोई १० वर्ष वाद आया हूँ। वहुत ही अच्छी जगह लगी। खा-पी कर १०॥ वजे समुद्र-स्नान को गये। एक डेढ़ घंटे नहाये, काफी आराम मालूम दिया। दिन में ताश खेलते रहे। साथ में पुरुषोत्तम जी, सीताराम श्री केड़िया, रघुनाथ जी, गोविन्द जी, सेंगर जी हैं। वजरंग जी की फैमिली पहले से ही है। मन लग गया परंतु कलकत्ते की तरफ कीं चिंता है। अगर कलकत्ते से वाहर रहा जाय तो डेफि-निटली स्वास्थ्य अच्छा रह सकता है।

६ जून : सुवह ४ वजे ही उठ गया। समुद्र की तरफ घूमने निकल गया। उगते सूरज का वहुत अच्छा दृश्य देखा। मन में एक रकम की भक्ति हो आयी, शांति मिली। वापस आकर ताश खेलने वैठ गया। चाय नाश्ता किया। फिर १० वजे समुद्र में नहाने गये। १२ वजे तक थे। जीम कर फिर ताश खेलने वैठ गये। शाम को वाजार और मन्दिर आये। मन्दिर में वहुत ही अश्लील मूर्तियां देखी। विचार आ जाते हैं। परंतु जरूर कोई परपज रहा होगा। तांत्रिक हो या और कुछ। परंतु आज के जमाने में साधारण आदमी इतना नहीं सोच सकता, उसके मन में बुरे विचार पहले आ सकते हैं। पंडे को एक रुपया दिया। ढाई मील पैदल चले। घर आकर चांडक जी से झड़प सी हो गयी। मेरी गलती है, मुझे वर्दाश्त करने की आदत डालनी चाहिए। पुरी की क्लाइमेट वहुत अच्छी है।

पुरी, भुवनेश्वर, कटक

७ जून : सुवह ६ वजे उठकर थोड़ी देर ताश वगैरह खेले। ७॥ वजे समुद्र में गये। ८॥ वजे तक स्नान किया। घर आकर ९ वजे स्टेशन पैदल ही पूगे। वहां से ११ वजे भुवनेश्वर पूगे। एक कुंड पर जाकर भोजन किया। रघुनाथ जी और चांडक जी में झड़प हो गयी। वहां से स्नान कर फिर मंदिर में गये। ४ वजे कटक को रवाना हुए। ६ वजे पूगे। के० वेवरचन्द की गोदामों में गये। ९ वजे रात में स्टेशन वापस आकर गाड़ी में वैठ गये। ताश खेली। चांडक जी के साथ झड़प वाली वात पर मन कुछ खिन्न सा रहा।

८ जून : पुरी जाना स्वास्थ्य के लिए तो ठीक था परंतु वैसे ठीक नहीं था। देश से आने के बाद इतनी जल्दी नहीं जाना चाहिए था। १० बजे कलकत्ते पूगा। मन में एक रकम स्मिथ साहब का डर सा है। १२ बजे ऑफिस गया। ८००० मन का काम किया। बाजार मंदा है।

१३ जून : २ बजे तक ऑफिस में था, फिर गाड़ी लेकर स्मिथ साहब के लिये एयरपोर्ट गया। एक घंटे तक था। वहां से ७॥ बजे सोसाइटी आया। सुबह रामसहाय जी के गया, बहुत दिनों बाद। बसंती की सगाई की बातचीत की। एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, की पूरी सेट ११४५) में खरीदी। बहुत इन्फॉरमेटिव है।

१६ जून : तबीयत भारी सी मालूम देती है। १० बजे तक सोसाइटी की मीटिंग में था, फिर ऑफिस। शाम को ऑफिस से हरचंदराय जी के साथ घर आया। चंडी बाबू, सांवल बाबू आये, बसंती को देखने।

२० जून : दिन में ऑफिस थोड़ी देर के लिए गया था। मैदान भी गया था। शाम को कई विवाह वालों के गया, अजीत सिंह जी, बागड़ोदिया, भालोटिया आदि थे। फिर घेलिया के घर १२ बजे तक ताश खेला। २२) हारा। ताश खेलने के बाद मन में एक रकम उदासी सी आती है।

२२ जून : 'विश्वमित्र' में मेरा लेख निकला, लोगों ने पसन्द किया है। दिन में गद्दी आया। शेयर्स की बात की। ज्वाला प्रसाद जी के शेयर्स की स्क्रिप्स् गुम गयी, बड़ी हैरानी हुई। बीकानेर की चिट्ठी आयी। वहाँ रुपयों की तकलीफ सी हो रही है। स्कूल का काम जोर से हो रहा है। जी० पी० खेतान के गया, वहां आसाम के एक कारबार के बारे में बातचीत की।

२५ जून : सुबह गोगनमल जी के साथ मूलचंद जी सेठिया के घर जाकर उनका सेटलमेंट किया। ९ बजे से १०॥ बजे तक सोसाइटी में था। सारे दिन ऑफिस में था, कामकाज कमती था। १०००० मन का जार्डिन में काम किया। शाम को बारिश बहुत जोर से आयी। स्कूल गया। मकान का काम जोर से चालू है। दिसंबर तक देखें, मकान बन जायेंगे। ओंकार जी बोहरा आये थे, ९॥ बजे तक थे। किताब पढ़ नहीं पाता हूँ न कुछ लिख पाता हूँ। कामकाज भाग-दौड़ में समय निकल जाता है। झूठ-सच से मन खराब हो जाता है। ऑफिस में रिलेशंस अच्छे हैं। केटलवेल बुलेन बिक रहा है, प्रायः एक करोड़ में।

४ जुलाई : दिन में किशन लाल जी के यहाँ जीमने जयप्रकाश बाबू व कुंभाराम जी आये थे। मैं भी गया था। प्रायः ५० आदमी थे। पुष्पा की सगाई की बात शिवराम जी से की। सुबह दीनानाथ जी के यहाँ जयप्रकाश बाबू से मिला था। पार्टी के बारे में बातें हुईं।

५ जुलाई : दिन में ४। वजे से ७। वजे तक कुंभाराम जी की मीटिंगों में था। इससे पहले गद्दी गया था। सुवह माजी के साथ वेजिटेवल फैक्टरी देखने गया। इन्हीं लोगों का पुण्य प्रताप है। फैक्टरी का काम जोरों से चल रहा है। मीटिंग के वाद कुंभाराम जी वगैरह के साथ घर आया। खाना खाया। केदार वावू, सेंगर जी भी आये थे। काफी वातचीत हुई।

६ जुलाई : सोसाइटी का काम ठीक सा चलता है। दिन में वाजार गरम था। मन में कुछ अशांति सी रहती है। इसका प्रभाव स्वास्थ्य पर जरूर पड़ेगा। शायद, इसीलिये चक्कर आते हैं, कमजोरी महसूस करता हूँ। मन भी उड़ा सा रहता है। सुवह ८ वजे अन्दाज कुंभाराम जी के यहाँ और एस० पी० जैन के यहां गया। दिन में कुंभाराम जी वगैरह के साथ वोटानिकल गार्डेन और एयर पोर्ट आदि गया। कुंभाराम जी से काफी परिचय वढ़ा है।

७ जुलाई : सुवह मैदान नहीं गया। एंग्लो इंडिया मिल में गया। वापिस आकर गंगावावू के गया, डा० लोहिया के गया। वहाँ से रिलीफ सोसाइटी गया। ऑफिस नहीं जा सका। एक वजे ऑफिस गया। वाजार मजवूत था। कामकाज दिन में हुआ। हमने १६००० मन का किया। फिर ४ वजे लोगों की शादियों में गया। ६। वजे गये। वहुत थकान आ गयी। स्कूल में जाकर वैठ गया। तवीयत कुछ सम्हली, घर वापस आया।

८ जुलाई : सुवह मैदान से वापिस आर० मोर के गया। ७॥ वजे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की मीटिंग में। कुंभाराम जी वगैरह आये थे। प्रायः ४० आदमी थे। मैं भी वोला। १० वजे वर्ड वड कंपनी में स्कॉट साहव से मिला। केटलवेल वुलेन के वारे में वात की। वहां से वड़ी ऑफिस गया। १२ वजे ऑफिस गया। वाजार कुछ मंदा था, कामकाज नहीं था। शाम को ६॥ वजे तक गद्दी में केटलवेल वुलेन के वारे में वातें करता रहा। ७ वजे गंगावावू के साथ एस० एल० पचीसिया के यहां जीमने गया। ऑनद होल आज का दिन वुरा नहीं गया।

१४ जुलाई : वद्रीवावू फाविसगंज गये हैं। कोइराला ने वुलाया है। नेपाल की राजनीति में गड़वड़ी तो है ही। पाट का वाजार मंदा सा है। मन नहीं लग रहा है परन्तु कलकत्ते के वाहर भी नहीं जा सकता। जयप्रकाश वावू से मिला। शाम को कांग्रेस ऑफिस में गया। वहां रिलीफ कमिटी की वड़ी मीटिंग थी।

१५ जुलाई : कलकत्ते में हड़ताल है। कुछ थोड़ी ट्रामें चल रही हैं। सुवह लेक रोड गया। भागीरथ जी, सीताराम जी से मिला। वहां से आकर सोसाइटी गया। ऑफिस में वंद थीं। हड़ताल एक रकम (से सफल) रही। गोली चली, १-२ आदमी मरे भी।

१६ जुलाई : केटलवेल की वात वाजार में काफी जोर चल रही है। आर० मोर से वात की। वे लोग राजी हैं परंतु होती दूसरों के मालूम देती है। सुवह डनकन,

अदर्स की मिलों में गया। १ बजे पार्क स्ट्रीट गया। दो इंटरव्यू लिये। दोनों ही नाकाम।

१७ जुलाई : सुबह मैदान गया। ट्राम बंद। दिन में पार्क स्ट्रीट गया। दो इंटरव्यू लिये एक बहुत ही अच्छा था परंतु फिर बुलाया है। ५ बजे जयप्रकाश बाबू के गया, फिर उनके साथ मीटिंग में।

१८ जुलाई : केटलवेल का नया ऑफर दिया, मन में उत्साह एक रकम कमती है। परंतु स्कॉट के कहने से देना पड़ा। १ बजे पार्क स्ट्रीट गया, उधर तीन-चार इंटरव्यू लिये। ५॥ बजे जयप्रकाश बाबू की मीटिंग में गया। न तो लेख लिख पा रहा हूँ और न कुछ पढ़ ही पाता हूं। चाहने और पछताने से क्या होता है? जीवन किस तरफ जा रहा है, मालूम नहीं।

२१ जुलाई : थोड़ी सी कसरत शुरू की है। व्यायाम से मन पर भी कंट्रोल रहेगा। ४। बजे दिन में जे० पी० के पास गया। ऑक्टोफोटो से फोटो के लिये। ६ बजे प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की मीटिंग में गया, सभापति मैं था। मन में विचार आते हैं, अच्छा आदर्श, अच्छे नेता हैं, पब्लिक भी धनतन्त्र से हैरान है परन्तु काम करने वाले अच्छे नहीं। कैसे पार्टी का काम आगे बढ़ेगा? जे० पी० कहते हैं, काम करते रहो, अच्छा काम बेकार नहीं जाता है। परंतु इससे गरीबों का कितना भला हो सकेगा? बहुत लंबी लड़ाई है।

२३ जुलाई : मन में विचार आते हैं जब रुपया नहीं था, इसकी चिंता थी, अब रुपया है तब भी इसकी चिंता है। इसे कैसे दूर किया जाय? अब तो बेचैनी पहले से बढ़ गयी है।

२४ जुलाई : बाजार समान में स्टेडी, कामकाज थोड़ा, हेसियन-बोरा गरम। ४००० शेयर बेचे, आयरन २३।।।=) में, भाव २३।।=) रहा। शाम को बालीगंज एक घंटे था, भाई जी वगैरह भी थे। विश्वा भ्रेशी बीमार है, दर्द है। शायद मेरा जाना न हो। फैक्टरी का काम एक रकम हो रहा है, परंतु कम ही है।

२५ जुलाई : रात में एमर्सन साहब को फोन किया, उनसे परमिशन ली। दिन में भाई जी से भी पूछ लिया। जा तो रहा हूँ पर मन में एक रकम दुश्चिता सी हो रही है।

दिल्ली

२७ जुलाई : दिन में मातादीन जी के साथ सारे दिन ऑफिसों में घूमता रहा। कुछ काम भी हुआ। शायद वेजिटेबल की परमिट मिल जायगी, ऐसी आशा है। दिन भर दिल्ली में दौड़-धूप थी। सेक्रेटेरियट में भी कई आदमियों से मिला। कुछ थकावट सी रही। परंतु काम हो जाने की आशा है।

जयपुर

२८ जुलाई : सुवह १० वजे जयपुर पूगे। स्टेशन पर रामरतन जी थे। कुंभाराम जी के यहाँ ठहरे। खाने के वाद थोड़ी देर आराम भी दिन में कर लिया। शाम को चाय पार्टी में व्यास जी के यहां काफी आदमी मिले। मिलखीराम जी भी मिले, मिनिस्टर ऑफ एजुकेशन हो गये हैं। जयपुर में काफी लोगों से मिलना-जुलना हो गया। दिन में कुंभाराम जी के यहां गया था, ऊन के वारे में वातचीत की। डायरेक्टर ऑफ वूल से मिला।

सरदार शहर

३० जुलाई : सुवह रतनगढ़ से सरदारशहर ९। वजे पूगा। लोगों से मिलता रहां। रेडियो जी के खाना खाने गया। यहां का काम प्रायः सलट गया है। शाम को विरधीचन्द जी करवा के साथ गौशाला में गया। वहाँ पर मीटिंग थी। गायों के लिये कुछ वंदोवस्त का कहा। शाम को सुमेर जी आँचलिया के यहां जीमा। सरदार शहर में इस वार वहुत कम खरच किया। लक्ष्मी नारायण जी महाराज नहीं थे। रात में रतनगढ़ धर्मशाला में सोया, मातादीन साथ थे। सुगनचंद जी आँचलिया भी किसी काम से आये थे। सरदारशहर में लाइब्रेरी में भी गया था, मुझे वहाँ एकरकम की शांति मिलती है। धनराज विहानी की काकी से भी मिला था।

वीकानेर

३१ जुलाई : सुवह ९। वजे वीकानेर पूगा। के० पी० मोदी रास्ते में मिले। मातादीन खेतान साथ थे। वद्रीदास जी सोढानी सीकर से नहीं आ सके थे। राम किशन जी से उनके वारे में वातचीत की। रावतमल जी कोचर के साथ फड़सीसर के कुंवे के लिये गये। वहाँ से वापस आकर कोचर जी जो वीमार हैं, उनके घर गया। ६॥ वजे काशी वावू के साथ गंगाशहर, मीनासर और उदरासर गया। वीकानेर की यात्रा एकरकम ठीक रही। यहाँ का काम भी संतोषपूर्ण है।

वाफ, जैसलमेर

१ अगस्त : सुवह वीकानेर से चला। वाफ १२ वजे पूगा। कस्वा साधारण सा था, यहीं भोजन किया। फिर पोकरण चले। जैसलमेर ७ वजे पूगा। एक रकम थकावट सी आ गयी थी। भगवानदास जी के घर गया। उनके साधारण-सा छोटा घर है। शाम को एक वड़े तालाव के किनारे ठहरा। सुन्दर जगह थी, मन लग गया। रात में पानी वरसा, ठंढ हो गयी। स्नान किया। जी खुश हो गया। जैसलमेर पुराना सुन्दर शहर है। राजस्थान के दूसरे शहरों की तरह नये जमाने का प्रभाव यहाँ इतना अधिक नहीं दिखायी पड़ता। शायद इसलिये यहां वाले मेहनती, ईमानदार और स्वस्थ भी हैं।

वैसे, वीरान जगह है। राजपूताने की रियासतों में क्षेत्रफल में इसका नंवर तीसरा था, किंतु आवादी सवसे कम। शहर के वीच तीन मील लम्वा और एक मील चौड़ा वड़सीसर तालाव है। इसे महारावल घड़सी ने वनवाया था। १५वीं शताव्दी के प्रारंभ में वनी यह वड़ी झील आज भी वड़े काम की है। महारावल की सूझ-वूझ वताती है। जैसलमेर की ज्यादा आवादी किले में ही रहती आयी है। किला भी वहुत वड़ा है। शहर के चारों ओर तीन मील घेरे का ५ से ७ फुट चौड़ा और १० से १५ फुट ऊंचा पक्का परकोटा है। इसमें प्रवेश के लिये ४ दरवाजे हैं परन्तु मुख्य द्वार दो हैं, पूर्व में घड़सीसर परोल और पश्चिम में अमर सागर परोल। इसी के वीच में आधा मील के पहाड़ी क्षेत्र पर एक और किला है जो २५० फीट की ऊंचाई पर वना है। वहुत रात तक शहर घूम कर देखता रहा। वहुत अच्छा लग रहा था। दूध मिल जाता है पर सब्जी, फल वगैरह नहीं।

जैसलमेर

२ अगस्त : ६ वजे सुवह तैयार हो गया। ७॥ वजे भगवान जी माहेश्वरी के साथ निकला। शहर के वाहर दो मील पर शायद जगह का नाम सम या सामा था, वाँध देखने गया। रास्ते से पानी वहुत था, गाड़ी आगे जा नहीं सकी। रेगिस्तान के इलाके में पानी की कीमत है, इसका पाना वरदान है। यदि यहां वड़े-वड़े तालाव, झील और वाँध वनाने का काम योजना के साथ चले तो वहुत हरियाली हो सकती है और फिर काम काज भी वढ़ेगा। यहाँ के लोगों को आगरा, मथुरा, अलीगढ़, मालवा वगैरह जाने की जरूरत नहीं रहेगी। वहुत मेहनती हैं और स्वस्थ भी। यहां से ७-८ मील और हटकर एक जगह गये, चारों ओर पानी था, पहाड़ी जगह है। पक्का वांध वनाकर इसी प्रकार पानी की वरवादी रोकी जा सकती है। परंतु वृक्ष-जंगल लगाये विना यहां पानी का ठहरना मुश्किल है। वहां से लौटकर राजा जी के वगीचे आये। काफी वड़ा और पुराना वाग है। इतने उजाड़ पुराने शहर में, रेगिस्तान में ऐसा वाग, आश्चर्य की वात है। परंतु देख-रेख और मेहनत से सव कुछ हो सकता है। वहाँ से राजकीय स्थान देखने गया। वड़े वाग की पहाड़ी पर राजाओं का श्मशान है। वहुत ही खूवसूरत छतरियां वनी हैं। फिर वाफना के मंदिर और तालाव देखे। काफी सुन्दर जगह है। वनाने से काफी खर्च लगा होगा। वहां से शहर के भीतरी किले को देखा। वहुत सुन्दर वना है। चारों ओर ११ वुर्ज हैं। किले में घुमावदार सड़कों से चार फाटकों को पार कर पूगा। यहाँ महल और मन्दिर देखे। भगवती का मंदिर कोई ४० वर्ष पहले वना। वाकी के पुराने हैं। प्रायः पीले पत्थर लगे हैं, सव जगह नक्काशी, तराशी, अच्छी और साफ है। करीव ४ वजे भगवान जी की जीप में वैठा और १ वजे वाफ आ गया। रास्ते में वारिश वहुत तेज होती रही। कई जगह तो रुकना पड़ गया। पोकरण में रुका था।

लूणकरणसर, सूरतगढ़

५ अगस्त : ७ बजे सुबह गाड़ी से कालू गये। वहां स्नान किया। गरमी काफी थी। अकाल की वजह से ये सब जगह उजाड़ से हो गये हैं। राहत कार्य से सबों में प्रसन्नता है। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का काफी बड़ा काम हुआ है। सभी इस बात को कहते हैं। शायद, इसीलिए मुझे सम्मान भी मिल रहा है, हर जगह। मीटिंग थी, कार्यकर्त्ताओं से बात हुई, काफी जानकारी मिली। अभी तो एक रकम अस्थायी तौर पर अकाल का प्रोबलेम सलटाया जा रहा है परंतु परमानेंट व्यवस्था करनी ठीक रहेगी। खाना खाकर १॥ बजे जीप से लूणकरणसर के लिये आये। रास्ते में, पानी में गाड़ी रुक जाती थी। गाड़ी निकालते और आगे बढ़ते। खैर, किसी तरह सूरतगढ़ रात में पूगा। रास्ते में महाजन के ठहरा। नींबू का पानी पिया। सूरतगढ़ में बुखार चढ़ गया। पैरों में दर्द बहुत था, दवा ली।

हनुमानगढ़, भादरा

६ अगस्त : रात में बुखार था, पर सुबह तबीयत काफी ठीक थी। फिर भी कमजोरी सी महसूस होती रही। सूरतगढ़ से ७ बजे ट्रेन में बैठकर हनुमानगढ़ पूगा। कुछ विश्राम किया, नींबू पी, स्नान किया। १० बजे संगरिया। गरमी बहुत ही ज्यादा थी। धूल उड़ रही थी। कुंभाराम जी भी २ बजे आये और बहुत से लोग भी। सूरतगढ़, हनुमानगढ़ साधारण से कस्बे हैं। वैसे, खास देखने लायक कुछ भी नहीं है। हनुमानगढ़ को पहले भटनेर कहते थे। यहां का किला किसी समय प्रसिद्ध रहा है। बताते हैं, भाटी राजपूतों का राज्य था। रात १॥ बजे भादरा पूगा।

भादरा, डाबरी, बालसमन्द

७ अगस्त : रात में हम प्रभुदयाल जी के सोये थे। स्टेशन पर कार आयी थी। सुबह ६ बजे उठकर गोडा गया। लाला जी का मकान देखा। साधारण सा था। एक औषधालय चला रहे हैं। और लोगों से भी मिला। ८ बजे स्कूल वगैरह देखकर भादरा से चला। डाबरी १० बजे पूगा। भूख लगी थी, खाना अच्छा मिला, खूब खाया, विश्राम भी किया। २॥ बजे बलसमंद के चले। ४ बजे पूगा। गाड़ी खराब हो गयी, बहुत चेष्टा करने पर भी ठीक नहीं हुई। रात में लाला छबीलचंद जी के यहां खाना खाया। हम वहाँ सोये। अब तो बस से यात्रा करनी होगी।

बालसमन्द, हिसार, अलवर, जयपुर

८ अगस्त : सुबह ६॥ बजे हम बालसमंद से बस से चले। रात में नींद एक रकम आ गयी थी। हिसार ८ बजे पूगे। रास्ते में विचार आते रहे, राजस्थान में अच्छे राजाओं ने जो कुंवे, झील, तालाब बनवाये उनसे बहुत बचाव रहा, नहीं तो सारा इलाका बंजर

रेगिस्तान हो जाता। बीकानेर के लालगढ़ के किले में ३६० फुट गहरे चार कुओं से कितनी सुविधा हो गयी है। इसी तरह से जैसलमेर और दूसरी जगहों में झीलों से बहुत राहत मिलती रही है। महाराज गंगासिंह जी की सूझ-बूझ से १९२७ में नहर बीकानेर में आयी। आज तो विज्ञान के बहुत साधन हैं। सरकार यदि उत्साह से काम करे तो बीकानेर क्या सारा राजस्थान हरा-भरा हो सकता है। मुझे लगता है, इजरायल के विशेषज्ञों की सलाह इस मामले में ली जा सकती है। हिसार में कुंभाराम जी की कार मिली। ९ बजे रोहतक, मुँड़गाँव होते हुए ३॥ बजे अलवर पूगे। कुछ देर आराम किया। फिर जयपुर ८ बजे पूगे।

नयी दिल्ली

१० अगस्त : ७ बजे सुबह दिल्ली पूगे। काशी बाबू की गाड़ी में पुरुषोत्तम जी के यहां गये, ठीक जगह थी। भोजन सोन्थलिया जी के खाया। १२ बजे से वेजिटेबल फैक्टरी के काम से निकला। राजकुमारी अमृतकौर से सैनेटोरियम के बारे में मिला, बातचीत की। सारा दिन इसी तरह मिलने-जुलने में निकल गया। शाम को प्रेसिडेंट के वहां राष्ट्रपति भवन गये। काफी झमेले के बाद मिलना हुआ। आधे घंटे तक बातचीत हुई। शाम को राजघाट गांधी जी की समाधि पर गया था। इन पंद्रह दिनों के दौरे में मन खूब लगा। शरीर तो कमजोर हुआ है पर अनुभव काफी हुआ।

कलकत्ता

१३ अगस्त : ऑफिस जाता हूँ परंतु काम तो कमती है। केस के बारे में सी० के० दत्त से उसके ऑफिस में बातचीत हुई। सोसाइटी भी जाता हूँ। चुनाव फर्स्ट वीक सेप्टेम्बर में होगा।

१४ अगस्त : रात में ईश्वरदास जी जालान से मारवाड़ी सम्मेलन के चुनाव के बारे में बात हुई। मुझे प्रधानमंत्री बनाना चाहते हैं। प्रतिष्ठा की बात जरूर है परंतु काम कम ही होता है। अब तो सम्मेलन रुटिन वर्क हो गया, मेला सा एक-दो बार साल में लग जाता है। कुछ बड़े-बड़े लोग ही एक जगह आ जाते हैं। यह ठीक नहीं। समाज की नयी पीढ़ी इन्टरेस्ट नहीं लेती।

१५ अगस्त : बजरंग जी के साथ मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के चुनाव के बारे में बातें हुईं। वे मेरे लिये जोर देते हैं। इधर सम्मेलन के लिये जालान जी जोर देते हैं। मेरा स्वास्थ्य गड़बड़ चलता है। समझ में नहीं आता।

१९ अगस्त : १००० मन पाट पोते किया है। कामकाज ऑफिस में कमती है। सोसाइटी के चुनाव के बारे में सीताराम जी से शाम को बातचीत की। नाम सोच रहा हूँ।

२० अगस्त : भागीरथ जी के साथ चुनाव-संबंधी बातचीत हुई। सोसाइटी की मीटिंग ८॥ बजे तक थी। धरमचन्द जी से बात हुई। मन में एक रकम की फिकर सी होती

है। सारे दिन ऑफिस में था। ५००० मन फाटका लिया २७॥–)॥। में, भाव भी यही रहा। पहले का ३००० मन पोते है। मुझे करना तो नहीं चाहिए परंतु आदत से लाचार-सा हूँ। बाजार सारे दिन मन्दा रहा। शेयर भी २२=) आना रहा।

२२ अगस्त : दिन में ३। बजे एलेक्शन मीटिंग हुई, प्राय: एक घंटे-सवा घंटे तक चलती रही। काफी वात-विचार के बाद मीटिंग कल दो बजे पर स्थगित रही। २९ आदमी गये थे। रामनाथ शर्मा कलकत्ते में नहीं थे, बसंतलाल जी भी नहीं आये थे।

२३ अगस्त : दिन में दो बजे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के हॉल में मीटिंग हुई। प्राय: सब लोग थे। रामनाथ शर्मा भी थे। काफी वाद-विवाद के बाद १९ लोगों ने अपने नाम विथड्रा कर लिये। वातावरण क्षुब्ध-सा हो गया। चेष्टाएँ हुई, पर कुछ सफलता नहीं मिली। ४ बजे मीटिंग खत्म होने के बाद सिंघी जी के यहां जाकर ताश खेला। पाटोदिया जी और मंगतूराम जी भी आ गये थे।

२४ अगस्त : दिन में एलेक्शन के लिये प्रॉक्सी फार्म छपाने को दिया, रात में छपकर आ गयी। पाटोदिया जी मिल गये थे, उनसे बातचीत हुई। कल से काम शुरू होगा। शायद जीतेंगे हम लोग ही, ऐसा भरोसा है। फिर भी, मन मैं एक अशान्ति सी हो रही है, बेचैनी सी। रात में बुरी तरह के सपने आते हैं।

२५ अगस्त : सारे दिन प्रॉक्सी इकट्ठा करने का काम चालू था। हम लोगों को आज प्राय: २२५ प्रॉक्सी मिली है। जीत निश्चित है। अखबारों में भी चर्चा हो रही है। देखें क्या होता है। दिन में बद्री प्रसाद जी पोद्दार का फोन आया। उनसे मिला। फिर भागीरथ जी कानोड़िया के पास गये।

२६ अगस्त : सोसाइटी की मीटिंग सुबह थी। एक रकम रास्ता हो गया है। भागीरथ जी पर छोड़ दिया है। जैसा वे ठीक समझें, कर देंगे। वोट तो हमारे पक्के ही बेशी हैं। परंतु मन में कैसा ही मालूम देता है। आदमी उनके रखने होंगे।

२८ अगस्त : पाट का बाजार साधारण मंदा सा है। थकावट महसूस होती है इसलिए जसीडीह जाने की सोची। भाई जी से पूछा। रात में १० बजे की गाड़ी से रवाना हो गया।

४ सितम्बर : सुबह से जे० पी० आये मद्रास मेल से। घर पर ठहरे हैं। दिन में उनके पास ही रहा। बाजार थोड़ा मजबूत सा था, कामकाज भी था। रात में १० बजे जे० पी० वापस चले गये। दिन में समाजवाद और राजनीति पर उनसे थोड़ी बातचीत हुई। मुझे लगता है, समाजवाद का लक्ष्य सामाजिक व्यवस्था में समानता का होना चाहिए, धन के मामले में समानता कैसे संभव है ? धन तो साधन है। हर आदमी अपनी बुद्धि और श्रम के कारण छोटे से बड़ा और बड़े से छोटा बन जाता है। परंतु इसको मैं जे० पी० से ठीक तरह से कह नहीं सका।

५ सितम्बर : कामकाज के बारे में दिन में भाई जी से बातचीत होती रही। मन में थोड़ा उत्साह है। वृन्दावन में मेरी चेष्टा से रामनाथ जी बाजोरिया ने एक लाख रुपये देने को कहे, एस० एन० ने पचास हजार लगाने का निश्चय किया है। बोरा ९५) रु० और पाट २७॥) रहा।

६ सितम्बर : सुबह ५ बजे स्टेशन गया। ६॥। बजे जे० पी० आये। सारे दिन रहे। सुबह ८ बजे बालीगंज गया। भाईयों में आपस में काफी बातचीत हुई। आखिर एक रकम तय सा हो गया है। खैर, जो हुआ, अच्छा ही हुआ, परमात्मा को यही मंजूर था। बापू जी का रोल एक रकम ठीक सा था। परन्तु इन बातों से मेरा मन उदास सा होता है। दिन में थोड़ी देर घेलिया के ताश खेलता रहा। स्टेशन जे० पी० को घुमाने गया। रात में सोचता रहा, जिंदगी की सफर में एक पड़ाव पर चार-छह आदमी साथ ठहरते हैं। पैरों की थकावट मिटती है और अपनी-अपनी राह चले जाते हैं। न जगह से मोह होता है, नहीं साथियों का। फिर मुझमें इतना मोह क्यों?

७ सितम्बर : बाजार थोडा मजबूत सा है। यूल में २५००० मन का काम हुआ। २६॥) चुबड़ी, फाटका ५००० मन दिसम्बर का २५।= में लिया। सितंबर फाटका २७।) रहा। घाटा सब मिलकर अब ३०००) रह गया है। बापू जी राजी-खुशी हैं। भाई जी के साथ सरदार शहर गये, स्टेशन गया था। रात में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल के बारे में लेख लिखता रहा।

१३ सितम्बर : मातृका प्रसाद जी कोइराला पिछले तीन दिनों से यहीं हैं। काफी बातें होती हैं। पुराने दिनों की याद ताजी हो जाती है। इन लोगों ने अभी तक देश और समाज की सेवा में अपने को लगा रखा है, मैं एक रकम उधर बढ़ नहीं पाया। मेरी कमजोरी है। दिन में १२ बजे मातृका बाबू को पार्टी दी। प्रेसवाले आये थे। पाट का बाजार मंदा सा है।

१८ सितम्बर : सुबह मैदान गया। बाजार आज बहुत ही मंदा रहा। मैंने सितंबर का अक्टूबर से सट्टा कर लिया।) नीचे का। इधर घाटा बढ़कर बीस हजार रुपये का हो गया है। मन एकदम खराब है। मेरी आदत खराब है। क्यों करता हूँ? समझ में नहीं आता, बुद्धि क्यों भ्रष्ट हो जाती है? रात में दुस्वप्न आते रहते हैं।

१९ सितम्बर : 'निराला' जी से मिला। ३॥। बजे जैन भवन आया, बड़ी भीड़ थी। दिन में दलालों की मीटिंग में बोला। ठीक ही बोल सका।

१ अक्तूबर : सुबह मैदान से होता हुआ सीताराम जी भरतिया के गया। ६६००) पचास मशीनों के लिए लाया। ६ बजे तक ऑफिस में था। फाटका २३) है। मेरे प्रायः ५०,०००) का घाटा हो गया है। फाटका मुझे करना आता नहीं, नुकसान ही लगता है।

५ अक्तूबर : बाजार आज काफी तेज है। मैंने ११५०० मन पोते का २४) में बेच दिया १००० मत्थे रख दिया। भाव २४।) रहा। मन में एकदम सुस्ती सी आ गयी।

क्यों फाटका करूँ, इतने घाटे में बैठा रहा, और थोड़ा सा नफा होने पर बेच दिया ! सारे दिन मन में सन्ताप रहा। मिलों में काम था। ध्यान तेज था। उस पर भी पाट पोते न रख सका। इतनी बड़ी रुख बनायी परन्तु मुझे पैदा करना नहीं आता।

६ अक्तूबर : मनुष्य चिंता अपने आप बुलाता है। मुझे क्या दरकार है सौदा करने की ? परंतु मन को वश में नहीं रख सकता। इन दिनों में कुल ३००००) का नुक्सान हुआ। यह कोई खास बेशी नहीं है। परंतु मन में इतनी ग्लानि सी हुई कि दुख-संताप की कोई हद नहीं। आज भी एक सौदा १००० मन का कर लिया है, कैसी गंदी आदत है। घर में तो छोटा होता ही हूँ, मन में कमजोरी, शरीर में कमजोरी, रात में नींद भी ठीक से नहीं आती। बाजार साधारणतया गरम है। कामकाज कमती है। रात में कांता आया, कामकाज के लिये कह रहा था।

१३ अक्तूबर : दिन में ट्रिप पर जाने की सोचता रहा। फाटके से बच सकूँगा। फाटके का बाजार समान में स्टेडी है। दूगड़ जी ने ३००० मन मत्थे किया है, २५≡) में। मदन, सत्यनारायण दोनों बाहर गये हैं। रात में ट्रेन में बैठ गया।

मिर्जापुर

१४ अक्तूबर : सुबह ९ बजे स्टेशन पुगे। तहसीलदार साहब सामने आये थे। उनके घर गये। विंध्याचल देखने गये। जगह जँच रही है। कोठी अच्छी है। कल से किराये पर ले ली है। ९ आदमी कलकत्ते से आये हैं।

विंध्याचल

१५ अक्तूबर : सुबह सब कोई विंध्याचल पुग गये। वहा सब जँचाया। अच्छी जगह है, दो ही दिनों में तबीयत काफी ठीक हो गयी है। भूख बढ़ी है। कलकत्ता छोड़ने पर इतनी जल्दी परिवर्तन आता है कि आगे से बाहर ही रहने का मन करता है। साथ भी अच्छा है। शाम को लड़कियों की अंत्याक्षरी हुई। मन लग गया है।

१६ अक्तूबर : सुबह उठा, घूमने निकले। पहाड़ी जगह, गंगा का किनारा, तीर्थ स्थान, सभी अच्छा। मन में शांति है, शरीर में फुर्ती। ब्रिज खेली। शाम को सीताकुंड पर भी घूमने गये, जगह अच्छी लगी। साधारणतया चार-पाँच आदमी के रहने से मन लग जाता है, ज्यादा होने से भीड़ सी महसूस होती है। सीताराम जी का स्वभाव बहुत अच्छा है। किताब भी काफी देर पढ़ लेता हूँ। साह जी की कार से काफी सुविधा रही।

१७ अक्तूबर : आज दुर्गानवमी है। विंध्याचल देवी के दर्शन के लिये दूर-दूर से लोग आये हैं। स्त्री-पुरुष-बच्चे मंदिर में सभी समान, न कोई अमीर, न गरीब। अच्छा लगा। सुबह १० बजे मिर्जापुर होते हुए टाँडा फॉल गये। झरने में पानी ज्यादा नहीं था, पर दृश्य अच्छे थे। वहां १०६ वर्ष पहले का बना हुआ बँगला देखा। अकेला सा खड़ा था।

मिर्जापुर-बनारस

१८ अक्तूबर : सुबह विंध्याचल से मिर्जापुर चले आये। वहां तहसीलदार साहब के चाय वगैरह पी। ९ बजे की बस से बनारस रवाना होकर ११ बजे पहुँचे। तेल मालिश कराकर गंगा जी में स्नान किया। फिर रावतमल जी नोपानी से मिलने गया। ३।। बजे स्टेशन आ गया। ट्रेन में जगह मिल गयी शाम तक ताश खेलते रहे। इस ट्रिप में सीताराम जी सेकसरिया, रघुनाथ जी खेतान, सिंघी जी, सुशीला वाला जी तथा जैन जी थे। ट्रिप अच्छी रही। मेरे १५०) खर्च हुए।

कलकत्ता

२० अक्तूबर : स्मिथ साहब काफी बीमार-सा मालूम पड़ता है। दाँत विंध्याचल में भूल आया, कैसा ही लगता है। दिन में पाट ३००० मन कंट्राक्ट से लिये। फाटका ४५०० मन का वेचा। बाजार कुछ क्वायट सा है। स्कूल का काम पूरी तौर पर हो रहा है।

२१ अक्तूबर : ऑफिस गया। पाट २५०० मन फाटका वेचा २६।≡), बाजार शाम को मंदा रहा। पाट पर ध्यान मंदा नहीं है। शाम को गद्दी गया। तेल १२००० मन खरीदा है। फैक्टरी जल्दी चालू करेंगे। शाम को स्मिथ साहब के घर गया। लिखना-पढ़ना वन्द है।

२२ अक्तूबर : छुट्टी थी, ऑफिस नहीं गया। स्कूल के बारे में लोगों से बातें कीं। ४ बजे तक बालीगंज था। वहां बसंती की सगाई जिस लड़के से हो रही है, उसको बुलाया, देखा। शाम को ४ बजे मैदान गया, प्रेसिडेन्ट आये थे। मीटिंग थी। फिर जैन भवन में श्री प्रफुल्ल घोष की मीटिंग में गया। मैं सभापति था।

२८ अक्तूबर : सुबह मैदान से होता हुआ ८ बजे डा० सुरेश बनर्जी के घर गया। ८।। बजे श्रीमती सुचेता कृपलानी से मिला। १२ बजे बड़ी ऑफिस गया। स्मिथ साहब से बातचीत की। २ बजे छोटी ऑफिस गया। २००० मन फाटका ज्वालाप्रसाद जी का वेचा २७।) में, भाव २७।।) रहा। बाजार काफी तेज है। कामकाज जार्डिन में २,२०००० मन हुआ। हम लोगों ने २२५०० मन किया। मुझे फाटके की पूरी चिंता हो रही है। किये वगैर रहता नहीं। रुपयों की टान भी भुगत रहा हूँ।

२९ अक्तूबर : फाटके का बाजार आज बंद हो गया है। एक हिसाब से अच्छा हुआ। मन में एक रकम की दुश्चिंता मिट गयी। पहले का रुपया देना है सो बंदोबस्त कर लूंगा, किसी रकम से।

१ नवम्बर : गवर्नर फंड में ५०००) भिजवाये। मन में कुछ शांति सी मिली। ८ बजे शाम को लेक क्लब में जीमने गया। बहुत से साहित्यिक थे, हजारी प्रसाद जी गुलाब राय जी, आदि मिले। नवीन जी की कविता-पाठ सुनी। समय अच्छा बीता।

२ नवम्बर : चंदे के काम में निकला, कुछ मिला नहीं। रामेश्वर जी नोपानी के साथ लकड़ी के सामान देखने गया। स्कूल भी गया। ऑफिस गया। कामकाज खास है नहीं, बाजार कुछ मंदा सा है; बी० ट्विल ९९॥) । सत्यनारायण से कारबार के बारे में बातचीत हुई। पाट के सौदे के डिफरेंस प्रायः दे दिये गये हैं।

८ नवम्बर : ३ बजे दिन में फैक्टरी गया। प्रायः २०० आदमी आये थे। सारा काम ठीक से हो गया परन्तु लायसेंस नहीं मिला, उधर तेल का बाजार मंदा जा रहा है। लुकवा चाय बगीचे में ट्रबल है, भाई जी को फोन किया, कलकत्ते आने के लिये।

११ नवम्बर : सुबह मैदान गया। कल से प्राणायाम शुरू की है। वैद्य की दवाई भी ले रहा हूँ। शाम की हरारत तो कम हुई है। पाट का बाजार तेज है, हम लोगों के रुपयों की टान हो रही है। तेल में हम लोगों के ५००००) का घाटा है। भाई जी कुछ सुस्त से नजर आते हैं।

२५ नवम्बर : बाजार मंदा सा ही है। कसरत करता हूँ। स्वास्थ्य इन दिनों सुधरा है। शाम को समाज सुधार की मीटिंग में गया। स्कूल का काम जोरों से चल रहा है।
२६ नवम्बर : बिरजू से सुबह थोड़ी बात हो गयी। कुछ गलती मेरी भी थी। खैर, बाद में मैंने फोन कर लिया, बात बन गयी। तबीयत बहुत अच्छी है।

१ दिसम्बर : लुकवा चाय बगान से डिप्रेसिंग समाचार आ रहे हैं। दिन में काफी चिंता सी रही। उधर वेजिटेबल फैक्टरी में भी तकलीफ हो रही है। सोसाइटी के चंदे एक रकम से आ रहे हैं परंतु रुपयों की विशेष टान हो रही है। कल से नये रोगियों पर =) भर्ती के लगा दिये।

४ दिसम्बर : शाम को गंगाबाबू, सेंगर जी, बीकानेर के माथुर जी आदि जीमने आये। आज स्कूल के लिये नया हेडमास्टर रख लिया है। नन्दू ऑफिस जा रहा है। वेजिटेबल के अन्दाज १५०० टीनें बन गयी हैं। एडवर्टिजमेंट जरूरी है। आचार्य नरेंद्र देव जी आ रहे हैं। मेरे रुपयों की काफी टान सी है। व्यवस्था करनी चाहिए। तबीयत बहुत ठीक है। आसन नियमपूर्वक करता हूँ।

५ दिसम्बर : सुबह सोसाइटी में कंदोई जी आये। उन्हें पूरी तौर पर कनविंस करा दिया। शाम को ६ बजे से ८। बजे तक रसायनशाला की मीटिंग होती रही। काफी डिस्कशन हुए। शाम को स्कूल भी गया था। हेडमास्टर भले आदमी मालूम देते हैं।
६ दिसम्बर : सुबह मैदान गया फिर कन्दोई जी के। ४५००) सोसाइटी के लिये मिले। २ बजे एयर पोर्ट गया। आचार्य नरेंद्रदेव जी आये, रघुनाथ जी के घर ठहरे। उनको १००००) बाढ़ पीड़ित लड़कों के लिये चाहिए। वास्तव में महापुरुष हैं, श्रद्धा होती है।

१२ दिसम्बर : खुदाई खिदमतगार जिरगा के खान अकबर खान के लिये स्कूल में ३ बजे टी पार्टी की। प्रायः ३५ अदमी आये थे। १७००) इकट्ठे हुए। एक रकम ठीक ही हो गया।

१३ दिसम्बर : स्कूल गया। काम एक रकम जोर से चालू है। ८ वजे सेंट्रल जूट मिल्स में चाय पर गया। डागा जी आये थे। उनके साथ सारे दिन वसंती का पुष्पा का हरा-भरा देने के लिये चीजें खरीदते रहे। नेहरू जी आये हैं। उनकी मीटिंग में गया।

१४ दिसम्बर : सुबह सोसाइटी की मीटिंग में दो आने के प्रवेश कार्ड को लेकर हल्ला-गुल्ला रहा। बजट डेफिशिट है, खर्च का साधन तो बनाना पड़ेगा। हल्ला-गुल्ला करने वालों को विचार करना चाहिए।

१५ दिसम्बर : तबीयत ठीक रहती है। इस एक महीने में काफी चेंज हो गया है। मैदान जाता हूँ, कसरत करता हूँ। दिन में डा० बी० सी० राय से मिला। टी० बी० के लिये बातचीत हुई। पी० सी० सेन से भी भेंट हुई। शाम को ६ वजे 'लोक सेवक' में पार्टी की मीटिंग में गया। दाँतवाले डाक्टर के भी गया था।

२७ दिसम्बर : सुबह चंदे में गया। फिर दोपहर में भी गया। काम सुचारु रूप से चलता है। ईश्वरदास जी सम्मेलन का काम अगले वर्ष मुझे सम्हालने को कहते हैं। संस्थाओं के काम में बहुत अड़ंगा होता है। सोसाइटी का अनुभव बताता है, परंतु उपाय क्या? जालान जी को क्या कहूँ?

२८ दिसम्बर : सारा दिन चंदे के लिये फिरने में ही निकल जाता है। रात में गोयनका जी और के०डी० जालान के गये। साथ में ईश्वरदास,जी, गोवरधनदास जी और रघुनाथ जी थे। ५५०००) हो चुके हैं। चंदावाला काम एक रकम समाप्त सा हो गया।

३० दिसम्बर : सुबह सेठ गोविंद दास जी से मिलने गया। शाम को जयपुर महारानी की पार्टी में गया। रात में हिंदुस्तान क्लब में वेणीशंकर जी शर्मा के साथ गया। गड़बड़ कर दी, खाना बेशी खा लिया, पेट खराब हो गया। ऐसा मालूम देता है, फाटके के माफिक खाने पर भी कंट्रोल नहीं रख सका। दिन में मारवाड़ी सम्मेलन में गया था।

३१ दिसम्बर : आज मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन का दूसरा दिन था। मेरे बुखार चढ़ आया था, इसीलिए एक बार जा सका, केवल सुबह। स्कूल में भरती जारी है।

१९५४

कलकत्ता

१ जनवरी : सुबह साधारण सा बुखार था। दिन में थोड़ी देर के लिये मारवाड़ी सम्मेलन गया था। उसके वाद १२॥ बजे महिला सम्मेलन भी गया। महिलाओं में जागृति आयी है। कुछ वर्षों में अपने समाज की महिलाएँ वहुत प्रगति कर लेंगी। कुछ भाषण अच्छे हुए। शाम को स्कूल की तरफ गया था। प्रायः ढाई सौ अप्लिकेशन आये हैं। अभी पन्द्रह-बीस महीनों की, स्कूल बनने में देरी होती मालूम होती है। भाई जी काफी परिश्रम से काम कर रहे हैं। हम लोग नये मकान में दस-पन्द्रह दिनों में जा रहे हैं। परन्तु मेरा कुछ मन कमती सा होता है। पुरानी जगह के लिए एक मोह मनुष्य के मन में रहता है। पिछला वर्ष एक रकम ठीक ही गया। रुपया भी कुल मिलाकर छः सात तो वढ़ा ही होगा। स्कूल में पांच लाख लग जायगा। देश में भी एक लाख के लगभग लग जायगा। खरचा भी दो लाख होगा।

२ जनवरी : सुवह सम्मेलन की मैनेजिंग कमिटी की मीटिंग में गया, थोड़ा वोला भी। दिन में साधारण सभा में वोला। मेरी धारणा है, समाज आगे जरूर वढ़े परन्तु अपने संस्कार न भूले। नयी पीढ़ी को तैयार करने की जिम्मेदारी पर ध्यान देना जरूरी हैं।

३ जनवरी : तबीयत तो ठीक है परन्तु थोड़ी सुस्ती है। दो दिनों तक बुखार रहा। आज शायद कमती है या नहीं, देखा नहीं। दिन में ११ बजे सीताराम जी सेकसरिया के उधर स्कूल के फंक्शन में गया। दो बजे स्कूल की मीटिंग में आया। ३॥ बजे कवि सम्मेलन में गया, ८ बजे तक था। जोरदार कविताएं होती रहीं। आगे जाकर कुछ झगड़ा सा हो गया। गलती शायद सिंघी जी की थी। ऐसा मालूम देता था, कुछ मित्र चले गये।

४ जनवरी : सुवह मैदान गया। सर्दी वेशी थी। थोड़ी सी देर आसन किये। वाजार समान था, प्रायः एक लाख मन का काम हुआ। स्कूल में १० बजे तक था। काफी चहल-पहल है। शरीर भारी सा हो रहा है, पेशाब फिर से कमती आना शुरू हो गया है। वेजिटेवल फैक्टरी ठीक नहीं चल रही है। तकलीफ दे रही हैं।

५ जनवरी : सुवह मैदान नहीं जा सका। वारानगर जूट में गया। १० वजे रिलीफ सोसाइटी गया। ऑफिस में काम काज कमती है। वाजार साधारण तथा मंदा है। दिन में स्कूल आया। कुल तीन सौ लड़के भर्ती हो गये हैं। शायद ६०० तक हो जायेंगे। भीड़ काफी दिखती है।

८ मार्च : दिन में व्हाइट वे गया था। शाम को घर में विवाह की तैयारियां करते रहे। गंगावावू कलकत्ते में ही हैं।

१० मार्च : सुवह मैदान गया था परन्तु देरी हो गयी। दिन में थोड़ी देर के लिये वाजार भी गया था। शाम को ६।। वजे से आदमी आने शुरू हो गये। १६०० आदमी आये, काफी भीड़ रही। ३ वजे फेरे थे, मामूली घूंघट था। फेरे का काम हुआ तव दिन उग आया था। वसंती का विवाह परमात्मा की दया से ठीक से सम्पन्न हुआ। सव काम ठीक हो गया, वहुत वड़ी जिम्मेदारी मेरी पूरी हो सकी। गंगावावू चले गये।

११ मार्च : आज शाम को सजन गोठ थी। प्रायः ३०० आदमी जीमे। रात में १२ वज गये। थक गया था। दिन में भी सगे आये थे। आज घूंघट पूरी तौर पर था। विरोध करने से भी कोई फायदा नजर नहीं आया। मन में एक रकम दुख-सा तो था, उपाय क्या ? वोरा और पाट का वाजार मंदा ही है। कामकाज कमती है।

१२ मार्च : आज रात में जमाई लोग जीमे। सुवह पहरानी हुई। घेलिया के उधर गया था। पता नहीं कहाँ जेव से घड़ी और ५०००) चुरा लिये गये, मन उदास हो गया, गलती मेरी ही थी। जमाई लोगों के जिमाने रात के १२ वज गये।

१३ मार्च : सुवह मैदान गया कसरत की। १२।। वजे घर से ऑफिस आया। १।। वजे पाट की मीटिंग थी। मैं भी काफी वोला। आसाम डेलिवरी जाने की वात है।

१५ अप्रैल : जार्डिन से रामकुमार जी ने वीस हजार मन पाट वेचा। मेरी समझ में तो गलती की। वाजार वढ़ेगा। हेसियन-वोरा सव चीजें मजवूत हैं।

१७ अप्रैल : सुवह मैदान गया कसरत की। ७।। वजे स्कूल गया। वहां का काम देखा। ११ वजे लाला हरदेव सहाय जी के साथ घर आया। ४।। वजे से पोद्दार जी के गया उनकी स्त्री का देहान्त हो गया, जाना सवको है, यह सवसे वड़ा सत्य है फिर दुख तो होता ही है। सान्त्वना देने के सिवाय और है क्या। शिलांग के कामाख्यालाल जी गोयनका मिले, उनके साथ आया। फिर वापस वड़ा वाजार गया। मारवाड़ी सम्मेलन में गया था।

२३ अप्रैल : डायरी वहुत दिन वाद लिख रहा हूँ। इसलिए वहुत वातें छूट जाती हैं। जयप्रकाश वावू सुवह कलकत्ते आये, फिर वापिस रात में चले गये। मिल न सका। गाड़ी श्रीमती लीला राय को दी है, एलेक्शन के लिये। इन दिनों गरमी वहुत ज्यादा पड़ रही है। काम में मन नहीं लग पा रहा है।

२५ अप्रैल : सुबह सत्संग में गया। अच्छा लगा। मन एकाग्र नहीं रहता, कोशिश करता हूँ। उसके वाद विश्वमित्र में लेख देने गया। १२॥ वजे रघुनाथ जी के गया, ४॥ वजे तक तास खेली। रात में कितावें पढ़ते-पढ़ते सो गया।

२६ अप्रैल : सुवह जयप्रकाश जी को लेने स्टेशन गया। उनके साथ घर गया। फिर सोसाइटी गया। शाम को उनके लिये मीटिंग हुई। काफी आदमी आये।

२७ अप्रैल : सुवह मैदान गया, कसरत की। फिर घर आया, साथ में उदयपुर के कई वर्कर थे। वीकानेर के भी। उन्हें जलपान कराया। स्कूल दिखाया। फिर सोसाइटी गया। स्मिथ साहव से मिला। वाजार समान है, मेरा ध्यान तेज है। कामकाज कमती है। पाट की फसल खराव सी हो रही है। शाम को ६ वजे रिलीफ सोसाइटी में जाजू जी का भाषण सुना। तवीयत मेरी अच्छी है। वैजनाथ जी जालान ज्यादा वीमार हैं।

१६ मई : नन्दू कुछ शेयरों का फाटका करता है। परन्तु मैं क्या कहने लायक हूँ। मेरे मन में पश्चात्ताप तो होता ही है। वाजार मंदा है। सव जगह पानी हो गया है। सुवह रिलीफ सोसाइटी की मीटिंग में काफी गरमा-गरम वहस हुई, इससे मन में थोड़ी सी खिन्नता आयी है।

१७ मई : सुवह कसरत नहीं कर सका। पाट देखने गया। वहां से सोसाइटी आया। पाट का वाजार थोड़ा अच्छे की तरफ है। दिन में मनसुखराय जी से वात की। शाम को ५॥ राइटर्स विल्डिंग गया। मीटिंग नहीं हुई थी।

१८ मई : सुवह मैदान गया। वहां से ज्वाला प्रसाद जी के घर जाकर कलेवा किया। वहाँ से वी० एम० के गया। फिर सोसाइटी गया। ऑफिस नहीं जा सका। दिन में वाजार मजवूत था। कामकाज साधारण तौर पर था। पाट की रिपोर्ट समान सी है। नन्दू से पचास हजार मन का काम किया। शाम को रावतमल जी की गद्दी गया, वे मिले नहीं। मन में शांति नहीं है। वाहर जाने की इच्छा सी हो रही है। तेल का भाव मंदा सा हो रहा है।

२० मई : सुवह मैदान गया, कसरत की। ७॥ वजे आर० मोर के गया। वहां से ८॥ वजे रिलीफ सोसाइटी गया, कामकाज देखा। ९॥ वजे ऑफिस गया। वाजार समान में क्वायट है। स्मिथ साहव को विलायत जाने को कहा, वह एक रकम राजी हो गया है। रात में ७ वजे घर आया तव पानी वहुत जोर का था। विरजू के लड़का हुआ। मन में खुशी हुई।

जसीडीह

१७ जून : मन खूव लग गया है। राजू और वाइफ के साथ पौने दो मील घूमा। थकावट मालूम आयी। कलकत्ते का भाई जी का फोन था। पाट का वाजार समान है, इन्कम टैक्स की भी वात थी। दिन में पांचेलाल घेलिया, लालाजी, नन्दू, हरखचन्द,

रानीगंजवाल को चिट्ठी गिरायी, नत्थु केड़िया को भी। शाम को ४ बजे महावीर जी पोद्दार जी के साथ देवघर विद्यालय में गया। उनको ३०) महीना देने को कह आया। विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने की मन में बराबर रहती है। इन दिनों भूख खूब जोर लगती है।

१८ जून : सुबह ५ बजे उठा। दो मील साइकिल पर घूमा। तेल मालिश करायी स्नान किया। मन प्रसन्न हो गया। इन पांच दिनों में ही काफी ताकत आ गयी है। पाट का बाजार मंदा, हेसियन, बोरा का तेज है। अखबार पढ़ा, शेयर में तेजी है। दिन में किताबें पढ़ता रहा, गांधी साहित्य। दो बार पोद्दार जी के गया, उनका नेचर क्योर का काम काफी जम गया।

कलकत्ता

२२ जून : दिन में जोहारमल जी से मिला, भोपाली बाबू के साथ में। शाम को रिलीफ सोसाइटी की मीटिंग में गया काफी गरम वातावरण रहा। चुनाव शायद अगस्त में होगा। सोसाइटी की फाइनंशियल हालत अच्छी नहीं है। बोहरा जी, गंगाबाबू, दीपचन्द आये थे। दिन में ऑफिस में गया था। साहब लोगों से मिला।

नैनीताल

६ जुलाई : बाजार घूमने निकला। अच्छा लगा। माल रोड तल्लीताल मल्लीताल घूमा। तल्लीताल में इतनी सफाई नहीं है। मल्लीताल में अच्छे काटेजेस हैं। नैनादेवी का मंदिर देखा। झील के किनारे है। बड़ी मान्यता है। शाम को सिनेमा गये। सर्दी यहां कुछ ज्यादा लगती है। मई-जून में आना ठीक रहता। इस यात्रा में कुल १२००) लग जायेंगे। शायद कुछ ऊपर भी हो। परन्तु ये पहाड़ देखे हुए नहीं थे, देख लिये। काफी सुन्दर दृश्य है। कलकत्ते का कोई समाचार नहीं है।

७ जुलाई : नैनीताल काफी सुन्दर जगह है, हम लोगों का विचार है अगले वर्ष नन्दू को यहां भेजेंगे। बारह महीनों में एक बार शहर आया जाय तो उमर बढ़ सकती है। साथी होने से और भी अच्छा है। आज ११ पोस्टकार्ड लिखे।

रानीखेत

१० जुलाई : सुबह से ही पानी बरस रहा था काफी जोर से। यहां पेट कुछ भारी सा रहता है। एक समय ही भोजन करता हूं। परन्तु चित्त प्रसन्न रहता है। रानीखेत प्रायः १२ बजे पहुंचे। होटल बड़ा ही गन्दा मिला। मन खराब हो गया। रानीखेत मिलिट्री की जगह है। इसके लिए बन्दोबस्त भी अच्छा है। घूमने के लिये चौपटिया चले गये। वहां माल रोड का सीन बहुत ही सुन्दर है, होटल भी हैं। मेरी लालच की आदत है। मर्म ज्यादा नहीं करना चाहता, इसलिये तकलीफ पाता हूं। नहीं तो इतने अच्छे

होटेल रहते ऐसी जगह क्यों उतरा ? रानीखेत का वाजार वहुत मंदा था। ऊपर बहुत अच्छी फुलवारी है। वैसे कुमाऊ के पहाड़ी दृश्य मनोरम है, जगह भी शांत है। पांच-चार साथियों के साथ आया जाय तो मन लग सकता है। लोग कहते हैं, यहां वरफ गिरती है। हमें तो नहीं दिखाई दी। शायद जाड़ों में गिरती होगी। तीन-चार मील आस-पास घूमने की इच्छा थी परन्तु पानी जोर से वरस रहा था। हम माल रोड ही घूम पाये परन्तु चित्त प्रसन्न हो गया, वाइफ का भी।

११ जुलाई : सुवह घूमने निकले। आसमान साफ था। चौपतिया की पहाड़ियों पर गये। फलों के वहुत ही सुहावने वगीचे हैं, झरने भी स्वच्छ। वापिस नीचे उतर आये। १ वजे की गाड़ी से हम लोग चले। रास्ता वहुत ही अच्छा था। ड्राइवर भी होशियार। रास्ते के दृश्य तो और भी सुहावने। ४ वजे अलमोड़ा पूगे। डाक वंगले में ठहरे। वहुत आराम मिला। रात में वाजार में घूमने गये। यहां नैनीताल से ठंढ कम है।

अल्मोड़ा

१२ जुलाई : शान्त जगह है, सुन्दर भी। पहाड़ में वसा छोटा-सा शहर। घूमने के सिवाय कोई काम नहीं। साथ में कितावें हैं, पढ़ता रहता हूँ। मन में शान्ति है। पेट जरूर कुछ साफ नहीं रहता परन्तु चिन्ता फिकर नहीं। गरीवी यहां है पर लोगों के चेहरे पर उदासी या चिन्ता नहीं। फल के वगीचे, खेत, सब्जियाँ वहुत हैं। कारोवार भी थोड़ा वहुत है। अगर पानी की सुविधा वढ़ा दी जाय तो पहाड़ों पर खेती और भी अच्छी हो सकती है। भेड़-पालन वगैरह भी वढ़ाया जा सकता है। दिन में कई वार वाजार गये। स्वामी रामकृष्ण के आश्रम में गये। वहां शुद्ध शहद आंखों में डाला। वहुत आराम मिला। रात में ८ वजे फिर वाजार गया। वहुत दिनों वाद चाट खाया अच्छा था। घी की मिठाइयां भी यहां वहुत अच्छी वनती हैं।

अल्मोड़ा काठगोदाम

१३ जुलाई : सुवह दो मील घूम आये। चाय पी, मिठाई खायी। फिर नीमा के साथ वाजार गया। हजामत वनवायी। मिठाइयाँ खरीदी। ११ वजे की वस से चले। रास्ते में आराम रहा। फल वगैरह खाते रहे। ६ वजे काठगोदाम पूगे। आज आठ दिन वाद पहाड़ों से उतरकर मैदान में आ गया हूँ। कुछ गरमी सी लगती है। इन चौदह दिनों में कलकत्ते का कोई समाचार नहीं मिला। चिन्ता तो कभी कभी होती थीं परन्तु अच्छा रहा। फिकर से वचा। चार पांच मील रोज घूमता था, अच्छी आवोहवा मिली।

इलाहावाद

१४ जुलाई : सुवह ६ वजे रिक्शा से संगम गये। नाव वाले से झगड़ा हो गया। वेजा पैसा मांगता था। खैर, भाग गया। स्नान वगैरह करके तांगे से आये। जीमकर आराम

किया फिर ४ बजे बाजार गये। वर्षा होने लगी थी। दीपचंद के बच्चे सब होशियार हैं। साधारणतया अच्छे ढंग से रहते हैं। १००) की चीजें दीं। रात में फिर बाजार गया, वाइफ के साथ। वैसे इलाहाबाद में पढ़े लिखे रिटायर्ड लोग रहते हैं। एक रकम से विद्यार्थी, अध्यापक और वकीलों का शहर है। सरदार शहर के पोद्दार और चौधरी से मिला। मेरा मन ऐसा होता है, रिटायर होकर यहां रहा जाय, मगर यह सिर्फ कल्पना है। सच होगा या नहीं, पता नहीं।

कलकत्ता

२२ जुलाई : सुबह सोसाइटी न जा सका। दिन में डेडराज जी और भागीरथ जी से मिला। दीपचन्द से मिला। वह कहता है कि तुम कमजोर होते जा रहे हो। मेरी भी यही धारणा है। भाई जी की राय है कि सब लोगों को अलग हो जाना चाहिए। आज बैठकर इस बात पर काफी बातें हुईं।

५ अगस्त : तबियत खराब है। सुबह पुरुषोत्तम जी के घर गंगाबाबू के साथ नत्थू केड़िया के गया। मट्ठा पिया, एक टोस्ट खाया। वहां से सोसाइटी आया। ऑफिस आया। ११॥ बजे गंगा बाबू के पास गया। १॥ बजे छोटी ऑफिस गया आया, ३ बजे तक था। बंगाल विहार में बाढ़ के काम में खास रुपयों के मिलने का ढंग नहीं मालूम होता है।

जसीडीह

७ अगस्त : सुबह ४ बजे पूगा। स्टेशन से घर आया। तबियत कुछ सुस्त है शायद ठीक हो जाय। शाम को दो मील घूमा। एक दिन में ही इतना परिवर्तन मालूम देता है कि क्या कहूं। मैजिक सा है। कलकत्ते में मेरा रहना मुश्किल है। शाम को पोद्दार जी के साथ नयी कोठी में गया, सफाई हो रही है।

८ अगस्त : सुबह पोद्दार जी के साथ दो मील घूमा। मन प्रसन्न है। आज चित्त वास्तव में प्रसन्न है। ऐसा मालूम देता है, दस दिनों में ठीक हो जाऊंगा। दिन में सोया। फिर 'राजाधिराज' पढ़ी।

१३ अगस्त : सुबह उठकर घूमने गया। दिन में दो तीन बार कलकत्ते का फोन आया। भाई जी की तबियत ठीक नहीं है। मा जी को और मुझे बुलाया है। इतनी चिन्ता मन में व्याप्त हो गई है कि मेरा मन उचाट हो गया है। रात में ७॥ बजे कलकत्ते के लिये रवाना हो गया।

कलकत्ता

१४ अगस्त : भाई जी की तबियत बहुत ही खराब है। मन में काफी चिन्ता सी हो रही है। डा० एस० के दास की दवा हो रही है। इस तरह मालूम पड़ता है कि दिन ज्यादा लगेंगे। पानी जसीडीह से लाया हूं, वह पी रहा हूं।

२० अगस्त : सुवह राधाकृष्ण जी कानोड़िया के साथ चंदे में गया। सोसाइटी भी गया। फिर ऑफिस नहीं जा सका। हेसियन वाजार चला गया। २॥ वजे स्मिथ साहव से मिला। सुना कि तुलसीदास जी सराफ ने अगेन्स्ट में टामस डफ के साहव से वहुत ही खराव चार्ज लगाया। पता नहीं क्या वात है। जी एल० मेहता से मिला। मन में मेरे लिये स्कॉट साहव के भी काफी दुख हुआ। आज शाम को तुलसीदास जी से मिला। उन्होंने कहा झूठी वात है, मन में शान्ति मिली। स्मिथ साहव को फोन से वता दिया।

२१ अगस्त : सुवह मैदान गया। वहां से राधाकृष्ण जी कानोड़िया के साथ चन्दे में गया। २ वजे सोसाइटी आया। १५० आदमी मीटिंग में थे। काफी जोरों से चखचख चली। पहले तो अकाउन्ट के प्रश्नों के जवाव में देरी हो गयी। कुछ चिन्ता भी हुई परन्तु वाद में सव ठीक हो गया। मैं भी साधारणतया ठीक वोला।

१ अक्तूवर : सुवह रांची जाने की तय की। फिर वाद में मद्रास जाने का विचार हो गया। दिन में ऑफिस में काम करता रहा। रात में ९ वजे स्टेशन आया। भीड़ इतनी थी कि दम निकलता जा रहा था। काफी कोशिश के वाद जगह मिली। गीगा, वसंती, वाइफ और मैं तथा एक नौकर भी साथ में हैं।

मद्रास

४ अक्तूवर : सुवह ५ वजे उठकर पोस्ट ऑफिस गया। एक मील घूमा। तवियत एक रकम ठीक है। ८ वजे टैक्सी लेकर भुवालका जी के घर गया। शहर घूमा, सुन्दर है। समुद्र के किनारे की सीन अच्छी है। हम लोगों को अच्छा लगा।

वंगलोर

५ अक्तूवर : तवियत वहुत अच्छी है। भूख भी ठीक लगती है। मन लग गया है। वंगलोर देखने वस से निकले। टाटा इन्स्टिट्यूट ऑफ सायन्स देखा। पार्क भी देखा, वहुत सुन्दर है। सव मिलाकर वंगलोर अच्छा साफ शहर है। क्लाइमेट भी अच्छी है। वाजार से कुछ चीजें भी खरीदी। दाम सस्ते हैं। इन्डस्ट्री और व्यापार भी यहाँ वढ़ रहा है और भी वढ़ोत्तरी होगी, ऐसी धारणा है।

श्रीरंगपट्टम, मैसूर

७ अक्तूवर : वंगलोर से खा पीकर चले। रास्ते में एक घंटा मैसूर की पुरानी राजधानी श्रीरंगपट्टम में ठहरे। हैदरअली-टीपू सुलतान के जमाने में कुछ अच्छी रही होगी, परन्तु अव तो उजाड़ सी है। किला भी ढह गया है। अंग्रेजों से लड़ते हुए टीपू जहां मारा गया, वह जगह भी दिखायी गयी। कहते हैं, मरने के वाद भी तलवार की मूठ पर उसकी उंगलियां कसी थीं। उसका मजार भी देखा। श्रीरंगपट्टम में एक पुराना मंदिर

देखा। विष्णु की मूर्ति बड़ी सी है। कभी यह शहर वैष्णवों का बहुत बड़ा केन्द्र था, व्यापार में भी बढ़ा-चढ़ा था। परन्तु जैसे मनुष्य के दिन समान नहीं होते वैसे गांव और नगरों के भी। वृन्दावन गार्डन शाम को पूगे। वास्तव में स्वर्ग है। आज तक इतना सुन्दर उद्यान नहीं देखा। रंग-बिरंगे जल की फुहारें फौव्वारों से निकलते देखकर मन प्रसन्न हो उठता है। कावेरी बांध भी इंजीनियरिंग की जादूगरी है।

१० अक्तूबर : मैसूर का चिड़ियाघर देखा। बहुत तरह के पशु-पक्षी हैं। यहां के राजाओं को जानवरों और बगीचों का खास शौक रहा है। आर्ट गैलरी, राजमहल वगैरह भी देखा। बहुत अच्छा लगा।

ट्रिची, रामेश्वरम्

११ अक्तूबर : सुबह ७ बजे ट्रिची पूगे। गोयनका जी के आदमी स्टेशन पर आये थे। वहां से रामेश्वरम् शाम को ४॥ बजे पूगे। रास्ते में समुद्र पर का पुल देखने लायक था। धर्मशाला में ठहरे, ६ बजे समुद्र में स्नान करने गये। तेल मालिश भी कराया। आधा घंटा स्नान किया, अच्छी तरह से। ७। बजे से ८॥ बजे तक पूजा की। गरीबी यहां बहुत है। देखकर मन कैसा हो जाता है। समझ में नहीं आता परमात्मा गरीबी का दण्ड क्यों देता है। मुझे अपने दिन याद आते रहे। परिश्रम जरूरी है किन्तु भाग्य का भी जोर चाहिए। बुद्धि यदि ठीक रहे तो चेष्टा सफल होती है नहीं तो बड़े-बड़े लोग नीचे गिरते हैं। अपने जीवन में इन सबों का अनुभव करता रहा हूँ। रामचन्द्र जी ने बुद्धि ठीक रखी, हिम्मत नहीं खोया, सीता को ले ही आये वापस। कुछ भी तो उसके पास नहीं था।

मदुराई

१२ अक्तूबर : मदुराई में रहने की तकलीफ सी रही। परन्तु मन्दिर देखकर मन प्रसन्न हो गया। मीनाक्षी की प्रतिमा बहुत ही सुन्दर है। दक्षिण भारत में जैसे मन्दिर देखे, भारतीय संस्कृति का जो रूप देखने में आया, वैसा उत्तर में कहीं नहीं। शायद ऐसा इसलिये कि कई सदियों तक मुसलमान सुल्तान और बादशाह मन्दिरों को उत्तर भारत में लूटते, तोड़ते रहे। लोगों को मुसलमान बनाते रहे। हिन्दुओं का साहस टूटा, विश्वास भी कमजोर हो गया। दक्षिण में इतना नहीं हो पाया। संस्कृत समझता नहीं किन्तु यहां के मन्दिरों में जो स्तुति पाठ सुनता रहा, उससे भाव समझने में कठिनाई नहीं हुई।

कन्या कुमारी

१३ अक्तूबर : मदूराई से ट्रेन में केप के लिये चले। प्राय: ४॥ पूगे। समुद्र के तट पर चले गये, दूर-दूर तक समुद्र लहरा रहा था। भारत के अंतिम छोर पर बैठा था। सूर्यास्त हो रहा था। बहुत देर तक देखा। इतना सुन्दर दृश्य नहीं देखा था। मन में नाना

प्रकार के विचार आते रहे। प्रयाग में गंगा में जब यमुना मिल जाती हैं तो पता नहीं चलता गंगा या यमुना का जल कौन-सा है। इसी तरह यहां भी अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और भारत महासागर का संगम देखा। प्रकृति कोई भेद नहीं मानती, मनुष्य करदेता है। कन्या कुमारी का मन्दिर देखा। बहुत बड़ा नहीं है किन्तु शान्त और पवित्र स्थान लगा।

केप कोमोरिन

१४ अक्तूबर : रहने की जगह आराम की नहीं थी परन्तु नींद अच्छी आयी। सुबह बहुत जल्द उठा। मन्दिर की तरफ चला गया, सूर्योदय से कुछ पहले। सूर्योदय देखा। मनुष्य में ज्ञान का उदय भी शायद इसी तरह होता है, परन्तु चाह होनी चाहिए अंधेरा दूर करने की। दार्जिलिंग के टाइगर हिल के सूर्योदय से यहां का दृश्य अलग तरह का है। सागर के भीतर से धीरे-धीरे सूरज की किरणों का उगना बहुत ही सुन्दर लगा। आधा सूर्य जब सागर पर तैर रहा था, मैं मन्दिर में चला गया। चित्त बहुत प्रसन्न था। कन्या कुमारी देखने लायक जगह है। यहां से जाने का मन नहीं करता। परन्तु जाना तो होगा ही। इस यात्रा में मन बहुत लगा। समुद्र-स्नान भी कर लिया, तीनों सागर के संगम में। आती दफे बस मिल गयी।

त्रिचनापल्ली

१५ अक्तूबर : दिन में त्रिचनापल्ली में मन्दिर देखे। रंगजी का मन्दिर देखा। एक ऊंची पहाड़ी पर बना मन्दिर देखा। सोने का कलश धूप में चमक रहा था। दक्षिण के मन्दिरों की सफाई और कारीगरी देखने लायक है। सबों का मन कलकत्ता लौटने का हो रहा है। मुझे भी जाना होगा। यहां से मद्रास होते हुए जायेंगे।

कलकत्ता

१८ अक्तूबर : सुबह १० बजे स्टेशन पर पूगे। नन्दू और भाई जी आये थे। कलकत्ते में अठारह दिन बाद आया। खास परिवर्तन नहीं है। पाट का बाजार गरम है। साहब लोगों से मिला, सब खुश हैं। दक्षिण की यात्रा से एक खास अनुभव जरूर हुआ।

२६ अक्तूबर : सुबह कसरत किया। दिन में बाजार गया। मन प्रसन्न रहता है। बारिश सी हुई थी। गद्दी गया। बाजार तेज जंचता है। फार्विसगंज का पाट खरीदने का तार दिया। शाम को मैकलियड में ५०० गांठ कटिंग ६९) रू० में बेंच दी।

२७ अक्तूबर : वजन कल दो मन साढ़े पांच सेर हुआ। डेढ़ सेर बढ़ा। शाम को प्रीति सम्मेलन में नहीं जा सका। ४ बजे के० पी० गोयनका जी के गया, कछार गार्डेन की बात करने। मेरे तो लेने की जंचती है। ४॥ बजे टामस से बात की। वे लोग खास जोर नहीं देते हैं।

४ दिसम्बर : पुष्पा का विवाह है। घर पर काफी आदमी आये। विवाह में खरच बेशी हुआ, प्रायः सवा लाख रुपये। बापू जी नाराज से हैं।

२४ दिसम्बर : कसरत नियम से कर लेता हूँ। मन अशान्त सा रहता है। भागीरथ जी का देश का बुलावा आया परन्तु जा नहीं सकूंगा।

२६ दिसम्बर : डायरी कई दिनों बाद लिख रहा हूँ। सुबह १०॥ बजे तक रघुनाथ जी के घर था। वहीं कलेवा किया। ३ बजे घेलियों के गया। तबियत बहुत ही अच्छी रहती है। मोटर चलाना एक रकम सीख गया हूँ।

जयपुर

३० दिसम्बर : सुबह पूगा। स्टेशन से डेरे पर आया। तीन मील घूमा। कई जगह फोन किये। पी० सी० सी० के ऑफिस में गया। हरदेव जी जोशी से मिला। ३॥ बजे टी० बी० अस्पताल गया। वहां से कुंभाराम जी की ऑफिस में आया। अच्छी तरह मिले। मिनिस्ट्री काम करेगी ऐसा मालूम देता है।

ट्रेन, उदयपुर

३१ दिसम्बर : सुबह उदयपुर ९॥ बजे पूगा। स्टेशन पर विद्या भवन और महिला मंडल के लोग आये थे। विद्या भवन में ठहरा। विद्या भवन बड़ी संस्था है, बहुत ही सुन्दर बनी हुई। १ बजे नागर जी, जनार्दन जी के खाने पर गया, श्रीमाली जी भी थे। गुजराती खाना था। जनार्दन जी विद्वान हैं, डी० सी० सी० के प्रेसिडेन्ट हैं परन्तु कुछ ज्यादा बोलते हैं, ऐसा मालूम देता है। वहां से महिला मंडल गया। उन लोगों ने स्वागत का आयोजन किया था। ३॥ बजे साहित्य संसद में जाकर बाद में जनता कॉलेज देखने गया। उदयपुर अच्छी जगह है, सर्दी ज्यादा है।

१९५५

उदयपुर

१ जनवरी : सुवह ६ वजे उठा। काफी अंधेरा सा था। जंगल गया। कसरत की। ७ वजे घूमने निकला। ९ वजे महिला मंडल में गया। ९। सुखाड़िया जी आये। शहर के और भी प्रसिद्ध व्यक्ति थे। काफी चहल पहल रही। सुखाड़िया जी मेरे लिए कुछ वेशी कह गये। मैंने भी जैसा बना कहा। १२ बजे अंदाज कार से भोरीही चले। रास्ते में कार खराब हो गई थी। ४ वजे केसरिया ऋषभदेव जी पूगे। जैनियों का पुराना मंदिर है। काफी संख्या में जैनी लोग आते हैं। वहां से ४॥ वजे भोरीही पूगे। वहाँ भील-भीलनियाँ इकट्ठी थीं। वर्मा जी ने मेरे लिए कहा कि कलकत्ते से ये तुम्हारे लिये मायरा लाये हैं। ४६० पोंचे देंगे। मैंने भी राजस्थानी भाषा में कहा। वड़े सीधे लोग हैं। थोड़े में ही संतोष। जीवन में इनके तनाव नहीं। यही तो सच्चा सुख है। वहाँ सुखाड़िया जी, श्रीमन जी अग्रवाल, तथा मास्टर वलवंत सिंह जी भी आये थे। काफी अच्छा प्रोग्राम रहा। १०००), १५००) वर्मा जी को जीप की मरम्मत के देने होंगे। रात में १२॥ पर कलक्टर की गाड़ी में लौटे। सारे दिन की दौड़-धूप में कुछ थक सा गया।

उदयपुर, रेल

२ जनवरी : सुवह ७ वजे उठा। रात महिला मंडल में सो गया था। ९॥ वजे मातृ-सदन गये। वहुत अच्छा काम हो रहा है। ऐसी संस्थाओं को मदद करने का मन होता है। पर कितना किया जाय? इतना साधन पास में नहीं है। अगर इस क्षेत्र में काम किया ज़ाय तो अगले चुनाव तक अच्छी जमीन तैयार हो सकती है। मेरा मन भी एम० पी० की सीट लेने का सा हो रहा है। वीच-वीच में आकर रहना जरूरी है। ९॥ वजे वैद्य भवानी शंकर जी के गया। १० वज़े अंदाज फूल वाई के भाई साहव से मिला। वड़े सहेलियों की वाड़ी में गये। १॥ विद्या मंदिर आकर स्नान वगैरह किया। रात के कपड़ों में ही रह जाना पड़ता था। उपाय भी नहीं था। ७००) विद्यामंदिर को २ वर्ष का, २४०) महिला मंडल को तथा ५००) की कितावें महिला मंडल के पुस्तकालय को देने का तय

किया। विद्यापीठ तथा महिला मंडल को भी २४०)-२४०) दो वर्ष के देने होंगे। कुल खर्च उदयपुर ५५००) हो जायगा। रात में ट्रेन में वैठा। माणिक्यलाल जी वर्मा भी साथ थे। चित्तौड़ के वारे में उनसे काफी वातें होती रहीं।

जयपुर

३ जनवरी : सुवह ६ वजे अजमेर पुगे। कार में वहां से माणिक्यलाल जी, भूरामल जी आदि के साथ चला। ९ वजे सीधा श्रीमन जी की मीटिंग में चला गया। वर्कर्स की काफी जोरदार मीटिंग थी। मैं वोला, साधारणतया ठीक ही वोला। लोगों से जान-पहचान की। २ वजे जीमकर फिर मीटिंग में गया। शाम को पानी के वोर्ड की वातचीत हुई। एक रकम तय हो गयी है। मीटिंग ६ वजे खत्म हुई। रात में खाना खाकर सो गया। सुवह भागीरथजी से फोन पर वात हुई थी। जयपुर में कलकत्ते से ज्यादा सर्दी है। जयनारायण जी व्यास जी एक वार मीटिंग में आये थे। सिद्धराज जी ढढ्ढा और गोकुल भाई भट्ट भी। काफी लोग आये थे। सरदार शहर के चंदनमल वैद भी मिले थे।

जयपुर

४ जनवरी : सुवह घूमने गया। कुंभाराम जी के घर दही रोटी खायी। १२ वजे चंदनमल जी के यहाँ जाकर जीमा। इससे पहले खादी की मीटिंग में गया था। २ वजे तक गांधी निधि में था। वहाँ से सुखाड़िया जी के घर गया। पानी वोर्ड की मीटिंग हुई। सव काम ठीक वैठ गया। ३॥ पर वापिस आकर रतन जी से मिला। ६००) का कहा। वहाँ से जाकर हीरालाल जी पालीवाल से मिला। ५॥ वजे की ट्रेन से रवाना हुआ। वद्रीनारायण जी स्टेशन पर आये थे। सव मिलाकर उदयपुर की यात्रा अच्छी रही। मन भी लग गया। लोगों से संपर्क वढ़ा। माणिक्यलाल जी से घनिष्ठ परिचय हुआ। राजस्थान की पालिटिक्स में गुंजायश है।

सरदार शहर

५ जनवरी : सुवह ५ वजे रतनगढ़ पूगा। सर्दी तो वहुत ज्यादा थी। दो कंवलों से भी नहीं हटती थी। गाड़ी में सेकेंड क्लास में वैठा। सरदार शहर ९ वजे पूगा। सामने कई आदमी आये थे। दिन में, मिलने वाले लोगों का ताँता वँधा रहा। सोशलिस्ट पार्टी वाले भी आये थे और स्कूल के लड़के भी आये। शाम को सुमेरमल जी आंचलिया के जीमा। ७ वजे पानी की व्यवस्था के वारे में मीटिंग थी। काफी लोग आये थे। ९॥ वजे तक मीटिंग चली, मैं भी काफी वोला। लोग काम करने को कहते हैं। सरदार शहर में मेरा स्थान अच्छा वन सकता है। राजस्थान की पोलिटिक्स में अगर आ जाऊँ तो जगह है, मन भी करता है। कलकत्ते से निकल पाऊं तव है। लाइब्रेरी की तरफ गया। ठीक चल रही है। दौलतराम जी भाई जी स्वस्थ हैं।

सरदार शहर

६ जनवरी : सुवह ६ वजे उठकर सुमेरमल जी आँवलिया के साथ गांधी विद्यामंदिर गया। प्रायः ३।। मील घूमना हो गया। वापस आकर कॉलेज गया। प्रिंसिपल से कॉलेज के वारे में वात की, लड़कों से वात की। ११ वजे मोहन जी के घर पर खाना खाया, और भी दोस्त थे। काफी अच्छा रहा। वहाँ से वाल-सदन देखने गये। मैंने भी उन्हें कुछ दिया। वहुत ही अच्छा काम कर रहे हैं। वहाँ सरदार शहर गोशाला की मीटिंग में गया। ३ वजे गोशाला गया। अकाउन्ट देखे। लोगों में खास उत्साह गोशाला के प्रति नहीं है। ७ वजे लाइब्रेरी की मीटिंग में गया। १०००) दिया। रात में ताश खेलता रहा। ११।। वजे सो गया।

७ जनवरी : सुवह भंगियों के स्कूल गया। वहाँ छात्रवृत्ति का कहा। २५) महीने के लग जायेंगे। सरदार शहर में कुल २०००) खर्च हुए। भाई जी को २०००) देने को कहा है। जयपुर, उदयपुर में ५०००) खर्च हुए। इस तरह खर्च तो हुए परंतु राजस्थान की यात्रा में काफी संपर्क वढ़ा। शरीर भी स्वस्थ रहा। सरदारशहर में मैं जव आता हूँ, तव लोगों में काफी उत्साह-सा हो जाता है।

कलकत्ता

९ जनवरी : सुवह ६ वजे उठा। फलाहार किया था। इसलिए तवीयत ठीक रही। १० वजे स्टेशन पूगा। टेक्सी लेकर चाँदपाल घाट आया। तेल मालिश करायी। हजामत वनवायी। स्नान किया। १२ वजे घर पूगा। वावू जी से वातचीत की। पाट का वाजार मजवूत सा है। ३२) में १५०० मन वेचा है। चाय के कोटा का दाम ८०) है। हमें जरूर नुकसान होगा। तीन आने ड्यूटी वढ़ गयी हैं। १ वजे चलकर गद्दी गया। भाई जी ने मोटर चलाने की मनाही की। लाला जी के गया। उनका पैर टूट गया है। रात राजस्थान के स्वप्न आते रहे। पाट का वाजार गरम है। हम लोगों के पाट पोते हैं। चाय का वाजार भी गरम है।

११ जनवरी : सुवह स्टेशन गया। मोटर ठीक चला लेता हूँ। एस० एन० कहता है १० लाख तक आ सकते हैं। वैसे, चाय का वाजार गरम है, तेल का भाव मंदा है।

१५ जनवरी : छात्रनिवास में मेहता जी की सभा हुई। ६ वजे। मैं भी थोड़ा वोला। पानी की योजना के वारे में भी वोला। सुवह हरिदास जी मूंदड़ा के पास गया। वहाँ से वी० एम० विड़ला जी से मिला। प्रायः १ घंटे तक वातचीत होती रही। मेरा मन कांग्रेस की तरफ हो सा रहा है। शाम की मीटिंग में काफी आदमी आये थे। वोलने का मेरा अभ्यास पहले से काफी अच्छा है।

१७ जनवरी : भाई जी से ६-७ दिन से नहीं मिल पाया। मन में कैसा-सा हो रहा है। कल जरूर मिलूंगा। ३।। वजे गंगावावू के साथ स्टेशन गया। वहीं डा०

सत्यनारायण और महामाया वाबू मिले। मेरी तवीयत खराव सी है। मन कुछ अशांत सा रहता है। चाय वगीचे वाला काम अभी तक नहीं हो पाया।

१९ जनवरी : शाम को ४ वजे मेहता जी को स्टेशन पुगाने गया। कुल १३०००) हो गया है। काफी सफलता रही। पाट का वाजार तेज होता जा रहा है। गद्दी गया, वहाँ से ५००) लिये। रामेश्वर जी पाटोदिया के साथ दुवराजपुर की मिल के वारे में वात की। भाई जी से भी वात की। उनके एक रकम जँच गयी है। मेरी तवीयत के वारे में लोग कहते हैं कि ठीक नहीं है। कुछ अस्तव्यस्त सा रहता हूँ। थोड़ी सी वात की भी चिंता हो जाती है। महामाया वावू से मेहता जी को मिलाया।

२१ जनवरी : सिलोन ने चाय की ड्यूटी वढ़ा दी है। शायद भारत भी वढ़ा देगा। शाम को माणिक चंद जी वागड़ी के घर गया, राय चौधरी के घर गया और मोहरी वाई के गया। वहुत तकलीफ में है, २००) दिये।

२२ जनवरी : सुवह सुखाड़िया जी के पी० ए० का फोन था। ३१ ता० को कलकत्ते आ रहे हैं। शायद विड़ला जी के ठहरेंगे। पाट का वाजार आज कुछ मंदा है। सुवह ४-५ जगह चंदे के लिये गया। प्राय: २० हजार हुआ। भागीरथ जी में काफी उत्साह है। भाई जी ने मोटर चलाते हुए देख लिया, कुछ नाराज से हुए। ओंकार जी वोहरा कहते थे उदयपुर में मेरा अच्छा प्रभाव पड़ा। मुझे एम० पी० होने की इच्छा सी हो रही है। शायद राजस्थान से टिकट भी मिल जायगा।

३१ जनवरी : सराफों के विवाह था। कल राजस्थान के नेतालोग आयेंगे। कुछ मेरे यहाँ और कुछ भागीरथ जी के यहाँ ठहर रहे हैं। दयाशंकर श्रोत्रिय, भवानी शंकर वैद्य आदि मेरे यहाँ ठहरे हैं। सोसाइटी के गवन को लेकर काफी व्यस्त रहा। ११०००) का गवन हुआ है। मेरी भी वदनामी होगी, ऐसा मालूम देता है। अपराध मेरा नहीं, किंतु जिम्मेदार माना जाऊँगा। सार्वजनिक कार्यों में चौकसी और निगाह रखनी चाहिए, सावधान रहूँगा।

२ फरवरी : राजस्थान के नेताओं के साथ सारे दिन व्यस्त कार्यक्रम रहा। शाम को माहेश्वरी भवन में वहुत वड़ी मीटिंग रही। शाम को मेरे यहाँ चाय का वंदोवस्त था। काफी लोग आये।

३ फरवरी : व्यस्त कार्यक्रम रहा। शाम को कंदोई की चाय पार्टी में काफी लोग आये। रात में मिनर्वा में नाटक देखने गये। हिंदुस्तान क्लव में खाना था। शाम को प्रेस कानफ्रेंस भी। पेट कुछ भारी सा हो गया है। शाम को विशुद्धानंद के मैदान में मीटिंग थी। सुखाड़िया जी सोसाइटी गये। उसके वाद कार्यकारिणी की मीटिंग हुई। मुझ पर इल्जाम लगाये गये।

८ फरवरी : गंगा वावू वीमार होकर लौटे, काफी सुस्त थे। सुवह ट्रेन पर गया। कृपालानी जी भी उसी ट्रेन से आये थे। शाम को हरलाल सिंह जी को पुगाने स्टेशन पर गया। हम लोगों के प्राय: ७००-८०० रु० खर्च हो गये परंतु काफी मन लग गया।

सोसाइटी वाले अड़ंगे को लेकर मन काफी खराब हो रहा है। पाट का वाजार तेज-सा ही है। १४ तारीख को बीकानेर जाने का विचार है।

९ फरवरी : गंगा वावू वीमार हैं। विश्वमित्र में सोसाइटी को लेकर काफी वितंडावाद की सी खवर है। चारों तरफ चर्चा है। पाट का वाजार तेज जा रहा है। हम लोगों के पाट खास पोते नहीं हैं। मन इन दिनों कैसा ही खराव रहता है।

१० फरवरी : ९।। से १०।। तक भागीरथ जी के साथ था। दो जगह चंदे के लिये गया। ५।। वजे सोसाइटी की मीटिंग में गया। ७ वजे अग्रवाल जी के गया, वहाँ से 'झाँसी की रानी' सिनेमा देखने गया। हिंदी फिल्मों में इतिहास की सही तस्वीर उतारने की खूबी अभी नहीं आयी है। कलाकार, डाइरेक्टर या प्रोड्यूसर पढ़ने-छानने की मेहनत नहीं करते, ऐसा लगता है। सोसाइटी के अड़ंगे के मामले में शेयर मार्केट के एक चौवे जी ने कहा कि विक्टोरिया मेमोरियल में भी यही वात हो रही थी। मनुष्य को पब्लिक लाइफ में आने पर काफी ऊँचे उठने की दरकार है।

१३ फरवरी : गंगा वावू वीमार हैं। सारे दिन उनके झमेले में ही रहा। दिन में छात्र-निवास में मीटिंग थी, उसमें गया। काफी हिचकिचाहट-सी हो रही थी। परंतु मीटिंग का रवैया अच्छा रहा। वसंती का मुकलावा था। प्रायः १२ वजे सोया।

१४ फरवरी : वसंती की विदाई के समय नहीं आ सका, इसलिए भाई जी नाराज से थे। गंगा वावू आज ही चले जा रहे हैं, कुछ नाराज से हैं। तवीयत वैसे, उनकी ठीक है। सुबह सोसाइटी की मीटिंग में मेरा रवैया वहुत ही खराव रहा। मन में काफी दुश्चिंता हो रही थी। मेरी सरासर गलती थी। सारे दिन इसी वात का पछतावा हो रहा था।

दिल्ली

१६ फरवरी : हरिचरण जी के साथ राजघाट गया, वहाँ से वापिस आकर मोटर से पिलखवा की तरफ गया। वहाँ जयचंदलाल नहीं मिले। थोड़ी देर तक मिल देखकर हापुड़ गये। हापुड़ की मंडी देखी। थोड़ा गुड़ भी खरीदा। १० वजे दिल्ली पूगा। वाजार गया, ५।। वजे शिवदत्त जी उपाध्याय (नेहरू जी के सेक्रेटरी) से मिलने गया। अच्छे आदमी हैं। केशवदेव जी मालवीय से मिला। आधा घंटा था। उनका भतीजा मर गया। काफी वातें हुईं, पानी के वारे में भी। वहाँ पंत जी और देवकांत वरुआ भी आये। वहाँ से ८ वजे घर लौटकर आया।

जयपुर, सवाई माधोपुर

१७ फरवरी : १२ वजे अंदाज जीप में सवाई माधोपुर के लिए रवाना हुए। साथ में चिरंजी लाल थे, पहले मंत्री थे। रास्ता एक रकम अच्छा था। ३।। वजे स्टेशन पूगे। यहीं डालमिया की सीमेंट फैक्टरी है और वड़ी कर रहे हैं। ५।। वजे तक मीटिंग होती रही। यहाँ से तीन मील पर गाँव माधोपुर है, पहाड़ों के वीच में पुराना कस्वा है। लोगों का

जीवन साधारण-सा है। राजस्थान में विकास नहीं के बराबर है। कुछ तो सरकारी उपेक्षा और कुछ स्थानीय लोगों के मन में उत्साह की कमी; लगता है, यही कारण है। ६।। पर रवाना होकर ७० मील पर दोसा के खादी भंडार में सो गया। सर्दी साधारण सी है।

दोसा-भरतपुर, अलवर, डीग

१८ फरवरी : सुबह नाश्ता-पानी कर ७।। बजे जीप से रवाना हो कर १० बजे भरतपुर ७५ मील पूगा। स्नान किया, कपड़े धोये। किले में गया। भरतपुर का किला इतिहास-प्रसिद्ध है। दिल्ली आगरे की तरह भले ही न हो, पर दीवारें अलग ढंग की हैं। गोलों की मार से छेद हो जाय पर ढहने वाली नहीं दिखीं। देखता रहा, एक बार तो बीते जमाने में खो सा गया। इतिहास भूलों से भरा है। अगर यह भूल न हों तो जमाना करवट भी कैसे ले? कलक्टर जयपुर गया हुआ है। होतीलाल जी पाराशर से मिला। कांग्रेस दफ्तर में मीटिंग की। लोगों से बातचीत की। वहाँ से प्रायः १।। बजे डीग पहुँचे। जाटों के जमाने में इसका महत्व था। दिल्ली की मुगलिया ताकत भी इनकी कृपा चाहती रही। महल देखे। बनावट वगैरह राजस्थानी ढंग की है। अच्छा लगता है। ४ बजे अलवर पूगे। कांग्रेस दफ्तर गये। वहाँ से लाला काशीराम जी के घर चाय पी। शोभाराम जी (भू० पू० प्रधान मंत्री, मत्स्य प्रदेश) तथा डॉक्टर थे, काफी बातचीत हुई। होशियार हैं, यहाँ का काम संभाल लेंगे, ऐसी आशा है। सारे दिन व्यस्त रहा, कई लोगों से जान-पहचान हुई।

कोटा, झालावाड़

१९ फरवरी : सर्दी ज्यादा है, २ कंबल की। १२ बजे उदयपुर चित्तौड़ के दो कार्यकर्त्ता आये। मैंने उन्हें सोरोही में देखा था। परंतु भूल गया था, मेरी गलती है। १२ बजे कोटा का मालवीय (पीरामल जी की मिल का मुनीम) आया। ३ बजे टोंक पहुँचा। वहाँ ३।। बजे तक था। टोंक पहले भी देखा हुआ कस्बा है। साधारण-सा है। वहाँ भी दो कार्यकर्त्ताओं से मिला। ७ बजे रवाना हुए, ८ बजे कोटा पूगा। खादी भंडार में काफी कलेवा किया। फिर १० बजे कोटा से रवाना होकर १२। बजे झालावाड़ पूगा। रात में धर्मशाला में सो गया। ठंड कमती थी। सारे दिन २०० मील चले, थकावट सी आयी।

झालावाड़, कोटा, बूँदी, जयपुर

२० फरवरी : सुबह दो मील घूमने गया। जिला कांग्रेस अध्यक्ष गौरीशंकर जी विजयवर्गीय से मिला। ४ मील पर पाटन पूगा। विनोदी राम बालचंद बड़ी फर्म है। उनके मुनीम भूरामल जी जाट से मिला। प्रभावशाली हैं। पाटन में एक पुराना सुंदर जैन मंदिर देखा। ५००-७०० वर्ष पुराना है। भव्य एवं आकर्षक, मन लग जाता है।

वहाँ से चंदमाल झालर मंदिरों को देखने गया। १००० वर्ष प्राचीन मंदिर चंदमाल नदी के ऊपर है। सुंदर रमणीक स्थान है। एक और भी पुराना मंदिर देखा, वह भी अच्छा है। यहाँ से ३ वजे कोटा पूगा। भोजन किया, लोगों से मिला। विजय कुमार जैन साधारण किंतु अच्छा लड़का है। उसके साथ मिल देखने गया। ३।। लाख में उन्होंने ली है। बहुत सस्ती थी। शायद चला पायेंगे, पार्टनर लेंगे। कोटा से चलकर बूंदी पूगा। ५ वजे तक था। बावड़ी और कुंड देखा। शौर्य और करुण गाथाएँ तो राजस्थान के कण-कण में मिल जाती हैं। वैभव हँसता मिलता है तो गरीबी कराहती मिलती है। मौन रह कर सब देखता हूँ। कभी-कभी कैसा-सा लगता है। क्या हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है? बूंदी से एक वजे जयपुर पूगा। काफी थकान आयी।

जयपुर

२२ फ़रवरी : सुबह सुखाड़िया जी के साथ मीटिंग थी। १२ वजे के अंदाज कार से चले, ४ वजे मुकुंदगढ़ पूगा। बृजलाल जी गोयनका से मिला। रास्ते में खादी प्रतिष्ठान के रामेश्वर जी अग्रवाल का काम देखा। बहुत ही अच्छा और बड़े पैमाने पर है। मुकुंदगढ़ ७ वजे के अंदाज पूगा। रात में सर्दी काफी है। बद्रीनारायण जी, भागीरथ जी साथ हैं।

मुकुन्दगढ़

२३ फरवरी : सुबह गाँवों की तरफ कुओं की समस्या देखने चला गया। इस तरफ पानी की खास समस्या नहीं है। वहाँ से आकर १। वजे खाना खाया। ४ वजे तक मीटिंग होती रही। भागीरथ जी का कॉलेज देखने गया। सुबह बसंतलाल जी के पुस्तकालय का मकान देखा। अच्छा बना है।

मुकुन्दगढ़, फतहपुर, राजगढ़, चूरू

२४ फरवरी : मोटर से ८।। वजे फतहपुर पूगा। भागीरथ जी भी थे। वहाँ पूरनमल जी बूबना से मिलकर करीब ११ वजे चूरू पूगा। चूरू की संस्थाएँ देखीं। सर्व हित-कारिणी सभा, ओसवाल विद्यालय, खादी भंडार आदि। फिर चूरू से राजगढ़ रवाना हुआ। रास्ते में खारे दुधवे में एक घंटे ठहरे। पानी का बड़ा ही संकट है। ऐसा संकट तो अब तक कहीं भी देखने में नहीं आया। आसपास के गाँवों में जल का बहुत अभाव। लोग कैसे जीते हैं? जब यहाँ यह हालत है तो बाड़मेर, जैसलमेर, पोकरण में कैसी गुजरती होगी! मुझे ऐसा लगता है कि हर जोहड़, बावली कुएँ के आसपास हरियाली बनाये रखने के लिये वृक्ष लगवाने चाहिए। इससे सूखापन धीरे-धीरे कम होगा। मगर लोगों को इसके लिये समझाना जरूरी है।

रेमी, सरदारशहर, बायला, केवलासर

२५ फरवरी : सुबह १० वजे रेमी पूगा। एक घंटे रहे। उमाशंकर वैद्य वगैरह मिले। पानी के बारे में बातचीत की। ११ वजे रवाना होकर १२।। पर सरदारशहर पूगा।

कुवें की तरफ, मंदिर की तरफ हरिजन पाठशाला, गांधी विद्या-मंदिर गया। ४ वजे रवाना होकर ५ वजे वायला पूगा। हम रास्ता भूल गये थे। यहाँ आधा घंटा ठहरे। रात में ९ वजे केवलासर आ कर ठहरे। वहाँ एक मंदिर में सोये। ग्राम-जीवन मुझे वहुत ही पसंद है। लोगों में काफी उत्साह है। यहाँ पाठशाला नहीं है। रास्ते में एक गाँव में एक स्कूल के लिए १०) रु० दिये। केवलासर में पुजारी को १०) रु० दिये।

कालू, लूणकरणसर

२६ फरवरी : सुवह ८ वजे कालू पूगे। लोगों से वातचीत की, कुंवें देखे। ऐसे कुवों से क्या होने का? खर्चीला तो रहेगा किंतु मीठे पानी के स्रोत को धरती की कोख से विना निकाले काम चलने का नहीं। राजस्थान में खेती के लिए यही उपाय है या फिर नहर निकाली जाय। १० वजे कालू से चले और ११ वजे लूणकरणसर आए। मोटर लेकर चार मील पर एक कुआँ देखने गये। पानी के काम के लिये मन में एक प्रकार का उत्साह-सा हो रहा है। मेरी धारणा वनती जा रही है कि छोटे-छोटे पैमाने पर ही सही, हरियाली वढ़ाने पर मिट्टी में नमी आयेगी, हरियाली वढ़ती जायेगी और जलवायु में भी फर्क आ सकता है। लूणकरणसर से अंदाज २ वजे चले। रास्ता साधारण-सा था। ४ वजे जामसर पूगे। वहाँ जिपसम फैक्टरी देखी। काफी माल वाहर जाता है। ६ वजे वीकानेर पूगे। कसरत इन दिनों छूटी हुई है परंतु शरीर स्वस्थ मालूम देता है। भागीरथ जी के साथ घूमने में एक रकम का आनंद मिलता है।

वीकानेर, नोखा, नागौर

२७ फरवरी : वीकानेर का पुराना किला देखने गये। ४५० वर्ष पहले के महल, रनिवास, राजाओं के महल देखे। हर युग में सामाजिक मान्यताएँ वदलती हैं, वैसा ही रहन-सहन वनता है। आज भले ही में सव अजीव लगे। ३ वजे देशनोक पूगे। मंदिर में गये। वहुत से चूहे फिर रहे थे। वदवू आ रही थी। समझ में नहीं आया कि इन चूहों को चूरमा खिलाने में धर्म-कर्म है या गरीवों को सहारा लगाने में। ५॥ वजे नोखा पूगे। थोड़ी ठंड हो गयी थी। हवापानी यहाँ का अच्छा वताते हैं। साधारण-सा वसा कस्वा है। रात १० वजे नागौर पूगे।

नागौर, डीडवाना, कुचामन, जयपुर

२८ फरवरी : २ मील घूमा। ७॥ पर सुगनमल जी वोथरा के गये, वातचीत की। हीरामल जी से मिला। २५ वर्ष पहले देखा था, पहचान लिया। ११ वजे रवाना होकर २ वजे डीडवाना पूगा। रास्ते में कई गाँवों में कुवें देखे। इस अंचल के लोग परिश्रमी और स्वस्थ हैं। रामकुमार जी वाँगड़ से वँगले में मिला। ७५ वर्ष के हैं। वीमार से हैं। अभी भी कारोवार का मालूम रखते हैं। इन्होंने डीडवाने में १०-१५ लाख रुपये कॉलेज, स्कूल, अस्पताल में खर्च किये हैं। जोधपुर के अस्पताल में भी ८ लाख दिये हैं।

इसी तरह शायद कलकत्ते में भी ७-८ लाख खर्च किये हैं और पुष्कर में भी १० लाख खर्च किये होंगे। ३ वजे चलकर ४ वजे कूचामन पूगा। वहां गरम बूंदिया-जलेबी खाकर पेट भर लिया। ५॥ वजे सांभर पूगा। झील देखी, पानी एकदम खारा है। सांभर से ६॥ वजे चला। आगे एक मील पर मोटर खराब हो गयी। पैदल ही चला। रात के ९ वजे एक बस में बैठकर १० वजे जयपुर पूगा। ११ वजे तक अखबारों को पढ़ता रहा। वाटर वोर्ड के वारे में काफी लिखा है।

जयपुर

१ मार्च : कलकत्ते फोन किया। स्मिथ साहव का केस उलझ गया है। मन में एक रकम की चिंता सी वन गयी है। कलकत्ते जल्दी जाने की सोच रहा हूँ। शायद ४-५ तारीख तक रवाना हो जाऊं। सुवह अखवार देखा, सुखाड़िया जी जीत गये हैं। मन में कुछ शांति पहुँची।

जयपुर

३ मार्च : ७॥ वजे सुवह सुखाड़िया जी के घर नारायणी देवी से मिलने गया। चाय का डिव्वा उन्हें दे दिया। वर्मा जी के वारे में काफी वातचीत हुई। ९॥ वजे अंदाज भागीरथ जी के साथ व्यास जी के घर गया। प्रायः २ घंटे तक उनके ऑफिस में वातें होती रहीं। वाटर वोर्ड के वारे में उनकी राय है सक्सेस नहीं होंगे। पार्लियामेंट के वारे में उन्होंने कहा कि मैं जाने की चेष्टा कर रहा हूँ। मैंने चुप्पी रखी। माथुर और कुंभाराम भरोसे लायक हैं या नहीं अभी धारणा नहीं वना पाया हूँ। ऑफिस का काम कर रहा था कि कुंभाराम जी आ गये साथ में कमला वेसीवाल भी थीं। रात में ९ वजे से १२ वजे तक मीटिंग थी। आज आदमी कम थे।

कलकत्ता

७ मार्च : भागीरथ जी ने कहा कि पार्लियामेंट में मेरे जाने की वात जोर से उठ रही है। गोविंदजी ने चाय पर कहा कि अपनी पार्टी छोड़कर मेंवरी चाहने वाले अच्छे नहीं होते।

८ मार्च : आज होली है। आज से ५ वर्ष पूर्व होली पर यूरोप में था। फिर जाने की कई वार इच्छा हुई, पर जा न सका। देश की होली देखे तो शायद ३० वर्ष हो गये। विश्वमित्र अखवार विरोध में खूब लिखता है।

१० मार्च : ऑफिस रेगुलर जाता हूँ। शाम को वसंती वेहोश हो गयी। काफी चिंता हो रही है। लड़की कैसी-कैसी होती सी लगती है। इन लड़कियों के साथ अगर राजस्थान के देहाती लड़कियों की तुलना की जाय तो काफी फरक मालूम देता है।

११ मार्च : सुमेर जी चौधरी के गया। उनकी लड़की की शादी है परंतु पास में रुपये नहीं हैं। १००० रुपये भाई जी ने दिये हैं। ४०० रुपये मैंने भी दिये। ३०० रुपये फिर दिये। गरीवी दुनिया में वहुत खराव चीज है। आज से २७ वर्ष पहले एक दिन भगवानदासजी चौधरी के पास ५-७ हजार की मदद के लिए गया था। उन्होंने नाहीं

कर दी थी। आज उनके लड़के की ऐसी हालत है, समय का चक्कर है। परन्तु रुपयों में ही सुख है, ऐसी बात तो नहीं है।

१४ मार्च : सुबह हीरालाल जी शास्त्री से मिलने गया। और लोग भी थे। उन्होंने चंदे के लिये कहा। मैंने कल ११००) रुपया का कह दिया। कैसा ही लगा, क्यों इतनी जल्दी हां कर लेता हूँ, कुछ भावना सी बन जाती है। स्मिथ साहब का केस खराब होता जा रहा है।

१५ मार्च : दिन में स्मिथ साहब बहुत उदास था, मेरा भी मन खराब हो गया। २-३ घंटे तक शर्मा जी के पास था। उनको नक्की करने के लिये कहा। शाम को हीरालाल जी शास्त्री के पास गया। उन्होंने रुपये इकट्ठे करने को कहा। मैंने भी एक रकम हां भर दी। मेरे में कमजोरी है कि काम पूरा नहीं पड़ता, जानते हुए भी हाँ कर देता हूँ।

१६ मार्च : ९ बजे सोसाइटी में हीरालाल जी शास्त्री का भाषण सुना। उनसे बातचीत की। ९॥ बजे बी० सी० राय से मिलने गया, मातादीन जी के साथ। वे व्यस्त थे मिल न सका।

२१ मार्च : आज राजस्थान जल-बोर्ड के बारे में सोसाइटी में मीटिंग थी। मैं भी काफी बोला। १५ दिन के लिये स्थगित हो गयी। परंतु जल बोर्ड उन लोगों को छोड़ना ही होगा।

२ अप्रैल : ९ बजे सोसाइटी की मीटिंग में गया। काफी झगड़ा-लड़ाई हुई। सारे दिन मन में खिन्नता भी रही। भागीरथ जी, गोरधन दास जी बिन्नानी ने सोसाइटी से इस्तीफा दे दिया है, मैं भी देने का विचार कर रहा हूँ।

रेल, चित्तौड़

५ अप्रैल : सुबह ३। पर जयपुर पूगे। मातादीन जी उतर गये। हम लोग अजमेर ८॥ बजे पूगे। ९ बजे की ट्रेन से रवाना हुए। सोढानी जी वगैरह सभी साथ थे। २॥ पर चित्तौड़ पूगे। स्टेशन पर भोगीलाल जी पांडिया, माणिक्यलाल जी वर्मा, सुखाड़िया आदि सब लोग थे। स्टेशन से डेरे पर ४ बजे पूगे। वहां मास्टर बलवंत सिंह जी, रामरतन जी, शोभारामजी, अलवर वाले बृजसुन्दर जी और ओंकार जी आदि सब मिले। मातादीन जी काम करने में काफी होशियार हैं।

६ अप्रैल : काफी सर्दी है। कमलनयन जी बजाज और कुंभारामजी से मिला, वैद्य अमृत लाल से भी, पेप्सू की चंदावती जी और कुंभारामजी की पत्नी से भी। कमलनयनजी से जान-पहचान हुई। आदमी बुरे नहीं हैं, बहुत चतुर भी नहीं। १२ बजे गाड़ियाँ लेकर सम्मेलन देखने गया। बहुत बड़ा जुलूस था। काफी आदमी थे, सबके गुलाबी साफे बंधे थे। हरिभाऊ जी उपाध्याय मिले। उन्होंने अजमेर बुलाया है। जुलूस में और लोग भी थे। ज्यादा भीड़ थी। मीटिंग की चिंता सी हुई। वापिस घर आकर सोये। टेन्ट

में गरमी थी। किताब तो पढ़ नहीं सकता हूँ। ४॥ वजे वस से किले पर गये। साथ में रामाशंकर जी त्रिपाठी भी हैं। किले के ऊपर जाकर पंचायत की मीटिंग देखी। नेहरू जी बोल रहे थे, साधारण-सा। फिर कुंभाराम की बड़ी मोटर लेकर बड़ी मीटिंग में गया। अच्छा जलसा था। प्राय: ६०-७० हजार आदमी इकट्ठे थे। नेहरूजी के साथ जीमने आया। मैं एकदम उनके सामने बैठा। वर्मा जी ने नेहरूजी से परिचय कराया। ६६ वर्ष की उम्र में भी नेहरू जी में काफी फुर्ती सी है। मुरारजी देसाई भी जीम रहे थे।

७ अप्रैल : १० बजे महिला मंडल की मीटिंग में आये। ५॥ बजे मुरारजी देसाई, रविशंकर शुक्ला की मीटिंग में गये फिर सेठी जी के जीमने गये। ये मिनिस्टर ऑफ माइनिंग हैं। चलते-पुरजे होशियार आदमी हैं। उदयपुर में दिन में गरमी पड़ती है। वाइफ को फतह सागर और ऐतिहासिक स्थान दिखाये। उदयपुर इन लोगों को पसंद आया। सुखाड़िया जी से काफी वात हुई। उनमें उत्साह है। मुरारजीभाई वहुत अच्छा बोलते हैं, शुक्ल जी साधारण।

८ अप्रैल : सुवह कलकत्ते मदन से वात हुई। पाट का वाजार वापिस कुछ मंदा। नया पाट २९) रुपया है और सव खवर उसी तरह है। सोढानी जी से वात की, मीटिंग १३ या १४ को रखी है। अन्दाज १० वजे जीप में एकलिंग पूगे। सिसौदियों के कुल-देवता रहे हैं। मेवाड़ के इतिहास, वाप्पा रावल की वातें मन में घिर जाती हैं। यहां से ११ वजे नाथद्वारा पूगे। प्राय: एक घंटे थे। थोड़ा प्रसाद लिया। पुष्टिमार्गी वैष्णवों का प्रधान तीर्थ है। धन-वैभव की कमी नहीं। भक्ति-पूजन से अधिक प्रदर्शन की चाह इनमें है, ऐसी मेरी धारणा है। १२ वजे अंदाज हल्दीघाटी पूगे। बड़ा ही सुंदर स्थान है। भावना उमड़ आयी। कितने राजपूत मारे गये इस जगह पर, उनका निजी स्वार्थ क्या था? मर मिटने की आन थी उनमें। देश और धर्म के प्रति अटूट विश्वास और श्रद्धा। वादशाही वाग में गुलाव वहुत होते हैं। हल्दीघाटी में चेतक का चवूतरा देखा। आज ३७५ वर्ष की वात हो गयी। परंतु चेतक सवकी चेतना जगा देता है। कुछ गुफाएँ भी देखीं।

आबू

९ अप्रैल : सुवह ८॥ तक मोटर से आवू पूगे। साधारण ठंढ है। वाजार घूमा। ११ वजे तालाव में स्नान किया। २ वजे मंदिर का खाना खाया। भूख जोरों की लगी थी, राजा भी खाने के लिए चिल्ला रहा था। मैंने मन में सोचा कि जिन बच्चों को खाना मिलता ही नहीं उनके माता-पिता के मन की क्या स्थिति रहती होगी? मन में कैसे ही भाव आये। ३॥ वजे सोकर उठा। सत्यबाला जी, मातादीन जी और राजू सव कोई दिलवाड़ा मंदिर देखने गये। दिलवाड़ा शायद देवलवाड़ा का अपभ्रंश है। मन्दिर वहुत सुंदर वने हैं। कुछ हिस्सा कस्तूर भाई लाल भाई अव वनवा रहे हैं। बाजार घूमकर लौटा। थकावट थी। राजस्थान का इतिहास पढ़ता रहा। आवू अच्छी जगह है।

अर्बुदाचल इसका प्राचीन नाम है। पुराणों में उल्लेख मिलते हैं। मेरा मन यहाँ कितने दिन लगेगा, देखने की बात है। एक जगह टिक नहीं पाता।

१० अप्रैल : हवा-पानी अच्छा है। गरमी ऊपर में ८५° है, नीचे ६५°। बहुत ही अच्छी जगह है। बाजार साधारण सा है। वापिस आकर किताब पढ़ता रहा। इन आठ दिनों में राजस्थान और राजपूताना का इतिहास तथा अंग्रेजी की एक किताब पढ़ रहा हूँ। पैदल दिलवाड़ा का मंदिर देखने गया। वापस बस में आया। शाम को ८। बजे तक लाइब्रेरी में पढ़ता रहा। मेरा मन एक जगह नहीं लगता है। थोड़े दिनों बाद ही कैसा-कैसा होने लगता है। इस यात्रा में शायद १०००) रुपये खर्च होंगे, कुछ बेशी भी हो सकता है। कलकत्ते के सपने नहीं आते। आज रात में कुछ आये थे। राजस्थान के इतिहास पर लिखने की मन में आ रही है।

अजमेर

२३ अप्रैल : सुबह बापू जी के साथ गये। उनको सारी मिल दिखाने की व्यवस्था कर दी है। देख कर खुश हो गये। हीरालालजी से सारी बात हो गयी। लीज के लिये लिखापढ़ी चिरंजीलाल जी अग्रवाल से ३ बजे तक बैठ कर करायी।

कलकत्ता

२५ अप्रैल : लोगों से मिला। शाम को गद्दी गया। दिन में मिल लेने का एक रकम कह दिया। नहीं कहना चाहिए था। मेरी भूल है। वाइफ कुछ उदास-सी है। उसको अजमेर की मिल लेना पसंद नहीं है। दिन में रावतमलजी नोपानी, रामेश्वर जी नोपानी से मिला। उन्होंने कहा सौदा मंहगा है।

जयपुर

३ मई : अजमेर से साथ में ओंकार जी थे। ११ बजे पूगे। दिन में ३ बजे सुखाड़िया जी से मिले। ४ बजे से ५ बजे तक मोतीलाल जी से और ५ बजे से ६ बजे तक चिरंजीलाल जी से मिले। मिल के बारे में बातचीत की। मैंने कलकत्ते को लिख दिया है कि मिल का सौदा कैंसिल हो गया है।

कलकत्ता

१३ मई : मास्टर आदित्येंद्रजी मेरे यहां ठहरे हैं। उनसे राजस्थान की राजनीति के बारे में बात की। पाट का बाजार स्टेडी में है। शाम को कांग्रेस ऑफिस में अतुल्य बाबू से मिला। काफी देर तक बात हुई।

१४ मई : रात में आदित्येंद्रजी चले गये। उन्हें पहुँचाने स्टेशन गया। मैंने एक रकम से राजनीति के बारे में कह ही दिया। मेरा मन राजनीति में जाने का पक्का सा है।

शायद चांस भी मिल जायगा, ऐसा मालूम देता है। अजमेर वालों का तार आया पर भाई जी का मन नहीं है।

२० मई : सोसाइटी की मीटिंग थी। मैं भी काफी जोश में था। एक रकम जीत हम लोगों की हुई। सोसाइटी का नुकसान हो रहा है। ऐसा मालूम देता है। सेवा-संस्थाओं में अब अपने समाज के लोग ध्यान कम देते हैं। भावना वदलती जा रही है। ऐसा लगता है कि आगे चलकर अच्छे कार्यकर्त्ता नहीं रह जायेंगे या काम नहीं कर पायेंगे।

२१ मई : सुवह मैदान जाकर कुंजर किया। नाक में वत्ती की। छींकें आयीं। तबीयत कुछ हल्की मालूम देती है। ८॥ वजे सोसाइटी की मीटिंग में आया। ९॥ वजे मारवाड़ी सम्मेलन में गया, वहां अगले वर्ष के लिए सभापति चुना गया। पाट का वाजार मंदा है, नये पाट का काम २५) मन में हुआ।

२३ मई : मैदान गया। थोड़ी कसरत की, शीर्षासन भी किया। ७॥ वजे रामेश्वर जी अग्रवाल के घर गया, २५००) रुपया जल वोर्ड का हुआ। बी० के० नेवर से मिला चंदे की वात की, कें० पी० गोयनका जी से भी चंदे की वात की। पाट का वाजार इन दिनों मंदा है।

२४ मई : दिन में ईद की काफी चहल पहल थी। ३ वजे मजेस्टिक में 'उड़न खटोला' देखने गये। वहुत साधारण सा तमाशा था। मगर काफी भीड़ थी। कैसा ही लगा। सुवह किशनलालजी थिरानी के घर गया। जलवोर्ड के लिये ५०००) रुपये मिले। २५००) रुपये रघुनाथ राम जी महादेव से भी मिले। उनके घर भी गया था। कसरत शुरू की।

२५ मई : पाकिस्तान ने सैदपुर वेलिंग कं० का लाइसेंस दे दिया है। नये पाट का तथा पुराने पाट का वाजार वहुत मंदा है। हम लोगों के पाट पोते-मत्थे कुछ भी नहीं है।

२७ मई : देश जाने का पक्का विचार है पर तय नहीं हो रहा है। अजमेर का तार है, वुलाया है। ७५० गाँठें पाट वेची और १००० मन लूज धुवड़ी का वेचा।

सीकर, राजलदेसर

६ जून : सुवह ४॥ वजे कुंभारामजी के साथ चला। फतहपुर, रतनगढ़ होता हुआ ६॥ शाम को राजलदेसर पूगा। कुवें, वाग, वावड़ी वगैरह सव देखे। राजस्थान में बड़ी-वड़ी झीलें हैं। वृक्षारोपण पर ज्यादा ध्यान दिया जाय तो वहुत लाभ हो सकता है, सुखाड़िया जी से वात करूँगा। इनमें वरसात का पानी काफी जमा हो सकेगा। मीठे पानी से सिंचाई भी ठीक रहेगी।

सरदार शहर

८ जून : रेडियो जी के घर ७ वजे मीटिंग थी। कई आदमी इकट्ठा हुए। कांग्रेस के वारे में वात की और भी जेनरल वातें हुईं। दीपचंद जी नाहटा के घर चंदनमल जी वैद के साथ गया। रात में जोर की आंधी आयी थी।

जयपुर

१० जून : सुबह ट्रेन में ५॥ वजे जगा। गाड़ी ३ घंटे लेट थी। एयर कंडिशन में सो गया। १४) रु० भी लगे, परंतु पूरा आराम रहा। १२॥ वजे जयपुर पूगा।

११ जून : सुबह ७ वजे प्राकृतिक सदन में गया। वहाँ से ४ मील पर म्योरवाड़ा गया। हजारी लाल शर्मा मिले। उन्होंने कहा कि आप इस जगह कैसे आये, आप तो सोशलिस्ट हैं। उत्तर दे सकता था पर चुप रह गया। वहस करना ठीक नहीं। लक्ष्य एक है, मार्ग कई। रास्ता वदलने से लक्ष्य वदलता नहीं। सिद्धान्त अटल रखना चाहिए। ३॥ वजे ढेवर भाई से वद्रीनारायण जी सोढानी के साथ मिला। ५ मिनट वात हुई। रात में हीरालाल जी शास्त्री से मिला, ढेवर भाई भी उनसे मिले। ये लोग उनकी काफी गरज सी करते हैं।

कलकत्ता

११ जुलाई : *आज सोसाइटी की मीटिंग थी, नहीं गया, मन नहीं करता।* जयप्रकाश वावू और गंगाशरण जी की चिट्ठियाँ थीं। शाम को सम्मेलन की मीटिंग में गया। वहाँ से सीताराम जी सेकसरिया, भँवरमल जी सिंघी के साथ फ्लूरी गया। २००० मन पाट की मंदी सोहनलाल जी से ।।J मन की दिसम्वर की खायी। हम लोगों के १२००० गांठें विलायत की और १३००० मन पाट यहाँ का मत्थे है। सुवह एस० पी० जैन जी के गया।

बम्बई

१२ जुलाई : ८॥ पर साँलवराम जी मोर के गये। उनके साथ सीताराम मिल देखने गये। वहुत अच्छी मिल है। मेरे तो जँच गयी। कल हीरजी मिल देखी थी, जँची नहीं। फिर १२॥ वजे तक वुलेन मिल देखी, वहुत घाटा दिया है, १५ लाख तक वेच रहे हैं। पहले का ४० लाख रुपया घाटे का है। ३ वजे सीताराम के ऑफिस गये। सांवलराम जी से वात की। उनका मन मिल में पार्टनरशिप में रखने का है।

अहमदावाद

२० जुलाई : २ वजे सागरमल जी शुभकरण की दुकान पर गया। वड़ा कारवार है। उनकी मोटर से अहमदावाद देखा। सावरमती आश्रम देखा। महात्मा जी यहाँ १० वर्ष रहे थे। उनके पास क्या था? किंतु न वल की कमी रही और धन की। जनवल उन्हें मिला, धन की तो वात क्या। वे कैसे इतनी सिद्धि पा सके, समझने की वात है। कांकरिया पार्क भी देखा। रात ९॥ वजे की गाड़ी से रवाना हुए। अहमदावाद पुराना परंतु कारवार का वड़ा शहर है।

३० जुलाई : मिल का सौदा तो एक रकम कल ही तय हो गया था। आज डेवलपमेंट यह हुआ कि मोर जी ने आठ आने की जगह चार आना ही रखा। यह हमारे हक में और भी अच्छा हुआ। घरवाले संतुष्ट हैं। मिलवाले काम से इज्जत जरूर वढ़ी है।

१ अगस्त : मिल को सब कोई बहुत ही अच्छा कहते हैं। कलकत्ते, बंबई में वैसे काफ़ी फरक सा है। यहाँ जितने मिलने-जुलने वाले हैं, वहाँ नहीं हैं। दूसरे, यहाँ मारवाड़ियों का प्रभाव-सा है। बंबई की यात्रा सफल रही और खूब खुशी मन से चला।

१६ अगस्त : कल गोवा में ३० आदमी गोली से मारे गये। काफी सनसनी है। पाट का बाजार खुला था, २९।।) अंदाज तैयारी के दाम।

१८ अगस्त : आज १२०० मन पाट २७।।।=) में लिये। दिन में बाजार मजबूत था। १००० गांठ देसी १७०) रु० में बेची। शाम को ढाई घंटे पांचीलाल जी के साथ ताश खेला। रात में एस० एन० का बंबई से फोन था, मुझको बुलाया है। पाट हम लोगों के ३४००० मन इंडिया मत्थे हैं। फाटका २२५०० पोते है।

३० अगस्त : सुबह लेक पर घूमने गया। घनश्यामदास जी बिड़ला से बात हुई। क्लॉथ मिल के फेवर में हैं।

१५ दिसम्बर : जे० पी० आये, शाम को ५।। बजे डॉ० लोहिया की मीटिंग में गया। पी० एस० पी० के अगेंस्ट में बोलते थे, मुझे खास अच्छा नहीं लगा। सुबह जे० पी० से मिलने गया। बिहार के एक सज्जन एम० पी० सिन्हा हैं। उनको कोल माइन पर रखने का कहा है। वाइफ के तकलीफ है।

२२ दिसम्बर : आज गंगाजी नहीं गया। ऑफिस में कामकाज कमती-सा है। बाजार समान है। रात में स्वप्नों में एक रकम चिंता-सी लगी रहती है। मन में शांति नहीं है। चाय का बाजार मंदा है। चिरंजी के लिए लड़की देखने गया, बहुत अच्छी है। शाम को घर पर भी ये लोग आये।

२३ सितम्बर : नंदलाल जी भुवालका के घर गया। भागीरथ जी, मातादीनजी खेतान, गोरधनदासीजी बिन्नानी भी आये थे। ऑफिस गया। ५०) रु० एक स्टुडेंट को चंदे में दिए। दिन में १८०० मन पाट कवर किया है। बाजार समान से स्टेडी है। ऑफिस में काम होता है। ५४ की खोई हुई डायरी मिली परंतु खराब कंडीशन में।

३० सितम्बर : तबीयत ठीक है। सुबह गंगा जी जाकर तेल मालिश कराया। बदन में थोड़ी सुस्ती सी मालूम देती है। मुझे आदत सुधारनी चाहिए नहीं तो एक दिन बड़ा धक्का लगने वाला है।

१ अक्तूबर : ऑफिस गया। कामकाज कमती, बाजार समान। शाम को ३ बजे सोसाइटी की मीटिंग हुई। काफी गरम वातावरण रहा। बजरंग जी, तुलसीराम जी तथा पाटोरिया जी का रुख खराब था। लोग उत्तेजित थे। मैं बोला, शायद अच्छा बोला, सब लोग ऐसा ही कह रहे थे। आखिर, मीटिंग अच्छे वातावरण में खत्म हुई।

३ अक्तूबर : दिन में फाटका किया ४००० मन का २४।।-)।। मेरा ध्यान तो तेज नहीं है। आज अखबार में विश्वमित्र में काफी चर्चा सोसाइटी की है, मेरे विरोध में। तबीयत काफी अच्छी है। पाट के काम की थोड़ी सी चिंता है।

११ अक्तूबर : सोसाइटी के चुनाव की झंझट सी हो रही है। सुबह भागीरथ जी के साथ एक-दो जगह चंदे में गया। शाम को राधाकृष्ण जी कानोड़िया की ऑफिस में तुलसी राम जी के साथ काफी बातें हुई। पाट की चिंता फजूल में लगी रहती है। इससे मन में कैसा मालूम देता है।

१२ अक्तूबर : तबीयत सुस्त थी। डॉक्टर को दिखाया। उसने कहा, आपको रतौंधी हो रही है। दवा लेनी चाहिए। समझ में नहीं आता, रात को तो ठीक दिखता है फिर रतौंधी कैसे? रात में दस बजे सो गया।

१७ अक्तूबर : घनश्यामदास जी से बात की। नन्दू की चिट्ठी आयी है। भाई जी को कागद दिया। ओंकार जी बोहरा से टाइपराइटर लिया, ४५०) रु० में।

२१ अक्तूबर : पाट में पोते वाले उठायेंगे। पाकिस्तान के पाट में नफा है, यहाँ नुकसान।

२३ अक्तूबर : ९ बजे से १०। बजे तक ऑफिस में विश्वमित्र के लिए पाट का लेख लिखा। भागीरथ जी कानोड़िया से थोड़ा सा संकोच हुआ क्योंकि चंदे की चेष्टा पूरी नहीं कर पा रहा हूँ। पाट का बाजार गरम है, पाट मेरे मत्थे है। रात को चिंता से स्वप्न आते रहते हैं। वैसे भी खुशी नहीं है। भाई जी के पत्र आते रहते हैं। सीताराम मिल का ६-७ लाख बाकी रह जायेगा।

२७ अक्तूबर : सुबह मैदान गया फिर चंदे में एक-दो जगह गया। बाजार समान है। फाटका २५≡) मैंने लिया नहीं। १२ बजे एयरपोर्ट पर एस० एन० के साथ आया। बारिश आ रही थी। न जाने क्यों इस बार बंबई जाने का उत्साह सा नहीं है। १।। पर हवाई जहाज उड़ा। फाटका २००० मन लेने की कह दी थी, ऑफिस में कुठारी जी से। ६।।। पर बंबई पूगे। सामने राम रिछपा मोटर लाये थे। भाई भी पूना से आ गए हैं।

बम्बई

२८ अक्टूबर : सुबह रामेश्वर जी बिड़ला से भाई जी के साथ मिलने गया। काफी देर तक अच्छी तरह बातचीत की। शाम को गरबा डांस देखने के लिए गये। गुजराती अमेच्योर थे। सब मिला कर बहुत अच्छा था।

३१ अक्टूबर : मुझे इस बार बंबई अच्छा नहीं लग रहा है। अकाउंट का झमेला तो है ही भाई जी को भी ज्यादा स्ट्रेन पड़ता है। पाट का बाजार गरम है। मिल के हिसाब की चिंता लगी रहती है। देखें क्या होता है। भाई जी के पास किसी भाई का रहना जरूरी है। तबीयत और मन भी बहुत स्वस्थ नहीं है।

१ नवम्बर : मेरे मन की कमजोरी है कि एक जगह जमकर नहीं रह पाता, दिल्ली जाने का मन हो रहा है। पाट-बोरे का बाजार बहुत तेज सुना है। कलकत्ते का सारे समाचारों का पत्र मिला।

२ नवम्बर : अकाउंट के बारे में बातचीत की। काम सलटना मुश्किल सा जँचता है। नन्दलाल जी ४ बजे ऑफिस में आने की कह गये, आये ६ बजे। फिर भी कागज नहीं लाये। पाटका बाजार गरम सुना, मन में चिंता हुई। हम लोगों के मत्थे रह गया है, नुकसान लगेगा। मन यहाँ लगता नहीं पर संकोचवश भाई जी से कुछ कह नहीं सकता हूँ। यहाँ काम कर के हमने गलती की।

८ नवम्बर : बूबना जी से मिल के बारे में बातचीत हुई। अकाउंट नक्की होने में देर है। बैंक जाकर कागज सही किया। बंबई में निकम्मा बैठा रहना पड़ता है परंतु अकाउंट वाला काम भी जरूरी है।

१२ नवंबर : मिल में हम लोगों के ८ लाख बेशी चले गये। मैंने साँवलराम जी, नंदलाल जी से कह दिया। एस० एन० को कलकत्ते रुपये के बंदोबस्त के लिए फोन किया। पाट का बाजार बहुत गरम है। पाट में काफी घाटा है। मेरी घड़ी गुम गयी है। मन में कैसी एक बेचैनी-सी महसूस हो रही है।

१३ नवंबर : कलकत्ते के बाहर दीवाली बहुत वर्षों के बाद मना रहा हूँ। दिन में कई जगह घूमने गया। कलकत्ते से यहाँ ज्यादा चहल-पहल रहती है। फूलजी जेठाभाई मार्केट तो देखने लायक है, जवेरी बाजार भी। मिठाईवालों की मिठाइयाँ अजब रंग से सजी हैं। ११ बजे मिल में गये। वहाँ बच्चों का फंक्शन था। जब तक बैंक का बंदोबस्त और स्टोर्स का अकाउंट नक्की नहीं हो जाता, चिंता सी लगी रहेगी।

१४ नवंबर : कई जगह मिलने गया, मित्र, परिचित और विशिष्ट लोगों से। ४ बजे सम्मेलन में गया। बंबई के प्रायः सारे मारवाड़ी थे। मैं बहुतों को नहीं जानता था। ऐसे सम्मेलन सामाजिक दृष्टि से बहुत उपयोगी हैं। शायद, इसीलिए अपने यहाँ त्योहारों पर आपस में मिलने-जुलने की परंपरा बना दी गयी है।

१५ नवंबर : सुबह ६ बजे मैदान गया। वापिस आते दफे ताश के एक गैंग में फँस गया। एक जगह ताश के पत्तों पर दाँव लग रहे थे। मैं खड़ा देखने लगा, साथ में मुरलीधर जी भी थे। लोभ बड़ा हो या छोटा, मनुष्य की कमजोरी तो है ही। मैंने भी दाँव लगाये। दो बार में ४०)रु० दिए और नहीं थे, नहीं तो शायद और भी दे देता। आदमी जो खड़े थे, खेलने वालों से मिले हुए थे। मन में पश्चात्ताप हुआ। गलती मेरी थी। झेंप भी रही। मन-मन में सोच रहा था, मुरलीधर जी कहीं कह न दें।

१७ नवंबर : मेरा मन बंबई में लग गया है। मिल ठीक से नहीं चल रही है। भाई जी और साँवलराम जी में आपस में गरमा-गरमी हो गयी।

बम्बई, रेल

२० नवंबर : शाम को ६॥ वजे स्टेशन पुगा। गाड़ी में काफी आराम रहा। भाड़ा तो ज्यादा लगता है। रात में १० वजे तक वात करते रहे। नींद नहीं आयी इसलिए किताव पढ़ता रहा। वंवई २२ दिन हुए जिस काम के लिए आया था वह तो पूरा नहीं हुआ परंतु कुछ हुआ भी। मिल एक रकम चल रही है। सुवह वंशीधर गोपालदास जी से सज्जन मिल के लिए मिला था। मेरे तो हर एक चीज जँच जाती है। भाई जी को कहा है। देखें क्या होता है। वंवई कलकत्ते से ज्यादा अच्छा शहर है। परंतु कलकत्ते जैसी मेरी कंपनी यहीं नहीं है।

नई दिल्ली

२५ नवंबर : दिल्ली में सर्दी ज्यादा है। जहाँ ठहरा हूँ, भीड़ है। ६॥ वजे शाम को, 'झनक-झनक पायल वाजे' सिनेमा देखा। शास्त्रीय नृत्य और गाने हैं, रंगीन है, अच्छा है। आज शाम को एक दुकान पर समोसा वगैरह खा लिया, गलती की। मातादीनजी से भेंट हुई, सत्यवाला भी वहीं थी। सुवह वलवंत सिंह जी मेहता के घर गया। वहाँ से पार्लियामेंट गये। आज पहली वार देखा। अच्छी व्यवस्था थी पर वैसे खास प्रभावित नहीं हुआ। शायद १॥ वर्ष वाद मैं भी इसमें आ जाऊँगा।

कलकत्ता

२९ नवंबर : वुल्गानिन और क्रुश्चेव रूस से आए। अभूतपूर्व स्वागत कहा जा सकता है। हम लोगों ने जयदयाल हरगुलाल के मकान से देखा। अपार जनसमुदाय, अटूट स्नेह और सम्मान। मेरी धारणा है, रूस के प्रति भारतीय जनता का विश्वास वढ़ेगा। सुवह मैदान में व्यास जी मिले। मैंने जीमने के लिए निमंत्रण दिया। शाम को १४ आदमी जीमने आये। विश्वमित्र के कृष्णचंद्रजी अग्रवाल भी जीमने आये। एक रकम अच्छा फंक्शन रहा। शाम को व्यास जी के साथ 'पथेर पांचाली' देखने गया। करुणा उपजती है। सिनेमा में सत्यजीत राय का प्रयोग नये ढंग का लगा।

८ दिसंवर : सुवह ९ वजे लिलुआ गया, रामेश्वर अग्रवाल के। फिर लाल वावा के गया, ५००) रु० दिये। अच्छे महात्मा हैं।

११ दिसंवर : शाम को रामलीला नृत्य देखने गया। कृष्णचंद्रजी अग्रवाल का किया हुआ। अच्छा था।

१४ दिसंवर : पाट का थोड़ा सा सौदा कर लेता हूँ। उसमें साधारण से घाटे नफे से ही मन में उदासी आ जाती है। सौदा नहीं करना ही अच्छा है। पुरानी आदत है, मन हो जाता है। कुछ कार्ड खरीद कर विलायत भेजे। रात में विक्टोरिया मेमोरियल ताश खेलने जाता हूँ। कुछ रिक्रियेशन हो जाता है।

१५ दिसंबर : दिन में ३ बजे गिलैंडर्स में पैरिश और विल्ज से मिला। चेरा वे लोग वेंच रहे हैं। मैंने थोड़ी जल्दी की। रात में मदन वगैरह से बात की, उनको लेने की जँच गयी है। रिपोर्ट देखे, नो लॉस, नो प्रॉफिट है।

१६ दिसंबर : पाट का थोड़ा सा काम कर लिया, उसकी चिंता ही है। बाजार मजबूत है, मिलों में काम है। २॥ बजे गिलैंडर्स में गया, बागला जी को साथ लेकर बातचीत की। २१,०००) रु० में सौदा हो गया। ५,०००) रु० ज्यादा लगे। कल मैंने कह दिया था, नहीं तो १६,०००) रु० में ही होता।

१७ दिसंबर : पैरिश साहब के साथ डिगम के ऑफिस गया। ११॥। बजे छोटे ऑफिस आया। शेयर लिस्ट देखी। शायद ८०,०००) रु० तक शेयर आ जाय, ऐसी ही संभावना है। ७॥ बजे तक दीपचंद के घर था, फिर मैदान गया। सुबह भागीरथ जी मिले थे।

२१ दिसंबर : दीपचंद चांडक के घर दो बार गया। उसके बड़े लड़के शंकर की कुछ खबर नहीं है। मन में उदासी सी आयी। दीपचंद की गलती से चला गया। दीपू बेवकूफ है। हर किस्म का काम कर लेता है। बहुत बुरा-भला कहा। पाट का बाजार समान से स्टेडी-सा है। २,००० मन का पाट ॥~) में ले लिया। फाटका में कमा नहीं पाता हूँ। मिलों में काम कमती है। डॉ० प्रफुल्लो घोष आए, चंदे के लिए।

२२ दिसंबर : बाजार समान था। २,००० मन पाट २७॥)॥ में लिया। शाम को ५॥ बजे के० एम० मुंशी की टी० पार्टी में गया। मुझे ठीक जगह नहीं बैठाया, मन में कैसा-सा ही लगा। ६॥ बजे अनामिका में 'पन्त प्रवाहिनी' में गया। वहाँ मन खास नहीं लगा।

३० दिसंबर : सुबह शांति प्रसाद जी जैन के घर गया। राजस्थान के बारे में बातचीत की। अच्छे मूड में थे। नवयुग का भार लेने को कह रहे हैं, जलबोर्ड को भी रुपये देंगे। घर आकर चेरा की मीटिंग में गया। चेरा के राजा आये थे, एकदम देहाती-से। शाम को उनसे मिलने होटल गया। कुछ फल-मिठाई ले गया। बिरजू आसाम से आया, कहता था, खास जीतवाली चीज नहीं है। बहुत झंझट है।

१९५६

कलकत्ता

१ जनवरी : सुबह मैदान गया। दिन में श्री चंद जी के साथ बीकानेर के कवि भोजन पर आये। परिचय बढ़ा। मुझे राजस्थानी काव्य में विशेष ओज मिलता है। दिन में पाट के बाड़े वाले पकड़े गये हैं। पेमेंट वगैरह बन्द है। शेयर बाजार भी मंदा है। भाव ३८) रु० अंदाज है। मालूम नहीं, पेमेंट होगा या नहीं। वर्ष का पहला दिन है। अच्छा काम कर सकूँ, परमात्मा से प्रार्थना है।

२ जनवरी : एलिसन साहब से मिला ६॥ बजे। उपहार दिए, खुश हो गया था। दिन में स्कूल गया। भर्ती हो रही है। शेयरों के लिए मन में तकलीफ सी हो रही है। चंदेवाले भी बहुत आ रहे हैं। दिन में गद्दी गया था। 'विश्वमित्र' को लेख दे आया। पाट का बाजार गरम हो रहा है।

३ जनवरी : शेयरों का पेमेंट हो जायगा, ऐसा सुना जा रहा है। 'विश्वमित्र' में मेरा लेख आया। इस बार साधारण सा ही था। मैं चाहता हूँ कि लेख एक के बाद दूसरा लिखता रहूँ पर कर नहीं पाता। बी० एन० एलियास वाले से ३ बजे मिला। कंपनी इंश्योरेंस वाली मिल सकती है परंतु हिम्मत नहीं हो रही है। टैक्सेशन की बात भी अखबारों में रोज खराब सी ही आ रही है। ज्वाला प्रसाद जी से शेयरों के बारे में बात की। पेमेंट शाम को सारी आ गयी, मन की दुश्चिंता मिट गयी।

४ जनवरी : फाटकेवाले अभी तक जमानत पर हैं, परंतु कारबार ठप्प है। ३५००) रु० शेयर के आज और दिए हैं, भाव ३७॥।) अंदाज है। बीकानेर महाराज की चिठ्ठी है, वे खड़े हो रहे हैं।

५ जनवरी : सुबह मैदान गया। वहाँ से ९ बजे तक पुरुषोत्तम जी के ताश खेलता रहा। फिर ऑफिस आ गया। बैंकों की क्लियरिंग बंद है। पाट का यहाँ का काम प्रायः सलट गया है। ३ बजे आर० मोर की ऑफिस गया। रंगलाल जी बगड़िया, गोविंद जी कानोड़िया, साँवलरामजी मोर से मिला। ५॥ बजे फिर ऑफिस गया। कामकाज होता है। दिसंबर तक दलाली के १५० हुए, ५० और हो जायेंगे। भागीरथ जी कानोड़िया

से मिला। वाइफ की तवीयत ठीक नहीं है। पत्रोत्तर में देरी करता हूँ, ठीक बात नहीं। वीकानेर से चंदेवाले आए हुए हैं।

६ जनवरी : मुझे पार्लियामेंट की सीट मिल रही है परंतु झंझट तो है ही।

९ जनवरी : सुवह वापू जी का फोन आया। मेरे कहने से मित्रों को रुपये दिए गए हैं। एक मित्र से रुपये मँगाए, शायद कड़ा जवाव मिला। वापू जी वहुत नाराज थे। मैंने शाम को उन्हें कहा कि रुपये वापस मिल जायेंगे। परंतु गलती मेरी है। ऐसे वाकयों से ज्वायंट फैमिली रिलेशन्स पर धक्का सा लगता है। दिन में जे० पी० ११ वजे आए। स्टेशन गया था। ६ वजे जे० पी० के साथ प्रफुल्ल घोष के गया। १० वजे जे० पी० को पुगाने स्टेशन गया।

१० जनवरी : सुवह मैदान देर से गया। स्कूल गया। लड़कों के वारे में वातचीत की। पहली क्लास का एक सेक्शन वैठाया। मेघराज सेवक आए थे, १०००) वीकानेर विद्या-मंदिर वालों को दिया। सुवह झुनझुनवाला जी के घर गया, उनको स्कूल ले गया। एक रकम अच्छा काम किया। फिर दीपचंद के गया। वच्चों से मिला।

११ जनवरी : पाट का वाजार थोड़ा मंदा सा है। दिन में १००) रु०, गजानन वर्मा, वीकानेरवालों को और १००) नवजीवन प्रेस भेजा। १५००) सत्यवाला जी को दिए। भागीरथ जी कानोड़िया से मिला।

१८ जनवरी : कल रात वुखार था। सुवह ६ वजे उठा। दिन में कितावें पढ़ता रहा। विनोवा जी की कितावें भी पढ़ीं। आचार्य चतुरसेन शास्त्री का 'वयं रक्षामः' शुरू किया। वहुत अच्छा लगा। एक नया दृष्टिकोण है। शाम को वेणीपुरी जी और वद्रीवावू आए थे। मन लग गया। मातादीन जी और प्रभुदयाल जी भी आए। पाट का वाजार समान है, कामकाज कमती। रात में वुखार नहीं था।

१९ जनवरी : वैंक की हड़ताल आज से खुल गयी है परंतु सरकार ने इंश्योरेंस कंपनी ले लिए, इससे शेयरों में मंदी है। मालूम नहीं क्या होगा। टैक्स तो वढ़ेंगे, इसमें संदेह नहीं। ऐसा लगता है, आगे से इंडस्ट्री की वढ़ोतरी में पूंजी फँसाने में लोगों को डर रहेगा। या तो सरकार को सव इंडस्ट्री लेनी पड़ेगी, नहीं तो उसे वहुत धन इनकी वढ़ोतरी के लिए देते रहना पड़ेगा। टैक्स के रुपए इस तरह फँसते जायेंगे।

२० जनवरी : वीस-वाईस दिनों के लिए जा रहा हूँ। कलकत्ता छोड़ते कैसा मालूम देता है। राजा को भुला-ठगा के रखा है, कल ले जाने को कहा है परंतु उसे तो कल भी नहीं ले जा रहा हूँ। वुखार नहीं है परंतु कमजोरी मालूम देती है।

वनारस

२१ जनवरी : सुवह १० वजे वनारस पूगा। रास्ते में कोई तकलीफ नहीं थी। शारदा और उसकी छोटी वहिन सत्यभामा मेरे साथ थी। स्टेशन पर गोपाली वावू वगैरह आए

थे। मोटर से घर आया। महावीर, चिरंजी, माँ जी सब से मिला। दिन में सारनाथ गए। पुरानी जगह है। बुद्ध ने दुनिया को अपना नया संदेश यहीं पहली बार दिया। आज बुद्ध की वाणी दुनिया के कोने-कोने में गूंज रही है।

रतनगढ़, चूरू

२३ जनवरी : सुबह ५।। बजे पूगा। गोलछों की महफिल में ठहरा। जे० पी०, गोकुल भाई साथ थे। यहाँ बनवारी लाल बेरी आदि भी थे। ९ बजे मीटिंग शुरू हुई। खास बेशी आदमी नहीं थे। १० बजे हरचंद राय जी के गया। नाराज हो रहे थे। कहने लगे, पहले क्यों नहीं आने की बात कही। वहीं खाना खाया। १००) रु० उन्होंने मुझे दिए, वह प्रभावती जी को दे दिए, विद्यालय के लिए। २।। बजे चूरू के लिए रवाना हुए मोटर से। जे० पी०, चंदन मल जी बैद एम० एल० ए० तथा हीरालाल जी सेठिया के साथ। ४।। बजे लोहिया कॉलेज में मीटिंग हुई। ६।। बजे चौक में भी मीटिंग हुई। साह जी का मंदिर देखा, अच्छा बना है। चूरू में कई लोगों से मिला।

राजगढ़, तारानगर, सरदारशहर

२४ जनवरी : चूरू से राजगढ़ ८ बजे पूगे। महादेव रामकुमार की गद्दी में ठहरे। बाजार में १० बजे मीटिंग हुई। काफी लोग आए। जे० पी० के विचारों में बड़ा परिवर्तन आया है। शायद मेरे में भी कुछ हो रहा है। चूरू में लक्ष्मीनारायण जी टिकमाणी की कन्या-पाठशाला बन रही है। अच्छा भवन बनाया है। वह देखा, पाठशाला देखी। सर्व हितकारिणी-सभा देखी। वहाँ से रेमी चले। स्कूल पर ही सभा हुई। कन्हैयालाल जी दूगड़ बस लेकर राजगढ़ से साथ हो गए थे, काफी सुविधा रही। ६ बजे सरदार शहर पूगे। गांधी विद्या-मंदिर में कुछ देर ठहरे। फिर बुधमल जी दूगड़ के गेस्ट हाउस में गए। ७। बजे मीटिंग थी। मैं भी बोला। रात में १० बजे कार्यकर्ताओं की सभा हुई। आज का दिन व्यस्त रहा, परंतु बहुत अच्छा। जे० पी० बहुत काम करते हैं, उनमें लगन है, विश्वास भी। पब्लिक वर्क में इसकी बहुत जरूरत है।

सरदार-शहर, सुजानगढ़

२५ जनवरी : १२ बजे मीटिंग थी। खाना खाकर रोडू की ढानी गए। सारा ग्राम दान हुआ। अच्छा लगा। भावनाओं से मन भर आया है। परंतु मन में विचार आए कि राजस्थान के सूखे इलाकों में ग्रामदान के साथ-साथ पानी का बंदोबस्त चाहिए। गरीबों को जमीन तो मिल जाएगी पर खेती के साधन नहीं जुटा पायेंगे, पैसे के अभाव में। समस्या तो है ही। जे० पी० से काफी बातें हुईं। ऐसा लगता है, वे गांधी जी, विनोबा जी की लाइन में आ गए। ६ बजे शाम को सुजानगढ़ पूगे। गांधी आश्रम में ठहरे। ७।। बजे मीटिंग थी। जे० पी० ने मेरा तथा कन्हैयालाल जी दूगड़ का नाम भी लिया। मन में संकोच हुआ। कन्हैयालालजी तो काम करते हैं परंतु मैं कुछ भी नहीं करता। मेरे पर

इतना प्यार और भरोसा जे० पी० क्यों करते हैं ? सुजानगढ़ में कई परिचितों से मिला। किशनलालजी करवा भी थे। रात में तनसुखदास जी सेठिया के यहाँ सोया।

२६ जनवरी : सुबह घूमने निकल गया। औरतें घड़े लेकर पानी लाने जा रही थीं साथ में बच्चे भी थे। गरीबी में भी इनका स्वास्थ्य अच्छा है, शायद एक रकम का संतोष इनमें है। सारे दिन काम में व्यस्त रहती हैं। मर्दों से ज्यादा मेहनती हैं। ७ बजे जे० पी० से मिला, कार्यकर्ताओं की मीटिंग में। आज गणतंत्र दिवस है, जे० पी० भी यहीं हैं, उत्साह सा लोगों में है। ८ बजे एक बाल-मंदिर में झंडोत्तोलन के लिए गया। छोटा सा भाषण दिया। लाडनूं १० बजे पूगे। एक मीटिंग में गए। वहाँ से जैन साधुओं के गया। गजराज जी का मंदिर बन रहा है, वह देखा। लाडनूं बड़ी बस्ती है, बड़े-बड़े मकान बने हैं। मीठे पानी की यहाँ बहुत बड़ी सुविधा है। वापिस सुजानगढ़ आया। १॥ बजे कन्हैयालालजी के साथ छापर का तालाब देखने गया। ४ बजे रतनगढ़ पूगा। हरचंद राय जी से मिला। चिरंजीलाल जी का पार्क देखने गया। राजस्थान में जंगल, बाग-बगीचे लगाना मंदिर बनाने के माफिक पुण्य का काम है। नंदलालजी का गेस्ट हाउस देखा। सुंदर बना है।

रतनगढ़, बीकानेर

२७ जनवरी : रतनगढ़ से १० बजे बीकानेर पूगा। खादी भंडार गया। मदन लाल जी खेमका के यहाँ अच्छी रसोई खायी। ४ बजे तक लोगों से मिलता रहा, रामरतन जी को घर से लिया। ४॥ बजे पन्नालाल जी चांडक के घर गया, कलकत्ते में जिस लड़की का संबंध कराया था उससे मिला, ४) की मिठाई दी और १००) रुपये दिये, बहुत खुश हुई। ७॥ बजे रामकिशन जी के जीमने गये। सर्दी खास नहीं है। कलकत्ते का कोई भी समाचार नहीं है। तबीयत ठीक है। झूठ-सच कम बोला जाता है, व्यापार की चिंताए भी नहीं है। रघुनाथ पारीख यहाँ आये हुए हैं।

बीकानेर

२८ जनवरी : घूमकर एक बजे वापस लौटा। ८ बजे म्युनिसिपल चेयरमैन, मालचंदजी खडगावत और दाऊदयालजी जोशी आये। ९ बजे जीप से कोचरजी के साथ भीनासर में मुनि श्री गणेशीलालजी के दर्शन किये। फिर पाँच-सात गाँवों में गये। वहीं बाजरे की रोटी और गुड़ खाया। स्वाद अच्छा था, भूख भी थी। फिर ३०० फुट गहरे कुँवे में उतरा। कुछ डर सा लगा। वापस आकर ९ बजे प्रार्थना की। फिर विश्वनाथ जी किराडू के साथ जन्मपत्री लेकर गया। एक रकम मिलती है।

बीकानेर, फलौदी

२९ जनवरी : सुबह ७ बजे स्टेशन गया। बड़ी भीड़ थी। ८॥ बजे खद्दर भंडार गया। ९॥ बजे वर्कर्स मीटिंग में गया। वहाँ जे० पी० ने मेरा नाम संपत्ति-दानवालों में मेंशन

किया। प्राय: १०० वर्कर्स थे। लोगों में काफी चर्चा होती रही। रघुवर दयालजी, गोविंदजी तथा और भी बीकानेर के वर्कर्स थे। जे० पी० के साथ ही खाना खाया। फिर डूंगर कालेज की मीटिंग में गया। अच्छी मीटिंग हुई। जे० पी० का भाषण अच्छा था। म्युनिसिपल आफिस गये। कई लोगों से परिचय हुआ। ४ वजे जेनरल मीटिंग में गया। वैठने की तो सुविधा थी परतु सर्दी वहुत थी, शरीर में थकावट भी थी। वापस आना पड़ा, पूरा सुन नहीं सका। रामरतनजी कोचर आये, वातचीत हुई। मेरा निश्चित मत है कि इस क्षेत्र से राजा जीतेंगे। बीकानेर तहसील और टाउन के ८० प्रतिशत वोट मिलेंगे। रात में ९। वजे जीप में बीकानेर से रवाना हुआ। सर्दी काफी थी, गरम कपड़ों की वजह से आराम रहा। १।। वजे रात फलौदी पूगा, वेटिंग रूम सो गया।

सांकरा, पोकरण

३० जनवरी : सुवह ६।। वजे पोकरण पूगा। स्टेशन पर कई आदमी मिले। जल वोर्ड की जीप थी। सांकरा ९।। वजे पूगा। काम कम और विज्ञापन-प्रचार ज्यादा है। वैसे व्यासजी चेष्टा पूरी कर रहे हैं। सर्दी काफी है। वीरान अनउपजाऊ इलाका है। २२ ढानियों में २००० की आवादी है। रूपा तथा लालपुरी डाकुओं को देखा। इनके वारे में वहुत सुना था। व्यासजी को ५००) रु० प्रति वर्ष देने का कहा। भगवत सिंहजी, चीफ सेक्रेटरी, दरवार के राजपुरोहित, श्री हजारीमल शर्मा, मि० दे० तथा सतीशजी, उपमंत्री, भारत सरकार आए थे। रामकिशोरजी व्यास गृहमंत्री भी। उनसे वातचीत का काफी मौका मिला। यहाँ जो अनुभव हो रहे हैं, उन पर लेख लिखने का विचार है। रात में ८ वजे चले। ठंडी हवा चल रही थी। ९ वजे पोकरण पूगा। साँकरा आना वुरा नहीं रहा, कारण कुछ लोगों से नजदीकी संवंध-सा वना। राजस्थान में दो महीनों में एक वार आना जरूरी है।

जोधपुर

३१ जनवरी : सुवह ७।। वजे पूगा, रिटायरिंग रूम में रहा ५) रु० रोज पर। हिसाव लिखा १००) रु० घटते हैं। स्नान वगैरह किया। रिटायरिंग रूम यहाँ के वहुत अच्छे हैं। नौकर साथ में रहने से कपड़े धुलवाने में काफी सुविधा रही। भूपालचंद जी लोढा आए, उनके यहाँ जीमने का टाइम हुआ। साइकिल लेकर शहर घूमने निकला। शाम को भूपालसिंहजी के जीमने गया। कु० विजय सिंह जिला कांग्रेस प्रेसिडेंट, अचेतसिंह कछवाहा जी तथा वकील सुमेरचंदजी आए थे।

१ फरवरी : आज का दिन वहुत महत्वपूर्ण रहा। सुवह अखवार देखे। शेयरों के पेमेंट नहीं हुए। चिंता हुई। ८। वजे शाह गोरधनदासजी कावरा, ठाकुर साहव खेजलड़ा, कु० विजयसिंहजी कार लेकर आए। लड़कों का स्कूल देखा, भव्य है, लड़कों में डिसिप्लिन था। कसरत दिखाई। मुझे सलूट दी। मन में कैसा ही मालूम दिया। वहुत ही अच्छी

इमारत है, अच्छी व्यवस्था है, पढ़ाई भी बहुत सस्ती है। अभी ३०० लड़के हैं। मीटिंग हुई। मैंने भी आज अच्छा भाषण दिया। इतना अच्छा शायद पहले नहीं बोला था। मन में शांति-सी मिली। १० बजे अंदाज वहाँ से पुराना किला की तरफ गए। झील देखी, नहर, बाग वगैरह देखे। ११ बजे अंदाज मंदोर जो पुरानी राजधानी थी, वहाँ गए। बताते हैं, मांडव्य ऋषि ने यहाँ तपस्या की थी। तनापीर की दरगाह भी यहाँ है। राजाओं की बहुत सी छतरियाँ देखीं। जोधपुर में पत्थर पर शिल्पकारी कलापूर्ण है। महाराजा जसवंत सिंह और अजित सिंह की छतरियाँ देखीं। मंदोर का विकास सरकार कर रही है। घूमने का रमणीक स्थान है। जोधपुर शहर भी बढ़ रहा है। सुमेर लाइब्रेरी और म्युजियम देखा। यहाँ मानसिंह जी के चित्रों का अच्छा संग्रह है; रामायण, शिवपुराण और दुर्गा जी की कथाओं पर चित्र हैं। लोगों से मिला। सतीश जी डिप्टी मिनिस्टर दिल्ली जा रहे थे। द्वारका दासजी पुरोहित, हजारीलाल जी शर्मा, मानमल जी जैन तथा रामचंद्र जी सिंही और लूणकरण जी आदि थे। जलबोर्ड के कार्य की आलोचना कर रहे थे। वहाँ से नेमीचंद जी जैन के घर गया। उनके लड़के को देखा। फिर कॉलेज गया, उनकी लड़की से मिला। ७ बच्चे हैं, वास्तव में तंगी हालत में हैं। मैंने उन्हें छात्रवृत्ति देने का कहा है और भी दिलवाने का कहा है। मेहता जी तथा बलवंत राज जी भंडारी के घर जीमने गया। वापस जलबोर्ड आया। फिर ७। बजे स्टेशन आकर सो गया। थकावट से पैर दुख रहे थे। ९। बजे ट्रेन में बैठा। लोढ़ा जी और मिट्ठा लाल जी काका भी आए थे।

जयपुर

४ फरवरी : सुबह वर्मा साहब आए। मैं मास्टर जी से मिलने चला गया था। उनसे काफी बातचीत की। सुखाड़िया जी से मिला, वे सीट देनेको तैयार हैं। ५०००) रु० नवयुग को उधार देने को कहा है। दिन में जलबोर्ड का काम देखा। संतोषजनक चल रहा है, परंतु अगले वर्ष में क्या होगा, यह देखना है। सुबह भाई जी को बंबई फोन किया, उन्होंने तुरंत कलकत्ता जाने को कहा है। वर्मा साहब से काफी बातचीत करने का मौका मिला। भागीरथ जी को पूरे समाचार का पत्र दिया।

जयपुर, सीकर

५ फरवरी : सुबह जीप से चलकर सीकर १० बजे पूगा। दिन में हरिभाऊ जी आदि से मिला। ४ बजे अंदाज गाँवों में काम देखने गया। कमलाप्रसाद जी साथ में थे। आठ-नौ जगह काम देखे, अच्छे हो रहे हैं। लोसल में खाना खाया। सर्दी पड़ रही है। ग्यारह बजे वापस आया। बजाज भवन में सोया। सीकर से जीत जाना तो संभव है, परंतु भीलवाड़ा इजी रहेगा।

सीकर, जयपुर

६ फरवरी : ७। बजे जयपुर के लिए रवाना हुआ। लादूराम जी, बद्रीनारायण जी साथ में थे। ११ बजे जयपुर पूगा। १२॥ बजे सुखाड़िया जी के घर गया। बड़ी भीड़

थीं। जयपुर के खास-खास आदमी थे। डी०पी० गोयनका जी से ३०००) रु० गोकुल भाई को दिलाए। वहाँ से सुखाड़िया जी के साथ २॥ बजे गांधी नगर गया। बड़ी मीटिंग थी। वहाँ से वापस आकर व्यासजी से मिला, फिर गर्ग साहब के घर गया। फिर उनके साथ वर्मा साहब के गया, बातें होती रहीं। जोशीजी से बात की, वे और कमलनयनजी सीकर के लिए कह रहे हैं।

जयपुर-अलवर

७ फरवरी : दिन में १॥ बजे कार से चले। रास्ते में ३ बजे गाड़ी खराब हो गयी। पानी बरस रहा था। ४॥ बजे एक गाँव की सड़क पर बस मिली। वर्मा साहब को असुविधा हो रही थी। उन्हें रफ जर्नी का अभ्यास नहीं है। गाड़ी को छोड़ा। रात में ९ बजे अलवर पूगे। शोभाराम जी के घर गया। उन्होंने काफी अच्छा खाना खिलाया। दीनदयाल प्रधान से मिला, बूढ़ा हो गया है, उसके घर गया, पत्नी से मिला। पुरानी बातें याद आने लगीं। १० बजे गेस्ट हाउस में आकर सो गया।

अमृतसर

१० फरवरी : दिन में मारवाड़ी सम्मेलन में गया। २ घंटे था। पीछे बैठा। कलकत्ते वाले लोग मंच पर बैठे, मेरा तो मन नहीं हुआ। प्रभुदयाल जी सभापति थे। व्यासजी वगैरह सारे आदमी थे। शाम को रामनाथजी पोद्दार मिले। १० बजे रात तक सुखाड़िया जी के साथ था। सोया, मास्टर जी के कैंप में जाकर। उन्हें कुछ फल वगैरह दे आया। कलकत्ते जाने का मन हो रहा है। थकावट सी मालूम दे रही है। सुबह हरिभाऊ जी से मिला था।

भाखरा, नांगल, चंडीगढ़, दिल्ली

१२ फरवरी : कल बहुत शानदार जुलूस निकला। इतना बड़ा कभी नहीं निकला था। ७ बजे जल्दी से तैयार होकर कार से रवाना हुए। वर्मा साहब, नर्बदा जी, मास्टर जी की पत्नी, मंत्री यादव जी, हरिदेव जी साथ थे। रात में होशियारपुर में नींद अच्छी आयी थी। थकावट नहीं रही। ठंढ काफी पड़ रही थी। नदी पार की। १० बजे भाखरा को चले। पहाड़ के ऊपर गए। फिर नीचे वर्क्स में आए। देखने लायक चीज है। आदमी का दिमाग अगर अच्छे काम करे तो क्या नहीं कर सकता। पावर हाउस १ बजे देखा। बहुत बड़ा है। इंडस्ट्री बढ़ाने में कितनी सहायता ऐसे काम से हो सकती है। ५ बजे चंडीगढ़ पूगे। नया शहर, सब कुछ नया। शहर बन रहा है। नये मकान बन रहे हैं। हाईकोर्ट देखा। नए ढंग का है। ठंढ बढ़ रही थी, हवा भी तेज थी। ९॥ बजे दिल्ली पूगा। वास्तव में आज का दिन मेरे लिए बहुत ही स्मरणीय रहेगा। कितनी उन्नति भारत सरकार कर रही है। कलकत्ते के लिए कल की सीट रिजर्व हो गयी है।

१४ फरवरी : १० बजे कलकत्ता पूगा। कामकाज एक रकम चल-सा रहा है परंतु शेयरों में काफी मंदी है। स्मिथ साहब मर गया। उससे मिल न सका, मन में कैसा सा हुआ।

२३ फरवरी : शाम को मैकिनटोश के घर नन्दू के साथ गया। ऑफिस के बारे में बातचीत हुई। अगले वर्ष तो रहना ही है। बाजार मंदा था। कामकाज नहीं था। हम लोगों के पाट काफी पोते हैं। मेरा मन कम लग रहा है।

१ मार्च : आज रात में नन्दू बंबई के लिए चला गया। शारदा को बनारस से ले गया। भाई जी के समाचार भी थे और भाभी का भी मन है। अच्छा है, वहाँ काम सीखेगा। यहाँ तो जैसे होगा, चला लेंगे। एस० एन० आसाम गया। चेरा के लिए आदमी भेज दिया है।

२ मार्च : ६॥ बजे स्कूल में गया। फंक्शन था। ८ बजे तक था। अच्छा रहा। आकर खाना खाया। दिन में बाजार कुछ तेज सा ही था। महावीर को मैंने ऑफिस ज्वायन करने को कहा है। शाम को न्यू मार्केट की तरफ जाकर कुछ किताबें खरीदीं।

८ मार्च : रात में काफी देर तक 'मरुतीर्थ हिंगलाज' बंगला की किताब पढ़ता रहा, सुबह ९॥ बजे मैदान से आया। वाइफ थोड़ी नाराज सी हो गयी। एक हफ्ता तक ताश न खेलने की बात की। सुबह लूणकरण जी सरावगी के घर आकर पट्टा ले आया।

९ मार्च : सुबह ६ बजे खबर मिली कि पुरुषोत्तम जी के पिता कल ऊपर से गिर कर मर गए। उनके घर गया। ७॥ बजे तक था। मन कैसा सा हो गया। वहाँ से दीपचंद के घर गया।

१० मार्च : शाम को राम सहाय जी के यहाँ गया था। वापस आने पर खबर मिली कि रतनी का फोन है। मेरी सासू के लकवा हुआ, वे बहुत बीमार हैं। वाइफ तुरंत चली गयी। राजू को यहाँ छोड़ गयी है। मन में चिंता सी हो रही है। दिन में पांचेलाल जी घेलिया के उधर ताश खेला, ६। बजे तक। तबीयत एकदम ठीक है।

११ मार्च : सुबह ८ बजे अगरचंद जी नाहटा का भाषण सुनने गया। मुझे सभापति बनाया था। नाहटा जी राजस्थानी और डिंगल के विद्वान हैं, मैं तो कुछ भी नहीं जानता। मुझे बनाने से क्या फायदा ? मैंने कहा भी परंतु फिर भी बनना पड़ा। दूगड़ जी अच्छा बोले, ५०००) रु० भी दिया। मैं भी थोड़ा सा बोला।

१६ मार्च : १ बजे खबर मिली कि राजू की नानी का देहांत हो गया। २॥ बजे सराफों के घर गया। गंगा जी गया, स्नान किया।

२३ मार्च : सुबह मैदान नहीं जा सका। लेटा रहा। भाँग का नशा काफी तेज था। फजूल में ले लिया, मुझे बर्दाश्त नहीं होता। बाजार पाट का मंदा है। हमने ३०००

मन पाट २७॥।-) में ले लिया। रात में शिवचंद जी की पार्टी में गया, वहाँ पर भी भाँग का नशा आ गया। इसलिए सीधे घर आ कर सो गया।

२५ मार्च : १२॥ बजे मूर्ख-सम्मेलन में गया। ५॥ बजे तरुण संघ के फंक्शन में। आज बहुत कहने पर भी ठंढाई वगैरह कहीं नहीं ली; भाँग के भय से।

गिरिडीह

३१ मार्च : जंगल में १५ मील पर एक झरना है, वहाँ घूमने गए। शांति मिली, दृश्य बहुत सुंदर। शाम को खाना चाँदमल जी राजगढ़िया के खाया। अच्छे शौकीन आदमी हैं। सारे दिन ताश ही खेलते रहे। ५००) रु० बच्चों की एक स्कूल में दिए। गिरिडीह की ट्रिप अच्छी रही। ग्यारह आदमी हैं। परसों कलकत्ता वापस जायेंगे।

कलकत्ता

५ अप्रैल : शाम को भागीरथ जी के साथ दो-तीन जगह चंदे में गए। कंदोई तथा दो एक जगह कुछ मिला भी। पाट का बाजार काफी मंदा है। मेरे मन में कमजोरी आ रही है।

७ अप्रैल : सुबह मैदान गया, नेति वगैरह की, थोड़ी सी कसरत की। २००) रु० यौगिक संघ को दिया। शाम को भागीरथ जी के साथ कई जगह चंदे में गया। राजस्थान कांग्रेस की कमजोरी की बात आ रही है। मेरे इन दिनों शारीरिक और मानसिक कमजोरी-सी मालूम देती हैं।

९ अप्रैल : सुबह पुरुषोत्तम जी के ताश खेलने चला गया। १२ बजे ऑफिस गया। दिन में आर० नोपानी से मिला। बालकृष्ण जी मोहता, भागीरथ जी से मिला। शाम को पार्टी का टाइम था। ५॥ बजे घर पूगा। इसी बीच तीन-चार आदमी आकर चले गए। मन में पश्चात्ताप सा हुआ। रेमंड कंपनी वाले से मिला। ५ बजे ऑफिस भी गया। ६। बजे से ९॥। बजे तक चंदे में गया। २५००) रु० मातादीन जी के हुए। मन में एक रकम चिंता सी रहती है, यह मानसिक कमजोरी का लक्षण है।

जयपुर

१६ अप्रैल : सुबह ६ बजे जयपुर पूगा। साथ में सुखाड़िया जी और वर्मा जी थे। रात में खास कुछ बातचीत नहीं हुई। पन्नालाल जी सरावगी भी आए हैं, मातादीन जी भी। जलबोर्ड के ऑफिस में आए। सुखाड़िया जी के घर भी गए, बातचीत हुई। वर्मा साहब से एलेक्शन की बात हुई। अबतक सीकर या भीलवाड़ा का तय नहीं है। शाम को हरिदेव जी जोशी की चाय पार्टी में गए। वहाँ से घर आए। वर्मा साहब और पन्नालाल जी चले गए। १२००) रु० पन्नालाल जी से और १९००) रु० मातादीन जी से चंदा का लिया।

नीम का थाना, अजीतगढ़

१८ अप्रैल : ११ वजे नीम का थाना पूगे। कुछ गाँवों के काम देखने गए। भागीरथ जी, ज्ञानचद जी एम० एल० ए० और मातादीन साथ थे। काम अच्छे हुए हैं। ३॥ वजे पाटन की तरफ गए, काम देखे। भिलवाड़ा में लोहे की खान भी देखी। राजस्थान में यदि इसी तरह मिनरल्स निकलते आये तो इंडस्ट्री के वढ़ने में देर नहीं लगेगी। प्रयास से पानी की व्यवस्था भी जरूर हो सकती है। एक गाँव में गए, शादी के गीत गाए जा रहे थे। अच्छा लगा। १०॥ वजे अजीतगढ़ पूगे। गरमी पड़ती है पर उतनी नहीं। कलकत्ते से वाहर मन लग जाता है। शरीर को आराम भले ही नहीं, परंतु मन और दिमाग को शांति मिलती है।

जयपुर

२० अप्रैल : कल सुखाड़िया जी से वात हुई थी। अगले वर्ष का काम लेने का तय हो गया है। जिम्मेदारी का काम है। मातादीन कल रात में दिल्ली चले गएं, उनको मैंने राजा से मिलने को कहा है। जयपुर में गर्मी कुछ ज्यादा पड़ने लग गयी है परंतु रात ठंडी होती है। २॥ वजे व्यापार-मंडल की सभा में गए। प्राय: ४००-५०० आदमी थे। भोगीलाल जी पंड्या आए, भापण अच्छा रहा। मैं भी अच्छा वोल सका, लोगों ने पसंद किया। यहाँ उत्साह का वातावरण है। राजस्थान आगे वढ़ना चाहता है, वढ़ भी सकता है परंतु आपस की खींच-तान नहीं होनी चाहिए।

झूंझनूं

२३ अप्रैल : सुवह जल्दी तैयार हो गए। राणी सती के मंदिर को देखा। वास्तव में देखने लायक वनाया है। दस-पंद्रह लाख की सम्पत्ति है। ऐसे तीर्थ-स्थानों के माध्यम से संस्कृति और समाज की उन्नति के वहुत वड़े-वड़े काम हो सकते हैं। व्यवस्था ठीक रहनी चाहिए, नहीं तो आगे चलकर काशी, अयोध्या के मठों-मंदिरों जैसी हालत बन सकती है। ६॥ वजे वहाँ से चला। आगे चलकर काम देखा, आधे रुपए गाँव वालों ने लगाए हैं। इस तरफ का काम काफी संतोषजनक है। ९ वजे मलसीसर देखा। मोती झुनझुनवाला के घर गए। १०॥ वजे राजगढ़ पूगे। एस० एम० मोहता के ठहरे। ३ वजे रिणी आए। दो जगह गए, काम देखा, एकदम खराव। मन कैसा हो गया। सामाजिक कार्य में धन, श्रम और समय की वरवादी एक अपराध है। शाम को चूरू आकर ठहर गए।

चुरू-सरदार शहर, रतनगढ़

२४ अप्रैल : सुवह ५॥। में चूरू की तहसील के काम देखे, मेघराज जी साथ में थे। काम साधारणतया संतोषजनक है। १०। वजे सरदार शहर पूगे। दिन में काफी आदमी आए। ५००) रु० पूरन को, ५००) रू० पब्लिक लाइब्रेरी को, १००) रु० हरद्वारीलाल जी को दिए और ५०)-४०) रु० लग गए। संस्थाएँ देखीं। लोगों से मिला। शाम को ७ वजे

वापस कार से रतनगढ़ आए। रात यहीं मंदिर में सोए। आज दिन भर में प्राय: १०४ मील का सफर किया, कई काम देखे। दिन में गरमी बेशी थी।

दिल्ली

२८ अप्रैल : दिल्ली डेढ़ घंटा देर से पूगे। व्यास जी मिल गए थे, उनसे काफी बातचीत हुई। कुछ नजदीकीपन भी आ गया। बंबई में उन्हें ठहरने को कहा है। नयी दिल्ली आकर तूफ़ान में एयर कंडीशंड में बैठा। ८०) रु० ज्यादा लगे परंतु आराम रहता है, गर्मी के मौसम में। किताबें तथा मासिक पत्र पढ़ता रहा। पता नहीं कौन सी ताकत मुझे राजनीति की तरफ ले जा रही है। बीकानेर के अकाल के बाद धीरे-धीरे इधर कैसे बढ़ रहा हूँ। कुछ कर सका तो बहुत बड़ी बात होगी। अनुभव नहीं है, फिर इस तरफ अडंगे बहुत हैं।

कलकत्ता

३० अप्रैल : मिशन रो में सुबह ९ बजे पैदल चल रहा था। इसी तरह इस सड़क पर चलते-चलते तीस वर्ष हो गए। एक दिन १९२५ में शुरू किया था। प्राय: युग बीत गए। उस समय जो मन में विचार आते थे, आज भी याद हैं। सोचता था, किसी तरह एक-डेढ़ लाख रुपए हो जायें तो कर्ज मिट जाए और आराम से रहें। कौन जानता था कि समय का इस तरह से परिवर्तन होगा और करोड़ों रुपए मेरे पास हो जायेंगे। पर मन को शांति नहीं है, शरीर नाना रोगों से जर्जर हो रहा है, लालसा बढ़ती जा रही है और ऐसा मालूम देता है कि शांति इस जीवन में मिलने से रही। रुपयों से सुख नहीं होता। यह तो प्रमाणित हो गया परंतु कहीं भी तो ठहरने का और आराम करने का नाम नहीं। उस समय १५ वर्ष की आयु थी, बचपन था, पर चिंता थी, कर्ज की। और आज ४ बच्चे हैं, ४६ वर्ष की आयु है, शरीर रोगी है और नाना तरह की चिंताएं हैं। अगर कुछ रुपए लेकर रिटायर हो जाऊँ तो क्या हर्ज ? पर हो नहीं सकता।

४ मई : सुबह बी० एन० इलियास वाले के घर गया। कंपनी की बात की (ग्रेट पिरामिड इंश्योरेंस)। हम सब लोगों के लेने की जँचती है परतु भाई जी पर है। कल का बंबई का टिकट मँगाया। दिन में साहब लोगों की मीटिंग हुई। पाट के बारे में वे लोग संतुष्ट नहीं हैं। कुछ है भी ऐसा ही।

बम्बई

५ मई : प्लेन से २।।। बजे दिन में बंबई पूगा। भाई जी से कंपनी की बात की। उन्हें एकदम नहीं जँचती है। बहुत तरह से समझाया परंतु उपाय नहीं।

कलकत्ता

१६ मई : दिन में पाट बहुत ही मंदा रहा। भाव २६।।। अंदाज ऑफिस में कामकाज कमती है। मेरी तबीयत सुस्त सी रहती है श्री अच्युत पटवर्धन का पत्र है। रुपए उन्होंने दूसरी जगह से बंदोबस्त कर लिए हैं। पाट में हम लोगों के काफी घाटा हो रहा है।

२३ मई : बंबई जाने का विचार हटा दिया। अच्छा ही हुआ। रात में फोन था, विलायत का और भी काम काज का झंझट था। सारे दिन भागीरथ जी के साथ चंदे में घूमा। ३००) रु० मिले। बद्रीनारायण जी सोढानी का पत्र है, कमलनयन जी सीकर से शायद ही खड़े हों।

२६ मई : बी० एन० एलियास का इंश्योरेंस का डील ६।=) में हो गया है। अच्छा है। मेरी समझ में तो कम-से-कम दो-तीन लाख का फायदा होगा। ५ बजे के० पी० गोयनका के गया, बातचीत तय की। बसंत लाल जी मुरारका के घर गया, उनकी तबीयत ठीक नहीं है।

२८ मई : शाम को बसंत लाल जी मुरारका को विदा करने स्टेशन गया। कैंसर हो गया है। इसका कोई इलाज नहीं बताते हैं। मन में दुख हुआ। इतने बड़े समाज-सेवी को कष्ट उठाना पड़ रहा है। परमात्मा कैसा न्याय करता है।

१ जून : दिन में ग्रेट पिरामिड के बारे में बात करता रहा। अगले हफ्ते में मीटिंग करने की बात कह रहे हैं। पाट बेच दिया ३००० मन। उसमें नुकसान हो गया है। मन खराब है ही। भाई जी इंश्योरेंस के डील से नाराज हैं।

७ जून : १२॥ बजे हिंद बैंक। फिर १ बजे से १॥ बजे तक छोटी ऑफिस, फिर शेयर मार्केट। ४ बजे बी० एन० इलियास के गया। शेयरों का पेमेंट हो गया है, कल डायरेक्टर्स हो जायेंगे। नन्दू की बंबई की चिट्ठी थी, भाई जी काफी नाराज हैं। मैंने भी उन्हें आज कड़ी सी चिट्ठी लिखी है परंतु मन में एकदम उदासी आ गयी।

९ जून : शाम को १७ आदमी जीमने आए। गर्ग साहब और मि० मेहता खास थे। सुबह ग्रेट पिरामिड के ऑफिस में गया। मि० जीवनलाल से बातचीत की। आदमी अच्छे-से मालूम देते हैं। शाम को जीमने को बुलाया। कल से कसरत शुरू की है। कई बार शुरू कर चुका, पता नहीं कितनी बार शुरू करता रहूँगा। बीच-बीच में गंगाजी भी जाता हूँ।

१५ जून : बी० एन० एलियास में भी गया। कामकाज ठीक से सलट रहा है। शाम को दूसरी कंपनी की रिपोर्ट स्टडी की। कुछ शेयर्स बेचे भी। रुपयों का एडजस्टमेंट करना है।

१६ जून : सुबह बारिश बहुत जोरों से आ रही थी। मैदान गया। फिर पुरुषोत्तमजी के १०॥ बजे तक ताश खेला। गंगाजी गया था, इंश्योरेंस कंपनी के ऑफिस में भी। बांठिया जी का पेमेंट नहीं हो रहा है, बड़े सुस्त से हो रहे थे। भागीरथ जी के लड़के की पन्ना की लड़की से सगाई हो गयी है। मुसद्दी लाल जी डालमियां आए।

२२ जून : पाट का बाजार गरम है। दूसरी खराब खबर यह है कि ग्रेट पिरामिड में पूरा डिविडेंट देना होगा, यानी साढ़े छ आने शेयर का। तीसरी खबर कि गणेश मिल के बारे में हार होगी। चौथी है, चेरा-छटाक में गोलमाल की और पाँचवीं शेयर बाजार

मंदा है। सव मिला कर दिन में मन वहुत ही खराव रहा। रात में भी दुःस्वप्न आते रहे। नर्वस वीकनेस सी होती रही।

१ जुलाई : दिन में वोहरों वाली लड़की १ वजे देखी। सुंदर थी। पढ़ी-लिखी थी, जँच गयी। शाम को गंगा वावू के साथ औपेरा में गया। कुछ खा लिया। तवीयत खराव हो गयी। गंगा वावू से काफी वातें हुई। कांग्रेस के भीतर आपसी मतभेद से दलवंदी वढ़ रही है। इससे देश का काम ठीक से नहीं हो पाता। परंतु इसकी चिंता किसे है ?

३ जुलाई : वोहरों वाली सगाई वापू जी के जँची नहीं और चेष्टा कर रहे हैं। मन में कैसा सा ही लगता है। जे० पी० का तार आया। ६ ता० को आ रहे हैं। पाट का वाजार लगातार मजवूत होता जा रहा है। १६२५) रु० डिफरेंस का मिला, वह सव खर्च हो जायगा। रुख तेजी सा हो रहा है। इंश्योरेंस कंपनी में गया, झंझट ज्यादा ही मालूम देता है।

६ जुलाई : जे० पी० सुवह ६ वजे आए, स्टेशन गया। उन्हें लेकर घर आ गया। ९ वजे ऑफिस गया, १० वजे स्टेशन। नारायणी देवी वर्मा आयीं, साथ में उनकी वहन भी। घर में ठहराया। काफी लोग हो गए हैं, कुछ असुविधा होती होगी।

१४ जुलाई : ३ वजे जी० पी० की वड़ी मीटिंग व्यापारियों की हुई। अच्छा वोले। परंतु इससे व्यापारियों का क्या आना-जाना ? वे संत-महात्माओं के प्रवचन तो सुनते हैं परंतु अपने को वदलते नहीं। चढ़ावा जरूर चढ़ा देते हैं। नाम और पुण्य दोनों हो जाता है। पाट का वाजार तेज है, मेरा ध्यान मंदा का है। मेरी तवीयत एक रकम ठीक है।

१७ जुलाई : सुवह अच्छी तरह शंख-प्रक्षालन किया। काफी पानी निकला। तवीयत अच्छी मालूम पड़ी। जे० पी०, गंगा वावू आदि सव आज ८। वजे की ट्रेन से पटना चले गए। १२ दिन रहे, काफी सत्संग-सा रहा। स्टेशन पर गए, भगवती आज चला गया। पाट का वाजार समान था। शेयर्स भी समान।

१८ जुलाई : शाम को ६ वजे इंडियन चेंवर ऑफ कामर्स की मीटिंग में गया। नारायणी देवी और यादव जी को पार्टी दी थी। २५०० शेयर जयपुर उद्योग के १३॥) में लिए। कुछ अडंगा ज्यादा कर लेता हूँ।

ट्रेन, दिल्ली

१९ जुलाई : ९॥। वजे दिल्ली पुगा। उसी समय दूसरी ट्रेन में वैठ गया। तवीयत एक रकम ठीक सी ही है। रात में स्वप्न आया कि पाट का भाव २६।) हो गया है। मन में कई तरह के विचार आते रहे, वैसे कसरत वगैरह की। वजन दिल्ली में हुआ था, दो मन तीन सेर। कुछ पत्र लिखना चाहता था परंतु पास में कलम और लिफाफे नहीं थे।

जयपुर

२० जुलाई : सुवह ५॥ वजे पुगा। ट्रेन में थोड़ी सी चोट सिर पर लग गयी थी। हल्का दर्द था। नया मकान गांधी नगर में लिया है, उसे देखा। स्नान वगैरह कर दूध पिया।

वर्मा साहब और माथुर आए। वर्मा साहब को नया मकान दिखाया, उन्हें जँच गया। उन्होंने सीकर का कहा है फिर सुखाड़िया जी से मिलने का कहा। सीकर से लादूराम जी जोशी का फोन था, कल आयेंगे। शाम को सुखाड़िया जी के गया, वे नहीं थे। हरिदेव जी माथुर जी, कुंभाराम जी, चौधरी रामचंद्र जी और वर्मा जी से सीकर की बात हुई। कमलनयन जी के आने पर तय होगी। उदयपुर के उत्सव पर बुलाया है, २८-२९ तक जयपुर रहना होगा, ऐसा मालूम देता है।

२१ जुलाई : रात में १२।। बजे फिरती आया था, चौधरी रामचंद्र जी के साथ। रेल किराया भी उन्होंने ही दिया, मेरे पास नहीं था। हरिदेव जी जोशी साथ थे। सीकर की नक्की सी ही है। लादूराम जी जोशी सीकर से आ गए। ऐसा लगता है, अगर सीकर की सीट मिल जाती है तो फिर कोई झंझट नहीं है। दिन में नाथूराम जी मिर्धा को फोन किया, दिल्ली गए हैं। हरलाल सिंह जी मिले, १००) रु० उनके एक आदमी को दिए। तबीयत ठीक है।

रींगस

२२ जुलाई : सुबह बाबा के साथ कार से नरोत्तम जी जोशी की जमीन ३२ बीघे की जो ८०००) रु० में ले रहे हैं, देखने गया। साधारणतया अच्छी है। बाबा मेरे से चंदे के रुपए माँग रहे हैं। रात में दुर्गापुर में नयी जमीन में सोया, नींद अच्छी आयी। एक तरह से यहाँ बस्ती हो गयी है। ४ बजे जीप से लादूराम जी जोशी और किशन सिंह जी के साथ रींगस रवाना हुए। रास्ते में इलेक्शन की बात होती रही, वे लोग राजी हैं।

दिल्ली

२४ जुलाई : सुबह ६।। बजे पूगे। मातादीन जी की ऑफिस हिंद शुगर लि०, ३ दरयागंज ताँगा से गया। अखबार पढ़े। कपिला जी यहीं हैं। सत्यबाला जी से मिला, कुछ किताबें देने को कहा है। इस वर्ष वह एलेक्शन में नहीं खड़ी होंगी, ऐसा उसका कहना है। दिन में मि० कोहिली के गए, ९ फैज बाजार, दरयागंज। आदमी भले हैं, घराने के भी हैं। इंश्योरेंस का काम देखा। इस ब्रांच में खास नुक्सान हुआ हो, ऐसी बात नहीं है, फिर भी खर्च ज्यादा है, कमाई कमती है। दिल्ली की क्लाइमेट अच्छी है। कलकत्ते को पत्र लिखा, सारे समाचार लिखे।

कानपुर

२५ जुलाई : सुबह ७ बजे पूगा। मातादीन जी की ऑफिस हिंद शुगर लि० में गया। स्टेशन के पास किशोर भवन में है। अच्छा ऑफिस है, बड़ा। सात मुनीम हैं क्लर्कों के अलावा। यहीं ठहरा। मेस्टन रोड पर गया प्रसाद लाइब्रेरी गया। एक घंटा अखबार पढ़े। कलकत्ते का कैपिटल भी १९ तारीख का मिला। ऑफिस गया। काम यहाँ का बहुत ही खराब है, डूबत भी है और केसें भी हैं। मैनेजर अच्छा आदमी नहीं, इससे पिंड छूटना मुश्किल है। शाम को हरिकिशन जी चिरंजीलाल, कलक्टरगंज के गया। वे

काम में कुछ मदद देंगे। फिर १० वजे तक बाजार घूमता रहा। 'एक ही रास्ता' विधवा-विवाह पर फिल्म देखी, अच्छी थी।

२६ जुलाई : सुवह ९ वजे आगरा पूगा। महाराजा होटेल में आया। साधारण सा है। दिन में मंगलचंदजी के गया, वंसल का पता लगाया, मिला नहीं। मि० मित्तल केअर ऑफ़ नेमिचंद, नयी पुल के पास। यही ठिकाना श्री चंद जी रौतेरिया का है। वंसल का ठिकाना, पुलिस चौकी, वेलनगंज के पास है। शाम को श्री वालकिशन जी से मिला। स्टेशन भी वे आए, कपड़े की दुकान है। आगरे का काम इतना खराव नहीं है। कुल ८०००) रु० की वाकी है। उसमें ५५००) रु० हेस्टिंग्स मिल के हैं।

कलकत्ता

२ अगस्त : जयपुर उद्योग के ९००० शेयर वेचे १३॥।≡) में। १३।-) में लिए थे। रुपए सोमवार को आ जायेंगे। और भी कुछ शेयर्स वेचे हैं। रुपयों की टान है। पाट का वाजार गरम है। हमने काशीपुर में १७०० मन पाट लिया।

८ अगस्त : गवर्नर का देहांत हो गया। वहुत भले थे। ऐसे लोग ज्यादा दिन नहीं रहते। अखवारों में व्यास जी के प्रेसिडेंट होने की खवर है, राजस्थान के। सुखाड़िया जी वंवई गए हैं, कमलनयन जी के पास। कल परसों वंवई रहेंगे। इस समय मुझे रहना चाहिए, दिल्ली या जयपुर में। कैसे जा सकूंगा, उलझन वहुत है, पाट की। रुपयों की टान सी है ही। कुछ कंपनी का भी अडंगा लगा हुआ है। जे० पी० ११ तारीख को आयेंगे।

११ अगस्त : सुवह गंगा वावू पटना से आए। अशोक मेहता दूसरी जगह उतरे। फिर १० वजे जे० पी० आए। स्टेशन गया। सारे दिन उन्हीं के साथ व्यस्त रहा। जे० पी० कम्युनिस्टों के साथ समझौता करने को कहते हैं। इससे लोगों को वड़ी चिंता हो रही है। वद्रीनारायण जी सोढानी से फोन पर वात करने की चेष्टा की। मेरी सीकर की सीट एक रकम तय सी है। रात में १० वजे तक जे० पी० के साथ वातें करता रहा।

१२ अगस्त : सारे दिन जे० पी० के साथ व्यस्त रहा। घर में सप्ताह वंच रही है। भीड़ सी रहती है। दिन में प्रेस वाले आते रहते हैं। पाट का वाजार गरम है। तवीयत तो ठीक है परंतु नाना तरह के स्वप्न आते रहते हैं, मानसिक चिंता वनी रहती है। मेरा काम करने का उचित तरीका नहीं है। शाम को अशोक मेहता चले गए। स्टेशन उन्हें पूगाने गया था।

१३ अगस्त : दिन में वी० एल० जालान के, सोहनलाल जी दूगड़ आदि के साथ जम्मू के आश्रम पर वात करता रहा। १ वजे एस० एन० के यहाँ अन्ना साहव के साथ सभा थी, शोषणहीन व्यापार पर। लोगों को जँची नहीं। जँचे कैसे ? नैतिकता का वातावरण तो अंग्रेजों के आने के साथ ढीला हुआ और जाने के वाद खतम हो गया। सारी सामाजिक

और राजनीतिक व्यवस्था गड़बड़ हो गयी है। बीमा कंपनी के कर्मचारी वगैरह हल्ला कर रहे हैं, झंझट भी कर रहे हैं। शाम को जे० पी० और गंगा बाबू को गाड़ी में बैठाने स्टेशन गया।

१४ अगस्त : सुबह ५।।। बजे मैदान गया। गप्पें लड़ाने में देर हो गयी। न घूम सका, न कसरत की। मैदान में घूमने आते हैं। परंतु यहाँ भी व्यापार और फजूल बातों से पिंड नहीं छूटता, गलत बात है। ७। बजे पुरुषोत्तम जी के गया। १०। बजे तक ताश खेलता रहा। फिर गंगा स्नान कर ११।।। बजे घर आया। अन्ना साहब सहस्रबुद्धे के साथ खाना खाया।

१८ अगस्त : खाना मिनिस्टरों के साथ प्रायः बाहर ही खाता रहता हूँ। पेट थोड़ा सा खराब हो रहा है। कसरत भी नहीं कर पाता हूँ, थोड़ा-बहुत घूमना हो जाता है।

२१ अगस्त : दिन में ऑफिस गया था। कामकाज बाजार में थोड़ा बहुत चल रहा है। आज कंपनी का केस था। हम लोगों की हार ही है। गलती मेरी थी। सेटेलमेंट कर लेना चाहिए था। दिन में डी० सी० नाहटा आए थे, वह बीकानेर सीट से पार्लियामेंट में खड़े हो रहे हैं।

३० अगस्त : कल दिल्ली जा रहा हूँ। दिन में पाट का भाव थोड़ा नीचा हुआ था पर ले न सका, रात में वापस तेज हो गया। महावीर वगैरह डेलिवरी दे रहे हैं। मेरे मन में काफी संताप है, पाट में ३ लाख अंदाज घाटा हो गया। भाई जी सीट की ना कर रहे हैं।

३१ अगस्त : सारे दिन चिंतित और व्यस्त रहा। रात में ९ बजे तक भाई जी से सीट के बारे में बातचीत करता रहा, आखिर उन्होंने इजाजत दे दी। फाटके की आदत मेरे से छूटती नहीं। इसको लेकर मन में इतना संताप रहता है पर उपाय भी नहीं।

दिल्ली

१ सितंबर : सुबह ६।। बजे पूगा। मातादीन साथ में थे। उनके डेरे पर ठहरा। ४।। बजे सुखाड़िया जी से मिले। वहीं राधेश्याम जी मुरारका और बलवंत सिंह जी मेहता भी थे। वहाँ से डॉ० विधान चन्द्र राय को लेने एयर पोर्ट गए। वहाँ से सुखाड़िया जी के गए, चुनाव की बात नहीं हो सकी। रात में डॉ० राय से मिले। पहले भी कलकत्ते में मिला था। परंतु यहाँ जान-पहचान हुई। पाट का बाजार मंदा है और हेसियन भी मंदा, मन को कुछ शांति सी मिली।

जयपुर

४ सितंबर : रात में बुखार था। सुबह ६ बजे उठा। रात में एलेक्शन के सपने आते रहे। मन में एक रकम कमजोरी सी है। ७ बजे गरम पानी पीकर कुंजर किया। पेट साफ हो गया। उकाली ली। कांता का कागज था, पाट का बाजार समान है, कामकाज नहीं था। जोशी जी १ बजे आ गए। उनको वैसे, अच्छी होप है। उनका ऐसा विचार है, सीकर की सीट जीती जा सकती है।

५ सितंबर : तबीयत खास ठीक नहीं है। जोशी जी से बातें करता रहा। हरलाल सिंह जी से मिला। उनसे भी बातचीत हुई। ५॥ बजे शाम को रामकिशोर जी व्यास आए, उनके साथ ५-६ मील दूर पर एक बगीचा में खाना खाने गया, दाल चूरमा। पाट का बाजार मंदा है, शेयर समान है।

लोसल, सीकर

९ सितंबर : सुबह ६ बजे लोसल में नींद खुली। ९ बजे तक हाईस्कूल, हास्पिटल, आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी और पुस्तकालय देखा। लोसल अच्छा कस्बा है। कार से ११ बजे सीकर पूगा। स्नान वगैरह कर अखबार देखे। पत्र लिखे। १॥ बजे सीकर में हरलाल सिंह जी, रामदेव आदि से मिला। कल रात स्टेशन पर पुरोहित जी मिले थे, अच्छे आदमी हैं। ३७००) रु० सोढानी जी को दिए।

कलकत्ता

१६ सितंबर : सारे दिन इधर-उधर घूमता रहा। मन में कैसी सी निराशा और अशांति रहती है। फालतू चुनाव का अडंगा लगा लिया। पहले विचार नहीं था, फिर क्यों इधर बढ़ा, समझ में नहीं आता। सुबह शंख-प्रक्षालन किया था, काफी देरी लगी। पहले तो हुआ ही नहीं।

१७ सितंबर : दिन में ऑफिस गया था, इंश्योरेंस कंपनी के ऑफिस भी। कामकाज सलट-सा रहा है। भाई जी सुबह नाराज से थे। उन्होंने कहा, तुम कामकाज नहीं संभालते हो। रात में नथमल जी के यहाँ ताश खेलता रहा, १० बजे वापस घर आया।

२२ सितंबर : तबीयत कुछ सुस्त थी। ४ बजे डॉक्टर आया। ऑपरेशन किया, दर्द नहीं हुआ, देर काफी लगी। शायद ठीक किया। हाइड्रोसिल ऑपरेशन कराना चाहिए।

२३ सितंबर : सुबह पुरुषोत्तम जी वगैरह ताश खेलने आए। चार घंटे खेलते रहे। काफी मन लग गया। आनंदी लाल जी पोद्दार राजस्थान से खड़े होने की बात कह रहे थे। मन में एक रकम की चिंता सी हो रही है।

२६ सितंबर : तबीयत तो ठीक नहीं थी परंतु ऑफिस गया था। कामकाज मेरी तबीयत के लिए रुका नहीं रहेगा। दर्द है। शाम को डॉक्टर ने देखा। कहने लगा, कुछ कसर है, रेस्ट करना चाहिए। टाइम लगेगा। सुबह गाड़ी से अलीपुर जाना चाहता था, पानी बरस रहा था, गाड़ी में पानी आ गया। शायद इससे कुछ नुकसान पहुँचा।

२७ सितंबर : शाम को पी० डी० हिम्मतसिंह काजी की पार्टी में लेक क्लब आया और भी बहुत से लोग थे। ए० एल० पोद्दार भी थे। कृष्णचंद्र जी अग्रवाल ने बताया, वह चुनाव में खड़े हो रहे हैं। मेरी तो बड़ी ही भद्द होगी। सारी कोशिशें बेकार हो जायेंगी। उल्टे बहुत रकम की बात सुननी होगी। राजनीति का रास्ता खतरनाक है। परंतु अब

उपाय क्या ? इंश्योरेंस का अडंगा है, इसलिए जा नहीं सकूंगा, जयपुर से क्या समाचार आता है, इस पर डिपेंड करता है। शाम को वुखार काफी हो गया।

२८ सितंबर : वुखार सुवह से था। सारे दिन घर में ही रहा। २००० मन पाट २९।~) में लिये, ७५० अंदाज मिले। शाम को वुखार कुछ कमती था, डाक्टर नहीं आया। घाव-पट्टी देखकर वाइफ कुछ डर-सी गयी थी। अभी और पाँच-सात दिन लगेंगे, ऐसा मालूम देता है। ३००० शेयर डनलप के २९।=) में वेचे। वाजार शेयर का सामान सा ही है।

२९ सितंबर : दिन में सिवाय गंगावावू के और किसी का पत्र नहीं आया। १०।।। वजे ऑफिस गया। इंश्योरेंस कंपनी के लोगों को ७००००) दे दिये। ४ ता० तक ऑफिस वंद है। चुनाव को लेकर मन में हैरानी सी है। पाट का वाजार कुछ मंदा-सा ही है। आज भी घाव में दरद और टीस सी है। शायद ऑपरेशन कराकर मैंने गलती की। अभी काम का टाइम था। भाग-दौड़ में रुकावट पड़ती है।

५ अक्टूबर : वी० एन इलियास के डायरेक्टर्स को वकील की चिट्ठी दिलायी है, शायद कुछ असर होगा। उन लोगों से वातचीत हुई; वे लोग कुछ ढीले हैं। पाट का वाजार मंदा है, भाव २८।।) का है। कामकाज थोड़ा वहुत होता रहता है। व्यास जी सोमवार को आ रहे हैं।

८ अक्टूबर रेडियोजी सरदार शहर का पत्र है, दीपचंद नाहटा के नाम से, मेरे लिये सिफारिश की है। शाम को आनंदी लालजी का डिनर था, व्यास जी को। एयरपोर्ट पर गया, वे ३ वजे आये। ३०-४० आदमी थे। आनंदी लालजी तगड़े पड़ते हैं। मेरे मन में उदासी-सी आ जाती है। सीट शायद न भी मिले, कितनी हैरानी और दिक्कत हो रही है। अपनी चेष्टा में ढिलाई करनी ठीक नहीं होगी। मन की कमजोरी पर सावधान आगे से रहना चाहिए। सुवह १० वजे स्टेशन गया, गर्ग जी आये थे, चुनाव के वारे में वात नहीं हुई है। रात में वसंतलाल जी के घर गया।

सरदार शहर

१४ अक्टूबर : सुवह रतनगढ़ पूगा। स्टेशन पर ही श्रीमनजी और जानकी देवी जी से भेंट हो गयी। उनके साथ मोटर में सरदार शहर गया। संपतरामजी के ठहरे। पिता जी से मिलने गया। रात में वाजार में वड़ी सभा हुई, मुझे सभापति वनाया। मीटिंग ठीक रही।

जयपुर

१६ अक्टूबर : श्रीमनजी और जानकी देवी जी के साथ सरदार शहर जाना अच्छा रहा, जान-पहचान वढ़ी। भागीरथ जी आ गये हैं, विड़ला हाउस में ठहरे हैं। फोन किया, उनका कहना है कि हम जरूर जीतेंगे।

अलवर

१७ अक्टूबर : भागीरथजी के साथ ६ बजे ही मोटर से अलवर चला गया। रास्ते में सुना कि सुखाड़ियाजी जीत गये हैं। खुशी हुई।

नीम का थाना

१८ अक्टूबर : सुवह कई लोगों से मिला। बद्रीदास जी के साथ नीम का थाना गया। वहाँ पर आपरेशन का कैंप था। २०००) दिये। इतने नहीं देने चाहिए थे। उतावलापन ठीक नहीं। यहाँ सीट की मेरी चांस वनती जा रही है।

जयपुर

१९ अक्टूबर : सुवह हरिदेवजी जोशी के गया और भी लोगों से मिला। रामकरणजी जोशी और भोलानाथजी मास्टर से भी। सीता वजाज जी से मिला। चतुर मालूम देती हैं।

जयपुर

२० अक्टूबर : रात में ११॥ वजे तक मैं और आनंदी लालजी, व्यासजी के यहाँ थे। कुछ नतीजा निकला नहीं। वह भी सीकर से खड़ा होना चाहते हैं और मैं भी। व्यासजी का रुख कुछ ठीक सा मालूम देता है। देखें क्या होता है।

जयपुर, सीकर

२१ अक्टूबर : सुवह सुखाड़ियाजी से मिला, उसके वाद शोभारामजी और अलवर वालों से। ११ वजे चले ३ वजे सीकर पुगे। सारे लोगों से मिला। यहाँ का वातावरण मेरे लिये ठीक ही मालूम देता है। एक लड़के को २५०) ट्रीटमेंट के लिये दिये। विहारी जी तया पुरोहितजी से मिला। आनंदीलालजी भी आ रहे हैं, ऐसा सुना।

दिल्ली, ट्रेन

२२ अक्टूबर : सुवह मैं कलकत्ते के लिये गाड़ी में वैठा। कानपुर तक की एयरकंडीशंड क्लास की टिकट ली। वी० के० विड़ला के साथ खाना खाया। उनकी पत्नी और वच्चे भी थे। काफी देर तक वातचीत करते रहे। इन्हें काफी नॉलेज है, अच्छी जानकारी रखते हैं। कानपुर स्टेशन पर मूंधड़ा मिले, वह भी कलकत्ते जा रहे थे। मेरे पास रुपये नहीं थे, इसलिये टिकट कानपुर तक ही लिया था।

कलकत्ता

२५ अक्टूबर : कलकत्ते आने पर कैसा ही मालूम देता है। कामकाज यहाँ और सीट का झमेला राजस्थान में। दोनों तरफ अड़ंगा कर लिया। शरीर अस्वस्थ होता जा रहा है। लोग कहते हैं, वूढ़े से लगते हो।

२७ अक्टूबर : मैदान में सुबह जी० डी० बिरला मिले थे। राजस्थान के बारे में बात हुई। उनकी धारणा है, ढेबर भाई आनंदी लाल का पक्ष करेंगे। अभी कुछ कहा भी नहीं जा सकता। शाम को मैदान गया था। ताश वाले मित्र नहीं आए। महावीर के लिए एक टी गार्डन की बातचीत कर रहा हूँ।

२८ अक्टूबर : कसरत तो छोड़ ही दी है। सुबह बालिका सदन की मीटिंग में गया। समाज की लड़कियाँ पढ़ाई में रुचि ले रही हैं। बहुत खुशी होती है। इसके लिए हमें कितना संघर्ष करना पड़ा। दीपचंद चांडक आया था। उससे बातचीत की। राजनीतिक चुनाव को बड़ा अडंगा बताता है। कल मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की मीटिंग में जाना होगा।

२ नवम्बर : रात में चिंता सी बनी रही। भाई जी को फोन की चेष्टा की, हुआ नहीं। सुबह भी की। ८ बजे सुना कि बाँठिया जी ने लेक में डूब कर आत्महत्या कर ली। मन में चोट आयी। चारों ओर से निराशा, दुश्चिंता और अपनी इज्जत की फिकर ने मजबूर कर दिया होगा। मोटर लेकर उनके घर गया। वहाँ से भागीरथ जी के गया। पी० सी० सेन के पास गया। मन तो खराब था ही, बहुत देर तक नींद नहीं आयी। बाजार समान है, पाट ३१।), बोरा २०) रु० अंदाज।

८ नवम्बर : सुबह मैदान गया। भाईजी को फोन किया, उन्होंने मुझे और शर्मा जी को बंबई बुलाया है। मन में काफी चिंता सी हुई। मैंने कहा नहीं कि आसाम जा रहा हूँ। बागला जी के गया, उषा को दिखाया। वहाँ से चंडी बाबू के गया। व्यास जी आज आये। उनके पास गया, आधा घंटे तक था। बातचीत हुई। मैंने कहा सीकर की सीट नहीं मिलने से शायद दूसरी सीट भी स्वीकार कर लूंगा।

९ नवम्बर : सुबह ७।।।) स्टेशन गया। कई मित्र आये। मास्टर भोलानाथजी और टीकारामजी मेरे यहाँ ठहरे। रामकरण जोशी, द्वारकादास पारिख, राधाकृष्णजी के यहाँ। स्टेशन पर मार्तण्डजी मिले। १० बजे फिर स्टेशन गाड़ी चलाकर गया। बहुत ज्यादा भीड़ थी। सुखाड़िया जी वगैरह आये। ५ आदमी मेरे यहाँ ठहरे। दिन में ऑफिस नहीं गया, सारे दिन व्यस्त रहा। काफी बातचीत हुई। ए० आई० सी० सी० की मीटिंग में भी गया। ७ बजे वापिस आये। व्यासजी वगैरह से भी मुलाकात हुई। पंडित नेहरू की गाड़ी आनंदीलाल पोद्दार चला रहे हैं।

१० नवम्बर : भोलानाथजी के बुखार चढ़ आया है। सुबह घर में कई आदमी आये थे। कुंभारामजी भी पूग गये। साथ में बंशीधर जी पुरोहित थे। दिन में ए० आई० सी० सी० थोड़ी देर के लिये गया। टीकाराम जी के साथ सोहनलाल जी दूगड़ के और सूलचंद जी संपत लाल के गया। शाम को बेलूर मठ गये। १३ टिकट कल के लिये बुक करा दिए। २६००) रु० खर्च होंगे। शाम को सीट के बारे में बात हुई। अगर इन लोगों का जोर चलेगा तो मुझे टिकट पक्की मिलेगी परंतु आनंदी लाल जी ने दिल्ली में काफी

अडंगा वैठा रखा है। शोभाराम जी से भी वात हुई। रात में गोवर्धनदास जी विन्नानी के जीमने गए। वहुत से मेहमान आए थे।

डिब्रूगढ़, तिनसुकिया

११ नवम्वर : कुहासे के कारण उड़ने में तीन घंटे की देरी हुई, ७॥ वजे उड़े। तेजपुर के एयरपोर्ट पर प्रायः ३० मारवाड़ी आए थे, काफी वंदोवस्त था। २ वजे डिब्रूगढ़ की मीटिंग में गया, मैं भी थोड़ा-सा वोला। वड़ी मीटिंग हुई थी। वहाँ से ३॥ वजे जालान जी की टी पार्टी में गए। ४॥ वजे तिनसुकिया पहुँचे। वहुत वड़ी मीटिंग हुई, अंदाज २००० आदमी इकट्ठा थे। रात में खाना जमनालाल मन्नालाल जी के यहाँ खाया। २०० आदमी थे। ९ वजे मीटिंग हुई एक घंटा चली। रुपयों के वारे में भी लोगों को कहा। शायद कुछ होगा। सर में दर्द और जुकाम है। एनासिन की दो टिकियाँ ली हैं।

डिगबोई, तिनसुकिया, शिवसागर, जोरहाट

१२ नवम्वर : ७ वजे सुवह टी पार्टी हुई। आसाम ऑयल कंपनी के जेनरल मैनेजर आए थे। १० वजे डिगवोई से चलकर तिनसुकिया ११॥ वजे, वहाँ से १ वजे डिब्रुगढ़। हम लोगों ने तो सहारिया जी के कच्ची रसोई खायी और सव जालान जी के जीमे। शिवसागर ४। वजे पूगे। कॉलेज देखा, मीटिंग हुई। वहाँ से ७ वजे जोरहाट आए। वहाँ भी मीटिंग हुई। लाला जी के यहाँ खाना खाया। मोटरों का वंदोवस्त नहीं था, इसलिए तकलीफ हुई। ३ वजे रात में नवगाँव पूगे।

नवगांव, शिलांग

१३ नवम्वर : सुवह लालचंद जी से थैली के वारे में वात की, ५१००) रु० देंगे। ९ वजे मीटिंग हुई, मैं भी वोला। १० वजे नवगाँव से चले। रास्ते में एक एक्सिडेंट हो गया, आधा घंटा रुकना पड़ा। ३ वजे शिलांग पूगे। पुलिस वगैरह का वंदोवस्त था। ४ वजे होटल में पूगे। विष्णुराम मेहदी आए, पार्टी हुई। ५॥ वजे उनके घर पूगे। चाय पी। वातचीत की। ७ वजे खाना खाकर गोयनका जी के गए। ८ वजे मारवाड़ी पुस्तकालय में मीटिंग हुई। काफी आदमी थे। यहाँ के मारवाड़ी अच्छा सामाजिक काम कर रहे हैं, वहुत खुशी होती है।

चेरा, शिलांग, गौहाटी

१४ नवंवर : सुवह श्री वैद्यनाथ मुखर्जी के घर चेरा गए, रोपवे देखी। वंगला भी ठीक सा है। गोयल आदमी भले हैं। ९ वजे चेरा से चल कर १०॥ वजे शिलांग पूगा, गोयनका जी के जीमा। होटल का विल वनवाया। १२॥ वजे शिलांग छोड़ा और ३ वजे गौहाटी पूगे। गौहाटी में चांदमल जी सरावगी के यहाँ मीटिंग थी। ५ वजे प्लेन पकड़ी और ७ वजे कलकत्ता पूगे।

बंबई

१७ नवंबर : शाम को ५ वजे विहार लेक और पवाई लेक देखने गया। बड़ी सुंदर जगह हैं। दिन में नन्दलाल जी मोर से काफी देर तक वातचीत हुई। कुछ रास्ता वैठता नजर नहीं आता है। शायद झगड़ा होगा। यहाँ मैदान रोज जाता हूँ। तवीयत वैसे ठीक है। बंबई में काम कुछ खास है नहीं, केवल इधर-उधर घूम लेता हूँ। रात में खराव स्वप्न आने लगे तो उठ गया। सोया ही नहीं। सोने से फिर सपने आ जाते, मन खराव हो जाता, पढ़ता रहा।

१९ नवंबर : परसों तक चला जाऊँगा, ऐसी धारणा है। भाई जी राजस्थान के काम से थोड़ा नाराज से हैं। एस० एन० से फोन पर वात हुई। पाट का वाजार ३१॥) है। मन में चिंता होती है। नंदलाल मोर से वातचीत हुई। उनका अडंगा सलटता नजर नहीं आता।

२० नवंबर : साँवलराम जी से शाम को ४ वजे मिल की मीटिंग में आपस में काफी वोलचाल हो गयी है। भाई जी ज्यादा नाराज थे परंतु दूसरा उपाय नहीं था। मैंने वीच-वचाव किया और कल पर वात रख दी। शाम को ७॥ वजे तक साँवलराम जी से वात करता रहा। खास रिजल्ट तो निकलता नहीं मालूम देता। मेरा मन वंबई में ऊव-सा जाता है।

रींगस, रघुनाथगढ़

२४ नवंबर : कल जयपुर में हरगोविंद जी की जीप मिल गयी, आराम रहा। वंशीधर जी के आश्रम में रात वितायी। जीप खराव हो गयी। १० वजे चले १२ वजे सीकर पूगे। स्टेशन के वासे में खाना खाया, अच्छा मिल गया। ३ वजे सीकर से चले, रघुनाथगढ़ आ गए। वहाँ से लौहागर जी गए। तीर्थ है अच्छी जगह है, पहाड़ियों के वीच में। वापस रघुनाथगढ़ आकर मीटिंग में गया। सौ-सवा सौ आदमी थे। सव वातें समझायीं। १० वजे वहीं एक आदमी के घर सो गया।

रघुनाथगढ़, रामगढ़

२५ नवंबर : रघुनाथगढ़ अच्छी जगह लगी। खुली पहाड़ी जगह, छोटा-सा कस्वा। सीधे-सादे लोग हैं। सीकर ११ वजे पूगे। छोटी-सी मीटिंग थी। ठीक रही। २ वजे सीकर चले, जीप से। जोशी जी और किशन सिंह जी साथ थे। ४ वजे लछमनगढ़ आए। मदन जी से मिले। ४। वजे फतेहपुर फिर ६ वजे रामगढ़। वहाँ कन्हैयालाल जी मोदी के रात में रहे। अच्छे आदमी हैं। दूध पिया, तवीयत खुश हो गयी। लछमनगढ़ सीकर इलाके में आ गया है। एक रकम अच्छा हुआ। आनंदी लाल नहीं आएं तो यह जिला मेरे लिए वहुत ही अच्छा है।

रघुनाथगढ़, सीकर

२६ नवंबर : सुवह सेर भर मट्ठा पिया। कन्हैयालाल जी मोदी वहुत मिलनसार और भले आदमी हैं, ७४ वर्ष के परंतु कर्मनिष्ठ। सात-आठ गायें हैं, दूध और छाछ लोगों को देते हैं। इसी में उन्हें आनंद मिलता है। ८।। वजे फतेहपुर पूगा। श्री निवास जी वूबना के कलेवा किया। वाला सेठ के खाना खाया। फिर ११।। वजे मीटिंग की। प्रायः पंद्रह-वीस गाँव के खास-खास आदमी आए थे। मेरा उत्साह वढ़ता है। इनसे वातें हुईं। १२।। वजे सीकर आकर रामप्रसाद जी से मिले। उनके वारात आयी थी। २ वजे की ट्रेन से ४ वजे रींगस पूगा। वंशीधर जी मिले। ६ वजे फुलेरा गोरधनदास जी के साथ फर्स्ट क्लास में बैठा। रूपकिशोर जी और पंड्या जी मिले। पाट का वाजार थोड़ा मंदा है।

उदयपुर

२७ नवंबर : सुवह १० वजे उदयपुर पूगे। ट्रेन में माँगीलाल जी, रामकिशोर जी आदि सव थे। अच्छा साथ रहा। स्टेशन पर वहुत से आदमी आए थे, वर्मा साहव वगैरह। वर्मा साहव के घर भोजन किया। नारायणी देवी आदि से भेंट हुई। अच्छा रहा, काफी वातें हुईं। शाम को वारात आयी। विवाह में लोगों ने काफी प्रेजेंटेशंस दिए। मैंने सिलाई मशीन, गणपत जी ने रेडियो, मातादीन जी ने कितावें दीं। रात १० वजे तक थे फिर होटेल में आकर सो गए। दिन में श्रोत्रिय जी से मिला था। सीकर की वात मैंने नहीं की। दिन में म्युजियम देखने गया, साधारण सा था परंतु तस्वीरें अच्छी थीं। गोरधन जी ने एक जीप दी है। शाम को शोभाराम जी, कुंभाराम जी, मास्टर वलवंत सिंह आदि मिले, मथुरादास जी माथुर, नाथूराम जी मिर्धा भी।

उदयपुर

२८ नवंबर : सुवह जलवोर्ड गया, जोशी जी, गणपत जी और मैं। उदयपुर से २४ मील दूर पर जावर में खानें हैं उन्हें देखने गए। थकावट नहीं थी। लक्ष्मी भवन होटल में ठहरा हूँ। अच्छा है, आराम भी है। अच्छी जगह पर है। जावर ८ वजे पूगे। चाय पी। चीफ इंजीनियर वनर्जी से मिले। फिर ऑफिस गए, जेनरल मैनेजर साथ थे। हाथ में टार्च लेकर खान के भीतर गए। काफी वड़ी है, चाँदी, जस्ता और रांगा निकलता है। ९ वजे वाहर आए, फिर १० वजे फैक्टरी देखी। साधारण सा प्रोसेस है। कच्चा माल जापान और विहार भेजते हैं। १० वजे जावर से वापस चले। श्री गोकुल भाई और श्री कमला श्रोत्रिय के साथ १ वजे खाना खाया।

अजमेर

२९ नवंबर : रात में नींद अच्छी आयी। सुवह अजमेर में जागा। रामकिशोर जी व्यास, अमृत लाल जी साथ थे। काफी वातें हुईं, गोरधनदास जी विन्नानी भी थे। उनकी

वाड़मेर की सीट तय हो गयी है। जयपुर ११ बजे पूगे। ताँगा लेकर जलबोर्ड, वहीं स्नान किया। हिंद होटेल में खाना खाया, साधारणतया अच्छा था। इन दिनों मिरचें इतनी ज्यादा खा लेता हूँ कि छाले हो गए हैं। कांग्रेस ऑफिस गया। भोलानाथ जी नहीं हैं। २ बजे रामचंद जी चौधरी फिर दामोदर जी व्यास, फिर हीरालाल जी शास्त्री के गया। ४। बजे गोरधन जी चले गए, बीकानेर। १५००) रु० गोरधन जी से उधार लेकर ५००)रु० जोशी जी को दे दिया है। हरलाल सिंह के गए। पार्लियामेंट सीट के खर्चे माँगते थे। स्टेशन से आकर कुंभाराम जी से मिला। एक घंटा बातें हुईं। रामदेव सिंह आए थे। उन्हें एक जीप देने को कहा है। कुंभाराम जी से काफी बातें हुईं। जयपुर की यात्रा एक रकम ठीक रही।

जसीडोह

२ दिसंबर : सुबह ५।। बजे पूगा। माँ जी की तबीयत ठीक है। माँ जी के साथ हममें से किसी को रहना चाहिए। सुबह अखबार में कैपिटल टैक्स की खबर देखी। दिन में मालूम हुआ; शेयरों में १०) रु० की मंदी आ गयी। हमारे भी एक लाख का अंदाज नुक्सान हो गया होगा, ऐसा मालूम देता है। मेरी धारणा है टैक्स वढ़ाने से सरकार की आमदनी लांग टर्म में घटती है। खर्च वेशी पड़ता है, केसेस बढ़ते हैं, गलत आदमी, अफसरों को, वेईमानी का मौका ज्यादा मिलता है। इंवेस्टमेंट भी कम होंगे। इससे अच्छा है कि वसूली में ईमानदारी रखी जाए परंतु अफसर भी तो आदमी हैं। दिन में मातादीन जी के साथ था, एक गिलास अनार का रस पिया। कपड़े धोए, तेल मालिश कर स्नान किया। कलकत्ते की चिन्ता मन में लग रही है। आनंदीलाल जी को बंगाल की सीट मिली है, ऐसा सुना जाता है।

कलकत्ता

१६ दिसंबर : ६ बजे पिता जी आए। मैं स्टेशन सेल्फ ड्राइव कर गया था। पहले घेलिया जी के उधर दो घंटे तक ताश खेलता रहा फिर दीपचंद से वातचीत की। उसका धंधा कुछ ठीक चल रहा है। परंतु रुपए फँस गए, आने की होप नहीं। पाट का बाजार और भी गरम सुना जाता है। मेरे में फाटकेवाली आदत छूटती नहीं। इसलिए पूरी तकलीफ है। एस० एन० आसाम से आया। मैंने पाट बेच दिया, इसके वास्ते ओलमा दे रहा था। गलती मेरी ही थी। रात में पिता जी के पास वातचीत करते रहे, देश जाना जल्दी ही होगा।

१८ दिसंबर : सुबह सोसाइटी गया। तुलसीराम जी सरावगी का शरीर बरत गया। मन में दुख हुआ। अच्छे कार्यकर्त्ता थे। मारवाड़ी समाज में सुधार का बहुत काम किया। ऐसे लोगों के संघर्ष को आगे की पीढ़ी याद शायद ही रखे। अब तो समय तेजी से बदल रहा है। नीमतल्ला घाट तक गया, वहाँ १ बज गए। २ बजे ऑफिस, फिर के० के० दत्त के गया। वहाँ से ग्रेट पिरामिड के ऑफिस गया, कागज सही किए। मेरे सीट

की तय नहीं है, झंझट पूरी हो रही है। जयनारायण जी व्यास के दो कड़े पत्र आए। सब को खुश रखना कठिन है। राजनीति बहुत रिस्की है परंतु अब उपाय नहीं।

१९ दिसंबर : ९। बजे ऑफिस गया। गजराज जी आए, बातचीत की। वे पाट देने में इच्छुक नहीं हैं, बाजार मंदा हो जाय तो दूसरी बात है। १२ बजे तक शेयर्स सही करता रहा। २ बजे एक बार शेयर मार्केट गया था। समान है। ग्रेट पिरामिड में भी गया था। दिन में के० पी० गोयनका और डी० पी० गोयनका के पास गया था। महावीर को साढ़े तेरह और दिए। ३ बजे तुलसीराम जी के घर बैठने गया। बंबई जाने का विचार आज फिर से हुआ।

२१ दिसंबर : सारे दिन लोगों से मिलता-जुलता रहा। पाट का बाजार मंदा है। २०००)रु० नवयुग के लिए दिए। शाम को गद्दी गया। सुबह १००००)रु० लाया था। ५०००)रु० डागा को दिए। शाम को खाने पर प्र० सो० पा० वाले बीकानेर से आए। रुपए माँगते थे, मैं नट गया। इस समय रुपयों की बड़ी टान है। सुबह राजबहादुर जी से मिला, प्रायः एक घंटे तक बात हुई। कुछ नतीजा निकलेगा, ऐसा मालूम देता है। एक पत्र महामाया बाबू से बृजकिशोर जी पर लिया।

दिल्ली

२३ दिसंबर : दिल्ली २ बजे पूगा। गंगा बाबू नहीं हैं। सगाई वाले बांसल गोती निकल आए। ४ बजे सुराना जी के गया। दो परिचय-पत्र दिए। चाय नाश्ता किया। परोठा गली में दो परोठे खाए, पेट खराब कर लिया। पेशाब की तकलीफ है, कम उतरता है। ४॥। बजे मातादीन जी के गया। आनंदी लाल बंगाल से खड़े हो रहे हैं, उन्होंने अखबार की ऐसी कटिंग दिखाई। शाम को कृपलानी जी से मिला। एक कंबल दी। सुचेता जी कांग्रेस में आ रही हैं। लालबहादुर जी को सिफारिश का कहा है। दिनकर जी से मिलकर एक परिचय-पत्र लिया।

जयपुर

२६ दिसंबर : सुबह दो मील घूमे। रात वर्मा साहब के यहाँ सोया था। आराम रहा, नींद अच्छी आयी। दिन में गणपतराय जी सरावगी से मिलने गया। राजबहादुर जी से भी मिला। एक जीप देने का कहा है। चांसेज ठीक हैं। बजरंगलाल जी का पत्र आया है। वे सीकर की जगह झुंझनूं चाहते हैं। हजारों लोग जयपुर में आ कर बैठे हुए हैं। टिकट लेने वालों की चारों तरफ भीड़ है। कैसा ही लगता है। बिन्नाणी जी की सीट तय के माफिक है। हरिदेव जी को २०००)रु० दिए हैं। रात में गणपत राय जी सरावगी आए। उन्होंने मेरे लिए काफी चेष्टा की है।

२७ दिसंबर : रामकरण जी जोशी को २५००) रु० दिए। पेशाब की तकलीफ से हैरानी है, शाम को उतरना बिलकुल बंद हो गया। फिर किसी तरह आने लगा। मेरी

सीट का फैसला नहीं हो पा रहा है। चांसेज तो ठीक बने हैं। आनंदीलाल जी का भी खास स्टैंड नहीं रह गया है। लोगों में नक्की नहीं हो रहा है। हर सीट पर झगड़ा हो रहा है। शायद सीकर मुझे मिल जायगी परंतु कमलनयन जी का नाम भी आ रहा है।

जयपुर

२९ दिसंबर : सुवह ५।।। पर फोन आया। वंबई की समस्या हल हो गयी, मुझे वुलाया है।

दिल्ली

३० दिसंवर : जी घबरा रहा था, पेशाव फिर वंद हो गया, इसलिए रवर की एक सलाई ली। दो घंटे वैठा रहा। अंदाज २ वजे वर्मा साहव के साथ जयपुर से चले। सर्दी काफी थी, रास्ते में खास तकलीफ नहीं हुई। दिल्ली में जगह की वहुत कमी है। पहले ग्रेट पिरामिड गया था, वहाँ जगह की पहले से ही तंगी है। आज रात में वैठक होगी, ऐसा सुना जाता है। होटेल में ठहरना पड़ा।

———

१९५७

दिल्ली

१ जनवरी : होटेल साधारण और गंदा सा है परंतु उपाय क्या। जगह कहीं नहीं मिली। १० वजे यशपाल जी के गया। मेरी तबीयत ठीक नहीं है, पेशाव की तकलीफ है। यहाँ सर्दी भी काफी है। खाना खाकर १२॥ वजे कोचर जी के गया फिर बीकानेर हाउस। इन दिनों यह तीर्थ-मंदिर, सव कुछ वना हुआ है। टिकटों का निवटारा हो गया है। पार्लियामेंट की सभा ७ ता० को होगी, फिर आना होगा।

कलकत्ता

३ जनवरी : मैदान गया, लोगों से वातचीत की। वहुत तरह के प्रश्न पूछते थे। क्या उत्तर देता? आगे तो सव अनिश्चित-सा है। ८ वजे अंदाज घर आया। वंबई से वात की। अभी तक कानूनी कारवाई चल रही है। इस काम में मेरी वड़ी गलती रही है, पश्चात्ताप भी हो रहा है। इस वार यात्रा फजूल ही गयी। मुझे भी क्या हो गया है? फजूल में रोज-रोज फिर रहा हूँ। तवीयत खराव रहने लगी। पेशाव की तकलीफ है। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी गया। दांता के ठाकुर साहव से मिलने गया था, महाराजा वीकानेर की पार्टी में भी। प्राय: एक सौ सनातनधर्मी लोग आए थे।

दिल्ली

६ जनवरी : रात में हवाई जहाज से रवाना होकर सुवह दिल्ली पुग गया। प्रभुदयाल जी के ठहरा और भी सीकर के लोग आ गए थे। ग्रेट पिरामिड में जगह ले ली और उधर ही चले गए। अभी तक राजस्थान वाले नहीं आए हैं।

७ जनवरी : आज राजस्थान वाले आ गए हैं। परंतु मीटिंग कल से शुरू होगी। व्यास जी तो इन दिनों में यहीं थे, सुखाड़िया जी और सव आ गए हैं।

८ जनवरी : मीटिंग हुई, नाम भी तय हुए हैं। सुखाड़िया जी की क्लियर मेजोरिटी है, ऐसा मालूम देता है।

९ जनवरी : डायरी साथ में नहीं लाया, इसलिए डायरी याददास्त से लिखनी असंभव है। यह जरूर है कि बड़ी ही तकलीफ और मानसिक तनाव के दिन गुजरे। पूरी चिंता रही।

१६ जनवरी : सुबह विन्नानी जी से मिले, उन्होंने कहा कि तुम्हारी तो पाली की सीट हुई है। मन में काफी चिंता हुई, कमलनयन जी ने वर्धा की सीट ले ली है। विन्नानी जी के आ जाने से सुविधा हो गयी है।

१७ जनवरी : घनश्यामदास जी मेरी सीट के लिए हद से ज्यादा चेष्टा कर रहे हैं। शाम को बिरला जी के यहाँ खाना खाया। उन्होंने आज १५ जगह फोन किए। ऐसा मालूम देता है, सीट का ढंग बैठ जायगा। फिर भी चिन्ता तो बहुत होती है।

१८ जनवरी : सर्दी काफी है। सुबह घूमने जाता हूँ, बिरला जी से मुलाकात हो जाती है। उनका कितना बड़प्पन है, मेरे लिए बिना कहे चेष्टा करते हैं। एस० एन० सिन्हा से मिलने गया। उन्होंने कह दिया, तुम्हारी सीट ठीक है। सारे दिन बीकानेर हाउस या इधर-उधर चक्कर लगाता रहा। अभी तक पार्लियामेंट की सीटों का पूरी तौर पर तय नहीं हो पाया है। कमलनयन आज वर्धा चले गये।

कलकत्ता

२२ जनवरी : इंश्योरेंस ऑफिस में गया, जे० टामस में भी गया। बाजार मंदा है, कामकाज कमती है। ऑफिस रहेगा या नहीं कौन जानता है। चुनाव की नाना तरह की खबरें आ रही हैं। दिन में विन्नानी जी का फोन आया कि सीकर की सीट शास्त्रीजी को दे रहे हैं, मन में काफी चिंता हुई। भागीरथजी के पास गया। शाम को जयपुर, सीकर फोन किया तब मालूम हुआ, ऐसी बात नहीं है और कल अनाउंस हो जायगा।

२३ जनवरी : दिन में छुट्टी रही, नेताजी जन्म-दिवस है। नेताजी की यादगार में आज जुलूस निकाले गए। कल फिर भूल जायेंगे। फारवर्ड ब्लॉक वाले अपनी राजनीति के लिए नेताजी का नाम लेते हैं, परंतु उनमें एक भी नेताजी के आदर्श पर चलनेवाला नहीं दिखता। यही हाल कांग्रेस का भी हो रहा है। आजकल राजनीति की यही विशेषता है। शाम को विवाहवालों के गया। एक अमेरिकन हमारे यहाँ ठहरा है।

५ फरवरी : सागरमलजी सोमानी को ऊँट का चिन्ह मिला है, ऐसा सुन रहे हैं। और कोई खास खबर नहीं, कल्लू खाँ सीकर वाले के बैठने की बात थी, वह नहीं बैठा है। परंतु कोई उपाय नहीं। वैसे स्थिति ठीक सी है।

सीकर

८ फरवरी : सुबह फोन की चेष्टा की, नहीं हो सकी। शाम को हरलालजी आए। काफी कड़ाई की सी बात कर रहे थे। लोगों से मिला-जुला। मुसलमानों की एक मीटिंग में गया।

९ फरवरी : सुवह हरलाल सिंहजी से वात की। रामदेवजी को १५००) रु० देने को कहा। इसके सिवाय २०००) रु० और भी व्यवस्था खर्च का, इसी तरह दूसरों को और भी वहुत से रुपए देने पड़ेंगे। हरलाल सिंहजी ने चिंता जैसी वात की। ५००) रु० ले गए हैं। मन में कैसा ही होता है। सीतारामजी केडिया को वुलाया है। लक्ष्मणगढ़ की तथा श्री माधोपुर की स्थिति खराव है। गोरधनजी धूत को वैठाया। शाम को चौक में वड़ी सभा हुई, अच्छी जमी। फिर लोसल में रात में सभा हुई, प्राय: ५०० आदमी थे।

सीकर, खंडेला, श्रीमाधोपुर

१० फरवरी : गाँवों में मीटिंग थी, खंडेला गया फिर श्री माधोपुर आ गया। यहाँ की स्थिति पहले से अच्छी हो गयी है, वैसे जोर तो लगाना पड़ रहा है। एलेक्शन में मन लगता है, अच्छा भी लगता है परंतु कलकत्ते से और वंवई से चिंता की खवरें आ रही हैं।

खंडेला, नीम का थाना, श्रीमाधोपुर

११ फरवरी : ९ वजे खंडेला चले। वाजार गए, मोहल्लों में लोगों से मिला, साथ में पुरोहितजी थे, खर्चा वेशी है, वैसे ठीक है। २ वजे अंदाज चले, ४ वजे नीम का थाना पूगे। वड़ी भारी मीटिंग हो रही थी। ज्ञानचंदजी वगैरह कुछ नाराज से थे। परंतु सव फिर ठीक हो गया। मैंने अपनी जान में अच्छा भाषण दिया, लोगों पर प्रभाव भी पड़ा। वहाँ से श्री माधोपुर आए, मीटिंग चल रही थी। मैंने भाषण दिया, लोग प्रभावित हुए। मेरा उत्साह वढ़ता है। आज का दिन अच्छा रहा।

श्रीमाधोपुर, रींगस, सीकर

१२ फरवरी : सुवह वर्कर्स से वातचीत की। कल की मीटिंग का अच्छा प्रभाव पड़ा, वताते थे। इधर गीताजी की स्थिति भी कुछ सुधरी है। कुछ समझ में नहीं आता। ९ वजे रींगस पूगे। वाजार में लोगों से मिलता रहा। इस जगह मेरे और गीताजी के वोट वरावर रहेंगे, शायद उन्हें ज्यादा मिल जायें। मन्मथजी मिले। उनसे रिपोर्ट मिली। शाम को ७॥ वजे मीटिंग थी। ठीक रही। ३० आदमी और रख लिए। काफी खर्च वाँध लिया है। रात में पता चला, कल्लू खाँ वैठ गया या कल वैठ जायगा, ऐसी आशा की जाती है। मन में वड़ी अशांति है। एक रकम इलेक्शन भी वड़ा फाटका है, उससे भी ज्यादा अडंगा।

सीकर

२५ फरवरी : सीकर का काम आज खत्म हो गया। सारे दिन घूमता रहा। आशा-निराशा मन में उठती है। वैसे, काफी चहल-पहल रही। ३००० वोट अपने वेशी आयेंगे आज की पोलिंग में ऐसा मालूम देता है।

सीकर, लोसल

२६ फरवरी : सुबह जीप में लोसल गया। रामदेव के गाँवों में भी गया, काफी घूमा। सिंगरावट, शालपुरा तथा लोसल में जुलूस निकाला। थोड़ा झगड़ा भी हुआ।

लोसल, सीकर, लक्ष्मणगढ़

२७ फरवरी : लोसल से ५ बजे चले, ६ बजे सीकर पुगे। वहाँ से १० बजे लक्ष्मणगढ़ गया। लक्ष्मणगढ़ का रिजल्ट अपने हक में है। ४ बजे सीकर आया, बाजार घूमा। ऐसा मालूम देता है, काफी मेजोरिटी से जीत जाऊँगा। आज खास थकावट नहीं आई।

कोटपुतली

३ मार्च : पुरुषोत्तमजी और मैं कोटपुतली के लिए रवाना हो गए। यहाँ लोगों से मिले। स्थिति अच्छी नहीं है। पुरुषोत्तमजी तो नन्दू के साथ आए, मैं जयपुर से कुंभारामजी से मिल कर आया। लक्ष्मणगढ़ की पोलिंग अच्छी रही है।

४ मार्च : यहाँ परिस्थिति खराब सी है। हजारीलाल हार जायेंगे। नन्दू, चिम्मन आदि यहाँ हैं। यहाँ काम ठीक नहीं हो पाया, हमारे आदमी अच्छा संगठन नहीं बना सके। उधर, सिंगरावट की पोलिंग कल खराब हुई। चिंता की बात हो रही है।

५ मार्च : सारे दिन कोटपुतली के गाँवों में वकील साहब के साथ घूमता रहा। वे नाराज तो होते हैं परंतु आदमी बुरे नहीं। कुंभारामजी के कहे अनुसार दूसरी पार्टी से भी बातचीत की है, इससे दो तीन हजार वोटों का फर्क पड़ जायगा।

६ मार्च : आज कोटपुतली की गिनती है। मालूम नहीं क्या होगा। शाम को जयपुर फोन किया। ऐसा लगा कि २५००० वोट गिरे हैं। सोमानीजी के यहाँ का फोन था, वे १५००० वोटों से जीते हैं, ऐसा बतलाते हैं।

सीकर

७ मार्च : सारे दिन पेशाब की तकलीफ से हैरानी रही। चुनाव की चिंता भी लगी है। राणोली में काफी से ज्यादा घमासान-सा मचा हुआ था। आज की वोटिंग में हम लोगों की जीत सी है। रात में ७ बजे जीप से रवाना होकर ९ बजे रींगस पुगा। गाँव में लोगों से मिला।

कलकत्ता

८ मार्च : प्लेन से ११॥ बजे कलकत्ता पुगा। लोगों से मिला। भागीरथजी के गया, लालाजी से मिला। लोग यह मानते हैं कि मेरी जीत हो जाएगी। वजन तो चार-पाँच सेर घट गया है पर वैसे तंदुरुस्ती ठीक है।

९ मार्च : सुबह मैदान होकर भागीरथजी के गया। ईश्वरदासजी जालान की मीटिंग में गया, थोड़ा बोला भी। ४ बजे सोसाइटी की मीटिंग में गया। काफी लोग मिले, अच्छी सभा रही। मेरी जीत मुझे निश्चित सी लगी। रात में सिगरावट के जीतने की खबर मिली।

१० मार्च : जी० डी० बिरला से मिला। बातचीत हुई। मेरी जीत बतला रहे हैं। बिन्नानीजी के घर फोन किया। ज्वालाप्रसादजी के घर गया। पार्टी में ७० आदमी आए। मारवाड़ी सभा वाले डफ लेकर आए। डायरी बहुत दिनों बाद लिख रहा हूँ। जैसलमेर के 'चाचा' भी बड़ी मेजारिटी से जीत रहे हैं।

कलकत्ता

११ मार्च : रात में नींद नहीं आयी। सुबह एक अवसाद सा था, मालूम नहीं क्यों। १० बजे ऑफिस आया, एमीसन साहब नहीं मिला। पाट का बाजार मंदा सा है। बिरजू का फोन आया, जगनसिंह हार गया है, ३००० वोटों से।

दिल्ली

२९ मार्च : सुबह ६। बजे दिल्ली पूगा, प्लेन से। ८ बजे अंदाज दरयागंज आया। मालूम हुआ, बद्रीनारायणजी आए हुए हैं, अच्छा लगा। तारानगर के कई मित्र आए हुए हैं। बद्रीनारायणजी से मोटरों के बारे में बातचीत की। ग्रेट पिरामिड की ऑफिस बेतरतीब पड़ी है, वहाँ जाकर सब ठीक की। ३ बजे मीटिंग हुई, पार्लियामेंट हाउस में भी गया। मैंने नेहरूजी को प्रोपोज नहीं किया, मन में ही रह गया। एक घंटे तक सभा थी। काफी लोगों से मिलना हुआ। फिर ५ बजे से पार्टी चली। प्रायः छः-सात सौ आदमी थे। गंगाशरणजी, मैथिलीशरणजी, दिनकरजी, श्री देशपांडे, बीकानेर महाराजा, दम्माणी-जी, सोमानीजी, राजबहादुरजी, मालवीयजी, श्री भगत आदि थे।

३० मार्च : दिन में गंगा बाबू से मिला। मैथिलीशरणजी के यहाँ चाय पीने गया। उनके बगल का मकान लेने के लिए गंगा बाबू से फोन करवाया। ८ नं० फ्लैट शायद मिल जायगा। वर्मा साहब से नहीं मिल सका। प्रभुदयालजी अपना फ्लैट छोड़ रहे हैं। श्री रवि भंडारी के यहाँ भोजन पर गए। कालूलालजी श्रीमाली तथा ओंकार बोहरा और कई लोग आए थे। दिल्ली में सर्दी पड़ रही है।

सीकर

३१ मार्च : सुबह ७ बजे पूगा। बद्रीनारायणजी साथ थे। सीकर के लोग मिलने आए। दीवानजी के जीमने गया। शाम को मन्मथजी के जीमने गया था। सोहन महाराज के दूध पीने गया। सुंदरलालजी से मिला, हिसाब के बारे में बात की। शाम को गौशाला गया। बीस-पचीस आदमी और थे, वे रुपए माँग रहे थे। मैंने पीछे का कहा है। सब लोग रुपए माँगते हैं। कांग्रेस कमेटी में गया, वे लोग भी रुपए माँगते हैं। चुनाव के

टाइम पर रुपए देता रहा हूँ फिर भी माँग चालू है। समझ में नहीं आता। चारों तरफ रुपए की ही बात है। मैं चाहता हूँ, लोगों से बातचीत कर अपने क्षेत्र के बारे में काम का तय कर लूं पर ऐसा होता नहीं दिखता। लक्ष्मणगढ़ वाले आए थे, जिला कांग्रेस की मीटिंग हुई, जोशीजी थे।

कलकत्ता

३ अप्रैल : चुनाव के कारण कामकाज में टाइम नहीं दे पाया। हर्ज तो हुआ है। थकावट मालूम देती है। पाट का भाव २९) रु० है। मेरा मन मंदा का है। दिन में ऑफिस में मैक से बात हुई। वे लोग डागा के बंदोबस्त से संतुष्ट नहीं हैं। मेरा हिस्सा छोड़ देना ही होगा। सुबह पुरुषोत्तमजी के घर गया था। स्वीडन पर लेख लिखा, थोड़ा ही लिख पाया।

१२ अप्रैल : १ बजे ऑफिस आया। सी० एल० सेठिया आये, दो लाख रुपया देना मंजूर कर लिया है। शायद श्रीचंदजी वगैरह कुछ देंगे, ऐसा मालूम पड़ता है। ३ बजे कांता को बुलाकर सारी बातें कहीं। वह थोड़ा उदास सा था। मुझे भी मन में फील तो हो रहा है पर काम इधर में नहीं देखने से यही होने वाला था। कोई दूसरा उपाय भी तो नहीं था। बीमा का काम करने का कर रहा हूँ। परंतु एस० एन० और भाईजी दोनों ही इसके लिए तैयार नहीं।

१३ अप्रैल : दिन में ऑफिस गया, दो घंटे अंदाज था। छोटी ऑफिस भी थोड़ी देर गया था। दिन में ३ बजे लोढाजी की पार्टी में गया। ३॥ बजे मुरारजी देसाई की, ५॥ बजे बिरलाजी की तथा ७ बजे एन० डी० अग्रवाल की। अतुल्य घोष की मीटिंग में भी गया था। के० पी० खेतान आदि से बात हुई।

२९ अप्रैल : १२ बजे अंदाज ऑफिस गया। मैकडोनल्ड के साथ एम० एल० जालान के पास गया। ऑफिस छूट जाने का मेरे मन में बहुत ही दुख है परंतु पार्लियामेंट और ऑफिस साथ चल नहीं सकते। कैसा ही महसूस कर रहा हूँ। सुबह ४। बजे बापूजी और माँ जी मोटर से रामचंद्रपुर गए। मैंने गंगाजी जाकर तेल मालिश कराया, स्नान किया। रात में गंगा बाबू को स्टेशन पुगा कर १० बजे तक मैदान में ताश खेलता रहा। शाम को 'क़ाबुलीवाला' फिलम देखा।

३० अप्रैल : तबीयत आज कुछ ठीक मालूम दे रही है। भूख भी लगी है। दिन में १ बजे से ६॥ बजे तक ऑफिस, ग्रेट पिरामिड तथा गद्दी में रहा। आज कुछ काम हुआ है, ऐसा कह सकता हूँ। शाम को ६। बजे रुक्मानंदजी के पास गया। उनके ऑपरेशन हुआ है, जाना बहुत ही ज्यादा जरूरी था। पाट और बोरे का बाजार गरम है, भाव ११३।) रु०। हम लोगों के खास कुछ सौदा नहीं है।

२ मई : ऑफिस को लेकर मन में बहुत ही दुख है। मुझे काम देखते रहना चाहिए था, फिर धोखा नहीं रहता। अब दुखी या नाराज होने की कोई बात नहीं। पाट में सैदपुर

में चार-पाँच लाख का घाटा है। बंबई की मिल भी खराब चल रही है। यही सब लेकर मन खराब हो रहा है। ऑफिस गया था, थोड़ी देर 'मैक' से बातचीत हुई।

५ मई : सीकर का हिसाब देखा। इस वर्ष में मालूम नहीं क्यों मन में चिंता और कमजोरी रहने लगी है। भाईजी से बंबई से फोन पर बात हुई, वे भी कुछ चिंतित से ही मालूम देते हैं।

८ मई : मैकडोनल्ड से मिला। कांता से नाराज है। महेंद्र को गाड़ी ३०००) रु० में बेच दी। रात में दिल्ली के लिए ट्रेन पकड़ी। कूपे मिल गया था, आराम रहा।

नई दिल्ली

९ मई : सुबह मुगलसराय में गोपाली बाबू आए, उदास थे। पिछले वर्ष घाटा लग गया। मैंने भी उन्हें खबर देकर गलती की। फजूल में २५) रु० उनके खर्च हो गए होंगे। काफी चीजें ले आए, उनमें से कुछ अतुल्य बाबू को दे दी। ट्रेन में बर्फ रख लेने से गरमी कुछ कमती हो गयी। ट्रेन काफी लेट पुगी। रात में २ बजे, ९४ नं० फ्लैट नयी दिल्ली आए। काफी असुविधा रही। मेरा फ्लैट मंदा सा ही मालूम देता है। वाइफ की तबीयत भी ठीक नहीं। दिल्ली में सर्दी मालूम देती है।

१० मई : दिन में लोक-सभा में गया। अतुल्य घोष, एस० एन० सिन्हा, ए० के० सेन, महाराजा बीकानेर, एम० एल० वर्मा आदि से मिला और भी बहुत से एम० पी० से मिला; जगजीवनराम जी से भी। पार्लियामेंट में करने के लिए काम बहुत है, ढंग से किया जाय तो बहुत बड़ी सेवा हो सकती है। बहुत तरह की बातें जानने में आयीं। शाम को ४ बजे वापस आया। ८ बजे तक मकान बदला। यह फ्लैट बड़ा मालूम देता है। मोटर खराब हो गयी है, दूसरी मँगानी होगी। संसद में 'ओथ' ठीक से ले ली। वाइफ और राजू का मन नहीं लग रहा है। रसोई की तकलीफ है। वाइफ की तबीयत भी खराब है।

११ मई : सुबह ५ बजे उठा। कागज-पत्र जँचाए। पत्र वगैरह भी लिखे। कसरत चार-पाँच दिनों से छूट गयी है। शरीर में थकान मालूम देती है। सुबह गंगा बाबू के पास गया। ११ बजे पार्लियामेंट गया। बनारस के श्री रघुनाथ सिंह से जान-पहचान की। उन्होंने क्वेश्चन के तरीके बताए और एक सबजेक्ट पर ही ज्यादा ध्यान देने को कहा। अच्छे आदमी हैं। गाड़ी मरम्मत में दी है।

१२ मई : रात नीचे ही सो गया, पढ़ते-पढ़ते। सुबह ६। बजे उठा। मन्मथजी के साथ वर्मा साहब के गया। मास्टर जी से मिला। मैथिलीशरण जी गुप्त के गया, वहाँ महादेवी जी, दिनकर आदि थे। अच्छा लगता है, साहित्यकारों को एक जगह देखना और उनकी बातें सुनना। १॥ बजे बाजार करने गया, ४०) रु० की चीजें ले आया। ५॥ बजे अतुल्य बाबू की पार्टी में गया। काफी लोग आए थे अशोक सेन, पन्त जी, मि० चाँदा, डिप्टी मिनिस्टर हाउसिंग, रेणुका राय, नित्यानंद कानूनगो, मेहरचंद खन्ना, मि० जोशिम अल्वा और उनकी पत्नी। अल्वा जी से जान-पहचान हुई, अच्छे भले हैं।

घर आया, कितावें पढ़ीं, पत्र लिखे। एक पत्र कालीप्रसाद जी खेतान को लिखा है।

१३ मई : आज राष्ट्रपति का भाषण सुना। अच्छा भाषण था। देश की समस्याओं की उन्हें पूरी जानकारी है। वीकानेर महाराजा ने मुझे कहा कि आप भाषण पर कुछ कहिए। मुझे झिझक मालूम देती है। ५ वजे पार्टी मीटिंग में गया। जवाहरलाल जी का भाषण हुआ। महावीर त्यागी जी ने खूव खुलकर कहा। ६॥ वजे वाइफ के साथ राष्ट्रपति की लाउंज में गया। प्रायः हजार-ग्यारह सौ आदमी थे। वाइफ को भी अच्छा लगा। गंगा वावू थे। रात में मास्टर जी और चतुर्वेदी जी जीमने आए। चतुर्वेदी जी जयपुर में मिनिस्ट्री में हैं। कलकत्ते से ठंढ यहाँ ज्यादा है।

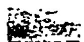
१४ मई : खास थकावट नहीं महसूस होती है। पैदल दो मील गया, गंगा वावू से भेंट की। सारे दिन लॉवी में और पार्लियामेंट में था, लोगों से मिलता रहा। वहुत कुछ सीखने का मौका मिलता है, परिचय भी वढ़ता है। कल वोलने का मेरा विचार है। रात में ९॥ वजे तक नोट्स लिखता रहा। पंडित जी जो सामने हैं, उन्हें नोट्स दिखाए। एक तरह से उन्हें पसंद आ गया।

१६ मई : सुवह १० वजे अंदाज महाराजा के पूगा। आधा घंटा वातचीत हुई। हरिदास जी मूंधड़ा की चर्चा हुई। मुझे इन वातों में नहीं पड़ना चाहिए, क्या गरज है? आइंदा पर ध्यान रखूंगा। ११ वजे पार्लियामेंट पूगा। ६ वजे तक एक तरह लगातार वैठा रहा। कृपलानी जी अच्छा वोले। मैंने भी नाम दिया है। सारे दिन अपने नोट्स याद करता रहा पर मौका नहीं मिला, कल देखा जायगा। लोगों से वातचीत करने का काफी मौका मिलता रहता है। सेठ गोविंददासजी मिले थे। शाम को वजट वहुत खराव आया, मन में थोड़ी सी सुस्ती आ गयी। जे० के० विरला से मिला, आर० डालमिया को फोन किया। शेयरों में १०) रु० दाम घट गए। हमें भी कम से-कम लाख-डेढ़ लाख का नुक़सान लगा।

१८ मई : भागीरथ जी यहाँ हैं, सुवह मैदान घूमने गया, उनसे मिला। दिन में घनश्यामदास जी से वातचीत हुई, नंदा जी से जान-पहचान करायी। खुश नजर आते हैं। पार्लियामेंट में वरावर जाता रहता हूँ। शाम को कांग्रेस पार्टी की मीटिंग में गया। अपनी वात ठीक से कह न सका, कुछ हँसी सी हुई। शुरू-शुरू ऐसी वातें होंगी परंतु अपने को इंप्रूव करना है।

जयपुर

२० मई : सुवह भागीरथ जी कानोड़िया, रामकुमार जी भुवालका, मातादीन जी खेतान के साथ जयपुर पूगा। और भी लोग थे। दिन में एक वॉल वेयरिंग फैक्टरी देखी। शास्त्री जी के खाना खाया, अच्छा वना था। शाम को ७ वजे मीटिंग हुई, काफी लोग आए थे।



कुंभाराम जी ने अगेंस्ट में कहा। खैर, जलबोर्ड रहने का निश्चय हो गया। अच्छा काम होना चाहिए, विरोध तो होते रहेंगे।

२३ मई : मातादीन जी के साथ सुबह मैदान घूमने गया। घनश्यामदास जी से मिला, भागीरथ जी थे। घर वापस आकर अखबार वगैरह पढ़े। एक एम० देव हैं, उन्हें रखने का विचार है। पार्लियामेंट का काम ठीक से होगा और पत्र-व्यवहार वगैरह भी। ११ बजे पार्लियामेंट गया। वाइफ वगैरह भी आयीं, उन्हें सेंट्रल हॉल दिखाया। ४ बजे पार्लियामेंट में जैसे ही एक चिट भेजी, बोलने का मौका मिला। अंदाज पाँच मिनट बोला हूँगा रेलवे बजट के पक्ष में। बुरा नहीं बोला, ऐसा महसूस करता हूँ। जैसलमेर के बारे में भी कहा।

सीकर

२५ मई : सुबह ७ बजे सीकर पूगा। राजा और वाइफ साथ हैं। रात में लुहारू गाड़ी बदली की इसलिए नींद में तकलीफ हुई। राजस्थान में रेल की सुविधा उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार की तरह नहीं है। इससे विकास में बाधा पड़ती रही है। इसके लिए जरूर कुछ करना चाहिए। सीकर में भार्गव साहब और बहुत से लोगों से मिला। बजाज भवन में ठहरा। ४॥ बजे लक्ष्मणगढ़ पूगा। वाइफ भी अब सब लोगों के सामने आने लग गयी हैं। एक मीटिंग में भी मैं शायद अच्छा बोला। किशन सिंह जी के लड़के की शादी में गया।

शिमला

२७ मई : सुबह कालका पूगा। वहाँ से शिमला, १२ बजे पूगा। इंश्योरेंस के ऑफिस में गया। दास गुप्ता से बात की। २ बजे हरिचरण जी के घर पूगा। ४ बजे फिर इंश्योरेंस के ऑफिस गया, मि० वेंकटेश नहीं थे। शिमला में ठंढ काफी पड़ रही है। ११ बजे वापस कालका आ गया। दिन में काफी अच्छा लगा था परंतु हम लोगों का यहाँ रुकना संभव नहीं। सोलन में एक घंटा रुका था। यहाँ गजराज जी ने काफी रुपया खर्च किया है। बड़ा मकान बनाया है। स्कूल भी अच्छा बनाया है।

नयी दिल्ली

२८ मई : सुबह ७ बजे दिल्ली आ गया। १०॥ बजे पार्लियामेंट गया। दिन में बोलने की चेष्टा की बजट पर परंतु समय नहीं मिला। शायद कल मिल जायगा। राधेश्याम जी मुरारका और गजाधर जी सोमानी दोनों अच्छा बोले। दिन में गंगा बाबू ने एक उलाहना दिया, जगजीवन राम जी को मैंने उनके सामने पार्टी के लिए कुछ कहा था। ऐसी बात के लिए आइंदा पर निगाह चाहिए। गंगा बाबू ने अच्छा किया, मुझे सावधान कर दिया। मैं ज्यादा बोल जाता हूँ, गलत बात है। शाम को ७ बजे पार्टी मीटिंग हुई, काफी लोग थे। दिन में शोभाराम जी से बातचीत हुई और लोगों से भी। गजाधर जी से कॉटन मिल के बारे में बात हुई। दिल्ली में मेरा मन लग गया है परंतु राजू का कमती लगा है।

२९ मई : सुबह स्टेशन गया। भार्गव साहब वगैरह ७ बजे आए। उन्हें घर ले आया। दिन में उन्हें पार्लियामेंट ले गया। अच्छी तरह खातिरदारी की। रात में गंगा बाबू के साथ मैथिलीशरण जी गुप्त के भोजन पर गया। वहाँ राष्ट्रपति के पी० ए० गीता दरबार, डॉ० नगेंद्र, नरेंद्र शर्मा, भगवती चरण वर्मा, दिनकर जी और नवीन जी आदि भी थे। एक अच्छा गीतकार समरबहादुर भी था। ९ बजे तक बहुत ही अच्छी गोष्ठी रही। साहित्यकारों के जीवन में नेताओं और व्यवसायियों से कहीं अधिक शांति है, भले ही धन कमती है। ये लोग दुनिया को देकर जाते हैं इसीलिए इनका नाम चलता रहता है। आजकल खर्च ज्यादा कर रहा हूँ परंतु टाइम अच्छा कट जाता है।

३१ मई : सुबह ४।। बजे नींद खुल गयी। गांधी घाट चला गया। घूमता रहा, बहुत शांति मिली। ७।। बजे घर वापस आया। १० बजे तक कागज-पत्र देखे, बहुत से पत्र सलटाए। बीच में एक बार एस० एन० सिन्हा के गया। उन्होंने कहा बोलने के लिए पहले नाम दिलाना चाहिए था। आज दिया है। सारे दिन सदन में बैठा रहा, बोलने का मौका नहीं मिला। कोई खास निराशा नहीं है। राजा कुछ दुर्बल हो गया है। खर्च सब मिला कर २०००) रु० एक महीने में लग जायगा। ३००) रु० मोटर रिपेयरिंग और ६००) रु० दान वगैरह। इस तरह ३०००) रु० लगभग लग जायेंगे। परंतु एक नयी जिंदगी का अनुभव हो रहा है, आनंद भी मिलता है। रुपयों की तरफ मोह घट रहा है। पार्लियामेंट में पंडित जी का भाषण आज बहुत जोरदार हुआ।

३१ मई : पार्लियामेंट सेशन का आज आखिरी दिन है। इन बीस दिनों का अनुभव बुरा तो नहीं हुआ। कुछ अच्छा करने का मन है, उत्साह भी है। अगर हो गया तो संतोष रहेगा। परमात्मा की मर्जी। दिल्ली की क्लाइमेट भी अच्छी है। सब मिल कर एक बार पार्टी मीटिंग में, एक बार सदन में बोला, चार-पाँच सवाल पूछे। परंतु यहाँ आने पर राजा की पढ़ाई खराब हुई। वाइफ का भी खास मन नहीं लगा। अगली बार अकेला आऊँगा।

सरदार शहर

४ जुलाई : सुबह ५।। बजे धनराज जी बिहानी से मिला। बहुत ही बीमार थे। दिन में घर पर था। काफी लोग मिलने आए। वृद्धिचंद जी करवा तथा जगन्नाथ जी से मिलने गया। सुमेरमल जी के जीमा। एक जीप ४०००) रु० में बिक्री की। सुजानगढ़ से लोग आए थे। एक मंदिर देखने गया, पुराने मंदिरों का जीर्णोद्धार नए मंदिर बनवाने से कहीं ज्यादा अच्छा काम है।

कलकत्ता

६ जुलाई : गरमी बहुत ज्यादा मालूम देती है। मैकलोनल्ड साहब से मिला। काम-काज अच्छा ही चल रहा है। आइजेक्स का काम कमती है। लोग मेरी तबीयत अच्छी

बताते हैं। दिल्ली में मन लग गया था, तंदुरुस्ती भी ठीक रही। कलकत्ते में शायद मन नहीं लगेगा।

८ जुलाई : इधर-उधर घूमता रहता हूँ, मन ठीक नहीं है। सुबह पुरुषोत्तम जी के ताश खेलने गया था। इस तरह काम नहीं कर सकता।

१० जुलाई : तबीयत ठीक नहीं। सुबह १० बजे सोता रहा। कल महावीर के साथ काशीपुर जाकर तबीयत खराब कर ली। बुखार सा था। १२।। बजे बड़ी ऑफिस आया, मैकलोनल्ड से मिला फिर एक्सचेंज गया, ४ बजे तक था। पाट का बाजार ३२) रु० है, बोरा ११६) रु० है मेरा कुछ ध्यान नहीं है, शेयर मंदा है।

नवद्वीप

११ जुलाई : सुबह तबीयत कुछ ठीक थी। गरम पानी से स्नान किया। मैदान आया फिर गंगाजी स्नान किया। शाम को ६।। बजे की ट्रेन से नवद्वीप चला। साथ में विराज भट्टाचार्य की पार्टी थियेटर के लिए नवद्वीप जा रही थी। जान-पहचान हुई। उसका अभिनय फिल्मों में मैंने देखा था, अच्छा अभिनेता है। उसने मुझे नाटक देखने के लिए कहा, मैंने हाँ तो कह दिया, पर जा नहीं सका। नवद्वीप ११ बजे पुगा। बारिश हो गयी थी, ठंढ सी थी। पिता जी की तबीयत ठीक है। यह जगह अच्छी है, शांत है पर मेरा मन अशांत है, टिकता नहीं। रात में जे० टामस के बारे में सपने आते रहे।

कलकत्ता

१२ जुलाई : नींद अच्छी आयी। सुबह ३।। बजे उठा। अँधेरा सा था। धीरे-धीरे सवेरा हुआ बहुत अच्छा लगा। पिछले दिन याद आए। किस तरह संघर्ष करता हुआ आज की स्थिति में आया। परमात्मा की कृपा है। परंतु स्वास्थ्य और शांति खो बैठा। पिता जी, माता जी का मन यहाँ लगता है। गंगा का जल यहाँ साफ है, नहाना, अच्छा लगता है। ५ बजे स्टेशन आकर कलकत्ते के लिए चला आया। हिंद बैंक के पाड़लीवाल से मिला। ग्रेट पिरामिड के लिए फोन करवाया। २००० मन पाट ३२।=)।। में बेचा। ध्यान तो मंदा नहीं है। शाम को फुटबाल का खेल देखने मैदान गया था।

१८ जुलाई : सुबह ग्रेट ईस्टर्न होटेल में मुरार जी भाई से मिला और भी लोग थे। एम० पी० होने से लोग खास-खास मीटिंगों में बुलाते हैं। फोटो भी मुरार जी भाई के साथ उतरा।

२१ जून : डॉ० रामसुभग सिंह मेरे घर पर ठहरे हैं, कल आए। बहुत व्यस्त प्रोग्राम है। आज उनके साथ पी० एंड टी० का वर्कशाप देखा। काफी बड़ा कारखाना है। १२ बजे मुरार जी भाई के साथ बिरला पार्क में खाना खाया। २।। बजे ऑफिस गया, फिर गद्दी। इन दिनों रुपयों की काफी टान सी है। कामकाज भी कमती है। इधर देख नहीं पाता हूँ, दिल्ली का रास्ता अलग ही है। सीकर जाना जरूरी है परंतु जा नहीं पा

रहा हूँ। रात में सोलह-सत्रह लोग जीमने आए, आठ-दस एम० पी० थे। बाकी पी० एंड टी० के।

२२ जून : १ बजे दिन में स्पेंसेज होटल में खाना खाने गया, २।। बज गए। होटलों में भोजन बोझ हो जाता है। वहाँ से एम० पी० लोगों के साथ बड़ाबाजार की दुकानों में गया। इसी तरह सारा दिन बीत गया।

२६ जून : शेयर स्टेडी है, फाइनांस कॉरपोरेशन लेता है। पाट ३१।)। में बराबर कर लिया, २७००) रु० मिले हैं। इंश्योरेंस का कामकाज सलट रहा है। बी० एन० इलियास से फोन पर बातचीत की।

२७ जून : रात में शांति प्रसाद जी के खाना खाया। स्टेट बैंक का मैनेजर भट्टाचार्य भी आया था। मि० तालुकदार और मिसेज तालुकदार दोनों थे तथा रामनाथ जी गोयनका भी। रात में १० बजे तक था।

१ जुलाई : शाम को प्रायः ५०० आदमी जीमे। एक-दो बार तो बंदोवस्त कमती मालूम देता था परंतु किसी तरह से हो गया। भाई जी थोड़े से नाराज हो गए। चिट्ठियाँ ज्यादा नहीं थीं, परंतु लोग बेशी आ गए। सुबह हरचंदराय जी भी नाराज हो गए थे कि तुम घर के काम में नहीं रहते, इसलिए आज सारे दिन घर में ही था।

३ जुलाई : आज शाम को ५ बजे से हिम्मतसिंह जी के यहाँ लोग आने शुरू हुए। काफी आए। अच्छा बंदोवस्त था। सजावट भी अच्छी थी। प्रभुदयाल जी स्वयं रात तक खड़े थे। ६ बजे फेरे हुए। ८।। बजे हम लोग घर आ गए। बंबई से जो लोग आए, उन्हें डायरियाँ बाँटी। विवाह अच्छी तरह हो गया।

४ जुलाई : आज रात में सजन गोठ हुई। काफी लोग आए थे जी० डी० भी थे। आज दिन में कई लोगों को फोन किया, आने के लिए। सुबह मैदान थोड़ी देर जाता हूँ, ताश खेलने वाली आदत नहीं छूट पाती। यह छूटनी चाहिए। इससे लिखना-पढ़ना नहीं हो पाता, टाइम भी फजूल खराब होता है।

५ जुलाई : ८ बजे प्रभुदयाल जी के घर गया। भगवती की पहरावनी ली। ठंढई, कलेवा किया। विवाह खूब अच्छी तरह से हो गया। बंबई वाले कल जायेंगे। सीकर नहीं जा पा रहा हूँ, जाना चाहिए। एक्सचेंज गया, पाट का बाजार मंदा है, भाव ३०।।–) बीनणी सुबह घर आयी।

६ जुलाई : भगवती को बहुत दिया है। दिन में बी० चतुर्वेदी का निमंत्रण था, परंतु भूल गया, उनका फोन भी आया था। मन में एक ग्लानि सा अनुभव किया।

९ जुलाई : सुबह भागीरथजी के पास गया। रात ८।। बजे मंगतूराम जी जयपुरिया खाने पर आए। मिलों के बारे में बातचीत होती रही। उनकी मिलें अच्छा कमा रहीं हैं। मेरी तबीयत ठीक सी रहती है। परंतु कसरत छूट गयी, घूमना जारी है।

नयी दिल्ली

१७ जुलाई : सुबह लोदी गार्डन गया, विरला जी से बातचीत की। प्राय: तीन मील घूमा। तबीयत अच्छी मालूम देती है। ११ बजे पार्लियामेंट गया। दिन में लोगों से मिलता रहा। आसाम के देवकांत वरुआ काफी प्रभावशाली हैं। ४ बजे मैं भी बजट पर वोला, शायद अच्छा ही रहा। मालिया से बात की। अतुल्य घोष, उपेन वर्मन, फिरोज गांधी सब से बातें हुईं। देश का काम पार्लियामेंट के माध्यम से अच्छा हो सकता है। परंतु इसके लिए काफी स्टडी करनी होगी। अभी मैं नया हूँ। जान-पहचान बढ़ रही है। तौर-तरीका सीख रहा हूँ। शाम को बिरला जी के गया। चारों भाई काफी प्रेम से मिले। ७। बजे दम्माणी जी के, बसावन सिंह जी के तथा चतुर्वेदी जी के साथ अशोका होटल में गया। एम० पी० लोगों का बड़े होटलों में जाना कैसा सा लगता है। परंतु उपाय नहीं, एक रकम प्रथा सी बन गयी है।

१८ जुलाई : पार्लियामेंट में वोला, शायद लोगों को जँचा। अखवारों में भी छपा। कल सीकर जाने का विचार है, टिकट ले लिया है। बैंक से रुपए ले आया। वर्मा साहब से बात हुई, सुखाड़िया जी को हराने का प्रयत्न हो रहा है।

१९ जुलाई : सेठ गोविंददास जी के जीमने गया। बिरला जी के घर गया, उधर देर हो गयी। समय का ध्यान रखना चहिए। आगे से ध्यान रखूंगा। पार्लियामेंट में ज़ान-पहचान बढ़ रही है। दासप्पा जी से अच्छा परिचय हो गया है। दिन में ढाई घंटे शांति प्रसाद जी के पास था। अशोका होटल में उनसे कई विषयों पर बातें होती रहीं। सरकार इंडस्ट्री डेवलप करना चाहती है पर अफसरों का अड़ंगा वहुत है, उनकी भूख बढ़ती जा रही है। प्रांतों की मिनिस्ट्री भी राजनीति के कारण ठीक काम नहीं कर पाती।

सीकर

२० जुलाई : सुबह ७॥ बजे सीकर पूगा। स्टेशन पर कई आदमी आएं थे। सुंदरलाल जी के घर ठहरा। लोगों से मिलता रहा, मुसलमानों के मुहल्ले में गया। २०००) रु० संस्थाओं को दिए। सीकर के लोग एक तरह से खुश मालूम देते हैं। कलेक्टर के यहाँ सभा थी, उसमें गया, मैंने भी भाषण दिया।

नेछवा, सीकर, जयपुर

२१ जुलाई : नेछवा के गाँवों में गया। लोग मिलते रहे। समस्याएँ हैं हीं। नोट कर ली। जिला स्तर पर काम हो तो ठीक है पर हो नहीं पाता, अनुभव यही रहा है। फिर भी, कोशिश करनी होगी। १० बजे चला, कई गाँवों से होता हुआ सीकर १ बजे पूगा। राजस्थान में कुटीर-उद्योग को बढ़ावा देना बहुत जरूरी है, लोगों को काम मिलेगा। खेती कमती है, लोग बेकार बैठे रहते हैं। सीकर से जयपुर ६ बजे पूगा। रास्ते में ठाकुर मदन सिंह जी मिल गए थे। उनसे बातचीत की। यह बात जँचती सी है कि ठाकुरों के लिए अब काम एक रकम नहीं रहा, उन्हें अपना ढंग बदलना पड़ेगा—सेना या खेती।

हरिदेव जी जोशी से मिला। चूड़ीवाल जी के घर खाना खाया। गाँवों में जाकर लोगों से मिलता हूँ। संतोष होता है परंतु मन में विचार आते हैं कि इन लोगों के लिए यदि कुछ कर सका तव एम० पी० वनने का फल होगा। वहुत कठिन रास्ता है।

नयी दिल्ली

२२ जुलाई : स्टेशन से ग्रेट पिरामिड के ऑफिस गया। वहाँ सीकर से आए चार लोग थे। उनके भोजन का वंदोवस्त किया। १२ वजे उन्हें पार्लियामेंट का पास दिला दिया। भाई जी का पत्र वड़ी चिंता का आया। सारे दिन मन में काफी चिंता रही। रात में मास्टर जी और माथुर जी खाने पर आए। शाम को ६ वजे वख्शी गुलाम मुहम्मद की चाय पार्टी में गया था। वायलेट अल्वा भी थीं, साथ ही फोटो ली गयी।

२३ जुलाई : पार्टी का वंदोवस्त शुक्रवार को किया है। दिन में कार्ड छपने दे आया, ४५) रु० लगे। गंगा वावू से वरावर मिलता रहता हूँ।

२४ जुलाई : श्री देवकांत वरुआ से मिला और भी लोगों से मिला। दिन में सारे दिन पार्टी के कार्ड लिखाता रहा।

२६ जुलाई : दिन में गंगा वावू के साथ खादी ग्रामोद्योग भंडार गया, कुछ कपड़े लिए। शाम को ६॥ वजे अशोका होटल गया, लोग कम आ रहे थे। ६॥ वजे तक तो ४० ही आए। विचार आए कि नेता लोगों को समय का ध्यान तो रखना चाहिए परंतु हो सकता है किसी काम में व्यस्त हों। फिर ३० आदमी और आए। स्पीकर, डिप्टी स्पीकर, मेनन तथा करमरकर आदि आए थे, आसाम वाले भी। कुल ६००) रु० पार्टी पर खर्च हुए परंतु सव मिला कर अच्छा रहा। नित्यानंद कानूनगो भी आए थे।

सीकर, पालरी, लक्ष्मणगढ़

२७ जुलाई : सीकर स्टेशन पर लोग आए थे। वजाज भवन गया। वद्रीनारायण जी वहीं आ गए थे। ३॥ वजे अंदाज पालरी को रवाना हुआ, ५ वजे पूगा। रास्ता वहुत खराव था। खेती नष्ट हो गयी है। वारिश वहुत हुई है। पालरी में स्कूल का फंक्शन था, काफी लोग इकट्ठे हुए थे। २५०) रु० देने को कहा। स्कूल का काम ठीक चल रहा है। ८ वजे चला, रास्ते में गाड़ी खराव हो गयी। वड़ी मुश्किल से रात में ११ वजे लक्ष्मणगढ़ पूगा। वाहर एक मंदिर में सोया, साथ में गोपाल सिंह जी भी थे।

जयपुर

२८ जुलाई : ७ वजे सीकर पूगा, वहाँ से चल कर ११॥ वजे जयपुर। सुखाड़ियाजी से मिला। भंडारी जी एजुकेशन सेक्रेटरी से मिला। स्कूलों और पढ़ाई के वारे में अपने दौरे पर के विचार वताए। देखें क्या होता है। उपाध्याय जी से मिला। रात में गीता जी वजाज से मिला, हरिदेव जी जोशी भी वहीं आ गए थे। रुपयों की चारों तरफ माँग है। शायद इसलिए कि मैं पैसेवाला एम० पी० समझा जाता हूँ। आज कई जगह दिए और भी

देने पड़ेंगे। इस पर कुछ चिंतित सा हूँ। स्टेशन आकर गाड़ी में सो गया। नींद में सब खो जाता है।

दिल्ली, बम्बई

१ अगस्त : ७।। बजे बिरला जी के प्लेन से उड़ा। रामेश्वर जी बागला साथ थे। काफी बातचीत होती रही। अच्छे आदमी हैं। ११।। बजे बंबई एयर पोर्ट पर पूगा। नन्दू आया था। घर आया। बंबई वाले आए हैं। भाई जी की तबीयत ठीक है। मिल को काफी लॉस हो रहा है।

३ अगस्त : १२।। बजे ऑफिस गया। मदन से बातचीत की। मिल में ४ महीने में करीब ४ लाख का लॉस है। काफी डिप्रेसिंग फिगर्स हैं। रुपयों की भी टान है। अगर पोस्टल हड़ताल होती है, उसका असर आयगा।

४ अगस्त : डायरी लिखते समय पता चलता है, दिन कैसे फालतू चले गए। सुबह पुरुषोत्तम जी वगैरह आ गए, तीन घंटे ताश खेली। फिर इनके साथ चला गया। पूरन मल जी बूबना से आधे घंटे बात की। वहाँ से १२।। बजे परमानंद जी केजिड़ीवाल के जीमा। २ बजे से ४ बजे तक ताश खेला, फिर सो गया। घर आया, लोसल के चार लड़के मिलने आए, एक घंटा बात की। ७ बजे से ९। बजे तक ताश खेला। श्यामदेव जी देवड़ा जीमने आए।

५ अगस्त : दो दिनों से बारिश हो रही है। घूमने नहीं जाता। घर में ही कसरत कर लेता हूँ, बाहर निकलना संभव नहीं। चारों तरफ पानी ही पानी। कामकाज एक रकम बंद ही था।

मथुरा, बृंदावन

७ अगस्त : सुबह ५ बजे आँख खुली। साथ में सुराना जी बंबई से थे। अच्छे आदमी हैं दिन में किसी तरह ट्रेन में समय कट गया। शाम को ४।। बजे मथुरा पूगा। रिटायरिंग रूम में ठहरा। नल में पानी नहीं था। बाजार के एक नल में स्नान किया। मथुरा साधारण सा कस्बा है। तीर्थस्थान होने के कारण भीड़ बहुत है। थोड़ी देर यमुनाजी के किनारे घूमता रहा। वापस आकर ताँगा किया, बृंदावन गया। वासुदेवजी के यहाँ रास देखा। कोई नयी बात नहीं लगी परंतु कृष्ण की स्मृति से जुड़ी है इसलिये संवाद अच्छे लगते हैं। ज्वालाप्रसादजी के जीमा। बृंदावन का टी० बी० अस्पताल बहुत ही अच्छा है। परंतु इसे और भी दूर बनाना चाहिए था। तीर्थस्थान में बहुत लोग आते हैं, छूत का रोग होने से बीमारी का डर रहता है। इधर राजा महेंद्र प्रताप का खूबनाम है।

दिल्ली

८ अगस्त : पता नहीं क्यों पार्लियामेन्ट से मन ऊब सा गया है। बहस में टाइम बहुत लगता है, काम इस ढंग से तो कम हो पायगा। कुछ लिखने का जी हो रहा है। शाम को सुना, पोस्टल हड़ताल टल गई। मन का बोझ हल्का हुआ, चिंता मिट गयी।

दिल्ली

१० अगस्त : ट्रेन लेट थी। डा० परमार से बातें करता रहा। आदमी पढ़े-लिखे अच्छे मालूम देते हैं। शोभारामजी के साथ चंदे में गया। ५००) रुपया दम्माणी जी ने देनें को कहा है। मैंने अपना टाइपराइटर दे दिया, ४००) रुपये का था। वैसे, शायद ५००) रुपये देने पड़ते। शाम को गंगाबाबू से मिलने गया, उनके बुखार है। केशरदेवजी से मिलने गया, शायद बचेंगे नहीं. बहुत उदास मालूम देते थे। घर आकर खाना नहीं खा सका। दिल्ली से जाने का एक रकम मन हो गया है।

ट्रेन

११ अगस्त : सुबह ५।। बजे जग गया था। कुछ पढ़ने की कोशिश की परंतु ध्यान बँट गया। खिड़की से बाहर देखने लगा। जंगल, गांव भाग रहे थे। विचार आया, जीवन में इसी तरह सब निकलते जा रहे हैं। किस स्टेशन पर जगना है, पता नहीं। कानपुर आया; ७ बजे थे। स्टेशन पर उतरा, लुंगी पहने था। सीताराम जयपुरिया मिल गये, इलाहाबाद तक उनके साथ बातचीत करता रहा। उनकी मिल अभी भी पाँच, साढ़े-पाँच लाख महीने में कमा रही है। ट्रेन की सफर में ऊब सा जाता हूँ, गड़बड़ खा भी लेता हूँ। प्लेन में आने से एक दिन बच जाता है और थकावट भी महसूस नहीं होती। सब मिलाकर २० दिन बाद कलकत्ता जा रहा हूँ। अखबार में पाट मंदा देखा।

कलकत्ता

१३ अगस्त : सुबह ११ बजे स्टेशन गया। के० बी० सहाय आये। घर ठहराया; आदमी भले लगते हैं। पाट का बाजार कुछ मंदा-सा ही है, शायद और भी मंदा जायगा। हम लोगों के ३००० गाँठें मत्थे हैं।

१४ अगस्त : एस० एन० नाराज था, क्योंकि कल दिन में मैं गद्दी नहीं गया। गलती मेरी ही थी। आज दिन में काफी देर तक गद्दी में रहा। ६ बजे शाम को एक मीटिंग में गया, जयप्रकाश बाबू आये थे, 'प्रिंसेज' में कई लोग थे। कृष्णवल्लभ सहाय, देवव्रत शास्त्री तथा रामलगन यादव आदि मेरे यहाँ ठहरे हैं। आदमी भले हैं।

१५ अगस्त : शाम को स्टेशन गया। देवव्रत शास्त्री, संपादक 'नवराष्ट्र' रांची गये। ९ बजे कृष्णवल्लभ बाबू गये। जयप्रकाश जी भी रांची गये। रात में टांटियां हाई स्कूल के फंक्शन में गया, वे भी गये थे। कृष्णवल्लभ बाबू अच्छे आदमी हैं। रात में देर तक नींद नहीं आयी। विचार आते रहे। दस वर्ष हो गये आजादी पाये। दूसरे देशों के मुकाबले हम लोगों ने कितना किया? इस बार दिल्ली में इस पर बात करूँगा। धन के वितरण और टैक्स पर लिखने के लिये सोचता रहा।

१७ अगस्त : मालूजी को १००० मन पाट खरीदने का कहा। दिन में बाजार मंदा मालूम दिया, कामकाज कमती है। पाट का भाव २९।।) अंदाज का है। विलायत में

दो दिनों में १५०० गाँठें बेची, भाव तो मंदे ही हैं। अगले हफ्ते में दिल्ली जाने का विचार कर रहा हूँ।

२२ अगस्त : फिर डायरी लिखने में देरी हो गयी है। मिल वालों से बातचीत की, धुवड़ी ऑयल मिल बेचने की। शाम को कांता को सारी बातें कहीं।

२३ अगस्त : सुबह कन्दोई लोग ऑफिस आये, मिल का सौदा उनसे तय हो गया, रात में उनको खाने पर बुलाया। गणपत राय जी सेठिया भी इंटरेस्टेड हैं, इसलिए सारा सौदा ठीक से सलट गया। मन में एक तरह की शांति सी हुई। सीताराम मिल में जुलाई में भी डेढ़ लाख का घाटा रहा। जल्दी ही जाने की सोच रहा हूँ।

धुवड़ी

२४ अगस्त : सुबह ५॥ बजे के प्लेन से धुवड़ी के लिए उड़ा। रास्ते में प्लेन कूच-विहार ठहरा था, धुवड़ी ८ बजे पूगा। एयर पोर्ट पर मोहनलाल जी तथा हीरालाल जी आये थे। मिल उनका भी लेने का मन है। परंतु कल दिन में सारी बातें कंदोई जी और अमृतलालजी से तय हो गयीं, अच्छी तरह से। शाम को बाजार गया, लोगों से मिला। नेतराम जी, सूरजमलजी तथा श्री निवासजी बड़े गोदाम भी बेचने की बात कर रहे हैं।

धुवड़ी-कलकत्ता

२५ अगस्त : धुवड़ी में अपने पहले सफर की बहुत सी बातें कल रात में याद आती रहीं। कितना परिवर्तन हो गया, इन वर्षों में। सुबह ६ बजे मिल से चला। गोदाम दिखाई। सब सौदा तय हो गया। एक रकम अच्छा ही हुआ। साढ़े पाँच लाख रुपये खाली हो जायेंगे। ११ बजे कलकत्ता पूगा। १२ बजे गद्दी गया। २५०००) रुपये दिये।

दिल्ली

३१ अगस्त : दिन में बहुत आदमी मिलने आये। के० बी० के बुखार था। श्री बाबू, महेश बाबू तथा बिहार के बहुत से लीडरों से जान-पहचान बढ़ रही है परंतु परेशानी भी हो जाती है। पार्लियामेंट गया। खास पार्ट तो नहीं ले सकता, तैयारी करके नहीं जाता हूँ। प्रश्न भी नहीं आये।

१ सितम्बर : सुबह घूमने नहीं गया। कलकत्ते और बंबई को फोन किया नन्दू और बिरजू से बात हुई। मिल शायद सितंबर में घाटा नहीं देगी। १०॥ बजे के० बी० सहाय के साथ ए० आई० सी० सी० गया। १॥। बजे लौटा। ४॥ बजे फिर ए० आई० सी० सी० गया। आर० जोशी, मास्टर भोलानाथ जी, बृजलालजी बिहाणी, काटजू जी आदि सबसे मिला। शाम को टी० सिन्हा के घर गया।

२ सितम्बर : दिन में लोकसभा में था। प्रश्नोत्तर पर बोला भी। आज फिर नवीन जी ने श्रीराम शर्मा के लिए रुपयों का कहा। कुछ देने ही होंगे। साहित्यकार को हमारे देश में अर्थकष्ट रहता है; हैरानी की बात जरूर है।

कलकत्ता

३ सितम्बर : सुबह ६॥ बजे पूगा। सीधा गंगाजी गया, तेल मालिश करायी। स्नान कर मन प्रसन्न हो गया। पिताजी यहीं हैं, घुवड़ी वाले भी आज आ गये। सरसों के तेल का भाव एक रुपया घट गया है। वेजिटेबल फैक्टरी ठीक नहीं चल रही है। मन में एक तरह की चिंता सी है। पाट का काम एक तरह से चल रहा है।

४ सितम्बर : दिन में ऑफिस गया, लिखापढ़ी हो रही है। इस बार के सेशन में पार्लियामेंट कम गया। ऐसा सोच रहा हूँ कि मैंने अपराध किया। मुझे लोक-सभा के काम में पूरी दिलचस्पी लेनी चाहिए थी। कल जे० पी० और के० बी० सहाय आयेंगे। कलकत्ते में इस बार भी मन नहीं लगा, सीताराम मिल की चिंता लगी है।

दिल्ली

११ सितम्बर : दिल्ली में इस बार अपने को इनफीरियर फील कर रहा हूँ। चाय पर डिबेट थी पर कुछ न बोल पाया। काम में दिलचस्पी नहीं लेने का दंड है।

खंडेला, अजीतगढ़, थोई

१६ सितम्बर : अपने क्षेत्र के दौरे पर हूँ। सुबह खंडेला पूगा। बाजार में गया। १०००) रुपया एक छात्रावास में दिए और भी मांग तो बहुत थी परन्तु मेरे पास नहीं थे। फिर कांवट और दूसरे गांवों से होते हुए अजीतगढ़ गया, वहाँ भी १०००) रुपया स्कूल को आलमारियों के लिये देने किये। इस तरह २२५०) रुपया इस यात्रा में लग गये। खर्च बहुत हो रहा है। कभी-कभी विचार आता है अगर मैं पैसेवाला एम० पी० नहीं होता तो क्या करता? इस तरह रुपये देने से लेने और देने वाले की कमजोरी बढ़ सकती है। परंतु लोगों का ऑबलिगेशन चुनाव में बहुत हो जाता है तथा माँग भी बहुत ज्यादा रहती है, इसलिए बहुत से एम०.पी० लोगों को गलत-सही काम के लिये ओबलाइज करते देखा। थोई में भी कुछ देने को कहा है।

कांवट, नीम का थाना

१७ सितम्बर : रात कांवट में सोया। सुबह लक्ष्मीनारायण जी के चाय नाश्ता किया। गांव देखने निकला। छोटा सा गाँव है। खेती बरसात पर है। ऐसे ही और गाँव भी हैं। इस तरह आगे पर कैसे चलेगा? मैं बंबई, कलकत्ते के मित्रों से कहता हूँ, स्कूल-अस्पताल के साथ-साथ हाथ के काम सिखाने का बंदोबस्त और छोटे-छोटे कारखाने खोले जायं तो बहुत उपकार हो। सब हामी तो भरते हैं पर आगे कोई बढ़ता नहीं। इधर मेरे पाँव दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और सीकर में फँस गये। चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाता।

कलकत्ता

२० सितम्बर : सारे दिन घर में रहा। सुबह सोसाइटी गया। पैर का एक्सरे कराया। हड्डी नहीं टूटी है। पट्टी बँधाई, घर आकर लेट गया, दर्द काफी था। लोग मिलने आते रहे। शाम को रघुनाथ जी और कांता आए। पाट का बाजार मंदा बताया। सारे दिन पढ़ता रहा। बंगला उपन्यास 'मिथुन लग्न' पढ़ रहा हूँ, अच्छा है।

२६ सितम्बर : पैर में दर्द है, थोड़ा बुखार भी। सुबह ५ बजे बंबई ६ मिनट बात की। मिल बहुत घाटे में चल रही है। ६। बजे विक्टोरिया मेमोरियल गया। फिर वेणीशंकर जी शर्मा के और मातादीन जी के गया। वहाँ से रजिस्ट्रार ऑफिस आया। फिर घर आकर पट्टी बदली। १२ क्वेश्चन लिखे, पत्र लिखे। दिन में इन्कम टैक्स ऑफिसर बी० गुप्त से मिला।

३ अक्तूबर : विजयादशमी की आज बंदी है। इस वर्ष जोर से पूजा हुई। विडन स्क्वायर और कुम्हार टोली की प्रतिमाएँ भावपूर्ण लगीं। अब तो बड़ा बाजार में भी दुर्गोत्सव मनाया जाने लगा। अच्छा है, इस तरह स्थानीय संस्कृतियों का मेल बढ़ता है।

धनबाद, रानीगंज

५ अक्तूबर : सुबह धनबाद पूगा। स्टेशन से रिक्शा लेकर बी० पी० अग्रवाल के पूगा। उन्होंने अच्छा कलेवा कराया, फिर अपनी कोल माइन दिखाई। अच्छा कारबार है। ये लोग कमाई भी अच्छी कर लेते हैं। ११ बजे रानीगंज के लिए रवाना हुआ। २ बजे पूगा। हरखचंद जी के घर गया, बातचीत हुई।

कलकत्ता

७ अक्तूबर : ११।।। बजे ऑफिस आया। २ बजे ग्रेट पिरामिड इश्योरेन्स की मीटिंग थी। काफी हल्ला हुआ। मेरी थोड़ी गलती रह गयी। अगर कुछ रिजर्व फंड में कमती रुपया रख कर डिविडेंट दे देता तो अच्छा रह जाता।

१० अक्तूबर : सुबह मैदान में गर्ग मिला। यात्रा लेखों के बारे में बातचीत हुई। उसका सुझाव जंचा। इटलीवाला लेख उसे पढ़ने के लिए दिया है। मातादीन जी सी० टी० माइन्स ले रहे हैं, दो शुगर मिल भी।

बम्बई

१२ अक्तूबर : सुबह ट्रेन में दो पारसी परिवार का साथ हो गया, इसलिए रास्ता अच्छी तरह कट गया। लड़कियाँ पढ़ी-लिखी, सुलझे विचार की, पिता-माता भी इसी तरह। बहुत पैसेवाले नहीं थे। टाटा में ऊँचे पोस्ट पर थे। हम लोगों की तरह आपस में व्यापार या कामकाज की बात नहीं करते थे। पढ़ते या गप्पें लड़ाते रहे। ट्रेन

लेट थी। १ बजे बंबई पुगा। भाई जी घर पर ही थे। बंबई की खबर अच्छी नहीं है, काफी चिंताजनक है।

१३ अक्तूबर : चिरंजीलाल गोयनका आए। इंश्योरेंस की बात की। उन्होंने कहा, दूसरे शेयर होल्डर्स को पूरा रुपया देना होगा। मन में चिंता-सी हुई। रात में मदन से, एस० एन० से सारी सलाह की। पाली मिल चलाने की राय ठीक है। दो लाख देने होंगे तथा बीस हजार महीना खर्च बढ़ जायगा। परंतु यह तय-सा ही कर लिया है।

१४ अक्तूबर : आज बोनस बाँटने की तारीख थी। मजदूरों ने टिकट नहीं लिए। रुपयों का बंदोबस्त यहाँ हो गया था। सवा पाँच लाख रुपए लगेंगे। प्रह्लाद मिल ट्रबल में है। इसी तरह से सेकसरिया भी। दिन में ऑफिस में था। १२ बजे थिरानी जी के जीमने गया, देशपांडे भी थे। नोपानी जी के गया, १०॥ बजे तक था। लोग मिल बेचना चाहते हैं परंतु खरीददार नहीं हैं।

कलकत्ता

२५ अक्टूबर : भाई जी को बंबई फोन किया। अक्टूबर की वर्किंग शायद कुछ ठीक होगी। कपड़ा भी थोड़ा बिका है। दिन में एम० जी० पोद्दार और भागीरथ जी के गया था। पार्लियामेंट के कुछ क्वेश्चन आए थे, उन्हें तैयार कर भेजा। रुपयों की कुछ टान है, जयपुर का कई बार तगादा आ गया। मन में एक चिंता सी है। बंबई वाली खास फिक्र लगी रहती है।

३ नवम्बर : बंबई बिरजू से बात हुई। रुपये माँग रहे हैं। रात में गर्ग आया था। बातचीत हुई। लेखों का कुछ काम किया। नारायणगंज से फोन था। डी० सासून का गोदाम खाली हो रहा है। इस्पहानी को फोन करने की चेष्टा की, लाइन नहीं मिली।

दिल्ली

११ नवम्बर : सुबह ६॥ बजे एयरपोर्ट से सीधे घर आया। वर्मा साहब के गया। राजस्थान में अकाल है। मैं भी कल जाने की सोच रहा हूँ। पार्लियामेंट में टेक्सटाइल पर मेरा सवाल था। अच्छी चर्चा रही। मैं भी दो बार बोला। पाकिस्तानी विजा ऑफिस गया। जगजीवन राम जी से बात हुई।

१४ नवम्बर : सारे दिन पासपोर्ट के चक्कर में लगा रहा। ५ बजे 'सरिता' के ऑफिस में विश्वनाथ जी से मिला। अच्छा प्रभाव मेरे पर पड़ा।

२० दिसम्बर : सुबह सीकर के तीन आदमी आ गए। पहले से और भी लोग हैं. एक रकम भीड़-सी हो रही है। सूचना देकर आने से बंदोबस्त में सुविधा रहती है। २ बजे स्टेशन गया। जे० पी० मिले, सतीश अग्रवाल और उनका लड़का भी मिला। वे लोग एयर-कंडीशंड में थे। कुछ खाने का सामान उनके साथ दिया। ११ बजे पार्लियामेंट

गया। हाउस में मैं० श० गुप्त जी से मिला, रायकृष्णदास जी भी थे। दिन में टी० टी० ने थोड़ा सा रिमार्क किया, जूट पर मेरा क्वेश्चन था। पाटिल जी और मनीबेन से बात हुई।

कलकत्ता

२२ दिसम्बर : जे० पी० के साथ कई जगह गया, लोगों से मिला। रात में गोयनका जी के खाने पर गया। शायद रुपये दे देंगे। छोटेलाल जी कानोड़िया से भी बात की, उन्होंने भी कुछ देने की कही है। रात में जे० पी० से बात हुई, शायद पब्लिक में आयेंगे, ऐसा मालूम देता है।

२६ दिसम्बर : इंश्योरेंस कम्पनी पर भी काफी टैक्स लग जायगा। राधाकृष्ण जी कानोड़िया के गया था। उनके भी काफी घाटा है। बहुत से लोग आ जाते हैं, फजूल में तंग करते हैं। पार्लियामेंट का काम ठीक से कर नहीं पाता। बहुत बड़ा अन्याय है परंतु कैसे समझाऊँ, सब को अपने काम की पड़ी है, मेरे से। आसाम में भी क्या होगा पता नहीं।

१९५८

कलकत्ता

१ जनवरी : सुबह कांता को फोन किया, चीजें लाने के लिए। दिन में गद्दी में था। ४ वजे भोलाराम जी और पुष्पकुमार के साथ मैक और स्मिथ के घर गया। इस बार कलकत्ते में आने के बाद से बहुत अनियम करने लगा हूँ। इसी से तबीयत खराब रहती है, साथ ही मन भी खराब है। साल का पहला दिन है। डायरी के पृष्ठ पर लिखा है, 'प्रार्थना ही आत्मा की खूराक है।' विश्वास मेरे मन में होने पर भी प्रार्थना के लिए एकाग्र नहीं हुआ जाता। इसीलिए आत्मा की खूराक जुटानी वहुत मुश्किल हो जाती है।

४ जनवरी : सुवह मैदान से जी० डी० बिन्नानी के घर मीटिंग में गया। रिलीफ सोसाइटी के और १०-१२ कार्यकर्त्ता साथ थे। तय हुआ कि बुधवार की मीटिंग में परामर्श-समिति के लिए कहा जाय। दिन में गद्दी गया। वेजिटेवल प्रोडक्टस में काफी घाटा मालूम देता है।

५ जनवरी : सुबह मैदान गया। लोगों को कहा, आज की पार्टी में घर पर आने के लिये। उसके बाद घर आकर ९। वजे लिवर्टी सिनेमा में एक फंक्शन में प्रिसाइड किया। शायद अच्छा बोला। ७००-८०० आदमी थे। १२ वजे घर आया। फिर दिन में काशी वावू के साथ ग्राउंड देखने गया। शाम को लोग जीमने आए। सब मिला कर १०० थे। रसोई अच्छी. वनी। ९॥ वजे तक गपशप होती रही, गौहाटी जानेवालों के पत्र आ रहे हैं। पब्लिक वर्क एक रकम ठीक चल रहा है परंतु कसरत- छूट गयी, पढ़ना लिखना वंद। मन में कैसा-सा मालूम देता है।

११ जनवरी : सुवह सीताराम जी सेकसरिया से मिलने गया। इनका जीवन कितना नियमित है। वहुत काम करते हैं, पढ़ते-लिखते भी हैं। इनमें उतावलापन भी नहीं। मुझे अपने को सुधारना चाहिए। वृजमोहन जी विरला के गया।

१३ जनवरी : सुवह ११ बजे एयरपोर्ट गया। जोशिम अल्वा को घर ले आया। अच्छे लोग हैं। भोगीलाल जी पंड्या चंदे के लिए आए हुए हैं। साथ कहीं नहीं जा सकता हूँ।

गौहाटी

१५ जनवरी : सुबह ६ बजे स्टेशन गया। बी० आर० भगत आए, एस० एन० मिश्र भी घर पर ठहरे। के० पी० गोयनका और १० व्यक्ति चाय पर आए। बातचीत की। भगत घर पर ही रहे। ११ वजे के प्लेन से गौहाटी चला गया। डी०.सी० शर्मा आए। सरदी काफी है, जगह भी छोटी। परंतु अधिवेशन, मेले और यात्रा में आराम का क्या काम?

१६ जनवरी : दिन में कामाख्या धाम गए, वर्मा साहब साथ थे। जीप में थे। कामाख्या के बारे में बहुत-सी बातें होती रहीं। तंत्र-मंत्र में कुछ दम है या नहीं, पता नहीं, किंतु ऐसा लगता है अब यहाँ दिखावा है, साधना नहीं। हरिभाऊजी से मिलना नहीं हो सका। मन में एक चिन्ता सी रही। अधिवेशन में गया, लोगों से भेंट होती रही। गांधी जी के बाद इन दस वर्षों में राजनीति जनता से या तो दूर हट गयी है या ऊपर उठ गयी, ऐसा लगता है।

गौहाटी

१८ जनवरी : कल की चेरापूंजी, शिलांग यात्रा की थकान थी। सुबह ७ वजे उठा। कॉंग्रेस ऑफिस आया। ८ वजे गजानंद जी ने बताया कि पिता जी बीमार हैं, देश बुलाया है। एयरपोर्ट गया। टिकट नहीं मिला। शहर में गया। वापिस शर्मा जी को ढूंढने कामाख्या गया, वहां से कांग्रेस पंडाल आकर खाना खाया। सुखाड़िया से मिला। शर्मा जी और अल्वा जी की कोशिश से किसी रकम से प्लेन का बंदोबस्त हुआ। पिता जी की बीमारी से मन में कैसी एक दुश्चिंता बन रही है। वर्मा साहब को एक जीप देने को कहा।

दिल्ली, सरदार शहर

२० जनवरी : ६॥ वजे दिल्ली पहुँचा। रात नींद ठीक-ठीक आयी। सर्दी बहुत थी। स्टेशन पर रामस्वरूप भालोटिया मिले, और भी लोग आये थे। बिरजू, राजू आदि मोटर में थे। हम भी एक दूसरी मोटर से चले। रास्ते में रोहतक, राजगढ़ ठहरे। गाड़ी खराब हो गयी। इसलिये सब किसी तरह एक ही गाड़ी में बैठे। शाम को ४ वजे सरदार शहर पुगे। पिता जी से मिले। माँ जी, मदन आदि सभी थे। उनकी तबीयत अब कुछ ठीक है, बुखार १०२ तक। वैसे सबको पहचानते हैं।

२३ जनवरी : पिता जी की तबीयत काफी अच्छी है। टेंपरेचर नहीं के माफिक है। लोगों को आज चीजें दीं, सीधा वगैरह भी। बाइयों को, महावीर को रुपये देने तय हुए। मिल में घाटा चल रहा है, भाई जी का फोन आया था।

२४ जनवरी : सुबह गौशाला गया। काफी जमीन है, पानी की सुविधा है, और भी बढ़ सकती है। परंतु फिर भी काम नहीं होता। मैं चाहता हूँ हरियाली बढ़ायी जाये। गोशाला को मॉडल के माफिक बनाया जाय। इससे गाँव वाले गोपालन और दूध का काम

सीखेंगे परंतु गाँव वाले गो-सेवा का मतलब धर्म से लगाते हैं। गोरक्षा के नाम पर पुरानी लकीर छोड़ना नहीं चाहते। कर्मचारी इसका फायदा उठाते हैं। माहितों की बात सर माथे पर।

२५ जनवरी : कल कन्हैयालालजी सेठिया के साथ मोटर में कई गाँवों में गया। बड़रासर में एक बूढ़े ने कहा कि 'दरबार का हुक्म तो खतम हो गया। अब किसका हुकुम हैं?' दस वर्ष हो गये, आजाद हुए। ऐसा प्रश्न सुनकर आश्चर्य हुआ। वह कहता था, 'पहले कुछ तो सुनवाई होती थी। अब लिखाई-पढ़ाई होती है सुनवाई नहीं।' आज सुबह रामनगर गया। प्राय: दो मील घूमा। गौरा बामणी से प्राय: २५ वर्ष बाद मिला। बूढ़ी हो गयी है। चेहरे पर झुरियां, चमड़ी पर सलें उभर आयी हैं। कितना समय निकल गया, कितना बदल गया सब कुछ! उसने मुझे पहचान लिया। हमारे यहां रसोई बनाती थी। मैंने उससे कहा कि कुछ खिला। हँसने लगी, दाँत नहीं थे। कहने लगी, 'मेरे हाथ का अब क्यों भायेगा?' बेसन के लड्डू खिलाये, छाछ पी। बहुत देर तक पिछली बातें करती रही। रात में शोभाचंद जी से भजन सुना।

२६ जनवरी : सुबह ३ मील घूमा। गणतंत्र दिवस था। विचार आया, गाँवों में जाकर लोगों से मिलूं। जीप में बैठा। भाभी, परमा, महावीर, सालासर जाना चाहते थे, साथ ले लिया। राजलदेसर ९। बजे पहुँचे। बाग देखा, अच्छा बना है। गाँव में घूमा, लोगों से मिला। पानी का बंदोबस्त कमती लगा। देशनोक होते हुए सालासर पूगे। हनुमानजी के दर्शन किये। मंदिर में रहने-ठहरने का प्रबंध ठीक-ठीक है परंतु सफाई कम है। तीर्थ-स्थान होने पर भी ब्राह्मणों में संस्कृत की पढ़ाई-लिखाई का ढंग नहीं दिखता। हरियाली, बाग कुछ भी नहीं। चढ़ाने को फूल भी नहीं मिलते। मन में कैसा-सा लगता है। सूरतगढ़ गया, फिर लाडनूं। लाडनूं के लोगों में उत्साह है। पानी भी यहाँ का मीठा है। हरियाली बढ़ रही है। गजराज जी का मंदिर देखा। तुलसी महाराज के दर्शन किये। ऐसा लगता है, महाराज जैनमत में रूढ़ि-पाखंड को हटाकर उसे वर्तमान के माफिक बनाना चाहते हैं, बहुत सावधानी से। इनका विरोध भी कुछ ओसवाल कर रहे हैं। वापसी में रतनगढ़ रुका। लोगों से मिला। जालानों ने अपने नगर के लिए बहुत कुछ किया है। अस्पताल, स्कूल, धर्मशाला वगैरह जनसेवा के उनके काम ढंग से चल रहे हैं। यहीं रह जायंगे।

सरदार शहर

२७ जनवरी : पता नहीं मन यहाँ से क्यों उचट-सा रहा है। कभी-कभी सोचता हूँ, राजनीति में पड़कर फजूल में टाइम खराब हो जायगा। पार्टी तो दरबार बन गयी। छोटे दरबारी बड़े दरबारी की हाजिरी लगाते हैं। अपनी-अपनी गोटी और गुट की फिकर है। गाँवों में सब जगह बातें सुननी पड़ती हैं। मेरे पास जवाब नहीं रहता। दिन में सेठ गोविंददास का 'पृथ्वीपति' पढ़ता रहा आज अखबार नहीं आये। बंबई से लक्ष्मी-

नारायण और मथुरा दलाल आये हैं। मिल की हालत अच्छी नहीं बताते हैं। दिन में कुछ देर राधाकृष्ण जी चौधरी के यहाँ ताश खेलने गया था।

३० जनवरी : गांधी जी के निधन को १० वर्ष हो गये। नाम जोरों पर लिया जाता है, पर उनका बताया काम टाल दिया जाता है। चरखा, बुनियादी शिक्षा, अब सरकारी जिम्मेदारी हो गयी। लीडर लोग भाषण देकर छुट्टी पा जाते हैं। जे० पी० की धारणा ठीक निकल रही है। कलकत्ते का, राजीखुशी का कागज आया। बंबई मिल का दिसंबर का डेढ़ लाख का नुकसान आया है। चिंता की बात तो है ही। शेयर मार्केट कुछ तेज सा है।

१ फरवरी : सुबह १०० ब्राह्मण जिमाये, गोदान किया। सब १०००) रुपये खर्च हुए। कुछ ऊपर भी हुए होंगे। मेरी समझ में अब ये सब व्यर्थ हैं। दान की गाय बेच दी जाती है या दाने-चारे के अभाव में बीमार होकर मरती है। ब्राह्मण सतयुग में ब्रह्म साधता था, त्रेता में मंत्र, द्वापर में गुरु बनकर कान फूंकता था और अब रसोइया बनकर चूल्हा फूँकता है पढ़ने-पढ़ाने, पूजन-पाठ के काम तो कब के छूट गये। परंतु मुझे अनचाहे सब करना पड़ता है, पिता जी, माँजी के आगे क्या बोलता? वाइफ बहुत राजी थी, उसे संतोष हुआ।

कलकत्ता, दिल्ली

७ फरवरी : गर्ग के घर गया, मिला नहीं। ९ बजे एयरपोर्ट गया। ९। बजे प्लेन उड़ा। आर० डी०, के० के०, जी० डी० बिरला थे। काफी बातें हुईं। देश की राजनीति की इनकी जानकारी बहुत अच्छी है। मगर खुलकर बात नहीं करना चाहते। वाजिब भी है। दिल्ली ५ बजे पहुँचा। राजकमल जाकर कुछ किताबें खरीदीं। के० एल० चौधरी के गया। ५०) रु० की किताबें प्रेजेन्ट की। उनकी लड़की का विवाह था। जे० पी० के लिये कपड़े ले गया। वे मिले नहीं। रात में ७। बजे बिरला जी के खाने पर गया। इनके बातचीत का, सोचने का तरीका मुझे बहुत जँचता है। मुझे लगता है, जी० डी० गांधी जी के बहुत बड़े भक्त हैं, कांग्रेस के आज के ढंग से कुछ दुखी हैं। मैंने निस्संकोच अपने विचार कह दिये। उन्होंने कुछ कहा नहीं। आज का दिन अच्छा गया।

सीकर

९ फरवरी : सुबह ७ बजे पूगा। सीधा बजाज भवन गया। कुंमाराम जी वगैरह आये हुए थे। ज्ञानचंद जी और किशन मोदी भी। मैंने कहा कि अब लोगों में काम करने की भावना कम होती जा रही है। इस तरह तो समाज या देश की भलाई रुकने लगेगी। परंतु शायद इसे मैं ठीक से समझा नहीं सका। दिन में बाजार वगैरह में लोगों से मिलता रहा। १०००) रुपये कुंमाराम जी को दिये। मुसलमानों के मुहल्ले में गया। एक छोटी सभा सी हुई। १००) रुपये की किताबें लाइब्रेरी में दीं। ५०) रुपये की किताबें कलेक्टर

साहब के यहाँ शादी में दी। २००) रुपये कांग्रेस को दिये। रात में कलेक्टर साहब के घर खाना खाया। बहुत मिर्च और घी था। ठीक से खा नहीं सका। सीकर जिला टूटने की बात हो रही है।

दिल्ली

१० फरवरी : सारे दिन झंझटों में फिर रहा हूँ। जो काम करना चाहता हूँ वह हो नहीं पाता। सरकारी मशीनरी कुछ अफसरवादी है। मन खिन्न था। मैथिलीशरण जी के गया। गरम पकौड़ी और लड्डू खाये। मैंने समस्याओं के बारे में कहा। दद्दा बड़े जोर से हँसे। कहने लगे 'कंबल ओढ़ लिया तो पसीना आयगा ही'। बात सही है, समाज की सेवा लिखकर भी हो सकती है। परंतु मुझमें वैसी योग्यता कहाँ ? शाम को स्टेशन गया गंगाबाबू को पहुँचाने, दिनकरजी भी थे।

११ फरवरी । सुबह लोदी गार्डेन गया। वहाँ पी० डी०, हिम्मतसिंहका जी और भी लोग मिले। मैंने उन्हें बैंक वाली बात बतायी। ७। बजे डी० पी० गोयनका के गया। ११। पर संसद में मेरा क्वेश्चन था। उस पर सप्लिमेंट भी था। सारे दिन इधर-उधर चक्कर में रहा। २००) रुपये बैंक से निकाले। ५।।। बजे तक हाउस में था। सारे दिन भाग-दौड़ रहती है। पार्लियामेंट का काम नहीं कर पाता। लोगों से मिलना-जुलना कम करना पड़ेगा। परंतु नहीं मिलने से बुरा मानते हैं। अजीब चक्कर है !

१३ फरवरी : शाम को ५ बजे कांग्रेस पार्टी की मीटिंग हुई। पंडितजी आदि थे। बैंक वाले मेरे प्रस्ताव पर थोड़े झल्लाए से। एस० एन० सिन्हा ने तो कहा कि ऐसा प्रस्ताव रखना ही नहीं चाहिए। मेरा प्रस्ताव बैंकिंग-व्यवसाय के लिये उपयोगी था। धनिकों के स्वार्थ की बात नहीं थी। परंतु पंडित जी की मर्जी, शायद उन्हें इसके बारे में अच्छी रिपोर्ट नहीं दी गयी। मैंने ढंग से चुपचाप वापस ले लिया।

सीकर

१६ फरवरी : सुबह ७ बजे पूगा। बजाज ग्राम गया, सोढानी जी और दूसरे लोग भी थे, सबसे भेंट हो गयी। दिन में बस में बैठकर २ बजे भटोट गया। बड़ी मीटिंग थी। बी० डी० ओ० आये थे। प्राय: १००० आदमी थे। आश्वासन मिलता है पर काम हो जब जानें। शाम को ७।। बजे बासे में खाना खाया। सीकर में रुपयों की टान बहुत चलती है। जिधर भी देखो, लोगों को रुपए चाहिए। रात में गाड़ी में एक जोड़ी देखी। एक साथ सोये थे। कुछ बेचैनी सी फील कर रहे थे। मैं धीमी रोशनी में कुछ पढ़ रहा था। चुपचाप बत्ती बंद कर दी। शायद नया ही विवाह हुआ था।

दिल्ली

१७ फरवरी : बहुत सवेरे नींद खुली। साथ वाली जोड़ी गहरी नींद में थी। ७ बजे दिल्ली पूगा। सामान बाँधने लगा। लड़की जग गयी। मैंने बताया दिल्ली पहुँचे हैं।

शर्मायी सी उठी। दोनों सामान बाँधने लगे। पार्लियामेंट में साधारणतया अच्छा बोला। प्रश्न नहीं पूछ सका, जाने में देर हो गयी थी। गलती की बात है। शाम को ८ बजे तक पार्टी मीटिंग थी, उसमें था। तबीयत ठीक है। कसरत करता हूँ। लोगों का आना-जाना बढ़ा हुआ है, इसे कम करना होगा। काम में बाधा पड़ती है।

१८ फरवरी : सुबह ५॥ बजे जी० डी० बिन्नानी और मातादीनजी खेतान से बात हुई। पार्लियामेंट में ११ बजे एक क्वेश्चन पर सप्लिमेंट पूछा। पंडित जी ने मंगला डैम के बारे में बताते हुए मेरा नाम लिया। दिन में फिरोज गांधी से काफी बात हुई। इन्हें बहुत जानकारी है। पढ़ते भी खूब हैं। सीकरवालों को कुतुब मीनार भेजा। बँगला देखने गया। भागीरथ जी को तथा बापू जी को पत्र लिखा।

२१ फरवरी । शाम को डा० रामसुभग सिंह के साथ मौलाना के घर गया। वे ज्यादा बीमार हैं।

२२ फरवरी : मौलाना आजाद चले गये। भले थे। अरबी, फारसी के बहुत बड़े विद्वान्। आजादी की लड़ाई में गांधी जी का साथ दिया। नेहरू जी इन्हें बहुत मानते थे। मुसलमानों ने इनको अपना नेता कभी नहीं माना, बड़े ताज्जुब की बात है। पंडितजी बेहद दुखी हैं। बहुत से लोग इकट्ठा हो गये। सुनने में आया कि किसी ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की थी कि जिस दिन कृष्णमाचारी रिजाइन करेंगे उसी दिन मौलाना को चोट आयेगी और चार दिनों बाद उनका देहांत होगा। चोट लगने पर कलकत्ते से डा० विधान राय देखने आये थे और उन्होंने कहा था कि कोई खतरा नहीं है। परंतु आश्चर्य है, ज्योतिषी की बात सही निकली। बड़ी चर्चा है।

२ मार्च : ४॥ बजे विश्वायतन योगाश्रम में गया। पंडित जी, मुरारजी, नंदाजी, जगजीवन रामजी भी थे। ब्रह्मचारी जी का स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। लगते हैं, ५० के आसपास के, परंतु लोगों का कहना है उम्र बहुत ज्यादा है, ठीक पता नहीं चलता। योग के अच्छे जानकार बताते हैं। ६॥ बजे तक था। जगजीवन रामजी से बात हुई।

३ मार्च : गंगाबाबू के साथ मैथिलीशरण जी के गया। अपने यात्रा-लेखों के बारे में बात की। दद्दा ने भाषा के बारे में कुछ सुझाव दिये 'सरस्वती' में लेख भेजा है। 'सरिता' वाले भी माँगते हैं। ११ बजे पार्लियामेंट में एक सवाल पर सप्लिमेंट ठीक से पूछ नहीं सका। २००) शुक्ला को दिये। १००) रुपये पारीख को। अच्छा नहीं किया। इन लोगों की फौज इकट्ठी करने से क्या लाभ? खैर, गरीबी और जरूरत है ही परंतु इस तरह इनके प्राब्लेम मिटेंगे नहीं।

जयपुर

४ मार्च : सुबह ६ बजे पूगा। दिन में जलबोर्ड में गया। लोगों से मिला। के० डी० चूड़ीवाल के जीमा। असेंबली जाकर जी० डी० बिन्नानी का पत्र विथड्रावल किया।

मन में एक उदासी सी थी ही। राजनीति का अडंगा फाटके के माफिक मन को बिगाड़ देता है। रात ९ वजे स्टेशन पर आकर सो गया।

कलकत्ता

१० मार्च : घुवड़ी वाली गोदाम वेच दी। आफिस आकर आँक-टाँक सारा देखा। दिन में भागीरथ जी के ऑफिस गया।

ट्रेन, दिल्ली

११ मार्च : सुवह सोन पुल पर आँख खुली। रात नींद अच्छी आयी। कई पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ीं। जन-साधारण की रुचि राजनीति की ओर वढ़ रही है। खूब टीका-टिप्पणी निकलती हैं। काम करने वाले कम हैं। साहित्य में भी यही हालत है। नयी पीढ़ी में दम नहीं दिखता। आजकल यही ढंग है। दिन में १० वजे इलाहावाद स्टेशन पर चौवरी जी आये थे। चिरंजी की सगाई की वात की। रात १० वजे दिल्ली पूगा। घर आकर स्नान किया। ताजगी आ गयी।

दिल्ली

१४ मार्च : पार्लियामेंट में मेरा सवाल था। दिन में वाइफ के साथ क्वीन विक्टोरिया रोड पर एक क्वार्टर देखने गया। उसे कमती जँचा। मुझे तो जँच गया है। रिलीफ सोसाइटी के वारे में रामनाथजी शर्मा का अखबार में लेख है। गुप्तजी के साथ भाखरा नांगल जाने का प्रोग्राम वना रहा हूँ परंतु गंगावावू के पैरों में चोट आयी है। आज पार्लियामेंटरी पार्टी की मीटिंग में चाय और कपड़े पर वोला। शायद ठीक ही वोला।

१५ मार्च : रात में जे० पी० को रिसीव करने गंगावावू के साथ स्टेशन गया। मुझे इनसे वहुत प्रेरणा मिलती है। न जाने कैसा स्नेह-सा है। दिन में श्री अशोक मेहता के साथ गुरुद्वारा रोड पर एक वँगला देखने गया था। वापिस आकर लेख लिखने लग गया। दद्दा के गया, चंद्रगुप्त जी विद्यालंकार, संपादक 'आजकल' से उन्होंने परिचय करवाया। अच्छे विद्वान हैं।

१६ मार्च : जे० पी० का भाषण सुनने न जा सका। पार्लियामेंट के कागज पढ़ने में भूल गया। एक लेख ग्रीस पर तैयार किया। अखवार वाले लेख संक्षिप्त चाहते हैं, वड़ी कठिनाई होती है। आजकल लोग लंवे लेख पढ़ते भी नहीं। मैथिलीशरण जी और सियाराम शरण जी को लेख दिखाया। उन्हें जँच गया। शाम को त्यागी जी तथा सी० डी० पांडे के गया, चाय दे आया। वातचीत हुई, डेढ़ घंटे तक। इसमें शक नहीं कि नेहरू जी के आगे किसी की चलती नहीं। लोग पीठ पीछे उनकी आलोचना तो करते हैं परंतु सामने हिम्मत नहीं। त्यागी जी चीन के मामले में उनकी नीति से खुश नहीं हैं।

१७ मार्च : डा० के० एल० श्रीमाली से मिला। टैक्सी में गया था। गाड़ी दूसरे को दे रखी थी। स्पीकर से मिला। आज सवाल नहीं था। दिन में वैठकर लेख ठीक

किया। गुप्त जी के खाना खाया। वहाँ गंगाबाबू, मृत्युंजय बाबू, अज्ञेय जी, से भेंट हो गयी। शाम को ७॥ बजे फैमिली प्लानिंग पर के० डी० मालवीय का भाषण सुना। देश का गरीब आदमी अपढ़ है। परिवार नियोजन का काम अच्छा है और जरूरी भी, परंतु इसे गाँवों में ज्यादा प्रचार करना ठीक रहेगा।

२० मार्च : पार्लियामेंट में कामर्स-इंडस्ट्री पर बोलना चाहता था। मौका नहीं मिला। भाई जी का फोन था। एक फैक्टरी साउथ में मुवालकाजी की सीर में ली है।

जयपुर, सीकर

२१ मार्च : सुबह जयपुर ८ बजे पूगा। बिरला जी का स्पेशल प्लेन था। जलबोर्ड की जीप मँगाकर जलबोर्ड गया। स्नान वगैरह कर लोगों से मिलने निकल गया। ६ बजे की ट्रेन से रवाना होकर ९। बजे सीकर पूगा। आनंद प्रकाशजी को लेकर सी० एल० अग्रवाल के पास भी गया। सीकर के लोग काफी प्रसन्न हुए। मेरा इंप्रेशन अच्छा रहा।

लक्ष्मणगढ़

२२ मार्च : ६ बजे सुबह मोटर से लक्ष्मणगढ़ के लिये रवाना हो गया। किशन सिंह जी, मदन जी और दुर्गादत्तजी साथ में थे। बलोतरा, पलथाना आदि गाँवों का दौरा किया। बातें नोट की। शाम को मिरजामल जी के यहाँ खाना खाया। गाँव के और भी पचास-साठ व्यक्ति थे। सब मिलाकर लक्ष्मणगढ़ का प्रोग्राम अच्छा रहा। बीच-बीच में अपने क्षेत्र का दौरा करना अच्छा रहता है।

जयपुर

२३ मार्च : सुबह उठकर बाजार गया। बिहाणियों के बैठने गया। और भी लोगों से मिलता रहा। कुछ स्टूडेंट आये। पढ़ाई-फीस, नौकरी वगैरह के बारे में कह रहे थे। समस्या तो है ही। उपाय क्या? ढंग ही आजकल ऐसा है कि फैक्टरी के माफिक पढ़े-लिखे तैयार किये जाते हैं। स्कूल में राजनीति की दलबंदी ही सीखते हैं। पेशा-रोजगारी सीखते नहीं, पढ़ाई तो कठिन है। कहता क्या? सुन लिया, किसी तरह समझा दिया। शाम को ६ बजे तक जयपुर पूगा। सुखाड़िया जी से मिला। कुछ बातें की। सफलता की आशा है। आज का दिन वैसे बुरा नहीं रहा। सुखाड़िया जी के यहाँ व्यास जी, दामोदरजी, माथुरजी भी मिल गये थे।

दिल्ली

२४ मार्च : आज मेरा क्वेश्चन नहीं था। हेल्थ पर डिबेट था, इसलिए बोला नहीं। शाम को मास्टर पर क्वेश्चन पूछा। टी० बोर्ड की चेष्टा चल रही है। शायद मेरा नाम

आ जायगा। लोगों से जान-पहचान कर रहा हूँ। जूट वाला सवाल स्पीकर ने डिस्अलाऊ कर दिया। कल से लेख लिखने की चेष्टा करूँगा। शायद एक बार बाहर भी जाना पड़ेगा।

२६ मार्च : कल के मेरे क्वेश्चन का अखबारों में अच्छी तरह आया। मन में उत्साह वढ़ता है। मनु भाई के साथ कल राजस्थान जा रहा हूँ। निकट संपर्क में आने का मौका मिलेगा। सुवह पार्लियामेंट कुछ देरी से पहुंचा। एक क्वेश्चन पहले हो चुका था। १२ वजे एक शार्ट नोटिस क्वेश्चन था। परंतु मेरे पास कागज नहीं थे। बड़ी भद्द हुई, हँसी भी। गलती थी ही, तैयार होकर नहीं जा पाता। कैसा ही लगता है। टी० बोर्ड में मेरा नाम आ गया।

२७ फरवरी : आज सारे दिन मकान वदलने में रहा। अच्छा रहा। शाम को किताबें खरीदने गया। ६०)-७०) रु० की खरीदीं। वनारसीदास जी चतुर्वेदी मिल गए। रामानंद चटर्जी और माडर्न रिव्यू के वारे में कुछ चर्चा हुई, 'विशाल भारत' के लिए भी। रात में भीलवाड़ा जाने के लिए स्टेशन गया परंतु मनु भाई का प्रोग्राम कैंसल हो गया इसलिए वापस आ गया।

२८ मार्च : सुबह के० पी० गोयनका का फोन आया टी० ड्यूटी के वारे में। २।। वजे का टाइम किया। आज जगन्नाथ जी वेरीवाल चले गए। चार दिन तक थे। भले आदमी हैं। लोगों के आने-जाने में कुछ दिक्कत तो होती है परंतु अच्छा रहता है, मन लगता है और तरह-तरह के विचारों को जानने का मौका मिलता है। २।।। वजे श्री सतीशचंद्र के गया। काफी वात हुई। मैंने ड्यूटी के वारे में अपना पॉयंट समझाया। ऐसा लगता है, ड्यूटी कम हो जायगी।

दिल्ली, बम्बई

२९ मार्च : सुवह ७ वजे प्लेन पर गया। ७।। वजे जी० डी० आए, प्लेन रवाना हुआ। रास्ते में ४ घंटे वातचीत होती रही। मैंने उन्हें टी० सन्ड्री सेल का सजेशन दिया। राजस्थान में फर्टिलाइजर के लिए भी कहा। वोले, अमेरिका जाकर चेष्टा करूँगा। आज रामनवमी है। मुझे यह दिन अच्छा लगता है। राम ने कितना संघर्ष जीवन भर किया। दादा जी ने बचपन में राम की जो वातें मन में वैठा दीं, वे जीवन में काम आती हैं। वापू जी के वहुत वड़ी टैक्स लग गयी है। केस भी खराव लिखा है। वंवई की क्लाइमेट मुझे जँचती नहीं। मिल सुधार पर है, शायद अव घाटा नहीं रहेगा। गणेश के आने के वाद से मिल में सुधार आया है।

दिल्ली

५ अप्रैल : आज मेरे तीन सवाल थे। काफी चहल-पहल रही। सुवह के० डी० चूड़ीवाल आए थे। मातादीन जी यहाँ हैं। १२।।। वजे एस० पी० जैन के साथ जूट के वारे में बात हुई। वे लोग कुछ करेंगे, ऐसा मालूम देता है, सीरियस थे।

पिलानी

६ अप्रैल : सुबह डॉ० पांडेय से मिले। इसके बाद गिरीश जी के साथ पिलानी की सारी चीजें देखने गए। बहुत ही प्रभावित हुए। कितने रुपये बिरलों ने खर्च किए हैं और शिक्षा के लिए कितना बड़ा काम किया है। अकेले इन लोगों ने जो काम शिक्षा प्रचार के लिए इस उजड़े-पिछड़े हिस्से में किया,वह बेमिसाल सा है। आश्चर्य होता है। हरियाली देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। जनहित का काम सबसे बड़ा पुण्य है। यही रह जायगा। साथ में पी० एन० बनर्जी, एस० सामन्त, के० के० दास, डॉ० मंडल आदि कई विद्वान थे। सभी बहुत प्रभावित और खुश हुए।

बम्बई

१३ अप्रैल : सुबह बिरला जी से मिला। कोई खास बात नहीं रही। उन्होंने कहा मुरार जी भाई से अपनी समस्या साफ-साफ कहनी चाहिए। व्यक्तिगत बात तो है नहीं, टैक्स वगैरह सरकारी पालिसी से जुड़ी है, सारे देश की बात है। परंतु मैं डायरेक्ट बात करने का साहस नहीं कर पाता।

दिल्ली

१६ अप्रैल : नन्दू वगैरह यहीं हैं। गींगा की तबीयत थोड़ी नरम है। भाई जी कल रात आये और आज रात राजस्थान जा रहे हैं। मंदिर की प्रतिष्ठा है। हमें भी जाना होगा।

१७ अप्रैल : आज कलकत्ते जा रहा हूँ, पाँच चार दिनों के लिए। जाना ही है, बहुत दिन हो गए। ऐसा लगता है जीवन में कुछ रस नहीं मिला, न कुछ चेंज ही आया। लोग समझते हैं मैं आगे बढ़ा, धन कमाया, नाम कमाया, पार्लियामेंट में आ गया। मेरे को लगता है, सब गँवाया। न पढ़ पाता हूँ, न लिख पाता हूँ। पहले भी भाग-दौड़, आज भी भाग-दौड़, कोई चेंज नहीं, चैन नहीं, स्वास्थ्य खराब।

२४ अप्रैल : कलकत्ते से कल वापस आया था। थकान है, ट्रेन के सफर की। आज दिन में पार्लियामेंट गया। लोगों से मिला। के० बजाज निश्चित है, खड़े हो रहे हैं। देखा जाय, क्या होता है। शाम की सीट रिजर्व करा ली। रात में गाड़ी में बैठा। थकावट रहती है। आज एक साधारण-सा क्वेश्चन था। डॉ० राम सुभग सिंह ने कहा कि कानूनगो आपसे नाराज-से हैं।

राजलदेसर

२५ अप्रैल : सुबह ५ बजे पूगा। भाई जी स्टेशन पर आए थे। मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती। सारे दिन गरमी रही। बच्चों के एक स्कूल में गया। रेडियो सेट देने की कह आया हूँ। शाम को ७ बजे मूर्ति का जुलूस निकला। काफी गरमी और धूल थी। मेरा जी घबरा रहा था।

२७ अप्रैल : सुबह ७ वजे पूगा। गरमी यहाँ कमती है। राजलदेसर में दो दिनों में वहुत परेशानी रही। दिन में १२ वजे तक काम करता रहा। शाम को 'पपेट शो' देखने गया। फिर रात में १० वजे तक डॉक्टर राम सुभग सिंह को मोटर सिखाता रहा।

३० अप्रैल : एलेक्शन कैम्पेन शुरू कर दिया है। मुझे अपनी जीत में विश्वास-सा है। ओम का विज़ा वन जायगा। भाई जी ने वंवई फोन किया। मिल की वर्किंग मार्च में कुछ नफे की है। दो कितावें स्वामी जी से ले आया। थोड़ा खून मुँह से आया, इससे मन में कुछ विचार-सा हो रहा है। कल से कसरत वंद कर दूँगा। ओम ७ तारीख को विलायत जा रहा है।

१ मई : प्रायः ५ आदमी ट्रेजरर के लिए खड़े हुए हैं। काफी कड़ा कन्टेस्ट है। डॉ० राम सुभग सिंह के घर गया, घूमने और मोटर सिखाने। काफी वातें हुईं। मेरे वारे में उनकी धारणा है, जीत जाऊँगा। फिर शोभाराम जी के साथ कई जगह घूमा। दिन में अपने ढंग से मैं चेष्टा करता रहा। रात में ८ वजे लौटा। थकावट आ ही जाती है परंतु इससे मेरा उत्साह टूटता नहीं। भाई जी वगैरह कश्मीर जा रहे हैं।

२ मई : जुकाम जोरों से है। सुवह १० वजे तक सात-आठ आदमियों के, शोभाराम जी के साथ गया। मेरा खजांची का हो जाना संभव दिखायी देता है। १२ वजे कमलनयन जी से वात हुई अच्छी तरह से। उन्होंने अपना विउ पायंट समझाया, मैंने अपना। ४ वजे अंदाज के० एन० ने वियड्राँ का कह दिया।

३ मई : सुवह वर्मा जी के गया। ११ वजे तक था। श्री माथुर के भी गया था। शोभाराम जी के चांसेज हो गए हैं। मेरा तो अभी मुकावला नहीं है। देखें, क्या होता है। ११ वजे खाना खाकर टिकट लेने भाई जी के साथ गया। घर में काफी भीड़ है। नौकर नहीं है। दिन में ३॥ वजे के० एन० वजाज के गया। विरला जी से भी वात हुई। शाम को ८ वजे पंडित जी की मीटिंग में गया। उन्होंने रहना मंजूर कर लिया है।

४ मई : सारे दिन मतों के लिए चेष्टा करता रहा। लोगों से मिला भी। वातें भी की। ऐसा मालूम देता है कि मैं जीत जाऊँगा। लोगों में उत्साह है। डॉ० रामसुभग सिंह पूरी चेष्टा कर रहे हैं।

५ मई : सारे दिन लोग मतों की चेष्टा करते रहे। मैं १० वजे ही चला गया था। इसके पहले ९ वजे गुप्त जी के घर गया था। वहाँ से कई लोगों को फोन करवाया। अगर कल आता तो और भी अच्छा होता। ५॥ वजे मालूम पड़ा, मुझे १७२, भार्गव जी को १०५, श्री सेठ को ७१ मिले। मुझे अपनी जीत पर विश्वास था। खुशी हुई।

९ मई : ९॥ वजे सुवह क़ांग्रेस पार्टी की मीटिंग थी। प्रायः ११ वजे तक चली। तय वो सव था ही। रूटिन पूरी करनी थी। ५ वजे से ७ वजे तक राजस्थान वालों की सभा

हुई। २००) रु० जसवंत राम जी को दिए, गौशाला के लिए। इसके अलावा खर्चे के हिसाब में ४००) रु० और दिए। बैंक से ७५०) रु० निकाले। कई एक पत्र लिखे। पढ़ना-लिखना कमती होता है। रात में करीब २० व्यक्ति, ज्यादातर एम० पी० जीमने आए। त्यागी जी आदि भी थे। अच्छा रहा। ऐसी गोष्ठियों में काम की बातें होती हैं। पार्टी मीटिंगों में वातावरण कुछ दूसरा ही रहता है।

१० मई : सुबह ९ बजे ए० आई० सी० सी० की मीटिंग में गया। बाहर से काफी लोग आए थे। सुखाडियाजी से मिलने गया। बातें हुईं। कुछ झूठ-सच भी बोला। कुछ तो आदत है और कुछ इसलिए कि काम इसके बिना चलने का नहीं। फाटके के मामले में भी झूठ-सच बोलता था, राजनीति मामले में भी वही वातावरण। पता नहीं, गांधी जी कैसे काम चलाते थे। शायद संयम और मनोबल के कारण। कृष्णवल्लभ बाबू आए हैं। बिहार की राजनीति बड़ी उलझी बताते थे। इसी कारण, वहाँ व्यापार-उद्योग नहीं बढ़ पा रहा है। एक रकम दुखी-से लगे। रात में २० लोगों को जीमने पर बुलाया। सब एम० पी० थे। जगदीश बायावाला भी आए थे। मिनिस्टरों में केवल बलीराम भगत थे।

११ मई : सारे दिन ए० आई० सी० सी० की मीटिंग में था। पार्टी में सरकार की कार्रवाई, सफलता और असफलता पर खुलकर बात होनी चाहिए। दलबंदी या व्यक्तिगत भावना से नहीं। परंतु इतनी हिम्मत किसमें? मैं खुद ही अपने को कमजोर पाता हूँ तो और को क्या कहूँ? मीटिंग में कई आदमी मिले, बद्री पोद्दार जी भी। इस बार नये-नये लोगों से जान-पहचान हुई। सुबह बाहर नहीं गया था। गंगा बाबू थे। उन्हीं से बात करता रहा, इतने पुराने अनुभवी और प्रभावी होते हुए भी अपने लिए इन्होंने कुछ नहीं किया। पढ़ते बहुत हैं, याददास्त भी तगड़ी है।

ट्रेन

१२ मई : सुबह मैथिलीशरण जी, राजपत जी दूगड़, नाहर जी तथा कुंभाराम जी से मिला था। राम सुभग सिंह जी, जानकी देवी जी बजाज और वर्मा जी से भी। ९॥ बजे स्टेशन पर गाड़ी में बैठा, साथ में डी० एन० तिवारी थे। सिलचर की सीट के बारे में बात हुई। दिन में गरमी थी परंतु किसी तरह रास्ता कट गया। अखबार वगैरह पढ़ता रहा। ज्यादा खबरें कांग्रेस और मंत्रियों के बारे में रहती हैं। इलाहाबाद में 'सरस्वती' खोजी, मिली नहीं। इस बार दिल्ली में काफी जान-पहचान बढ़ी। बिरला जी ने मसूरी बुलाया है। जाने का मन भी है परंतु काम बहुत पड़ा है।

कलकत्ता

१९ मई : दिन में एच० सी० हेडा आए थे। रात में उनके साथ रेणुका राय जी के घर गया। शाम को हेडाजी को भागीरथ जी के घर ले गया था।

२२ मई : सुबह ९॥ बजे टी० बोर्ड की मीटिंग में गया। इससे पहले मालचंद जी कंदोई के यहाँ गया। १२॥ बजे मीटिंग से लौटा। चाय बगानों और उद्योग में नये तौर तरीके अपनाने होंगे। प्रोडक्शन को बढ़ाना जारी है। परंतु इसके लिए रिसर्च भी चाहिए। दुनिया बहुत आगे बढ़ चुकी है। पाकिस्तान और सीलोन कंपटीशन में आ रहे हैं।

२८ मई : आज गंगा दशहरा है। गंगा जी नहीं जा सका। सुबह भागीरथ जी के यहाँ गया। दिन में ऑफिस गया। तबीयत खराब चल रही है। ९ बजे डॉ० डी०पी० चटर्जी के गया। उसने सब देख कर कहा कि वजन घट रहा है। इसका उपाय करना चाहिए। सोसाइटी में जाकर एक्स-रे कराया। शाम को आनंदीलालजी पोद्दार के गया, वहाँ शांति प्रसाद जी जैन ने कहा कि आपकी तबीयत खराब लगती है।

२९ मई : सुबह रिलीफ सोसाइटी में गया। स्टूल दे आया। खून और एक्सरे साफ आया है। कोई खराबी नहीं। वजन एक मन उनचालीस सेर है। शायद इन वर्षों में इतना कम कभी नहीं हुआ।

३१ मई : सुबह डॉ० गौर मोहन राय के गया। उसने बताया, आँव की बीमारी है, लो ब्लड-प्रेशर भी है। मन में एक रकम की उदासी-सी रही : खाने पर कंट्रोल रखता हूँ।

५ जून : सुबह कासलीवाल जी के साथ मैदान गया। आजकल पढ़ना-लिखना होता नहीं। मन भी स्थिर नहीं। शाम को ४ बजे ऑफिस गया वहाँ हरलालका का हिसाब किया। कैसे क्या होगा पता नहीं। भाई जी का पत्र था, १४ ता० को कलकत्ते आ रहे हैं। शाम को गोयनका जी के यहाँ विवाह में गया। पुराना घराना है, धन और मान भी है। बहुत लोग आ रहे थे। ६। बजे स्टार थियेटर गया। 'राजलक्ष्मी' नाटक था। साथ में डॉ० सत्यनारायण थे।

११ जून : व्यास जी के साथ सुबह ११ बजे तक था। मैं महसूस करता हूँ कि चंदे के काम में मुझे कम जाना चाहिए। प्रेस्टिज घटती है पर उपाय क्या। आज राजनीति में देना-दिलाना, खाना-खिलाना नियम-सा है। इसके बिना चलता नहीं, भले ही पब्लिक वर्क हो या नहीं। रात में शांति प्रसाद जी के घर मालू जी जीमने गए थे, वहीं तालाब में डूब कर मर गए। शायद हार्ट फेल कर गया।

१२ जून : सारे दिन घर पर ही रहा। दवाई ले रहा हूँ। कल ९ बजे ऑपरेशन होगा। शाम को तैयारी कर दी गयी। दवा वगैरह दे दी। रात में खाने के लिए थोड़ी खिचड़ी मिली। मालू जी वाली घटना से मन में शोक है। मौत कब कहाँ कैसे आ जाती है, कुछ पता नहीं, एक रकम हर साँस के साथ रहती है।

१३ जून : सुबह ६॥ बजे डॉक्टर ने आकर जाँच किया, फिर सूई लगायी। ८॥ बजे अंदाज बेहोश किया गया। मुझे लगा, बेहोश नहीं होऊँगा। आँखें बंद किए था। सामने बहुत तेज प्रकाश का एक वृत्त सा लगा। उसमें एक के बाद एक रंग आते रहे। फिर हरा या नीला सा रंग दिखने लगा। वृत्त चारों ओर के बढ़ते अँधेरे में हल्का होता

गया। फिर क्या हुआ, मुझे मालूम नहीं। शायद नींद आ गयी या बेहोश हो गया। ऑपरेशन सक्सेसफुल हुआ। रात में नींद की दवा दी। खास दर्द जैसा नहीं था। मुंह का स्वाद जरूर कुछ फीका रहा।

१७ जून : दिन में काफी आदमी मिलने आए। बैठने की मनाही थी, इसलिए लेटा ही रहा। बुखार १०१ तक हुआ था। खाने-पीने में लिक्विड देते हैं। लोगों का आना अच्छा लगता है, मन बहल जाता है पर इससे थकान जल्दी आती है। सर भी भारी हो जाता है। पिछले दो दिनों की डायरी लिखता रहा।

२० जून : सुबह जी० डी० बिरला जी का फोन आया। वे तीन-चार दिन हुए कलकत्ता आए हैं। मिलने वालों में घनजी, कांता, महावीर आए। १ बजे डॉक्टर आए, टांके काट दिए, दर्द तो हुआ परंतु इतना नहीं। दिन में किताबें पढ़ता रहा। अब तो पड़े-पड़े तंग आ गया हूँ। डॉक्टर कहता था, अभी हफ्ता भर और रहना होगा।

२७ जून : सुबह स्टेशन गया। ६॥ बजे लौटा। १० एम० पी० आए। तीन मेरे यहाँ ठहरे, साधारण से हैं। दिन में उनके साथ हिंदुस्तान मोटर्स में गया, नेशनल लाइब्रेरी और चिड़िया-घर भी गया। डॉक्टर से मिला। पट्टी खुलवायी, ठीक है। रात में थोड़ा गरम पानी करके स्नान किया। कमजोरी लगती है, लोग भी कमजोर बताते हैं।

२८ जून : शाम को व्यास जी और १२-१४ आदमी खाने पर आये। बसन्ती बीमार है, दिन में उसके घर गया। कांग्रेस ऑफिस में नहीं आ सका। आज मीटिंग थी। टाँटिया हाईस्कूल और मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की मीटिंग में गया था। तबीयत में अभी सुस्ती है, चलने-फिरने में कमजोरी मालूम देती है।

२९ जून : बसन्ती काफी बीमार है। सुबह उसकी ससुराल गया। समझ में नहीं आता क्या बात है। इलाज वगैरह तो ठीक चल रहा है। फिर वहाँ से एयरपोर्ट गया। पंत जी, पाटिलजी आये। वहाँ मिलने वालों में अंदाज २०० आदमी थे। ऐसी जगह जाना मेरे लिये फजूल हैरानी है परन्तु फार्मल्टी रखनी पड़ती है।

१ जुलाई : बसन्ती नर्सिंग होम में है। ऑपरेशन हो गया परंतु कमजोरी बहुत है। व्यास जी वगैरह सब चले गये। खास चंदा हुआ नहीं। अठारह-बीस हजार हुए हैं। सुखाड़िया जी आज चले गये।

२ जुलाई : कई दिनों से विचार कर रहा था कि जसीडीह चला जाऊं। तबीयत एक तरह खराब सी है। शाम को भाई जी के साथ बसन्ती के पास गया। वहीं जाने की बात कही। थोड़े से नाराज तो हुए, परंतु खास विरोध नहीं किया।

जसीडीह

४ जुलाई : यहाँ आने पर मुझे अपने में परिवर्तन मालूम देता है। वातावरण बदल जाता है। न राजनीति और न व्यापार वगैरह। चिन्ता नहीं सी रहती है, भूख भी

लगती है। किताबें पढ़ता रहता हूँ। भवन में गया, प्रार्थना में मन लग गया। परंतु कब तक यह चलेगा, मुझे यहाँ से जाना ही होगा।

कलकत्ता, डिब्रूगढ़

७ जुलाई : सुवह ५ वजे भाई जी से वातचीत हुई। वेजिटेवल फैक्टरी का ट्रांसफॉरमर टूट गया है। काफी नुकसान हुआ। प्लेन से १२। वजे डिब्रूगढ़ पूगे। अजितसरिया जी के गये।

डिब्रूगढ़, नाजीरा, लुकवा

९ जुलाई : सुवह ५ वजे गाड़ी से सिलीगुड़ी पूगा। वहाँ से ११॥ वजे नाजीरा के लिये चला। इससे पहले लाहोटी जी के चाय वगान गया। वहां से पी० सी० वरुआ के वगीचे। नाजीरा पहुँच कर लोगों से मिला। काम वंद है, प्रॉब्लेम है। ६ वजे लुकवा पूगा। यहाँ काम हो रहा है। रात में दुश्चिंता लगी रही। हड़ताल मजदूरों का अधिकार है, परंतु इसका उपयोग अंतिम उपाय के रूप में होना चाहिए। इसे मजदूर समझते नहीं।

नवगांव, शिलांग

१० जुलाई : श्री गोयल के साथ सुवह ५ वजे लुकवा की फैक्टरी देखने जीप से निकला। देखी, अच्छी थी। ११ वजे नवगांव पूगा। लालचंदजी के खाना खाया। १ वजे रवाना हो गया और ४ वजे शिलांग पूगा, सीधा कान्फ्रेंन्स में गया। लोगों से काफी मिलना-जुलना हुआ। वहुत आदमी आये थे। माणिकचन्द जी सरावगी के वँगले में ठहरा। अच्छी जगह है। सव आराम है।

सिलचर, कलकत्ता

१३ जुलाई : सुवह रामपुर, सवोंग वगैरह वगीचे देखे। यहाँ सूरज जल्दी उग जाता है। नाश्ता वगैरह कर १२ वजे एयर पोर्ट आये। मनु भाई और त्रिपाठी जी साथ में थे। ४ वजे कलकत्ता पहुँचा। इस यात्रा में वहुत से चाय वगीचे देखा। प्रॉव्लेम तो है ही। मजदूर अशिक्षित होने के कारण वहुत जल्द वहकावे में आते हैं। वामपंथी यूनियनों का जोर है। उन्हें गलत-सही से मतलव क्या? उचित शिक्षा का प्रचार होने से जिम्मेदारी समझने लगेंगे। इन्हें साधन-सुविधा भी देनी चाहिए।

ट्रेन

१५ जुलाई : वजन एक मन सैंतीस सेर है। दिन में मि० डेविस (डंकन ब्रदर्स) से मिला। वराट आये थे, टी गार्डन के वारे में वात के लिये। रात ८ वजे ट्रेन से चला तवीयत आज पहले से कुछ ठीक सी है। साथ में मातादीन जी खेतान हैं।

नयी दिल्ली

१८ जुलाई : सुवह १ मील घूमा। मनु भाई शाह के घर गया। वहीं नाश्ता किया। चाय के वारे में काफी वातें हुईं। पाँच-छह दिनों में अनाउंसमेंट करेंगे। पालियामेंट गया। वहीं मद्रासी खाना खाया। सारे दिन लाइब्रेरी में रहा।

२० जुलाई : ८।। वजे कपिला जी के आया। कलकत्ते से, कांता से वात की। उसे टी० गार्डेन जँचा नहीं, अनलकी; रानीगंज जँचता है। १२ वजे केडिया जी के खाना-खाया। मनु भाई से फोन पर वात हुई। ४ से ६ तक का टाइम दिया है, वोले कि आज क्यों जाते हो। कोई उपाय नहीं, रुक गया।

२१ जुलाई : सुवह पानी वरस रहा था। ६।। वजे सर्वेन्ट क्वार्टर वाले आये। कहने लगे, उनके घरों में पानी भर गया। एक कमरा उनके लिये दे दिया। ७।। वजे ३ फीट पानी में सामान लेकर चला। ४) रुपये खर्च कर किसी तरह स्टेशन पूगा। वहाँ ५ घंटे वैठा रहा। ३ वजे गाड़ी आयी। ४। वजे चली। थकावट काफी महसूस कर रहा था। कलकत्ते के लिये इस वार ट्रेन से जाना ठीक नहीं लगा।

सीतारामपुर

२५ जुलाई : कार से १ वजे सीतारामपुर पूग गया। कांता की कोल माइंस देखने गया। खास जँचा नहीं। रात ८ वजे तक कलकत्ता वापस आ गया। मन में एक तरह की निराशा-सी थी।

कलकत्ता

४ अगस्त : सुवह स्टेशन गया। १० वजे तक रामसुभग सिंह जी तथा और छह-सात एम० पी० आये। मेरे यहाँ ठहरे हैं। वम्वई की मिल की मई की रिपोर्ट अच्छी आयी है। भाई जी वंवई चले गये हैं।

सीकर

९ अगस्त : सारे दिन सीकर में लोगों से मिलता-जुलता रहा। हरलाल सिंहजी को झंझनूं कांग्रेस के लिये १०००) रुपये दिये। सीकर आना एक रकम ठीक रहा। लोग खुश रहते हैं। परन्तु मुझे संतोष नहीं क्योंकि मैं जो काम चाहता हूँ, वह ढंग से आगे नहीं वढ़ पाता। यहाँ रहूँ तो हो सकता है परंतु पालियामेंट भी जरूरी है।

१३ अगस्त : तवीयत ठीक है, सुस्ती कम। आज सदन में फाइनेंस का मेरा अच्छा क्वेश्चन था। मातादीन जी के साथ नोपानी जी के घर गया।

१५ अगस्त : लगता है, स्वाधीनता दिवस का अव कोई खास महत्व नहीं रह जायेगा। तैयारी होती है, भाषण होते हैं। भीड़ आती है, चली जाती है, आसपास के गाँव से दिल्ली देखने के लिये। गलती तो हम लोगों की है। दिन में मुरारजी भाई के यहाँ खाने पर गया। शाम को राष्ट्रपति भवन गया, मैथिलीशरण जी और गंगावावू साथ में थे।

नयी दिल्ली

२० अगस्त : सुबह ११ बजे से १ बजे तक मोटर के झमेले में रहा। मेरा एक क्वेश्चन था, देर से पहुँचा। मनु भाई ने कहा बंबई से जब तक खबर नहीं आएगी, रुपयों का बन्दोबस्त मुश्किल है। वहाँ टेक्सटाइल कमीश्नर से बात करनी चाहिए। ३ बजे फाइनन्स कमिटी की मीटिंग में और ४ बजे पार्टी मीटिंग में गया। रात में एस० एन० हरलालका से कलकत्ते से बात हुई। शेयर बेचने को कहा, मार्केट अच्छा है। रुपये आ जायेंगे।

मद्रास

२२ अगस्त : सुबह ७ बजे मद्रास पूगा। ७।। बजे एस० सी० मुवालका के गया। १० बजे तक स्नान वगैरह कर हरिकृष्ण जी जालान के साथ उनके ऑफिस गया। २ बजे एक शेयर ब्रोकर से मिला। ५ बजे तक मद्रास की गलियों में घूमता रहा। एक जगह रबड़ी खा ली, यह बुरा किया।

कोयम्बतूर, कुन्नूर

२३ अगस्त : सुबह ६।। बजे पूगा। स्टेशन पर मि० रामकृष्णन, एम० पी० का आदमी मोटर लेकर था। उनके घर गया। स्नान कर नाश्ता किया। बहुत अच्छा मकान है। सुखी परिवार है। तीन लड़के, पढ़ी-लिखी पत्नी, बी० ए०। चार काटन मिल हैं। लोहे का भी कारखाना है। ७।।। बजे चला, ८।।। पर कुन्नूर ४५ मील पूगा। रास्ता बहुत ही अच्छा है। १० बजे से १ बजे तक टी बोर्ड की मीटिंग में रहा। १ बंजे से २।।। तक कोठारी जी के था, वहीं जीमा। उनके चाय की खेती होती है। यहां से चार मील पर है। ३ बजे से ४।। बजे तक टी बोर्ड की मीटिंग में रहा। इसके बाद बाजार घूमने निकला। रतनलाल जी मारवाड़ी मिल गये। उनके बँगले गया। भले लोग हैं। मद्रास में बसे मारवाड़ी यहाँ वालों से घुलमिल गये हैं। नेशनल इन्टेग्रेशन के लिये यह बहुत बड़ा गुण है।

पोलाची, त्रिचूड़

२४ अगस्त : सुबह ३ बजे नींद खुल गई। कुछ देर लेटा रहा। फिर उठकर कुल्ला-मंजन कर पढ़ने बैठा। ५ बजे तक स्नान कर तैयार हो गया। मि० उसमान अली, एम० पी० की कार से ६।। बजे चला। पोलाची २ बजे पूगा। साधारण कस्बा है। छोटा सा एक किला है, इसे देखा। यहाँ से ४।। बजे त्रिचूड़ पूगा। बाजार खूब घूमा। साठ-सत्तर हजार की आबादी है। लोग शिक्षित लगे। एक जगह कांग्रेस की मीटिंग और एक जगह कम्युनिस्टों की मीटिंग हो रही थी। भाषा समझ में नहीं आयी, बिलकुल भी। लगता है, इस तरफ बंगाल की तरह कम्युनिस्टों का प्रभाव अच्छा है। महिलाएँ भी मीटिंग में थीं।

कोचीन, क्विलन, त्रिवेन्द्रम

२५ अगस्त : ट्रेन में थर्ड क्लास में बैठा। ७।।। बजे कोचीन हार्बर पहुँचा। दक्षिण भारत के गाँव उत्तर से साफ और अच्छे लगे। दृश्य भी सुंदर हैं। गरीबी जरूर है। वैसे सब जगह साधारणतया भाषा एक सी लगती है। मुझे दक्षिणी भाषा भी सीखनी चाहिए। कोचीन हार्बर में दुलीचंद उमरावलाल के ऑफिस में सामान रखा। स्टेशन से एक मील दूर पर है। पैदल चलता हुआ समुद्रतट पर पहुँचा। घूमता रहा। बम्बई वगैरह की तरह यहाँ फैशन और दिखावा नहीं है। कोचीन पुराना शहर है, अच्छा बंदरगाह भी। पश्चिमी तट पर बम्बई करांची के बढ़ने पर यहां का व्यापार घट गया था परंतु आजादी के बाद से फिर इसके विकास पर ध्यान दिया जा रहा है। ९।। बजे टी० बोर्ड के ऑफिस गया। टी० बोर्ड के ऑफिसर और जे० खान को लेकर उनके आदमी के साथ कोचीन और अरनाकुलम देखा। बस में बैठकर २ बजे अलेप्पी पूगा। बड़ा व्यापारिक स्थान है। पन्नालाल किशनलाल की दूकान में गया। इधर मारवाड़ी आकर बसे हैं और व्यापार भी कर रहे हैं। भीतर के गांवों में भी हैं। बड़ी प्रेरणा मिलती है। कितना परिश्रम कर इतनी दूर आकर रोजगार कर रहे हैं। पता नहीं, हमारी नयी पीढ़ी के युवक इतना कर पायेंगे या नहीं। अब तो साधन-सुविधा बहुत है। ६ बजे बस में बैठकर क्विलन गया। साधारण सा कस्बा है, कुछ गंदा भी, रिक्शा में बैठकर घूमा। ९।।। ट्रेन में बैठकर १२ बजे त्रिवेंद्रम वापस आ गया। रेलवे रिटायरिंग रूम में ठहरा।

त्रिवेन्द्रम, अरनाकुलम

२६ अगस्त : सुबह ६।। बजे स्नान वगैरह कर तैयार हो गया। थोड़ी कसरत भी आज की। रिटायरिंग रूम ५) रुपये पर बहुत ही अच्छा मिल जाता है। ऐसी जगह ठहरना चाहिए। ७।।। बजे रिक्शा से समुद्रतट पर गया। फिश-अक्वेरियम देखा। तरह-तरह के रंगों की विचित्र समुद्री मछलियाँ हैं। काफी मनोरंजन हो जाता है। समुद्रतट पर थोड़ा घूमा भी। ९। बजे अन्नामलय के मंदिर में पूगा। दक्षिण के मंदिर बहुत ही अच्छे लगते हैं। साफ सुथरे, पंडे-पुजारियों का हल्ला नहीं। फिर बाजार घूमता रहा। मेडिकल कॉलिज आ गया। दूध और फल खाया। १।।। की ट्रेन से चलकर क्विलन, वहाँ से बस में ६। बजे अलेप्पी। फिर बस से १२। बजे अरनाकुलम। रास्ते में एक जगह तेल का बना उपमा-डोसा खा लिया। नुक्सान जरूर करेगा।

कोचीन, ट्रेन

२७ अगस्त : रात १२।। बजे सोया था। ६ बजे उठा। थोड़ी कसरत की। थकावट है, पेट में दर्द है। घूमने निकल पड़ा। कोचीन गया। बोट ले ली। अच्छी सीनरी थी। करीब दो मील घूमा। शहर में थोड़ी गंदगी सी लगी। १२।। बजे की ट्रेन से चला। ट्रेन में ४ बजे सोया सो रात ९।। तक सोता ही रहा। थकावट मिट गयी। १२ बजे अंदाज इरोड पहुँचा। दिन में वजन लिया था, १५६ पौंड। इतना कम वजन और

चेहरा निकला सा था कि चिंता हुई। तबीयत ठीक करनी ही पड़ेगी। शायद दक्षिण का खाना मेरे माफिक नहीं आता।

कारपाडी, मद्रास

२८ अगस्त : सुबह ५ बजे कारपाडी पूगा। रात ट्रेन में नींद खूब अच्छी तरह आयी थी। ६ बजे मिल में गया। ढाई मील घूमा। मिल देखी, नफा अच्छा रहेगा। मूंधड़ा आदमी ठीक है। ऑयल मील चलाने की जँचती है। ९ बजे सबसे वेलोर आ गया। अच्छा टाउन है। वहाँ कई मारवाड़ियों से मिला जो दक्षिण के ही हो गये हैं। ११ बजे वापिस लौटा। खाना खाया, तीन तरह का साग, खीर और फुलके। पाँच दिन बाद, वास्तव में यहाँ अच्छा खाना मिला। दो ऑयल मिलें देखीं थीं, कमती जँची। १ बजे ट्रेन चली। ३॥ बजे मद्रास पूगा। एयर ऑफिस गया। रात की टिकट हो गयी। चिंता मिटी। फिर उसमान अली खान एम० पी० के ऑफिस और घर गया। ४ घंटे उनके साथ था। अच्छे आदमी हैं। तमिलनाडु की राजनीति के बारे में भी बात हुई। उन्हें मेरी बात जँची कि कांग्रेस का काम पार्टी लेवल पर गाँवों में कमती है। उन्होंने बताया कि कड़गमवाले बढ़ा लेंगे। द्रमुक का प्रभाव साधारण लोगों में बढ़ रहा है। सिनेमा इनके प्रचार का अच्छा माध्यम है।

कलकत्ता

२९ अगस्त : ६॥ बजे सुबह प्लेन से कलकत्ता पूगा। गंगा जी गया, तेल मालिश कराया, स्नान किया। १० बजे ऑफिस पूगा। सारी बातचीत की। कारबार अच्छा चल रहा है। शाम को बहिनें राखी बाँधने के लिये आयीं।

३० अगस्त : सुबह उठकर एयर पोर्ट गया। पुरुषोत्तमजी सराफ साथ में थे, कांता को भी ले लिया। जी०डी० बिन्नानी विलायत जा रहे थे। वापस ऑफिस आया। किशन लाल जी खेमका मिले। सोहन बाबू के बारे में बातचीत हुई। राजस्थान में शुगर फैक्टरी करने का विचार है। उधर गन्ने की खेती अच्छी होती नहीं, शायद दिक्कत आ सकती है। राजू की पढ़ाई ठीक चल रही है।

मथुरा

२ सितम्बर : सुबह कानपुर में आँख खुली। डब्बा अच्छा मिल गया था। साथ में डा० दामोदरन (आसनसोल कोल माइंस) थे। २॥ बजे मथुरा पूगा। पिता जी और मालचंदजी स्टेशन पर आये थे। बारिश बहुत थी। मोटर लेकर हरचंदराय जी के लिये ४ बजे भजनाश्रम पूगा। साधारण सी रहने की जगह है। ९२ वर्ष के वृद्ध पाटोदियाजी इसका काम सम्हालते हैं। ज्वालाप्रसाद जी से मिला, वासदेवजी से भी। रास देखा, साधारण सा था। पिता जी राजी हैं।

नयी दिल्ली

३ सितम्बर : ११ बजे पार्लियामेंट गया। रद्दी-सा सवाल था, कोई खास नहीं। कई आदमियों से मिला। एक-दो सभा में गया। शाम को उमर भाई का फोन आया, रात में ९ बजे आयेंगे फैक्टरी की बात करने के लिये। पार्लियामेंट में इस बार दम्मानी जी आगे बढ़ गये हैं। आज मन में एकाकीपन फिर महसूस करता हूँ। ऐसा क्यों?
४ सितम्बर : कसरत प्रायः रोज करता हूँ। स्वास्थ्य कुछ अच्छा है। डेढ़ मील घूमा। अकेले घूमने से विचार-शक्ति बढ़ती है। सुबह ९॥ बजे पार्लियामेंट चला गया। १० बजे एक्जीक्युटिव की मीटिंग थी। मैं एक शब्द भी बोला नहीं। मुझे कहना तो बहुत था परंतु लोगों को बुरा लगता, आलोचना में कोई साथ देता नहीं, फजूल बुरा बनना पड़ता। कासलीवाल, रंगा और डा० सुब्बाराव बोले। मनु भाई से बात करने की सारे दिन चेष्टा की परंतु न हो सकी। शाम को उमर भाई के साथ दो-तीन जगह मिनिस्ट्री में गया। काम में देरी दिखती है।

५ सितम्बर : ७ बजे मनु भाई के घर गया। तख्तमल जी जैन मिले। अच्छी जान-पहचान हुई। मनु भाई ने बहुत अच्छी तरह बातचीत की। उमर अली को सारी बात बता दी। ९। से ११ बजे तक सतीशजी अग्रवाल के घर गया। काफी खराब हालत है इन लोगों की, खाली नाम के मिनिस्टर हैं, पावर वगैरह है नहीं। श्री भगत का फोन था। बात नहीं कर पाया।

६ सितम्बर : बंबई से भाई जी का फोन था, बातचीत हुई। दिन में गंगाबाबू, तख्तमल जी, राधाचरण जी शर्मा, श्री जगन्नाथ पहाड़िया आदि से मिला। सुबह श्री बलीराम भगत तथा नवीन जी के यहाँ गया था। नवीन जी ने कहा पार्लियामेंट में आने पर वे अब फील करते हैं जैसे कुछ करने को रह नहीं गया। एक प्रकार का आलस-अवसाद बढ़ता जा रहा है। मैंने कहा कि फिर से 'नवीन' हो जाइये। उत्तर दिया, अब बहुत देर हो गयी।

सरदार शहर

१३ सितम्बर : ९ बजे सुबह सरदार शहर पूगा। रतनगढ़ में दौलतराम जी मिल गये थे। स्टेशन पर उसको लेने ४०-५० आदमी आये थे। लोग डिप्टी-मिनिस्टर, मिनिस्टर की इज्जत करते ही हैं। सभी मन में कुछ आशा लिये रहते हैं, स्वाभाविक है। घर आया। स्कूल में फंक्शन था। काफी लोग थे। सुखाड़िया जी और कुंभाराम जी आये थे। उनके साथ ही ६ बजे चूरू पूगा। चूरू की सभा में अच्छा नहीं बोल सका, खेद रहा। बड़ी सभा थी, कुंभाराम जी ने सहारा लगा दिया। फिर भी दुख तो था ही बोलने में त्रुटि रह जाने का। अभ्यास बढ़ाना चाहिए। सुखाड़िया जी की जीत निश्चित सी है। सरदार शहर आना एक तरह बहुत अच्छा रहा।

झूंझनूं, मुकुन्दगढ़

१४ सितम्बर : सुवह झूंझनूं पूगा। मातादीन साथ में थे। स्टेशन पर काफी लोग आये थे। भागीरथ जी नहीं पूगे। दिन में मीटिंग हुई। मैं भी बोला, शायद सबसे अच्छा। लोगों ने पसंद किया। पेशाव की तकलीफ तो थी। सुवह वंद हो गया। अस्पताल में साउंड ली, पास नहीं हुई, परंतु थोड़ा-थोड़ा पेशाव उतरा। शांति मिली। शाम को मोटर से मुकुन्दगढ़ रवाना हो गया।

मुकुन्दगढ़, सीकर

१५ सितम्बर : कसरत की। गाँव में गये। लोगों से बातचीत की। भोजन किया। १२ वजे हरलाल सिंह जी आ गये। १ वजे जीप से चले। ४ वजे सालासर से ६ मील दूर जीप का एक्सिडेंट एक पसेंजर वस से हो गया। भागीरथ जी को ज्यादा चोट लगी। वहुत मुश्किल के वाद रात में १०॥ वजे सीकर पूगे। वहाँ उपचार हुआ। सारी रात तकलीफ पायी, वड़ी चिंता हो रही हैं। मन में उदासी है। वद्री नारायण जी के भी चोट लगी है।

सीकर

१६ सितम्बर : सुवह से आने-वालों का ताँता लगा रहा। भागीरथ जी एक तरह से वेहोश थे। सोढानी जी को भी ज्यादा चोट आयी थी। ११ वजे सव लोग गाड़ियों में वैठकर जयपुर चले। रात भर का जागरण, चिंता, दुख, सर चकरा रहा था। नींद आ गयी। अच्छा हुआ, सर हल्का हुआ। ५ वजे जयपुर हॉस्पिटल गये। काफी लोग थे। रात में भागीरथ जी के प्लास्टर वाँधा गया। ढाई महीने लग जायेंगे। वड़ी चिंता हुई। वहुत ही खराव मुहूर्त से आये थे।

जयपुर, नयी दिल्ली

१७ सितम्बर : सुवह पन्नावावू को फोन किया। स्टेशन गया। टी० डी० कानोड़िया को ले आया। भागीरथ जी वैसे ठीक हैं, दर्द तो है ही। ८ वजे शाम को दिल्ली पूगा। पैरों में जूते नहीं थे। यात्रा खराव-सी रही।

१८ सितम्बर : सीकर से वात की। दर्द अभी भी है। दिन में लोगों ने दुर्घटना के वारे में पूछा। हरेक से वही वातें दुहरानी पड़ी। नत्थु केडिया मेरे पास में हैं। डी० एल० जाजोदिया और कई लोग आये हैं। रात १० वजे महामाया वावू आये।

१९ सितम्बर : एकरकम अपनी चोट का दर्द भूल-सा गया था। आज सुवह दर्द ने परेशान किया। ७ वजे श्री महावीर त्यागी के गया। उनका लेख पढ़ा, अच्छा था। १०॥ वजे हरदेव सहाय जी खाना खाने आये। डा० भार्गव से सलाह ली, अच्छी रही। १२ वजे पार्लियामेंट आया।

जयपुर

२० सितम्बर : सुबह प्रभुदयाल जी के साथ भागीरथ जी को देखने गया। पहले से कुछ आराम-सा लगा। ४ बजे सुखाड़िया जी के घर सभा थी। ७२ एम० एल० ए० आये. काफी उत्साह लोगों में था। मैं भी बोला, अच्छा बोला। संतोष हुआ। ८ बजे मीटिंग से अस्पताल आया, साथ में सुखाड़िया जी थे। भागीरथ जी की तबीयत आज अच्छी है। परमात्मा उन्हें जल्दी ठीक कर दें। रात में पीरामल जी के मकान में सोया।

सीकर

२१ सितम्बर : दिन में २ बजे तक भागीरथ जी के पास अस्पताल में था। उनके दर्द की सीमा नहीं थी। कलकत्ते से डा० चंद्रा आये। उन्होंने प्लास्टर तोड़ने कहा। ३ बजे स्पेशल हवाई जहाज से कलकत्ते के लिये रवाना हो गया। सोढानी जी को काफी चोट आयी थी। आज खून आ रहा है। सब लोग ९ बजे की ट्रेन से चले गये। मैं रह गया। रात में १० बजे तक सोढानी जी के पास था। १२।। बजे की ट्रेन में दिल्ली के लिए बैठा।

नयी दिल्ली

२२ सितम्बर : सुबह ७।।। बजे पूगा। घर आया। दिन में कई कमिटियों में गया। खजांची होने से कई स्टैंडिंग कमिटियों में जाने का मौका मिल जाता है। दिल्ली में मन कुछ उचाट सा हो गया है। चोट का कुछ असर भी सर पर है। कलकत्ते वालों को तथा हरचंद राय जी को चिंता-सी हो रही है।

जयपुर, नीम का थाना

२३ सितम्बर : सुबह ६ बजे पूगा। सीधा चूड़ीवाल जी के गया, स्नान वगैरह किया। मुझे थोड़ा संकोच महसूस हुआ। ११ बजे ओंकार जी के साथ बातचीत हुई। सुबह काका साहब के घर दूध पिया। २ बजे नीम का थाना पूगा। खाना ५ बजे एक मीणा के यहाँ खाया। अच्छा नहीं था। एक बड़ी सभा थी। मैंने भी भाषण दिया लोगों को पसन्द आया। पार्टी में रहने के कारण सरकार की आलोचना बचा कर करनी पड़ती है। मन में कैसा सा होता है। लोग इतने भावुक होते हैं कि सांत्वना की बातें और भविष्य के सपनों में डूब जाते हैं। राजनीति वाले इसका पूरा फायदा उठाते हैं। भीखा भाई मीणा साथ में था। ज्ञानचंद जी वगैरह को संतोष हुआ। जहाँ भी जाता हूँ, रुपयों की समस्या बनी ही रहती है। जयपुर की राजनीति में खास परिवर्तन आनेवाला नहीं है।

नयी दिल्ली

२५ सितम्बर : स्टेशन से ढाई मील पैदल चलकर घर आया, ६।। बजे। १० बजे स्टील की मीटिंग में गया। मैंने काफी पार्ट लिया। १२। बजे कामर्स की मीटिंग में गया।

थोड़ा बोला भी। कुछ प्रश्न भी पूछे। दिन भर मीटिंग, मिनिस्टरों से मिलना; थकावट सी आयी। ट्रेजरर होने से बहुत जिम्मेवारी का काम आ जाता है, परमात्मा ठीक-ठीक पार लगा दें। २॥ बजे इला पाल-चौधरी के यहाँ गया। पंतजी, जगजीवनराम, लाल बहादुर शास्त्री, केसकर आदि सभी थे। वहीं श्री नस्कर तथा जगजीवन रामजी से टाइम कर लिया। १०॥ बजे घर आया, डा० सत्यनारायण सिंह आये हुए थे।

२६ सितम्बर : ६ बजे सुबह उठा। अस्वस्थ सा लगा। किताब वगैरह पढ़ता रहा। ७ बजे तेल मालिश करा के स्नान किया। दो तीन जगह मिलने गया मि० राव के साथ। रात में भाई जी का फोन था। मियां फैक्टरी के लिये नट गया है। थोड़ी चिंता हुई। श्रीमन जी के घर गया, स्पीकर के घर गया। १२॥ बजे सतीशजी के गया। २ बजे बाबू मैथिलीशरण जी के साथ प्रेस देखने गया। ५ बजे श्री नस्कर के गया। अच्छी तरह से बातचीत की। ६ बजे घर वापस आ गये। कुछ पुस्तकें पढ़ीं। शाम को मैथिली शरण जी, गंगा बाबू, नवीन जी, डा० नगेन्द्र खाना खाने आये। अच्छी गोष्ठी रही। परन्तु इन लोगों के जाने के बाद फिर मन उड़ा-उड़ा सा हो रहा है।

२७ सितम्बर : आज लोकसभा का अधिवेशन समाप्त है लोग घर जा रहे हैं। मेरा घर कहां? सीकर, कलकत्ता सरदार शहर दिल्ली, जसीडीह? कहाँ जाऊँ? मैंने सीकर जाने का प्रोग्राम बनाया। यह मेरा कार्य-क्षेत्र है, एक रकम घर ही। शाम को ५। बजे कपड़े की डिबेट पर आधा घंटे बोला था, अच्छा बोल सका।

सीकर

२८ सितम्बर : सुबह सीकर पूगा। दिन में खातियों की सभा थी। २५०) रुपये मुझे भी देने पड़े। मन तो नहीं था। इस तरह रुपये इकट्ठे करने से ठोस काम नहीं होगा। देना और लेना दोनों ठीक नहीं परन्तु उपाय भी नहीं। आजकल काम का आधार रुपयों के बिना बनता नहीं। सभा में मैं भी बोला। ठीक रहा। रात में बजाज भवन आकर सो गया।

कलकत्ता

३० सितम्बर : दमदम ७ बजे पूगा। बिरजू आया था। खाना खाकर ऑफिस गया। लोगों से मिला। फिर बी० एन० इलियास वालों से मिला। भागीरथ जी के घर सुबह और रात दोनों टाइम गया। कलकत्ते एक महीना बाद आया हूँ। अच्छा लगता है। तबीयत जरूर कुछ कमजोर है। रुपयों की टान है।

२ अक्टूबर : भागीरथ जी के यहाँ रोज २ बार जाता हूँ। तबीयत उनकी ठीक नहीं है। शायद और भी देर लगेगी। जे० टामस में गया था। लडलौ में कोई २००००) रुपयों का क्लेम आ रहा है। बसंती के घर गया। उसे पीलिया हो रहा है।

५ अक्टूबर : रामेश्वर जी नोपानी को कल रात में पकड़ लिया, शूगर आर्डर कंट्रोल पर। ५०००) रुपये की जमानत पर छोड़ा। सुबह मैं और एस० एन० उनके घर गये।

शाम को ५॥ बजे स्टेशन गया। मेहमान लोग आये। अरुमुगम और महालिंगम कल सुबह आये। आज सुबह गंगाबाबू आये, मैं स्टेशन नहीं जा सका था। ८॥ बजे उनसे मिला। रात में जे० पी० ९। बजे प्लेन से आये।

९ अक्टूबर : सुबह सब मेहमान चले गये, खुश थे। मन में सोचता हूँ, इतने आदमियों के ठहरने से घरवालों की साधारण जीवन-चर्या में हर्ज पड़ता है। परंतु मेरा तो स्वभाव-सा है। सामाजिक और राजनीतिक जीवन में इससे बचा नहीं जा सकता। कुछ तो आपसी स्नेह और कुछ व्यवहार को भी देखना पड़ेगा। भागीरथ जी के गया, उनकी तबीयत ठीक नहीं है। यहां से जल्दी ही जाने का विचार कर रहा हूँ।

जसीडीह

१३ अक्टूबर : सुबह ५ बजे उठा। बारिश आ रही थी। तीन मील घूमा, बिना जूतों के। जुकाम चला गया, अपने आप। खाने के पहले २ मील और घूमा। प्राकृतिक चिकित्सा-केन्द्र गया। एक घंटे तेल मालिश करायी। १०॥ बजे स्नान किया। तबीयत ठीक मालूम देती है। बिरज़ू वगैरह आये।

रतनगढ़, फतहपुर

१६ अक्टूबर : सुबह ६ बजे उठा। एस० एन० के साथ प्लेन पर आया। वाइफ काफी नाराज मालूम देती थी। परंतु तंदुरुस्ती देखूं या काम? पिछले तीन दिनों में जसीडीह रहने के कारण तबीयत काफी ठीक हो गयी। ६॥ बजे प्लेन दमदम से उड़ा। साथ में बी० पी० खेतान, झुनझुनवाला जी वगैरह थे। १० बजे दिल्ली पूगे। चेष्टा शुरू कर दी। दौड़-धूप की। आर० पी० वहीं थे। वे मूर्ति से मिले। उसने कहा, हो जायेगा।

१७ अक्टूबर : रात में कांस्टिच्यूशन हाउस में सोया, २) रुपये लगे। बहुत ही सस्ता और अच्छा है। महावीर त्यागी जी के गया, फिर उनके साथ फिरोज गांधी के। उनकी तबीयत ठीक है। वहाँ से १०॥ बजे बनारसी बाबू के पास गया। उनका दामाद पागल हो गया है। दुर्भाग्य की बात है। कार मैंने गैरेज से निकाल ली थी। दौड़-धूप में सुविधा रही। मकान में पूरी झंझट-सी हो रही है। विवाह वाले अभी भी हैं। नोपानी जी का मामला ठीक हो जायगा, ऐसी आशा है।

१९ अक्टूबर : सुबह रतनगढ़ पूगा। रात में एयरकंडीशंड में प्रायः २१) रुपये बेशी लगे। मौसम यहाँ अच्छा है। १ बजे सेठ गोविंददास से मिला। 'सरस्वती' देखी, मेरा लेख आया है। अच्छा छपा है। जीप से रवाना होकर ४॥ बजे फतहपुर पूगा। साथ में हरचंदराय जी वगैरह थे।

जयपुर

२१ अक्टूबर : सुबह घूमने गया। ढाई-पौने तीन मील घूमा। फिर चंदनमल जी बैद के गया। १० बजे सुखाड़ियाजी के गया। एक घंटे था। उनसे बातचीत की।

खुश थे। ऐसा मालूम होता है, सुखाड़िया जी निश्चित रूप से जीत जायेंगे। जयपुर आना अच्छा हुआ। सबसे मिलना भी हो गया।

बम्बई

२२ अक्टूबर : बम्बई सुबह १० बजे पूगा। मदन स्टेशन पर था। उसने मालचंद जी के शरीरांत का कहा। मन बहुत ही दुखी हुआ। घर आया। भाई जी वगैरह उदास थे। दो दिन बाद कलकत्ते जायेंगे। दिन भर मिलने वाले आते रहे। माँ जी और बिरजू कलकत्ते पूग गये हैं। मैं भी मंगलवार को पूगूंगा। भाई जी ने हैदराबाद जाने की मंजूरी दे दी है।

हैदराबाद

२५ अक्टूबर : सुबह ८॥ बजे ट्रेन से पूगा। स्टेशन पर लोग मिल गये। मोटर से मलयपल्ली आये। ठहरने की अच्छी जगह थी। राजस्थान से मैं तथा कमलनयन जी दो ही थे। ९॥ बजे मीटिंग में गया। ढेबर भाई और श्रीमन जी सुबह मिल गये थे। लाल बहादुर शास्त्री जी तथा आसाम के चीफ मिनिस्टर के अलावा श्री गोपाल रेड्डी, के० एन० सिंह, अजित प्रसाद जैन आदि से मुलाकात हुई। १ बजे रिक्शा से मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय में गया। यहाँ दो बजे तक था, काफी लोगों से मुलाकात हुई। पचास-साठ लोगों का सहयोग था। ३ बजे बाजार घूमने निकला। चार मीनार और दूसरी जगहें देखीं। हैदराबाद दक्षिण भारत के शहरों से अलग-सा लगता है, शायद मुसलमानी शासन में सैकड़ों साल रहने के कारण। अच्छा बड़ा शहर है, और भी बढ़ेगा। हेडा के साथ ५॥ बजे स्माल इंडस्ट्रीज में गया। आज के भाषणों में पंत जी का अच्छा लगा था। मारवाड़ी सभा की मीटिंग में भी गया। ऐसा लगता है, अब सामाजिक या जातीय संगठनों को कोई नया प्रोग्राम उठाना चाहिए।

२६ अक्टूबर : सुबह घूमा नहीं, थोड़ी सी कसरत की। ८। बजे फूड मिनिस्ट्री में गया। बीस-पचीस आदमी थे, पीछे पंडित जी आये। ९ बजे जेनरल मीटिंग थी। बस में बैठकर गोलकुंडा का किला देखने गया। छह मील पर था। सात-आठ सौ वर्ष पुराना बड़ा किला है। बहमनी शासकों के बाद यहाँ कोई शक्तिशाली रहा नहीं। अकबर ने इसे जीतने में पूरा जोर लगाया था। काफी इंटरेस्टिंग इतिहास है। अच्छा लगा। देख-रेख की कमी खटकती है। वहाँ से रिक्शा में बैठकर सीधे मीटिंग में आया।

ट्रेन

२७ अक्टूबर : सुबह वर्धा से पहले स्टेशन पर सी० बी० गुप्ता, चतुर्भुज जी शर्मा, यू० पी० सी० सी० प्रेसिडेंट दरबारी लाल जी तथा श्री राममूर्ति यू० पी० मिनिस्टर से जान-पहचान हुई। बहुत सी बातें हुईं, काफी खुलकर। गुप्ता जी की सूझ-बूझ का मुझ पर प्रभाव पड़ा। इनमें लगन और उत्साह है परंतु लगता है, राजनीतिक दलबंदी से वे भी काम कर नहीं

पा रहे हैं। रात में ११ वजे रायगढ़ आया। वहाँ अमर सिंह, एम० पी० मिले। ट्रेन में दिन में 'गर्म राख' पढ़ता रहा। अच्छी है। अखबार कहीं नहीं मिला।

कलकत्ता

२८ अक्टूबर : १२॥ वजे दिन में हवड़ा पुगा। १ घंटा स्टेशन पर खड़ा रहा। हैरानी हुई। गलती मेरी थी। तार साधारण दिया था। १॥। वजे घर पुगा। ४ वजे वाई के घर गया। काफी शोकपूर्ण वातावरण था।

१ नवम्बर : कलकत्ते में थोड़ा पढ़-लिख रहा हूँ। थोड़ी देर ऑफिस में था। रात में गर्ग बालकृष्ण आया। साहित्य और राजनीति पर काफी चर्चा रही। वह संस्मरण लिखने को कहता है, परन्तु कब लिखूं? अभी तो विदेश यात्रा के लेख ठीक करने हैं। पार्लियामेंट के लिये भी बहुत तैयारी करनी पड़ती है।

४ नवम्बर : तबीयत ठीक नहीं लगती। रात में बिना खाये १०॥ वजे सो गया था। भागीरथ जी के गया। वहां जे० पी० आये। फिर घर आकर १०। वजे से एक घंटा जे० पी० के पास रहा। वहाँ मैंने पंडित जवाहरलाल जी की कड़ी आलोचना की। बात सही भले ही हो पर यह उचित नहीं था, मैंने महसूस किया। आगे से सावधान रहूँगा। मन कैसा हो गया। नेशनल लाइब्रेरी चला गया। वहाँ बैठकर काफी देर तक पढ़ता रहा।

११ नवम्बर : कोई खास काम नहीं। लोगों से मिलता-जुलता हूँ। तबीयत उचाट सी रहती है, चक्कर भी आते हैं। लोग मिलते हैं, कहते हैं, कमजोर दिखाई देता हूँ। भागीरथ जी की तकलीफ उसी तरह की है। आज पाट पर कुछ स्टेटमेंट तैयार कर भेजे।

१५ नवम्बर : दिन में सारे दिन व्यस्त रहा। शाम को भागीरथ जी से मिला। दिन में वसंती से, मनीवाई से मिलने गया। वसंती बीमार है, कुछ ज्यादा ही है। मन में दुःख सा हुआ। नोपानी जी की गद्दी में गया। चाय-बगीचा लेने की बातचीत चल रही है।

नयी दिल्ली

१७ नवम्बर : रात में सर्दी काफी थी। सुबह थोड़ा सा घूमा। शाम को एस० पी० जैन की पार्टी में गया। सुखाड़िया जी से मिला। बातचीत हुई। उन्होंने कुछ रुपयों की जरूरत बतायी। व्यवस्था करनी होगी। कमलनयन जी बजाज से मिला। रात में ११॥ वजे तक के० डी० चूड़ीवाल के घर पर था। प्रभुदयाल जी भी थे। वहां श्रीमन जी, मदालसा जी तथा और लोग मिल गये। बी० पी० सिन्हा भी मिले। राजस्थान की इकोनॉमी के लिये कुछ अच्छी प्लानिंग और प्रोग्राम की बात चली परंतु फाइनेंस पर आकर रुक गयी।

१९ नवम्बर : पार्लियामेंट में बहुत थोड़े क्वेश्चन हैं, इससे निराशा है। आज एक साधारण सा सवाल था। झरियावाले अग्रवाल, मातादीन खेतान, और नोपानी जी आये

हुए हैं। और भी लोग हैं, काफी भीड़ सी हो रही है। दिन में नोपानी जी के साथ कई जगह गया, फिरोज गांधी जी से मिला। महावीर जी त्यागी के गया वहाँ जोगेंद्र सिंह जी से एक घंटे बातचीत हुई। दिल्ली में मन तो लग गया है, तबीयत भी ठीक होने लगी है। ज्यादा मेहमानों के आने से पुलकित को तकलीफ हो रही है।

२० नवम्बर : कुछ लोग तो बेकार ही आते हैं, दिन भर शहर घूमते हैं, बच्चे-पत्नी को ले आते हैं, जाने का नाम नहीं लेते। जिनके लिये जगह चाहिए, उन्हें ठहरा नहीं पाता हूँ। अब संकोच की आदत सुधारनी होगी। कलकत्ता नन्दू और कांता से बात हुई। मेरा जाना संभव नहीं होगा। मन में विचार आता है, व्यापार छोड़ राजनीति में आया, परन्तु इसमें ज्यादा उलझन है। झूठ ज्यादा बोलता हूँ। इससे बचकर रहना चाहिए परंतु यह कैसे हो? मुरारजी भाई से राजस्थान मिनिस्ट्री की बात कही। कहना उचित नहीं था। नोपानी जी का काम एक रकम हो गया है।

२१ नवम्बर : तबीयत अच्छी है, मौसम भी ठीक है, ठंड पड़ने लगी है। सुबह नोपानी जी और मातादीन जी के साथ ३ मील घूमा। फिर मोटर ड्राइव करके श्री अशोक मेहता के पास गया। वहाँ से ८॥ बजे के० सी० जैन, दरयागंज के पास नोपानी जी के साथ लीगल ड्राफ्ट के लिये गया। वहाँ से बी० बी० वर्मा के पास, फिर त्यागी जी के पास। त्यागी जी ने बी० बी० घोष को फोन किया। उन्होंने कहा कि विथड्रॉल का नोटिस चला गया है। खुशी हुई।

२८ नवंबर : कलकत्ते से एस० एन० का फोन था, भाई जी बंबई से २ ता० को यहाँ पूग रहे हैं। राजलदेसर जायेंगे। पार्लियामेंट में क्वेश्चन में भाग लिया। पाँच-सात मिनट बोला भी। साधारणतया ठीक बोला। शाम को कई जगह गया। बारिश से ठंढ हो गई है। रात में १० बजे सोया। घर में इतने लोग हैं कि भीड़-सी है। पढ़ना-लिखना ठीक हो नहीं पाता।

१ दिसंबर : बुखार पिछले तीन दिनों से है। तबीयत काफी सुस्त है। खाना भी नहीं खाया। शरीर टूटा पड़ता है। पार्लियामेंट थोड़ी देर के लिये गया था। नोपानी जी आज चले गये। दिन में डाक्टर की दवा ली।

४ दिसंबर : भाई जी रविवार को आने की कह गये हैं। बुखार तो आज नहीं है परंतु कमजोरी है। नवभारत टाइम्स में कल मेरा स्केच निकला, वैसे अच्छा है। दिन में पार्लियामेंट में एक्सपोर्ट पर अंग्रेजी में बोला। मुझे संतोष हुआ। रात में अच्छी तरह याद कर लिया था। शाम को गंगाबाबू, मैथिलीशरणजी, श्री अशोक मेहता, डा० रामसुभग सिंह, श्री थिरानी, श्रीमती थिरानी घर पर आये। श्री नारायण जी चतुर्वेदी भी थे। रसोई अच्छी बनी थी।

१८ दिसंबर : सुबह वैद्य जी को दिखाया। उन्होंने बताया कि आँतें कमजोर हो गयी हैं, ३ महीने पर्पटी लेनी पड़ेगी। १० बजे एक मकान देखने गया, जँचा नहीं। ४ बजे बिन्नानी जी के साथ पारख से मिला, कांता के बगीचे के लिये। बातचीत की। कल जल्दी में ऑफर दिया, यह मेरी गलती थी। तबीयत ठीक नहीं है। चक्कर आते हैं।

जसीडीह

२४ दिसंबर : सुबह जल्दी ही उठा तीन मील घूमा। नीरा नहीं मिली। नीरा से पेट ठंढा रहता है। छाछ पी ली। पढ़ता-लिखता रहा। महादेवी की 'स्मृति के कण' इन दिनों पढ़ी। महादेवी जी तो सचमुच दीप-शिखा हैं। स्वयं जलती रहीं पर साहित्य को, जनमन को आलोकित कर दिया। कुछ पत्र भी लिखे।

२५ दिसंबर : सुबह ५ बजे उठा। थोड़ी देर 'शेली' की कविता पढ़ता रहा। फिर घूमने निकल गया। वापस आकर नीरा पी, छाछ भी। पत्र लिखे। कुछ क्वेश्चन तैयार किये। वैद्य जी ने बताया है, स्नायु-दुर्बलता है। डाक्टर और वैद्य अलग-अलग बताते हैं। मेरे में मन की दुर्बलता है पर इस पर काबू कैसे रखें? अनियम कर बैठता हूँ।

२७ दिसंबर : १४ पत्र लिखे। दम्मानी जी की चिट्ठी आयी, रतनी के २५००) रुपया फायदा रहा। मन में खुशी हुई। सीतारामजी केडिया के बड़े मजाक की चिट्ठी आयी। आज सुबह छह मील घूमा, थकावट नहीं आयी। वजन एक मन पौने अड़तीस सेर है।

३० दिसंबर : रात दो-तीन बार उठा। जल्दी सोने से नींद शायद उचटी। थोड़ी देर पढ़ता रहा। फिर सो गया। ५ बजे उठा, ३ मील घूमा। नीरा और छाछ पी। थोड़ा मक्खन खाया, मटर भी। शेक्सपीयर की 'टेम्पेस्ट' पढ़ी। 'ऑयल' पढ़ रहा हूँ, काफी इंटरेस्टिंग है अमेरिकन लेखकों की शैली और सबजेक्ट अलग ही हैं। निश्चित रूप से ये एक नया मोड़ ला रहे हैं। शाम को बसंती बेहोश हो गयी। ६ बजे तक पोद्दार जी आये। मन में एक उदासी सी आ गयी। इतने दिन यहां ठीक रही अब यह कष्ट कैसे शुरू हुआ? रात में खाना नहीं खा सका।

३१ दिसंबर : दिन में दो बार बसंती बेहोश हो गयी। बहुत चिन्ता लगी है। कमजोर हो गयी है। सुबह भवन में उपचार कराया था फिर शाम को बेहोश हो गयी। रात में पुष्पकुमार का फोन था, उसे सारी हालत बता दी।

स्मरण पृष्ठ

१९५८ के वर्ष में एक रकम ठीक रहे। जनवरी में पिता जी बीमार हुए, काफी। सब मिलकर ९ लाख कॉटन मिल, ७ लाख लुकवा, ४ लाख कठपाडी फैक्टरी, १ लाख ५०

हजार वेजिटेवल, ५० हजार एन० डब्लू० सी। इस तरह २२ लाख अन्दाज फायदा हुआ। कॉटन मिल की कीमत भी कुछ वढ़ी ही है। पार्लियामेंट में मई तक तो वहुत अच्छा रहा। पीछे भी एक तरह से ठीक ही रहा। प्रतिष्ठा कुछ वढ़ी। हेल्थ, फरवरी में दो मन छह सेर था, अक्टूवर में एक मन साढ़े पैंतीस सेर रह गया था। काफी कमजोरी आ गयी, इस हिसाव से खराव रहा। कांस्टिच्युएंसी में भी ज्यादा नहीं जा सका। इसलिये लोगों की शिकायत रही। लिखने-पढ़ने का काम भी एक रकम कम ही कर सका। मालचंद जी का देहांत हो गया। एन० डब्लू सी का एक चाय बगीचा ७ लाख ९० हजार में ले लिया।

१९५९

जसीडीह

१ जनवरी : नया दिन जसीडीह में विता रहा हूँ। वसंती और वाइफ हैं। राजा कलकत्ते हैं, नन्दू वंबई है। पिछला वर्ष एक रकम ठीक-सा रहा। रात में 'ऑयल' पढ़ता रहा, अच्छी किताव है।

४ जनवरी : रात में २॥ वजे उठकर किताव पढ़ने लग गया। वसंती की वीमारी से चिन्ता है। इवर मेरे भी तकलीफ है पेशाव की। परमात्मा को ऐसा ही मंजूर है। देवघर गया, डाक्टर से सलाई लगवाई, गया नहीं। पेशाव धीरे-धीरे होता है, वैसे तवीयत ठीक है। रात में अखबार पढ़ता रहा, जूट की थोड़ी तेजी की वात है।

५ जनवरी : सलाई की हर तरह से चेष्टा की। पास नहीं हुई। ऐसा रहा तो पांच-सात दिनों में कलकत्ता जाना होगा। देवघर में डॉक्टर के यहाँ से साइकिल पर ही जसीडीह आया।

६ जनवरी : सुवह ४ वजे उठा। 'ऑयल' पढ़ता रहा, अच्छी किताव है। धन कमाने की धुन कैसी होती है, कितना जटिल जीवन वन जाता है, खुद ही महसूस कर रहा हूँ। जव से जसीडीह आया हूँ, कसरत और शीर्षासन वरावर करता जा रहा हूँ। वसंती की वेहोशी उसी तरह है।

७ जनवरी : वसंती आज और दिनों से ठीक है। मेरे भी पेशाव ठीक आता है। 'ऑयल' आज खत्म कर दी। शाम को रेडियो में शेयरों के भाव सुने, कुछ तेज हैं। रात में हरलालका का फोन आया, ११०० शेयर रूवी के लिये हैं।

११ जनवरी : दिन में दो घंटे ताश खेलता हूँ। किताव पढ़ लेता हूँ। पत्रों का जवाव दे देता हूँ। रात जरूर मुश्किल से कटती है। वहुत तरह के विचार आते हैं। इन दिनों राजनीति के वारे में कुछ सोचता रहा। कांग्रेस में फूट वढ़ रही है। गुटवाजी शुरू हो गयी है। प्रदेशों के चीफ मिनिस्टर एक रकम सूवेदार वन रहे हैं। पंडित जी की हामी और हाजिरी वजाकर अपनी कुर्सी सम्हाले हैं, पर करते कुछ नहीं। नतीजा वुरा होगा। रात में एस० एन० का फोन था, मदन ऑस्टेलिया जा रहा है।

कलकत्ता

१४ जनवरी : मनू भाई के साथ दिन में ग्रेट इस्टर्न होटेल में मिला। शाम को भागीरथ जी के घर उनके साथ गया। दिन में स्टेट ट्रेडिंग कॉरपोरेशन में गया। खास काम तो कुछ था नहीं, परंतु मिलना जरूरी है।

१५ जनवरी : शाम को रामकृष्ण मिशन की मीटिंग में गया, मनु भाई के साथ। सी० एल० वाजोरिया भी थे। मिशन के स्वामी जी से वात हुई। इन लोगों के काम करने का ढंग अच्छा है। अपनी संस्थाएँ इस ढंग से काम करें तो वहुत बड़ी सेवा हो सकेगी। नोपानीजी की गद्दी में गया। उनका केस सुनने कोर्ट में भी।

कलकत्ता

२० जनवरी : छोटूलाल जी सराफ का देहांत हो गया। ६६ वर्ष की अवस्था थी। ८॥ वजे से ११ वजे तक स्मशान में था। पुरानी पीढ़ी के लोग जा रहे हैं। प्रवासी मारवाड़ी समाज को इन लोगों ने काफी आगे वढ़ाया। अव पहले जैसी समस्याएं नहीं हैं, नयी पीढ़ी के लड़के इन वातों को शायद ही समझें। एक वजे आफ़िस गया, एक्सचेंज भी गया। २००० मन पाट २२) ४० पैसे में वेचा। पक्की गांठ का १५०० का काम हुआ। मेरा ध्यान तैयारी पाट पर तो मंदा नहीं है। फाटका मंदा है। जे० टामस काम वंद करने को कह रहा है। दिन में पारीख से मिला।

जसीडीह

२५ जनवरी : आज ताश के खेल में प्राय: २०) रुपया हार गया, ६०) रुपया कल हार गया, एक रकम नशा-सा हो जाता है। दिन में दम्माणी जी का फोन आया, हुगली प्रेस के लिये। रात में एस० एन० ने फाटका २२) ६० पैसा वतलाया। पाट का वाजार गरम वतलाया। हम लोगों के काफी पाट मत्थे है, शायद २०,००० मन तो जरूर होगा। तैयारी पाट मंदा नहीं होगा।

२६ जनवरी : एस० एन० से वात हुई। हुगली प्रेस का काम कांता से विगड़ गया। मन में वहुत ही क्षोभ हुआ। शाम की गाड़ी से कलकत्ते जाने का तय किया। इस वार कुल एक महीना जसीडीह रहा। वजन तो नहीं वढ़ा लेकिन जेनरल हेल्थ अच्छा रहा। घूमना-फिरना, कसरत करना रेगुलर सा रहा, मन लग गया। वसंती की तवीयत ठीक रही। वाइफ भी ठीक है।

कलकत्ता

२९ जनवरी : १ वजे मीटिंग में गया। लाल के० वी० और लालवहादुरजी शास्त्री से वात हुई। २ वजे ग्रेट ईस्टर्न होटेल में लंच में था। फिर एक्सचेंज गया। के० वी० लाल से मेरी वात हुई, खास नतीजा नहीं रहा, ऐसा लगता है।

३१ जनवरी : सुबह ५॥ वजे मोटर से एयरपोर्ट आया, एस० एन० साथ में था। वहां जी० डी० विन्नानी, पी० केजड़ीवाल, नत्थू केड़िया आए थे। प्लेन में कितावें पढ़ता रहा। १०॥ वजे दिल्ली पूगा। १२ वजे तक पार्लियामेंट गया, पार्टी ऑफिस में। वहाँ से विड़ला पार्क २ मील पैदल चलकर गया। विड़ला जी से मिला। मथाई की वात लेकर व्यस्त थे। वहां से श्री महावीर त्यागी जी के घर। वहीं दिल्ली 'टाइम्स' के संपादक भी थे, मथाई की वातें कर रहे थे। फिरोज गांधी भी आये। सन्देश और कलेन्डर उनको दिये।

खाटू-बाय-दांता-रामगढ़-लोसल

३ फरवरी : सुवह खाटू गया लोगों से मिला। वोट हो रहे थे। वहां से वाय गया। ४०) रुपया एक महिला को दिया। वहाँ से रामगढ़ और दांता आया, लोगों से मिला। फिर शाम को लोसल पूगा। खूब डटकर खाना खाया। लोसल से तीन-चार गाँवों का दौरा किया, चुनाव के लिये। जोशी जी साथ में थे, हनुमान ड्राइवर आ गया था, सुविधा रही। थकावट नहीं है।

नेछवा

४ फरवरी : लोसल से सुवह ७ वजे नेछवा पूगा। वहां वोटिंग हो रही थी। ऐसा मालूम दिया कि वैद्य जी हार जायेंगे। सीकर १२ वजे पूगा। दिन भर सीकर में रहा। रात में लोसल चला आया।

रींगस, सीकर

५ फरवरी : सुवह लोसल में उठा, ८-३० वजे नेछवा चला आया। १० वजे पुरोहित जी के खाना खाया। फिर मोटर से रींगस गया, स्कूल देखा। अच्छा वना है। वहां से श्री माधोपुर में लोगों से मिला, ५५०) रुपये दिये। २००) रुपयों की कितावें भी देने को कहा है।

६ फरवरी : ९ वजे सीकर पूगा। स्टेशन के वासे में खाना खाया। तवीयत एक रकम ठीक चल रही है परंतु खाने-पीने की व्यवस्था ठीक नहीं है। पुलकित के साथ चूल्हा नहीं लाया, यह गलती की। रस पी लेता हूँ। वैद्य से दवा लेने का विचार है। कहीं की खवर नहीं है, एक रकम यह ठीक है, चिंता से वचा हूँ।

जयपुर

७ फरवरी : सुवह ट्रेन लेट थी। शिवभगवानजी मालपानी की कार से गया, साथ सांवरमल जी मोर थे। जयपुर चांदी के वाड़े में ठहरा, वहीं स्नान किया और भोजन

भी। सारे दिन का रिक्शा कर लिया और कई लोगों से मिलता रहा। दामोदर जी, हरलाल सिंह जी, सुखाड़ियाजी, वद्रीप्रसादजी, हरिदेवजी जोशी आदि से मिला। शाम को ५॥ वजे की ट्रेन से वापिस सीकर आया। रघुनाथ जी पारीख से जलवोर्ड का हिसाब लिया। १० वजे घर वापिस आया। पता चला कि शिव भगवान जी का हार्ट फेल हो गया। प्रभु की इच्छा। मन कैसा सा हो रहा है।

८ फरवरी : १२ वजे जीप से जोशी जी के साथ रवाना हुआ, कांवट में ठहरा। पंचों से मिला। रामनिवास जी पुजारी खास आदमी हैं। वहां से सिरोही आया। फूलचंद जी शर्मा के यहां नाश्ता किया। ४॥ वजे नीम का थाना पूगा। सवसे मिला। रात में ज्ञानचंद जी के यहां भोजन किया। १० वजे तक वातचीत होती रही।

दिल्ली

९ फरवरी : सुवह ५॥ वजे पूगा। रेवाड़ी से रामकिशनजी एम० पी० का साथ हो गया। कहते थे, आपके काफी क्वेश्चन हैं। घर आकर कागज वगैरह देखे। ७ वजे स्टेशन गया, शिवदत्त महाराज को ले आया। १० वजे पार्लियामेंट गया। ११ वजे से राष्ट्र-पति का भाषण हुआ, मुझे नींद आ रही थी। श्री वहीं श्री मैथिलीशरण गुप्त, नवीन जी, गंगावावू आदि सव मिले। फिर वर्मा साहव के गया। शोभाराम जी, हरलाल सिंह जी से मिला। ५००) रुपये उन्हें दिये।

११ फरवरी : आज दिल्ली की व्हीट प्राइसेज पर मेरा एक साधारण-सा क्वेश्चन था। मातादीन खेतान सुवह आये हैं, मन लग गया है।

१२ फरवरी : कुछ क्वेश्चन और सप्लिमेन्टरी की तैयारी की। कल का मेरा क्वेश्चन अच्छा रहा, पर पब्लिसिटी दूसरों को मिली। शायद मैं प्रभाव नहीं डाल सका। शाम को ढेवर भाई की पार्टी हुई, काफी आदमी थे। रात में मैं० श० गुप्त, रायकृष्ण दास जी, डा० मोतीचन्द, डा० नगेन्द्र जीमने आये। १० बजे तक आपसी गोष्ठी चली। इनके वीच वहुत कुछ सीखने को मिल जाता है। जूट एक्सपोर्ट ड्यूटी को लेकर जो वातें मैंने की थी, उसका कुछ नतीजा नहीं निकला, ऐसा मालूम देता है।

कलकत्ता

१६ फरवरी : आज कई विवाह थे। दिन में ११ वजे मनीवाई के गया। भात भरा। फिर शाम को कई शादियों में गया। भात भरते समय मनीवाई रोने लगी, मेरा भी मन कैसा-सा हो गया था।

१७ फरवरी : १० वजे एयर पोर्ट पर गया, साथ में नत्थू था। वड़े-वड़े सरकारी अफसर भी गये थे। त्यागी जी आये। उन्हें लेकर ११ वजे घर आया। मकान उन्हें पसंद आया। मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं, कमजोरी महसूस होती है। पाट का वाजार मंदा है। ड्यूटी के लिये स्टेट ट्रेडिंग नट गया है। यहां से तार वगैरह गये हैं। रात में दामा के ससुराल गया।

१८ फरवरी : जूट की ड्यूटी गवर्मेन्ट हटाने को नट गयी है। उसके वारे में जूट वेलर्स असोशिएशन की मीटिंग हुई। तार वगैरह दिये गये हैं। मुझसे लोग कई तरह के सवाल करते हैं। व्यापार को ज्यादा वंधन में रखना ठीक नहीं। यह वात जरूर है कि मुनाफाखोरी पर कड़ाई से अंकुश रखना चाहिए परंतु अफसर तो अंकुश हैं, वे झुक जाते हैं। असली कमजोरी यहीं है।

१९ फरवरी : सुवह त्यागी जी के साथ मैदान गया, उनको विक्टोरिया में कई लोगों से मिलाया। लोग खुश हुए। राजनीति के नेता जितना ज्यादा पव्लिक से मिलेंगे उतना ही दोनों के लिए अच्छा रहता है, मैं ऐसा महसूस करता हूँ। त्यागी जी में यह गुण है। भाई जी से वम्वई मिल की वात फोन पर हुई। जनवरी में मिल का नफा १.०५ वताते थे। मन में खुशी हुई। मदन की आस्ट्रेलिया की चिट्ठी है। रामरतन जी कोचर आये थे। उन्हें १५०००) रुपया मेडिकल कॉलेज को चंदा देने का कहा है। त्यागी जी को सुवह मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, टांटिया स्कूल, नोपानी स्कूल ले गये। शाम को छात्र निवास में मीटिंग थी।

२० फरवरी : शाम को त्यागी जी की पार्टी हुई, १२५ आदमी आये। प्रायः सव थे। त्यागी जी अच्छा वोले। कुल २५०) रुपये खर्च हुए परंतु आयोजन अच्छा रहा। रात में त्यागी जी को छोड़ने स्टेशन गया।

दिल्ली

२३ फरवरी : ११ वजे पार्लियामेंट गया, एक क्वेश्चन जूट एंड कॉटन मिल के वारे में अच्छा रहा। जूट ड्यूटी के वारे में मनुभाई आदि से और लाल से वात की। मुरारजी के सेक्रेटरी को लिखा। मेंवरों से वात की। रात में १० वजे नन्दू का फोन आया। फाटका गरम वताया, ड्यूटी के हल्ला पर।

२४ फरवरी : ११ वजे पार्लियामेंट गया। १ वजे घर आ गया। दस मील दूर दिलकुशा में एक जमीन देखने गया, मकान देखने भी। ६ वजे मीटिंग में मुरारजी से वात हुई, अजित प्रसाद जैन से भी वात हुई। ड्यूटी उठती तो लगती है, परंतु शायद कुछ देर भी हो। सुवह दस हजार मन पाट वेचने का तार दिया है। यहां दो दिन में ही तवीयत में कुछ फायदा मालूम देता है। कल का क्वेश्चन अखवारों में अच्छे ढंग से आया था।

२५ फरवरी : ९॥ वजे कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज की मीटिंग थी उसमें जूट पॉलिसी पर मैं ज्यादा वोल गया। काम तो वना नहीं, फजूल में वैर वँध गया। इसको ठीक ढंग से टैकल करता तो अच्छा रहता। दिन में मन में खिन्नता रही। नन्दू को पाट वापस लेने का कह दिया है।

२६ फरवरी : दिन में शर्मा जी आये थे, वीकानेर से इन्कम टैक्स का केस करके, उनसे वातचीत की। १०। वजे एक्जिक्यूटिव कमिटी में गया, पंडित जी भी थे। ११ वजे

पार्लियामेंट गया। क्वेश्चन के लिये प्रिपेयर्ड होकर नहीं जाता हूँ, कैसा ही मालूम पड़ता है। पार्लियामेंट का काम ठीक से नहीं कर पाता हूँ। दिन में इधर-उधर में टाइम लग जाता है। पाट वाले काम को आगे नहीं वढ़ा पा रहा हूँ। चिट्ठियों की ड्राफ्टिंग और टाइपिंग ठीक से नहीं हो रही है।

२७ फरवरी : ११ वजे पार्लियामेंट गया। मेरा क्वेश्चन नहीं था। एक अच्छा सप्लिमेंट था पर किया नहीं। पाटिल से वात की। दिन में चिट्ठी पर तीन ओर मेंवरों से सही करायी। वी० एम० विड़ला से जयपुर वात की। रात में नोपानी जी का फोन आया, उनकी मंशा पाट ड्यूटी देने की है। शाम को श्री महावीर त्यागी से मिला। कागज जूट के दिये। दो दिन लग जायेंगे।

अजमेर

२८ फरवरी : सुवह ९ वजे पूगा। वहां से वस से सर्वोदय नगर गया। कैंप में ठहरा। १२ वजे कच्ची रसोई का भोजन किया। दिन में गर्ग जी के आये। इंदिरा जी का भाषण सुना। ओंकार जी वोहरा भी मिले, और भी कई लोग मिले। गंगावावू और जे० पी० से नहीं मिल सका। शाम को भोजन गर्ग जी के किया। ९॥ वजे की ट्रेन से जयपुर आया। रिटायरिंग रूम में ठहर गया। अजमेर में भीड़ ज्यादा थी, काम कम था।

सीकर

१ मार्च : सुवह सुखाड़िया जी के घर गया, साथ में एस० एन० था। स्कूल के वारे में वात की। वहां से, ८। वजे कार से हरलाल सिंह जी, जोशी जी, सुखाड़िया जी और मैं सीकर के लिये रवाना हुए। ११ वजे पूग गये। दिन में मीटिंग में व्यस्त रहा। तवीयत एक रकम ठीक सी ही है। रात में १०॥ वजे तक मीटिंग में रहा। लछमनगढ़ के कई मित्र आये हैं। कल कार-दुर्घटना में एक कार्यकर्त्ता की मृत्यु हो गयी थी, उसके घर गया था।

२ मार्च : सीकर से १२ वजे सुखाड़िया जी वगैरह को रवाना किया। सुवह वाटर पंप का उद्घाटन किया। सोढानी जी से वातचीत की। ३००) रुपया सांवरमल जी का हिसाव दे दिया। नवलगढ़ में लोगों से मिला। तीन दिनों की यात्रा में काफी लोगों से मिला। आज रामकिशोर जी शर्मा ने जयपुर कांग्रेस के लिये कुछ चंदा माँगा, कुछ करना चाहिए।

दिल्ली

७ मार्च : मातादीन खेतान यहीं हैं। फेडरेशन की मीटिंग चल रही है। कलकत्ते से काफी लोग आये हैं। के० वी० लाल से आज मीटिंग में मिला। जूट वाली झंझट उसी तरह है। मनु भाई से एन० एल० कानोड़िया का टाइम करा दिया, कल सुवह का।

१० मार्च : सुवह ९॥ वजे पार्टी मीटिंग में गया। शायद अच्छा वोला, हिन्दी में वोला चाय पर, जूट पर। ३॥ वजे ए० के० राय फाइनेंस सेक्रेटरी से मिलने गया, जूट की ड्यूटी के वारे में वताया। एस० एन० को फोन किया। शेयरों से पाट का भाव घट रहा

है। शाम को विड़ला जी के गया। ९ वजे तक था, वहीं खाना खाया। एम० पी०, के० के०, जी० डी० से वातें कीं, पी० डी० (हिम्मतसिंहकाजी), भी थे। पार्लियामेंट में आज वोलना शुरू किया परंतु कल के लिये स्थगित रह गया। वजट पर स्टडी कम कर पाया। सहायक का अभाव खटकता है, नहीं तो ज्यादा काम कर पाऊँ।

११ मार्च : सुवह वेणीशंकर जी शर्मा के साथ अशोक मेहता और मैं० श० गुप्त के यहां गया। ९।। वजे लौट कर पार्टी मीटिंग में आया। फिर क्वेश्चन के लिये पार्लियामेंट गया। १२। वजे वजट पर वोला। शायद पहले से अच्छा वोला और अंग्रेजी में वोला। लोगों ने भी पसंद किया।

१३ मार्च : भाई जी का पत्र और फोन था, सूते पर प्रतिवंध हो गया, मेरे क्वेश्चन का हरजा हुआ, मन में खिन्नता आयी।

१४ मार्च : ११।। वजे लाल से मिलने गया। डेढ़ घंटे था। कटिंग एक्सपोर्ट वाली चीज नहीं रह पायी। लाल और रामचंद्रन नट गये। आरविट्रेशन की वात है। नन्दू का पत्र था, शेयरों में घाटा है, पाट में भी। देखा जाय, क्या होता है। शाम को जे० एल० पंसारी और मोहनलाल जी शांडिल्य के पास गया था, आरविट्रेशन की वात करने। घर में रात में १० वजे तक ताश खेलते रहे। कलकत्ते के फोन आते रहे। शायद पाटवाला काम तय हो जाय।

झांसी-चिरगांव

१६ मार्च : सुवह ७ वजे स्टेशन पूगा। गंगावावू और मैथिलीशरण जी भी आ गये थे। २६) रुपया टिकट का वाइफ का लगा। ट्रेन में रामनारायण जी शर्मा वैद्यनाथ वाले भी वैठे थे। ३ वजे झांसी पूगे। सामने मैथिलीशरण जी के सव कोई आये थे। घर गये। फिर ५।। वजे कॉलेज गये। वहां गुप्त जी का अभिनंदन था। मैं भी थोड़ा वोला परंतु ज्यादा अच्छा नहीं वोल सका। वोलना भी प्रतिभा से ही आता है। इसकी मुझमें कमी है। अभ्यास करना चाहिए। वापस आकर मोटर से चिरगांव पूगा। तवीयत ठीक है। दद्दा का वड़ा-सा घर है। संपन्न परिवार है, काफी वच्चे हैं, आपस में वहुत प्रेम है।

चिरगांव-ओरछा-झांसी-ग्वालियर

१७ मार्च : रात में खूव नींद आयी थी। ९ वजे स्नान वगैरह करके वांध देखने गया। अच्छी सुंदर जगह है। वहां से ११ वजे ओरछा पूगा। गंगावावू का विस्तर गुम गया। ओरछा डेढ़ घंटे देखा। वास्तव में सुंदर और रमणीक स्थान है। वुंदेलों का इतिहास सामने आ जाता है। महाराज छत्रसाल, रानी सारंधा, वाजीराव मस्तानी भी यहीं की थी। वेतवा नदी के किनारे पुराने किले, राम मंदिर आदि देखकर मन में ऐसा होता है क्यों मनुष्य धन और यश के लिये जीवन नष्ट करता है? समय सव को मिटा देता है। जो न मिटा सके उसके लिये कुछ करना ही मनुष्य के लिये उचित है। मन में अपने

ऊपर हँसी भी आयी, सोचता हूँ, पर करता नहीं, कर नहीं सकता। शायद संस्कार वैसे नहीं हैं। २॥ वजे खाना खाकर दद्दा की कोठी पर वापिस आ गया। झांसी से कार में ४। वजे चला, ७॥ वजे ग्वालियर सीतारामजी खेमका के पूंगा। रात वहीं रह गया। उनकी मिल वहुत ही अच्छी है। सीताराम जी ने काफी खातिरी की, गंगावावू साथ में थे। यहाँ विड़ला के वहुत काम हैं।

अलवर

२० मार्च : सुवह ८॥ वजे कार से दम्मानीजी के साथ अलवर गया। लोगों से मिला। मिला-जुला खाना खा लिया। शाम को दीनदयाल जी उपाध्याय के यहां गया। दीनदयाल जी सज्जन हैं। उनके विचार भी स्पष्ट हैं। वहाँ से लौटकर वद्रीनारायण जी सोढानी, रघुनाथ जी और वर्मा साहव के साथ मीटिंग में गया। रात में ९॥ वजे स्टेशन आया। वहीं सो गया। २॥ वजे रात ट्रेन से दिल्ली के लिये चला।

दिल्ली

२३ मार्च : सुवह वदन दुखता था, आलस भी था, मन खिन्न। दो मील घूमा। मन में नाना तरह की कमजोरियां और चिंताएं उठ रही हैं, पता नहीं क्यों कैसी उदासी सी आ रही है। कभी-कभी यह महसूस होता है, मेरा शरीर दूसरे का है परंतु मैं कुछ और ही हूँ। पता नहीं भोग और वैराग्य की दो पर्सनेलिटी मेरे में क्यों है? ऐसा अक्सर हो जाता है। वहुत कष्ट होता है। एक लड़का आ गया है : सहायक का काम कर सके तो ठीक रहेगा। वारह-तेरह पत्र लिखवाये। अंग्रेजी तो साधारण सी है, हिंदी में होशियार लगता है। रात में विरजू और नन्दू से फोन पर वात हुई। कलकत्ते की खवरों में खास परिवर्तन नहीं है। दिन में मन वहलाने लाइब्रेरी में गया था। करीव दो घंटे था, कितावें पढ़ता रहा।

सरदार शहर

२४ मार्च : अचानक ही सरदार शहर जाने की जँच गयी थी। वाइफ को कम जँची पर मन हो गया। ट्रेन से ५॥ वजे रतनगढ़ पूगा। फिर ९॥ वजे सरदार शहर। स्टेशन से तांगे पर आए। घर आने पर काफी लोग मिले। होली का उत्सव खास ज्यादा यहाँ नहीं है शाम को होली धोरा गया। पैंतीस वर्ष वाद यहाँ की होली देखी।

२५ मार्च : सुवह धुलंडी थी। वाजार गया, कपड़े तो रंग-पुत गए। धर्मशाला तक गया। भोजन की रुचि यहाँ ठीक होती है। रात में थोड़ी सर्दी है, मच्छर वहुत हैं। दिन में नींद ले लेता हूँ। कई लोग मिलने आए, मैं भी दो-तीन जगह गया। संपतराम जी के गया। दिन में गर्मी है और रात में ठंड। रामगोपाल जी चांडक के घर गया था।

२६ मार्च : सोहनलाल जी आंचलिया से दवा में तवदीली कराई। दिन में मोहनजी जैन, श्यामसुखा और शुभकरण जी नाहटा के गया। वहाँ से पव्लिक लाइब्रेरी की मीटिंग में ३ वजे आया। ४। बजे घर आया। चीजों की फेहरिस्त वना रहा हूँ। ६॥ वजे खाना

खाया। रसोई नारायणी ब्राह्मणी बनाती है। रात में विचार आते रहे, मनुष्य के मन में कितनी आकांक्षाएँ रहती हैं। हर आदमी दूसरे की तरफ देखकर अपने को तौलता है, गलत-सही। कहाँ का आदमी कहाँ जाता है। हर क्षण जीवन बदलता रहता है, छीजता है।

२७ मार्च : सुबह धनराज बिहानी के घर गया। मनीराम जी वैद्य और जयचंद महाराज को बुलाया, नाड़ी दिखायी। पेशाब और दस्त रखा था, दवाई की तैयारी हो रही है। वैद्य लोग आए, उन लोगों ने देखा। शाम का प्रोग्राम अच्छा रहा। १०० आदमी जीमने आए, कुल १३५) रु० खर्च हुए। सामान प्रायः निमण गया। गाँव में इस तरह के प्रीति-सम्मेलन अच्छे रहते हैं। कल दिल्ली वापस जा रहा हूँ। सरदार शहर ५ दिन रहना हुआ। कुल ४००)-५००) रु० खर्च हुए। बहुत आदमियों से मिला। मानसिक और शारीरिक आराम मिला।

दिल्ली

३ अप्रैल : लोढ़ा जी आए, भीलवाड़ा मिल की बात की। १०॥ बजे पार्लियामेंट गया, क्वेश्चन पूछा। खास कुछ नहीं था। २॥ बजे राजस्थान हाउस गया, सुखाड़िया जी से मिला। सुबह महावीर जी त्यागी के गया था। दिन में के० बी० लाल, शांडिल्य से बात की। मनु भाई से टाइम किया।

६ अप्रैल : शाम को जी० डी० के यहाँ जीमा और भी कई आदमी थे। सुबह एयरपोर्ट पर गया था, नोपानी जी आए। उनके साथ महावीर त्यागी, एस० एन० सिन्हा से मिला। उनके केस की अपील नहीं हुई। एस० एन० सिन्हा ने कहा, के० बजाज खड़े हो रहे हैं। सारे दिन नोपानी जी के साथ व्यस्त सा था। दिन में एच० के० माथुर से मिलने गया जूट के बारे में। फिर लाल को चिट्ठी लिखाई। कई पत्र दिए कुछ विवरण-पत्रिका भेजी।

७ अप्रैल : शाम को एस० एन० सिन्हा के यहाँ रामायण सुनने गया। खाने पर डॉ० रामसुभग सिह आए। तबीयत दो-तीन दिनों से अच्छी है परंतु लिखना-पढ़ना नहीं होता। एक अच्छे पी० ए० की आवश्यकता है। बुधमल श्यामसुखा को ३५००) रु० में ऑफिस दे दिया है।

८ अप्रैल : शाम को ४ बजे मनुभाई की ऑफिस में गया। ७ बजे तक उनके साथ था। यदि पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी भी हो जाता हूँ तो बहुत है। पार्लियामेंट गया, आजकल क्वेश्चन कम हैं। शुक्ल आता नहीं है। बिना आदमी के काम नहीं हो पाता है।

९ अप्रैल : वजन हुआ, एक मन तैंतीस सेर हूँ। बहुत कम वजन रह गया, कुछ चिंता-सी हुई। स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखता। पैर दुखते हैं। वाइफ को समझा-बुझा कर भेज दिया, कारण मुझे तीन-चार दिन बाहर रहना है।

लखनऊ-बछरांवां

१० अप्रैल : सुबह ७ वजे लखनऊ पूगा। ८ वजे भागीरथ जी की मिल में गया। पुरानी मिल है, लॉस कर रही है। वहाँ गोविंद केजिड़ीवाल मिला। अच्छा यंगमैन है। उसकी कार लेकर चंद्रभानु जी गुप्त से मिलने गया। वड़े प्रेम से मिले। १२ वजे वछरांवा पूगा। स्टेशन पर कई आदमी भी मिलने आए थे। कॉलेज गया। अच्छी संस्था है, परंतु गरीबी झलक रही है, काफी मेहनत की गयी है, हॉल वन गया है, छत वाकी पड़ी है। रात ९ वजे कानपुर से दिल्ली के लिए ट्रेन पकड़ी।

दिल्ली

११ अप्रैल : फिरोज गांधी से उनकी कांस्टिचुएंसी के वारे में वातचीत की। अच्छा अनुभव रहा। वायलेट अल्वा कलकत्ते में मेरे यहाँ ठहरी हैं। डॉ० रामसुभग सिंह से वात की। वे मुझे ट्रेजरार के लिए खड़े होने को कहते हैं, मेरा भी मन है।

नागदा

१२ अप्रैल : जी० डी० विरला और मंडेलिया जी के साथ नागदा सुबह १०॥ वजे पूगा। सीधा मिल देखने चला गया। डेढ़ घंटे तक जी० डी० से वात करता रहा। वे वंबई चले गए। मैं गेस्ट हाउस में वापिस आ गया। कितावें पढ़ता रहा।

दिल्ली

१५ अप्रैल : पार्लियामेंट में जूट और टी पर वोला, अच्छा वोला, अंग्रेजी में। परंतु मनु भाई ने कहा फाइनांस मिनिस्ट्री को ऑफेंड नहीं करना चाहिए था। क्वेश्चन दिन में स्टडी करता रहा। कुछ चंदे की भी चेष्टा की। दम्माणीजी से ५०००) रु० श्री फिरोज गांधी दिलाए। तबीयत ठीक है। कल कलकत्ते जा रहा हूँ। वेणीशंकर जी शर्मा इधर ही हैं। सरदार शहर से भी लोग आए हैं।

१६ अप्रैल : पार्लियामेंट में आज लालवहादुर जी की स्पीच अच्छी रही। मेरा नाम भी उन्होंने लिया, चाय और पाट के सिलसिले में। शाम को शांडिल्यजी से बात की। मोटर १२,०००) रु० में वेच दी है, चेक जमा दे दिया। रुपया आया या नहीं, पता नहीं। १०००) रु० फिरोज गांधी की कॉलेज के लिए दिया। १०००) रु० एक आदमी को उधार दिए उसने कलकत्ते में देने को कहा है। रात में प्लेन पर के० पी० गोयनका मेरे साथ हो गए।

कलकत्ता

१७ अप्रैल : ११ वजे टी० वोर्ड की मीटिंग में गया, देर हो गयी थी इसलिए खास भाग नहीं ले सका। ऑफिस भी गया। स्कूल को लेकर झंझट चल रहा है।

२२ अप्रैल : नन्दू के साथ एस० एम० मोहता के घर गया। एक मिल कोयंबटूर में है, उसके कागज-पत्र देखे। जँचे नहीं। डी० पी० गोयनका के गया। कलेडोनियन मिल के वारे में वात की, शायद हो जायगी। खाने-पीने की तो सम्हाल रखता हूँ परंतु कलकत्ते की

हवा नहीं जँचती। थोड़ी देर के लिए शेयर मार्केट गया था। आज दिल्ली से रिडायरेक्ट होकर कई पत्र आए हैं, उनके जवाब देने हैं।

२६ अप्रैल : आज लोग काफी संख्या में जीमने आए थे। विरजू की जूठन छुड़ाने की आदत है। १२००-१४०० आदमी आए थे। रात में १२॥ बजे से २॥ बजे तक फेरे होते रहे, ४॥ बजे घर लौटे।

२७ अप्रैल : तबीयत कुछ ठीक सी है, इन दिनों में। आज रात में सजन-गोठ है, अर्जुनदास जी अग्रवाल भी आए थे। १० बजे तक बातचीत होती रही। आज ८० आदमी जीमे। मैंने भी थोड़ा खाना खाया। रात में १२ बजे पहरानी हुई। काफी चीजें दी हैं। पाट का बाजार गरम है। शेयरों का भी गरम सा ही है।

दिल्ली

१ मई : दिन में वर्मा जी ने कहा, आप विथड्रा कर लें, इसलिए मैंने अपना ट्रेजररशिप के लिये नाम वापिस लेना उचित समझा। पार्लियामेंट का काम ही पूरी तौर पर नहीं कर पाता ऊपर से ट्रेजररशिप की जिम्मेदारी जरूर भारी पड़ेगी। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। परंतु ऐसा लगता है, विथड्रा कर नहीं पाऊँगा, प्रेशर पड़ेगा।

४ मई : चुनाव के लिए आज विथड्रा की अंतिम तारीख थी। २१ नाम रह गए हैं। दिन में कई जगह एलेक्शन के लिए फोन किए। मुझे मेरी सफलता का निश्चय-सा है।

५ मई : दिन में चुनाव की चर्चा करता रहा। पाट की कटिंग का सेटलमेंट नहीं हुआ। भाई जी से कल रात में फोन पर बात हुई। कुंभाराम जी आए हुए हैं। मुझे शरीर में कमजोरी महसूस होती है। शाम को कलकत्ते की अनामिका का 'नए हाथ' देखने गया। अच्छा रहा।

६ मई : सारे दिन चुनाव के काम में लगा रहा। खाना भी नहीं खाया। सुबह मैथिलीशरण जी गुप्त के यहाँ गया था। कलकत्ते की 'अनामिका' के मित्र आए हुए हैं। उनके साथ पार्लियामेंट गया, ६ बजे तक रहा। पंजहजारी ८ वोट से हार गए। शारदा भार्गव जीत गयीं, मैं लास्ट रहा। ११७ वोट आए, पहाड़िया को १२३ आए। ऐसा मालूम देता है कि मेरे एलेक्शन कैम्पेन में गलती रही। पहले अगर अच्छे पत्र लिखकर भेज देता तो १४-१५ वोट ज्यादा आ जाते और इतने बहुत थे। मन में ग्लानि है एक तो चुनाव की, दूसरे फाटके में घाटे की।

७ मई : सुबह ५ बजे उठा। सर्दी लग रही थी। तबीयत खराब है। हरचंदरायजी कलकत्ते चले गए, काफी कमजोर मालूम पड़ते थे। मैं स्टेशन गया था। ८॥ बजे रामकृष्ण मिशन पूगा। स्वामीजी से मिला। मेरे मन में उदासी सी है। काम भी पूरी तरह नहीं कर पाता हूँ। ज्यादा उदासी तो शेयर के घाटे की है, कुछ पाटवाली चिंता भी है। सबसे बड़ी अशांति मन में है शेयर के फाटके की, बैठे-ठाले यह अड़ंगा क्यों लगा लिया ? परंतु जब होनी होती है तो ऐसा हो ही जाता है।

८ मई : रात में आजकल कमरे में नहीं सोता, वाहर सोता हूँ। मन में पश्चात्ताप है। फाटका करना वहुत ही वुरा है परंतु आदत पुरानी पड़ी हुई है, फिर एक-डेढ़ वर्ष वाद कर वैठा और उसका नतीजा वहुत ही वुरा हो रहा है। डायरी कई दिनों वाद लिख रहा हूँ।

९ मई : हार से मन में वहुत ही अवसाद आ गया है। गलती मेरी थी। खड़ा होकर चेष्टा नहीं की, इसमें तारीफ की क्या वात थी ? दूसरों के भरोसे पर क्यों रहना चाहिए ? दिन में पार्लियामेंट में था परंतु मन नहीं लग रहा था। कुछ कर नहीं पा रहा हूँ। लंदन वाला लेख भी उसी तरह पड़ा हुआ है। शायद एक-दो महीने में भी पूरा न हो अगर यही हालत रही।

१० मई : सारे दिन मन में हार का दुख और प्रतिक्रिया होती रही। सुवह-शाम मातादीनजी के साथ घूमने जरूर गया परंतु दिन में ए० आई० सी० सी० की मीटिंग में नहीं जा सका। लोगों को क्या कहूँगा, यही सोचता रहा। घर में ही रहा। एक वार तो रोना जैसा आ गया। सुवह अनामिका वाले आए थे, उनके साथ पंडितजी के घर गया। एक घंटे था, उपाध्यायजी साथ में थे। फोटो वगैरह ली गयी। ऊपर से मुस्कुरा रहा था पर हार की चोट से मन कराह रहा था।

११ मई : ए० आई० सी० सी० में ५ वजे सुखाड़ियाजी से मिला। लोगों से मिलने में झेंप सी लगती थी। हार जाना वुरा हुआ, अगर चेष्टा करता तो हारता नहीं। रात में विड़लाजी के यहाँ खाने पर गया, १० वजे वापस आया। वी० एम० थे। दिन में ३। वजे स्वर्णसिंह जी और छेदीलालजी से, ४।। वजे एस० एन० सिन्हा से, ५ वजे जी० एल० नंदा से भारत सेवक समाज के लिए मिला। लालवहादुरजी और सी० वी० गुप्ताजी से भी मिला। अव्दुल रशीद से भी। मन कुछ ठीक हुआ है। सामान सारा दीनवंधु के यहाँ भिजवा दिया है। रात में वुधमलजी शामसुखा आए थे। सेटवैक मन से कुछ मिटा है। इस वार की हार में कारण हैं, कम चेष्टा, फाटके के घाटे से मन की अस्थिरता और मोटर का न होना।

१२ मई : सुवह ५ वजे उठा, कलकत्ते का फोन मिलाया। फिर दद्दा को पुगाने गंगा वावू के साथ न्यू दिल्ली स्टेशन गया। ९ वजे स्वामी रंगनाथानंद के यहाँ गया, ७५०) रु० उनको दिए। लाल के लिए भक्तदर्शनजी को फोन किया। १२ वजे पार्लियामेंट गया। १ वजे एस० टी० सी० गया। ४ वजे तक था। काम का सेटलमेंट किया, शायद हो जायगा, कुछ फायदा भी हो जायगा। ४।। वजे वीकानेर हाउस गया। सुखाड़ियाजी से वात की।

१३ मई : सुवह ६ वजे पैदल वीकानेर हाउस गया, ८ वजे तक था। फिर सुखाड़ियाजी के साथ मनु भाई के घर। ९ वजे गुप्ताजी सी० वी० से मिला। ९। से १० वजे तक फिरोज गांधी के पास। ११ वजे घर वापस आया। फिर पार्लियामेंट आया। ४५०००) रु० का ड्राफ्ट नन्दू के नाम से लिया, कलकत्ते भेजा। ४। से ५। वजे तक सुचेताजी के गया।

साथ में सामान बहुत है। दिल्ली में आज कामकाज हुआ। स्वर्णसिंहजी का पत्र कौल के बारे में आ गया है। शायद काम हो जायगा।

मसूरी

१७ मई : सुबह कार से दलाई लामा को देखने बिड़ला हाउस गया। काफी भीड़ थी। अच्छी सजावट थी। दलाई लामा का व्यक्तित्व अच्छा है, स्वभाव भी सरल। विद्वान् हैं। राजनीति की चर्चा बिल्कुल नहीं करते। मसूरी में मन लग गया है। किताबें पढ़ लेता हूँ।

२ जून : शरीर में थकान सी थी। घूमने नहीं गया। पत्र वगैरह लिखता रहा। डालमियाजी को दो वर्ष की जेल हो गयी। कैसा-सा लगा। इस ढंग का फैसला कोई माने नहीं रखता। तीन-चार मील घूमा। एच० सी० माथुर, ब्रह्मप्रकाश, जे० पहाड़िया खाने पर आए। माल रोड पर गोपाल रेड्डी और मिनिस्टर ऑफ फायनेंस मिले थे। राहुलजी और महेंद्रप्रतापजी भी।

५ जून : सुबह ८॥ बजे तक किताब पढ़ता रहा। नन्दू का, एस० एन० का और हरचंद रायजी का कागज आया। तबीयत ठीक है। किताबों का पढ़ना-लिखना एकदम बंद है। अखबार थोड़ा पढ़ लेता हूँ। नाजिरा का १२ आना डिविडेंड दिया है। चाय में नफा अच्छा है। मसूरी का सीजन अच्छा है। परंतु यहाँ खर्च काफी लग जाता है। छः-सात मील रोज घूम लेता हूँ। २३ दिन यहाँ आए हो गए परंतु वजन बढ़ा नहीं।

हरद्वार-ऋषिकेश

१४ जून : वापसी की यात्रा बहुत कष्टदायक रही। बस वाले बहुत रूखे होते हैं। भीड़ भी बहुत थी। ७ बजे ऋषिकेश पुगा। ९ बजे लछमन झूला पैदल चला, स्नान किया। राजा थक गया था। डेढ़ मील चलकर स्वर्गाश्रम आए। खाना अच्छा मिला। वाइफ बहुत थक गयी, रुआँसी-सी हो रही है। पैर दुखते हैं। यहाँ बहुत लोगों से भेंट हो गयी। ७॥ बजे हरद्वार में ट्रेन में बैठे। भीड़ तो बहुत थी। किसी तरह एक सीट मिली। गरमी बहुत मालूम दी। धक्के, भीड़ में राजू तो घायल-सा हो गया। मेरा मन भी सुस्त हो गया।

बनारस

१७ जून : १२॥ बजे पुरुषोत्तमजी केडिया के गए। मुरारीलालजी केडिया की लाइब्रेरी देखी, संग्रहालय देखा। काफी अच्छा और कीमती संग्रह है। मैथिलीशरणजी गुप्त दिल्ली में बीमार हैं, उनका फोन आया, मुझे जाना चाहिए। परंतु जाना नहीं होगा, मैं स्वयं अस्वस्थ हूँ। बनारस में गरमी बहुत है, शायद ११० डिग्री।

कलकत्ता

२४ जून : डंकन ब्रदर्स की मीटिंग में गया, पाँच मिनट का काम था। के० पी० गोयनका

से मिला, बातचीत हुई, कामकाज का ढंग तो नजर नहीं आता है। शेयर बाजार गरम है। एक बार उधर गया था।

२८ जून : कलकत्ते में मुश्किल हो जाती है। तबीयत ठीक नहीं रहती, चंदे वगैरह का भी झमेला पड़ जाता है। अपना काम कुछ भी नहीं कर पाता। तबीयत ठीक नहीं है। लोग मुझे बीमार बतलाते हैं। वजन एक मन सवा तैंतीस सेर है। सुबह शांतिप्रसादजी के साथ मकान और जमीन देखने गया। भागीरथजी के गया था, राजस्थान कांग्रेस की बात कर रहे थे।

३० जून : १०००) रु० चंदे का देना पड़ा। ट्रस्ट से स्कूलों के लिए बात की। दिन में भागीरथजी के घर गया। ४ बजे बी० एम० बिड़ला को लेकर जमीन दिखाने गया। उनके जँच गयी है। शायद चंदा भी देंगे। काफी बात हुई।

जसीडीह

१४ जुलाई : ४ बजे सुबह उठा। रात में मच्छर तंग करते हैं। चार मील घूमा। कसरत दो-तीन दिनों से बंद है। तेल मालिश एक घंटा रोज करा लेता हूँ। मिश्र का लेख तैयार हो रहा है। शाम को ६ बजे एस० एन० का फोन आया, जयपुर से तार आया, १८-१९ को दिल्ली में मीटिंग है। मुझे भी बुलाया है। जाने का निश्चय कर लिया है। उचित भी है। शेयरों के भाव तेज देखे, मन में चिंता हुई। कुल २५,०००) रु० का घाटा हो गया है। परंतु पहले जैसी घबराहट नहीं होती है। एस० एन० ने कहा फैक्टरी में लोग काफी नाराज हैं। कुछ करना चाहिए। राजू की माँ के पैर में उतना ही दर्द है।

दुमका

२० जुलाई : एक बस से बहुत से आदमी बाँध देखने जा रहे थे। मैं भी चला गया। काफी तकलीफ रही। मसानजोर बाँध अच्छी जगह लगी। दो बँगले हैं, सुंदर जगह है, शांत वातावरण। परंतु इतनी भीड़ थी कि देखने का मजा नहीं रहा। रात में दुमका में ठहर गया।

जसीडीह

२४ जुलाई : कल ४०) रु० गुम गए। सावधानी रखता नहीं। दिन में किताबें पढ़ता रहा। शेयरों के भाव कुछ मंदे हैं परंतु शेयरों में तो तेजी वालों की चलती है। क्यों फजूल में यह अड़ंगा ले बैठा? वजन यहाँ आने से कुछ बढ़ा है। दिन में १॥ बजे गौरीशंकरजी के साथ मधुपुर गया। कुष्ठ रोगियों को देखने पास के एक गाँव में गया। कई रोगियों को देखा। बहुत ही अच्छा काम ये लोग कर रहे हैं। गौरीशंकरजी एक बहुत ही अच्छे सेवाभावी व्यक्ति हैं।

कलकत्ता

२९ जुलाई : नन्दू की माँ की तबीयत खराब है। कामकाज एक रकम ठीक चलता है। चंदे का काम एक रकम बंद-सा ही है।

कलकत्ता-दिल्ली

३ अगस्त : सुबह ४ बजे उठा। थोड़ी कसरत की। ५।। बजे हरचंद रायजी से मिला। पुरुषोत्तम जी, नन्दू, विरजू के साथ एयरपोर्ट गया। दिल्ली १० बजे पूगा। जीप आ गयी है। दिन में लोगों से मिला। पार्लियामेंट के लिए मेरे क्वेश्चन एक भी नहीं हैं। हैरानी हुई, पायंट दे दिया था। निमाई से पूछने पर पता चला कि उसकी लड़की मर गयी इसलिए क्वेश्चन तैयार नहीं किए। कुछ गलती मेरी भी थी मैंने ध्यान नहीं रखा परंतु उसको भी मुझे सूचित करना चाहिए था। मैं बंदोबस्त कर लेता।

दिल्ली

४ अगस्त : सुबह दो मील घूमा। गुप्तजी के गया, उन्हें लेख सुनाए, अच्छे लगे। १२।। बजे पार्लियामेंट गया। शाम को पार्टी मीटिंग में गया। कासलीवाल अच्छा बोले। रात में दीपचंद से मिलने गया। दिन में तीन-चार बार भैंस के दूध का मट्ठा पी लिया। परेशानी हो गयी।

७ अगस्त : शाम को मैथिलीशरणजी के घर जीमने गया। आज इनका जन्म-दिन था। कितना सरल और पवित्र जीवन इनका रहा है। देश की कितनी सेवा इन्होंने की। ऐसे ही लोगों का जीवन सार्थक होता है। काफी बातचीत हुई। दिन में कुछ लेखों की रूपरेखा तैयार की। पार्लियामेंट का काम कम कर पाता हूँ। पत्रों का जबाब रेग्युलर दे रहा हूँ।

८ अगस्त : सुबह मैथिलीशरणजी को लेख सुनाए। दिल्ली वाला लेख उन्हें पसंद आया। ९।। बजे बीकानेर हाउस गया, फिर जगजीवन रामजी के। बी० बी० वर्मा और अतुल्य घोष के भी गया था। मलैया से भेंट नहीं हुई, घर पर नहीं था। १२।। बजे पार्लियामेंट हाउस गया। ५। बजे तक पढ़ता-लिखता रहा। गर्ग के आने से काफी सुविधा हो गयी है। घर में भीड़ भी आजकल कमती है। यशपालजी को फोन किया। शंकर को २९००) रु० लॉरी के लिए उधार दिए। ८ बजे से ९।। बजे तक मनु भाई के कमरे में था। राजस्थान की मिलों के बारे में मीटिंग हुई। काफी लोग आए थे। राजस्थान की मिलों को टैक्स की स्पेशल राहत नहीं दी जाती तो समस्या बनी रहेगी, ऐसी मेरी धारणा है। प्रोडक्शन कॉस्ट घटाना जरूरी है और दूसरी समस्या तो किसी रकम सुधारी जा सकती है। इन मिलों को फाइन, सुपर-फाइन में नहीं जाना चाहिए।

१२ अगस्त : आज से तेल मालिश शुरू करायी। बैंक पर पार्लियामेंट में बोला। शायद बहुत अच्छा बोला, जल्दी-जल्दी में तैयारी की थी।

१३ अगस्त : एन० सी० डी० सी० की डिवेट थी। जल्दी-जल्दी तैयारी की। एक रकम अच्छा बोल सका। परंतु ज्यादा स्टडी कर पाता तो और भी अच्छा होता। डिवेट शुरू अंग्रेजी में की, खत्म हिंदी में। पंडितजी भी आ गए थे। फिरोज गांधी कालेजों के लिए रुपए माँगते हैं। कलकत्ते डी० पी० गोयनका को लिखा है।

१४ अगस्त : पार्लियामेंट में शुगर पर डिवेट थी। अजितप्रसादजी की मिट्टी पलीत हुई। शायद उनको छोड़ देना पड़ेगा।

सीकर-अजमेर

१५ अगस्त : सुवह ७ वजे पूगा। वजाज भवन गया। साँवरमल लादूराम, शोभानाथ, रतन वड़जात्या, नरसिंह, द्वारका प्रसाद, सीताराम, लादूराम पँवार आदि सव मिले, गुलावजी चितलांगिया भी। ९००) रु० साँवरमलजी को अव तक के हिसाव के दिए। कलक्टर से मिला। आदमी अच्छे हैं। वाजार में झंडोत्तोलन किया, कुछ वोला भी। इन दिनों कमजोरी महसूस कर रहा हूँ। चक्कर भी आते हैं।

अजमेर

१६ अगस्त : वेटिंगरूम में रात नींद अच्छी आयी थी। भूख और नींद में अच्छे-वुरे का क्या पता चले? सुवह ५॥ वजे उठा। वर्षा हो रही थी। परंतु तीन मील घूम आया। वादशाह का वाग पूरा भरा हुआ था, ठंडक भी थी। ८ वजे गर्ग जी के घर पूगा। वहाँ पर मुरारजी मिल के माखरिया आए हुए थे। वहीं नाश्ता किया। फिर कार से अजमेर देखने गए। १० वजे की ट्रेन से १२ वजे व्यावर पूगा। रानीवालों के गया, खाना खाया। दिन में मिल देखी, साधारण सी थी। शायद फायदा हो जाय। परंतु घर वालों के जँचेगी नहीं।

दिल्ली

१७ अगस्त : १॥ वजे अजितप्रसाद जी जैन का फोन आया। स्थिति जान कर वहुत ही उदासी हुई। महावीरजी त्यागी से मिला। फिर ए० पी० जैन से मिला। वात रह गयी। गलतफहमी मिटी, क्योंकि पिछले शुक्रवार को मैंने पार्लियामेंट में व्यक्तिगत रूप से उनके विरुद्ध कुछ भी नहीं कहा था।

१८ अगस्त : सुवह जी० डी० के साथ मैदान घूमने गया, दो-तीन मील घूमा होऊंगा। दिन में वद्रीनारायणजी सोढानी, रघुनाथजी पारीक जयपुर से आए हुए थे। आज रक्षा-वंधन है। पुष्पा के जाकर राखी वँधाकर आया, २०) रु० दिए। मैथिलीशरणजी के गया। दिन में गंगावावू और अन्य लोगों के साथ युनिवर्सिटी गया, वहाँ फंक्शन था, अच्छा रहा। वहाँ से फुटवाल का खेल देखकर घर आ गया। विड़ला हाउस का फोन आया, जीमने को

बुलाया है। वहाँ से आकर फिरोज गांधी जी से मिला। १५००) रु० दिए। डी० पी० गोयनका की चिट्ठी आयी। २५००) रु० उन्होंने देना मंजूर किया है। इस बार खर्च कुछ कम है। ९॥ बजे रात में बीकानेर के लिए ट्रेन से रवाना हुआ।

बीकानेर

१९ अगस्त : १० बजे बीकानेर पूगा। जुगलजी के घर गया। वहीं भोजन किया। रामकिशनदासजी के पास गया, अस्पताल में हैं, काफी बीमार रहे। ऑपरेशन हुआ है। मुझे देखकर खुश हुए। शाम को दुबारा उनसे मिला था। बीकानेर आना अच्छा रहा, जरूरी था।

दिल्ली

२१ अगस्त : जयपुर से साथ में गोलछा थे। ८ बजे सुबह दिल्ली पूगा। स्टेशन पर बक्स रखकर बस से घर आया। कागज-पत्र देखे। दम्माणीजी से मिला। आज बैंक नेशलाइजेशन पर आर० गुप्ता का बिल था, मैं भी बोला, शायद अच्छा बोला, थोड़ी स्टडी कर ली थी।

२५ अगस्त : स्वर्णसिंहजी से ४॥ बजे मिला, कोल के बारे में। इधर मेरे लेख कम हो पाए हैं। रात में जयप्रकाशजी के यहाँ खाने गया, गंगाबाबू भी थे, १० बजे लौटा दम्माणीजी के साथ। १२५०) रु० उन्होंने दिए, बातचीत की। शाम को गुप्तजी के यहाँ गया। सुबह मनु भाई के घर बहुत देर तक था।

२६ अगस्त : मैथिलीशरणजी गुप्त के साथ 'हरक्युलीज' फिल्म देखने गया। भव्य सेटिंग और फोटोग्राफी भी कौशलपूर्ण किंतु रंगमंचीय अभिनय था। हमारे यहाँ भी महाभारत पर आधारित फिल्में अधिक प्रभावपूर्ण बन सकती हैं यदि परिश्रम और निष्ठा से बनायी जायें। वासुदेवशरणजी से बात हुई। मुझे लगता है, संपूर्णानंदजी की तरह भारतीय संस्कृति और इतिहास का इनका अध्ययन बहुत गंभीर है। इनकी पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद बहुत जरूरी है परंतु वह तो अकेले का काम नहीं। जगजीवन रामजी और राजबहादुरजी को चाय दी।

ब्यावर

२८ अगस्त : सुबह ५ बजे जयपुर में आँख खुली। पिछले कई दिनों से पेट दुखता है, पतले दस्त भी आ रहे हैं। रात में तकलीफ हुई। अजमेर तक भागीरथ जी और चतुर्वेदी जी साथ थे, मन लग गया। अजमेर उतरा, स्नान किया और दही पी लिया, मन प्रसन्न हो गया। ९॥ बजे ब्यावर पूगा। मिल में गया, पसंद नहीं आयी। ३ बजे बृजमोहन जी से मिला। रात में ८। बजे भीलवाड़ा पहुँचा। लोढ़ाजी के यहाँ ठहरा, भोजन किया। मिल के बारे में बातचीत भी की। ब्यावर वालों के तकलीफ है।

२९ अगस्त : सुबह मिल देखने गया। कमजोरी महसूस कर रहा था, चक्कर आ रहे थे, पेट भी दुखता था। ऐसा लगता है कि अब यह अड़ंगा मेरे जीवन के साथ रहेगा। १० वजे लोढ़ाजी के ऑफिस में गया। व्यावर वाले आए, उनसे बंदोबस्त नहीं हो पाया, डेढ़ लाख माँगते थे। हम नट गए, लोढ़ा जी की हालत भी खराब है। भाईजी १।।। बजे की ट्रेन से रतलाम चले गए। मैं शहर आ गया, महिल-मंडल देखा। ३२५ लड़कियाँ हैं। भवन अच्छा है, व्यवस्था भी ठीक लगती है। २।। वजे ट्रेन पर आया। साथ में लोढ़ाजी का मैनेजर मोदी था। चीन ने नेफा पर हमला कर ही दिया। महावीर त्यागीजी की वात सही निकली। पंजितजी की नीति की कमजोरी सावित हो गयी। ऐसा लगता है, झमेला वढ़ेगा।

जयपुर

३० अगस्त : रात में १ वजे जयपुर पूगा। वेटिंगरूम में था। नींद नहीं आयी। पेट की खराबी एक कारण है। वहुत तरह के विचार भी आते रहे। तिव्वत की भेंट चीन को देना भारत के हक में अच्छा नहीं हुआ। इस भूल को सुधारने की चेष्टा भी नहीं की गयी, उल्टे चीन पर पंडितजी विश्वास करते रहे हैं, शायद आगे भी यही नीति रखेंगे। सुबह ७।। वजे हरिदत्तजी जोशी के साथ सीकर गया। मीटिंग में गया, ७०) रु० दिए। और सभी लोग थे। शाम को ५ वजे वद्रीप्रसादजी गुप्त के साथ जयपुर आ गया। ५।। बजे मनुभाई की टी० पार्टी में शामिल हुआ। ८ बजे रात में फिर खाने पर। १० बजे स्टेशन आया, मनु भाई के साथ। ट्रेन में मनु भाई से १२।। वजे तक वातें होती रहीं। मनु भाई वहुत सावधानी बरत कर वात करते हैं, यह सीखने लायक गुण है।

कलकत्ता

३ सितंबर : कलकत्ते में हंगामा है। ट्राम-वस बंद। ११ आदमी मारे गए। १२ वजे ऑफिस गया, वी० एन० एलियास से मिला। विरजू के हुगली गंजेज़ लेने की नहीं जँची। मन में थोड़ा दुख तो हुआ। मदन और भाईजी से फोन पर वात हुई। भाईजी नाराज से थे। शाम को पुरुषोत्तमजी वगैरह आए, नंदकिशोरजी वाजोरिया के घर गए, ताश खेलते रहे। तवीयत ठीक है।

४ सितंबर : आज भी थोड़ा टेंशन रहा। दिन में वी० एन० एलियास से मिला। वह १५।।।=) में राजी नहीं हुआ।

दिल्ली

५ सितंबर : एक हिंदुस्तान गाड़ी रजिस्टरी करायी १३०००) रु० लगेंगे। शाम को थोड़ी देर के लिए कांग्रेस ऑफिस गया, डॉ० रामसुभग सिंह, पंचहजारी जी आदि से मिला।

६। वजे कृपालानीजी के घर गया, दलाई लामा से मिलने को, स्वर्णसिंह जी वगैरह भी थे। त्यागीजी से मिला, नेफा के बारे में थोड़ी चर्चा हुई। वे दुखी से हैं। पता नहीं क्या बात है, दिल्ली से मन उखड़ा सा लगता है।

सरदार शहर

१० सितम्बर : सुबह ८।। वजे सरदार शहर पूगा। घर गया, आब-हवा अच्छी है, लोगों से मिला। १५०) रु० कुंड के चंदे में दिए, ४०) रु० और खर्च हो गए। ५००) रु० लाइब्रेरी को दिए किताबों के लिए। लाइब्रेरी ठीक चलती है, मकान की तकलीफ है। नायब तहसीलदार की लड़की मिलने आयी थी। बहुत ही सभ्य और सुशील। अच्छा लगा। आचार-विचार ही व्यक्ति की शोभा है, रुपया-पैसा नहीं। सुमेरमल जी आंचलिया के जीमा, ८ वजे स्टेशन आ गया।

कलकत्ता

१२ सितंबर : ११ वजे दिन में दमदम पूगा। बारिश ज्यादा थी। मुहम्मद इलियास को उनके घर लोअर सर्कुलर रोड छोड़ा। मन में प्रसन्नता है। थोड़ी देर के लिए गद्दी गया था, काम-काज एक रकम ठीक है। नोपानी जी से मिला था। नन्दू की गिगया बहुत खेलती है। मन लग जाता है।

२१ सितंबर : सुबह नोपानीजी के गया। वहाँ दिल्ली से एक वैद्य जी आए हैं। उनकी दवा शुरू की। वही ले ली। मट्ठा लेता हूँ। १० दिन दवा देंगे। जयपुर वोट के लिए बुलाते हैं। सुबह मनी बाई के घर गया। कांता उदास-सा हो रहा था, कुछ कहा-सुनी हो गयी है।

२२ सितंबर : सुबह ५ वजे उठा। मैदान गया, थोड़ी कमजोरी मालूम देती है वहाँ से वैद्य जी के पास गया, कन्हैयालाल जी केजिड़ीवाल के घर भी गया। हमारे घर में जोकिम अलवा आए हैं। ४ वजे घर से निकला। जयपुर का टिकट लिया, जाना होगा। मेरा कोई काम नियमित नहीं रह पाता, बड़ी हैरानी की बात है। खाना-पीना इन दो दिनों से संतुलित है, पेट भी ठीक है। २ वजे वैद्य जी आए थे, वाइफ को देखा। दिल्ली में दवाई देंगे।

२३ सितंबर : प्लेन से जाने का विचार है। ट्रेन का टिकट फिरती कराया। प्लेन के टिकट के लिए ४१७) रु० लगे, सब के यही जँचा। समय की बचत और आराम भी रहेगा। ट्रेन में तकलीफ ज्यादा होती है।

सीकर-नवलगढ़

२४ सितंबर : सुबह ७ वजे पूगा। रात दिल्ली में ट्रेन में अच्छी जगह मिल गयी थी। तकलीफ नहीं रही। १२ वजे वोट हुए। मैंने काफी मेहनत की परंतु हार गए एक वोट

से। कुछ पहले आता तो हारते नहीं शायद। मन में सुस्ती आ गयी। १३०) रु० साँवरमल जी को, १००) रु० लादूराम जी को दिए। शाम को मुरारकाजी के साथ नवलगढ़ आ गया। वहीं रहा।

कलकत्ता

१ अक्टूबर : सुबह बारिश बहुत ज्यादा थी। चारों तरफ पानी था। कल शाम को श्रीनिवास जी और बालेश्वर जी अग्रवाल (हिन्द समाचार) आए थे, रात में यहीं रहना पड़ा। आज १२ बजे गाड़ी से किसी तरह ऑफिस गया। ५ बजे डी० पी० गोयनका के गया, केलविन मिल के लिए। सौदा नहीं होगा। वे लोग दाम ज्यादा माँगते हैं। तबीयत कुछ ठीक मालूम देती है। खाने पर कंट्रोल है।

४ अक्टूबर : वर्षा बहुत जोर है। बंगाल में सब जगह बाढ़-सी आयी है। सड़कों पर पानी है। १० बजे मदन गोपाल जी रूँगटा के साथ स्कूल की जमीन देखने गया।

जसीडीह

१२ अक्टूबर : सुबह ७॥ बजे मैदान गया। वहाँ से कन्हैयालाल जी के घर गया। दो घंटे ताश खेला। फिर घर आ गया। १०। बजे सामान लेकर स्टेशन गया। गाड़ी छूट गयी थी, वापस आना पड़ा। उषा की सगाई जँच गयी है। दिन में १ बजे फिर स्टेशन आया। ट्रेन में सागरमल जी बागला अपनी स्त्री के साथ बनारस जा रहे थे। अच्छे भले आदमी हैं, रंगून के हैं। २७ ता० तक रंगून वापस जायेंगे। वर्मा के बारे में काफी जानकारी मिली। हिंदुस्तानियों के लिए पहले जैसी बात वहाँ नहीं रही। दिक्कतें हैं पर छोड़ते बनता नहीं। रात ८ बजे जसीडीह पूगा।

१४ अक्टूबर : सुबह देवघर गया। १०॥। बजे तक था। कविराज को दिखाया, उसने कहा क्रॉनिक डिसेंट्री है। दवा कल से शुरू करेंगे। उनका मन पर्पटी में नहीं है। कविराज अच्छे हैं, फीस नहीं ली। किताबें पढ़ता हूँ। मन लग गया है। भवन में बहुत आदमी हैं, ताश खेलता हूँ। इस बार ठाकुर निकम्मा आ गया, रसोई ठीक नहीं बना पाता।

१५ अक्टूबर : सुबह ५ बजे उठा। पैदल ही देवघर गया। प्रायः तीन मील घूमा। वैद्य जी से मिला। पेशाब एक्जामिन करायी। शूगर नहीं है, चिंता मिटी। वैद्य जी के पास एक घंटा बैठा रहा। दवा ली। ११ बजे घर आया। शाम को जोर से वर्षा आयी। मौसम अच्छा हो गया। शाम को पोद्दार जी के पास गया था। इन दिनों अपनी तबीयत में सुधार महसूस करता हूँ। फुर्ती मालूम देती है, नींद भी ठीक आती है।

बनारस

२१ अक्टूबर : सुबह वैद्य जी के गया। वे बीमार थे। दिन में राय कृष्णदासजी के भोजन करने गया। वैद्य जी की दवा शुरू कर दी है, वैसे तबीयत यहाँ ठीक मालूम देती है।

पिता जी की तवीयत यहाँ प्रसन्न हैं। वैद्य जी अच्छे मालूम देते हैं; दवा के दाम तो ज्यादा हैं। वनारस मन लगाने के लिए अच्छी जगह है। पिता जी काफी मेहनत करते हैं, इस आयु में भी।

कलकत्ता

२७ अक्टूबर : सुवह मैदान रोज जाता हूँ, दवा एक समय लेता हूँ। कांता के टी गार्डन साढ़े पाँच लाख में नथमल जी भुवालका की पार्टनरशिप में हो गया, पाँच आना, ग्यारह आना, अच्छा हुआ, मन में खुशी हुई। तवीयत शायद कुछ सुधर रही है। दवा तो कम ही ले पाता हूँ।

२९ अक्टूबर : दिन में २०० शेयर कांता के लिए लिया ४५३) रु० में। शेयर वाजार समान है। थोड़ी देर एक्सचेंज और शेयर वाजार भी गया था। लिखने-पढ़ने का काम कम हो पा रहा है।

दिल्ली

१८ नवंबर : सुवह ६। वजे पूगा। घर आते-आते ७।। वज गए। कागज वगैरह देखे। पार्लियामेंट वंद हो गयी, किसी का देहांत हो गया। वर्मा जी के घर गया, उनसे राजस्थान के वारे में वात की। चीन का दवाव वढ़ रहा है, शायद भारत को जमीन छोड़नी पड़ेगी। आनेवाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी। पार्लियामेंट के सदस्यों की गलती है, इस मामले पर पंडित जी को ढिलाई नहीं वरतने देते मगर हम लोगों को अपने से फुर्सत नहीं, स्टडी नहीं कर पाते इसलिए पंडितजी की नीति का विरोध भी ठीक से नहीं होता है। मैं भी उन्हीं में हूँ। रसोई की व्यवस्था यहाँ ठीक नहीं है, वाइफ को वनाना पड़ रहा है। सर्दी काफी पड़ने लगी है।

१९ नवंबर : ११ वजे पार्लियामेंट गया, दो क्वेश्चन पर सप्लिमेंट किए। आधा घंटा डिवेट माँगा है। शाम को अजमेर के लोढ़ा जी आए। मिल वेचना चाहते हैं।

२० नवंबर : ११ वजे एक वार पार्लियामेंट गया, फिर वर्मा साहव के पास। वहाँ से हरिदास मूँधड़ा के यहाँ डावरीवाल जी के साथ गया। कॉटन मिल के वारे में वातें कीं, दाम ज्यादा माँग रहे थे। २। वजे लोढ़ाजी के गया, ३।। वजे तक भीलवाड़ा मिल की वात की। वहाँ से पार्लियामेंट आ गया। ६ वजे तक घर आ गया। ठाकुर आ गया है। दस-वारह पत्र लिखे। कागजों की स्टडी भी की। तवीयत ठीक मालूम देती है। मन भी लग गया है।

२३ नवंबर : ९।। वजे एस० एन० सिन्हा के गया, उन्हें १७००) रु० दिए। खुश थे। डी० एन० तिवारी जी से वात की चाय वगीचों के वारे में। ५ वजे पार्टी मीटिंग में गया। ढाई घंटे लगे, अच्छा रहा। काफी स्पष्ट वातें हुईं, मैंने भी कहा। वर्मा साहव खुश थे।

डॉ० रामसुभग सिंह नहीं जमे। विड़लाजी को रूस जाने के वारे में पत्र लिखा और भी पत्र लिखे। रात में डायरी पढ़ता रहा।

२६ नवंबर : सुवह घूम लेता हूँ, तेल मालिश भी रोज कराता हूँ। १२ वजे जीप से एयर पोर्ट गया। १॥ वजे लाल वहादुर शास्त्री आए, वीमार से दिखाई देते हैं। काफी आदमी आए थे—गुप्त जी, मेनन, मनुभाई आदि सव। मनु भाई से भीलवाड़ा मिल की वात हुई। दिन में हाउस में था। रात में फिर मनुभाई के घर। रमेश जी के साथ गया। उसने मिल लेने की वतायी।

२७ नवंबर : मेरे जूट के क्वेश्चन को खास तवज्जुह नहीं मिली यद्यपि हाउस में सप्लिमेंट कम ही हुए। कल काँपियाँ माँगी। मनु भाई से, कानूनगो से वातें हुईं। रात में डेनमार्क पर लेख लिखाने की चेष्टा की परंतु मूड नहीं था। दिमाग में और वातें चक्कर लगा रही हैं। पढ़ना, लिखना या लिखाना शांत चित्त से ही होता है। मेरे लिए ऐसा मौका वहुत कम आता है, इसलिए देरी हो जाती है। डायरी भी रोज नियम से नहीं लिख पाता, वहुत-सी वातें छूट जाती हैं। तवीयत ठीक है, मन खुश है; वजन वढ़ता-सा मालूम देता है।

२८ नवंबर : सुवह पंद्रह डंड निकाले, तेल लगाया। साग खरीदते समय एक फलवाले से झगड़ा हो गया। वहुत उजड्डपन पर वह उतर आया। पुलिसवाले को वुलाना पड़ा। पास मेरे पास था, काफी लोग इकट्ठा हो गए। फलवाला माफी माँगने लगा। मेरे मन में थोड़ा खेद हुआ, फजूल में झंझट हो गयी। नहीं उलझता तो ठीक था। रात में ८॥ वजे के० के० विड़ला के गया। ८०००) रु० की कितावों की वात लायब्रेरी के लिए की।

३० नवंबर : स्वर्णसिंह जी से वात की। कल का टाइम दिया है। के० डी० मालवीय से ४ वजे मिलने का टाइम है। काटन मिल्स पर आधा घंटा डिवेट मिल गया है। आज जूट मिल्स पर डिवेट सात आदमियों की सही करा कर माँगा है। शाम को शिड्यूल कास्ट के मामले पर वोटिंग में वड़ी भद्द हुई, कल फिर होगी।

१ दिसंवर : सुवह ५॥ वजे गोवर्धनदास जी को कलकत्ता फोन किया। मिल में डेढ़-दो लाख तक लगा देंगे। वीकानेर महाराज से भी इस विषय में वात की। उनका मन कमती है। १० वजे मनु भाई के सेमिनार में गया। ११ वजे पार्लियामेंट गया, चाय पर क्वेश्चन था। मन में अवसाद-सा है, डेनमार्क का लेख अभी तक तैयार नहीं हो पाया। गर्ग होता तो जरूर कुछ काम होता, पीछे पड़ जाता है।

२ दिसंवर : ३ वजे फाइनेंस की मीटिंग थी। मैंने कुछ सुझाव भेजे नहीं; मुरारका और वावू भाई के थे। सिर्फ क्वेश्चन से कुछ होने का नहीं है। सुवह स्पीकर के घर गया, वहाँ से पार्लियामेंट आकर उनसे मिला। आधा घंटा डिवेट मंजूर हो गया है। एल० सी० की सव कमिटी में भी मेरा नाम है, शायद वंवई जाना पड़े। तवीयत काफी ठीक मालूम पड़ती है।

३ दिसंबर : पार्लियामेंट में क्वेश्चन नहीं था। दिन में नई सड़क पर जाकर कई तरह की किताबें खरीदता रहा। ११ बजे कॉमर्स सब कमिटी की मीटिंग थी, गया। मथुरादास जी माथुर राजस्थान कांग्रेस के प्रेसिडेंट हो रहे हैं।

४ दिसंबर : रात में भाई जी और नन्दू को फोन किए। मिल की बात की, बंबई जाने की तैयारी की। नन्दू की माँ नाराज थी। दम्माणी अपनी मिल के लिए कह रहे हैं, २० लाख अंदाज में। 'कौन' मालूम पड़ते हैं। बी० आर० भगत से मिलने गया था, ऑपरेशन हुआ है। अच्छा रहा, नहीं जाता तो कैसा ही लगता।

जयपुर

६ दिसंबर : ब्यावर वालों से मिला। सरदार हरलाल सिंह से मिला, बारीवाल जी से भी। ११ बजे मीटिंग में गया। मैं भी बोला, रामनाथ जी के विरुद्ध। दिन में पार्टी मीटिंग शुरू हुई, शाम तक होती रही। ऐसा महसूस करता हूँ, अब मीटिंगों में बातों की इंपारटेंस ज्यादा होने लगी है, काम की कम। उस तरफ की कोई शायद सोचता नहीं।

बम्बई

७ दिसंबर : सुबह ७॥ बजे प्लेन से बंबई पूगा। मिल ठीक चल रही है। मदन और भगवती आए। दम्माणी जी के शाम के गया, उनसे मिल के बारे में बात की। उनकी मंशा ऊँची मालूम पड़ती है। मदन को कम जँचती है। मदन ने बताया, भाई जी नाराज रहते हैं।

दिल्ली

१० दिसंबर : सुबह कुछ जल्दी उठ गया था। पैदल ही बिड़ला हाउस गया, ढाई मील घूमा। आज शाम को अमेरिका के प्रेसिडेंट का भाषण हुआ। वाइफ को ले गया था। आइजनहावर अच्छा बोले। वे सेना के रहे हैं किंतु अब राजनीति में हैं और सर्वोच्च प्रशासक। इतनी अच्छी जानकारी कैसे कर सके, कुछ आश्चर्य होता है। बिन्नाणी जी नागौर के सीट की सोच रहे हैं। दिन में दो घंटा सरदार शहर वालों के साथ किताबें खरीदने गया, २०००) रु० की किताबें ली हैं।

११ दिसंबर : आर० डी० ने एक मिल का प्रोपोजल दिया। अच्छा मालूम देता है। शाम को एग्रिकल्चरल एक्जिबिशन गया। जानकारी की बातें देखने में आयीं परंतु ऐसी प्रदर्शनी प्रत्येक राज्य में बारी-बारी से होनी चाहिए, इससे किसानों को काफी कुछ जानने का मौका मिलेगा। राजधानी में तो यह तमाशा-सा है।

१२ दिसंबर : राष्ट्रपति भवन में शाम को गया, पार्टी थी। ५००० आदमी थे। मन में कैसा-सा महसूस करने लगा। हमारे देश में विदेशी प्रथा की नकल जोरों से चल पड़ी है। पानी तो ऊपर से नीचे बहता है। थोड़े दिनों में इस दिखावे की बाढ़ में गरीब भी डूबेंगे।

१७ दिसंबर : सुबह जी० डी० बिड़ला जी से मिला। उनको वेस्टर्न इंडिया कॉटन मिल्स के बारे में कहा। उन्होंने कहा कि फाइनल होने के पहले चेष्टा कर देंगे। आजकल पार्लियामेंट का काम कम कर पाता हूँ। वाइफ के साथ एक्जिविशन गया, दो-ढाई घंटे रहे। एक रकम जाना जरूरी रहता है, मिनिस्टर और एम० पी० आते हैं, शायद दिखावे के लिए। मीटिंग प्लेस बन जाता है।

१८ दिसंबर : दिन में पार्लियामेंट गया, नए साल की डायरियाँ दीं। शाम को पंत जी के घर गया। मनु भाई से बी० आइ० सी० लेने की बात कह दी है। २५०० शेयर हिंदुस्तान मोटर्स के १७।-) में बेचे। स्टील माइंस और फाइनेंस की मीटिंग थी।

१९ दिसंबर : ९ बजे रूंगटा जी, मदन गोपाल जी और बी० सी० शुक्ल जी चाय पर आए। ९॥ बजे श्री अशोक मेहता के गया। ११॥ बजे भारत सेवक समाज की एक्जिक्यूटिव की मीटिंग में गया। मेरा सुझाव था कि नया प्रोग्राम लेना चाहिए। आजादी के बाद स्थिति बदली है। शुरू में जिला स्तर, बाद में गाँवों के स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा और हाथ के काम की योजना को खादी ग्रामोद्योग के सहयोग से करना ठीक रहेगा। सरकार के भरोसे काम नहीं होने का। वहीं कृष्ण प्रसाद जी मित्तल, गोयल जी से जान-पहचान हुई। इस संस्था के लिए कुंजरू जी ने बहुत किया, अपने को खपा दिया, पर अब ठोस काम नहीं रहने पर यह ज्योति बुझ सकती है। १२ बजे सोढानी जी के साथ ओखला गया। वहाँ दो फैक्टरियाँ देखीं। रुपयों के कारण अटक है। ४ बजे प्राइम मिनिस्टर की पार्टी में गया। ४॥ बजे सरदार हुकुम सिंह ने जे० आर० डी० टाटा को पार्टी दी, उसमें गया। आजकल पार्टी पॉलिटिक्स में पार्टियाँ बहुत काम करती हैं।

कलकत्ता

२७ दिसंबर : सुबह मैदान में जी० डी० बिड़ला जी के साथ घूमा। घर वापस आया। पता चला, सराफों के आनंदीलाल जी की वाइफ का देहांत हो गया। उसके साथ स्मशान गया। १२ बजे घर लौटा।

२८ दिसंबर : दिन में स्वर्णसिंह जी से मिला, काली प्रसाद जी खेतान और देवकीनंदन जालान से बातचीत हुई। शाम को बिड़ला पार्क में राजेंद्र प्रसादजी के साथ खाना खाने गया। बाहर के लोगों में केवल भागीरथ जी कानोड़िया, प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका थे।

३१ दिसंबर : सुबह घर पर ताश खेलने वाले आ गए। दिन में गद्दी गया। गर्ग आया था। उसके साथ बैठकर लेख जँचाए। तबीयत एक रकम ठीक है।

१९६०

कलकत्ता

३० जनवरी : सुबह मैदान जाता हूँ। शाम को 'वाइकिंग' अंग्रेजी फिल्म देखने गया। कितने असभ्य, वर्वर और निर्दयी थे, युरोपियनों के पूर्वज ! शायद अफ्रीका के जंगली ऐसे नहीं थे। मगर आज तो युरोप सभ्यता और संस्कृति का अगुआ माना जाता है। मेरे मन में आता है कि मनुष्य की मूल प्रवृत्ति में कोई खास अंतर आता नहीं, ऊपरी आवरण वदलता है। आज ३० जनवरी है, गांधी जी का निर्वाण-दिवस। सारा जीवन जिस सिद्धात के लिए उन्होंने लगाया, उसी के लिए उन्हें प्राण देने पड़े। कैसी विचित्रता है !

३१ जनवरी : डायरी झुंझनूं में गुम गयी, इसलिए जनवरी का व्योरा रह गया। इस महीने में वंबई, रतलाम, उज्जैन, भोपाल, देवास, नयी दिल्ली, वनारस, जसीडीह आदि विभिन्न स्थानों पर गया। वंबई में एक कपड़े की मिल शोलापुर में खरीदी, जिसका सौदा कैंसिल हो गया।

झुंझनूं

४ फरवरी : रात में ९॥ वजे स्टेशन आया। १० वजे देखा, सामान गुम गया। १०००) रु० का था, चिंता हुई। ७००) रु० नगद थे। मन खिन्न हो गया।

चिड़ावा

५ फरवरी : रात सर्दी थी। मन में चिंता भी थी। खैर, दूध पीकर कार से चिड़ावा गया। वहाँ लोगों से मिला। धोती खरीदी, तौलिया भी। चिड़ावा देखा। आर० के० डालमिया का एक स्कूल है, सोमानियों का एक कॉलेज देखा, अच्छा है। कमाये धन का इस ढंग का उपयोग होना भी चाहिए।

पिलानी

६ फरवरी : १० वजे पिलानी के लिए रवाना हुए। ११॥ वजे पूगे। बिड़ला बंधुओं की कृति पिलानी है, इसमें संदेह नहीं। सरस्वती मंदिर का निर्माण वहुत ही वड़ी और

सात्विक सूझ है। भारतवर्ष में पहले भी विद्या के कई केंद्र थे, तक्षशिला, नालंदा, काशी। दक्षिण में कांची, पूना, नासिक इत्यादि पर सरस्वती का मंदिर नहीं देखने में आया। मेरी धारणा है, इस नयी परंपरा का श्रेय बिड़ला-बंधुओं को है। बिड़ला परिवार के सब लोग यहीं मिले। घनश्यामदास जी से मिलना हुआ, शाम को ६ से ७॥ बजे तक संगीत का अच्छा प्रोग्राम रहा।

सीकर

७ फरवरी : सुबह ३॥ बजे उठा। गर्गजी भी जग गए थे। ट्रेन में जगह मिल गयी थी। सर्दी कुछ कम हुई है। ७ बजे सीकर पूग कर बजाज भवन गया। साँवरमल जी, किशन सिंह जी आदि से मिला। संगठन के बारे में बात की। उनको कुछ रुपए देने को कहा। लक्ष्मणगढ़ स्कूल का उद्घाटन किया, २॥ बजे। मीटिंग थी ६००-७०० छात्र और काफी लोग थे।

सरदार शहर

१३ फरवरी : तीन ही दिन दिल्ली रह पाया, फिर वापस राजस्थान। अपने क्षेत्र का दौरा कर रहा हूँ। लोग मुझसे बहुत उम्मीदें रखते हैं, कैसे समझाऊं मेरी सीमा है। सरकार को सुझाव दे सकता हूँ, अपने क्षेत्र के लिए दबाव दे सकता हूँ, पर काम करा देने की जिम्मेदारी कैसे लूं ? वह तो मेरे वश की बात नहीं। पर अभी हमारे देश की जनता इसे नहीं समझती। लोग नाराज हो जाते हैं।

सीकर

१४ फरवरी : सुबह सीकर पूगा। वहाँ से ८ बजे रघुनाथगढ़ गया। स्कूल की मीटिंग होती रही, उप-प्रधान की। आपस में वहाँ झगड़ा हो गया। इसके बाद चार-पाँच गाँवों में गया। मीटिंग हुई। लोगों की सुनी, अपनी कही, समझाया। रात दस बजे तक यही कार्यक्रम रहा। मैं समझता हूँ, इन गाँवों के आर्थिक विकास की कोई ठोस योजना नहीं बनेगी तो समय, श्रम और धन के सारे साधन व्यर्थ जायेंगे। साँवरमल जी मोर, किशन सिंह जी साथ थे। मैंने आपसी बात में सुझाव दिया कि सबसे पहले पानी की व्यवस्था अच्छी होनी चाहिए। इसके साथ-साथ कुटीर-उद्योग, गांधी जी का प्रोग्राम इस क्षेत्र में काफी सफल हो सकता है। परंतु इस पर बड़े नेताओं का ध्यान नहीं, वे लोग बड़े पैमाने पर हर काम करना चाहते हैं।

१५ फरवरी : सीकर से १० बजे सुबह चले। कई गाँवों में होते हुए शाम को ४ बजे लछमनगढ़ जाकर स्कूल की किताबें दे दीं। लोगों से भी मिले। रोज १० गाँव घूम लेता हूँ। आज भी राजस्थान में सरल जीवन है, विश्वास है, प्रेम है। काफी लोगों से सम्पर्क हो जाता है। मारवाड़ी में बोलता हूँ।

१६ फरवरी : दिन में कोठ्यारी में स्कूल देखा। बहुत अच्छा था। मोहन शर्मा पढ़ा रहे थे। ७५ लड़के थे। वातावरण भी बहुत अच्छा लगा। मैं एक जगह बैठ गया। जिस तेजी से स्कूल-कालेज बढ़ रहे हैं, उस गति से शिक्षित होने वाली नयी पीढ़ी के लिए काम की हम क्या व्यवस्था कर रहे हैं? पानी है नहीं कि खेती हो, दूसरे छोटे-मोटे उद्योग भी नहीं। १५-२० वर्षों में तो एक अजीब समस्या खड़ी होगी। एक साधारण-सी मीटिंग हुई, मैं भी बोला, मगर बहुत थोड़ा। बच्चों को देखने लगा, उन्हीं में अपना बचपन याद आ गया था।

१७ फरवरी : गाँवों का दौरा कर रहा हूँ। जगह-जगह का खाना और पानी, दौड़-भाग, शरीर पर असर कर गया। पेट खराब है, पतले दस्त आ रहे हैं। परंतु गाँवों में घूमना अच्छा लगता है। इन्हीं धोरों-टीबों में ही तो मेरा बचपन बीता था।

१८ फरवरी : सुबह नांगल की ढानी से चले। कई गाँवों में गए। बिगरासर आए, वहाँ से लोसल और खूड। खूड में २००) रु० एक स्कूल के लिए दिया, कोठ्यारी में २००) रु० का एक रेडियो। इसी प्रकार अन्य स्कूलों में भी रेडियो, किताबें वगैरह देने को कहा। यात्रा कुल मिलाकर अच्छी रही। इन ५ दिनों में प्रायः ७० गाँवों में गया। रात में सीकर वापस आ गया। रात में ८।। बजे जब स्टेशन पर दिल्ली के लिए आया, बहुत से लोग आए थे। झेंप सी लगी, मगर खुशी भी हुई।

दिल्ली

२२ फरवरी : सुबह ४।। बजे उठा। चिट्ठियाँ लिखीं। कागज-पत्र देखे। १०।। बजे पार्लियामेंट गया २ क्वेश्चन थे। अच्छे थे। जी० डी० बिड़ला अप्रैल में अमेरिका जा रहे हैं। मैं भी जाने की सोच रहा हूँ। मुरारी लाल जी केडिया बनारस से आये। अच्छी सूझबूझ और साहित्यिक रुचि के हैं। बात करने में मजा आता है। चुटकुले खूब सुनाते हैं। इन्हें पार्लियामेंट हाउस दिखाया। काम बहुत है, एक सहकारी रखे बिना काम पूरा पार पाना मुश्किल है।

२३ फरवरी : सियारामशरण जी के तथा हरिश्चंद्र वर्मा के गया। ९ बजे इंडस्ट्री-कॉमर्स की मीटिंग में गया। शास्त्री जी थे, मनुभाई, कानूनगो तथा बंबई के जोशी भी थे। टेक्सटाइल कमीशन के क्वेश्चन आवर में मेरा एक क्वेश्चन था। गंगाबाबू के साथ घर पर खाना खाया।

२९ फरवरी : १० बजे खाना खाकर घर आ रहा था कि ओंकार जी बोहरा मिल गये। उसके साथ मुरारजी भाई के घर गया। उसका जन्म दिन था। वहाँ पाटिल और रेड्डी भी मिले। वहाँ से मैं पार्लियामेंट हाउस गया। के० पी० गोयनका, एस० पी० जैन, रामेश्वर पाटोदिया आदि सब बजट सुनने आये, बी० पी० पोद्दार भी। बजट अच्छा रहा। शेयर बाजार काफी तेज है।

१ मार्च : सुबह ५॥ बजे उठा। ७॥ बजे तक प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका के साथ ४ मील घूमा। पी० डी० में इस उम्र में भी जो फुर्ती है, वह मेरे में नहीं। उनके साथ रहने पर बहुत कुछ सीखने को मिल जाता है। कितने तरह के काम उन्होंने अपने ऊपर ले रखे हैं सभी को ढंग से करते हैं जबकि मेरा काम अस्तव्यस्त होता है। बाद में उदासी मन में रहती है। ९ बजे मालिश; स्नान वगैरह करके मुरारजी भाई की मीटिंग में गया। ११ बजे तक चली। अच्छी रही। मैंने 'वेज बोर्ड' के बारे में कहा। १०॥। पर 'प्रश्नवेला' में राजस्थान की मिलों के बारे में मेरा एक सवाल था, काफी अच्छा रहा। अंग्रेजी अखबारों ने मेरा नाम नहीं दिया। थोड़ी निराशा सी हुई। ओंकार बोहरा जी सुबह चले गये। शाम को मैथिलीशरण जी के पास गया। अशोक मेहता के एक्सिडेंट हुआ है, उनसे मिलने गया। बालकृष्ण शर्मा नवीन से मिला। अग्नियुग के इन कवियों को राजसभा, लोक-सभा में लाना ठीक नहीं हुआ। मुझे ऐसा लगता है, इनकी प्रतिभा कुंठित हो रही है। साहित्य के साधक को राजनीति से क्या मतलब? कालिदास, सूर, तुलसी, भूषण ने राजनीति से अपने को दूर ही रखा था। रवीन्द्र, शरद, प्रेमचन्द ने भी।

३ मार्च : बद्री प्रसाद जी पोद्दार के साथ लालबहादुर जी शास्त्री से मिलने गया। प्रेम से बातचीत हुई। भले आदमी हैं, आडंबर नहीं है, कार्य-कुशल हैं। मुझे ऐसा लगता है कि काशी विद्यापीठ से निकले पहले के लोगों की विचार-शक्ति और कार्य-शैली कुछ खास रकम की होती है। सम्पूर्णानन्द जी, आचार्य नरेंद्रदेव वगैरह में भी इसी ढंग की विशेषता मिली। आज एक आदमी झुंझनू से आया। क्षय का रोगी था। बिना कहे घर पर आ गया, ठहरा भी। मुझे उसका गैरजिम्मेदार ढंग बुरा लगा। मैंने कुछ कड़े शब्द कह दिये। इतना नहीं कहना चाहिए था। मुसीबत का मारा था। उसे मैं ही दिखाई पड़ा, मुझे यह सोच लेना था। आगे से सावधान रहूँगा।

६ मार्च : पिछले कुछ दिनों से रात में नींद ठीक से नहीं आती। सर्दी बहुत जोर थी। सुबह बस से ११। बजे देहरादून पूगा। रास्ते में दृश्य अच्छे लगे। मन प्रसन्न हो उठा। अवसाद मिट गया। बस से उतर कर देखा ६०) रु० गुम गये। मन में खिन्नता आ गयी। शहर देखने का मजा जाता रहा। चिंता भी हुई कि दिल्ली वापस कैसे पहुँचूंगा। पार्लियामेंट का कार्ड बच गया था। स्टेशन आकर ट्रेन में सो गया। रात ९॥ बजे दिल्ली पूगा। सुखाड़िया जी जयपुर जा रहे थे। उनसे मिला, बातचीत की। शायद किसी ऑफिसर को मिलों का कन्ट्रोलर बना रहे हैं। इससे थोड़ी निराशा-सी हुई क्योंकि इस ढंग से शायद ही कोई ठोस लाभ मिले; फिर भी अच्छे के लिए ही उन्होंने सोच-विचार कर ऐसा किया होगा।

सरदार शहर

१२ मार्च : सुबह ९॥ बजे स्टेशन पर पूगा। शंकर आया था। भाई जी से मिला,

राजी हैं। वाजार गया। होली की साधारण सी धूम है। रात में होली का पूजन किया। स्कूल की सव तैयारियाँ हो रही हैं।

१३ मार्च : वाल मंदिर में अग्रवालों की पंचायत हुई। सव घर पर आये, स्कूल वनाने के लिये विरोध में। मैंने और भाई जी ने, दोनों ने उन्हें डाँट कर कहा। आखिर रास्ता वैठ गया, राजी हो गये। शाम को लोगों से मिलने गया।

दिल्ली

७ अप्रैल : इन दिनों मन खास नहीं लगता है। शाम को शास्त्री जी के साथ एक फंकशन में गया। जैनेन्द्र, अक्षयकुमार, यशपाल आदि थे। वापस आने पर पता चला कि विड़ला जी ने खाने पर वुलाया था, देर हो गयी। जा न सका। पालियामेंट में कोई खास रुचि नहीं है, क्वेश्चन है नहीं, कुछ मन भी खिन्न रहता है।

अम्बाला

८ अप्रैल ७ वजे शाम को घर आया था कि फोन आया कि अंवाला में पुष्पा वगैरह को कार एक्सिडेंट से चोट आयी है। ८ वजे कार से चला, रात १॥ वजे पर अंवाला पूगा।

अम्बाला

९ अप्रैल : सोहन वावू, पुष्पा के काफी दर्द है परंतु कोई खास चोट नहीं है चिंता कम हो गयी। १००) रु० मेरे खर्च हो गए। ट्रेन से दिल्ली के लिए १२ वजे रवाना हो गया। ट्रेन ही में नींद आ गयी थी।

दिल्ली

१३ अप्रैल : एक दांत कढ़ाया। दिन में मैथिलीशरण गुप्त अभिनंदन के कार्ड वाँटे और कुछ लिखे भी। ४ वजे पार्लियामेंट गया। चौधरी कुंभाराम मिले। एलेक्शन की चेष्टा कर रहा हूँ।

१४ अप्रैल : मनु भाई के यहाँ गया। आधा घंटा था। वहाँ से साउथ एवेन्यू गया। कार्ड दिए, एलेक्शन की वात भी की। शायद इस वार हो जाऊँगा। पार्लियामेंट में भी कार्ड वाँटता रहा। सारे दिन में १०० कार्ड वाँटे।

१७ अप्रैल : पेट दुखता है, पतले दस्त हैं। शायद यह मेरी जिंदगी के साथ लगा है। परंतु इसके लिए काम करना वंद नहीं करता। लोग कहते हैं, वुरा होगा। दवा ले लेता हूँ। कुछ ठीक हो जाता है मगर मैं अपना ढंग वदल नहीं पाता। ८॥ वजे राष्ट्रपति भवन पूगा। ११॥। वजे तक फंकशन था। प्राय: ५०० आदमी थे, चुने हुए, विशिष्ट लोग। अच्छा रहा। राष्ट्रपति वहुत अच्छा वोले। वहाँ वहुत से लोगों से नजदीकी जान-पहचान हुई। एलेक्शन के लिए चेष्टा कर रहा हूँ।

२१ अप्रैल : चुनाव की तैयारी हो रही है। चेष्टा भी पूरी कर रहा हूँ। कमलनयन बजाज भी आए हैं। देखें क्या होता है। घूमने कम जा पाता हूँ पर तेल-मालिश रोज कराता हूँ।

२४ अप्रैल : चिंता लगी है, दिन में लिखा-पढ़ी की। ओंकार जी आए। दिन में मेंबरों के घर गया। सुबह जगजीवनराम जी के घर गया। महाराज बीकानेर के यहाँ गया, अच्छा रहा।

२७ अप्रैल : सारे दिन चुनाव अभियान रहा। सुखाड़ियाजी का फोन आया। उन्होंने बैठ जाने को कहा। ऐसा मालूम देता है कि इस बार मैं जीत जाऊँगा, जरूर। काफी प्रचार हुआ है। आज भी लोगों से फोन से और मिलकर के बात की और एक नये तरीके पर प्रचार किया। परंतु मन में चिंता तो बहुत है।

२८ अप्रैल : सुबह खा-पीकर १०॥ पर पार्ल्यामेंट चला गया। कमलनयन ११॥ बजे आए। वोटिंग मेरे फेवर में होती मालूम हुई। इस बार चेष्टा भी बहुत रही और अच्छी प्लानिंग के ढंग से। कमलनयन वहीं पर थे। ४ बजे तक पता चल रहा था कि मैं जीत जाऊँगा।

२९ अप्रैल : रात में नींद नहीं आयी। १०॥ बजे पार्लियामेंट गया। १५ मिनट में ही मेरी जीत का पता चलने लगा। आखिर, मैं जीता। रामसुभग जी भी जीते। प्रभुदयाल जी और सारे मित्र जीत गए। मन में अच्छा लगा। इज्जत बढ़ गयी। सब बधाई दे रहे थे।

कलकत्ता

१९ मई : इन दिनों कोई खास बात नहीं हुई। मिलना-जुलना, घूमना चलता है। कसरत रोज नियमित नहीं कर पाता। तबीयत ठीक रहती नहीं। जर्सीडीह जाकर 'आम-कल्प' करने का सोचा है। ३ बजे गंगा बाबू और सीताराम जी के साथ 'क्षुधित पाषाण' देखने गया। अच्छा था। बँगला सिनेमा वाले मूल रचना को जहाँ तक संभव है सही उतारते हैं पर हिंदी सिनेमावाले तो भ्रष्ट कर देते हैं। गंगाबाबू का कहना है कि हिन्दी सिनेमा के क्षेत्र में अल्पशिक्षित लोग अधिक हैं, और इन लोगों का दृष्टि-कोण हल्का रहता है। ६ बजे विधवा-विवाह में गया। अब तो ऐसे विवाहों पर ज्यादा टीका-टिप्पणी नहीं होती, बल्कि लोग सराहना करते हैं परंतु पहले कितनी मुसीबतें उठानी पड़ती थीं।

शिलांग

२३ मई : सुबह की प्लेन से ११। बजे शिलांग उतरा। लाहोटी जी के पास ठहरा। १॥ बजे तक फिरोज गाँधी जी के पास था; वहाँ बरुआ. फखरुद्दीन अहमद थे। फिरोज़

जी की बात से ऐसा लगता है कि वे सरकार के काम करने के ढंग से खुश नहीं। फखरुद्दीन अहमद ढुलमुल हैं अपना चाँस बनाते हैं। परंतु मुझे इन सब से क्या मतलब? मैं तो अपने विचार स्पष्ट रखूंगा। ठंड है, मौसम बहुत ही अच्छा है।

२६ मई : श्री फिरोज गाँधी के लिए यहाँ आया था। एक प्रकार से अच्छा रहा। कोल माइंस के दामों का तार दिल्ली दिलाया। मि० मित्र से सिमेंट कंपनी के लिए मिला।

जसीडीह

२ जून : स्वास्थ्य सुधारने आया हूँ। कितने दिन रह पाऊँगा, ठीक नहीं। सुबह तीन मील घूमा, ३ बार दूध लिया, आम खाए। इलाज शुरू कर दिया है।

८ जून : सुबह २ मील घूमा। ११॥ बजे तेल-मालिश। खाना आजकल डेढ़ सेर दही या मट्ठा, ३ पाव दूध का छेना। दूध कुल ढाई सेर, २० छोटे आम, ६ फुल्के, आधा सेर साग। २ बार बेल की ठंढई लेता हूँ। तबीयत ठीक है, कसरत थोड़ी शुरू की है। ८ दिनों में ३ किताबें 'बूंद और समुद्र', 'सुनीता', 'गढ़कुंडार' पढ़ी हैं। कल बाघमारा पुस्तकालय के लड़के आए थे, २० किताबें दे दीं।

आगरा

२४ जून : २ बजे आगरा पूगा। गरमी बहुत थी। ३॥ बजे ताज गया। कड़ी धूप में सफेद संगमरमर नजर टिकने नहीं देते थे। कब्र के पास जाकर बैठा। कुछ ठंडक सी थी। अच्छा लगा। मुमताज और शाहजहाँ अगल-बगल चिरनिद्रा में सोये हैं। जिंदगी में मुगलिया ताज का कितना बड़ा बोझ शाहजहाँ को सम्हालना पड़ा और मृत्यु के बाद उसकी मिट्टी पर ताजमहल का कितना बड़ा बोझ है। ४। बजे दयाल बाग गया। अब तक राधास्वामी पंथियों का यह मंदिर (समाधि) बन ही रहा है। न जाने क्या बनाना चाहते हैं, कब तक बनेगा। संगमरमर पर काम कलापूर्ण है, किंतु बहुत प्रभावी नहीं लगते। दयालबाग ने शुरू के दिनों में जो उद्योग-धंधे चलाए थे यदि उस पर ध्यान देते तो बहुत उपकार होता। सुनने में आया कि इन लोगों में भी आपसी खींचातानी बहुत है। यहाँ से रिक्शा करके ५ मील पर कैलास गया। राबी जी से मिला। मुझे अच्छे आदमी लगे। एक घंटा रहा। जंगल-सी जगह है यमुना किनारे। शांत वातावरण है। ८॥ बजे लौटा। गोरधन होटल में खाना खाया, अच्छा था।

पठानकोट

२६ जून : सुबह ७ बजे पठानकोट पूगा। वहाँ मुन्नी के पति की निगह की। कुछ पता नहीं चला। ८ बजे की बस से चले। दिन में १२ बजे जम्मू पहुँचे। एक वैष्णव होटल में खूब डट कर खाना खाया, अच्छा-सा था। १॥ बजे जम्मू से चला, शाम को बटोट में ठहरे। डाकबंगले में अच्छी जगह थी। साथ में चौधरी रणवीर सिंह का लड़का था और साथी भी थे। रात में काफी सर्दी लगी। एक दुकानदार के यहाँ अच्छा खाना मिल गया। थकावट थी, नींद जल्दी आ गयी।

बटोट, श्रीनगर

२७ जून : बटोट से सुबह ७॥ बजे चला। ११ बजे एक जगह आधा सेर खुमानी खायी। १२ बजे वेरीनाग। एक झरना है, वहाँ गए। बहुत ही सुंदर स्थान है। स्विट्जरलैण्ड में ऐसी उन्मुक्त एवं स्वाभाविक सुंदरता नहीं देखने में आती। यह जगह इतनी सुंदर है—साक्षात् स्वर्ग। ३ बजे श्रीनगर पूगा। एक गुजराती होटल में ठहरा। ५।) रु० रोज में साधारण कमरा था। ५॥ बजे निशात बाग और शालीमार बाग गया। सुंदर है, सजीला भी, पर मुझे तो प्रकृति अपने स्वाभाविक रूप में ज्यादा आकर्षक लगती है।

श्रीनगर

२८ जून : सुबह ७ बजे उठा। रात में थकावट बहुत आयी थी। देर से सोया भी। १०॥ बजे फिरोज गाँधी के गया। वे लोग सोनमर्ग गए हैं, इसलिए मिलना नहीं हुआ। शहर घूमता रहा। चश्मेशाही गया। वहाँ कई परिचित मिल गए। कश्मीर के बारे में बातचीत हुई। सुबह ९ बजे बख्शी अब्दुल रशीद से मिलने सीताराम जी तथा साहनी जी के साथ गया था।

२९ जून : सुबह ५ बजे नींद खुल गयी। ५॥। बजे ताँगा से शंकराचार्य गया। चढ़ाई भी पड़ती है। ऊपर का दृश्य सुंदर था। भारतीयों में विशेषता रही है कि प्रकृति की प्रत्येक रम्यस्थली में मंदिर या तीर्थ बना दिए हैं। इससे अनजाने में ही पर्यटन-भ्रमण हो जाता है। सांस्कृतिक एकता भी सुदृढ़ होती है। ९॥ बजे फिरोज गाँधी, इंदिरा गाँधी के गया। आधा घंटा था। इंदिरा जी प्रेम से मिलीं। लौटकर बाजार आया। ऐसा लगता है, कश्मीर के मामले में हम लोगों ने कुछ बुनियादी भूल की है। शेख अब्दुल्ला के प्रति इनमें बहुत विश्वास है। अन्य प्रदेश के लोगों पर यहाँ काम करने या बसने का प्रतिबंध हटाना चाहिए नहीं तो आगे चलकर झंझट हो सकती है। अमरनाथ जाने की तैयारी कर रहा हूँ। रात में सामान खरीदने गया। १० बजे आकर हिसाब लिखा।

गुलमर्ग,-खिलनमर्ग

३० जून : सुबह जालान जी के पास गया। वहीं पर शांतिलाल भाई, शाहू राम किशोर जी, शंकर सहाय जी शर्मा, एम० पी० के० मिनिस्टर, जगतबाबू बिहार के मिले। एक बजे कार से जालान जी के साथ गुलमर्ग गया। बहुत अच्छी जगह है। ११,५०० फीट की ऊँचाई पर खिलनमर्ग भी गया। पर्वत-श्रेणियों के हिमशिखरों को देखकर मन में ईश्वर की लीला के प्रति अपने आप भावना उमड़ती है। थोड़ा-सा बर्फ पर फिसलने का आनंद भी लिया। साहस का काम है, अभ्यास हो तो खूब आनंद आता है। इस जगह से जाने का मन नहीं करता था। ९ बजे तक वापस आया। जून में जसीडीह ज्यादा रहा। पिछले दिनों, मैं दिल्ली और कश्मीर के लिए चला आया। एस०

टी० सी० से झमेला हो गया, कंट्राक्ट रद्द हो गए। मिल भी खराब चल रही है। मेरी तबीयत ठीक नहीं।

श्रीनगर, मार्तण्ड, पहलगांव

२ जुलाई : सुबह जालान जी के पास गया। ३ मील घूमा। तबीयत कुछ ठीक मालूम देती है। किशमिश, नीबू रोज लेता हूँ। ११।। बजे बस से पहलगांव को चला। रास्ते में मार्तण्ड तीर्थ देखा। पंडे के पास बिरजू का और नन्दू का नाम था। भला आदमी था। मैंने १) रु० दिया। ज्यादा देने चाहिए थे। यही तो इनकी आजीविका है। हम मौज-शौक में खर्च करने में नहीं हिचकते तो अपनी परंपरा को सम्हाले रखनेवालों के लिए कंजूसी क्यों? बाद में पछतावा हुआ। शाम को ३ बजे पहलगाँव पूगा। गुजराती होटल में ठहरा, साधारण-सा था।

पहलगांव

३ जुलाई : आज तबीयत ठीक मालूम दी। मालिश करायी। खाना भी अच्छा मिला। दही, खिचड़ी, मक्खन वगैरह। सुबह एम० एल० सोढानी से मिला। वे श्रीनगर चले गए। मध्य प्रदेश के लॉ मिनिस्टर एस० डी० शर्मा शाम को जीप से चंदनवाड़ी चले गए। मैं कल घोड़े पर जाऊँगा। पहलगाँव काफी घूमा। ढलता सूरज शाम को अजीब रंगें बिखेरता है। यहाँ जो जगहें मैंने देखी, सबसे सुंदर हैं।

पहलगांव, चन्दनवाड़ी, शेषनाग

४ जुलाई : सुबह ९ बजे चड्ढा जी की गाड़ी से ४ मील गया, फिर घोड़े पर चंदनवाड़ी। वहाँ खाना खाया। १२।। बजे शेषनाग के लिए चले। रास्ते में बर्फ के दृश्य देखता जा रहा था। कहीं-कहीं तो लगता था, बर्फ के पुल से बने हैं।

५ जुलाई : सुबह शेषनाग में ५ बजे उठा। घोड़े पर ६ बजे चला। रास्ते में अभूतपूर्व दृश्य देखने को मिले। घोड़े पर से उतर पड़ा और पैदल ही बर्फ पर चला। मन में एक बात उठती थी कि क्यों ऋषि-मुनि हिमालय की बर्फीली चोटियों पर अनंत को खोजते थे। क्या वहीं परम आनंद है? १२,००० फुट ऊँचाई पर था। साथ में थे मध्यप्रदेश के मिनिस्टर शर्मा जी और कानपुर के चड्ढा जी। उनके बच्चे और स्त्री भी। पंचतरणी एक बजे पूगा। १।। बजे अमरनाथ के मंदिर के घंटे की आवाज सुनायी दी। मन मुग्ध हो गया। मंदिर गया। ऐसा लगा, जीवन की एक साध पूरी हो गयी। स्वयं ही भक्ति-भाव जग उठे। तीन बजे वापस लौटा। पंचतरणी में रुककर विश्राम किया। खास थकावट नहीं थी।

पंचतरणी, शेषनाग, श्रीनगर

६ जुलाई : सुबह ४ बजे सर्दी काफी थी। पंचतरणी से ५ बजे रवाना हुए। बर्फ पर

ही चला। अच्छा मालूम दे रहा था। ऊपर चढ़ती दफे जितना डर मालूम देता था, उतना वापसी में नहीं। ८ वजे चंदनवाड़ी पहुँचे। भूख लग आयी थी, भरपेट भोजन किया। एक वजे घोड़े पर चला। ३ वजे पहलगाँव पूगा। मध्यप्रदेश के मिनिस्टर शर्मा जी मोटर से आए।

दिल्ली

८ जुलाई : सुवह किशमिश का पानी पिया। खाने-पीने की इन दिनों खास सुविधा नहीं रही। फिर भी गड़वड़ नहीं थी। ऐसा महसूस होता है कि एक आदमी सफर में वरावर साथ रहना चाहिए। दिल्ली में दिन में भूखा ही रहा, शाम को जैन होटल में खाना खाया। दिन में एस० टी० सी० वाले से मिला था। अभी कुछ रास्ता नहीं वैठ पा रहा है, पार्लियामेंट ऑफिस भी गया था। गंगावावू के गया था, वहाँ पीटर अल्वरिस से मिला।

जयपुर

९ जुलाई : सुवह ७॥ वजे जयपुर पूगा। सीधा ज्ञानचंद जी मोदी के घर गया, खाना वहीं खाया। माथुरजी से मिला, सुखाड़िया जी उदयपुर गए थे। घारीवालजी भी नहीं थे। मोहन शर्मा मिल गए। वताया, व्यावर मिल वहुत अच्छी चल रही है। रात में ज्ञानचंद जी के साथ 'चौदहवीं का चाँद' सिनेमा देखा। मुस्लिम समाज पर हमारे यहाँ सामाजिक फिल्में एक ही ढंग की वनती हैं। कोई खास नयी वात नहीं थी। अभिनय अच्छा था, कुछेक गाने भी। रास्ते में डॉ० कालिदास नाग से भेंट हो गयी। प्रेम से मिले।

दिल्ली (रेल)

१० जुलाई : सुवह ७॥ वजे पूगा। रात में नींद आ गयी थी। दिल्ली मेल में जगह थी। ईश्वरदास जी जालान, हीरालाल जी शास्त्री, साथ थे। दिन अच्छी तरह कट गया। दोनों ही राजनीति के क्षेत्र में अच्छे अनुभवी हैं, समाज के लिए भी वहुत काम इन लोगों ने किए हैं। कानपुर में ४ वजे कई लोग ईश्वरदास जी को लेने आए, प्रायः १५ लोग थे। जयपुरिया जी भी थे। मुझे भी कहा, परंतु मैंने उतरना ठीक नहीं समझा। दिन में व्लिट्ज, हिंदुस्तान टाइम्स, संडे स्टैंडर्ड आदि पढ़ता रहा। जयपुरिया जी ने कहा, तुम्हारी तवीयत खराव नजर आती है, इलाज करना चाहिए। मेरे भी मन में विचार आया, वास्तव में तवीयत तो खराव है।

कलकत्ता

१३ जुलाई : कलकत्ते की स्थिति स्ट्राइक को लेकर कैसी-सी हो रही है। वैसे, कामकाज चालू है। शेयर मार्केट गया। ४०० शेयर फिलिप्स कार्वन के १९≈) में वेचे। वाजार नर्म-सा है।

१४ जुलाई : कलकत्ते में आज पूरी तौर पर हड़ताल रही। मगर शांतिपूर्वक समाप्त हो गई।

गौहाटी

१७ जुलाई : सुबह प्लेन से जगन्नाथ जी बेरीवाल, मैं, सीताराम केडिया, पुरुषोत्तम जी केजड़ीवाल, गोहाटी गए। वहाँ पर एन० के० के ठहरे। खाना खाकर फिर लोगों से मिले। कैंप देखे। मारवाड़ियों से, असमियों से बात की। हेम बरुआ, गोस्वामी और आसाम पी० सी० सी० के प्रेसिडेंट से मिले।

शिलांग, नवगांव

१८ जुलाई : पानी जोर से आ रहा था। फिर भी प्रोग्राम बदला नहीं। माणिकचंद जी, फखरुद्दीन अली अहमद, मइनुल हक चौधरी और विजय भगवती से भी। मुझे फखरुद्दीन अली अहमद थोड़ा पहचान पाये। खैर, पंडित जी से मिलना तो नहीं हुआ। इंदिरा जी आयीं नहीं। ५।। बजे कार से नवगाँव आए, कैंप देखे। यहाँ काफी नुकसान हुआ है।

कलकत्ता

२६ जुलाई : सुबह जी० डी० के साथ ३।। मील घूमा। 'सन्मार्ग' में काफी बड़े हरफों में आसाम की मेरी यात्रा का विवरण था, परंतु जगन्नाथ जी वगैरह का नाम नहीं था, यह गलती रह गयी।

दिल्ली

३० जुलाई : दिन में गंगाबाबू, सुरेंद्र मोहन घोष से मिला। १० बजे कांग्रेस पार्ल्यामेंटरी पार्टी की एक्जिक्युटिव की मीटिंग में गया। वहाँ बहुत से लोग मिले। बातचीत हुई। मैं आसाम पर कुछ भी बोल नहीं पाया, कुछ दूर बैठ गया था। सुबह एयरपोर्ट पर गया था। डॉ० बी० सी० राय, फखरुद्दीन अली अहमद, अतुल्य घोष, एम० एम० शाह से मिला। गाड़ी की चाभी गुम गयी, चिंता की बात हो गयी, कल घड़ी गुम गयी।

सीकर

३१ जुलाई : सुबह सीकर पूगा। किशन सिंहजी और साँवरमल जी मिले। ५००) रु० कांग्रेस को दिए। काम ठीक-सा चल रहा है। बस से १२।।। बजे रींगस पूगा। वहाँ से ट्रक पर ४।। बजे श्री किशन जी की खानों पर पूगा। वहाँ से बारीवाल जी के साथ डाबला गया। वहाँ स्कूल का जलसा था। मुझे भी कुछ चंदा देने को कहा। बारीवाल जी से ब्यावर मिल की बात हुई। कहते हैं कि मिल ने जून में ७५,०००) रु० कमाया। यह ट्रिप कुल मिला कर अच्छी रही। कई माइन ओनर मिले।

दिल्ली

१ अगस्त : बम्बई, ब्यावर फोन किया। भाई जी की नीति स्पष्ट नहीं रहती,

कोई काम करने का मन उनका नहीं रहता है। आज पार्ल्यमेंट खुली। लोगों से मिलना-जुलना हुआ। क्वेश्चन देखे, साधारण से हैं।

४ अगस्त : सुबह ९। बजे से १० बजे तक सोमानीजी से पार्ल्यामेंट में होनेवाले कपड़े के डिवेट पर डिस्कस किया। शाम को क्लॉथ डिवेट में हिस्सा लिया। सोमानीजी ठीक बोले। दूसरे मेंबरों ने काफी इंटरेस्ट लिया। परसों डिवेट फिर है।

सीकर

७ अगस्त : सुबह १० बजे सीकर पूगा। १० बजे गाँवों की तरफ जीप से गया। ५०) पेट्रोल वगैरह के खर्च हुए। कई गाँवों का दौरा किया इससे काफी फायदा रहता है, लोगों से निकट का संपर्क होता है। साथ में रामचंद्र जी चौधरी, किशन सिंहजी, सांवरमल मोर थे। लोगों में अच्छा उत्साह है। कांग्रेस की स्थिति ठीक है। शायद अगली वार कांग्रेस जीत जायगी।

दिल्ली

९ अगस्त : सुबह दद्दा के यहाँ गया। आज 'भारत छोड़ो' आन्दोलन दिवस है। इस पर कुछ वातें हुईं। अव इस क्रांति की वात कौन याद करता है। पी० सी० सी० को ६००) रु० दिए।

कलकत्ता

१५ अगस्त : दिन में लोगों से मिला। ताश खेला। शाम को कॉलेज स्ट्रीट की तरफ दंगा हो गया। स्थानीय सरकार यदि प्रांतीयता की भावनाओं को उभारने की राजनीति में पड़ेगी तो देश के लिए वहुत वुरा होगा। ऐसी छोटी-छोटी वातों को भी कड़ाई से दवाना चाहिए। इतने वर्ष हो गए हमें आजाद हुए, फिर भी हम भारतीय नहीं हो पाए, वंगाली, मद्रासी, पंजावी, गुजराती ही रह गए। आज पंद्रह अगस्त है। स्वाधीनता दिवस के लिए कोई खास उत्साह नहीं, दिखता। बंबई के काम से सत्यनारायण को संतोष नहीं है।

१६ अगस्त : सुबह मैदान गया, वर्षा आ रही थी। ५-६ जगह स्कूल के चंदे के लिए गया। दिन में रतनलाल भरतिया से मिला। भरतिया स्टील वेचना चाहता है। सत्यनारायण के कम जँची। जी० डी० जटिया के गया १०,०००) रु० चंदे के मिले।

१९ अगस्त : दिन में रतनलाल भरतिया से मिला। उसको भरतिया स्टील का ऑफर दिया। रात में भाई जी से वात की। सौदा क्लोज कर लिया है। मन में काफी चिंता सी रही। रतनलाल ने कल १०॥ वजे बुलाया है। वावू जी के काम अच्छी तरह जँच गया है।

२० अगस्त : सुवह १०।। वजे रतन भरतिया के ऑफिस गया। वावू जी, नन्दू साथ थे। एडवांस के शुरू में दे दिए, चिट्ठी ले ली। भाई जी, मदन की मनाही आयी है। मन में वड़ी दुश्चिता रही। शाम को पुरुषोत्तम जी के यहाँ ताश खेलने गया। लोगों को सौदा बुरा नहीं लगा। भाई जी का रात में फोन था, काफी नाराज थे।

२५ अगस्त : आज सुवह मदन वगैरह आ गए। मदन, विरजू फैक्टरी लेने से नाराज हैं। मेरे मन में काफी चिंता सी हुई। क्यों इतनी झंझट की ? यह तो नफे का सौदा है और लोग भी इसके 'वायर' हैं, नहीं लेता तो और भी मुश्किल होती।

२६ अगस्त : सुवह देवीप्रसाद जी गोयनका से मिला। उन्होंने इंडियन वैंक और यूनियन वैंक को फोन कर दिया, रुपयों के लिए भी कह दिया। चीज तो सव अच्छी वताते हैं।

२९ अगस्त : कलकत्ते १७ दिन रहा, तवीयत ठीक नहीं है। लक्ष्मीनिवासजी विड़ला से मिला। भागीरथ जी से वात की। ४। वजे भरतिया स्टील की मीटिंग में हम लोग डायरेक्टर हो गए। विरजू ने २००० शेयर लिए। रुपयों का एक वार तो वन्दोवस्त हो गया है। परंतु जव तक इंडिया वैंक वाला नहीं आता है, चिंता रहती ही है। इन दस दिनों में वड़ी मेहनत करनी पड़ी और मन में भी चिंता रही।

३० अगस्त : सुवह सव कोई कारखाने गए। वहाँ जेनरल मैनेजर ने कारखाने को अच्छा नहीं वतलाया। मन में वड़ी चिंता हुई। सव लोग मुझसे नाराज हो गए। वापिस वेचने की वात कहते हैं। अगर नहीं विक पायगा तो मेरी वड़ी हँसाई होगी। भाई जी का फोन आया, लॉयड्स वैंक रुपया देने को नट गया।

३१ अगस्त : इस महीने भरतिया स्टील लेकर वड़ी गलती कर वैठा। सव घर वाले विरोध में थे, तव मुझे ही क्या दरकार थी ? तवीयत खराव हुई ही, झंझट में पड़ना पड़ा। खैर, परमात्मा ठीक करे।

दिल्ली

७ सितंवर : मन कैसा-सा रहता है। गलती मेरी है। सव नाराज हैं। मैंने तो अच्छा समझ कर ही किया। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं। पेशाव उतरता नहीं। सलाई ली, खून आता है। समय ही खराव है। दिन में पार्लियामेंट में था। मन नहीं लगा। सत्यनारायण से वात हुई, भाईजी से भी, रुपयों का वंदोवस्त नहीं हुआ। चिंता हुई। ३ वजे मदन चला गया। मोटर १०२००) रु० में वेच दी।

जयपुर

८ सितंवर : मीटिंग ८ वजे थी; जलवोर्ड चला गया। कारवाई में काफी रुचि ली। ध्यान वँट जाने से मन कुछ हल्का हुआ। लोगों से मिला। १०।। वजे तक मीटिंग में था।

फिर जोगेन्द्र सिंह जी मेहता, विष्णुदत्त जी शर्मा से मिला। सरदारशहर-चुरु के बारे में बातचीत की। १२।। बजे खाना खाया, बड़ा रद्दी था। फिर साइकिल पर असेंबली गया। बी० सिंह मेहता से जलबोर्ड के बारे में मिला। नाराज थे, झंझट होगी।

सरदार शहर

१० सितंबर : ८।।। बजे सरदारशहर पुगा। ट्रेन में रेडियो जी थे। दोनों समय सुमेर जी के जीमा। ५०) रु० महाराज को दिए। कुँवे पर, स्कूल पर गया। काम देखा। वर्षा से नुकसान हुआ हैं। स्कूल अच्छी बन रही हैं। सरदारशहर ४ महीने बाद आकर दवाई लेने का विचार हैं।

दिल्ली

११ सितंबर : मन अशांत हैं। इधर-उधर भटकता हैं, शांति नहीं मिलती। दिन भर लोगों से मिलता रहा। सुबह चन्द्रभानु गुप्त, त्यागी जी, डॉ० नगेन्द्र वगैरह से मिला। ६ बजे 'मुगले आजम' सिनेमा देखने गया, साथ में दद्दा, सेंगरजी, डॉ० नगेन्द्र थे। मुझे कुछ जँचा नहीं। मुगल बादशाहों पर बनी फिल्में प्रायः एक ही ढंग की बनती हैं। बस तड़क-भड़क में कुछ फर्क भले ही हो।

१३ सितंबर : १० बजे सुबह एयरपोर्ट पर सब गए। सर्वपल्ली राधाकृष्णन आए। ज्ञान भारती का फंकशन आज हैं। शांति प्रसाद जी जैन थोड़ी देर से आए। खैर, फंकशन अच्छा रहा। एक लाख स्कूल को मिला। मैं भी ठीक से बोला। बीच में थोड़ा सा हिचकिचा गया। सुबह कुछ जगह चंदे में भी गया। कारखाने की चिंता लग रही हैं। रुपयों का बंदोबस्त नहीं हो पा रहा हैं। लोगों को रुपए देने हैं।

१५ सितंबर : बाजार बहुत मंदा हैं। भरतिया शेयर १२।।।) हैं। रावतमलजी नोपानी से शाम को मिला। छः आने हिस्सा रखने को तैयार हैं।

१९ सितंबर : गंगा जी गया, तेल-मालिश करायी, अच्छा मालूम दिया। फिर चंदे के गए। प्रायः २५,०००) रु० मंडा। बिड़ला जी की माडर्न स्कूल देखी, सीताराम जी के साथ। अच्छा लगा। रुपयों के बंदोबस्त की चिंता हो रही है। रात में ९ बजे बंबई का फोन आया। बंदोबस्त बैंक का हो गया। एक बड़ी चिंता मिट गयी।

२० सितंबर : भरतिया स्टील को लेकर ताने मिलते रहे परंतु कल बंबई का फोन आ जाने से सुविधा रही। आज छुट्टी थी। पितृ-विसर्जन अमावस। सुबह गंगा जी गया, वहाँ काफी भीड़ थी। लोग तर्पण कर रहे थे। पूर्व पुरुषों को याद कर उन्हें अंजलि के जल से तृप्त करने के पीछे कितनी सात्विक भावना है; आज तो जीवितों के प्रति कृतज्ञता नहीं बरतते। याद भी नहीं करते।

२५ सितंबर : सुबह गंगा जी नहीं जा सका। कई जगह चंदे के लिए गया। रात खाना खाकर विमल मित्र का 'साहब बीबी गुलाम' पढ़ता रहा। आज अशोक मेहता आए।
२६ सितंबर : कारखाना ७ दिनों के लिए बंद है। दिन में शेयर वगैरह का कितना ही काम किया। जे० थामस की ऑफिस भी गया। २२०० मन पाट मत्थे धरा।

दिल्ली

२९ दिसंबर : दिन में कई जगह गया। लोगों से मिला। कमजोरी सी महसूस करता हूँ। इन दिनों भरतिया वाली चिंता से शरीर को काफी नुकसान हुआ। श्री केशव देव मालवीय के गया, कपिला जी के गया। मातादीन खेतान यहीं हैं। सुखाड़िया जी से मिला। बहुत सी बातें हुईं, राजनैतिक भी।

सरदार शहर

१ अक्टूबर : दिन में दीपचन्द जी सेठिया के पास सुमेरमलजी ढंढारिया के साथ गया। बहुत ही अच्छे सज्जन पुरुष हैं। ज्ञान की बातें कीं। वाइफ के सर्दी जोर से हो रही है। सुबह ताल की तरफ घूमने गया था। अच्छा लगा, खुली हवा, सरल जीवन। बचपन की बहुत सी बात याद हो आयीं। पचास वर्ष का हो गया। नाम और धन कमाया मगर शांति और शरीर गँवाया। ऐसा मालूम पड़ता है, यहाँ की आबहवा मुझे जँच जायगी। गाय लेने की चेष्टा हो रही है।

४ अक्टूबर : भाईजी आए। नन्दू, माँ और भाई जी राजलदेसर चले गए। मैं रह गया। दिन में मिलता-जुलता रहा। लाइब्रेरी में मन लग जाता है। कई पत्र लिखे। पार्लियामेंट के क्वेश्चन भेजे। वजन हुआ, १५० पौंड मालूम नहीं इतना कम क्यों? शायद काँटा खराब है, शरीर तो स्वस्थ लगता है रात में शरद् पूर्णिमा की झाँकियाँ देखने मंदिरों में गया।

६ अक्टूबर : तीन मील घूमना हो जाता है। ताराशंकर की 'आरोग्य निकेतन' खतम की। अच्छी किताब है। शशि कंपाउंडर का चरित्र अच्छा बना है। शरद् बाबू के बाद बंगला उपन्यासकारों में इन्हें अच्छा सम्मान मिला। विमल मित्र का 'साहब बीबी गुलाम' बहुत बड़ा है। वैसे विषय-वस्तु के अनुसार बड़ा है। समकालीन समाज का बहुत स्वाभाविक वर्णन मिलता है। लाइब्रेरी रोज नियम से जाता हूँ। चंदभानु गुप्त को पत्र दिया, बधाई का। वे जीत गए।

७ अक्टूबर : तेल मालिश कराकर स्नान करता हूँ और सो जाता हूँ। ताश खेलता हूँ, मतीरे का रस और मौसमी का रस पी लेता हूँ। पाट का बाजार बहुत तेज सुनकर मन में चिंता हुई।

१४ अक्टूबर : कई पत्र लिखे। शाम को बाजार में धूल उड़ने लगती है। जी घबरा उठा है। अब यहाँ मन नहीं लग रहा है परंतु रहना ही होगा। मकान तेजी से बन रहा

है। परसों कच्चा दूध पी गया था। गलती कर बैठा। पतले दस्त आते रहे। आज कुछ ठीक है। मगर कमजोरी आ गयी। रात काफी देर तक ताराशंकर वंदोपाध्याय की 'कालिंदी' पढ़ता रहा। वहुत अच्छा लिखते हैं। मेरी धारणा है, ये वँगला के प्रेमचन्द हैं।

१५ अक्टूबर : 'स्नेहयज्ञ' गुजराती उपन्यास खत्म किया। अच्छा है। परंतु बंगला वाली वात नहीं है। कभी-कभी यह सोचता हूँ कि वँगाल में रहने के कारण वातावरण का प्रभाव शायद मेरे स्वभाव पर पड़ा है, इसलिए वंगला में उपन्यास मुझे अधिक अच्छे लगते हैं। कंपनी के कागज पढ़कर चित्त दुखी हुआ। वैंक की लिमिट घट गयी है। पाट में भी घाटा हो गया है।

१७ अक्टूबर : दिन में चंदनमल जी वैद्य आए। ५००) रु० शहीद स्मारक को देने के लिए कहा, रुपये तो मेरे पर भी खर्च हो ही जाते हैं, अच्छे काम में लगें तो उत्तम है।

१८ अक्टूबर : १२ वजे सोढानी जी, साँवरमल, रामचंद और किशन सिंह जी और वैद्य जी आए; वे लोग ४ वजे तक थे। ५००) रु० कांग्रेस को दिए, ६०) रु० और खर्च हो गए।

१९ अक्टूबर : कल से सौंफ-सोंठ की दवा शुरू की है। ताराशंकर की 'रायकमल' पढ़ी। आज शायद ३६ वर्षों वाद यहाँ की दीवाली देखी। वहुत ही साधारण-सी। फिर भी, इसमें शांति का प्रकाश है।

सरदार शहर

७ नवंबर : २५-२६ दिल्ली रहकर वापस राजस्थान आ गया। तव से गाँवों का दौरा कर रहा हूँ। तवीयत एक रकम ठीक है। चिंता शरीर को तोड़ती है। यहाँ रहने से चिंता कम रहती है। कई आदमियों के साथ उदासर गया।

सीकर

१५ नवंबर : सुवह ७ वजे सीकर पूगा। रात में चूरू स्टेशन के वेटिंग रूम में सो गया था। सीकर से १०॥ वजे नेछवा चला गया। वहाँ साँवरमल जी मोर, द्वारका प्रसादजी, मदनलाल जी, लछमनगढ़ वालों से मिला। कोठ्यारी भी गया। राजनीतिक स्थिति इन जगहों की ठीक है। पंचायतों के चुनावों की तैयारी हो रही है।

दिल्ली

२२ नवंबर : कलकत्ता जाना व्यर्थ रहा। स्वास्थ्य और मन दोनों खराव हुआ। रात ९ वजे दिल्ली पूगा। शिमला जाने का विचार था, वह अभी हटा दिया। ट्रेन में मुहम्मद इलियास मिले। रास्ते में वातें करते, कितावें पढ़ते समय कट गया। मन में उदासी है।
२३ नवंबर : सुवह सत्यनारायण का फोन आया, जे० के० वाले भरतिया स्टील में

इंटरेस्टेड हैं। भाईजी से पूछूंगा। इस वार पार्लियामेंट के कामों में एकदम पिछड़ गया, गाँवों का दौरा, अस्वस्थ शरीर, नाना प्रकार की चिंताओं के कारण। शाम को इंद्राणी रहमान का नृत्य देखा। भावपूर्ण और कलात्मक लगा।

सरदार शहर

५ दिसंबर : आज दवा का आठवाँ दिन है। दूध ४॥ सेर पिया। अनार तीन पाव लिया, बारह-चौदह पत्र लिखे। कलकत्ते से नन्दू का पत्र है, कारखाना बहुत अच्छी तरह चल रहा है। नवंबर में एक लाख का फायदा नेट रहेगा। दिसंबर में शायद और भी वेशी रहेगा।

१४ दिसंबर : वजन ठीक से बढ़ रहा है। तबीयत ठीक मालूम देती है। दूध ५ सेर तक बढ़ा दिया है। १२-१५ दस्त आते हैं।

१६ दिसंबर : इन दिनों पत्र-व्यवहार काफी करता हूँ। एक सिंधी लड़का जयदेव आता है। यद्यपि पढ़ा-लिखा तो कुछ कम ही है परंतु उसको दिल्ली ले जाने की सोच रहा हूँ। पर्ल बक की 'माइ सेवरल वर्ल्डस्' खतम की। अच्छी किताब है। 'गुड अर्थ' जब मैंने पहले पढ़ी तभी धारणा बनी थी कि इसमें प्रतिभा है। आज भी याद है, चीनी समाज का जितना वास्तविक चित्रण उसमें मिला, उतना अन्यत्र कहीं नहीं।

२० दिसंबर : आज दवा का २२वाँ दिन है। मन में उत्साह-सा है। सीकर का पत्र साँवरमल जी मोर का है, ५००) रु० मँगाया है और २० दिन के लिए जीप माँगी है। मैंने देने को मंजूर किया है। पंचायतों के चुनाव एक तरह से ठीक से ही हुए हैं। मन से मैं ऐसे पंचायतों का समर्थक नहीं। इनमें राजनीति और दलबंदी को बढ़ावा मिलता है। अपनी पुरानी प्रथा अच्छी थी। उसमें थोड़ा हेर-फेर करके आज के मुताबिक बनाया जाता तो ठीक रहता।

२१ दिसंबर : दिन में १० कागद दिए। सत्यनारायण का पत्र था। भरतिया स्टील में नवंबर में नेट फायदा अच्छा हुआ। मन में संतोष हुआ। पिता जी भी खुश थे। कल जा रहे हैं। रात में ७ बजे से ८॥ बजे तक रामायण सुनी।

२४ दिसंबर : वजन १६० पौण्ड है। इतना शायद कभी नहीं हुआ। स्वास्थ्य भी इन दो-ढाई वर्षों की अपेक्षा ठीक मालूम देता है। दूध ५॥ सेर, अनार एक सेर लेता हूँ।

३० दिसंबर : वजन एक मन ३९ सेर है। अब नहीं बढ़ रहा है। शाम को सोहनलाल वैद्य आए, उनसे काफी देर तक बात हुई। तबीयत तो ठीक है पर इन दिनों वजन नहीं बढ़ा।

३१ दिसंबर : पार्लियामेंट के कुछ क्वेश्चन बनाए। आज वर्ष का अंतिम दिन है। इस वर्ष फाइनेंस के हिसाब से ठीक ही रहा। नया काम भरतिया स्टील का किया। मुझे चिंता सी रही, पार्लियामेंट का काम ज्यादा नहीं कर सका।

१९६१

सरदार शहर

१ जनवरी शायद ३६ वर्ष वाद नया दिन देश में मना रहा हूँ। ३४ दिनों से दवा ले रहा हूँ, पपर्टी, वजन वढ़ा है। चेहरे पर रौनक मालूम देती है। वहुत दिनों वाद स्वास्थ्य में सुधार हुआ। मन में एक तरह की खुशी हुई। दवा जयचंद महाराज देते हैं। अच्छे वैद्य हैं, भले आदमी। पत्र-व्यवहार रेगुलर चालू है। काफी पत्र आते-जाते रहते हैं। दूध पाँच सेर और वेदाना एक सेर लेता रहता हूँ।

पिछले वर्ष भरतिया स्टील खरीदने से मन में वहुत संताप रहा। गलती मेरी थी। परंतु अव यह कारखाना वहुत अच्छा चल रहा है। नववर-दिसंवर में ३ लाख का नफा होगा।

३ जनवरी : थकावट नहीं है। २-२॥ घंटे ताश खेल लेता हूँ। हिंदी की कुछेक किताबें पढ़ लेता हूँ। कल से पार्ल्यामेंट के प्रश्न वनाने शुरू कर दिए। आज ४० सवाल दिल्ली भेजे। लेख तैयार करने की चेष्टा में हूँ। सुमेरमलजी आँचलिया, लादूराम जी गोलछा, जयचंद लाल जी वोथरा आदि सव आ जाते हैं। मन एक दम लग गया है। परंतु दवा लेने में कुछ आलस आता है। झूठ कम वोलना पड़ता है। २-३ दिन से सर्दी ज्यादा है। पंजाव की तरफ वर्फ पड़ी है। वहाँ पॉलिटिक्स की हालत खराव है, फतेह सिंह की भूख हड़ताल चालू है। जे० पी० सलटाने की चेष्टा कर रहे हैं। पंचायतों के चुनाव में कुंभाराम जी की पार्टी जीत गयी है। मैंने अपनी जीप सीकर भेजी है। कल मगनमलजी संचेती आए थे। कहते थे, ६ महीने तक पूरे परहेज के साथ रहना होगा।

३१ जनवरी : ५॥। वजे स्टेशन पर आया। रतनगढ़ में दिल्ली के लिए वीकानेर मेल में जगह मिल गयी। सरदार शहर की यह यात्रा अच्छी रही। वजन भी वढ़ा। मन भी लग गया। अव वजन २ मन ५ सेर है। इतना शायद इन वर्षों में कभी नहीं हुआ था। कलकत्ते कम जाऊँगा, दिल्ली ही ज्यादा रहने का विचार है। वाइफ ने काफी कष्ट सह कर इलाज को पूरा करवाया और भी लोगों ने काफी मदद की।

दिल्ली

५ फरवरी : सुबह ८ वजे पहुँचा। शाम ६ वजे नार्थ एवेंन्यू का फ्लैट देखा, अच्छा है फर्निश्ड भी है। ३ वजे सोमानी जी के घर गया, काफी बातें हुईं। उन्होंने कहा कि माथुरजी कहते हैं, सीकरवाले मेरे से खुश नहीं हैं और अगले वर्ष व्यापारियों को टिकटें कम देंगे।

१५ फरवरी : सुबह घूमने गया तथा विश्वायतन योगाश्रम भी गया। स्वास्थ्य ठीक है, वजन भी ठीक है। किताब वाला काम आगे नहीं बढ़ पाया। कांगो पर मेरा सवाल अच्छा था, पर स्पेलिंग में गलती कर गया। थोड़ी हँसी हुई।

१ मार्च : सीकर का दौरा कर सुबह दिल्ली आ गया। ११ वजे पार्ल्यामेंट गया। १॥ वजे तक लोगों से मिलता रहा। १२॥ वजे राजस्थान के मेंबरों की मीटिंग थी। बीकानेर महाराज ने मुझे जयपुर आने को कहा। स्पीकर ने कहा, पार्ल्यामेंट कम अटेंड करते हो। ध्यान रखूंगा। मन नहीं लग रहा है।

७ मार्च : पंडित गोविंद वल्लभ पंत का देहांत हो गया। स्वाधीनता संग्राम का एक वीर सेनानी हमारे बीच से चला गया। सोचता हूँ, इनकी पीढ़ी के लोगों जैसे कर्मठ आगे क्यों नहीं हो पाए। पंत जी के घर गया। १॥ वजे तक था और भी बहुत लोग आए थे। बीकानेर हाउस सुखाड़िया जी के पास गया। माथुर, नाथूराम मिर्धा, रामनिवास मिर्धा, हरिभाऊ उपाध्याय आए थे। पंतजी के लिए लोगों के मन में काफी शोक है।

१४ मार्च : सुबह बिड़लाजी के साथ घूमा। ८॥ वजे रामकृष्ण जी डालमिया के सिकंदरा रोड में गया। १०। पर एक्जिक्युटिव की मीटिंग में गया। लालबहादुर जी, नंदा जी, मुरार जी भाई थे। ११ वजे पार्ल्यामेंट में सवाल था। कल कोयले पर पार्ल्यामेंट में प्रश्न है। मुझे दस मिनट बोलने का मौका मिलेगा। अच्छा नहीं बोल पाता, मन में चिंता सी रहती है।

रामपुर, मेरठ, दिल्ली

१७ मार्च : रामपुर इंजीनियरिंग वर्क्स देखने गया। रुपयों की कमी से घाटे में चलता है। अगर १० लाख रुपए लगायें तो नफा कर सकेगा। आदमी सब भले हैं। रामपुर शहर गया। महल और बाजार देखा। कोई खास नहीं। नवाबी जमाने में इन्हें गाने का शौक रहा, शिक्षा के लिए भी कुछ किया, पर केवल मुसलमानों के लिए, जबकि अधिकांश प्रजा हिंदू रही। फिर भी नवाब कट्टर नहीं रहे। खांडसारी की मिल देखी, लाभ का काम है। ५ वजे नौचंदी का मेला देखने मेरठ गए। अच्छा मेला लगता है। काफी

प्रसिद्ध है। विहार के हरिहर क्षेत्र के मेले की तरह बड़ा तो नहीं, फिर भी इस अंचल का काफी वड़ा मेला है।

कलकत्ता

२५ मार्च : चारों तरफ पुरुषोत्तम जी के चुनाव की चेष्टा करता रहा। थकावट महसूस हो रही है। वजन भी घट गया है। कई मीटिंगों में गया। कलकत्ता ज्यादा नहीं ठहरूँगा। चुनाव में पुरुषोत्तम जी की जीत मालूम पड़ती है। मेरी राय है कि १२५-१५० मतों से पुरुषोत्तम जी विजयी होंगे।

२७ मार्च : दिन में पुरुषोत्तम जी की गिनती थी। ५ वजे रघुनाथ जी, गोविंद जी के साथ घूमा। ६ वजे तक हार निश्चित सी हो गयी। घर आकर सुस्त होकर पड़ गया। फिर फोन आया पुरुषोत्तम जी जीत गए। वापिस गया, काफी देर बाद घर आया। मन में कुछ शांति मिली।

२८ मार्च : आज दिन में सावित्री चांडक जीत गयीं। ३२ मतों से। काफी चहल-पहल रही, वड़ा जुलूस निकला। हजारों आदमी थे। सावित्री जी का जीतना मारवाड़ी समाज के लिए वड़ी वात है, पता चलता है महिलाएँ भी आगे वढ़ रही हैं। चुनावों में शायद मेरे आने से ही जीत हुई, लोग ऐसा कहते हैं।

दिल्ली

१२ अप्रैल : ५।। वजे विड़ला पार्क घूमने गया। ७।।। वजे साइकिल से डॉ० रामसुभग सिंह के घर गया। काफी वातचीत हुई। घर में काफी मेहमान आए हैं, जगह की कमी है। गंदगी हो जाती है। शाम को वी० आर० भगत के यहाँ खाने पर गया।

२४ अप्रैल : दिन में मुरारजी भाई से मिला। वे चुनाव में खड़े रहेंगे, ऐसा मालूम पड़ता है। मैं सोचता हूँ, मुझे लोग कुछ कम अच्छा समझते हैं। मुझे इंप्रूव करना चाहिए। जगजीवनराम जी ने कहा, चुनाव में मुझे ज्यादा हिस्सा नहीं लेना चाहिए। परंतु आदत से लाचार हूँ।

२८ अप्रैल : सुवह दद्दा के गया। १० वजे पार्लियामेंट हाउस। हस्ताक्षर वाली वड़ी भूल कर दी। शायद मुरार जी भाई जीत जाते। पंडित जी काफी गुस्से में थे। ६ वजे पार्टी मीटिंग हुई। कई भाषण हुए। मालूम पड़ता है, चुनाव सरक जायगा। जगजीवनराम जी आए थे। पंडित जी ने सव अधिकार ले लिए। मन में हस्ताक्षर वाली चिंता हुई और लोगों ने भी कहा, थोड़ा सोचकर काम करना चाहिए। मुरार जी भाई आए थे, उन्होंने मेरे दस्तखत के वारे में कहा, मेरी वड़ी गलती हो गयी।

३० अप्रैल : इस महीने कलकत्ते से ३ ता० को आया। तीन वार जयपुर गया, दो वार सीकर। एक वार शिमला गया। वजन शायद २।। सेर घट गया। कुल ३।। सेर वजन घट गया। वैसे, तवीयत ठीक रही। २९ को रूस जाने का प्रोग्राम वना लिया,

घनश्याम दासजी ने कहा, मुझे भी जँची। अमेरिका जाने का भी मन है, पर अभी विज़ा नहीं मिलेगा, फिर कभी सही। तबीयत एक रकम ठीक रही।

कलकत्ता

२ मई : दिन में चुनाव में खड़ा होने का विचार किया। लोगों से मिलता-जुलता रहा।

दिल्ली, ताशकंद

११ मई : ५॥ बजे एयर पोर्ट पहुँचा। कस्टमवालों ने जाँच नहीं की। ६॥ बजे ताशकंद पहुँचे। रास्ते में हिमालय की बर्फ की चोटियाँ देखने को मिलीं। यात्रा-वर्णन अलग से नोट करना ठीक रहेगा। बहुत सी पाबंदियाँ हैं।

बम्बई

२० जून : सुबह ५ बजे बंबई पूगा। प्रभुदयाल जी सीधे चले गए। यात्रा अच्छी रही। बहुत कुछ देखा, समझने की कोशिश की। राजनीति के नाम पर वाद को बढ़ाना खतरनाक लगता है। राष्ट्र के जीवन में तनाव आता है। अपने देश में भी यह रोग घर कर चुका है। भाई जी एयर पोर्ट पर आए थे। ४५) रु० चुंगी के लगे। मिल की प्लानिंग ढंग से नहीं होने से नुकसान लगता है।

कलकत्ता

२८ जून : प्रभुदयाल जी के यहाँ बैठने गया। उनकी लड़की चलती रही। बड़ी दर्दनाक बात हुई। १२ बजे गंगाबाबू आए। बसंती वगैरह कल दिल्ली से आयीं। उन्होंने अपनी १८,०००) रु० की कान की लूंग खो दी। चिंता-सी हो रही है।

३० जून : सुखाड़िया जी रविवार को कलकत्ता चंदे के लिए आ रहे हैं। बिधान बाबू भी चंदा करेंगे। जी० डी० ने कहा, तुम लोगों का भी नाम है। शाम को दिनकर जी घर आये। ९। तक कविता होती रही। अच्छा लगा। दिमाग का तनाव दूर हो जाता है।

१ जुलाई : रात में सुखाड़िया जी से फोन पर बात हुई, बोले, चिंता की बात नहीं है, सम्हल जायगा। माँ जी तथा वाइफ कहती हैं, चुनाव में खड़ा नहीं होना है।

६ जुलाई : सुबह लालाजी का फोन आया, उनका लड़का गुम गया। ६॥ बजे ग्रांड होटल में मनुभाई शाह के पास गया। पी० डी० भी थे। फिर उनके साथ इंडिया फैन में गया। इंद्रजित गुप्ता और काली मुकर्जी से बात हुई। श्री गुप्ता को घर पर बुलाया। दिन में विजय सिंह जी नाहर के पास गया, फिर कालीपद मुकर्जी के पास। शाम को ८ बजे तक लालाजी के यहाँ था।

७ जुलाई : मनु भाई के मेरे यहाँ आ जाने से काफी लोग आये। पुलिस कमिश्नर, डी० सी० और ए० सी० के पास गया, फिर लालाजी के आया। ६ वजे एयर पोर्ट गया। ७ वजे मनुभाई चले गये। तारकेश्वरी सिन्हा भी आयी थीं, विहारीलाल खंडेलवाल के यहां ठहरी थीं।

८ जुलाई : १२ वजे मुहम्मद इलियास आये। कारखाने की वात की। शाम को इंद्रजित गुप्ता, लेद ‾‾ लीडर आये, वातचीत की। फोन आया कि सुशील मिल गया।

१३ जुलाई : ९॥ वजे वी० एम० विरला के गया। स्कूल के लिए ५०,०००) तय हो गया है।

२० जुलाई : एस० पी० जैन के यहाँ राजस्थान के वारे में काफी वातचीत हुई। मेरी सीट तो प्राय: तय ही है। एस० पी० जैन से और भी काफी वातें हुईं, आपस में जो गलतफहमी थी, वह वहुत अशों में मिटी। ऐसा मालूम पड़ता है, शायद मुझे राजस्थान असेंवली में जाना पड़े।

कलकत्ता-दिल्ली

२३ जुलाई : सुवह मैदान गया। वहाँ से वापू जी के साथ प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका के गया। ट्रस्ट की वातचीत की। नया ट्रस्ट वनाने की जँची। दिन में कमलनयन वजाज मिले थे। शाम को ७॥ वजे प्लेन से रवाना हुआ। वहुत लोग आये थे। १०॥ वजे दिल्ली पूगा। टैक्सी लेकर गुड़गाँव आया। २०) लगे। १७) ए० सी० सी० के लगे। एक वजे रात तक सुखाड़िया जी से वातचीत करता रहा। काफी वातें हुईं। मेरी सीट तो पक्की-सी ही है।

नयी दिल्ली

११ अगस्त : एडवर्ड मिल का काम रास्ते पर है। मैथिलीशरणजी, वर्मा साहव के गया। मोटर खुद चला रहा हूँ। मनु भाई को चाय-संदेश दिये। १२॥ वजे इंदिरा जी से मिला। कृष्णा जी से जान-पहचान की। १२ वजे पार्ल्यामेंट आया, लोगों से मिलता रहा। सोमानी जी से फोन पर बात की। उनको सीट नहीं मिल रही है।

लाडनूं-सुजानगढ़-विदासर

१३ अगस्त : सुवह रतनगढ़ में आँख नहीं खुली, छापर में जगा तव तक लाडनूं चला गया था। वहाँ से फिरती तांगा से सुजानगढ़ आया। वहाँ से मोटर से मदन जी कंकरा-निया के साथ वीदासर आया। पुजजी महाराज के आया। काफी आदमी इकट्ठा थे। मैंने भी व्याख्यान दिया। साधारणतया अच्छा था। ५ वजे सुजानगढ़ पूगा। एक चाय-पार्टी शुभकरणजी दसाणी ने दी थी। २५-३० आदमी आये थे।

ब्यावर

१५ अगस्त : सुबह १० बजे ब्यावर पूगे। स्टेशन पर बहुत से आदमी आये थे। दिन में कांग्रेस ऑफिस में गये। शाम को डूंगरी पर आई० एन० टी० यू० सी० की पार्टी थी। उसमें गये। १००-१५० आदमी थे। दालबाटी बनायी। रात हो गयी, वर्षा आ रही थी। खास जंची नहीं। ब्यावर वाली बात पार पड़ जाती मालूम होती है।

नई दिल्ली

२१ अगस्त : सुबह ५ बजे कलकत्ता नन्दू को फोन किया। ब्यावर के शेयरों के २५०००) मँगाने के लिए। नन्दू का फिर फोन आया; एस० एन०, बिरजू, बापूजी सब बहुत नाराज हैं। मन में बहुत ही दुख हुआ। बिरजू कल आ रहा है।

२२ अगस्त : कलकत्ते से बापू जी के नाना तरह के पत्र आ रहे हैं। काफी नाराज से हैं। बिरजू से काफी बातचीत हुई। एस० एन० का फोन था। मन में बहुत ग्लानि-सी हो रही है। रात में २-२॥ बजे तक नींद नहीं आयी।

२९ अगस्त : एक आदमी की पास में दरकार है। पार्ल्यामेंट का काम कुछ भी नहीं कर पाता हूँ।

३१ अगस्त : आबिद अली लेबर मिनिस्टर से मिला। नन्दू की चिट्ठी आयी। चिंता की सी बातें हैं। रात में मुहम्मद इसहाक और बीरेन लेबर लीडर के साथ अशोका होटल गया, ३५) खर्च हुए। कारखाने के संबंध की बातचीत थी। स्वामी शरणानंद जी का प्रवचन अच्छा था। इस महीने में एस० टी० सी० का १,२१०००) बाकी था। वह आने की बात हो गयी। ब्यावर मिल का काम काफी आगे बढ़ा, पर भाइयों में मनमुटाव हुआ। मेरा मन काफी खिन्न रहा।

२ सितम्बर : दद्दा के साथ बिड़ला मंदिर गया। ब्यावर का फोन था, ९॥-१० लाख रुपया लगाना होगा। कपास और सूत का बाजार मंदा है। एस० एन० का पत्र था, मरतिया स्टील का भाव १०॥।) है, चिंता के से समाचार हैं। रूपयों की टान लिखी है। रात में सीकर के लिए रवाना हुआ। सीकर फोन भी किया। आगरा २-३ बार फोन किया।

कलकत्ता

५ सितंबर : सुबह ६ बजे पूगा। रात में प्लेन में तकलीफ तो होती है। नन्दू, एस० एन० एयर पोर्ट पर आये थे। सीधा हरचंदराय जी के पास गया। काफी बीमार हैं। रोते हैं। मन में कैसा ही लगा। शायद ज्यादा दिन न बचें। दिन में ऑफिस गया। कामकाज देखे। मरतिया स्टील एक तरह से उसी रकम चल रही है।

१३ सितंबर : सुबह गंगाजी गया, तेल-मालिश करायी। पुरषोत्तमजी के घर गया ताश खेली। एक बजे चोरबागान गया। घर आया, जीमकर ऑफिस गया। ४ बजे मजदूरों के लीडर से बात की। शाम को ६॥ बजे तक चोरबागान था। ८ बजे हरचंद राय जी का शरीरांत हो गया। रात में ८॥ बजे फिर गया। २ बजे तक गंगा जी और श्मशान में था। हरचंद राय जी के जाने से मन दुखी हुआ। शुरू के दिनों में इनका बहुत सहारा मिला, मैं आगे बढ़ सका।

नयी दिल्ली

२५ सितंबर : ११ बजे पार्ल्यामेंट गया। प्रश्न दिये। सियाराम शरण जी के गया बीमार हैं। वहीं सेंगरजी तथा और मित्र भी मिले।

जयपुर

२७ सितंबर : जगजीवन रामजी आये थे। माथुर साहब रामकिशोर जी, व्यास संपतराम जी मिले। सीकर से लोग आये हैं। जयपुर में बहुत लोग आये हुए हैं। काफी भीड़ है। टिकटें तय हो रही हैं। सुनते हैं, अब तक ८६ टिकटें रात में तय हो गयी हैं। सारे दिन टिकटों की भाग-दौड़ में घूमता रहा। किशन सिंह और रामचंद्र को अब तक टिकट नहीं मिले हैं। सुखाड़िया जी से सुबह मिला। तबीयत परेशान सी है।

ब्यावर

३० सितंबर : ब्यावर में पिछले दो दिन से काफी व्यस्त रहा। सार्वजनिक कार्य, पार्टी वगैरह। काफी लोग आये। रानी वालों से सौभाग्यमल के बारे में बात की। उसकी खास गलती नहीं थी। मिल के बारे में बातें हुईं। वे लोग २ लाख से कम में तय नहीं करना चाहते। मन में दुख हुआ। रात में मिल के सपने आते रहते हैं। नर्वस वीकनेस सी है। एक बजे मिल में डायरेक्टर्स मीटिंग थी। सब काम सुचारुरूप से हो गया। ३ बजे तक मिल में था। ४ बजे एक पार्टी में गया। टाउन हाल में काफी लोग थे। मैं भी अच्छा बोला। ७ बजे सोमानी जी की पार्टी में था। एक बजे ट्रेन पर आया। काफी लोग पहुँचाने आये। ब्यावर की यात्रा कुल मिलाकर अच्छी रही।

जयपूर-सीकर

१ अक्तूबर : सुबह २ मील घूमा। रानीवाला के गया। राजस्थान बैंक वगैरह को फोन किया। धारीवाल जी से मिला। दामोदर जी के पास गया, थे नहीं। २॥ बजे सीकर पूगा। साँवरमल जी शाम को आये। बड़ी मीटिंग बाजार में हुई। मैं बोलने लगा तब हल्ला हो गया। बंद करनी पड़ी। मन में कैसा ही लगा। घर आकर सो गया।

नयी दिल्ली

८ अक्तूबर : ब्यावर से जयपुर, खंडेल, सरदारशहर, कोटपुतली, नीमका थाना,

वरूंदा का दौरा करता हुआ, आज ७। वजे सुवह दिल्ली पूगा। नन्दू को फोन किया। सव ठीक है। वीकानेर हाउस में फोन किया। सुखाड़ियाजी राजस्थान में ही हैं। माथुर साहव आज वंवई से आयेंगे। नन्दू तथा वाइफ ने कलकत्ता वुलाया है। शाम को वीकानेर हाउस गया। माथुर और कुंभाराम जी थे। जयपुर की सीटों के वारे में वातें हुईं।

हनुमानगढ

११ अक्तूवर : सुवह ७ वजे तलूवार झील पूगा। कुंभारामजी, माथुरजी, हरिचंद जी, रामनिवास जी सव साथ थे। नहर के पास लोगों को हर्ष हो रहा था। पानी आने से वहुत फर्क पड़ जायेगा। १२ वजे हनुमानगढ़ पूगे। सुखाड़िया जी से वातें हुईं, शाम तक वहाँ थे। हनुमानगढ़ आना एक तरह से अच्छा रहा।

सीकर, जयपुर, अजमेर, व्यावर

१२ अक्तूवर : ७ वजे ट्रेन से सीकर पूगा। १० वजे जयपुर। रानीवालों के गया। खाना वृजमोहन जी के खाया। ३ वजे वस से अजमेर गया। वहां ओंकार सिंह जी, लोढ़ा जी और गर्ग जी से मिला। मीटिंग में शायद झमेला नहीं करेंगे। वातचीत की है। मैंने उन्हें डायरेक्टर लेने को कहा है। अजमेर से १० वजे व्यावर पूगा। रात में मच्छर वगैरह वहुत थे। दिन भर काफी हैरानी सी रही। परंतु मिल का काम मेरी जिम्मेदारी पर हुआ है। इसलिए इसको सुलझाना ज्यादा जरूरी है।

दिल्ली

१५ अक्तूवर : आज कम वोलना पड़ा। इन ३-४ दिनों में वहुत ही झूठ-सच वोलना पड़ा। मन में भी ग्लानि-सी मालूम पड़ती रहती थी। जयपुर में ऐसा मालूम दिया कि ज्यादा वोल रहा हूँ और उससे शक्ति क्षीण हो रही है।

कलकत्ता

२४ अक्तूवर : कलकत्ते में सव ठीक है। व्यावर से फोन आया, लोढ़ा गोलमाल कर रहे हैं। मन में कैसा ही लग रहा है। जाने की सोच रहा हूँ। परंतु घरवालों से डर-सा लगता है।

कलकत्ता

२५ अक्तूवर : आखिर जयपुर-व्यावर जाने का विचार कर लिया, एस० एन० को कहा। वाइफ नाराज हो गयी है। रात में ७ वजे ट्रेन से रवाना हुआ।

जयपुर-अजमेर

२७ अक्तूवर : सुवह ५॥ वजे जयपुर स्टेशन पूगा। स्टेशन पर रानीवाले आए थे।

उन्होंने कहा लोढ़ा यहीं हैं, आप यहीं उतर जाइए। जयपुर में दामोदरजी व्यास से मिला। सौभाग्यमल जी आ गए थे। कानून की किताव देखी। ६ वजे सुखाड़िया जी के घर पार्टी में गया। रामकरण जोशी, भीखाभाई, रामकिशोर जी व्यास आदि से, सव से मिला। ७ वजे जीप से चला। १० वजे अजमेर पहुँचा, पेट में दर्द था। गर्गजी के घर उतरा, वहीं सो गया।

व्यावर

२८ अक्तूवर : सुवह ७॥ वजे एक वकील के ऑफिस गया। उसने कहा कि खतरा है। पूरी हार होगी। मन में निराशा सी हुई। एक वजे मिल में पूगे। मीटिंग में लोढ़ाजी आए थे। काफी वहस के वाद प्रस्ताव स्थगित रख लिया।

कलकत्ता

३० अक्तूवर : १० वजे हवड़ा पूगा। नन्दू स्टेशन पर आया था। काम-काज यहाँ ठीक चल रहा है। पंडितजी के साथी मसुरियादीन एम० पी० मेरे पास आए, घर में ठहरे। पैर में दर्द कुछ कम है।

नयी दिल्ली

१९ नवम्वर : सुवह एयर पोर्ट आया। एस० एन० साथ था। पुरुषोत्तम जी और नत्थू भी आए थे। भाई जी का पत्र आया, उन्होंने एक रकम खड़े होने की आज्ञा दे दी। पिताजी राजी हो गए हैं। एक तरह से आज्ञा भी दे दी। ११॥ वजे दिल्ली पूगा। मन प्रसन्न रहता है। इस वार २०-२५ दिन लग ही जायेंगे।

२० नवम्वर : पार्लियामेंट गया। लोगों से मिला। सीकर से ८ आदमी आए हुए हैं। काफी हैरानी हो रही है। लछमनगढ़ से ३० लड़के आए हुए हैं। जयपुर महारानी के खड़ी होने की वात है।

२२ नवम्वर : सुवह ३ मील घूमा, कसरत की, कान्सूटियूंशन हाउस गया। एक वजे कुंभारामजी, कृष्णकुमार जी आए। खाने पर और भी वहुत से लोग आए। काफी भीड़ है। टिकटों का चुनाव हो रहा है। चाहता हूँ, सीकर की सीट पुरोहित जी को मिले। वर्मा साहव से इस वारे में वात की है।

२५ नवम्वर : वीकानेर हाउस गया। सुखाड़िया जी से मिला। वातचीत की। पुरोहितजी के लिए जोर लगा रहा हूँ। शायद हो जाय। झूठ-सच तो वहुत वोलना पड़ता है। वड़ी हैरानी का काम है।

२६ नवम्वर : घर लोगों से भरा पड़ा है। खाना वहुत वनता है। सीकर की टिकटें प्रायः तय हो गयीं। सीकर की टिकट पुरोहित जी को मिली है। कोटपुतली की नहीं हुई।

ब्यावर

२९ नवम्बर : १०॥ बजे ब्यावर पहुँचा। ठाकुर ओंकारसिंह से मिला। लोढ़ाजी के बारे में कोई रास्ता नजर नहीं आता है। निराशा हो रही है। ५०००) रु० की एक जीप खरीदी है। सीकर में ढंग ठीक है, पर रामदेव सिंह का डर लगता है।

नयी दिल्ली

४ दिसम्बर : जयपुर, सीकर, लछमनगढ़, महारानी, रींगस, श्री माधोपुर का दौरा खत्म कर सुबह ७॥ बजे स्टेशन पूगा। जीप तकलीफ देती है, लछमनगढ़ में काफी तकलीफ हुई। खराब गाड़ी आ गयी है। चुनाव के लिए एक रकम ढंग ठीक है। मेहनत तो करनी होगी। गंगाबाबू के साथ अशोका होटल में महाराजा बीकानेर के साथ खाना खाया।

५ दिसम्बर : गंगाबाबू के साथ मैथिलीशरण जी के गया। दिन में पार्ल्यामेंट में था। लालबहादुर शास्त्री जी से बात की महाराजा बीकानेर के बारे में।

८ दिसम्बर : आज पार्ल्यामेंट का सत्र समाप्त हुआ। लोगों को नये साल की २५-३० डायरी दी। शाम को ७॥ बजे इंदिरा जी के यहाँ गया। रात को स्टेशन आकर सीकर के लिए ट्रेन में बैठा। कसरत और घूमना हो रहा है।

सुजानगढ़

१० दिसम्बर : सरदारशहर, रतनगढ़ होता हुआ सुजानगढ़ आया। फिर यहाँ से सुबह ७ बजे चला। शंकर को जीप खरीदने के लिए छोड़ दिया। ९॥ बजे नेछवा पूगा। साँवरमल जी, किशनसिंह जी, लोगों से मिला। इस तरफ लोगों के मन को ठीक किया। १२॥ बजे सीकर पूगा। रामचंद्र जी के पास २॥ बजे खंडेला रवाना हुआ। साथ में ७-८ आदमी और थे। ४ बजे पूगा। लोगों से बातचीत की। अगर सेल्स टैक्स की समस्या हल हो जाती है तो यहाँ का ढंग ठीक बैठ जाएगा। ५ बजे रवाना हुआ। ७॥ बजे सीकर पूगा। गुलाबजी के होटल में खाना खाया. उनसे बातें हुईं।

सीकर, लछमनगढ़

११ दिसम्बर : सुबह २ मील घूमा, कसरत की। फिर शामली स्टेशन बद्रीनारायण जी के गया। बातचीत की। ९ बजे लौट आया। लोगों से मिलता रहा। १० बजे पार्टी के मेंबर लोग आए। पुरोहितजी भी आए। १५ ता० को चुनाव एक सीट का है। पुरोहितजी के चांसेस अच्छे हैं। १२ बजे लछमनगढ़ पूगे। एक बजे पंचायत समिति की मीटिंग हुई। ४१ पंच आए। मैं भी थोड़ा-सा बोला। अच्छा रहा।

नयी दिल्ली

१२ दिसम्बर : माई जी से काफी बातें हुईं, एक तरह से खुश हैं। अखबार में पढ़ा,

१९६२

जयपुर-सीकर

१ जनवरी : कल रात श्रीचंद जी मेहता के घर में सोया। सुबह उठकर लोगों से मिला। सुखाड़िया जी के घर तथा पी० सी० सी० ऑफिस में गया। रामदेव को जीप दी व्यावर वाली। यहाँ के काम का कुछ सिलसिला जमाकर कार से सीकर के लिए ३। वजे रवाना हुआ। रात में साँवरमल जी वगैरह से बातचीत की।

सीकर

२ जनवरी : सर्दी काफी पड़ती है। जोशी जी भी आए हुए हैं। पुरोहित जी जयपुर गए हैं। चुनाव का ढंग अभी तक ठीक है परंतु मेहनत पूरी लगेगी। अखबारों में देखा, स्वतंत्र पार्टी और जनसंघ में समझौता नहीं हो पाया। वोट बँट जायेंगे। दिन में गुलाब जी से मिला। उनकी राय है कि सागरमल काफी एक्टिव हैं।

३ जनवरी : कसरत और घूमना रोज चालू है। शरीर ठीक रहता है। आलस नहीं आता। दाँत के डॉक्टर के गया, नाप दे दिया। दिन भर लोगों से मिलता रहा। कांग्रेस के प्रति लोगों में विश्वास है परंतु कांग्रेसियों के बारे में भरोसा नहीं। बताते हैं, वादा पूरा नहीं करते, अपना-अपना काम बनाते हैं। शाम को मुरलीधर जी जोशी के साथ बिहानियों के गया। सुना कि जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी का समझौता हो जायगा। स्वतंत्र पार्टी से ज्यादा खतरा नहीं, परंतु जनसंघी थोड़े होने पर भी बहुत संगठित हैं। समझौता होने से मुसलमानों का पूरा सपोर्ट कांग्रेस को मिल जायगा, ऐसी धारणा बनती है। फिर भी चिंता की बात तो है। रात में चुनाव के सपने आते रहते हैं।

४ जनवरी : बद्रीप्रसाद गुप्ता को गाड़ी भेजी। पुरोहित जी के साथ मुसलमानों की मीटिंग में गया। सिवा कांग्रेस के उनकी सुननेवाला कोई नहीं, इसे वे महसूस करते हैं। चुनाव में जोर तो लगेगा परंतु जीत जायेंगे, रुपये जितने आए खर्च हो गए।

५ जनवरी : सुबह ६॥ बजे उठा। दो मील घूमा। कसरत की। पुरोहित जी के १० बजे गया। फिर दीवान जी के घर। बाजार में गया, दुकानों में गया। कुछ लोगों ने तर्क किया कि मैंने पिछले पाँच वर्षों में कुछ नहीं किया। मैंने संक्षेप में बताया कि पूरे क्षेत्र

का सवाल है केवल सीकर शहर की बात नहीं। फिर प्रान्त और केन्द्र के मंत्रालयों से, सरकारी अफसरों से जूझना पड़ता है। इन सब में टाइम लगता है, सब की अलग-अलग नीति होती है। फिर भी जितना बन पड़ा है, किया है। ज्यादा लोग तो मेरी बात मान जाते हैं परंतु अड़ंगेवालों को क्या कहूँ? कुछ तो रुपयों के लिए झंझट और बेतुकी बातें करते हैं। २॥ बजे घर आया। जगत सिंह को ६०) रु० दिए। भाई जी, बापू जी के पत्र थे, चिंता की बात थी। मन में दुश्चिंताएँ उठती हैं। घर की, व्यापार की चिंता रहने पर चित्त में खिन्नता हो जाती है, हिम्मत घटती है। सुनते हैं, जिला स्तर पर जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी में समझौता हो गया है। एम० पी० की सीट पर अभी तक बाकी है।

सीकर

७ जनवरी : २ बजे सीकर से चला, ३ बजे नातूड़ा पूगा। लोगों से मिले। साधारण-सी मीटिंग हुई। वहाँ से खूड गए, मीटिंग थी, थोड़ी झड़प भी हुई। चुनाव में ये सब होने का अनुभव हो चुका है। मुंह नहीं खोलने का मौका देना चाहिए, खुल जाय तो बंद करने का उपाय करना पड़ता है। वैसे मेरे फेवर में हैं, कुल मिलाकर। ४ बजे दाँता के लिए चले। पौने सात बजे पूगे। रात में कासलीवालों के यहाँ रहे। दिन में आस-पास के गाँवों का दौरा किया, मीटिंगे हुई। विशेष झंझट नहीं रही।

दाँता-रामगढ़-केरड़

८ जनवरी : वैद्य जी के साथ सुबह रामगढ़ शहर गए। वहाँ लोगों ने काले झंडे दिखाए। खबर मुझे थी, कुछ लोग ऐसी धमकी से रुपए ऐंठना चाहते हैं। स्कूल को लेकर गलत-फहमी फैलायी गयी है। मैंने अपनी पोजिशन साफ बता दी। देखें क्या होता है। युद्ध में व्यवस्था ठीक रखनी होगी। चोट करनी और सहनी पड़ती है। लोसल ४ बजे पूगे। वहाँ अच्छी मीटिंग हुई। पंच आए थे। मदन जी ने ५००) रु० हरिजनों के लिए माँगा, है। जँचने की बात है, मैंने देने को कहा है। वजीर था, उसने पुरोहित जी के विरोध में भागीरथ वैद्य को खड़ा होने को कहा है। ये लोग जीप जयपुर ले जा रहे हैं, वहाँ मरम्मत करायेंगे।

१२ जनवरी : सुबह जीप से रवाना हुआ। पिछले कई दिनों से दौरे कर रहा हूँ। साँगरवा पूगा। और भी दो तीन गाँवों में गया। शाम को रानौली में हीरालाल से मिले। और भी कई आदमी थे। यहाँ शायद विरोध होगा, उधर रामदेव सिंह विरोध कर रहा है।

रेवासा–रायपुरा

१३ जनवरी : सुबह रेवासा गया। वहाँ से और भी आस-पास के गाँवों में गया।

कोछोर में एक अस्पताल की वात की। रायपुरा में १००) रु० दिया स्कूल को। दाँता रामगढ़ का ढंग कुल मिलाकर ठीक है।

जयपुर

१५ जनवरी : पी० सी० सी० ऑफिस गया। एक ज्योतिषी के गया। जयपुर में अभी तक पार्टियों में समझौता नहीं हुआ है। मन में कुछ चिंता-सी वनी रहती है।

सीकर

१८ जनवरी : जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी का समझौता टूट गया। १२ वजे हम लोगों ने फॉर्म भरे और भी लोगों ने भरे। दिन में ३ वजे हनुमानवक्स जी के साथ रामगढ़ और आसपास के गाँवों में गया। स्थिति ठीक मालूम पड़ती है। काम एक रकम ठीक चल रहा है। परंतु जव तक जीतता नहीं, चिंता वनी रहेगी।

१९ जनवरी : आज गाँवों के दौरे पर नहीं गया। रिपोर्ट काम की लेता रहा। सुवह मुसलमानों से मिला। किशन सिंह जी से सुना कि दो मुलमान फार्म भर रहे हैं। इससे शायद वोटों में कुछ फर्क आ सकता है परंतु मुसलमान यह जानते हैं कि वे अकेले जीत नहीं सकते। पुरोहित जी की हवेली की तरफ गया। ३००) रु० पुरोहित से जीतने के लगाए। और भी सौदे किए।

सीकर-श्रीमाधोपुर

२० जनवरी : सुवह हनुमान से वात की। ९ वजे भड़ेच जी के आया। वाजार में कुछ दुकानदारों से कहासुनी हो गयी। दोष मेरा था। मुझे चुप रह जाना चाहिए था, चुनाव में गलत-सही वात तो सुननी पड़ती है। परंतु हमारे कार्यकर्त्ताओं को परेशान करने से मुझे कुछ गुस्सा आया था। आगे से सावधान रहूँगा। दिन में फॉर्म भरे जा रहे थे, १२ लोगों ने पार्लियामेंट के फार्म भरे, तीन मुसलमानों ने भी। हम लोगों ने भी एक फार्म राजपूत का भराया। तीन वजे श्रीमाधोपुर गए, साथ में श्रीरामचंद्र जी और साँवरमल जी थे। ३०००) रु० की हुंडी की। श्रीमाधोपुर का ढंग अच्छा है। वंशीधर जी स्वतंत्र खड़े हुए हैं। चिंता सी तो रहती ही है। विरजू का कलकत्ते का फोन आया, ओम को लड़का हुआ, खुशी हुई।

झुंझनूं

२३ जनवरी : सुवह तारीक को लेने स्टेशन गया। दिन में मुसलमानों के मोहल्लों में वहुत अच्छी मीटिंग हुई। रात में भी वहुत अच्छी मीटिंग हुई। एक तरह से वातावरण में सुधार आया। रात में नींद तो आ जाती है परंतु स्वप्न उसी तरह के आते हैं। ९ वजे

तारीक जी के साथ मुरारका जी से मिलने गया। १२ बजे वापस लौटा। तारीक जी को छोड़ने स्टेशन गया। कुल मिलाकर आज का दिन अच्छा रहा।

२४ जनवरी : सुबह भाई जी से बातचीत की। १५,०००) रु० उन्होंने दिया। उनको एक रकम आशा है कि जीत जाऊँगा। गाँवों की तरफ नहीं जा सका। मुसलमान प्रत्याशियों को बैठाने का प्रयत्न चल रहा है।

२५ जनवरी : भंवर सिंह राजपूत कितने वोट लेगा, इसका पता नहीं। सागरमल ज्यादा एफिटव हो रहा है। भाव चौदह आना—ढाई रुपए का है। दिन में सीकर में ही था। ११ बजे कोर्ट गया। फॉर्म वापिस लेने के लिए ३ बजे तक प्रयत्न चलता रहा। काफी परेशानी थी। सब की गरज और खुशामद आदि। रुपए भी ज्यादा लग रहे हैं। स्थिति उलझती सी नजर आ रही है।

२६ जनवरी : परेशानियाँ बहुत हैं। रामदेव भी नाराज हो रहा है। एक साथ सब जगह कैसे जाऊँ? मगर सभी चाहते हैं, पहले उनके यहाँ पहुँचू। साँवरमल जी नहीं आए। दिन में २॥ बजे पुरोहित जी तथा और लोगों के साथ गाँवों में गया। रघुनाथगढ़ की तरफ भी गया। रामदेव के बारे में चिंता की खबरें मिल रही हैं। आज जन्मदिन है, ५४ वर्ष पूरे किए। भगवान् ने बहुत कुछ दिया। चाहता तो शांति से रहता, पर हमेशा उसे ही खोता रहा। शरीर ठीक है परंतु मन कुछ खराब।

सीकर-जयपुर

२७ जनवरी : साँवरमल जी के साथ कार से ९ बजे चला। सारे दिन जयपुर में रहा। प्रमुख लोगों से मिलता रहा कुंभाराम जी से मिला। वंशीधर जी तथा एक मुसलमान खड़े हैं। उनकी चिंता हो रही है। वैसे, स्थिति एक रकम ठीक जान पड़ती है। कांग्रेस के प्रत्याशियों की जीत निश्चित है परंतु कहीं-कहीं पासा पलट भी सकता है, आपसी कमजोरी के कारण।

जयपुर-सीकर

२८ जनवरी : सुबह ८ बजे जयपुर से चला। १० बजे कोटपुतली पूगा। वहाँ लोग नाराज हैं ही। सब रुपयों की माया है २,५००) रु० कॉलेज के लिए देने को कहा, नगद ही दे दिया। लाइब्रेरी के लिए किताबों का कहा। मौके का लाभ सभी उठाते हैं. व्यापारी, नेता, वकील, डॉक्टर सभी। वहाँ से अजितगढ़ गया। काफी लोग मिले। कार्यकर्त्ताओं से बात हुई। काम जँचाया।

सीकर-श्रीमाधोपुर

२९ जनवरी : सवेरे श्री माधोपुर ११। बजे पूगा। १२ बजे मुरारजी भाई आए। बड़ी मीटिंग हुई। तीन-चार हजार आदमी थे। अच्छा जमा। सवा दो, ढाई बजे सीकर

जलवोर्ड पूगा। पुरोहित जी के यहाँ खाना खाया। बाजार में ३ वजे वड़ी मीटिंग हुई। ४ वजे गर्गजी आए। ५ वजे मुसलमानों के मुहल्लों में गया। यही बैलेंस रखते हैं। जिधर झुकेंगे, एक साथ रहेंगे, बहुत बड़ा गुण है। इनके साथ अभी तक मेरी स्थिति ठीक सी मालूम पड़ती है। शाम को जोशी जी के यहाँ वैठने गए, उनका भतीजा चलता रहा। रात में चुनाव के सपने आते रहते हैं। मेंटल टेंशन तो है ही।

सीकर-जयपुर

३० जनवरी : कलकत्ते का चिंता का पत्र आया। सेल्स टैक्स के तीन लाख रुपये टाँटिया ब्रदर्स पर लगा दिए। एस० एन० वगैरह कल आ रहे हैं। चुनाव में रुपये लगते जा रहे हैं। और भी लगेंगे, परेशानी -सी है। किराये की पंद्रह गाड़ियाँ भी चल रही हैं। कुल मिलाकर वीस-इक्कीस गाड़ियाँ हैं। वंशीधरजी का लड़का आया। उनके चुनाव का खास जोर नहीं है। फिर भी वोट तो कुछ कटेंगे। एक-एक वोट की कीमत होती है। रामदेव सिंह से एक रकम तय कर लिया है। मन में कुछ शांति मिली। सवा एक वजे की ट्रेन से चला। पौने छह वजे जयपुर पूगा। एक जीप वद्रीप्रसाद जी को भेजी।

सीकर

२० फरवरी : वहुत दौड़-धूप रही। कव सोया, क्या खाया, कुछ का पता नहीं। पिछले दिनों डायरी भी नहीं लिख सका। मेहनत में कमी नहीं की। कल से मतदान शुरू है। जीत लगती है। खर्च बहुत पड़ रहा है। सोढानी जी के आने से पोजिशन ज्यादा बनी।

सीकर

२१ फरवरी : आज सीकर का मतदान था। दिन भर घूमता रहा। वहाँ की स्थिति ठीक-सी लगती है परंतु क्या भरोसा? युद्ध में भी कभी उलटा चक्कर बैठ सकता है। नीम का थाना और कोटपुतली का भी मतदान आज है। कोटपुतली की वेशी चिंता है।

सिगरावट

२३ फरवरी : सीकर का मतदान ठीक रहा, खबर मिली। आज लछमनगढ़ और सिगरावट में मतदान हुआ। सिगरावट में सारे दिन घूमता रहा। दाँता रामगढ़ में भी आज मतदान हुआ। ऐसा लगता है, दाँता रामगढ़ में अच्छी मेजोरिटी आएगी।

२४ फरवरी : सारे केंद्रों के मतदान खत्म हो गए। श्रीमाधोपुर बाकी है। जीत निश्चित-सी लगती है। भाव आठ-आठ आने का है। सौदा कमती है। पिछले पाँच वर्षों में अपने क्षेत्र के लिए जो भी कर सका उसका फल मेरी जीत का एक कारण रहेगा, रुपये तो हर हालत में लगते ही।

२५ फरवरी : चुनाव खत्म हो गए। कल से गिनती है। आज गाँवों में घूमता रहा, लोगों को धन्यवाद दिए। इसका अच्छा असर पड़ा। आज श्रीमाधोपुर का मतदान खत्म हुआ।

२६ फरवरी : दिन के बारह बजे काउंटिंग में गया। सीकर और सिंगरावट दोनों जगह जीत गया। सागरमल जी वगैरह थे, उनको काफी निराशा हुई। जीत से मन की चिंता कम हुई, भाई जी भी खुश हो गए।

दाँता

२७ फरवरी : दिन में दाँता की गिनती होती रही। ६०० मतों से जीता, धारणा इससे ज्यादा की थी। शाम को लछमनगढ़ नीमका थाना, थोई की भी खबर आ गयी।

श्रीमाधोपुर

२८ फरवरी : दिन में माधोपुर था। काउंटिंग चल रही थी। काफी अच्छी जीत रही। मन में प्रसन्नता हुई। राजस्थान में काम करने का एक बार फिर मौका मिला लोगों ने बधाइयाँ दीं। रात में बड़ा जुलूस निकाला। लोगों में प्रसन्नता है। ३७,००० मतों से जीता।

लोसल

१ मार्च : सुबह ९ बजे लोसल पूगा। कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद दिया। वहाँ भी जुलूस निकाला गया, काफी लोग थे। मैंने जुलूस के लिए मना भी किया, पर किसी ने माना नहीं। अच्छी जीत हुई थी। लोगों में उत्साह था।

जयपुर

२ मार्च : कार से जयपुर आया। वर्मा साहब से मिला। सुखाड़िया जी से मिला। रामचंद्र जी वगैरह भी आए। रास्ते में रींगस में जुलूस था। कांता वगैरह कलकत्ते गए।

सीकर-जयपुर

४ मार्च : सीकर से एक बजे चला। एकाउंट किया। २७,०००) रु० सौदे में आए, सारे खत्म हो गए। ३ बजे जयपुर पूगा। लोगों से मिला। रात में ९ बजे कार से दिल्ली चला, पौने चार बजे पूगा।

दिल्ली-ट्रेन

५ मार्च : सुबह ८ बजे स्टेशन पूगा। ११०) रु० ड्राइवर को दिए, पुलकित को दिल्ली छोड़ा। ९ बजे ट्रेन से रवाना हुआ। ट्रेन में सोचता रहा, कि इस बार अपने क्षेत्र का काम कैसे जँचाया जाय। साँवरमल जी का, सोढानी जी का, और भी लोगों का सहयोग मिल

जायगा परंतु सरकारी अफसरों का अड़चन वहुत वड़ा अड़ंगा है। काम ठीक समय पर होता नहीं।

कलकत्ता

१० मार्च : सुवह मैदान घूमने गया। चुनाव चर्चा होती रही। फिर जैनेंद्रजी से मिलने गया। प्रसन्न हुए। पुरुषोत्तम जी के घर गया। फिर शाम को पाँच टिकट लिए थियेटर के। ६ वजे जैनेंद्र जी के घर गया। वे, उनकी लड़की, ओंकार जी और मैं थियेटर गए। लड़की सुशिक्षिता है, व्यवहार भी मधुर। साहित्य और साहित्यकार मुझेअच्छे लगते हैं शायद इसलिए कि मेरे में साहित्यकार वनने की एक दवी इच्छा है। मरने के वाद भी साहित्य जिंदा रखता है।

११ मार्च : सवेरे ८ वजे से १॥ वजे तक किल्ला की पंचायती में रहा। काम सलट जायगा, ऐसी आशा है। इधर वहुत दिनों से लिखना-पढ़ना वंद-सा है।

२० मार्च : सुवह ७॥ वजे पुरुषोत्तम जी, सीताराम जी, नत्थू, कन्हैयालाल जी, पाँचेलाल जी और मैं—कार से चले। तीन वजे कृष्णनगर पूगे। मिट्टी की मूर्तियाँ, खिलौने की कारीगरी के लिए प्रसिद्ध हैं। कई एक दूकानों में देखा। दाम भी सस्ते। विदेशों में इसकी माँग अच्छी वढ़ सकती है। कृष्णनगर एक समय में विद्वानों का केंद्र माना जाता था। पहले जैसी वात अव नहीं रही। संस्कृत की पढ़ाई अव होती नहीं, एकाध 'टोल' कहीं-कहीं है। गर्मी वहुत लग रही थी। मन भी कैसा-सा हो रहा था। किसी तरह ५ वजे रामचंद्रपुर पूगे। माँ जी, पिताजी से मिला। और भी वहुत से लोग आए हुए थे। गंगा जी में स्नान किया, मन को शांति मिली। पौने सात वजे चले और ११ वजे रात घर वापस आ गए।

२४ मार्च : आज रात ९ वजे की ट्रेन से सीकर रवाना हो रहा हूँ। चुनाव में किए गए वादों के वारे में सोचता रहा। कांग्रेस में आपसी फूट के कारण कमजोरी वढ़ती जा रही है। एडमिनिस्ट्रेशन की ढिलाई वढ़ेगी, ऐसी धारणा है।

सीकर-सरदारशहर

२५ मार्च : सुवह ७ वजे सीकर पूगे। साँवरमलजी को ६००) रु० दिए। १०॥ वजे सव से मिलकर जीप से लछमनगढ़ गया। दुर्गादत्तजी के जीमा। लोग मिलने आते रहे। ३ वजे फतहपुर पूगा। एक घंटा वहाँ रहा। लोगों से वातचीत हुई। गाँव के लिए उन्नति चाहते हैं। मैंने वताया केवल स्कूल, कालेज और अस्पताल से काम नहीं चलने का। इनका फायदा तो तभी होगा जव आवादी हो। गाँव के सव लोग देसावरों में रहते हैं। यहाँ उद्योग-धंधे की चेष्टा वढ़ानी ठीक रहेगी। इसके लिए गाँव वालों को कोशिश करनी होगी। सरकार सहारा लगा देगी। मेरी ओर से पूरा सहयोग रहेगा। रतनगढ़ होता हुआ ६॥ वजे सरदारशहर पूगा। रास्ते में थोड़ी थकावट-सी आई।

२६ मार्च : सुमेर भाईजी के खाना खाया। दिन में सेवाराम आया था। उसकी जमीन के ४५००) रु० तय किए। लोगों से मिलता रहा। मौसम अच्छा है। भाईजी अभी यहाँ रहेंगे। आज दो आदमियों की हत्या यहाँ हो गयी। आतंक-सा है। ऐसी घटना इन वर्षों में नहीं हुई थी।

२७ मार्च : सुवह से लोग मिलने के लिए आते रहे। वातचीत की। ११ बजे स्कूल गया। ४०० लड़कियाँ पढ़ती हैं। फर्नीचर वगैरह नहीं है। वंदोवस्त करना होगा। अपने गाँव की उन्नति तो चाहता हूँ पर कैसे हो, समझ में नहीं आता। धन का अभाव नहीं रहेगा, पर कार्यकर्त्ता नहीं मिलते। शिक्षा, स्कूल के लिए थोड़े समय देने वाले मिल जाते हैं, सुधारक विचार के। परंतु इससे तो आज के जमाने में काम नहीं चलने का। खेती हाथ का काम, वगैरह का धंधा सिखानेवाले और इसके लिए टाइम देनेवालों का अभाव है। इन्हीं के लिए ट्रेनिंग सेंटर चाहिए।

नयी दिल्ली

२९ मार्च : दद्दा के गया, दिनकरजी थे। दिनकरजी ने अपने मन से 'व्याल विजय' सुनाया। वहुत अच्छा लगा। आवाज में बुलंदी है, पर्सनलिटी भी अच्छी है, कहने का ढंग भी जोरदार। गंगावावू का आज चुनाव था, वे यहीं हैं। जीत का चाँस है। पन्नालालजी सरावगी और सीताराम जयपुरिया को सीट मिल गयी, बधाई का तार दिया।

३० मार्च : गंगाबावू चुनाव जीत गए, खवर सुवह मिली। मन में बहुत खुशी हुई। दिन में पार्लियामेंट में अपनी तरफ से कोशिशें करता रहा।

जयपर-सीकर

३१ मार्च : सुवह ५॥ वजे जयपुर पुगा। गवर्मेंट होस्टल में ठहरा। पौने नौ बजे सुखाड़ियाजी के गया। काफी वातचीत हुई। मोटे तौर पर मैंने सीकर क्षेत्र की कुछ समस्याओं की भी चर्चा कर दी। १२ वजे विष्णुदत्तजी शर्मा के यहाँ सौभाग्यमलजी आए। रानीवालों से वातचीत की। मिल का ढंग ठीक-ठीक है। शाम को ५ वजे रवाना हुआ और ८ वजे सीकर पुगा। खाना होटल में खा लिया। चुनाव का हिसाव करने पर लगता है फालतू खर्च लगे, ठगाई भी हो गई। इतना खर्च नहीं लगना चाहिए था। जिन पर विश्वास किया वे ही कच्चे निकले। परंतु उस समय और क्या हो सकता था? चुनाव भी युद्ध की तरह है, एक रकम सव कुछ अनिश्चित। दूसरों का सहारा लेना ही पड़ता है।

१ अप्रैल : सुवह घूमने गया। कसरत तो एक रकम छूट गयी। वैसे वजन वगैरह ठीक है। लिखना-पढ़ना कम है। २००) रु० दाँता के लिए दिए, २५) रु० और खर्च हो गए। दीन मुहम्मद के घर वैठने गया। जिला परिषद् की मीटिंग में गया। आपसी वात में मैंने सुझाव दिया कि पूरे क्षेत्र के लिए तहसील या चार-पाँच गाँवों को यूनिट वना कर उद्योग-धंधे के विकास की योजना वनायी जाए। सरकारी स्तर पर भी कुछ ऐसा ही सोचा जा रहा है, अतएव दोनों की योजनाओं का तालमेल वैठाना ठीक रहेगा। शाम को

कलक्टर से मिला। ४।।। बजे बजाज भवन आया। एक अजीब अनुभव हो रहा है, रुपये के लिए लोग हर तरह से तंग करते रहते हैं, बहुत खर्च हो रहे हैं। चुनाव में जीतना और हारना दोनों ही दुखदायी है। शाम को ५।। बजे मीटिंग गया, सौ आदमी थे। रात ८ बजे दिल्ली के लिए रवाना हुआ। स्टेशन पर बहुत आदमी आए थे।

नयी दिल्ली

२ अप्रैल : सुबह घर आने पर पता चला, बहुत से अतिथि आए हैं, बच्चे भी हैं। काफी भीड़ है। परेशानी सी हुई, मगर क्या करता? लोग बिना सूचना दिए आ जाते हैं। पार्लियामेंट गया। लोगों से मिला। बँगले की चेष्टा कर रहा हूँ। मलैयाजी से मिला। भाईजी का, नन्दू का पत्र आया, भरतिया ठीक चलता है। शाम को दद्दा, रामकृष्णदासजी और डॉ० मोतीचंद के साथ बुद्ध-विहार गया। सरदार शहर से ज्ञानचंद शर्मा मिलने आये।

१७ अप्रैल : आज सुबह हवाई जहाज से कलकत्ता से आया। ४ बजे पार्लियामेंट बैठी, शपथ ग्रहण किया। काफी लोग आए हैं। फोन तो लग गया है। पर मकान की व्यवस्था ठीक नहीं बैठी है।

१८ अप्रैल : मौसम बहुत अच्छा है। ९।। बजे पार्लियामेंट गया। राष्ट्रपति का भाषण हुआ। ३।। बजे मनु भाई से मिला। फिर पार्लियामेंट गया। शाम को मैथिलीशरणजी के गया, वहीं बंबई के राज्यपाल श्रीप्रकाशजी आए। सज्जन हैं, विद्वान भी। दिन में 'काउंट ऑफ मांटे क्रिस्टो' पढ़ी। परसों कलकत्ता जाना है।

कलकत्ता

२४ अप्रैल : कल बजट आ गया। खास खराब नहीं है। शेयर बाजार तेज रहे। ५०० हिंदुस्तान मोटर्स १९।।) में बेचा। भरतिया १।।।≈), ।।।) है। दिन में भागीरथजी की ऑफिस गया था। सीकर के बारे में उनकी सलाह ली। घर में रुपयों का हिसाब कर रहे हैं। एलेक्शन का खर्च मेरे नाम मढ़ दिया।

आगरा

२९ अप्रैल : सुबह ५।। बजे मनुभाई के साथ रवाना हुआ। १०।। बजे आगरा पूगा। वहाँ एक मीटिंग में भी बोला। लोगों से जान-पहचान हुई। रात में ७।। बजे ट्रेन से जयपुर के लिए रवाना हुआ। मनुभाई से सीताराम मिल के बारे में भी बात हुई।

जयपुर

३० अप्रैल : रात ३।। बजे पूगा। स्नान वगैरह कर ५।। बजे तैयार हो गया। गवर्मेंट-होस्टल में आ गया। दिन में ४ बजे सुखाड़ियाजी के साथ इंडस्ट्री पर मीटिंग

हुई। मैं भी काफी बोला, शायद सबसे ज्यादा। टेक्सटाइल पर खासतौर से ६ मिलों की हालत पर भी कहा। राजस्थान में टेक्सटाइल इंडस्ट्री को बढ़ावा देने के लिए विशेष नीति और सुविधाएँ रखनी होंगी। सौभाग्यमलजी मिले, उनसे ब्यावर की बात की। श्रीचंदजी मेहता के साथ खाना खाया, उनकी जीप सारे दिन काम में ली।

सीकर-सरदारशहर

५ मई : ७ बजे सुबह सीकर पूगा। लोगों से मिला। खाना बासे में खा लिया। रघुनाथजी पारीख साथ में थे। सीकर में लछमनगढ़ के लोग मिल गए। उन्हें शारदा पुस्तकालय के लिए किताबें दीं। ऐसा लगता है, सुखाड़ियाजी राजस्थान की उन्नति के लिए विशेष कोशिश कर रहे हैं। अड़ंगेबाजी भी बहुत है, फिर भी जितना हो जाय बहुत है। राजनीति का क्या ठीक?

सरदारशहर-चूरू

६ मई : सुबह ७ बजे जयचंदलालजी छोटूलालजी सेठिया के गया। ९ बजे गांधी विद्या मंदिर गया। मीटिंग थी। सोहनलालजी दूगड़ भी कलकत्ते से आए हैं। चुनाव हुए, साठ-सत्तर आदमी थे। ३॥ बजे लाइब्रेरी की मीटिंग में था। राधाकृष्ण गोयनका और पूरण मीमाणी विरोध कर रहे हैं। शायद प्रस्ताव गिर जायगा। ५ बजे मोहनजी जैन के विवाह में गया।

नयी दिल्ली

१३ मई : इन दिनों दिल्ली में घटनाएँ तेजी से बदली हैं। मन में बहुत तरह के विचार आते रहे। राजनीति में आना मेरे जैसों के लिए ठीक नहीं; न कोई अंकुश है और न ही नैतिकता। स्वार्थ का जोर ज्यादा चलता है। अब पीछे हटना संभव नहीं। देखें, क्या होता है। ८ बजे दद्दा के साथ पार्लियामेंट गया। डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद राष्ट्रपति पद से रिटायर कर गए। लाबी में कुछ अजीब-सी बातें भी सुनीं। लगभग दस महीने पहले राजेंद्रबाबू जब बहुत बीमार पड़े तो नेहरूजी को उनके बचने की आशा नहीं थी। शास्त्रीजी को उन्होंने आगे का बंदोबस्त करने के लिए कह दिया था। मुझे कुछ अटपटी सी बात लगी।

सरिसका (अलवर)

१४ मई : १०॥ बजे पार्लियामेंट गया। गाड़ी तो है नहीं। ३॥ बजे गंगाबाबू के साथ कार में रवाना हुआ, ६॥ बजे सरिसका पूगा। रात में ८ बजे मुरारजी भाई भी पूग गए। ६०० लड़के लड़कियाँ हैं। गंगाबाबू काम देखते हैं। अच्छा काम है। काफी अनुशासन है, ऐसा आजकल कम ही देखने में आता है। देखकर प्रसन्नता हुई। नयी पीढ़ी को तैयार करना देश की बहुत बड़ी सेवा है।

सरिसका (अलवर)–नयीदिल्ली

१५ मई : रात कल काफी ठंढक थी। मगर तकलीफ नहीं रही। आराम मिला। जगह काफी रमणीक तथा सुंदर है। ६॥ वजे थे, लड़के और लड़कियों की शिक्षा शुरू हुई। वहुत ही अच्छा लगा अपने गुरुकुलों की याद आ गयी। १० वजे तक पढ़ाई चलती रही। मन में एक वार इच्छा हुई, मैं भी इसी तरह छात्र वनकर पढ़ पाता। हम लोगों को ऐसा मौका नहीं मिला। सुखाड़ियाजी ८ वजे जयपुर चले गए। मुरारजी भाई के साथ काफी वातचीत हुई।

वटोट-रामपुर-वनिहाल

१७ मई : सुवह वटोट से चले। गाड़ी खराव हो गयी, उवमपुर से किसी तरह रामपुर पुगे। गाड़ी का क्लच टूट गया। परेशानी रही, सारे दिन वहीं ठहरना पड़ा। उपाध्याय जी को एक वस से रवाना कर दिया। मन में विचार आये, आजकल सव साधन होते हुए भी जरा सी तकलीफ हम सह नहीं सकते। पहले महीनों लग जाते थे, यात्रा में। लोग सव वर्दाश्त करते और यात्रा करते। शाम को वनिहाल में कार आ गयी। रात में वहीं सोये। वनिहाल की घाटी का स्ट्रेटिजिक महत्व है। कुछ देर घूमा भी। दृश्य अच्छे लगे।

श्रीनगर

२१ मई : काफी अच्छा मौसम है। वाजार गए। रात में सर्दी पड़ती है। घूमने काफी दूर तक जाता हूँ। मन लग गया है। गरीवी यहाँ है। भारत के प्रति यहाँ के मुसलमान परायापन का भाव रखते हैं। यह वात अखरती है। दूसरे प्रांतों के लोगों को यहाँ वसने की सुविधा नहीं, यह वात भी कम जँची। अपना देश होते हुए भी परदेस लगना कैसा लगता है। वैसे मन लग गया है। चीजें महंगी हैं।

२२ मई : ८॥ वजे दो गाड़ियाँ लेकर वूलर झील घूमने गये। सौ मील का चक्कर पड़ा। काफी थकावट आ गयी। दृश्य तो सुंदर है ही, शांत जगह है। लिखने-पढ़ने के लिए वहुत ठीक। गाड़ी ठीक काम देती जा रही है। खर्चीली जगह है। टूरिस्टों से काफी पैसा वसूलते हैं।

पहलगाँव

२६ मई : मौसम अच्छा है। मन लग गया है। भूख भी अच्छी लगती है। यह जगह श्रीनगर से ज्यादा ठंढी है। ज्यादा भीड़ भी नहीं। रात में क्लव में चले जाते हैं। दिन में 'मार्को पोलो की यात्रा' पढ़ता रहता हूँ।

पहलगाँव-चन्दनवाड़ी

२८ मई : सुवह हाडा के साथ घोड़े पर चंदनवाड़ी चले १५ मील। वहाँ वर्फ पर काफी

फिसले, राजू भी था। काफी आनंद रहा। आती दफे थकान थी, बदन में दर्द भी था। घोड़े की सवारी से एक रकम कसरत तो हो जाती है पर अभ्यास की बात है। दिन में किताबें पढ़ता रहा। पी० डी० हैं, मन लग जाता है।

पहलगाँव-श्रीनगर

२९ मई : हिंदी हाई स्कूल के बच्चे आए हुए हैं। पी० डी० के साथ उनकी कसरत देखी। बच्चों को खुश देखकर खुशी होती है। ३। बजे पहलगाँव से चले, ५। बजे श्रीनगर पुगे। घर आकर आराम करता रहा। कुछ बुखार-सा मालूम दिया।

श्रीनगर

३१ मई : कल पी० डी० के साथ बी० एम० बिरला के जीमा। पी० डी० आज चले गए। हम लोग एक बजे एस० पी० जैन के यहाँ होटेल में खाने गए। काफी बातचीत हुई। बी० एम० बिरला भी मिले। शाम को बाजार में घूमते रहे।

श्रीनगर

१ जून : कई पत्र आए हैं। पत्र दूसरी दुनिया में ले जाते हैं। पीछा छूटता नहीं। जयपुर में शिक्षा बोर्ड की मीटिंग है। पी० डी० का पत्र आया, अभी हाउसिंग कमिटी ने शायद कुछ तय नहीं किया है। दिन में चिनाब के चार द्वीपों पर गया। घूमना, पढ़ना और आराम करना, बस यही काम है। आज थोड़ी देर बैडमिन्टन भी खेला।

२ जून : रघुनाथजी खेतान के साथ उनके कारखाने गया। गलीचे बनते हैं। अच्छे हैं। वहाँ से श्री नारायणजी खेमका के आया, दिन में टेनिस खेली। शाम को दो मील घूमा, अब यहाँ मन कमती लग रहा है। दिल्ली जाने की इच्छा हो रही है। पार्लियामेंट का काम भी देखना है। रात में मातादीन के यहाँ खाना खाया।

सोनमर्ग

३ जून : सुबह ५ बजे नींद खुली। 'वुमेन ऑफ रोम' पढ़ता रहा। फिर घूमने निकल गया। ४ मील घूमा। स्वास्थ्य ठीक है। मातादीन जी के साथ मदनजी डावरीवाल आए हुए हैं। ९ बजे सोनमर्ग कार से गए। रास्ता बहुत ही खराब था। भीड़ भी ज्यादा थी। साथ की दो मोटरें खराब हो गयीं। ६।। बजे लौटे। सोनमर्ग ठंडी जगह है।

४ जून : सोनमर्ग अच्छी जगह लगी परंतु मेरी तबीयत ठीक नहीं रही। दोपहर तक पेशाब बंद हो गया। तकलीफ बढ़ गयी। रबर की सलाई ली, काम नहीं हुआ। ताँगा लेकर अस्पताल गया। डॉक्टर ने लोहे की सलाई दी, बड़ी देर बाद पेशाब उतरा। बहुत थकान और उदासी सी रही। मोटर भी खराब हुई पड़ी है।

५ जून : दिन में एक बजे खाना खाकर अभयराम के घर गया। वेणीशंकर शर्मा मिले नहीं। नन्दू मोर के वजरे में आए। वहाँ तीन घंटे ठहरे। वहाँ से ७ वजे चलकर एक मुरारका हैं, उनके हाउस बोट में गया। रंगून से आए हैं। अच्छी तरह मिले। रंगून में काफी कमाते हैं। भारतीयों के लिए गुंजाइश वतायी है। मुझे कुछ ताज्जुब हुआ वहाँ सरकार की नीति भारतीयों के लिए बहुत उदार नहीं है। शायद मुरारका वहाँ के वाशिंदा हो गए हैं।

श्रीनगर-रामवन

९ जून : सुबह चार-पाँच मील घूमा। अच्छा लग रहा था। कश्मीर को भूस्वर्ग कहते हैं। वास्तव में दृश्य सुंदर हैं, आबहवा भी अच्छी। सीधा-सादा जीवन है। मैं समझता हूँ, सभी जगह स्वर्ग है यदि मन में चिंता न हो। चिंता लगते ही स्वर्ग छूट जाता है। पूरी तरह आनंद इसीलिए उठा नहीं पाता। बाजार की तरफ गया। यहाँ के लोगों से बात की। टूरिस्टों के सीजन में कुछ कमा लेते हैं। बाद में कठिनाई होती है। फलों के बाग में या हाथ की कारीगरी में कुछ कमाई होती रहती है। कश्मीर सरकार कुछ ध्यान दे रही है। शेख अब्दुल्ला के लिए इनके मन में बहुत इज्जत है, इनकी धारणा है, कश्मीर को वही हिंदुस्तान से अलग रख सकता है। १२ वजे खाना खाये और तीन वजे कार से रवाना हुए। रास्ता थोड़ा भूल गए थे। ५ वजे वनिहाल पुगे। चाय पी। वहीं एक आदमी कार में बैठा। उसको कार ड्राइव करने दे दिया, उसने एक्सिडेंट कर दिया। किसी तरह बच गए। गाड़ी गहरे खड्ड की ओर मुँह किए किसी पत्थर से अड़ गयी इसीलिए हम बचे। भगवान् ने ही मौत से बचाया। एक विचित्र अनुभव हुआ। किसी तरह रामवन आये।

नई दिल्ली

१३ जून : रात ठंड रहती है। दिल्ली आकर घूमना और कसरत एक दम छूट गयी। राजू और वाइफ को लेकर राजघाट गया, वहाँ से फिरोजशाह कोटला। रास्ते में मोटर खराब हो गयी। घर आकर दूसरी मोटर भेजी। परेशानी रही। साधनों के भरोसे से कभी-कभी बहुत तकलीफ होती है। १०।।। वजे पार्लियामेंट गया। एक मामूली-सा क्वेश्चन था। ५ वजे वर्माजी के साथ खंडू भाई से मिला। चुनाव में ट्रेजरर के लिए मेरा खड़ा होना निश्चित है। आज १५० रु० दो आदमियों को दिए। जरूरत बताते थे, पता नहीं ठीक किया या गलत।

१५ जून : दिन में एलेक्शन के काम में लगा रहा। कल के लिए फार्म वगैरह भर कर भेज दिए। एलेक्शन की काफी चर्चा है।

१८ जून : पार्लियामेंट में एलेक्शन में काफी गंदगी है। दाव-पेंच भी बहुत। काफी लोग खड़े हैं। कमलनयनजी कनटेस्ट कर रहे हैं। पंचहजारी विथड्रा कर गये हैं। मुझे भरोसा है, मैं जीत जाऊँगा।

१९ जून : सारे दिन चुनाव की कोशिश में रहा। श्री पाटिल और मालवीय जी ने मेरे लिए कोशिश की और भी लोगों से बातें हुईं। मुझे लगता है, ३६०-७० मत हो जायेंगे। १६० मुझे, १३० कमलनयनजी, ८० अचल सिंहजी। प्रचार अच्छे ढंग से हो रहा है। वैसे काफी झंझट हो रही है, फिर भी जीत जाऊँगा, ऐसी आशा है।

२० जून : सुबह नौ बजे पार्लियामेंट गया। चुनाव ११ बजे शुरू हुआ। ५॥ बजे रिजल्ट आ गया। १७ मतों से हार गया। मन में बड़ी चिंता हुई। लोगों में हँसी का पात्र बन गया, भले ही मुँह पर न कहें। गलती थी, चेष्टा में कमी रही, दूसरों के भरोसे रहा। स्ट्रेटेजी भी गलत बैठी। आइंदा पार्लियामेंट का काम ज्यादा करूँगा।

कलकत्ता

३० जून : गद्दी गया। एक-दो जगह चंदे के लिए भी गया। बिरलाजी के साथ सुबह घूमने गया था। ब्यावर मिल में हम लोग कमीशन को लेकर हार गए। मन में सारी रात चिंता रही।

जसीडीह

१४ जुलाई : दिन में गरमी यहाँ हो जाती है। सुबह ५ बजे उठा, नीरा पी। ताऊजी के पास गया। जसीडीह में मन लग जाता है। दिन में किताबें पढ़ता रहता हूँ।

ब्यावर

५ अगस्त : सुबह रानीवालों के, बृजमोहनजी के गया। मिल की हालत खराब चल रही है। दिन में अजमेर गया। गर्गजी, ठाकुर और संपतमल लोढ़ा से मिला। कोई रास्ता नजर नहीं आता। शाम को उन लोगों से बात की। कोई नतीजा निकलता नहीं नजर आता, शेयर भी नहीं आते दिखते।

नई दिल्ली

८ अगस्त : पार्लियामेंट में काफी क्वेश्चन रहते हैं। डाक तथा और काम का बंदोबस्त भी एक रकम ठीक है। अशोका होटल में शूगर मिल वालों की पार्टी थी, मातादीन खेतान भी थे। विचार आते हैं, इन्डस्ट्री वाले एक तरफ घाटे को रोते हैं परंतु महँगी पार्टियां कैसे देते हैं? शेयर होल्डरों को मुनाफे का हिस्सा नहीं मिलता। लगी पूंजी का ब्याज तक नहीं उपजता। परन्तु पार्टी देने का रिवाज एक रकम जरूरी हो गया है।

९ अगस्त : शाम को ५।। बजे पंडितजी के साथ बी० सी० राय फंड की मीटिंग में गया। पैंतीस-चालीस आदमी आए थे। रुपए इकटठा हो जायेंगे। उसके बाद इंपीरियल होटल में मीटिंग थी, रोटरी की। मैंने भी सवाल पूछे। एल० के० झा स्पीकर थे, मीटिंग अच्छी

रही। पार्लियामेंट का काम ठीक चल रहा है। इन दिनों किताबें पढ़ लेता हूँ, चिट्ठी-पत्री भी ठीक चल रही है।

१० अगस्त : पार्लियामेंट में एल० आई० सी० पर बोला। साधारणतया ठीक बोला। क्वेश्चन भी पूछा। लाइफ इंश्योरेंस का फंड यदि ठीक से इन्वेस्ट किया जाय तो बहुत बड़ा काम हो सकता है परंतु सरकारी मशीनरी में यह संभव नहीं, ऐसी मेरी धारणा है।

११ अगस्त : पार्लियामेंट के काम में सहायक के बिना दिक्कत होती है। सेक्रेटरी मन माफिक नहीं मिलता। आज दो को बुलाया, बातचीत की।

१३ अगस्त : आज रात में ९ आदमियों को पार्टी दी। कलकत्ते से ४ जूट मिल वाले आए। मनुभाई से मिले थे। मनुभाई ने कहा कि आप वाले आदमी बहुत फालतू बात करते थे। मुझे कैसा-सा लगा। उन्होंने समझा होगा कि मैं उनकी सिफारिश करता हूँ। आगे से सावधान रहूँगा। दिन में पार्लियामेंट गया, लद्दाख पर डिबेट था, एंथोनी बहुत ही अच्छा बोले। पंडितजी के सामने भले ही कोई न बोले, मगर लाबी में चर्चा होती है कि उनकी फॉरेन पालिसी फैल कर रही है। चीन के मामले में उनकी ढिलाई रही और बहुत सी बातें छिपायी गयीं। परंतु अब तो सब सहना पड़ेगा, चीन दबाता जायगा।

१४ अगस्त : दो दिनों से पार्लियामेंट में क्वेश्चन कम हो रहे हैं। लाबी में चीन के मामले पर खूब बातें होती हैं। चीन बड़ी लड़ाई की तैयारी में है। पिछले महीने मुरारजी भाई ने दस हजार फुट से ऊपर रहने वाली मिलिट्री के लिए अतिरिक्त भत्ते की मंजूरी दे दी है। परंतु मिलिट्री वाले आधुनिक हथियारों के लिए पाँच-छः अरब रुपयों की जरूरत बताते हैं। मुरारजी भाई ने कहा है कि रक्षा-मंत्री इस मामले को कैबिनेट में रखें। पंडितजी का कहना है कि इसकी जरूरत नहीं, चीन हमला नहीं करेगा। समझ में नहीं आता कि क्या सही और क्या गलत।

१९ अगस्त : मुरारजी भाई से मिला। काफी बातचीत हुई। वहीं मनुभाई और जीवराजजी थे। ९। बजे ज्ञानचंदजी के साथ ढेबर भाई के गया। दद्दा और रायकृष्ण दासजी भोजन पर आए। ५ बजे पार्टी मीटिंग में गया था।

२८ अगस्त : आज अखबारों में मेरी स्पीच आयी, लोगों ने पसंद की। सुबह स्टेट मिनिस्टर्स की मीटिंग में गया, काफी भाग लिया। सिमेंट और लोहे के बारे में बोला। इनके वितरण की व्यवस्था ठीक होनी चाहिए। रुकावट से प्रोजेक्ट रुके रह जाते हैं। राजस्थान के लिए विशेष सुविधा रखनी होगी। देखें क्या होता है।

ऊटी

३१ अगस्त : तीन बजे मीटिंग थी। मैंने भी भाग लिया। लोगों से जान-पहिचान हुई। मन में संतोष रहा। ऊटी अच्छा हिल स्टेशन है। जोधपुर के मारवाड़ियों की सत्तर दूकानें हैं। कई एक के घर गया। लोग ब्याज का भी काम करते हैं।

कुन्नूर-मद्रास

१ सितम्बर : सुवह ६ वजे उठा। सर्दी काफी थी। घूमने गया। ९ वजे कुन्नूर पूगा। मीटिंग थी। कई आदमी थे। १२॥ वजे को कोयंवतूर पूगे। हवाई जहाज का टिकट मिल गया था। कनोई ने सव रुपये दिए। मेरे पास थे ही नहीं। मद्रास ३ बजे पूगे। रात में जयकरण के घर खाने पर गए। अच्छा भोजन था। मद्रास के बाजारों में घूमा, समुद्र के किनारे भी।

मद्रास-तिरुपति-नई दिल्ली

२ सितम्वर : सुवह ६॥ वजें जयकरण के साथ तिरुपति को रवाना हुए। साथ में वावूलाल शर्मा थे। १०० मील गए। १२ मील पहाड़ पर। वहुत ही सुंदर दृश्य मिलते हैं। तीन हजार फुट की ऊँचाई पर मंदिर है। वहुत ही भव्य। सालाना आमदनी १० करोड़ रुपयों की है। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल और धर्मार्थ कई संस्थाओं का खर्च मंदिर की ट्रस्ट चलाती है। दर्शन किए, मन प्रसन्न हो गया, सफाई भी अच्छी है। वनारस की सी पंडों से परेशानी नहीं होती। वहुत यात्री आते ही रहते हैं। ठहरने की व्यवस्था भी अच्छी है। ४ वजे लौटे।

कलकत्ता

१६ सितम्वर : सुवह मैदान गया फिर रघुनाथजी के घर ताश खेलता रहा। १॥ वजे एन० एल० कनोई के यहाँ भोजन करने गया। एस० डी० मिश्र डेपुटी मिनिस्टर ऑफ कोआपरेटिव आए थे।

१७ सितम्वर : कुछ अनियम कर लेता हूँ। जुकाम हो गया है। कसरत नहीं की परंतु मैदान गया था। दिन में ऑफिस भी; इसके पहले वेजिटेवल के कारखाने में जमीन देखने एस० एन० के साथ गया, शाम को ५ वजे घर पर सात-आठ आदमी चाय पर आए। रामस्वामी डिपुटी रेलवे मिनिस्टर आए। ८ बजे पी० डी० के खाने पर गया। इस्टर्न रेलवे के जेनरल मैनेजर मि० खंडेलवाल मिले।

२० सितम्वर : इन दिनों सावरकर की कुछ कितावें पढ़ीं। अच्छी लगीं। स्पष्टवादिता है। हिंदू और हिंदूत्व के बारे में उनके विचार संकीर्ण नहीं कहे जा सकते। इतिहास इसका फैसला करेगा। ऑफिस नियम से जाता हूँ, शेयर मार्केट गया था।

जसीडीह

९ अक्तूबर : शाम को ८॥ वजे पुरुषोत्तम जी वगैरह आये; स्टेशन गया। भागीरथ जी रामकुमारजी कल आए और आज ५॥ वजे की गाड़ी से चले गए। मेरे पास ठहरे थे। नेफा का कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल कौल को वनाया गया है। अनुभव-हीन आदमी है। ऐसा लगता है, भारत के दुर्दिन आ रहे हैं। थिमैया की वात सही निकलेगी।

२० अक्तूबर : शाम को ६ बजे रायकृष्णदासजी, सीतारामजी, भागीरथजी, नथमलजी तथा मैं 'सेतु' नाटक देखने गए। अच्छा रहा। रात में १० बजे सीतारामजी के घर खाना खाया। फिर १२ बजे तक मनुभाई के पास था। कई तरह की बातें होती रहीं।

२१ अक्तूबर : खबर आयी, चीन ने नेफा पर हमला जोर से कर दिया है। मन में बहुत दुःख हुआ। अपनी कुछ भी तैयारी नहीं है, हथियार भी नहीं। सेना ने पिछले जून महीने में सातवीं बार रक्षा-मंत्रालय को हथियार और सामान की कमी के बारे में चेतावनी दी थी। हम लोगों ने कृष्णमेनन से भी मीटिंगों में कहा परंतु उसने किसी की नहीं सुनी। पंडितजी ने उसका फेवर कर के बहुत बड़ा खतरा उठा लिया है।

२२ अक्तूबर : दिन में एक बजे ऑफिस गया। पंडितजी के भाषण से लोगों में निराशा है। बाजार में शेयरों के भाव बहुत तेजी से टूटे। तरह-तरह की अफवाहें आ रही हैं। मनु भाई कल चले गए।

२४ अक्तूबर : सारे दिन लड़ाई की चर्चा–कि क्यूबा में अमेरिका और रूस तथा हिमालय में भारत और चीन लड़ रहे हैं। परंतु रूस और अमेरिका तो आपस में नहीं लड़ रहे हैं, धमकियाँ हैं। मुझे तो दिखावा लगता है। चीन ने तो हमारे ऊपर धावा बोल दिया है। दुनिया में कमजोर रहना अपराध है। बाजार में बहुत घट-बढ़ है। मन में अशांति है, पंडितजी के साथ-साथ सारे कांग्रेसी नेता, एम० पी० वगैरह भी नेफा कांड के लिए जिम्मेदार ठहरायें जायेंगे। मन में दुख-सा हो रहा है।

२५ अक्तूबर : सुबह के० एल० ढांडनिया के गया और लोग भी थे। ड्राफ्ट बनाया कि दीवाली पर रोशनी वगैरह न की जाय, पंडितजी की अपील है। शाम को मारवाड़ी सम्मेलन की मीटिंग में गया। मन में अपने को दोषी पाता हूँ। देश के लिए कुछ करने का मन हो रहा है। हमारे बहुत से जवान मरे और घायल हुए बताते हैं। हाथ में मामूली हथियार, बदन पर जरूरत के गरम कपड़े तक नहीं। ठंड से हाथ-पैर की उँगलियाँ गल गयीं।

२६ अक्तूबर : सुबह अखबारों में देखा, टुएनसांग चला गया। चीन की सेना बाढ़ की तरह आ रही है। आसाम पर खतरा उतरने से पाकिस्तान भी झमेला जरूर खड़ा कर देगा। मन में दुःख होता है। अपना देश हारता जा रहा है, हमारे बहादुर जवानों की जान हमारी लापरवाही से जा रही है। कल जो स्टेटमेंट मैंने दिया था, वह अखबारों में आया।

२७ अक्तूबर : हम लोगों ने वार फंड में एक लाख रुपये देने का तय किया। पिताजी को भी जँच गया। माईजी को देश चिट्ठी लिखी, समाचार दिया। मन को कुछ शांति मिली।

३ नवम्बर : लड़ाई की हालत अच्छी नहीं है। नेफा के कमांडर कौल तो ११ तारीख को ही दिल्ली आ गए थे। उन्होंने पंडितजी और मेनन को वता दिया था कि चीन की घुस-पैठ हो चुकी है और उन्हें दवाना वूते के वाहर है। इस बीच मैंने अखवारों में कई लेख भेजे और पत्र भी संसद के अपने मित्रों को लिखे हैं। देखें क्या होता है। लद्दाख में हमारी सेना ने चीनियों को वढ़ने नहीं दिया। कौल को फिर से नेफा कमांड पर भेजा गया है।

नयी दिल्ली

६ नवम्बर : : सारे दिन मेनन के वारे में लोगों में चर्चा रही। ऐसा लगता है, पार्टी के सदस्य और संसद सदस्यों को पछतावा है और असंतोष भी।

७ नवम्बर : शाम को पार्टी मीटिंग में पंडितजी ने मेनन को हटा दिया। एक प्रकार से मजबूर थे। मेनन के हटने से सव को खुशी हुई। सुवह सिसेज रेणुका राय से मिला था। दिन में मेहताव के घर वीस-पच्चीस लोगों की मीटिंग हुई।

८ नवम्बर : कल पार्टी मीटिंग में पंडितजी ने मेनन को छोड़ देने को कह दिया। मेरा भी इसमें हाथ रहा, मुझे संतोष है। शायद पंडितजी नाखुश होंगे।

सरदार शहर

१७ नवम्बर : पौने नौ वजे सरदार शहर पूगा। ५ वजे रतनगढ़ से चला था। स्टेशन पर एस० दूगड़ तथा और लोग भी आए थे। स्कूल में लाइब्रेरी की मीटिंग थी, वहाँ गया। मैंने फर्नीचर वनवाने को कहा। शाम को महिला मंडल की मीटिंग थी, ५००)रु० दिए। सरदार शहर में काफी गरीवी है, सोहनलालजी काफी रुपए वाँटते हैं। यहाँ हाथ की कारीगरी और खेती का वंदोवस्त किए विना गरीवी नहीं मिटेगी। पढ़ाई बढ़ रही है, वेकारी भी वढ़ेगी, ऐसी मेरी धारणा है।

१८ नवम्बर : सुवह घूमने निकल गया। ठंडी हवा अच्छी लगी। मन में विचार आते रहे। भगवान् ने मुझे कितना आगे वढ़ाया, परंतु मेरा गाँव अभी भी गरीव और पिछड़ा है। कोशिश करता हूँ परंतु अकेला कितना कर सकता हूँ। ८ वजे गांधी विद्या मंदिर गया। एस० एन० सिन्हा नहीं आए, काफी निराशा रही। मोहनलालजी जालान आए थे। उन्हें प्रधान अतिथि वनाया। दिन में गांधी विद्या मंदिर की मीटिंग में गया, मैं वोला भी।

१९ नवम्बर : सुवह उठकर भंगियों के मुहल्ले में घूमने गया। दो मील घूमा। लोगों से वात की। पढ़ाई के प्रति इनमें खास उत्साह नहीं है। शायद इसलिए कि गाँव में लिख-पढ़ कर भी अलग-अलग ही इन्हें रहना पड़ेगा। इन लोगों ने यह भी वताया कि

लिखे-पढ़े होने पर अपना काम नहीं करना चाहेंगे। बेकार रह जायेंगे। ऐसी बात तो और जगहों में भी होगी। इनके लिए हाथ के काम की व्यवस्था ठीक रहेगी, ऐसी मेरी धारणा है। जात-पाँत ढीली तो हो रही है पर एकदम मिटने में टाइम लगेगा। दिन में दो मीटिंगों में बोला, साधारण-सा था। सोहनलाल जी दूगड़ के साथ था। १० बजे स्कूल गया। लड़कियों के लिए बैंज वगैरह बनवाने की बात की। शाम को ७ बजे लादूरामजी के खाना खाकर रतनगढ़ के लिए रवाना हुआ, कार से। ८॥ बजे पूगा। मोहनलालजी जालान के सभापतित्व में मीटिंग में बोला। नेफा के मोर्चे की खबरें खराब आ रही हैं।

नयी दिल्ली

२० नवम्बर : सुबह ७॥ बजे पूगा। गंगा बाबू के गया, दद्दा से मिला। ११ बजे पार्लियामेंट गया, तीन सवाल थे। दिन में लड़ाई के बारे में खबरें सुनता रहा। मन खिन्न हो रहा है। दुनियावाले हम लोगों पर हँसते होंगे। ४ बजे नेहरूजी से मिला, और भी लोग थे। तीन बजे मुरारजी भाई के साथ मीटिंग हुई थी। रात में महावीरजी त्यागी आए। नेफा के मामले से वे बहुत चिंतित थे।

२१ नवम्बर : सुबह उठते ही अखबारों में देखा कि चीन ने 'सीज फायर' कर दिया है। दिन में नेहरूजी का स्टेटमेंट सुना। कुछ दम नहीं था। दुनिया ने देख लिया, हमारी विदेश नीति कितनी कमजोर है और विदेशों में हमारा कितना प्रभाव है। पार्लियामेंट में डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी जैसा कोई जोरदार विरोध करने वाला होता तो पंडितजी सम्हले रहते और देश का भला होता। लोहियाजी बोलते हैं परंतु उनकी चोट पंडितजी पर व्यक्तिगत रहती है। चीन को जो करना था कर दिया, जमीन तो हड़प ही ली।

जयपुर

२२ नवम्बर : सुबह ५॥। बजे पहुँचा। स्टेशन से गर्वमेंट होस्टल में गया। रानीवालों से मिल के बारे में बातचीत की। शाम को सुखाड़ियाजी की लड़की की शादी में गया। बहुत से परिचित लोग मिल गए। अच्छा रहा।

कलकत्ता

११ दिसम्बर : सुबह पिताजी के साथ घूमा। फिर विक्टोरिया गया। ९ बजे ज्ञान भारती की मीटिंग में गया। काम ठीक चल रहा है। कुछ अड़ंगे हैं, वे ठीक हो जायेंगे। अध्यापकों में दलबंदी-सी है। इससे पढ़ाई में अड़चन पड़ सकती है। लड़कों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता।

गौहाटी-नौगाँव

१३ दिसम्बर : सुबह ८॥ बजे हवाई जहाज से गौहाटी पूगे। हिम्मतसिंह काजी की

फैक्टरी देखने गए, वहुत अच्छी है। नफा शायद कम होगा। १२ वजे जीमे, शहर के लोग मिलने आए। ४ वजे चले ६।। वजे नौगाँव पूगे। लालचंदजी के यहाँ ठहरे। यहाँ खास समस्या नहीं है। पाट का वाजार कुछ तेज है। चीन चुप वैठा है, उसे जितना करना था कर दिया, हम देखते रह गए। चीन के हमले से शुरू में कुछ डर-सा वना था पर अव लोगों में घवराहट नहीं है।

नौगाँव-डिब्रूगढ़

१४ दिसम्वर : सुवह ७।। वजे नौगाँव से नाश्ता कर के चले। ११।। वजे जोरहाट पूगे। लालाजी के यहाँ ठहरे, जीमे। ३।। वजे जोरहाट से चले, ४।। वजे शिवसागर पूगे। लोगों में साहस वना हुआ है। काफी लोग मिलने आ जाते हैं। अपने घायल जवानों की हालत देखकर दुखी थे। कुछ लोगों ने ओलमा भी दिया कि हम लोग पार्लियामेंट में क्या करते हैं। अच्छा लगा, पब्लिक का जगा रहना देश के लिए फायदेमंद है। ६ वजे डिब्रूगढ़ पूगे, जालानजी के ठहरे। अच्छी व्यवस्था थी। सर्दी थी। मैं तो शायद २३ वर्ष वाद यहाँ आया हूँ। पुरानी वातें एक वार आँखों के सामने आ गयीं। पता नहीं मैं वदला या समय। भगवान की कृपा है।

तिनसुकिया-तेजपुर

१५ दिसम्वर : सुवह ८ वजे डिब्रूगढ़ से तिनसुकिया कार में गए। अच्छी ट्रिप रही। द्वारका प्रसादजी वगड़िया के यहाँ खाना खाया। रुक्मानंदजी तोदी से मिला। वाजार में लोगों से मिला। ११ वजे वापिस चले। मोहनवारी होते हुए २।। वजे तेजपुर पूगे। वहुत सारे लोग आए थे। लोगों ने चीन के हमले पर हिम्मत नहीं छोड़ी। कोई भगदड़ भी नहीं मची। जवानों की सहायता के काम भी यहाँ हुए वताते हैं। इन सवसे अपने समाज का इमेज अच्छा वना। शहर में गया, लोगों से मिला। यहाँ के लोगों ने सवसे ज्यादा काम किया है।

तेजपुर-गौहाटी

१६ दिसम्वर : सुवह ६ वजे घूमने गए, पहाड़ पर और शहर में घूमे। खड्ग सिंह कोठाराजी, वी० डी० शर्मा तथा और लोग आए। यहाँ का ढंग ठीक है। लोग कारवार में जम रहे हैं। परन्तु सव ने डिफेन्स को मजवूत वनवाने के लिए जोर दिया। पूर्वी पाकिस्तान से वीच-वीच में हिंदुओं का आना चालू है और मुसलमान भी भारत की सीमा में आकर वसते जा रहे हैं, इस वात की भी चर्चा हुई। आगे चलकर इससे प्रावलेम वढ़ेंगे। यहाँ से १० वजे कार से चला। १।। वजे खारुपेटिया में चंपालालजी और कुछ लोग मिले। ४ वजे गौहाटी पूगे। शाम को ६।। वजे स्कूल में वड़ी मीटिंग हुई। मैं भी वोला। अच्छा प्रोग्राम रहा। आसाम की यात्रा अच्छी रही। लोगों में हम लोगों के प्रति स्नेह और विश्वास वढ़ा।

गौहाटी-कलकत्ता

१७ दिसम्बर : सुबह रेलवे मिनिस्टर रामस्वामी से मिला। आसाम और पूर्वी भारत के प्रांतों में रेलवे की लाइनें कमती हैं। वार्डर पर खतरा बना रहेगा इसलिए रेल लाइनों का बढ़ाया जाना जरूरी है। मैंने अपनी इस बार की यात्रा के अनुभव भी उन्हें बताये। पी० डी० साथ में थे। प्लेन से १०॥ बजे कलकत्ता पुगे। भाईजी का बंबई का पत्र था। कपड़ा नहीं बिक रहा है, रुपयों की दरकार भी है।

१८ दिसम्बर : दिन में कई पत्र आसाम के बारे में लिखे। शाम को आसाम के चीफ मिनिस्टर चालिहा से मिलने एयर पोर्ट गया। ८ बजे लौटा। एक लेख भी तैयार कर रहा हूँ।

शांति निकेतन

२४ दिसम्बर : शांति निकेतन काफी घूमा। काशी विश्वविद्यालय की तरह नहीं है फिर भी, काफी बड़ी जगह है। रवींद्रनाथ ने बहुत बड़ा काम कर दिखाया है, कला और शिल्प की शिक्षा के लिए। श्री निकेतन भी देखा। उत्तरायन और चीन भवन भी गया। गंगाबाबू और खाडिलकर से मिला। बच्चों और छात्रों की पढ़ाई की खुली व्यवस्था बहुत अच्छी लगी। मेरा मन भी इसी तरह से बच्चों को पढ़ाने का हो रहा है। इससे बढ़ कर पुण्य और किसमें है?

कलकत्ता

२७ दिसम्बर : कुछ तकलीफ मालूम देती है, कसरत करता हूँ, घूमता भी हूँ। घर आया। गंगाबाबू आए हैं। देश की राजनीति और शिक्षा-व्यवस्था पर बातचीत हुई। एक लेख अंग्रेजी में लिखा, अखबारों में भेजा। कई पत्र भी लिखे। बिरलाजी की एक किताब आयी है, पढ़ रहा हूँ।

१९६३

कलकत्ता

५ जनवरी : "कतो अजानारे" किताव पढ़ी। ज्ञानभारती गया। पी० डी० हिम्मत सिंहकाजी को फोन किया। धनजी दूगड़ ने ५,०००) रु० स्कूल को दिये। स्कूल के पेटे २२,०००) रु० दिए। शाम को ४।। से ५।।। वजे तक दिनकरजी की 'परशुराम' कविता सुनी, अच्छी थी। पंडितजी की लिखी चिट्ठी शाम को मिली, उनकी अपनी सही की हुई थी।

कलकत्ता

२३ जनवरी : एडमिरल शंकर से मिला। ३।। वजे पार्ल्यामेंट से घर आ गया। हवाई जहाज में दिल्ली से चला कलकत्ता ९।। वजे आ गया। वावूजी के पास रिलीफ सोसाइटी गया, दर्द है, चोट काफी आयी है, आपरेशन होगा।

२६ जनवरी : वावूजी के पास गया। आपरेशन अच्छी तरह हो गया पर तवीयत उसी तरह है। सोसाइटी में झंडोत्तोलन किया, फिर ज्ञान-भारती का।
आज मेरा जन्म दिन है। ५३ वर्ष का हो गया हूँ। दिन में 'चौरंगी' किताव पढ़ता रहा। कसरत वंद है। कारण, २-३ दिन पहले छाती में दर्द आ गया था। चंदे में नहीं गया।

६ फरवरी : रात में छाती में थोड़ा दर्द था। सुखाड़िया जी के साथ दिन में था। १०,०००) रु० देने होंगे, मेरे पास से ही जायेंगे। वद्रीदासजी गोयनका के खाना खाया। इसके पहले एल० एन० विरला की टी पार्टी में गया। लोगों से स्कूल के वारे में वात-चीत की। आजकल कुछ थकावट महसूस कर रहा हूँ। नन्दू के ३।५५ पर लड़का हुआ। मन में खुशी हुई।

७ फरवरी : दोस्त लोग घर आए। एक वाजी ताश खेली। फिर सोहनलालजी दूगड़ के साथ विरलाजी के हॉस्पिटल की नींव में गया। काफी लोग थे। चह्वाण आए थे। वहाँ से १०।। वजे स्कूल आया। ११।। वजे सुखाड़ियाजी आए, और लोग भी।

१२ फरवरी : 'काला हंस' किताव पढ़ता रहा। अच्छी लगी। आज गीगें का नाम था। काफी लोग आए थे। अच्छा रहा। मन में एक तरह की प्रसन्नता हुई।

नयी दिल्ली

१ मार्च : सुबह पी० डी० के साथ घूमने गया। देखा, झंडे नीचे हैं। राजेंद्र बाबू नहीं रहे। बहुत दुःख हुआ। राष्ट्र को बड़ा नुकसान पहुँचा। ऐसे लोग फिर कब आयेंगे? बजट बहुत खराब है।

४ मार्च : राज्यसभा में गया। मेहताब के गया। शाम को कुंभारामजी, काटजू मैथ्यू, पी० डी० वगैरह खाने पर आये। पार्टी में खड़े होने की चेष्टा कर रहा हूँ।

८ मार्च : दिन में बजट पर, सोने पर, कमेटी की मीटिंग थी, मैंने भी भाग लिया। १० बजे रात हवाई जहाज से कलकत्ता पहुँचा।

कलकत्ता

१० मार्च : कई जगह मिलने गया। कलकत्ते में बजट के प्रति लोगों में उत्साह कम है। कल शेयर, मार्केट से आँकड़े इकट्ठा करूँगा।

नयी दिल्ली

१३ मार्च : 'विश्वमित्र' में मेरा लेख छपा है। प्लेन से १०।। बजे दिल्ली पहुँचा। पार्ल्यामेंट गया, लोगों से मिला। जो भाषण हुए उन्हें सुना। शेयर कुछ तेज है। पी० डी० से मिला, शाम को जी० डी० से। उनकी राय में बजट खराब नहीं है।

१६ मार्च : ९।। बजे स्पीकर के गया। पार्ल्यामेंट के लिए स्पीच की स्टडी की। १२।। बजे बोलने का मौका मिला। ५ मिनट में अच्छा बोला। कल के लिए लोगों को निमंत्रण दिया।

१९ मार्च : जगजीवन राम, भगत, महामाया बाबू, बी० एन० वर्मा वगैरह १२ लोग आये। अच्छा रहा। जिमाने में खर्च और हैरानी तो है पर नजदीक से सीखने-समझने का मौका मिलता है। मेरी गाड़ी खराब पड़ी है। पी० डी० की गाड़ी आ जाती है।

२१ मार्च : सुबह बदन में दर्द था, कमजोरी भी। नींबू का पानी लिया, दूध में सोंठ ली। दो मेंबरों से मिला। दिन में ७ किताबें दीं। लोगों से जान-पहचान भी की। शाम को पार्टी मीटिंग में थोड़ा-सा बोला। कमलनयन बजाज भी बोले। मैं जल्दी-जल्दी बोलता हूँ और थोड़ी देर बोलता हूँ। इसे ठीक करना चाहिए।

नयी दिल्ली-बम्बई

२५ मार्च : सुबह ६ बजे दिल्ली पूगा। सरदारशहर की यात्रा एक रकम अच्छी रही। १००)-१५०) रु० लगे। बंबई १।।। बजे पूगे, जी० डी० बिरला के साथ। मिल की

हालत खराव है। मिल वहुत दिनों वाद देख रहा हूँ। पिछले वर्ष वरावर रही। वोनस के १२ लाख लग गए!

चिरगाँव (झाँसी)

२ अप्रैल : सुवह ६ वजे झाँसी पूगा। ताँगा लेकर शहर गया। वस से चिरगाँव ७ वजे पूगा। दद्दा के घर गया। दाँत मूल गया था, इसलिए दिन में खाना नहीं खा सका, केवल गन्ने का रस और दही की लस्सी ली। १० वजे झाँसी आकर किला देखने गया। शिव मंदिर जहाँ रानी पूजा करने आती थीं, उसे देखा। किला साधारण-सा है।

नयी दिल्ली

७ अप्रैल : सुखाड़ियाजी से मिलने गया, एक घंटा था। वातचीत हुई। दिन में ए० आई० सी० की मीटिंग में गया। पन्नालाल सरावगी चेष्टा कर रहे हैं। एस० एन० सिन्हा से मिला। उनका रुख साधारण-सा है।

२४ अप्रैल : १० वजे लालवहादुरजी की मीटिंग में गया। मैं भी वोला। चुनाव के ढंग अच्छे मालूम देते हैं। कमलनयन तो एकदम चेष्टा नहीं कर रहे हैं। पन्नालाल थोड़ी वहुत कर रहे हैं।

३० अप्रैल : इलेक्शन कैम्पेन जोरों पर है। दिन में पार्ल्यामेंट में चेष्टा करता रहा। ऐसा विश्वास है, जीत जाऊँगा। कल अतुल्य वावू आ रहे हैं, वे मेरा समर्थन करेंगे।

३ मई : चुनाव का काम जोरों पर है। मैं भी अपनी जान पूरी चेष्टा कर रहा हूँ। कमलनयनजी भी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैंने आई० एन० टी० यू० सी० के विरोध में चिट्ठी लिखी है, इसलिए गुजरात वाले मत नहीं देंगे। खंडू भाई देसाई से मिला। मैं जीतूंगा, यह निश्चित-सी धारणा है।

७ मई : २०९ वोट से जीत में रहा। काफी चर्चा रही। कमलनयन सुस्त दिखाई दे रहे थे। रात की ट्रेन से सीकर रवाना हो गया। नींद ठीक से आयी।

६ जून : पिताजी आज ज्यादा वीमार हैं. डाक्टर कहते हैं, ज्यादा दिन नहीं निकलेंगे। कारोनरी थ्रंवोसिस हो गया है, कफ में खून आता है। उन्होंने शाम को बनारस ले जाने के लिए कहा। रात में उन्हें काफी तकलीफ रही।

वाराणसी

८ जून : सुवह माँजी के साथ ७ वजे मुगलसराय उतरा। वहीं नन्दू का साला था। उसने कहा, कल रात में पिताजी का देहांत हो गया है। मन में दुख हुआ। माताजी विलाप करने लगीं।

१८ जून : ५॥। वजे 'दद्दा' के साथ एक मकान अस्सी पर देखने गया। वड़ा मकान था। परंतु गरीवी के कारण टूटी हालत में है। ४० वर्ष पहले वना था। अग्रवाल हैं। आदमी की खराव हालत होने से कितनी दयनीय दशा हो जाती है।

कलकत्ता

२८ जून : सुबह विनोबाजी प्लेनेटोरियम में आए। मैं भी संसद सदस्यों के साथ गया।

२ जुलाई : ४ बजे बिरला प्लेनेटोरियम गया। पंडितजी आए। फिर जनसभा में गया। प्रायः एक लाख आदमी थे।

नयी दिल्ली

४ जुलाई : सुबह ५ बजे उठा। रात में बाहर दूब पर सोया था। पड़ौस से चाबियाँ लेकर किसी तरह ताला खोला। पार्टी मीटिंग में ९॥ बजे गया। पंडितजी सुस्त थे। मैं भी काफी बोला, शुगर (चीनी) पर। घर में एकदम धूल सी पड़ी है।

कलकत्ता

१९ जुलाई : दिन में स्कूल का चंदा मँडाने गया। १४,०००) रु० मँडे। मन को अच्छा लगा परंतु शारीरिक कमजोरी महसूस होती है।

नयी दिल्ली

५ अगस्त: सुबह 'पत्रावली' पढ़ता रहा। अखबार भी पढ़े। ९ बजे श्री महावीर त्यागी के घर उमा और छोटी लड़की से राखी बँधाने गया। ४२) रु० दिए। यहाँ आने पर तबीयत बहुत अच्छी हो गयी। सीने में दर्द नहीं है। डाक्टर का फोन आया, खून, पेशाब, हार्ट सब नार्मल है, चिंता मिटी। दिन में पार्ल्यामेंट गया।

६ अगस्त : वेलिंगटन हॉस्पिटल गया। सर्जन ने देखकर बताया प्रोस्टेट ग्लैंड है, ऑपरेशन जरूरी है। मेरा विचार सितंबर के पहले सप्ताह का है। कल-परसों में फोटो लेंगे। पार्ल्यामेंट गया, फिर एस० एन० सिन्हा के घर मीटिंग में गया। वहाँ पन्नालाल सरावगी के देहांत की बात सुनी।

चंडीगढ़

११ अगस्त : ४॥ बजे चंडीगढ़ पूगा। बहुत अच्छा शहर है, नए ढंग का। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के गया। ११॥ बजे आनंदपुर पूगे। यहाँ गुरु गोविंद सिंह रहे थे, बड़ा गुरुद्वारा है। २ बजे श्री गुप्ता को लेकर भाखड़ा बाँध देखने गया। बड़ा काम हुआ है। १॥ वर्ष बाद ९ लाख कि० वा० और पावर हो जाएगा। ऐसी यात्रा अच्छी रहती है। मन होता है, हर रविवार आया जाय।

नयी दिल्ली

१७ अगस्त : शाम को मोटर से लोगों को लेने गया, गलती की। मुझे रात में मोटर नहीं चलानी चाहिए। काफी परेशानी हुई। रात देर तक नींद नहीं आयी। क्रोध बुरी बात है, वही बात साधारण ढंग से भी कही जा सकती है।

नयी दिल्ली

२० अगस्त : १२ वजे पार्ल्यामेंट गया। ५ वजे तक था। पाटिल वहुत अच्छा वोले, उन को सुन कर ऐसा लगा कि मैं ऐसा क्यों नहीं वोल पाता। चेष्टा करनी चाहिए। ढेवर भाई आए, २४ को मिलने कहा है।

१० सितम्बर : के० डी० मालवीय के गया, क़ाफी वातचीत हुई। एक्जिक्युटिव की मीटिंग में मैं थोड़ा वोला, कुछ ज्यादा वोलना चाहिए था। फिर पंडितजी से अखवार के वारे में वात चीत की।

उदयपुर

१५ सितम्बर : कुछ संसद सदस्य साथ हैं, उदयपुर दिखाने लाया हूँ। सुवह चित्तौड़ का किला देखा। देखता ही रहा। पुराना और भव्य है। तरह-तरह की भावनाएँ आयीं। राजस्थान की धरती वीर-प्रसूता है। रजवाड़ों की दुर्गति क्यों हुई? राजपूती शान कहाँ रही? आगे क्या समय आ रहा है? ब्राह्मण, वनिये, भील सभी तलवार उठाते थे, उदयपुर पूगे। वर्षा हो रही थी, दृश्य अच्छा लगा।

हल्दीघाटी-नाथद्वारा-अजमेर

१६ सितम्बर : दिन में हल्दीघाटी देखी। वहुत कुछ पढ़ा और सुना था। हल्दीघाटी का युद्ध कैसा रहा होगा, सोचने लगा। उजड़ा-सा स्थान है, देखने में कुछ खास नहीं। अभिशप्त-सा लगता है। इसे ऐतिहासिक दृष्टि से सँवारा जा सकता है। नाथद्वारा आया। पुष्टिमार्ग के वारे में ज्यादा जानता नहीं। लोग किवदंतियाँ अधिक सुनाते हैं, ऐसा लगा।

नयी दिल्ली

२० सितम्बर : पंडित जी के घर गया। चाय देकर आया। इंदिरा जी से वातें हुईं। पंडितजी कल के भोज में नहीं आयेंगे।

कलकत्ता

२४ सितम्बर : सुवह वुखार था। कुंजल किया, पेट में वहुत आँव है, काफी दुखता है। आज हड़ताल है। कुछ दोस्त लोग आए, सारे दिन रहे, ताश खेला।

२६ सितम्बर : वुखार है। डॉक्टर कहते हैं, जल्द ऑपरेशन कराना होगा। डॉ० एस० एल० दास ने देखा, दवा ली। कहते हैं, ऑपरेशन नहीं कराना होगा। कमजोरी आ रही है। खाने में लापरवाही करता हूँ, उसका फल है।

जसीडीह

२२ अक्तूबर : १॥ महीने से ज्यादा हो गए तवीयत ठीक नहीं होती। तरह-तरह के

विचार आते हैं। इन वर्षों में इतना बीमार नहीं पड़ा। कमजोरी काफी है। शेयरों वाली चिंता भी है।

२३ अक्तूबर : रात में खूब नींद आयी। कुछ ताकत भी मालूम देती है। एक दिन में इतना फर्क, आश्चर्य की बात है।

२९ अक्तूबर : तबीयत तो ठीक है परंतु वजन कम होता जा रहा है। भूख लगती है। एक स्वामी जी आए, वैद्य और डॉक्टर दोनों हैं। मुझे भी देखा। बोले, किडनी खराब है। बात तो कुछ मिली परंतु मुझे कुछ जँचे नहीं। काफी लोग आ जाते हैं। काफी भीड़ हो गयी है, झंझट सी मालूम देती है।

३० अक्तूबर : दरद कम है। सुबह ताऊ जी के गया। शाम को थोड़ा घूमा। यशपाल जी आए थे। कल जीमने को कहा है। शेयर बाजार गरम हैं। प्रेमचन्द का 'गोदान' फिर से पढ़ रहा हूँ।

१३ नवम्बर : तबीयत में सुधार है पर लीवर में दर्द अभी भी है। कुछ करता नहीं, ताश खेलता और पढ़ता हूँ। इधर किताबें खूब पढ़ीं। 'गुजरात के नाथ', 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' कल और आज में खत्म किए। भवन के जलसे में गया। मुझे भी बोलने कहा, साधारण सा बोला, रिपिटिशन कर देता हूँ, यह गलत है।

कलकत्ता

२५ दिसम्बर : ७ बजे मारवाड़ी सोसाइटी आ गया। नन्दू और उसकी माँ जसीडीह से आ गयी। ९॥ बजे बेहोशी की सुई दी। १०। बजे ऑपरेशन हुआ, ११ बजे तक होता रहा। एक बजे मुझे चेत हुआ। मन में खास चिंता जैसी नहीं थी। दिन में ३॥ बजे एक प्रकार की झंझट हुई। डॉक्टर आए, ठीक कर दिया। जीवन में झंझटें तो हैं ही। कहाँ तक कोई बचेगा ? डॉक्टरों का कहना है २५ वर्षों का रोग था, मिट गया।

२९ दिसम्बर : रात में नींद अच्छी आयी। छटपटी नहीं रही। कुल मिला कर ऑपरेशन बहुत ही अच्छा रहा। मेरी हिम्मत ने साथ दिया। आगे के लिए संकट कट गया। जी० डी० बिरला ने फल और फूल भेजे। उनसे व्यवहार की बातें सीखनी चाहिए।

१९६४

कलकत्ता

१ जनवरी : सुबह पाँच बजे उठा। रात वाली नर्स काफी भली है। बद्रीनारायण जी के उपवास के लिए २९ तार दिए। इम्प्रूव कर रहा हूँ। कल सुबह सोसाइटी से घर जाऊँगा। वजन १४७ पौंड।

जसीडीह

१४ जनवरी : तबीयत ठीक हो रही थी, मन प्रसन्न था। फिर गलती कर बैठा, १। सेर नीरा पी गया। पतले दस्त आने लगे, कमजोरी महसूस करता हूँ।

१७ जनवरी : गंगाबाबू के साथ मुरारी मोहन सिन्हा प्रिंसिपल, देवघर विद्यापीठ के यहाँ गया। बहुत विद्वान हैं। बिना वेतन तीन वर्ष से काम कर रहे हैं। अखबार देखे, कलकत्ते में शांति है। रात में किताब पढ़ता रहा। जवाहरलाल जी बीमार हैं। मेरी समझ से लाल बहादुर शास्त्री डेपुटी प्राइम मिनिस्टर होंगे।

२६ जनवरी : सुबह सवा पाँच बजे उठा। ७५ माला फेरी। दिन में असत्य नहीं बोला। भवन गया झंडोत्तोलन किया। आज ५४ वर्ष का हो गया हूँ। स्वास्थ्य कुछ अच्छा है। पिछला वर्ष एक तरह बहुत अच्छा रहा परंतु स्वास्थ्य जरूर खराब रहा।

४ जनवरी : नीरा रोज लेता हूँ। वजन भी ठीक है। आज तेल मालिश के बाद आइने में देखा। बूढ़ा-सा लगने लग गया हूँ। कसरत शुरू की पर रेगुलर कर नहीं पाता हूँ। 'डेविड कॉपर फील्ड' फिर से पढ़ रहा हूँ। डिकन्स मुझे अच्छा लगता है। उसमें कहीं-कहीं खुद को पाता हूँ। परसों गीगा का जन्म दिन है।

६ फरवरी : आज गीगा का जन्म दिन है। नन्दू, राजू, बेला कलकत्ते से आए। दिन में ४५ लड़के-लड़कियों को कपड़े दिए, खाना खिलाया। अन्य ५० स्त्री-पुरुषों को नाश्ता दिया। काफी लोग इकट्ठा हुए। अच्छा उत्सव-सा रहा। सारे घरवालों का ग्रुप फोटो लिया। गीगा खुश था।

कलकत्ता

१० फरवरी : साँवरमल मोर के साथ दो-तीन जगह गया। उनके ९०००) रु० चंदे के हो गए। एक तरह से ठीक रहा परंतु मुझे उत्साह नहीं था। रुपए लोगों को उधार दिए। उधार लेना-देना ठीक नहीं, दोस्ती की कैंची है। फिर भी मजबूरी के आगे क्या चले ?

नयी दिल्ली

१२ फरवरी : जगजीवनराम जी के यहाँ गया। आधा घंटा बात की। काफी नाराज थे, कांग्रेस से। दिन में लोगों से मिलता-जुलता रहा। कांग्रेस प्रेसिडेंट को पार्टी दी। श्यामलाल सर्राफ के घर आया।

१३ फरवरी : लोगों से काफी बातचीत हुई। गंगाबाबू शाम को आए। उन्हें ३ किताबें दीं, मोरार जी भाई को दो किताबें दीं। लोगों का कहना है, मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। मुझे भी ऐसा ही मालूम देता है। शाम को पार्ल्यामेंट से पैदल आया। मेरा मन सेक्रेटरी के लिए खड़ा होने का है परंतु समय दे पाऊँगा या नहीं ?

सीकर

२२ फरवरी : सुबह ७ बजे पूगा। साँवरमल जी और दूसरे लोग स्टेशन पर आए थे। इधर कम आने से लोग नाराज तो हैं ही। किताबें लाया था, बद्रीनारायण जी को दे दी। सीकर की राजनीतिक हालत खराब है।

नयी दिल्ली

२६ फरवरी : शाम को दद्दा और पत्नी के साथ पंडित जी के घर होली उत्सव में गया। जगजीवनराम जी अच्छा बोले।

१ मार्च : कल बजट आया, एक प्रकार से अच्छा है। दिन में पत्नी के साथ प्रदर्शनी देखने गया। बजट की प्रतिक्रिया शेयरों पर गरम रही। बैंक वाला लेख टाइप हो गया। अच्छा हुआ है। पत्नी को बहुत काम करना पड़ता है। लोगों को मेरी किताबें पसंद आती हैं, मेरा उत्साह बढ़ता है।

७ मार्च : दिन में एक्जिक्युटिव की मीटिंग थी। बख्शी गुलाम मुहम्मद आए थे। ६॥ बजे तक पार्टी मीटिंग चलती रही। रात में फोन किया, ब्यावर मिल का काम हो गया है। रात में भाई जी से बातें करता रहा। जसीडीह में शारदा की तबीयत ठीक है।

१३ मार्च : सुबह ९॥ बजे इंदिरा जी के घर 'नेशनल हेराल्ड' की मीटिंग में गया। कर्नल जैदी, के० के० शाह और भी लोग थे। दस लाख रुपए इकट्ठा करने हैं। शाम को के० के० शाह के घर पर और लोगों से मिला। कुछ बातचीत हुई। आशा कम है। शायद मैंने गलत कदम उठाया। अपनी लिमिटेशन को समझना चाहिए।

सीकर

१४ मार्च : सुबह ७ वजे सीकर। २। वजे मीटिंग हुई। अच्छी थी। मैं भी ठीक से बोला। कमलनयन जी और रामकृष्ण जी वजाज आए थे। जोशी जी, बाबा बलदेव सिंह भी मिले। चीजों के बढ़ते दामों की वजह से कांग्रेस से लोग नाखुश हैं। ४५ किताबें नेछवा स्कूल को तथा १०० अंदाज टी० बी० सेनेटोरियम के लिए लाया।

नयी दिल्ली

१८ मार्च : शाम को क्लब में दद्दा की पार्टी थी। कवियों की कविताएँ हुईं। भाईजी के साथ बाजार गया। १७०) रु० गुम गए। मन में एक बार तो दुख-सा हुआ। सुबह दस वजे कृष्णमाचारी जी के साथ फाइनान्स की मीटिंग होती रही।

२ अप्रैल : शाम को अमेरिकन सेकेंड सेक्रेटरी मि० कार्टर मिलने आए। दिन में अमरनाथ विद्यालंकार मिले, इतिहास परिषद् के लिए रुपया माँगते थे। चारों तरफ रुपयों का खरचा है। दिल्ली में जमीन लेने की जँचा रहा हूँ। शाम को गुजराती समाज का 'मीरां' नाटक देखा, अच्छा था।

जयपुर

४ अप्रैल : सुबह वेटिंग रूम में स्नान किया। चंदनमल जी वैद के घर गया। सुखाड़िया जी से बातचीत हुई। सरदारशहर के घंटा घर का हुक्म दे देंगे। कन्या पाठशाला को अपग्रेड कर देंगे। दिन में असेंबली में गया। बरकतुल्ला जी से मुलाकात हुई। जयपुर आना एक प्रकार से अच्छा रहा।

सरदारशहर

५ अप्रैल : सुबह रतनगढ़ पूगा। ३॥-४ मील घूमा। ९ वजे ट्रेन से सरदारशहर पूगा। गोगराजजी, सुमेरमल जी आए थे। गौशाला गया। लोगों से मिलता रहा। कलक्टर साहब भंगियों की बस्ती के लिए रुपये माँग रहे हैं। २-३ हजार तक देना पड़ेगा। रात में रतनगढ़ पूगा। गौशाला का ठंडा दूध ले लिया था। पेट दुखने लगा। ढाबे में खाना खा कर जोधपुर मेल में बैठ गया। अकाल पड़ा हुआ है, गरीबी है ही।

नयी दिल्ली

२० अप्रैल : जी० डी० के साथ घूमने गया। फिर भागीरथ जी के साथ जमुना जी गया। तेल मालिश कराया। स्नान किया। ताजगी आ गयी। पार्ल्यामेंट गया। सादिक आए थे, कश्मीर के बारे में बातचीत की।

२२ अप्रैल : तबीयत कल से कुछ सुस्त है। पार्ल्यामेंट में आज मेरा अमेंडमेंट था।

ज्यादा बोल सकता था, पर चूक गया। बोलना चाहता था, तय्यार भी था। अच्छा नहीं लगा। लेख ऐसे ही पड़े हैं।

२९ अप्रैल : ७ बजे से जे० पी० नारायण के गया। अपने मित्र के ठहरे हैं। बहुत ही सुंदर लॉन और मकान है। प्रभावती जी भी मिलीं। पौन घंटा जे० पी० से बातें हुईं। उनका दृष्टिकोण समझने लायक है। बहुत दुखी प्रतीत हुए।

१ मई : मुझमें कुछ परिवर्तन आ रहा है, ऐसा लगता है। लीवर में थोड़ा दर्द था, मुझे सावधान रहना चाहिए। पार्ल्यामेंट गया। चुनाव में ट्रेजरार के लिए खड़ा होना चाहता हूँ। सुभद्रा भार्गव भी हो रही हैं। कैसा-कैसा लगता है, जल्द चला नहीं जाता। बहुत से लोग आ गए हैं। जगह कम है। आजकल बाहर सोता हूँ।

५ मई : चुनाव का काम जोरों पर है। पी० डी० हिम्मतसिंहका जी के भोजन प्रायः होता है। ऐसा मालूम देता है, जीत जाऊँगा। मुझे पूरा भरोसा है।

७ मई : सारे दिन चुनाव की चेष्टा में रहा। ४ बजे चुनाव खत्म हुआ। जीतने की मुझे पूरी आशा थी। ५ बजे रिजल्ट आउट हुआ। ६० वोट यानी १७४-२३४ से ज़ीता। रघुनाथ सिंह, विभूति मिश्र भी जीते। पी० डी० हिम्मतसिंहका २० वोट से हार गए। मन बहुत ही खिन्न हुआ।

बंबई

१७ मई : सुबह ए० आई० सी० सी० मीटिंग में गया। बंबई में चहल-पहल है पर मेरा मन नहीं लगता। एयर की टिकट तो कल की मिल रही थी। मेरा मन ३००) रु० बचाने का हो गया। ट्रेन में बत्ती और पानी नहीं था। साथ खाना ले लिया है।

कलकत्ता

२४ मई : सारे दिन ताश खेलता रहा। शाम को मन में काफी दुख हुआ। सुबह त्यागीजी के यहाँ गया। उन्हें गंगाजी तथा विक्टोरिया मेमोरियल लाया। लोगों से मिलाया।

२७ मई : पंडितजी का देहांत हो गया। ऐसा लगता है, अपने देश के इतिहास का एक दौर खत्म हुआ। उनके घर गया। काफी लोग थे, उदासी छायी थी।

२९ मई : चुनाव का चक्कर जोरों पर चल रहा है। एक्सपेक्टेशन शास्त्री जी का है। चाभी फिर खो बैठा। रात में मीना बाग गया। ताला तोड़ा। कुछ सामान लाया। रात में दस बजे से १२ बजे तक मुरार जी भाई के घर रहा। और भी लोग आए थे। मुझे लगता है, मुरार जी भाई हार जायेंगे। सोचता हूँ इतना पार्ट मुझे नहीं लेना चाहिए। परंतु आदत सी है। एक्जिक्युटिव की मीटिंग में काफी बोला।

१ जून : दिन में पार्ल्यामेंट में रहा। कामराज के गया। और भी बहुत लोग गए थे। यह निश्चय है कि लालबहादुर शास्त्री पी० एम० होंगे। दिल्ली में गर्मी १०४ अंदाज है।

झांसी-चिरगांव

३ जून : ६।। बजे झाँसी पहुँचा। गंगा बाबू साथ थे। स्टेशन पर सुमित्रा जी कार लेकर आए थे। ९।। बजे चिरगाँव पूगे, दद्दा मिले। ६।। बजे ओरछा पूगे। प्रवीण राय की हवेली देखी। मन में इतिहास इन जगहों पर बोलता है, ऐसा लगता है। बेतवा के किनारे एक स्टेट गेस्ट हाउस है।

कलकत्ता

१३ जुलाई : यात्रा की तैयारी कर रहा हूँ। लोगों से मिलने गया। बागला के गया और रामगोपाल जी चांडक के। भरतिया के ६ मई के रिजोल्युशन पास किए। हेसियन मंदा है, कुछ चिंता तो है ही। रात में नींद में यात्रा के स्वप्न आते रहे।

कलकत्ता-रंगून

१४ जुलाई : सुबह मैदान, गंगा जी, लेक गया। भागीरथ जी के घर गया। १० बजे एयर पोर्ट पूगा। एयर पोर्ट पर बहुत लोग थे। खाने-पीने का सामान पूरा-पूरा साथ लिया है। रंगून की तरफ़ की पहली यात्रा है। मन में काफी उत्साह है। ५ बजे रंगून पहुँचे। सामने बहुत-से लोग आए थे। शाम को ६।। से ८।। तक लोग मिलने आते रहे। स्ट्रैंड होटल में दो कमरे लेकर ठहरे। फर्स्ट क्लास होटल है। रात में मि० मट्टर ने डिनर दिया। ५०-६० आदमी थे। काफी बातचीत हुई। भारतीयों की हालत यहाँ अच्छी नहीं है। रात में १०। बजे सागरमल जी और उनकी पत्नी आयी। ११ तक दोनों थे। वे ७० के और पत्नी ४५ की। परंतु अभी तक काफी सुंदर है। ५ वर्ष पहले देखा था, खास फर्क वाली बात नहीं देखी। डिनर में मि० मट्टर और मैं, हिंदी में बोला। कई लोगों से जान-पहचान हुई। होटल एयर कंडिशनंड है। मदन और भाई जी से फोन पर बात हुई। यात्रा के संस्मरण नोट अलग से कर रहा हूँ।

रंगून

१५ जुलाई : ९ बजे साइट सोइंग के लिए रवाना हुए। कई पैगोडा देखे। बाजार, स्थान घूम-घूम कर देखे। अच्छा लगा। कई लोगों से जान-पहचान होती गयी। तकलीफ तो है ही। मेरी समझ में बंगाल में भी कहीं ऐसी हालत न बने। अभी से संभल जाना अच्छा रहेगा। बर्मा और लंका के लोग भी किसी जमाने में भारत के थे। राजनीति ने उन्हें अभारतीय कर दिया। रंगून साफ शहर है। किसी समय बड़ा व्यापारिक शहर था, लोग खर्चीले हैं। गोइनका ने भोज दिया, ७० आमंत्रित थे। लोगों की समस्याएँ

सुनी, जेल में काफी लोग हैं। ओमेगा सेकेंड हैंड खरीदी; ३७२) रुपये लगे। रंगून में लोगों ने बहुत खातिरी की। इनके लिए हम कुछ कर सकें तो बहुत बड़ी बात होगी। पी० डी० भी आ गये। पेट दुखता-सा है। रामकृष्ण मिशन देखा। बहुत काम करते थे, परंतु अब खर्चे की दिक्कत है। ७ बजे सिंगापुर पहुँचे। एयर पार्ट पर सर्राफ तथा और लोग आए थे। ९ बजे घर आ गए। बहुत अच्छा मकान है, रात अच्छी नींद आयी।

सिंगापुर

१६ जुलाई : जुकाम कम था। चीज़, मक्खन तथा फल खाए। तैयार होकर ९॥ बजे स्पीकर से मिलने गए। बातचीत की। १॥ बजे तक शहर देखा। बहुत-सी जगहें देखीं। शहर सुंदर है, अभाव नहीं है, चीजों के दाम सस्ते हैं। एक दूरबीन तथा एक घड़ी ली। रंगूनवाली घड़ी का दाम ऊँचा था। रेडियो पर टॉक दिया। ७ बजे कॉकटेल पार्टी और डिनर था।

क्वालालंपुर-हांगकांग

१७ जुलाई : ९ बजे क्वालालंपुर पुगे। मलेशिया भारत का बढ़ा हुआ हिस्सा-सा है। भाषा, भाव में हिंदुस्तानीपन है। लोग मुसलमान होते हुए भी हिंदू से लगे, पास से देखने पर। सांस्कृतिक बंधन बड़ा होता है। २। बजे हांगकांग ठीक समय पर पुगे। श्यामसुंदर जी तथा और भी बहुत से आए थे। गरमी यहाँ बहुत लगी। नए सूट का आर्डर दिया। हांगकांग बहुत सुंदर शहर है। सिंगापुर की तरह यहाँ भी चीजें सस्ती मिलती हैं। भारतीय रुपयों का दाम ६०) कम है। यहाँ के भारतीय व्यापारी खुश हैं।

हांगकांग

१८ जुलाई : १० बजे शहर घूमने निकला, १२॥ बजे तक घूमता रहा। गरीबी और अमीरी दोनों अपनी-अपनी हद को यहाँ पार करती हैं। होटेल वापिस आया, नया सूट बन गया था, २२५ डालर लगे। खाना खाकर फिर निकल पड़ा। खर्च ज्यादातर मैं ही कर रहा हूँ। ७॥ बजे से १२ बजे तक मोटर लंच में हांगकांग के हिस्से देखे। द्वीप का चक्कर लगाया। यहाँ आकर लोग खर्च ज्यादा करते हैं। कुचामन के पंडित भी थे, बहुत वर्षों से यहाँ रहते हैं। अच्छे आदमी हैं। कमिश्नर भी आया था, शराब बहुत पी रहा था, गुजरात के किसी रजवाड़े का राजा था। हांगकांग पर लिखने के लिए काफी सामग्री मन में बैठ गयी है।

१९ जुलाई : बस से चायना टाउन गया। एकदम थक गया। कुछ देर वहाँ घूमे। जी घबरा उठा। चारों ओर बदबू, मांस घोंघे और अजीब चीजें, । बहुत ज्यादा घनी आबादी। लंबे-लंबे साइनबोर्ड। अंग्रेजी से काम चल जाता है। चीनियों की अंग्रेजी में भी चीनीपन है। कठिनाई होती है। हमारी अंग्रेजी में भी भारतीयपन है। अपने-अपने

ढंग के उच्चारण। होटेल आकर लंच लिया। खा न सका, बदबू सड़ाँघ दिमाग में भरी थी। २॥ बजे तक सोया। फिर घूमने निकला। ४ बजे लौट आया। ४॥ बजे श्यामसुंदर जी आए। अपने घर ले गए। मुझे विस्की की प्याली से ओठ लगाना पड़ा। ठीक बात नहीं लगी। पी तो नहीं, मगर ना कर सकता था। संकोच कर गया। सावधान रहूँगा। जुकाम है। ठीक नहीं होता। ६॥ बजे हांगकांग टॉप पर गये। अच्छी ठंड थी। १५०० फीट ऊँची जगह है। त्यागीजी तथा और लोगों को होटल आकर पत्र लिखे। ११॥ बजे कपड़े धोकर सो गया। खबर मिली स्वर्ण सिंह मिनिस्टर हो गए।

२० जुलाई : हांगकांग अकेला खूब घूमता हूँ। दुनिया सिमट कर इस टापू में है, ऐसा लगता है। अच्छइयाँ-बुराइयाँ, बड़े-छोटे, धनी-गरीब सभी लॉ आफ ग्रेविटेशन पर घूमते से लगे। शाम को श्यामसुंदर जी ने कॉकटेल पार्टी में आमंत्रित किया। करीब ९०-१०० लोग थे। तरह-तरह की शराब और मांस; सिंधी, चीनी, भारतीय सभी प्रकार के लोग थे। यहाँ के लोग खातिरदारी बहुत करते हैं। रात ११। बजे होटल आए। कुछ पत्र लिखे। कपड़े धोए, सो गया।

हांगकांग-ओसाका-कोबे

२१ जुलाई : सुबह ७॥ बजे तक पैकिंग वगैरह खत्म कर तैयार हो गया। ९ बजे प्लेन से चले। १०॥ बजे तायपेह पहुँचे। एयर पोर्ट साधारण-सा है। शहर घूमने का समय नहीं था। इच्छा बहुत थी। फिर कभी। दो बजे ओसाका पहुँचे। गरमी बहुत थी। एयर पोर्ट पर सोढानी, खेमका, महावीर जटिया आए थे। होटल का कमरा अच्छा था। ट्रेन से कोबे गए, आधा घंटा लगा। शहर में नाइट क्लब बहुत हैं, फलों की बहुतायत हैं। अच्छा राजस्थानी भोजन खाया। फल खाए, पीच, तरबूजे स्वादिष्ट हैं। हांगकांग से तीन लाख येन ले आए हैं, प्रतिव्यक्ति १००) रु० का फायदा हो गया। भूख बहुत लगती है। मारवाड़ी लोगों ने हमें बहुत सहायता दी, संकोच-सा होता है।

ओसाका-कोबे

२२ जुलाई : अपने मन मुताबिक घूमना नहीं हो पाता। स्थानीय व्यापार-उद्योग के अध्ययन के लिए बैंकों और सरकारी दफ्तरों में जाना पड़ता है। अफसरों से मिलना-जुलना, खातिरदारी, औपचारिकता में समय बहुत नष्ट होता है। यहाँ के लोग बहुत व्यवहार-कुशल हैं, विनम्र और शिष्ट।

१ ॥। बजे बंबई रेस्तराँ में भोजन किया। २॥। बजे एक थियेटर में गए, ३० मील पर है। अच्छा बड़ा थियेटर है। भाषा के कारण नाटक समझ में आया नहीं। जापान में अंग्रेजी का प्रचलन नहीं की तरह है। अमेरिकनों के कारण कुछ लोग टूटी-फूटी बोल लेते हैं। रात नाइट क्लब जाने का प्रोग्राम था, नहीं गया, इच्छा नहीं हुई।

ओसाका-कोबे

२३ जुलाई : जापान बढ़ रहा है, अच्छा है। परंतु जनसंख्या बहुत ज्यादा है। स्टेशन पर समुद्र की लहरों की तरह लोग दिखाई देते हैं। कर्मठ हैं, सफाई भी है। चीनियों की तरह गंदे नहीं।

ट्यूब रेलवे में अकेला बैठकर हिताची गया। धूप बहुत थी इसलिये टैक्सी ली। यहाँ के रेस्तरों में विचित्र खाना मिलता है, जी घबरा उठता है। 'बम्बई रस्तराँ' में खाना खाया। शाम को ४॥ बजे कोबे गये वहाँ से फेनी कूलर से ३००० फुट की ऊँचाई पर पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा। यहाँ से कोबे, ओकासा साफ दिखाई पड़ते हैं। बहुत ही सुंदर दृश्य था। तबीयत खुश हो गयी। रात में यात्रा-संस्मरण के नोटस् तैयार किए।

टोकियो

२४ जुलाई : सुबह ८ बजे तक टोकियों के लिए तैयार हो गया। एयरपोर्ट के लिए ८-५० मिनट पर रवाना हुआ। ११॥ बजे टोकियो पूगे। गरमी बहुत ज्यादा थी पसीना आ रहा था। ३ बजे राजदूत मेहरोत्रा से मिलने गए। बहुत तेज मालूम देते हैं। बातचीत की। टोकियो टावर देखा। बहुत ही सुंदर और ऊँचा बना है। सारा शहर दिखाई देता है। नायर रेस्तरां में खाना खाया। अच्छा था, ३०) रु० प्रति व्यक्ति लगे। शहर घूमता हूँ। यहाँ का जन-जीवन विचारों को प्रभावित करता है।

टोकियो

२५ जुलाई : रात नींद खूब आयी। एक बजे याकोहामा स्टील देखने गए। राजदूत के आदमी मि० भटनागर आए थे, दो कारें साथ थीं। काफी चीजें देखने को मिलीं। भारत की अपेक्षा मजदूर यहाँ कम हैं, कारखाना बैठाने में खर्च भी कम है। होटल आया, नन्दू का पत्र था, जवाब दिया। गंगाबाबू को भी लिखा। तोशिबा बाथ में गया, १३६०) रु० लगे। लड़की जो अटेन्ड करती थी, एक प्रकार से नंगी थी। उससे बातें कीं। काफी तेज है, बहुत सी बातें जानने में आयीं। हमारे यहाँ भी तो दिगंबर साधु हैं। नंगा कौन है, कौन नहीं? विचारों का खेल है। शहर घूमता रहा। मित्सुई का स्टोर देखा। बहुत बड़ा है। शाम को ६ बजे टूरिस्ट बस से सैर को निकले। पहले एक रेस्तराँ में गया। लोग मांस खा रहे थे, कैसा लगा। भूख उचट गयी। इसके बाद हम लोगों को एक घटिया नाइट क्लब में ले जाया गया। हम लोगों ने सॉफ्टड्रिंक लिया। एक शो में गए। स्पेनिश नाच और गाने थे। वहाँ से गीशा के गए। बहुत ही स्वच्छ वातावरण, धार्मिक स्थान की तरह था। तरह-तरह की जापानी लड़कियाँ थीं। अश्लीलता नहीं। गीशा नाच वगैरह भी देखा। लड़कियों से बातें कीं। शिष्टाचार, उनका ज्ञान प्रभावित करता है। भाषा की कठिनाई होती है। भारत के बारे में बहुत ही कम जानती हैं। शायद विदेशों में हमारी सरकार के प्रचार की कमजोरी से ऐसा है।

टोकियो-निक्को

२६ जुलाई : सुबह ९।।। की ट्रेन से निक्को रवाना हुए। १। वजे पहुँचे। सुंदर स्थान है। १५ मिनट झील में बोट से घूमे। वहुत अच्छा लगा। ठंढक भी थी। प्राकृतिक उद्यान और झरने आदि देखने में कुछ थकावट जरूर आयी पर मन प्रसन्न हो उठा।

८।। वजे टोकियो वापस आ गया। कालीचरण बंसल मिला। १४ वर्ष से जापान में है। जापान एक प्रकार देखा पर ठीक से देखने के लिए एक महीने का समय चाहिए। निक्को के लिए यातायात के कई तरह के साधन मिलते हैं। विज्ञापन भी खूब करते हैं। भारत में ऐसी बात नहीं है। वहाँ एक हजार वर्ष पुराना मंदिर देखा। खर्च बहुत हो जाता है, परंतु नये मुल्क देखने को मिल जाते हैं।

२७ जुलाई : ९।। वजे जहाज बनाने का कारखाना देखने गए। आई० एच० आई० का बड़ा कारखाना है। काफी जहाज और अन्य सामान बनते हैं। १५,००० मजदूर काम करते हैं। आधुनिक मशीनें, अनुशासन, दक्षता देखकर प्रभावित हो जाना पड़ा। विचार आते हैं, हम लोग भारत में ऐसा क्यों नहीं कर पाते? शाम को तोशीबा कंपनी का कारखाना देखने गए। ४०० करोड़ का माल बनाते हैं। १,१०,००० मजदूर काम करते हैं। काफी महीन काम है। ज्यादातर काम लड़कियाँ करती हैं। रात में लालजी मेहरोत्रा, राजदूत के घर खाने पर गया। बहुत ही अच्छा शाकाहारी भोजन मिला। सात-आठ महत्वपूर्ण लोग भी भोज पर आए थे। जापान से कल सुबह हम जा रहे हैं।

होनोलूलू

२८ जुलाई : सुबह दूतावास की कार आयी। एयरपोर्ट से १०। वजे चले। होनोलूलू का समय ५ घंटा आगे है। हम २८ को चलकर २७ की रात को सवा दस वजे पुग गए। होटल में आए, घटिया-सा होटल था। एक वजे नींद आयी।

सुवह ९।।। वजे घूम कर आए। मिसेज वाटूमल आयीं। अनन्नास का कारखाना देखा। विश्व में सव से वड़ा है। योजना अधिकारी से मिले, काफी वातें हुईं। होनोलूलू की आव-हवा अच्छी है, पर काफी खर्चीली जगह है। खास तौर पर हम लोगों के लिए।

२९ जुलाई : सुवह एक मील घूमा। फिर ९ वजे दही वगैरह का नाश्ता कर ९।। वजे होटल से चले। ४ मील जाने के वाद रामकुमार जी को कैमरा भूलना याद आया। एक वार तो मैं टेक्सी से उतरने लगा परंतु वे रुक गए। पर्ल हार्वर देखा, जहाँ जापानियों ने अमेरिका के कई जहाज डुवो दिए थे। होलोलूलू वास्तव में स्वास्थ्यप्रद जगह है, परंतु हमारे देश में भी ऐसी कई हैं। लोग जाते नहीं। भारत में पर्यटन को वढ़ाना चाहिए, हर कीमत पर। जनसंख्या ७ लाख है। शहर की साढ़े चार लाख औरतें एक प्रकार से सुंदरी कही जा सकती हैं, स्वस्थ साँवली सी। यहाँ अमेरिकन लोग काफी आते हैं। होनोलूलू से हवाई जहाज द्वारा ७।। वजे लॉस एंजेल्स पहुँचे। टैक्सी लेकर होटल आए।

वहुत ही वेहतरीन है, अव तक जितने होटल मिले सबसे अच्छा। वाजार घूमने निकला। वैभव विखरा दिखाई पड़ा। एक दुकान से फल और दूध ले आया। फल और दूध वगैरह सस्ता हैं।

लॉस एंजेल्स

३० जुलाई : नींद अच्छी आयी। सुवह उठकर कपड़े धोए। होटल वहुत अच्छा मिला है। होटल के मालिक के पास २०० करोड़ रुपये हैं, १० होटल हैं। मेरा कमरा सजावट और आधुनिक साधनों से भरा पूरा। वजन की मशीनें हैं। रेडियो, टेलिविजन तक हर कमरे में।

टूरिस्ट वस में निकले। ४ घंटे शहर घुमाया। किसानों का वाजार देखा: काफी दुकानें थीं, फल खरीदा। पार्कर पेंसिल खो वैठा। दूध, दही, अंगूर जैसी चीजें कुछ मँहगी लगीं। नीग्रो, चीनी, जापानी सव घूमते दिखाई दिए। पीढ़ियों से, वर्षों से यहाँ वस गए हैं। नाई की दुकान में दाढ़ी वनवाई के ५) रु०, वाल कटाई १०) रु० लगे। चार वजे वस से फिर घूमने निकले, हमने अमेरिका का यह पहला शहर देखा। सड़कें ऊपर-नीचे ४-४ हैं, कई जगह। आदमी लंदन की तरह भागते नजर नहीं आते। खर्च वहुत लगता है, जितने रुपये मिले हैं, उनसे शायद पार पड़ जाए।

लॉस एंजेल्स-सानफ्रांसिस्को

३१ जुलाई : दस वजे एयरपोर्ट पुग गए। वहुत वड़ा और व्यस्त है, ३९ करोड़ की लागत से वना है। एक वजे सानफ्रांसिकों पुगे। दूतावास के वुद्धिराजा आए थे। उन्हीं की कार से शहर घूमे। काउंसल जेनरल मि० मेनन से मिले। उन्हीं के साथ समुद्र-तट सैर को गए। फलों का सलाद लिया, १२॥) रु० एक-एक प्लेट के। चार वजे वापिस वैंक आए। वहाँ से कैजर कंपनी के वाइस-प्रेसिडेंट से मिले। २१ वीं मंजिल पर उनका दफ्तर है, वड़े खुश थे, कोका-कोला पिया। भारत के वारे में उन्होंने काफी वातें कीं। वाशिंगटन से राजदूत का फोन था, हमें वहाँ वुलाया है। रात में शहर घूमता रहा। काफी रौनक-रोशनी चारों तरफ। ९ वजे भारतीय रेस्तरां 'ताज आफ इंडिया' में गए। देशी खाना मिला, ५५०) रु० लगे, मैंने दिए। भारतीय विद्यार्थी मिल गए, रात दस वजे लौटे। यात्रा के नोट्स अलग से वनाता हूँ, संस्मरण लिखना है। समय नहीं मिलता। वहुत घूमता हूँ, थकावट आ जाती है।

१ अगस्त : शहर घूमता रहा। रात में आर० के० के साथ एक सिनेमा में गया। जंगली जातियों के रिवाज दिखाए गए थे। भारत के विवाह का भी दृश्य था। नाइट क्लव और 'वाथ' में नहीं गया। पैसे कम हैं। समय की सुविधा थी, पी० डी० के मित्र की कार लेकर प्रायः सौ मील घूमे, शाम को भी घूमते रहे।

शिकागो

२ अगस्त : यहाँ आने पर देर से उठना होता है। बाजार गया, बंद था, ११ बजे एयर पोर्ट पहुँचे। लंच जहाज में ही लिया। ४॥ बजे शिकागो पहुँचे। पी० डी० के मित्र कार लेकर आए थे। होटेल हिल्टन में ठहरे। चार्ज बहुत ज्यादा है, सिर्फ आवास पर इतना खर्च व्यर्थ-सा लगता है। शहर घूमता रहा। शिकागो दूसरे शहरों से बड़ा है, ज्यादा अमरिकी ढंग का लगा। लीवर का दर्द नहीं है, तबीयत ठीक है। सानफ्रांसिस्को की तरह यहाँ सर्दी नहीं है।

३ अगस्त : कुछ कब्ज-सा लगा। किशमिश का पानी लिया। सुबह नाश्ता किया, दही, चिवड़ा, दाख, खजूर, मक्खन-रोटी। ऊँचे चार्ज के बारे में साथियों से कहा। ढंग से कहना चाहिए, बुरी नहीं लगनी चाहिए। यहाँ गरमी बहुत लगती है। मि० लेगी के साथ घूमने गया। उनका कारखाना भी देखा। शाम को उनके साथ ही पामर हाउस में डिनर लिया। भगवत झा आजाद भी थे। उनको भी शामिल कर लिया।

५ अगस्त : ७॥ बजे नियाग्रा के लिए चले। प्लेन और बस से १० बजे पूगे। टेक्सी से होटेल पहुँचे। वहाँ से टेक्सी में नियाग्रा। एक साधारण-से होटेल में ठहरे। दस डालर में। एक बजे झरना देखने गए। कनाडा की ओर भी गए, ७ बजे तक थे। देखने लायक है, विस्मित रह जाना पड़ता है। अथाह पानी गिरता है। शायद एक सेकेंड में १७ करोड़ गैलन। वहाँ से एक लिफ्ट में झरने के पीछे ३२४ फीट नीचे गए। देखते ही रह जाना पड़ता है। प्रकृति की कितनी शक्ति है। ९ बजे होटेल आए, थके थे। खाना खाकर पी० डी० के साथ फिर एक बार रात में प्रपात की रंग-बिरंगी रोशनी में देखने गए। बहुत ही सुंदर लगता है, बंदोबस्त भी अच्छा है। नियाग्रा प्रपात प्रकृति की अद्भुत कृति है।

नियाग्रा-वाशिंगटन

६ अगस्त : सुबह फिर झरना देखने गए, एक म्यूजियम भी देखा। कई सैर करने वालों से बातचीत हुई। म्यूजियम में पुरानी चीजें रखी हैं, नियाग्रा के बारे में अच्छी जानकारी मिल जाती है। ५ बजे एयर पोर्ट पहुँचे। बफेलो में खास कुछ देखने लायक नहीं, साधारण-सा शहर है। प्लेन से ९ बजे वाशिंगटन पूगे। रात में बस से शहर देखा। वाशिंगटन नयी दिल्ली की तरह है। सात-आठ लाख की आबादी। रात में बहुत रौनक नहीं रहती है।

७ अगस्त : टैक्सी से बी० के० नेहरू के घर गए। बहुत ही अच्छा नाश्ता मिला। भारत के बारे में काफी बातचीत हुई। उनका ख्याल है, काश्मीर के बारे में समझौता कर लेना चाहिए। इसके बिना दुनिया में हमारी बदनामी होती है। इसी प्रकार चीन से भी समझौता कर लेना चाहिए। योजनाएँ भी बिना परिवार-नियोजन के फेल होंगी। भारत में डिफेंस के बजट को कम करना चाहिए। स्पष्टवादी लगे, खरे भी। यू० एस० ए० के पार्लियामेंट भवन में गए। हमारे संसद-भवन से बड़ा है।

८ अगस्त : भारत से आए १ अगस्त का स्टेट्समैन पढ़ता रहा, काफी खबरें थीं। दूर विदेश में देश के प्रति ममत्व बढ़ जाता है, शहर की काफी चीजों को देखा। अरबों-खरबों का देश है।
तबीयत बहुत ठीक है। विश्व मेला देखने गए। दुनिया के कई देशों के कई कक्ष देखे। भारत का भी। जी० ई० सी० और डनलप के कक्ष बहुत अच्छे लगे। खर्च ज्यादा लग जाता है, कैसा-सा मन होने लगता है। भारतीय अखबार देखने को मिले, वहाँ अकाल पड़ गया, बाढ़ आ गयी, हमारे गरीब देश पर से यह अभिशाप कब हटेगा ? हेसियन के भाव ४७.७५ रु० हैं।

९ अगस्त : न्यूयार्क बड़ा शहर है, बड़ी बातें, बड़ी चीजें। लगता है, अमेरिका हर दिशा में बड़ा और बढ़ा रहना चाहता है। पूरा मैनहेटेन का चक्कर लगा आया। दिन भर खूब घूमा। पैदल भी काफी। फिर भी जितना देखना चाहिए था, नहीं देख सका।

१० अगस्त : शाम को वाल्डॉफ एस्टोरिया में श्री बिरला के साथ खाना खया। बहुत ही अच्छा था। इससे पहले टी बोर्ड में गया था।
विभिन्न उद्योगों और कंपनियों, के आँकड़ों के आकलन की व्यवस्था बहुत ही अच्छी है। इसके लिए पृथक् रूप से अनुभवी एवं दक्ष व्यक्ति रखे जाते हैं। इससे जानकारी बढ़ती है; व्यवसाय का जोखिम कम हो जाता है। हमें भी ऐसी व्यवस्था अपनानी चाहिए। हँसी का एक नाटक देखा ५०) रु० की टिकट थी, अच्छा लगा। एंपायर स्टेट बिल्डिंग देखा। अमेरिका के बारे में आँकड़े और जानकारी इकट्ठा कर रहा हूँ। लिख पाया तो नयी बातें लोगों को मालूम हो सकेंगी।

१२ अगस्त : ११ बजे विश्व मेला में गया। इसके पहले भारतीय दूतावास में। आसाम के वित्त मंत्री फखरुद्दीन अहमद आए हुए हैं। मेला देख कर पी० डी० वगैरह ४ बजे चले गए थे, मैं ठहर गया। जेनरल मोटर्स, फोर्ड, चीन (फारमोसा), मेक्सिको, वेनेजुएला और अफ्रीका के देशों के स्टाल देखे। काफी घूमा। ट्यूब रेलवे से न्यूयार्क ९॥ बजे अंदाज घूमा।

न्यूयार्क-लंदन

१३ अगस्त : सुबह जल्दी ही होटेल का बिल चुका कर टेक्सी से एयर पोर्ट आ गया। दूतावास के कई लोग आए थे। ९ बजे प्लेन उड़ा।
लंदन एयर पोर्ट पर भारतीय दूतावास के मि० स्वामी कार लेकर आए। कमरा अच्छा मिल गया। पहले भी आ चुका हूँ, लंदन मेरे लिए नया नहीं। पिकाडिली की तरफ गया, फल ले आया। काफी रौनक थी । पी० डी० के साथ रहने से अच्छा रहता है, जल्दी आ जाना पड़ता है। लंदन में काफी सर्दी है, न्यूयार्क से १० डिग्री ज्यादा।

लंदन

१४ अगस्त : दिन में एंड्रयू जूट के ऑफिस गया। ग्रेट पिरामिड के बारे में बात की। अल्फ्रेड सासून के दफ्तर में गया, पाट-हेसियन बहुत गरम है। रात में भारतीय विद्यार्थियों का जलसा था। वहीं डिनर लिया। १५०-२०० लोग थे। पी० डी० ने छोटा-सा व्याख्यान भी दिया। पुरुषोत्तमजी का लड़का प्रकाश मिला।

१५ अगस्त : भारतीय उच्च आयुक्त डॉ० जीवराज मेहता के जीमने गए। इंडिया स्टेडियम में गए, बहुत देर हो गयी थी, जगह नहीं मिली। वापिस आए। भारतीय विद्यार्थियों की तरफ से स्वाधीनता दिवस का समारोह था, उसमें गए। डॉ० मेहता भी थे। एक गुजराती, शाकाहारी रेस्तराँ खुला है, यहाँ से थोड़ी सी मिठाई ले आया। मोंत्ते कार्लो जाने का विचार है। वजन शायद कुछ घट गया है। लंदन में मन नहीं लग रहा है। घर जाने की इच्छा होती है। देश से ३ दिनों से कोई पत्र नहीं आया।

लंदन

१६ अगस्त : सुबह बिरलाजी का फोन आया। १ बजे बाहर घूमने चलेंगे। तैयार होकर हम लोग ११ बजे डारचेस्टर पूगे। ११॥ बजे दो कारें लेकर निकल पड़े। समुद्र तट पर ग्रांड होटेल में खाना खाया। अच्छा रहा। खर्च तो बहुत ही हो गया। बी० एम० से बहुत सी बातें हुईं। रात दस बजे निकला। सोहो के नाइट क्लब में गया। १२॥ शिलिंग लगे। काफी नीचे स्तर का है। चार लड़कियाँ बारी-बारी से नाचती थीं, एकदम नंगी हो जाती थीं। लंदन से १९ को जाने का तय किया है। देश जाने का मन हो रहा है।

लंदन

१८ अगस्त : इंडिया हाउस के प्रेस कांन्फ्रेंस में काफी लोग आए थे। पी० डी० शायद कुछ गलत बोल गए। आयरलैंड के बारे में ज्यादा कह गए। जीवराज मेहता कुछ अप्रसन्न-से लगे।

जेनेवा

१९ अगस्त : एयर पोर्ट पर समय से पहुँचे। सारे दिन वहीं रहे। प्लेन खराब हो गया था। ८॥ बजे अंदाज जेनेवा पहुँचे। स्विस होटेल में ठहरे। रास्ते में एक पाकिस्तानी मुसलमान लड़का मिला। कराची में उसका व्यापारिक दफ्तर है। अच्छा तेज है। होटेल में सामान रख घूमने निकल गया। काफी रौनक थी।

जेनेवा

२० अगस्त : शहर घूमने निकला। भारतीय काउंसेल के दफ्तर गया। बाजार में ५० पौण्ड के स्विस फ्रैंक ले लिए। शाम को शाकाहारी रेस्तराँ में खाना खाने गए। और भी

हिंदुस्तानी साथ हो लिए। विदेशों में अपने लोगों से मिलने पर बड़ी खुशी होती है, स्वाभाविक है। हम लोग स्विस होटेल में ४४ फैंक में ठहरे हैं।

ल्यूजर्न-लेजां

२१ अगस्त : ल्युजर्न के मेले में ट्रेन से गए। न्यूयार्क के मेले से बहुत छोटा है। सारे दिन घूमे, वर्षा आ रही थी। आर० के० और पी० डी० ३।। वजे जेनेवा लौट गए, मैं अकेला घूमता रहा। लेजां भी गया। वहाँ पहुँचने पर भावनाओं से मन भर गया। १४।। वर्ष पहले यहाँ आया था। विरजू बीमार था। कितनी चिंता-परेशानी थी। आज ५४ वर्ष ६ माह का हो गया हूँ। कितना समय निकल गया अजीव सूनापन-सा लगा। यह गाँव पहले से बढ़ा है। जिस मकान में विरजू था, वह देखा। समय कितना वदलता है, कैसे वदलता है, पता नहीं चलता, विचित्रता है।

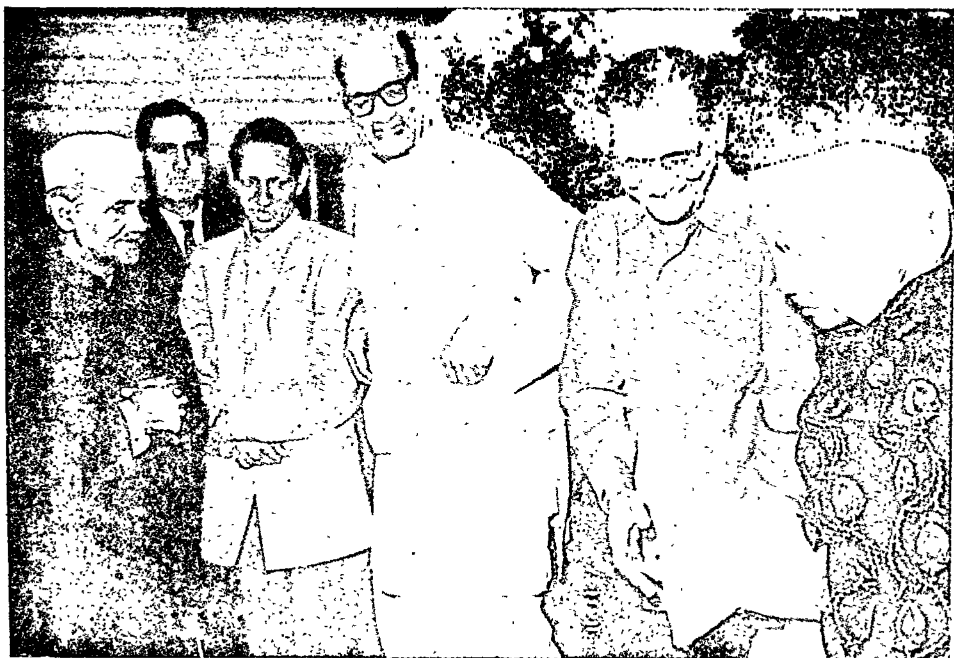
जेनेवा

२२ अगस्त : आर० के० आए। एक टूरिस्ट वस से शहर देखा। स्विस लोगों ने सजाने-सँवारने में कसर नहीं रखी। अपने देश में सुन्दर स्थलियों की कमी नहीं मगर हम ध्यान नहीं देते। होटेल आकर दही-चिवड़ा खाया। फिर दूसरी ट्रिप पर निकल पड़े। ३३०० फुट ऊँची पहाड़ी पर गए। फ्रांसीसी क्षेत्र था पर पास पोर्ट नहीं देखा। पहाड़ी पर रस्सियों पर चलने वाले खटोले पर गए। रास्ता भूल गया था, किसी तरह पहुँचा, देर हो गयी।

२३ अगस्त : एक स्विस गाँव में गए। काफी खेती, फल के वाग, गाँव में सब चीजें मिल जाती हैं। दवाखाना, होटेल, रेस्तराँ। आवादी २००० होगी। किसानों के मकान भी अच्छे देखने में आए। हमारे गाँवों में ऐसी सफाई नहीं रहती। रेल का किराया वहुत महँगा है। सुबह हिस्ट्री म्युजियम देखा। अच्छा है, प्राचीन वस्तुएँ इकट्ठी हैं। होटेल का कमरा २।। वजे खाली करना पड़ा। पार्क में घूमते रहे। मन में थोड़ा कष्ट तो हुआ। ५ वजे एयर पोर्ट आए। ६ वजे जहाज उड़ा। रास्ते में ज्यूरिक में एक घंटे रुका। एक वजे वेनिस पहुँचे। भारतीय दूतावास के अफसर टेक्सी लेकर आए थे। होटेल साधारण-सा है। वाहर घूमने गया। अच्छी चहल-पहल है। मेरे दाँत टूट गए, खाने का मजा जाता रहा। दाँत जल्द वनवाने होंगे।

वेनिस

२४ अगस्त : दस वजे शहर देखने निकले। पुराने ढंग का किंतु भव्य शहर है। वड़ी चौड़ी सड़कें। वैंक के मैनेजर से मिला, वड़ी खातिरी की। कुछ कितावें दीं। राजप्रसाद देखा। आजकल इसमें सरकारी दफ्तर है। समर पैलेस आए, काफी वड़ा वगीचा भी साथ में है, सुंदर है। सैकड़ों कमरे, सोने की नक्काशी के काम। वादशाहत खत्म हो गयी, फिर भी अरवों रुपयों की संपत्ति है। ३।।) रु० लगे। दूध, फल सस्ते हैं। दिनेश शाह के



श्री लालबहादुर शास्त्री के सान्निध्य में श्री रामेश्वर टाँटिया तथा
उनके अनुज श्री सत्यनारायण और उनकी पत्नी



सीकर से दूसरी बार लोकसभा के लिए निर्वाचित



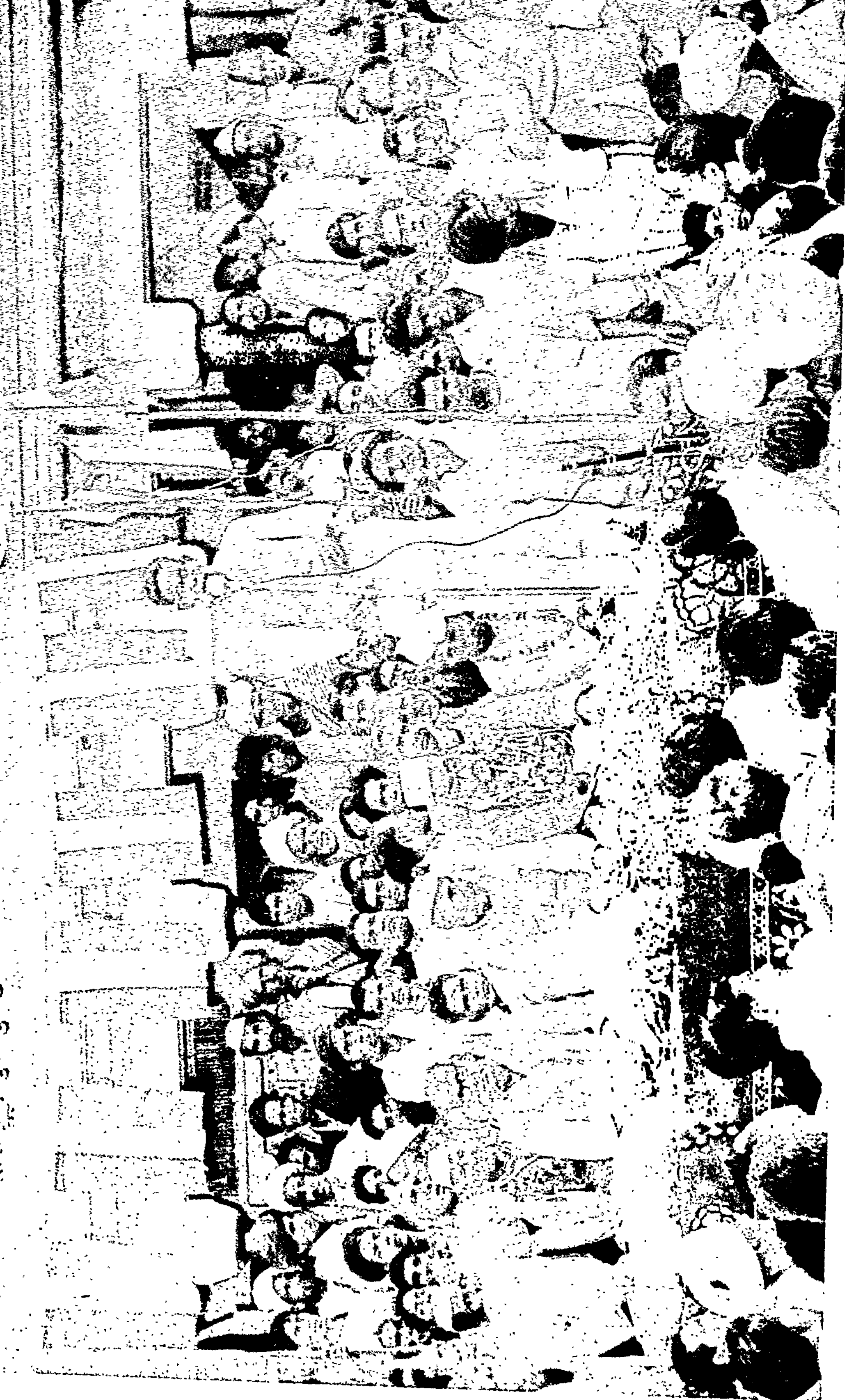
रक्षा मंत्री श्री कृष्ण मेनन और श्री रामेश्वर टांटिया

लोकसभा के प्रत्याशी रामेश्वर जी टांटिया के समर्थन में सीकर के
नागरिकों द्वारा आयोजित जनसभा में सुप्रसिद्ध समाजसेवी
श्री बद्रीनारायण सोढाणी भाषण देते हुए।



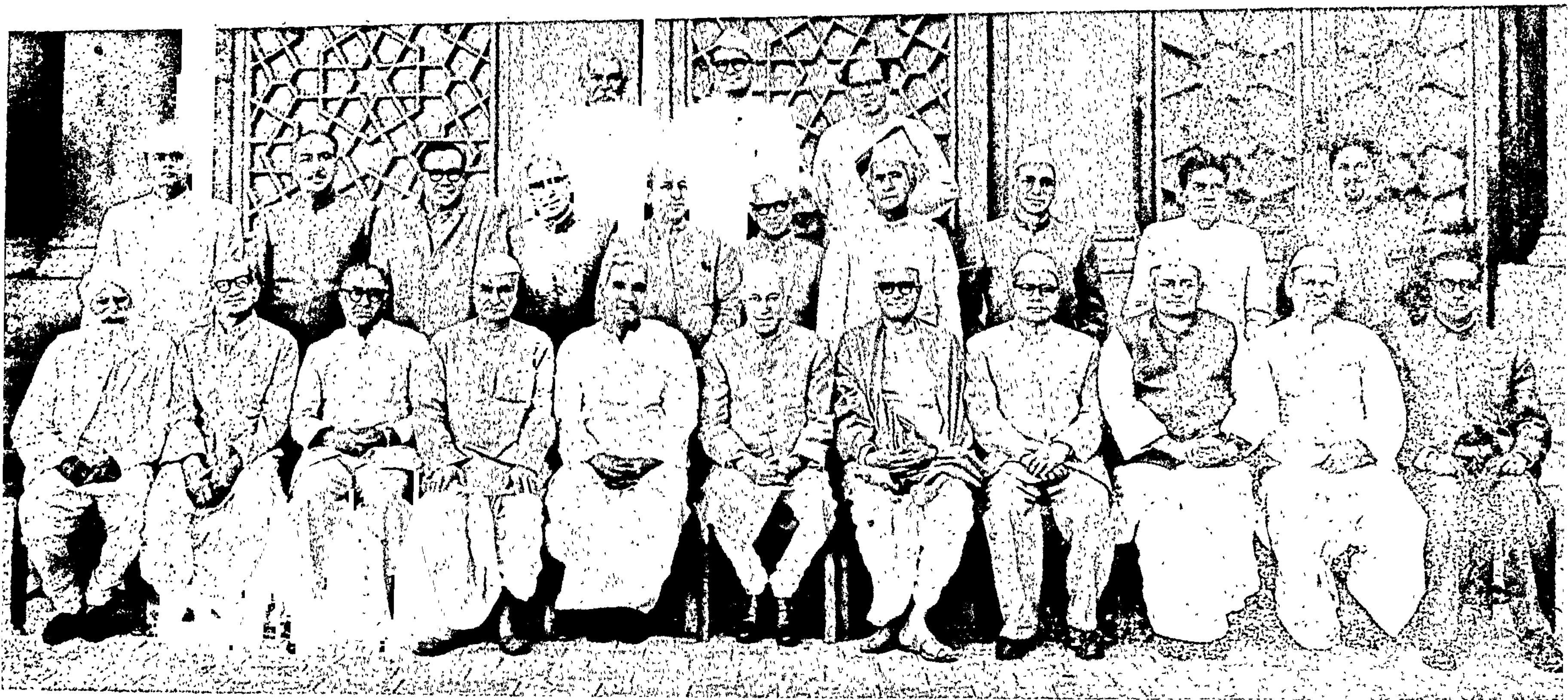


संसद सदस्यों की गोष्ठी में श्री रामेश्वर टांटिया

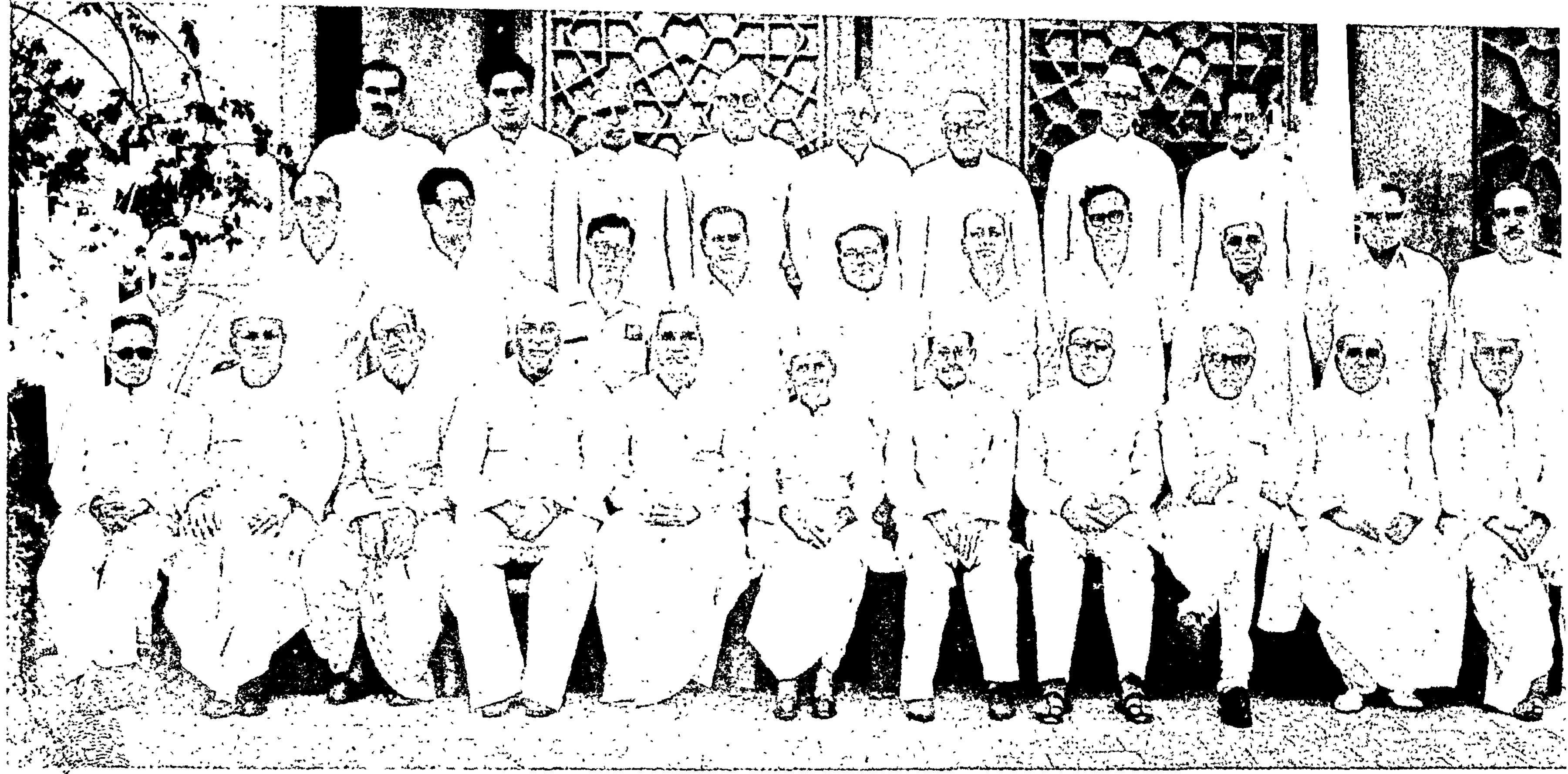


गंगालहरी, हरिद्वार में श्री घनश्यामदास बिड़ला, पण्डित देवधर शर्मा
के बीच रामेश्वर जी

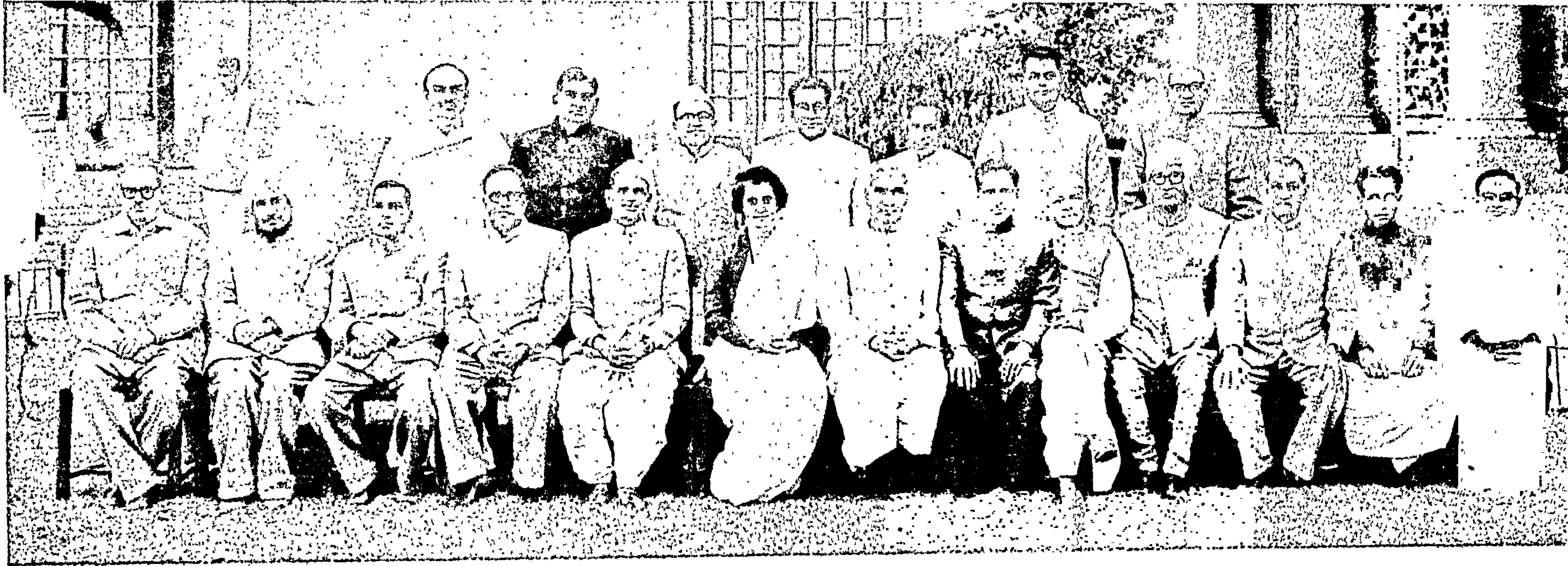




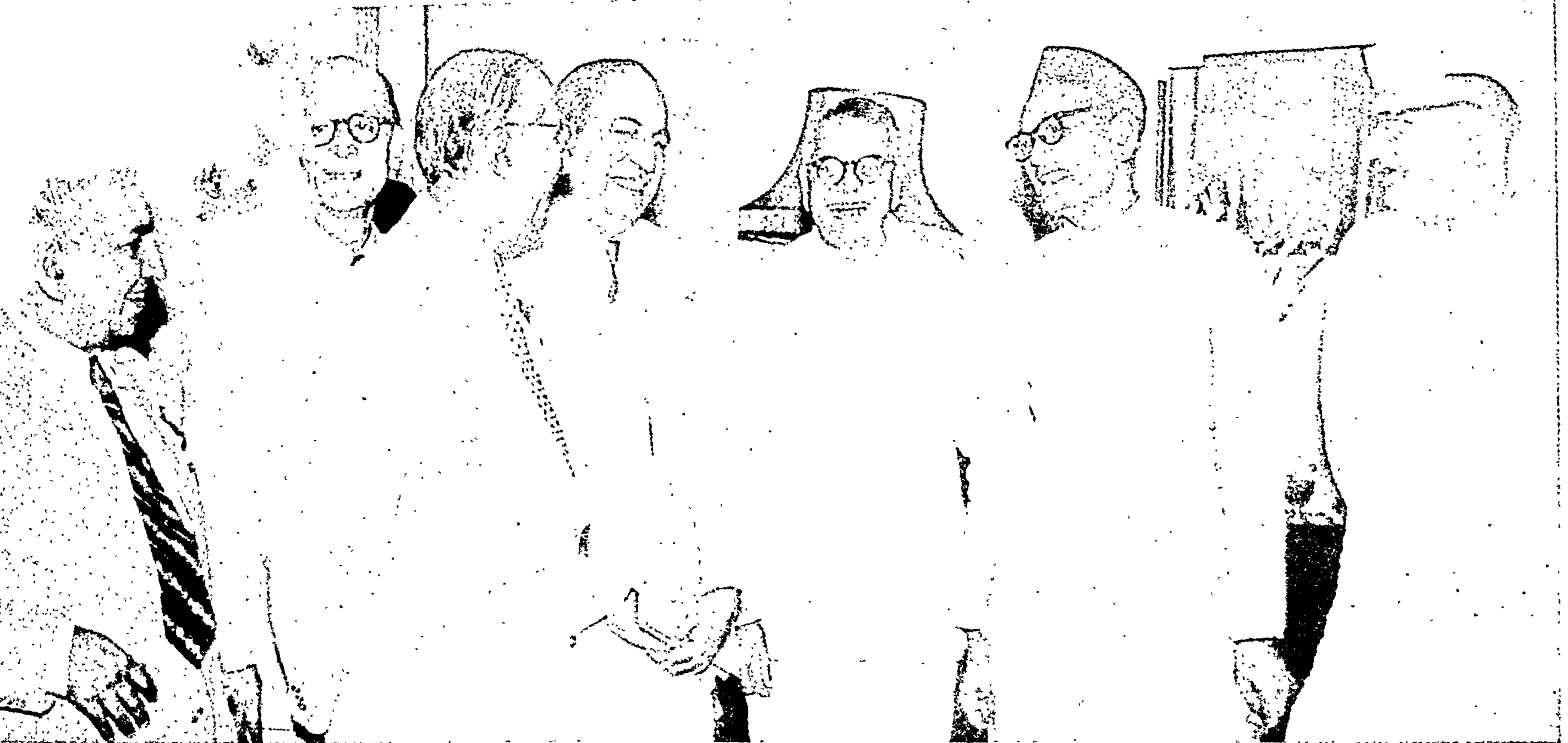
संसद में कांग्रेस पार्टी (१९६३-६४) की कार्य-समिति के सदस्यों के बीच कोषाध्यक्ष श्री रामेश्वर टांटिया



संसद में कांग्रेस पार्टी (१९६४-६५) की कार्यसमिति के साथ कोषाध्यक्ष श्री रामेश्वर टांटिया



संसद में कांग्रेस पार्टी (१९६६) के सदस्यों के बीच कोषाध्यक्ष श्री रामेश्वर टांटिया



जन-जीवन के विभिन्न व्यक्तियों के बीच श्री रामेश्वर टांटिया। बायें से : साहू शान्तिप्रसाद जैन, बी० पी० सिंहरॉय, श्री घनश्यामदास बिड़ला, श्री टी० टी० कृष्णमाचारी, श्री टांटिया तथा श्री कमलनयन बजाज

घर गया। साधारण किंतु अच्छा-सा है। शहर घूमते रहे। काफी जानकारी मिली। यात्रा के नोट्स रात में तैयार किए।

२५ अगस्त : दस बजे भारतीय दूतावास गए। पाकिस्तान के विजा के लिए पूछा। एयर इंडिया गए। पी० डी० और आर० के० ने कलकत्ते के लिए टिकट लिया। मैंने बगदाद के लिए कहा, तो ना हो गया।

२॥ बजे दिनेश शाह के साथ कई जगह घूमने गए। ५ बजे इंटर नेशनल फ्लावर एक्जिविशन देखने गए। बहुत ही बड़ा आयोजन है। नाना प्रकार के फूल, पौधे विभिन्न देशों से आए हैं। वेनिस रोमन साम्राज्य के गुजरे जमाने की झाँकी आज भी रखता है। हमारे देश में अतीत की स्मृतियों को हम मिटाते हैं, यह ठीक नहीं। बनारस, मथुरा, दिल्ली में प्राचीन काल की झाँकी बहुत कम रह गयी। अयोध्या में जो कुछ दिखाते हैं, उस पर विश्वास नहीं होता। परंतु यहाँ अतीत को संवार कर रखने की चेष्टा रहती है। टूरिस्ट इसे देखने आते हैं।

२६ अगस्त : वेनिस का बहुत-सा अंश जल में छोटे-छोटे टापुओं पर है। पुलों से जुड़े हैं। एक होटल में नौका से पहुँचा। गंदा-सा है, बिना बाथरूम का कमरा। शहर घूमने निकला।

मन उचट गया है। कलकत्ते का कोई पत्र नहीं। वेनिस में कैसा ही लगता है। शीशे की कारीगरी खूबसूरत हैं। ऐश और ऐयाशी के लिए मर्द तो क्या विदेशों से औरतें भी बहुत आती रहती हैं। गोंदोला अपने में एक ही है।
भारत जल्द पहुँचूँ, इच्छा होती है। गरमी बहुत है।

रोम-इस्तांबुल

२७ अगस्त : सुबह तबीयत खराब सी रही। सात बजे के प्लेन से रोम पहुँचा। चौदह वर्ष पहले आया था। प्राय: वैसा ही है। ज्यादा बदला नहीं। बस से एक्रोपोलिस तथा पुरानी इमारतों को देखा, अच्छा लगा। अतीत में वर्तमान खो जाता है, दूसरी ही दुनिया दिखती है। एक्रोपोलिस में पी० डी० के साथ एक फोटो खिँचवायी। चेहरा बहुत सुस्त और बुढ़ापा-सा मालूम दिया, मन में तकलीफ हुई। दिल्ली जाकर रेगुलर रहूँगा, कसरत करूँगा।

२८ अगस्त : शहर घूमता रहा। एक ओवरकोट लिया। २॥ बजे होटेल से एयर पोर्ट के लिए चला। बलराज मधोक, सुरेश देसाई और भी बहुत से लोग मिले। यात्रा पर हैं। एयर पोर्ट पर दो घंटे रुकना पड़ा। हवाई जहाज में खराबी आ गयी थी।

इस्तांबूल उतरने पर काफी ठंढक महसूस हुई। मौसम अच्छा था। एयर पोर्ट पर भारतीय दूतावास के सूचना विभाग के अधिकारी आए थे। होटल में बहुत ही बड़े कमरे लिए।

बीस लाख की आबादी का, पुराना नया दोनों तरह का शहर है। फलों की बहुतायत है।

इस्तांबूल

२९ अगस्त : यहाँ एशिया का दृश्य दिखायी देता है, स्नान कर समुद्र किनारे गया। कुछ सड़कें बहुत छोटी-छोटी हैं। रात सर्दी थी, दिन में गर्मी लगी। इंडस्ट्री चैंबर गया। वहाँ प्रेसिडेंट, वाइस प्रेसिडेंट, सेक्रेटरी जेनरल से मिलाया गया। टर्की के बारे में बहुत सी बातें कीं। काफी जानकारी मिली। साइप्रस की झंझट है। लगता है, भविष्य में टर्की बहुत बड़ा बखेड़ा उठाएगा। भारत की तरह साइप्रस का बँटवारा हो सकता है। मुसलमान मजहब के बहाने देश का टुकड़ा करने में नहीं हिचकते।
३ बजे मि० कासिम के घर गए। यहाँ के प्रसिद्ध राजनैतिक एम० पी० हैं। घंटे भर में बहुत सी बातें हुईं। भले लगे। शाम को घूमने निकला। टर्की के विद्यार्थियों का बड़ा जुलूस निकला था, साइप्रस के लिए नारे लगा रहे थे। सात बजे पुराने शहर में गया। बहुत ही बदबूदार।

इस्तांबुल-बेरुत

३० अगस्त : दस बजे शहर घूमने निकला। बादशाह का महल, एक हजार वर्ष पहले का गिरजा देखा। प्रसिद्ध है। पहले मंदिर था, फिर गिरजा बना, बाद में मस्जिद। कमाल पाशा ने इसे म्यूजियम बना दिया। वह तुर्की पर अरब संस्कृति का प्रभाव सहन नहीं करता था। शायद इसीलिए बहुत सी इस्लामी तहजीबें भी बंद करने की कोशिश की। अरबी में अजान तक बंद कराए और तुर्की भाषा में चलाए। बहुत सी मस्जिदें देखीं। भारत की तरह सुंदर नहीं है। यहाँ के प्राचीन ऐतिहासिक स्थान एवं संग्रहों से विचार प्रभावित होते हैं। दद्दा ने भारत भारती में लिखा है, 'चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्त्तंड है', टर्की पर लेख लिखूँगा।

बेरुत

३१ अगस्त : सात बजे शहर घूमने निकला। बाजार गया, कीमतें कम हैं।
१२॥ बजे भारतीय दूतावास गया, राजदूत मि० चोपड़ा से मिला। भले हैं, सहयोगपूर्ण व्यवहार है। काफी सुविधाएँ रही। पी० डी०, आर० के० पाँच बजे के प्लेन से चले गए। कलकत्ता टेलेक्स करा दिया।
यहाँ भी इसाइयों और मुसलमानों में दबी हुई खींचा-तानी है। लगता है, यह भी किसी दिन रंग लाएगा। फिलस्तीनी शरणार्थी यहाँ प्रभावी हैं, उत्पाती भी।
पुराने हिस्से भी देखे। लगता है प्राचीन काल में यहाँ असीरियन सभ्यता रही होगी। इस्लाम ने तोड़-फोड़ कर सारे चिहन मिटाए, खंडहर बताते हैं। भारतीय यात्री बहुत

कम इधर आते हैं। बेरुत एक प्रकार से मेरी विश्व-परिक्रमा का अंतिम चरण है। फिर पाकिस्तान से दिल्ली होता हुआ कलकत्ता।

कराची

१ सितम्बर : ३ वजे कराची पहुँचा। एयर पोर्ट पर प्रोटोकोल असिस्टेंट आए थे। वेचारे रात दो वजे घर से चले होंगे। होटल में पौने दो वजे तक सोता रहा। दस वजे दूतावास की गाड़ी आयी। डिप्टी हाई कमिश्नर से मिला। भले आदमी हैं। कल के भारतीय अखवार भी पढ़े। भूख और बाढ़, प्रदर्शन चारों तरफ हो रहे हैं। इंडियन करेंसी यहाँ वदली नहीं जाती, मन में चिंता सी हुई।

शहर घूमने निकला। अपना पराया हो गया। मन में कैसा लगता है। स्टेट बैंक की नयी इमारत देखी। वड़ी भारी बनी है, काफी वड़ी लाइब्रेरी भी वना रहे हैं; कई करोड़ लगेंगे। लाहौर के लिए विजा तैयार हो गया। शाम को एक साधारण से मंदिर में गया। कुछ हिंदू यहाँ हैं। इन्हें हमेशा खतरे का अंदेशा रहता है।

मि० जिन्ना की कब्र देखी। यहाँ कुछ लोग पाकिस्तान वनने से दुःखी हैं, पछताते भी हैं। भारत से आकर वसे मुसलमानों से कुछ द्वेष भी रखते हैं।

लाहौर

२ सितम्वर : सुवह फर्स्ट सेक्रेटरी कार लेकर आए। एयर पोर्ट पहुँचा। ९॥ वजे लाहौर। आई० ए० सी० का डी० सूजा सज्जन हैं। इंडस होटल, माल रोड पहुँचा। २४) रु० पर अच्छा कमरा था। दूध-चिवड़ा खाकर शहर घूमने निकला। साथ में सी० आई० डी० लग गया, मन खिन्न हो गया। कहीं कुछ झंझट न हो जाय। मकवरा और शाही मस्जिद देखकर वापिस होटल आ गया। छाया की तरह जासूस पीछे लगा रहा। पैदल वहुत चलना पड़ा। गंदा शहर, भिखमंगे, गरीवी फैली है। लाहौर पहले भी देखा था, जव पाकिस्तान नहीं वना था। राजनीति है या सांप्रदायिकता, इसकी तो दुर्गति हो गयी। हिंदू नजर नहीं आते।

लाहौर तीस वर्ष पहले देखा था। अव उससे वड़ा जरूर है परंतु शहर में रौनक नहीं है। रात में अनारकली गया।

मन में दुःख हुआ। रात भर जासूसी का डर वना रहा। वुरे स्वप्न आते रहे।

लाहौर-नई दिल्ली

३ सितम्वर : ८॥ वजे शहर घूमने निकला। नये हिस्से देखे। शहर से पाँच-छह मील पर वने हैं। कोई गैर-मुस्लिम नहीं दिखा। पता चला, हैं भी नहीं। भारत के प्रति विद्वेष और घृणा की भावना है। वस में वैठकर शालीमार वाग गया। जहाँगीर के जमाने का है। सुंदर और वड़ा है। मुगलकालीन कई एक इमारतें भी देखीं। आज के लिहाज से वहुत ही साधारण से लगे।

१२॥ बजे आई० ए० सी० की गाड़ी आयी। १ बजे एयर पोर्ट पूगा। कस्टम वालों ने कोई जाँच नहीं की। डी० सूजा भी आए थे। जब तक जहाज नहीं उड़ा, मन में थोड़ी चिंता थी। खैर, २। बजे जहाज उड़ा। ३॥ बजे दिल्ली पूगा। स्कूटर से घर आ गया। शाम को त्यागीजी के घर गया। वहीं खाना खाया।

नयी दिल्ली

५ सितम्बर : ९ बजे सुबह जे० पी० के गया ११। बजे तक रहा। पाकिस्तान के बारे में काफी बातचीत हुई एक प्रकार से उनका कहना ठीक है कि कश्मीर की समस्या हल नहीं हुई तो नागालैंड में भी मारपीट हो जाएगी। चारों तरफ तकलीफ। चीजों के दाम बढ़ रहे हैं। लोगों से मिलता रहा, मोटर खराब है, तकलीफ महसूस होती है।

७ सितम्बर : खाद्य समस्या पर कार्य-समिति की बैठक में मैंने भी कुछ कहा। ११ बजे क्वेश्चन आवर में २ सप्लिमेंटरी पूछे, परंतु एक में चूक गया। एक सहायक रखना ही होगा, काम में दिक्कत पड़ती है। अशोक मेहता को देखने गया, आपरेशन हुआ है।

नयी दिल्ली

१५ सितम्बर : छुटकारा नहीं मिलता। अनचाहे जकड़ जाता हूँ। बैंक से १० लाख के ऋण की बात की। एक प्रकार से नट गए। मन में सोच हुआ। मदन, सत्यनारायण को पत्र लिखे, रात में फोन भी किया। यु० को० बैंक शायद लिमिट एक्सटेंड कर दे परंतु देना बैंक ने अभी रुपए नहीं दिए हैं। दिन में राजेश्वर पटेल के साथ महिला चर्खा संघ के लिए चंदा उगाहता रहा। अच्छे काम से परिश्रम सार्थक बनता है।

२१ सितम्बर : ३॥ बजे माइंस की मीटिंग थी। मैं ठीक ही बोला। इन मीटिंगों में तो ठीक से बोल लेता हूँ किंतु पार्ल्यामेंट में थोड़ा घबरा जाता हूँ। तैयारी करके भी नहीं जाता।

कानपुर-चिरगाँव

२७ सितम्बर : १॥ बजे चिरगाँव पहुँचे। दद्दा और सब थे। दद्दा को ओमेगा दे दी, बदले में दूसरी घड़ी ले ली। खुश हो उठे। कितनी सरल हँसी थी। कानपुर आना बेकार रहा। बनर्जी नहीं मिले, सतीशचंद अमेरिका गए हैं। कानपुर में गंगा-स्नान भी कर लिया।

कलकत्ता

१ अक्तूबर : कलकत्ता आना ठीक रहा। चिंता दूर हुई, शांति मिली। सत्यनारायण की पत्नी की हालत सुधार पर है। काफी आराम है। अस्पताल और घर में काफी लोग आ जाते हैं।

२० अक्तूबर : राँची की संस्थाएँ देखीं। वजरंगलालजी लाठ साथ थे। अच्छी संस्थाएँ हैं, काफी काम कर रही हैं। पेट खराव है, केवल वेल का मुरब्बा खाया।

कलकत्ता-दिल्ली

२ नवम्बर : १०००) रुपया चार बंगाली स्कूलों में छात्रवृत्ति, १५००) रुपये कांग्रेस को, आर० के० भुवालका की मार्फत चन्दा मारवाड़ी सम्मेलन को दिए।

नयी दिल्ली

४ नवम्बर : सुवह मनुभाई के यहाँ कृपलानीजी मिल गए। उनके घर गया। पार्ल्यामेंट गया। पहला क्वेश्चन था, एक प्रकार से अच्छा बोला। डॉ० लोहिया के घर गया। उनसे कहा कि हिंदी में बोलूँगा। पार्ल्यामेंट में बोला भी और लोगों ने पसंद किया। मिनिस्टरों के लिए शायद अच्छा नहीं बोला।

सरदार शहर

१० दिसम्बर : गंगावावू साथ हैं। काफी सर्दी है। दिन में मंदिर का समारोह था। लोग आए थे। काफी अच्छा प्रोग्राम रहा। मंदिर का काम पूरा हुआ, शांति मिली।

१२ दिसम्बर : थकावट सी है। कल रात दद्दा का देहांत हो गया। देश को क्या खोना पड़ा, नहीं कह सकता। मैंने जो खोया, वह पा नहीं सकता। बेसहारा-सा हो गया।

झाँसी-चिरगाँव

२२ दिसम्बर : चिरगाँव के लिए सुवह रवाना हुआ। ३ वजे झाँसी से चिरगाँव पूगा। ७ वजे चिरगाँव के चला। ८ वजे वृन्दावनलालजी के गया। उनसे बातचीत की। दद्दा के विना सब सूना सा लगा। शरीर है, प्राण नहीं। ट्रेन में नींद नहीं आयी।

कलकत्ता

३० दिसम्बर : सुवह वस से १० एम० पी० और शिपवोर्ड के मेंबरों के साथ ८॥ वजे डायमंड हार्वर पहुँचे। जगह काफी वदल गयी है। १० वर्ष पहले आया था, गाँव सा था। अव तो लगता है, कलकत्ता यहाँ तक बढ़ आएगा। आदमी से शायद प्रकृति घवरा कर भागती है। उस पार २५ मील पर हल्दिया है। स्टीमर से गया। साधारण सी जगह है। पोर्ट वनने में देर है।

कलकत्ता

३१ दिसम्बर : न जाने क्यों मन में उदासी सी है। वर्ष का अंतिम दिन है। क्या खोया, क्या पाया? क्या किया? करना वहुत है, चाहता भी हूँ, कर नहीं पाता। झंझटों से पीछा छूटता नहीं।

१९६५

कलकत्ता

१ जनवरी : सुबह उठा मैदान गया। नये दिन की खास चहल-पहल नहीं मालूम पड़ी।

दुर्गापुर

९ जनवरी : रात में एक बजे मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के कैंप में सोया था। काफी हैरानी रही। सर्दी लगी, थकावट भी आयी। मन खिन्न रहा। सब्जेक्ट कमिटी की मीटिंग में गया। के० पी० सहाय, पाटिल, कुंभाराम, रघुनाथ सिंह, सी० बी० गुप्त, रामकिशोर सिंह आदि सबसे मिला। पी० सी० सेन से भी।

कलकत्ता

१३ जनवरी : सुबह मुरारजी भाई के साथ प्राकृतिक निकेतन, डायमंड हार्बर रोड पर गया। काफी देर तक बातचीत हुई। दिन में ऑफिस गया था। शेयर बाजार समान है।

२१ जनवरी : सुबह विनोबा बाबू से मिला। किताब देकर आया। विदुजी आए थे। उन्हें भी किताबें दीं। मेरे फोड़े में दर्द काफी है परंतु ठीक होता जा रहा है। सेंक कर रहा हूँ। शेयर बाजार काफी गरम है। मेरे मत्थे है।

लछमनगढ़

६ फरवरी : सीकर से जीप में बैठकर लक्ष्मणगढ़ पूगा। पुस्तकालय की मीटिंग थी। मैं भी बोला। मेरे से दूसरे अच्छा बोले। बोलते समय मेरा सिर दुखने लगा था। ७ बजे बरकतुल्ला (मंत्री) मिले। सरदारशहर के घंटा घर का आर्डर देने का कह रहे थे। रात को स्टेशन पर कई लोग मिलने आए थे।

नयी दिल्ली

१४ फरवरी : दिन में लेख लिखता रहा। सुबह लोगों से मिलता रहा। पार्लियामेंट गया। पार्टी मीटिंग में बहुत अच्छा बोला। लोगों ने पसंद किया।

जैसलमेर-शेरगढ़

१० अप्रैल : नाश्ता करके चले। १० मील का रास्ता बहुत ही खराब था। २० जीपें थीं। थकावट आ गयी। गरमी भी भयंकर थी। न पानी और कुछ पीने को भी नहीं। फिर भी लोगों में उत्साह था। रास्ते में जोर से आँधी आयी। कई लोग भटक गए। पाकिस्तान से सटे इलाकों में मुसलमान लगभग ७५% हैं, अच्छी डील-डौल वाले। ये मूलतः राजपूत थे। बाकी हरिजन हैं। ठाकुर, ब्राह्मण, बनिये बहुत ही कम। पाकिस्तान से सटे इलाकों में इतनी बड़ी तादाद में मुसलमानों का बसना सुरक्षा की दृष्टि से ठीक नहीं। दौरे पर के कई साथियों ने इसे महसूस किया किंतु किसी ने शायद ही इस पर कुछ कहा या लिखा। मुझे ऐसा लगता है कि इस तरफ यदि सरकार, केंद्रीय और राजस्थान दोनों कोशिश करें तो यहाँ भी हरियाली आ सकती है। यदि इधर नहीं ध्यान दिया गया तो राजस्थान में मरुभूमि का बढ़ना रोका नहीं जा सकेगा।

११ अप्रैल : बार्डर पर गए। पाकिस्तानी चौकी दिखायी दे रही थी। इस तरफ रास्ते अच्छे मिले। वहाँ से कबीर बस्ती आए। खाना खाया। एक मीटिंग हुई। अच्छा काम हो रहा है। पर काफी है, यह नहीं कहा जा सकता। ४ बजे जैसलमेर पुगे। फिर किला देखने गए। जैन मंदिर भी देखा। बहुत ही अच्छा है। जैसलमेर की यात्रा अच्छी रही।

१२ अप्रैल : जैसलमेर और पोकरण पर राष्ट्रीय दृष्टि से विशेष ध्यान देना जरूरी लगा। स्थानीय लोगों ने बताया कि यहाँ की पहाड़ियों में अंग्रेजों ने कोयला, चाँदी व लोहे के खानों का पता लगाया था। पता नहीं, अभी तक क्या हुआ। साँप यहाँ बहुत हैं। लोगों को चमड़े के मोजे पहने भी देखा। मेरी धारणा है, जैसलमेर से २० मील उत्तर की काणोद झील पर काम अच्छा हो सकता है। यह लगभग १५ मील है और बरसात का काफी पानी इसमें आता है और पूर्व की ढाल में बह जाता है। जैसलमेर की यात्रा अच्छी रही।

नई दिल्ली

३० अप्रैल : चुनाव की तैयारी कर रहा हूँ। शाम को ४ बजे एक्जिक्युटिव की मीटिंग थी। चुनाव के बारे में चर्चा हुई। लोगों का मन है। रघुनाथ सिंह सरकाना चाहते हैं। मेरी जीत का चांस है। रोज १५-२० व्यक्तियों से बात कर लेता हूँ। स्वास्थ्य बहुत ही अच्छा है।

१० मई : सारे दिन चुनाव के सिलसिले में व्यस्त रहा। शाम को ४ बजे घर आ गया। मन में कमजोरी आयी थी। मिश्रा १९६ और मेरे १३९, तारकेश्वरी के १२५, एस० एन० हजारिका के १०० आए। गलती मेरी थी। ज्यादा विश्वास कर गया। कैसा-सा लगता है। मन में हारने की चिंता तो होती है।

कलकत्ता

५ जुलाई : भरतिया के शेयर ज्यादा बिक गए, मन में चिंता हुई। शाम को पुरुषोत्तमजी के गया। ६ बजे मीटिंग थी, बड़ा बाजार युवक सभा का, सभापति था, १।। घंटे रही। लड़कों की फुर्ती और स्वास्थ्य देखकर मन में प्रसन्नता हुई। ताश खेलने लग जाता हूँ इस समय को पढ़ने-लिखने में लगाया जाय तो ज्यादा अच्छा।

२३ जुलाई : सारे दिन दीपचंद चांडक के घर रहा। उसकी लड़की का विवाह था। रात में १।। बजे पर आया। वाइफ भी थी। वर्षा भी, परंतु काफी लोग आए थे। लड़का सबों को जँच गया। मेरे मन में संतोष हुआ। थकावट काफी आ गयी है।

२५ जुलाई : सुबह वर्षा बहुत ज्यादा थी। अतुल्य बाबू से मिला। हड्डी टूट गयी है। वे मुझसे स्नेहपूर्वक मिले।

कलकत्ता

२४ जुलाई : सुबह गंगा बाबू आ गए। दिन में पुरुषोत्तमजी के यहाँ गया। राजनीति रहस्य है। कितने उलट-फेर होते हैं, सब अनिश्चित। ऐसा लगता है कि देश की या समाज की बात लोग कम सोचते हैं, अपनी बात अधिक। व्यक्तिनीति को 'राजनीति' कहना ठीक नहीं। किंतु यही चालू शब्द है। बंगलौर कांग्रेस में मुरारजी हार जायेंगे, ऐसा मालूम देता है। मैं नहीं गया। रात में लोगों के बारे में स्वप्न आते हैं।

सीकर

९ अगस्त : सुबह स्टेशन पूगे। बहुत से लोग आए थे। रास्ते में कई दरवाजे-तोरण बनाए गए थे। बहुत व्यस्त कार्यक्रम रहा, काफी चहल-पहल भी। त्यागीजी खुश हो गए। मैंने भी दो-तीन जगह भाषण दिए। लोगों से संपर्क करने पर उनकी समस्याओं की जानकारी मिलती है। दिक्कत हमारी भी है, समाधान अपने हाथ में नहीं, परंतु कोशिश पूरी करता हूँ। ज्यादातर लोग इसे समझते नहीं।

मथुरा

२० अगस्त : आज छुट्टी थी। कार से मथुरा के लिए रवाना हुए। ४।। बजे पूगा। बिरला धर्मशाला में जगह मिल गयी। जमुनाजी स्नान किया, वृन्दावन गए। शुभकरणजी के यहाँ खाना खाया। रात में लीला देखने गए। भीड़ बहुत थी। मथुरा में कैसा-सा मन हो जाता है। मंदिर को तोड़कर मस्जिद खड़ी कर दी गयी। आज भी खड़ी है। कहते हैं, इसी स्थान पर कंस के कारागार में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। मस्जिद को देखकर इंफीरियरिटी कंप्लेक्स-सा होता है। गुलामी बहुत बड़ी सजा है।

दिल्ली

२४ अगस्त : मथुरा, आगरा, जयपुर, राजगढ़, झुँझनूँ, हिसार, हांसी का दौरा ठीक ही रहा। सुबह ११ बजे दिल्ली पूगा। पार्ल्यामेंट गया। पाकिस्तान को कश्मीर में हम लोग पीट रहे हैं। मगर यह रोग तो हमेशा के लिए हमें लग ही गया, देवासुर संग्राम जैसा।

वाराणसी

६ सितम्बर : सुबह तेल-मालिश करायी, गंगास्नान किया। नन्दू को अस्पताल में भरती कराया। कल ऑपरेशन होगा।

७ सितम्बर : सुबह ७ बजे अस्पताल गया। ९-९॥ बजे तक ऑपरेशन होता रहा। सरकारजी आए थे। मन में चिंता बनी रही। दिन में ठीक था। शाम को सरकारजी के पास गया था। लड़ाई चालू है, गोलाबारी हो रही है। युद्ध है, चिंता की बात तो है ही। रात में १० बजे सोया। ऑपरेशन हो गया, अच्छा हुआ। बंबई जाने में नाना प्रकार की झंझटें हैं।

८ सितम्बर : अस्पताल गया। नन्दू ठीक है। दिन में १२ बजे विनोबा जी का दर्शन करने गया। वहाँ कमलनयनजी बजाज, श्रीमन्नारायणजी, मदालसाजी, जानकी देवीजी, राधाकृष्णजी से बात हुई। ३ बजे लौटा, अस्पताल गया। पैर दुखने लगे, बुखार-सा हो आया। ६ बजे घर आया, दवा ली। लड़ाई चालू है, चीन ने वार्निंग दी है। शायद बढ़ जाय, डर लग रहा है।

११ सितम्बर : सुबह नन्दू की आँख की पट्टी खुली। बेहतर है। २॥ बजे वाइफ के साथ गंगाजी नौका में गया। बहुत तेज धार थी, वापिस आ गया। अस्पताल गया, सरकारजी के गया।

दिल्ली

१२ सितम्बर : १२॥ बजे प्लेन से दिल्ली पूगा। २० पत्र लिखवाये, पहले का काम देखा। कल राबीजो, अन्नपूर्णा आ रही हैं, राजा भी। १५ ता० को सुबह स्वामीजी आ रहे हैं। २ दिन रहेंगे। लड़ाई में भारत जीत रहा है। मुझे लगता है, चीन आ जायगा तब बड़ा चेंज होगा।

१३ सितम्बर : सुबह पार्ल्यामेंट गया। मीटिंग थी, कॉमर्स की। बनारस से आनंदकृष्ण आए हैं। ११। बजे राबी, अन्नपूर्णा और बच्चा आया। सुन्दर बच्चा है, आनंदकृष्ण के साथ ऑफिसों में घूमता रहा। पाकिस्तान की लड़ाई चालू है, हम लोग जीत रहे हैं, लाहौर की तरफ बढ़ रहे हैं। वे लोग गोलाबारी चला रहे हैं।

२० सितम्बर : सुबह प्रभुदयालजी की गाड़ी लेकर नयी दिल्ली स्टेशन गया। राबी, अन्नो चले गए। बच्चा सो रहा था। इन ६ दिनों उनके साथ रहकर काफी मन लग गया।

तरह-तरह की बातें हुईं। राबीजी को ज्ञान और अनुभव है। लगता है, सही उपयोग नहीं कर पाए। भावुक व्यक्ति आदर्शवादी स्वभाव के होते हैं। मगर दुनिया व्यावहारिक है। कैसे चले? दिन में हाँसीवाले लड़के चले गए। उन्हें दिल्ली घुमा दिया। सीधे-सादे हैं, भले हैं। मगर कहकर आना चाहिए था। मुझे हाँसी बुलाया है। कुल १००) रु० खर्च हुए। दिन में ३। बजे डॉ० रामसुभग सिंह और श्री संजीव रेड्डी के गया। नाजिरा कोल के लिए छेदीलाल के गया। चेष्टा कर रहा हूँ। खन्ना को सीताराम मिल्स के लिए फोन किया।

२४ सितम्बर : आज पार्ल्यामेंट का सत्र समाप्त हो रहा है। मैं सीधे कलकत्ता जा रहा हूँ। नन्दू का फोन था। मिल के बारे में बात करनी है, इसलिए बंबई न जाकर सीधे कलकत्ता जाऊँगा। भाईजी को कह दिया है। भरतिया में स्ट्राइक हो गयी है।

कलकत्ता

१ अक्तूबर : आज से बाजार पूजा के लिए बंद है। रावतमलजी नोपानी का २५ ता० को देहांत हो गया, बनारस में ६१ वर्ष की अवस्था में। मैंने ५ ता० की टिकट तो दिल्ली के लिए ली है परंतु अब बनारस जाने का विचार है।

वाराणसी

९ अक्तूबर : सुबह ट्रेन में आँख खुली। फतहपुर में नींबू का पानी पिया। फिर १२ बजे मुगलसराय पुगा। इसके पहले इलाहाबाद में स्नान कर लिया था। १२॥ बजे नोपानीजी के घर पुगा। बहुत लोग आए थे। मेरे नहीं आने से बुरा होता। रात में रामेश्वरजी नोपानी से बातें करता रहा। पुष्पा की सगाई के लिए लड़का देखा, जँच गया है।

कलकत्ता

१३ अक्तूबर : सुबह पी० सी० सेन से मिलने गया। काफी देर तक बातें होती रहीं। व्यापारियों में संतोष नहीं है। मिलों के बारे में भी बातचीत की। १०॥ बजे ऑफिस आया। बहुत से पत्र लिखवाए। लेख भी लिख रहा हूँ। मिल में मजदूरों की झंझट हो रही है। काम में एक बार तो बड़ा टंटा पड़ गया। अगर जल्दी नहीं सलट पाया तो और बढ़ जाएगा।

२५ अक्तूबर : सुबह कई जगह मिलने गया। शाम को ४ बजे विशुद्धानंद विद्यालय में दीपावली संमेलन का आयोजन था। तीन-चार सौ अच्छे-अच्छे व्यक्ति आए थे। उसमें बोला। अच्छा रहा। पहले कभी इतना नहीं बोला था। लोगों ने पसंद किया। तबीयत ठीक है।

१५ नवम्बर : 'हिंदुस्तान' में छपा 'स्वर्ण योजना' पर मेरा लेख लोगों को पसंद आया। सभी चर्चा करते हैं। वापसी में सोहनलालजी दूगड़ के पास गया। वहाँ सीकर वगैरह से लोग आए थे। कलेक्टर भी आए थे।

१९ नवम्बर : उषा का विवाह आज हुआ। सारे दिन घर में रहे। ३ बजे बारात आयी। उसके पहले हम लोग कोरथ लेकर गए। बारात में ज्यादा आदमी नहीं थे। विवाह काफी सादगी से हुआ। इन दिनों लिखना-पढ़ना एक प्रकार से बंद-सा हो गया है।

२३ नवम्बर : माँजी ज्यादा बीमार हैं। मुझे शायद बनारस जाना पड़े।

नयी दिल्ली

१ दिसम्बर : शाम को शास्त्रीजी से मिला। गोल्डबांड की बात हुई। मनु भाई के साथ कलकत्ता-बंबई का प्रोग्राम कर रहा हूं। वहाँ से मद्रास का।

४ दिसम्बर : सुबह तीन-चार मील घूमा। मनु भाई के गया, फिर टी० टी० के। काफी बातचीत हुई। पार्ल्यामेंट गया। १॥ बजे गंगाबाबू वगैरह आए, कॉफी पी। ५ बजे बीजू पटनायक के गया। वहाँ और भी बहुत से लोग आए थे। शास्त्रीजी वगैरह, नंदाजी आए थे। सोचने लगता हूँ, राजनीति भी कितनी रहस्यमयी है। ईमानदार को बेईमान और बेईमान को ईमानदार बनाने-बनने में देर नहीं लगती। बीजू का मान-सम्मान था, कितनी बदनामी हुई, फिर आज उन्हीं के घर पर सब आए।

८ दिसम्बर : जी० डी० सोमानी की गोल्डबांड की बहुत ही अच्छी पार्टी हुई। पाँच-सात सौ आदमी थे। शास्त्रीजी और बहुत से मिनिस्टर आए। बहुत ही सुन्दर प्रोग्राम रहा। टी० टी० के से काफी बातें हुईं। मुझे पता नहीं क्यों बिहारी की पंक्तियाँ 'कनक कनक तें सौ गुनो मादकता अधिकाय' याद आ रही हैं। एक-दो या दस व्यक्ति के बौराने से देश का कुछ बिगड़ता-बनता नहीं, पर सरकार के बौराने से बड़ा खतरा बन सकता है। बाद में लेनेवाले और देनेवाले के लिए शायद गोल्डबांड समस्या बनेगी, लोगों का विश्वास हटेगा, ऐसी मेरी धारणा है।

बम्बई

१५ दिसम्बर : सुबह ९ बजे मदन के साथ मिल गया। इस १॥ वर्ष में मिल में बहुत परिवर्तन हुए हैं। ११ बजे मनुभाई की मर्चेंट चेंबर की मीटिंग में गया। १०० आदमी थे, सोने में दिलचस्पी नहीं ले रहे थे। कलकत्ते का प्रोग्राम इससे कहीं अच्छा रहा।

कलकत्ता

२४ दिसम्बर : फैमिली-प्लानिंग की मीटिंग में प्रिसाइड किया। इन दिनों कुछ लिख नहीं पा रहा हूँ। विचार आते हैं, पर जमा नहीं पाता। दिन में फोन से पता चला, गर्ग

आ गया है। लिखना-पढ़ना हो सकेगा। जी० डी० यहीं हैं, रोज जाता हूँ। नन्दू से मातादीन जी से बात हुई, मिल की झंझट शायद मिट जायगी।

२५ दिसम्बर : ८ बजे सुबह ज्ञान भारती में गया, इसके पहले गर्ग के। लेखों के बारे में बात की। ज्ञान भारती में मैं भी बोला। दाँत वाले के गया, दाँत तकलीफ दे रहे हैं, खाना नहीं खा सकता। शाम को शिक्षायतन में नाटक देखा, अच्छा था।

२६ दिसम्बर : सुबह जी० डी० बिरला के साथ डेढ़ मील घूमा। फिर ज्ञान भारती के जलसे में गया। वहाँ से भागीरथजी के साथ रावराजा हनूत सिंह के साथ बागड़ीजी के गया। उन्होंने १५,०००) रु० देने का वादा किया। ११॥ बजे श्री शिक्षायतन गया। वहाँ से भगवतीचरणजी वर्मा और श्री अमृतलाल नागर को लेकर घर आया। १ बजे खाना खाकर फिर बालकृष्ण गर्ग के घर गया। ३। तक था। विभिन्न विषयों पर बातें होती रहीं। मनकोशिस्की पर लेख तैयार हो गया।

१९६६

कलकत्ता

५ जनवरी : वेणीशंकर शर्मा के यहाँ गया। एक किताब दे आया। रात में खाना नहीं खाया। एक दाँत निकलवाया। सचिन चौधरी के गया। कृष्णचंद अग्रवाल से भी मिला।

८ जनवरी : 'सरिता' में पाकिस्तान का लेख लोगों ने पसंद किया। "रुपया कहाँ गया"? का अंग्रेजी अनुवाद 'इकोनोमिक टाइम्स' में भेजा।

९ जनवरी : घरमचंदजी सरावगी के यहाँ मुराजी भाई के साथ दिन में खाना खाया। शुद्ध सात्विक भोजन।

११ जनवरी : सुना, रात में शास्त्रीजी का देहांत हो गया। मन में बड़ी चिंता हुई।

१५ जनवरी : जापान पर लेख पूरा हो गया। संतोष हुआ। 'सरिता' में हवाई का लेख आया। लोगों ने सराहना की।

नयी दिल्ली

१७ जनवरी : सुबह की ट्रेन से दिल्ली पहुँचा। घर गया, सफाई कराई। मुरारजी भाई, इंदिराजी, सुखाड़ियाजी आदि से मिला। दोनों तरफ काफी प्रयत्न चल रहे हैं।

१८ जनवरी : सुबह जी० डी० के साथ घूमा। मनु भाई के घर गया। कांति भाई को विश्वास है, वे जीतेंगे। चुनाव में झूठ-सच खुल कर चलता है। मेरा मन कहता है, मुरारजी भाई हार जायेंगे।

१९ जनवरी : रिजल्ट आउट हुआ। मुराजी भाई हार गए।

२० जनवरी : बिरलाजी पिलानी जा रहे हैं। मुझे भी चलने का कहते हैं। मेरा मन सरदारशहर जाने का है।

२१ जनवरी : पार्ल्यामेंट हाउस गया। इंदिराजी की जीत से लेफ्टिस्टों का जोर बढ़ेगा।

१ फरवरी : गंगाबाबू घर आए हैं। पत्नी से तकरार हो गयी। मन में अच्छा नहीं लगा। गलती शायद मेरी ही थी। एडजस्टमेंट मुझे करना चाहिए।

सरदार शहर

९ फरवरी : ट्रेन में उपेंद्रनाथ अश्क की 'वासना के घर' पढ़ी। साधारण सी थी। ९ बजे पूगा। लाइब्रेरी गया। विरधीचंदजी, बद्रीदासजी कोठारी, हरिप्रसादजी चौधरी के गया। हरिप्रसादजी से एक आलमारी तथा बद्रीदासजी से १२५०) रु० लाइब्रेरी को दिलाए। तीन आलमारियाँ किताबों की मैंने दीं। लाइब्रेरी बहुत अच्छी चल रही है।

दिल्ली

१ मार्च : बजट पर सारे दिन मेहनत कर लेख लिखा। 'हिंदुस्तान' के ऑफिस में रतनलालजी जोशी को दे आया। मुझे बहुत अच्छा लगा है। शेयर समान है। मुझे इस बार का बजट ठीक नहीं लगता है।

९. मार्च : हिंदुस्तान में 'बजट' पर मेरा लेख निकला। लोगों को पसंद आया, चर्चा हुई। श्री सचिन चौधरी से भेंट हुई, लॉबी में। शेयर्स समान हैं, बोनस निकल कर तेज हो जायेंगे। शाम को डॉ० नगेंद्र, गंगा बाबू जीमने आए

३ मार्च : सुबह स्टील मिनिस्ट्री की मीटिंग में गया। मैंने भी काफी पार्ट लिया। शिकागो पर लेख टाइप कराकर 'सरिता' को भेजा।

सरदारशहर

८ मार्च : दिन में लोगों से मिलना-जुलना रहा। १०,०००) रु० बालमंदिर वालों को दिए। दिन में १० बजे मुनि श्री नगराज और महेंद्रकुमार स्वामी के पास गया। काफी देर तक बातचीत हुई।

नयी दिल्ली

९ मार्च : बजट पर बोलने की तैयारी कर रहा हूँ। वाशिंगटन पर लेख लिखा।

११ मार्च : आज बजट पर बोलने का मौका नहीं मिला। पेट खराब है। कुछ कमजोरी भी दो तीन दिनों में आयी है। थोड़ा-सा सम्हल कर मुझे रहना चाहिए।

१३ मार्च : सुबह श्री अशोक मेहता से मिला। २॥ बजे शिवदत्तजी उपाध्याय के साथ राजस्थानी समाज के जलसे में गया। करीब २०० आदमी थे। राजस्थानी गीत-नृत्य थे, अच्छा प्रोग्राम था। एक लेख राजनीति पर लिखा है, शायद अच्छा रहेगा।

खेतड़ी

१० अप्रैल : ११।। वजे खेतड़ी के तांवे की खान देखने गया। आफिसर तैनात थे। खाना खाया, फल भी था। खान देखने गए। आगे जाकर देश के एक बड़े अभाव की पूर्ति कर सकेगा। खान देखकर विवेकानंद आश्रम देखने गया। यहाँ उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था।

वनबुटी

१ मई : थोरुवों के गाँव पहुँचा। रास्ते में घना जंगल था। चीते का बच्चा मिला। वहुत से हरिण भी। स्वच्छन्द जीवन में खतरा है पर मुक्ति है। मन बंधा नहीं रहता। रात में थोरु नाच देखा। थोरु नेपाली से लगे, सीधे और नम्र पर मेहनती जरूर है।

२ मई : थोरुवों का गाँव अच्छा लगा। पुरुष और स्त्री मेहनत करते हैं। घूंघट नहीं हैं, संमिलित परिवार है। आगे की तराइयों में घूमा। वहुत कुछ देखा। गरीवी है परंतु असंतोष नहीं। जीवन का ऐसा रूप पहले नहीं देखा था। अपरिग्रह यदि स्वभाव वन जाए तो मनुष्य को दुख का कम अनुभव होगा, शांति मिलेगी।

१७ मई : चुनाव में ८५ वोटों से जीत हुई। वोट कुल ४५५ गिरे। इंदिराजी नहीं आयीं। मुरारजी आए। सीकर में उन्हें अच्छा स्थान प्राप्त हुआ। चुनाव में काफी जोर पड़ा। अगली वार नहीं खड़ा होना चाहिए।

१८ मई : मुरारजी भाई से मिला, वातचीत की। और लोगों से भी वातें की। नंदाजी का पत्र वधाई का आया। और भी लोगों के आए, फोन भी। ३ वजे एक्जिक्युटिव की मीटिंग थी, साधारण औपचारिक। दिन में प्रभावतीजी और गंगावावू आए, सीकर नहीं जा सकूँगा। आगरा जाने का मन है।

वोमडिला

२६ मई : 'निसान' जापानी जीप आरामदेह है। शेला में फौजियों ने जगह-जगह रास्ते में चाय पिलाई। कितनी अधिक उँचाई पर हजारों फौजी पहाड़ों में गुफ़ाओं में रहते हैं। ठंढ काफी है, वारिश भी हो जाती है। नेफा की यात्रा काफी जानकारी की रही। सरकार को वहुत कुछ करना होगा। भारत के अन्य भागों से तालमेल रखना होगा। मिशनरियों ने यहाँ गलत काम किया। इसाई धर्म के कारण यहाँ के लोग अपने को भारत से पृथक् समझते हैं।

कलकत्ता

५ जून : ताश खेलना कम करना होगा। पश्चात्ताप होता है। समय नष्ट होता है। न्यूयार्क पर लिखना शुरू किया है।

६ जून : रुपयों का मूल्य घटा दिया गया। बैंक बंद हैं। शेयर, सोना थोड़ा गरम है। दिन में ऑफिस गया, बाद में अमेरिकन लाइब्रेरी और नेशनल लाइब्रेरी। यहाँ लिखने-पढ़ने का वातारण मिलता है।

७ जून : अवमूल्यन पर एक लेख लिखा। शाम को गद्दी में बालकृष्ण के साथ बैठकर सामयिक विषयों पर चर्चा की।

१० जून : अखबारों में लेख आया। बहुत चर्चा रही। मेरी शारीरिक क्षमता शायद घट रही है। आलस आता है। कसरत कर नहीं रहा हूँ।

१७ जून : न्यूयार्क पर लेख की रूप-रेखा तैयार की। सारे दिन लिखता रहा। 'इंदिराजी और वामपंथी कांग्रेसी' लिखा है, साधारण-सा हो पाया है। जो कहना चाहता हूँ, उभार नहीं पाया। राजू को छ-सात दिनों से जोरों का बुखार है।

२१ जून : सुबह संसद् के पंद्रह सदस्य नाश्ते पर आए। उन्हें लेने गया था। बातचीत होती रही। इस तरह की गोष्ठी में विचार खुल कर आते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखता हूँ। तकलीफ हो जाती है। गलती मेरी है।

आगरा

२५ जून : जमुनाजी में स्नान किया। रावीजी अच्छी जगह बना रहे हैं। कैलाश में शांति है। मन लग जाता है।

नयी दिल्ली

२७ जुलाई : शाम को मीटिंग थी। इंदिराजी से काफी बातें हुईं। उनका मूड अच्छा था। मनु भाई के गया।

४ अगस्त : रात में लोग भोजन पर आए। बीजू पटनायक, बख्शी गुलाम मुहम्मद, दिनेश सिंह, दिनकरजी, रतन लाल जोशी, बी० आर० भगत भी। अच्छी गपशप रही। दिनकरजी ने कविताएँ सुनायीं। जगह की कमी अखर गयी। लोग काफी थे।

१० अगस्त : पार्लियामेंट और पार्टी की मीटिंग में बोला। नंदाजी ने बुलाया था। मिलने गया। आसाम में दंगा हो गया है। बी० पी० बाजोरिया आए। बातचीत हुई। बी० आई० सी० की झंझट मिटी नहीं। इंदिराजी से आसाम के बारे में बातचीत की।

जोरहाट

१५ अगस्त : सुबह तैयार होकर ८॥ बजे बाजार आया। दूकानें लूटी गयी हैं। मारपीट की कोई वारदात नहीं हुई। नंदाजी की फोन लाइन नहीं मिली। ठाकुर बाड़ी में मीटिंग हुई। कई मीटिंगों में गया। लोगों में रोष है। स्त्रियों को कष्ट दिया गया था।

राजनीति के गंदे खेल से लोगों को काफी नुकसान पहुँचता है। आसाम में जो मारवाड़ियों के साथ हुआ, कल बंगालियों या गैर आसामियों के साथ भी हो सकता है।

नयी दिल्ली

२२ अगस्त : पार्ल्यामेंट में पी० ए० सी० पर बहस थी। सुब्रह्मण्यम् को छोड़ देना चाहिए। सुबह एस० एन० मिश्र, सत्येंद्र और सुखाड़ियाजी से बात हुई। शाम को नंदाजी और मुरारजी से मिला। तबीयत ठीक नहीं। मुँह में छाले हो रहे हैं। सीकर के लिए भाईजी ने कह दिया है।

कुरुक्षेत्र

६ सितम्बर : ट्रिप अच्छी रही। कुंड में स्नान किया। बिरला मंदिर देखा। कृष्ण ने जहाँ गीता का उपदेश दिया था, उसे देखा।

पूना

२३ नवम्बर : मारवाड़ी संमेलन में १,३०० तो डेलिगेट आए हैं। स्थानीय लोग भी काफी हो जाते हैं। सामाजिक मसलों पर विचार-विमर्श स्वस्थ परंपरा है। इतने लोग, इतनी भीड़, नियंत्रण रखना पड़ता है। कुछ लोग कानूनी नुक्तों पर अड़ते हैं। अपना-अपना स्वभाव। पूना संमेलन से मेरी इज्जत बढ़ी है, ऐसा लगता है। सिंघीजी का कल जोरदार भाषण हुआ।

नयी दिल्ली

२७ नवम्बर : जी० डी० के पास गया, वहाँ से मनु भाई के। कांग्रेस पार्टी की मीटिंग थी। १॥ घंटे रहा। बाद में नंदाजी से भी गौ-रक्षा पर बातचीत हुई। एस० एन० सिन्हा, जगजीवनराम, टी० एन० सिंह, डॉ० लोहिया, सी० डी० पांडेय से भी बातें हुई।

सवाई माधोपुर

३१ नवम्बर : ६ बजे सुबह आँख खुली, स्टेशन पूछा तो सवाई माधोपुर। चित्त बहुत खिन्न हो गया। आगरे से रात में गलत ट्रेन में बैठ गया था। दोनों मीटिंगें रह गयीं। दूसरी गाड़ी से दिल्ली पूगा।

जयपुर

६ नवम्बर : सुखाड़ियाजी पर टिकटों का पूरा भार है। उनके घर गया। बातचीत की। टिकटों का प्राय: तय हो गया। ५॥ बजे की ट्रेन से सीकर पहुँचा। बहुत से लोग मिलने आए। ज्यादातर खुश थे। रात ११ बजे मुकुंदगढ़ पूगा। पास की धर्मशाला में

सो गया। दिन में दामोदरजी से मिला। श्री जगदीश माथुर से पता चला कि सीकर पर उन्हें कोई व्यक्ति मिला नहीं है।

नयी दिल्ली

२५ नवम्बर : ओंकार बोहरा आए थे। राजस्थान के सारे टिकट आज तय हो गए। सांवरमलजी वगैरह सब रात में चले गए। सीकर के टिकटों का बँटवारा एक प्रकार ठीक हो गया।

२६ नवम्बर : दिन में पार्लियामेंट हाउस गया। मन में कमजोरी-सी लगती है। ३,०००) रु० विहार रिलीफ में देने को कहा।

सीकर

२३ दिसम्बर : सुबह सीकर में ही था। कुंभाराम जी ने पार्टी छोड़ने का तय कर लिया है।

सीकर

३० दिसम्बर : खबरें खराब आ रही हैं। जनसंघ आदि का समझौता हो रहा है। रामचंद्र सिंह सीट छोड़ रहे हैं। चुनाव की हालत का अभी कुछ भी पता नहीं चलता। मन में उदासी है। झूंझनूं तथा दूसरे गाँवों में गया। सूरजगढ़ में सूचना मिली कि वापस जयपुर जाना होगा, सुखाड़ियाजी ने बुलाया है।

१९६७

नयी दिल्ली

१ जनवरी : रविवार है, साल का पहला दिन। मन में आशा है, यह वर्ष ठीक से बीतेगा। अवतक आगे बढ़ता रहा हूँ, परमात्मा का भरोसा है। ५।। वजे सुवह दिल्ली पूगा। घर गया, चिट्ठियाँ देखीं। बनारस से नन्दू का फोन आया, सब राज़ी हैं। जी० डी० का, कलकत्ते का फोन आया। बी० एम० से मिला। दिन में सोमानीजी से २ बार मिला। मनु भाई से मिला। तीन-चार पत्र लिखे। लेख ठीक किया। भाईजी से फोन पर बात की, वे चिंतित से हैं।

सीकर-सुजानगढ़

२ जनवरी : रात में ट्रेन में बहुत तरह के विचार आते रहे। चुनाव के बारे में भी विचार आए। कांग्रेस की इमेज बिगड़ रही है। किसी को चिंता नहीं, शायद मुझे भी नहीं। परंतु मैं ऐसा था नहीं, बनना पड़ा। उपाय नहीं। सुबह सीकर पूगा। सांवरमलजी फतेहपुर गए हैं। मैं दिन में लोगों से मिलता रहा। शाम को रघुनाथजी से मिला। कांग्रेस की हालत कमजोर है। जनसंघ पहले से मजबूत हुआ है। फिर भी, मुझे सेंटर में कांग्रेस की ३०० सीटें आती नजर आती हैं। सीकर की सीटकी हालत कमजोर है।

सुजानगढ़

३ जनवरी : रात में दिल्ली फोन किया था। कार आ रही है, तीन जीपें भी आ रही हैं, दो जीपें और मोल लीं। सुबह लोगों से मिला—दामोदरजी, मूँधड़ाजी और भी इंपॉरटेंट व्यक्तियों से। यहाँ की स्थिति तो अच्छी मालूम देती है। के० एल० सेठिया से भी मिला, उनकी तय नहीं है। एक जीप और पेट्रोल की कह के आया हूँ, जीप भेज दी है। २ बजे लाडनूँ गया। पूजजी महाराज के दर्शन किए। फूलचंदजी जैन से मिला।

सीकर-जयपुर

४ जनवरी : सुबह चाय पीकर रघुनाथजी के घर गया। रात में चित्त बहुत खिन्न हो गया था। पार्टी के अंदर की फूट ने बहुत नुक्सान पहुँचाया है, ऐसा लगता है, इस चुनाव

में बातें उभर आयेंगी। ७॥ बजे की ट्रेन से जयपुर चला, साथ में गजाननजी शर्मा लछमनगढ़ वाले थे। जयपुर बैंक में गया। १२॥ बजे मुक्तिलालजी मोदी से बात की २,५००) रु० कैश दे दिए। ५ बजे भैरु सिंहजी के गया। उन्हें समझाया, काम ठीक हो गया। चिंता बढ़ती जाती है। पता नहीं चलता कौन साथ देगा, कौन नहीं। पहले के चुनाव में लोगों के मन में सफाई थी, अब नहीं मालूम पड़ती।

सीकर-श्रीमाधोपुर-नयी दिल्ली

७ जनवरी : रामदेव सिंह, झाबर आदि आ गए। जयपुर की खास खबर नहीं है। आज बद्रीनारायणजी सुजानगढ़ जायेंगे। १० बजे कार से रवाना हुआ। ११ बजे रींगस पूगा। वहाँ से ११॥ बजे श्री माधोपुर। सवा घंटे रहा। मुक्तिलालजी मोदी और भी लोग गाँवों में चुनाव प्रचार में जा रहे थे। १ बजे की ट्रेन से चला। रास्ते में पत्रों में देखा, सीकर से जगदीश खड़े हुए हैं, मन को शांति मिली।

नयी दिल्ली

१२ जनवरी : नयी-नयी बातें सुनने में आती हैं। चुनाव की स्ट्रैटेजी ठीक समझ में नहीं आती। स्वतन्त्र पार्टी और जनसंघ का जोर बढ़ता हुआ मालूम पड़ता है। राजस्थान में खास फर्क नहीं पड़ना चाहिए। पी० एस० पी० का सपोर्ट मुझे मिलेगा। जी० डी०, बी० एम० बिरला से मिला। जनसंघ को बी० एम० ने रुपए दिए बताते हैं पर पता नहीं। सच क्या है।

सीकर-झुंझनूं-सीकर

१३ जनवरी : सुबह सीकर पूगा। कार लेकर झूंझनूं गया। साथ में लादूराम पंवार थे। वहाँ से बिसाऊ पूगा। लोगों से मिला। हवा अच्छी बन रही है रात में ८ बजे सीकर वापस आ गया। रामनारायणजी को एक जीप भेजने की बात थी परंतु वह खराब हो गयी।

१४ जनवरी : रात में सीकर में वर्कर्स मीटिंग हुई। सुबह नन्दू को, माईजी को फोन किया। जनसंघ कैंडिडेट खड़ा करेगा, साबूजी के भी खड़े होने की बात है। ऐसा लगता है, पूरा जोर नहीं आयगा परंतु परेशानी तो बढ़ेगी ही।

सीकर-फतेहपुर

१५ जनवरी : सुबह सीकर के मुहल्लों में गया। अच्छा रेस्पोंस मिला। फिर १२॥ बजे फतेहपुर के लिए चला। रास्ते में गाँवों का दौरा करता रहा। कई जगह छोटी-छोटी मीटिंगें थी। अच्छी रहीं। इधर काम एक रकम ठीक हो रहा है। फतेहपुर रात में ९ बजे पूगा। सीतारामजी केडिया के घर में था, थकावट आ गयी है।

सीकर-बीदासर

१६ जनवरी : सुबह सीकर वापस आ गया। वर्कर्स से बातें की, लोगों से मिलता रहा। साबूजी का अभी तक ठीक नहीं है। मेरे लिए आसार अच्छे हैं, परंतु रुपए बहुत लग रहे हैं। आज-आज में ८,५००) रु० खर्च हुए। रात में बीदासर धर्मशाला में ठहरे। सर्दी बहुत है।

सुजानगढ़-सीकर-झुंझनू-मंडावा

२१ जनवरी : सुबह सेठिया के० एल०, धनराजजी दूगड़ और तोदीजी से मिला। यहाँ की हालत बहुत अच्छी है। शायद, पाँच-छः हजार वोट से जीत जाऊँगा। फूलचंद आदमी अच्छे हैं। सीकर ११ बजे पूगा। खास व्यक्तियों से मिला। चुनाव का ढंग बदला बताते हैं। इस बार हवा का रुख कब बदले, कहा नहीं जा सकता। इसलिए अंत तक जोर बराबर रखना होगा। इतने बड़े चुनाव-क्षेत्र में कैसे पार पड़ेगा, जँचाना होगा। शाम को मंडावा गया। वहाँ गलत-फहमी हो गयी थी, उसे ठीक किया। इस्लामी स्कूल में ३,५००) रु० देना तय किया। सीकर कांग्रेस के लिए भी १२,५००) रु० का चंदा कर देने का वचन दिया। चुनाव के सौदे का भाव समान चल रहा है।

सुजानगढ़

६ जनवरी : स्थिति ठीक है। सुजानगढ़ में घूमा भी। इस क्षेत्र में दस-बारह हजार मतों से जीत जाऊँगा। सीकर से कल्याणजी आए थे।

सीकर-रामगढ़

२७ जनवरी : सुबह सीकर पूगा। जगजीवनरामजी आए। बाजार में मीटिंग हुई। साधारण-सी थी। यहाँ भाव १२ आना मेरे, २) रु० साबूजी के हैं, ५) रु० त्रिलोक सिंहजी के चल रहे हैं। मन में चिंता रहती है। रतनगढ़ गया, फतेहपुर होकर। रतनगढ़ में जोर की मीटिंग हुई। मैं भी बहुत अच्छा बोला। रात में रामगढ़ ठहरा। नन्दू साथ है।

रामगढ़-खंडेला

२८ जनवरी : सुबह ८॥ बजे सुखाड़ियाजी आए। ९ बजे रामगढ़ में मीटिंग हुई, अच्छी रही। ११ बजे फतहपुर में बड़ी मीटिंग हुई। १ बजे लछमनगढ़ में, फिर २। बजे सीकर में। इन मीटिंगों का प्रभाव अच्छा रहा। ५ बजे श्री माधोपुर, ७ बजे खंडेला, वहाँ भी बड़ी मीटिंग हुई। ऐसा लगता है कि सीकर का रिजल्ट बहुत अच्छा रहेगा। ७,०००) रु० का सौदा किया। ठीक नहीं रहा। इतना सौदा नहीं करना चाहिए।

लोसल-दांता

१ फरवरी : लोसल में लोगों ने बदनामी की। धूल वगैरह भी फेंकी, गाली दी। मन

में दुख सा हुआ, मैंने इन लोगों का बुरा कभी नहीं किया। जितना बना, करता रहा। राजनीति का यह ढंग तावे नहीं आता। दाँता में जगदीशजी वैद्य से मिला। वह ठाकुर का प्रचार कर रहे हैं। हमारी हालत इधर कमजोर है।

दांता-रानोली-श्री माधोपुर-सीकर

२ फरवरी : शाम को गाँवों के दौरे से आया। रानोली वगैरह गया था। दिन में श्री माधोपुर गया था। रात में नरसिंहजी फागलवाल से लड़ाई हो गयी। मैं नहीं चाहता था परंतु वे कुछ जबर्दस्ती उलझ गए। मैं बरदाश्त कर गया। जगन सिंह हार जाएंगे ऐसा लगता है, परंतु वोट तो बटेंगे।

मलसीसर

३ फरवरी : सुबह सीकर में लोगों से मिला। वहाँ से कन्हैयालालजी को लेकर कमलाजी के साथ गाँवों में घूमा। स्थिति यहाँ अच्छी है। इस क्षेत्र में १९ हजार वोटों से जीतूँगा।

मंडावा-बिसाऊ

४ फरवरी : सुबह कन्हैयालालजी के घर पर था। शिवनारायणजी नेमानी की कोठी देखी। ११ बजे तक गाँवों का दौरा किया। फिर बिसाऊ में लोगों से मिला। कल फिर आना होगा। दो जीपों की तुरंत जरूरत है। सीकर की हालत ठीक है।

सीकर-लछमनगढ

६ फरवरी : गाँवों में दौरा किया। यहाँ चुनाव की हवा, ज्यादा अच्छी नहीं है। साबूजी वगैरह बहुत रुपयों का सौदा कर रहे हैं। मैंने २०००) रु० का १~) में किया। दिन में मन में दुश्चिंता सी रही, खर्च काफी हो रहा है। ३ बजे लछमनगढ़ गया, वहाँ लोगों से मिला। ८ बजे नारायण सिंह के साथ वापस आया। नवलगढ़ के ठाकुर साहब से बात की। दिन में थोड़ी नर्वसनेस महसूस की।

सीकर

१५ फरवरी : सीकर में मतदान शुरू हुआ। सुबह से ही घूमना शुरू किया। मुसलमानों के अच्छे मत मिले। ऐसा लगता है, जीत जाऊँगा।

खंडेला

१९ फरवरी : सुबह ९ बजे रामदेवजी के साथ गाँवों में घूमता रहा। हालत विशेष अच्छी नहीं है। खंडेला भी गया। कुछ कहा नहीं जा सकता। हिंदुओं के वोट तो बँट रहे हैं। कुछ कांग्रेसी भी विरोध कर रहे हैं, ऐसी खबर है।

२० फरवरी : सुबह मतदान हुआ। कांग्रेस के पक्ष में मालूम देता है। परेशान था। १,०००) रु० का ३,००० वोटों की जात पर सौदा किया। मदनजी के साथ रात में सीकर वापस आ गया। परेशानी और चिंता है परंतु जीत की आशा है।

२१ फरवरी : सुबह सीकर की गिनती शुरू हुई। दिन में भाव बढ़ते-घटते रहे। रात में १२ बजे नन्दू सुजानगढ़ से आया। ९,००० वोटों से वहाँ की हार सुनकर चित्त खराब हो गया। नन्दू यहाँ से उसी समय चला गया, नीम के थाने की काउंटिंग पर। सुजानगढ़ से मुझे ऐसी आशा नहीं थी, बहुत बड़ा धोखा हुआ।

२२ फरवरी : सुबह उठा। थोड़ा बुखार था। नन्दू वगैरह आ गए हैं। सुजानगढ़ के रिजल्ट के बाद मेरी हार निश्चित हो गयी है। मन में काफी उदासी है। सारे दिन पड़ा रहा। भाईजी राजलदेसर जाकर रुपये ले आए। कार एक्सिडेंट होते-होते बची। मन में इतनी ज्यादा चिंता है कि कभी नहीं हुई। रात में जी० डी० बिरला का फोन आया। मुझे कभी भी इतनी चिंता नहीं हुई थी।

२३ फरवरी : सुबह मन कुछ ठीक हुआ। होना ही था, जो होना था, वह सामने आ गया। मन में काफी चिंता रही। नन्दू, राजू दिल्ली गए। मुझे रोना आ गया। साबूजी मिलने आए। १५,००० मतों से हार हुई। कामराज, अतुल्य घोष आदि भी हार रहे हैं। कांग्रेस काफी कमजोर होती जा रही है। मेरी हार के पीछे कांग्रेस की अंदरूनी दलबंदी और कमजोरी है, मैं महसूस कर रहा हूँ।

२४ फरवरी : सुबह से ही काम सलटाने की व्यवस्था करने लगा। ४६,०००) रु० कलकत्ते पर हुंडी की। पेमेंट किया। लोग मिलने आते रहे। मन में दुःख है, हूक-सी लगती है। त्यागीजी हार गए। मनु भाई, पाटिल आदि सब हार गए। इतना दुःख जीवन में शायद एक बार हुआ, ३० वर्ष पहले जब फाटका में रुपया खो दिया था। फाटका और राजनीति दोनों ही मेरे लिए माफिक नहीं। परंतु व्यापार में रुपया खोने का दुःख ऐसा नहीं होता।

नयी दिल्ली

२५ फरवरी : सुबह ६॥ बजे पूगा। मन में उत्साह नहीं था। ७॥। बजे तक बिस्तर पर पड़ा रहा। पैरों में दर्द है। १२॥। बजे तक घर में रहा। फिर पार्लियामेंट हाउस गया, लोगों से मिला। पी० डी० हिम्मतसिंहका से मिला, कुछ शांति मिली। मोरारजी भाई के गया, कांति भाई से बात की। मन में एक प्रकार की सुस्ती है, झेंप-सी आती है। उदासी का वातावरण छाया हुआ है। 'सरिता' के विश्वनाथ मिलने आए।

२६ फरवरी : सुबह थकावट और आलस सा था। मन में विचार आते हैं, कटी पतंग की तरह हूँ। कोई सूत्र नहीं रहा। किस काम के साथ अपने को जुड़ा समझूँ? इन वर्षों

में व्यापार, काम-काज से एक रकम अलग ही रहा। अब राजनीति से भी संबंध टूट-सा गया। जब आसाम से निराश होकर गाँव वापस आया था बहुत वर्षों पहले, मन की हालत वैसी सी हो रही है। वाइफ साहस दिलाती हैं परंतु मन का बोझ हल्का नहीं होता। ९ बजे वाइफ के साथ त्यागीजी के गया। वहाँ से घर वापस आ गया। शाम को मुराजी से मिला। मनुभाई के घर रात में १० से १०॥ बजे तक था। वहाँ भी उदासी का वातावरण है। वहीं बीजू पटनायक मिले, वह भी उदास थे। हार का हार पहने सब बैठे हैं, इस बार के चुनाव ने बड़े-बड़े को उलाट दिया। प्रायः सभी कहते हैं, आपसी फूट ही बड़ा कारण है। जनता का विश्वास कांग्रेस पर कम होता जा रहा है।

कलकत्ता

१ मार्च : सुबह ८॥ बजे पूगा। स्टेशन पर एस० एन०. वगैरह थे। दिन में ऑफिस गया। जी बहुत खराब है, किसी काम में मन नहीं लगता। शाम को 'आम्रपाली' देखने गया। दिमाग में और ही कुछ दिखायी दे रहा था। हॉल से चला आया। ४ बजे मातादीनजी खेतान के साथ भागीरथजी के ऑफिस गया। कुछ शांति मिली। जो लोग जीत गए हैं, खुशी मना रहे हैं।

२ मार्च : रघुनाथजी के गया। थोड़ी देर ताश खेली। दिन में ऑफिस गया। मन स्थिर नहीं है। बंगाल में बहुत हेर-फेर हो रहा है। कम्युनिस्टों की मिनिस्ट्री बन रही है। इतने वर्ष, समय और मेहनत लगा कर क्या मिला ? सामाजिक कार्य करता तो ज्यादा सेवा होती, कुछ कर भी पाया था परंतु राजनीति तो बेमतलब की हैं। इसमें कुछ करना चाहे तो हो नहीं सकता बल्कि उल्टा हो जाता है।

३ मार्च : रात में सोचता रहा, इस तरह चिंता करने से क्या फायदा ? मुझे मन को स्थिर कर कुछ काम करना चाहिए। मन तो खराब है ही। शरीर भी चिंता से खराब हो रहा है।

४ मार्च : रात नींद ठीक आयी, पर सपने आने अभी भी जारी हैं। मैं अपने को बदलने की चेष्टा में हूँ।

६ मार्च : मनुष्य पर जब विपत्ति आती है, तब धैर्य नहीं रख पाता। दूसरों को धीरज देना आसान है पर अपने पर आने पर वश नहीं चलता है। इस महीने में जितनी चिंता और हैरानी हो रही है, वह कभी नहीं सोची थी; खासकर पिछले पंद्रह दिनों में तो हद से ज्यादा। दिन में ऑफिस में था। कामकाज तो देखना चाहिए परंतु मन स्थिर नहीं कर पाता हूँ।

७ मार्च : सुबह एस० पी० जैन के यहाँ अलोक से बात हुई। ऐसा लगा, कुछ ज्यादा बढ़ कर बोल रहा था फिर भी, लड़का अच्छा है। कह रहा था, सुखाड़ियाजी सीट दे देंगे। दिन में लोग मिलने आए। बंगश्री मिल की चिंता खाए जा रही है। मिल में, चुनाव में और जमीन में कई लाख फँस गए।

८ मार्च : सुबह लेक गया फिर भागीरथजी के यहाँ। सुखाड़ियाजी से भी वात हुई। ९ वजे से १० वजे तक बी० एम० विड़ला के। जी० डी० नहीं आ रहे हैं। वे रहते तो मन को धीरज मिलता। यू० पी० में कांग्रेस गवर्मेंट रह जायगी। इन दिनों प्रायः सभी प्रांतों में कांग्रेस के लिए समस्या है। यही हालत रही तो टूट जायगी। कांग्रेस में कार्यकर्त्ता नहीं रहे, नेता हैं। जनता से वे दूर हटे जा रहे हैं। इन दिनों मुझे जीवन में कोई सार नहीं दिखता। पढ़ने-लिखने का काम भी छूट गया है।

नयी दिल्ली

११ मार्च : ट्रेन से कल दिल्ली रात में पहुँचा। भाईजी भी चिंतित हैं। वात ही ऐसी है। अम्बेसडर ९७५०) रु० में वेच दी। अच्छे दाम आ गए हैं। दिन में पार्लियामेंट गया। लोगों से मिला। मन में एक प्रकार की उदासी सी तो है ही। कुछ झेंप भी मालूम देती है। त्यागीजी नहीं हैं।

१२ मार्च : दिन में कमला नगर गया, उसके पहले मुरारजी भाई के गया। ११ बजे सेंट्रल हॉल में नया चुनाव हुआ। मुरारजी भाई खुश नहीं थे, इंदिराजी भी खुश नहीं थी। देखें, कैसा चलता है।

१५ मार्च : मन करता है कि किसी अनजानी जगह चला जाऊँ। कितना प्यार किया राजस्थान को, कितनी कोशिशें कीं अपने क्षेत्र के लिए। लोगों ने गलत समझा। शायद धन मेरी हार का वहुत वड़ा कारण हो। सभी जगह रुपयों की माँग क्योंकि मैं पैसेवाला समझा जाता रहा। गलती मेरी भी थी, मैं देता रहा। धन की भूख बढ़ती है, मिटती नहीं, नहीं मिलने पर क्षोभ होता है। परंतु मुझे संतोष है, यहाँ कुएं, तालाब, सड़कें, स्कूल, अस्पताल रहेंगे, मैं न भी रहूं तो क्या। १२॥ बजे की वस से ३ बजे सरदार शहर आया। लोग मिलने आए, पहली वार मिलने पर मन में एक प्रकार की झेंप और दुःख सा महसूस हुआ। मंदिर गया। मन के लिए ताकत की प्रार्थना की।

नयी दिल्ली

२० मार्च : राजस्थान से कौल और बर्मन आए हैं। कौल मेरे यहाँ ठहरे हैं। पार्लियामेंट में राजस्थान पर वहस थी। कौल का मन दिल्ली से राजस्थान में आने का है। नन्दू का फोन था, मुझे कलकत्ता आने को कहता है।

२१ मार्च : मन में कुछ मजबूती महसूस करने लगा हूँ। दिन में पार्लियामेंट में गया, लोगों से मिला मनु भाई शाह के गया, त्यागीजी के गया। उन्होंने फखरुद्दीन से मिलने को कहा है रात में गंगा वावू के गया, वहाँ से विरलाजी को फोन किया।

२३ मार्च : सीकर का फोन था, मुझे अकाउंट सवमिट करने के लिए वुलाया है। ९॥ वजे मुरारजी के साथ वातें कीं। कांग्रेस में इंदिराजी अपना अलग गुट वना रही हैं, शायद वामपंथी उनका साथ दें, मुझे ऐसा महसूस होने लगा है।

२५ मार्च : होलिका-दहन आज है। घर में ही रहा। कुछ पत्रिकाएं पढ़ता रहा। कहीं नहीं गया। कुछ करना चाहता हूँ पर समझ में नहीं आता क्या करूँ। राजनीति का नशा बुरा होता है, उतरता नहीं।

२८ मार्च : सब काम सलटा कर स्टेशन आया। ८ बजे सुबह गाड़ी में बैठा। रास्ते में किताब पढ़ता रहा। गरमी नहीं थी। बुखार था, परंतु कलकत्ते जाने का मन हो गया, इसलिए तय कर लिया। नन्दू के फोन आने के बाद से मन उतावला हो रहा है।

कलकत्ता

१ अप्रैल : ९ बजे सुबह ज्ञानभारती की मीटिंग में गया। स्कूल का काम ठीक चल रहा है। लड़कियों के स्कूल में हिंदीभाषी अध्यापिकाओं को रखने के बारे में मैंने बातचीत में सुझाव रखा। इससे आगे चल कर बहुत सी असुविधाएँ नहीं रहेंगी। परंतु हिंदीभाषी टीचरें कमती मिलती हैं, ऐसा बताते हैं।

२ अप्रैल : सुबह जी० डी० के साथ घूमा। फिर विक्टोरिया मेमोरियल गया। ७। बजे से १२ बजे तक रघुनाथजी के घर था। घर आकर खाना खाया। पुष्पा और गर्ग आए। गर्ग ने एक रकम ओलमा दिया, लेखों को पूरा करने के लिए जोर दिया। मन ठीक नहीं, कैसे पूरा करूँ?

आगरा

४ अप्रैल : दिन में ३॥। बजे टूँडला पूगा। बस ५ बजे मिली। ६ बजे फोर्ट उतरा। ६॥ बजे नौबस्ता गया। एक साइकिल किराए पर लेकर कैलास ८। बजे रात में पूगा। रास्ते में अँधेरा था। एक्सीडेंट होते-होते बचा। कैलास जाने का कोई मतलब नहीं था परंतु अस्थिर मन एक जगह टिकने नहीं देता। रात में सर्दी थी, लोगों से बात करता रहा, मन कुछ बदल सा गया। राबीजी राजी हैं।

नयी दिल्ली

७ अप्रैल : मुरारजी भाई के गया था। कई आदमी थे, खास बात नहीं हो सकी। रामरतन गुप्ता, बनारसीदास मिले, हालत बिगड़ती जा रही है। कल पार्टी में चुनाव हुए, पहाड़िया चुने गए। मुझे कैसा सा लगा। लगना नहीं चाहिए क्योंकि मैं अब कुछ भी नहीं हूँ। सूखा पत्ता जमीन पर पड़ा रहता है, जानवर भी उसे नहीं छूना चाहते।

कलकत्ता

१८ अप्रैल : सुबह लेक पर गया, थोड़ा सा घूमा। फिर डेढ़ घंटे रघुनाथ जी के ताश खेला। घन जी के साथ जमीन देखने गया। घर आकर 'अमृत और विष' पढ़ता रहा। १। बजे ऑफिस गया। वहाँ कागज-पत्र का काम किया। गर्ग का फोन था, संस्मरण लिखने के लिए कहता था। मन अभी ठीक हुआ नहीं, लिखा नहीं जाता। कुछ दिनों के लिए बाहर चला जाऊँ तो शायद शुरू कर सकूँ।

जसीडीह

२२ अप्रैल : सुबह जल्दी तैयार हो गया। गौरीशंकर जी के साथ दुमका गया। संताल पहाड़िया सेवा मंडल गया, अच्छी संस्था है। सारे दिन वहाँ रहा। भूधर बाबू वगैरह की दुकान देखी। अच्छी चल रही है। रात में १० बजे जसीडीह वापस आ गया।

२३ अप्रैल : नन्दू का फोन आया, दिल्ली बुलाया है, राज्यसभा की सीट के बारे में। ४ बजे ट्रेन में बैठा, वर्षा बहुत थी। यशपाल जी साथ में थे। जसीडीह की यात्रा अच्छी रही। दो-तीन दिनों में मन में प्रसन्नता आयी। दिल्ली जाकर कब यहाँ आऊँगा, पता नहीं। रात में पटना पूगा।

नयी दिल्ली

२५ अप्रैल : मकान गंदा हो रहा है। हिंदुस्तान के जोशी जी, सरिता के विश्वनाथ जी से मिला। लेख छाप रहे हैं। मनु भाई को फोन किया। मकान के लिए कौशिक से मिला। त्यागी जी के गया। रात में मास्को के बारे में लेख लिखा। एस० एन० जोशी को 'अमृत और विष' किताब दी।

२६ अप्रैल : सुबह गंगाबाबू के गया, वहाँ से मनुभाई के। नाश्ता एस० पी० जैन के यहाँ किया। प्रभुदयाल जी डाबरीवाल भी थे। कलकत्ते के बारे में बात हुई, चिंता की बात तो है ही। १० बजे आया,। मकान के अलॉटमेंट में काफी झंझट रही। कार बिक नहीं रही है, दाम नहीं लग रहा है।

२८ अप्रैल : जीप ६,५००) में बेच दी। कुछ दूसरे मसलों के कागज बनाए। सारा दिन लग गया, फ्लैट मिला नहीं। सामान इकट्ठा कर के त्यागी जी के मकान में भेजता रहा।

२९ अप्रैल : सारे दिन चीज-वस्तु इधर-उधर भेजने के इंतजाम में रहा। शाम को त्यागी जी के यहाँ था। मकान छोड़ने की तथा मोटरों की बिक्री की चेष्टा भी करता रहा। कुछ खास हो नहीं पाया। दिल्ली छोड़ने का मन में दुःख सा हो रहा है। परंतु दिल्ली कभी किसी की होके रही नहीं, मेरी कैसे रहती? कलकत्ते से आया था, वापस चल पड़ा। ऐसा लगता है, जीवन का एक अध्याय समाप्त हुआ।

कलकत्ता

१ मई : ६ बजे पूगा। सीधे गंगा जी गया, तेल मालिश करायी, काफी देर तक स्नान किया। बड़ी शांति मिली। तैरा भी खूब। आज गंगा स्नान के समय अध्यात्म की बातें मन में आती रहीं। सूत्र-संपर्क से मोह बढ़ता है, छूटने पर मुक्ति हो जाती है। परंतु यह विचार कब तक रह सकेगा, नहीं जानता।

४ मई : सवेरे बालकृष्ण गर्ग के पास गया था। काफी देर तक बातचीत की। मैंने स्वीकार किया कि चुनाव में उसका अंदाज ठीक निकला। उसे पिंजरापोल छोड़ने के लिए कहा परंतु उसका मन कमती है। पुष्पा को मैंने उसे समझाने के लिए कहा है।

७ मई : सुवह 'लेनिनग्राड' लिखता रहा। काफी लंबा लेख हुआ है, शायद दो भागों में होगा बहुत मैटर है पर सब देना संभव नहीं। ६॥ बजे विक्टोरिया गया, फिर वहाँ से सुमेरमल जी आंचलिया के। वहाँ से पुष्पा बागला के। दिन में किताब पढ़ता रहा।

१३ मई : दिन में अमेरिकन लाइब्रेरी में ब्रिटेन पर लेख लिखता रहा। अच्छी जगह है, कोई डिस्टरबेन्स नहीं होता। ४ बजे हिंदी हाईस्कूल में 'भोलानाथ' खेल देखा। तबीयत ठीक है।

१४ मई : सुवह वर्षा आयी। मारवाड़ी सम्मेलन के जुलूस में गया। कपड़े इकट्ठे हुए। २ बजे गद्दी गया। ३ बजे से ४। बजे तक पुरुषोत्तम जी के घर 'मिनिस्टर' खेलते रहे।

१५ मई : रात में १० बजे तक लेख लिखता रहा। शायद अच्छे बने हैं। इसमें मन बहल जाता है और शांति भी मिलती है। सोचता हूँ, पिछले दस वर्ष का पार्लियामेंट का राजनीतिक जीवन बहुत उथल-पुथल का रहा। क्या काम आया ? जो लिख-पढ़ लूँगा वही रह जायगा।

१८ मई : सीतारामजी सेकसरिया, बालकृष्ण और पुष्पा के साथ शरद बाबू की 'दत्ता' देखने गया। अच्छा लगा। बालकृष्ण से बातचीत हुई। ब्रिटेन के लेख पर उसने कुछ सुझाव दिए। एक लेख हमीद खाँ भाटी पर लिखा।

१९ मई : इन दिनों लिखना एक रकम ठीक चल रहा है। आज 'शिवजी भैया' लिखा है। साधारण सा है। ब्रिटेन के लेख में थोड़े सुधार किए। 'लेनिनग्राड' पूरा कर दिया। 'विश्वमित्र' में मेरा लेख 'समय बदला' छपा।

२१ मई : सुवह बालकृष्ण के घर गया, चाय वहीं पी। वहाँ से गंगाजी आया। इसके पहले लेक गया था। गंगाजी से ब्रिटिश लाइब्रेरी आया। २ बजे घर आया, एक लेख लिखा टैक्स पर। टाइप करा कर 'विश्वमित्र' और 'हिंदुस्तान' को भेजा। इन दिनों काफी लिख रहा हूँ प्रायः छः-सात लेख लिख डाले, अच्छे बने हैं। हरेक लेख पर टाइम लग जाता है। भरतिया में पिछले वर्ष दो लाख का लॉस है, मन में चिंता सी हो जाती है।

२९ मई : ८ बजे बिरला हाउस गया, जी० डी० काफी उदास थे। आज उन पर पार्लियामेंट में बहस हुई। रात में विचार आते रहे, उद्योगपति इंडस्ट्री बढ़ाने में कोशिशें कर देश को आगे बढ़ाते हैं, उनका गुण कोई नहीं मानता। सही-गलत संदेह भी कर लिया जाता है। आखिर सरकार भी तो मोनोपेली और मुनाफाखोरी करती है, उस पर क्यों नहीं बहस उठती ?

नयी दिल्ली

२ जून : रात बाहर खुले में सोया था। नींद खूब आयी। ५ वजे उठा। दो मील घूमा। घर आकर बाजार से मिठाई लाने गया। अतुल्यो बाबू को देकर आया। बंगाल की बात चल पड़ी। वे चिंतित हैं परंतु साफ कुछ कहते नहीं। ऐसा लगता है, हाई कमांड में कमजोरी है। मुझे महसूस होता है, कुछ बड़ा अड़ंगा खड़ा हो जायगा। नुकसान देश का होगा। व्यापार-उद्योग भी झमेले में पड़ सकते हैं। रात को ९ वजे गंगाबाबू के साथ स्टेशन आया। जेब देखी, टिकट गुम गयी थी। चिंता हुई।

आगरा

४ जून : सुबह ९ वजे आगरा पहुंचा। ए० सी० सी० में था, इसलिए काफी आराम रहा। ९॥। वजे किशोर पुरा-जगदीश पुरा पहुंचा। देहात का छोटा सा मकान। भूख और गरीबी का प्रत्यक्ष अनुमान हो जाता है। एक सज्जन ग्वालियर के थे, परिचय यूँ ही पहले हो गया था। यहीं ठहर गया। १ वजे भोजन किया, साधारण सा था किंतु स्नेह भरा। तृप्ति हुई। ५ वजे तक वातचीत करता रहा, इस बीच थोड़ी देर सो भी गया। फिर सब को साथ लेकर 'चंदन का पलना' सिनेमा ले गया। अन्नपूर्णा, कुमुद कुमार भी थे। २५) रु० खर्च हुए। समय अच्छा बीता।

बम्बई

११ जून : बंबई मिल के काम में कुछ सुधार लगता है। यहाँ गरमी नहीं है। सुबह ताराचंदजी बड़जात्या के यहाँ नाश्ता किया। सिनेमा का बहुत अच्छा ट्रेड चल रहा है। मुझे भी उन्होंने दिल्ली में काम करने को कहा है।

कलकत्ता

२६ जून : बंगाल की वर्तमान स्थिति पर लेख लिखा। कई पत्रों में भेजा है। हालत यहाँ की आजकल खराब है। मुझे ऐसा लगता है, शोषण सभी वर्ग करता है, जिसका दाँव लग जाए। एक समय ब्राह्मण ने समाज का शोषण किया, फिर क्षत्रिय ने, तब वैश्यों ने और अब शूद्र (मजदूर वर्ग)। यह समस्या पूरी तौर पर आर्थिक नहीं बल्कि नैतिक और सामाजिक है।

२७ जून : शाम को पुरुषोत्तमजी के घर कन्हैयालालजी सेठिया और सीताराम महर्षि की कविता सुनी, अच्छा लगा। दिन में बालकृष्ण आया था। उसके साथ बैठ कर ब्रिटेन का लेख फाइनल कर दिया। पहला भाग दूसरे पत्रों में भेज दिया है। दो दिन से कसरत शुरू की है, परंतु फिर छूट जायगी।

२८ जून : रात में कन्हैयालालजी सेठिया खाने पर आए, दवेजी और बुधमलजी शामसुखा भी आए। दिन में सुना 'हिंदुस्तान' में लेख छपा है। कृष्णचंद अग्रवाल (विश्वमित्र)के साथ दो घंटे था।

नयी दिल्ली

९ जुलाई : सुबह उठा, फोड़े में दर्द था। सारे दिन घर में था। किताबें पढ़ता रहा। रतनलालजी जोशी और कुंभारामजी आए। मेहराजी को फोन किया। दिन में ओंकारजी आए, उनके साथ बुधमलजी भूतोड़िया की दोहिती के विवाह के रिसेप्शन में गया। शाम को सामंता, हनुमतैया, दिग्विजयजी के गया। रात में ९।। बजे ट्रेन पर आया। जेब टटोली ९०) रु० गुम गए थे। जेब में रुपए नहीं रखने चाहिए, कई बार खो चुका हूँ। थर्ड क्लास टू-टायर में आ गया।

जयपुर

१० जुलाई : सुबह ५।। बजे पूगा। श्रीचंदजी के घर स्नान वगैरह किया। पैरों में दर्द है। फोड़ा फूट गया है, मवाद बहुत है। सारे दिन सोता रहा, कुछ बुखार सा था। ६ बजे जीप से सुखाड़ियाजी के घर आया। सुबह उनसे मिल चुका था। लायी हुई चीजें उन्हें दे दी। ट्रेन में सेकेंड क्लास में सोकर आया। बिस्तर नहीं लाया था, इसलिए थोड़ी परेशानी रही।

वडनेरा

१३ जुलाई : सुबह ४ बजे उठा। कार लेकर स्टेशन आया, ट्रेन सवा घंटा लेट थी। मैं स्टेशन पर सो गया। टिकट नहीं कटा सका था, मन में डर बना था। तीन मारवाड़ी साथ बैठे थे, मुझे जानते थे फिर भी मन में डर तो बना रहा। ९ बजे वडनेरा पूगा। अमरावती जाकर मुणहोत के गया, अच्छे व्यक्ति हैं। पहले से जानते हैं। और लोगों से भी मिला। उन्होंने मोटर से ८ मील वडनेरा माईजी के पास पहुँचा दिया।

वडनेरा-बगीचा

१५ जुलाई : सुबह ६ बजे उठा। दर्द कम था। रात में एक दुःस्वप्न आया था। उठ कर पानी पिया फिर सो गया। नींद खुलने पर किताब पढ़ने लगा। फिर लेख ठीक करने लगा। माईजी से बात की। जमीन अच्छी है, खेती-बागबानी के लिए। शायद सफलता मिलेगी। मेहनत और ध्यान लगा रहे हैं। रात में एक सभा हुई। १००-१५० आदमी आए। सामाजिक विषयों की चर्चा रही, मैं शायद अच्छा बोला। लोगों को बात जँची। इधर व्यापार के साथ खेती, बागबानी और गो-पालन का काम अच्छा चल सकता है। कुछ लोग करते भी हैं। परंतु आधुनिक तरीका लगाने की जरूरत है।

कलकत्ता

२२ जुलाई : सुबह विक्टोरिया गया। वहाँ से घर आया। कमलनयनजी बजाज, अशोक जैन, प्रह्लादजी, आत्माराम कानोड़िया नाश्ते पर आए।

२५ जुलाई : सुबह मैदान गया, फिर माइती एम० पी० के साथ न्यू मार्केट। ९ बजे शचीन चौधरी के गया, बहुत अच्छी तरह बात की। दिन में सी० एल० बाजोरिया के गया, उन्होंने दो प्रोपोज़ल दिए, अच्छे थे, परंतु हमारे पास साधन नहीं है। भरतिया में, जुलाई में एक लाख का लॉस है। चिंता की बात है।

नयी दिल्ली

२६ जुलाई : फखरुद्दीन से मिला, रामसुभग सिंह, दिनेश सिंह तथा एस० सिन्हा से भी। फखरुद्दीन का रुख अच्छा है। रविवार को कानपुर जायेंगे। मेहरा से बात की। भल्ला से मिला। दिन बहुत व्यस्त बीता। मन लगाने के लिए कुछ काम हाथ में लेना ठीक रहेगा।

२७ जुलाई : रघुनाथजी, सेंगरजी, गंगाबाबू आदि के साथ काफी हाउस गया। दिन में पार्लियामेंट में था। दिल्ली में पहले की तरह मन नहीं लगता। कुछ काम हो जाय तो अच्छा रहेगा। बी० आइ० सी० का प्रप्रोजल फिर आया है, इससे पहले ना कर दिया था। अब स्वीकार कर लूँगा। अच्छी बड़ी जिम्मेदारी रहेगी। फाईनेंशियल प्रॉफिट तो नहीं होगा परंतु समय ठीक बीतेगा। शाम को लखनऊ के लिए रवाना हो गया।

लखनऊ

२८ जुलाई : ७॥ बजे पुगा। ट्रेन में कई आदमी मिले। लोगों से बात करने से काफी जानकारी बढ़ती है। एक मारवाड़ी बासा में खाना अच्छा मिल गया। कुछ किताबें खरीदीं। मित्रों से मिलता रहा। यहाँ भी कांग्रेस में खींचातानी है। श्री अमृतलाल नागर और भगवतीचरणजी वर्मा से मिला।

कलकत्ता

३१ जुलाई : ११ बजे सी० एल० बाजोरिया से मिला। उन्होंने मैनेजिंग डायरेक्टर बनने को कहा है। मैंने हामी भर ली। शेयर बाजार गया था। १००० शेयर मोटर के १४॥।) में बेचा, ५०० बी० आई० सी० के ५=) में लिए। रात में 'आज' के लिए एक लेख लिखा।

सिलिगुड़ी

१ अगस्त : सुबह की प्लेन से किशोरीलाल ढांढनिया, रामकिशन सरावगी और मैं सिलिगुड़ी के लिए रवाना हुए। ९॥ बजे पुगे। सामने बहुत से लोग आए थे। श्रीराम चांदमल के गए। दिन में लोगों से बातें करते रहे। शाम को ५ बजे से ७॥ बजे तक बड़ी मीटिंग हुई। किशोरीलाल और सरावगी भी अच्छा बोले। समाज के सामने अब नयी समस्याएँ हैं परंतु लोगों का ध्यान नहीं जाता। नयी पीढ़ी सामने आती नहीं। इन बातों की भी अच्छी चर्चा रही। परंतु मैं महसूस करता हूँ कि कुछ ठोस प्रोग्राम बिना

लिए लोगों में रुचि नहीं वढ़ेगी। इस पर विचार करना जरूरी है। पहले हम लोगों के सामने आंदोलन, छुआछूत, विधवा विवाह, शिक्षा की समस्या थी, हमारे प्रोग्राम भी उसी माफिक थे परंतु अव इनकी जरूरत इतनी नहीं रह गयी। इसलिए सामाजिक संगठन की कुछ वुनियादी वातें समझानी जरूरी महसूस करता हूँ। ७॥ वजे मीटिंग से वापस हुए। थर्ड क्लास में वैठे। रास्ते में, वेग में दो लेख और दाँत चोरी हो गए। काफी चिंता हुई। लेख गुम जाने का वहुत कष्ट मन में हुआ। ४ वजे कटिहार में ट्रेन वदली।

काठमांडू

३ अगस्त : सुवह विराटनगर में लोगों से मिला। फिर ९ वजे एयरपोर्ट आया। काठमांडू रवाना हुआ। ११ वजे पूगा। कई लोगों से मिला। ४२ के आंदोलन के कई नेपाली साथी भी मिले। अच्छी हालत में नहीं है। नेपाल में राजा के अधिकार कम शायद ही हों।

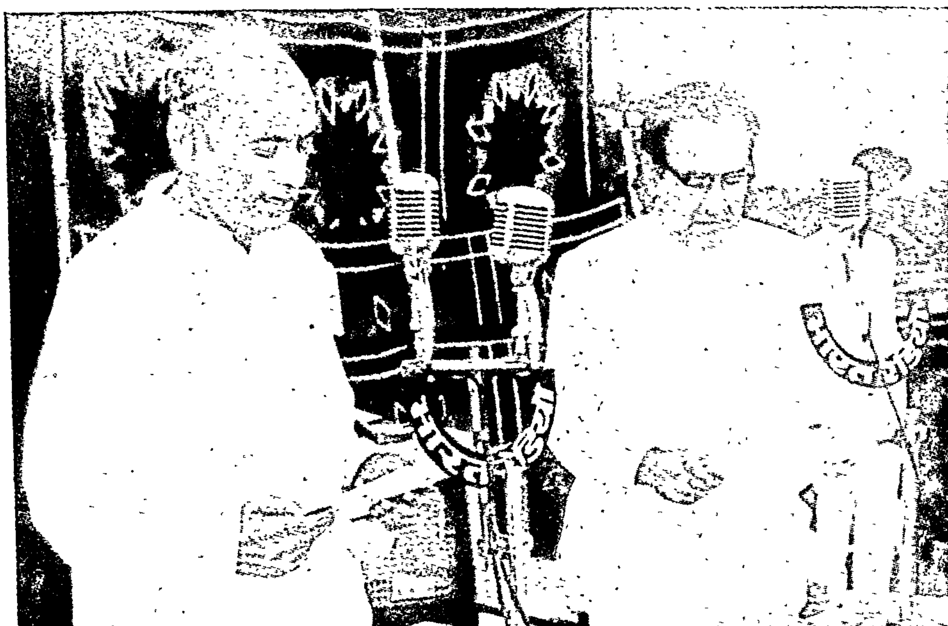
४ अगस्त : सुवह १० वजे तक वाजार घूमता रहा। नेपाल और हमारे देश में कोई खास फरक नहीं मालूम देता। श्रीमन्नारायण जी से मिला काफी प्रेम से मिले। मदालसाजी ने वहुत खातिरी की। १२ वजे की प्लेन से पटना पूगा। सी० एल० झुनझुनवाला के ऑफिस में ठहरा। उनका आदमी वहुत ही भला था। वाजार गया, कुछ लोगों से मिला। पटना शहर पहले से वढ़ता जा रहा है।

कलकत्ता

५ अगस्त : सुवह ७ वजे ट्रेन वाली पहुँची कि रोक ली गयी। लोगों ने आगे वढ़ने नहीं दिया। हैरानी हुई। ट्रेन रोकने से क्या फायदा? प्रतिवाद का यह तरीका समझ में नहीं आया। कितनों का काम हर्जा हुआ होगा। आखिर, किसी तरह १० वजे रिक्शा किया और वाली व्रिज आया। वहाँ से टैक्सी लेकर ऑफिस, फिर ४ वजे घर आया। डॉक्टर के गया। दाँतों का माप दिया। नेपाल यात्रा अच्छी रही। ५ वजे मारवाड़ी सम्मेलन की मीटिंग में गया था, कुछ वोला भी। अव मैं महसूस करता हूँ कि अपने समाज को भारत के वाहर सम्पर्क वढ़ाना चाहिए। टेकनिकल लाइन भी पकड़नी चाहिए' सिंधी, पंजावी तो विदेशों में काफी तादाद में वस गए, अव भी वस रहे हैं।

६ अगस्त : दाँत के गुम जाने से काफी तकलीफ है। दलिया खानी पड़ रही है। वूढ़ा सा लगता हूँ। लड़के हँसी करते हैं। मुँह वना देता हूँ, वे खुश हो जाते हैं। विचार आते हैं, समय से पहले ही शायद वुढ़ापा आने लगा। जीवन में मन और शरीर पर कितनी चोटें चुपचाप वर्दाश्त करनी पड़ीं, आज भी कर रहा हूँ। इन सव का असर तो पड़ना ही था। इन दिनों फिर लिखना पढ़ना छूट-सा गया। लेख तैयार नहीं कर सका।

७ अगस्त : सुवह विक्टोरिया गया, वहाँ से पुरुषोत्तमजी के घर। ताश खेला, समय फजूल गया परंतु लेख नहीं लिख सका। मन में चिंता तो है ही। रात में मदन का फोन



कानपुर नगर महापालिका के मेयर पद का शपथ ग्रहण करते हुए



अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूना अधिवेशन में श्री गजाधर सोमानी तथा श्री ओंकारलाल बोहरा के साथ

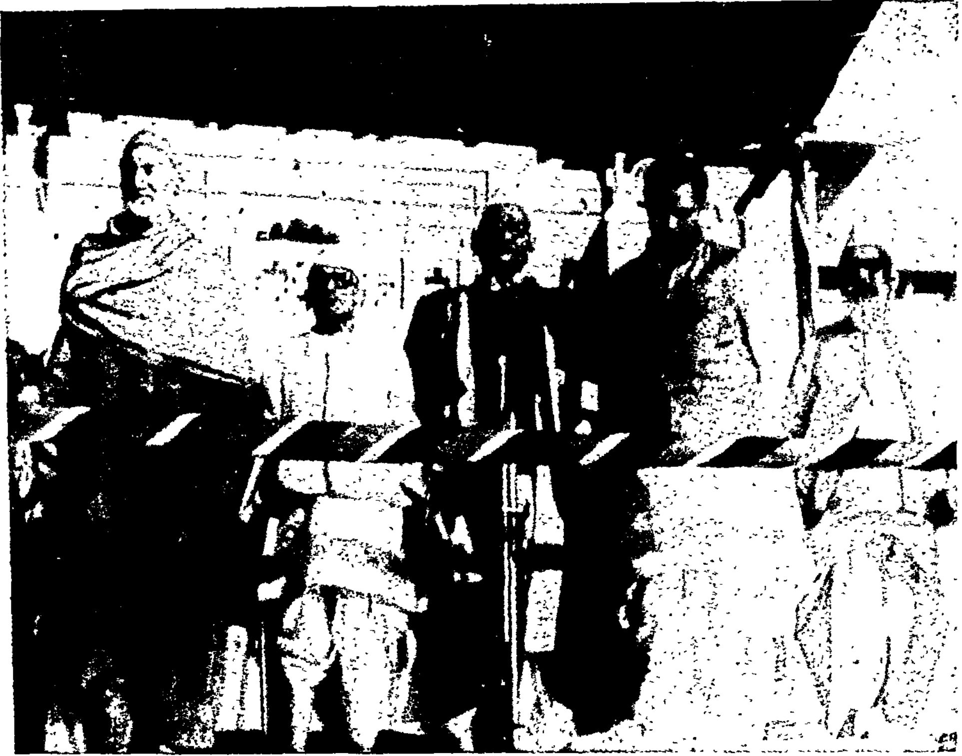
कानपुर नगर महापालिका के महापौर श्री रामेश्वर टांटिया
द्वारा स्वागत तथा अभिनन्दन



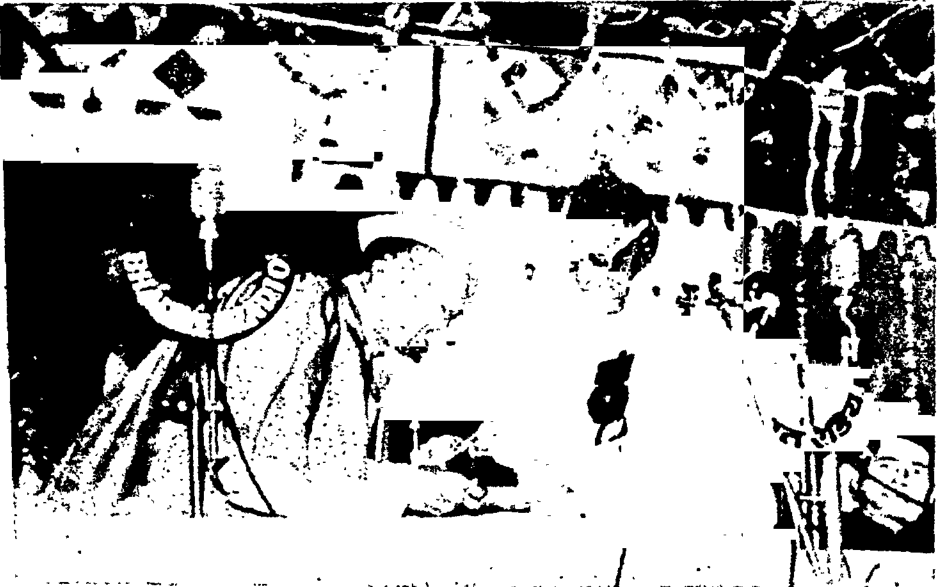
श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'



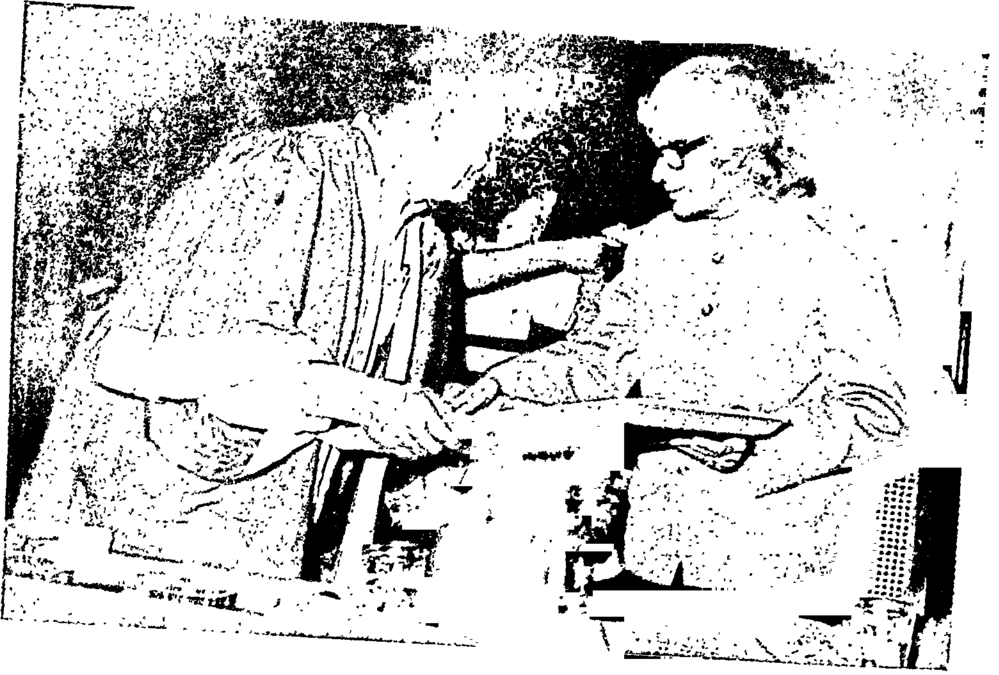
भारतरत्न श्री चन्द्रशेखर वेंकटरमण



स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी सीमान्त गांधी खान अब्दुल गफ़्फ़ार खान



राष्ट्रपति श्री वेंकट वाराह गिरि



श्री सुमित्रानन्दन पंत



श्रीमती महादेवी वर्मा



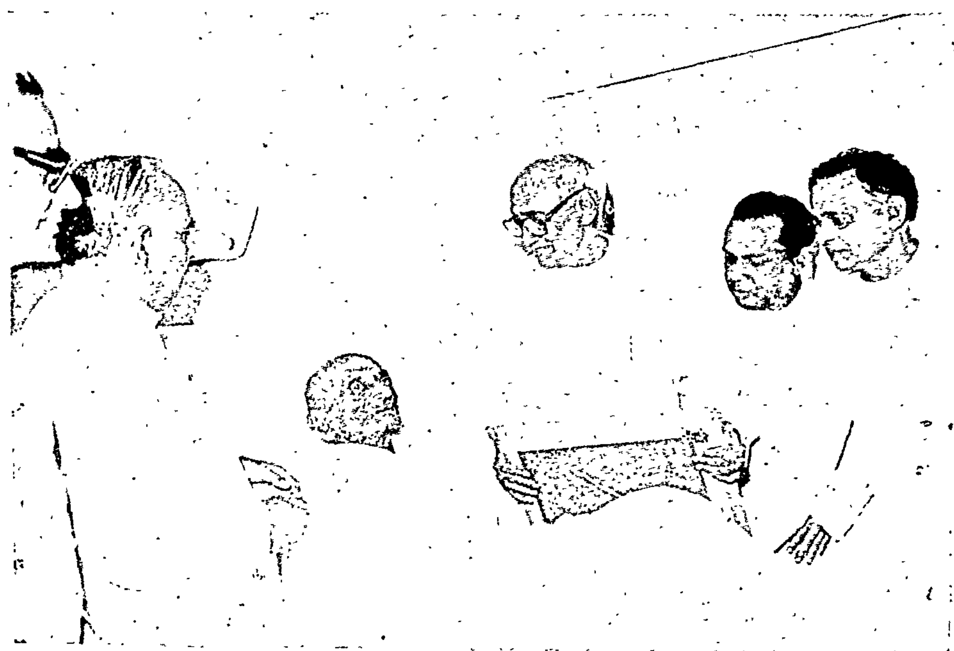
ठलुआक्लब, वाराणसी द्वारा रामेश्वर जी टाँटिया को वही में
अभिनंदन पत्र प्रस्तुत करते हुए डा० भानुशंकर मेहता



श्री रामेश्वर जी का श्री मुरारीलाल केडिया द्वारा अभिनन्दन, मंच पर
पं० सीताराम चतुर्वेदी तथा श्री पुरुषोत्तमदास मोदी (संयोजक)



ज्ञान भारती विद्यापीठ कलकत्ता द्वारा श्री रामेश्वर जी
का अभिनन्दन एवं स्वास्थ्यलाभ हेतु प्रार्थना।



जसलोक अस्पताल बम्बई में टांटियाँ जी को अभिनन्दन पत्र समर्पित करते
हुए सर्वश्री भागीरथ कानोड़िया, नथमल केडिया, पुरुषोत्तम
केजड़ीवाल, भंवरलाल दवे तथा गंगाशरण सिंह।

Friday 1 January 1932

১ জানুয়ারী—১৬ পৌষ শুক্রবার ১৩৩৮—অষ্টমী সন্ধ্যা ঘ ৫ ৫৯

ফসলী—৮ পৌষ, ১৩৩৯ ۲۱ شعبان جمعہ ۱۳۵۰

সম্বত—৮ পৌষ (বদী)-শুক্রবার, ১৯৮৮

"New Year's Day"

[illegible]

Saturday 2 January 1932

২ জানুয়ারী—১৭ পৌষ শনিবার ১৩৩৮—নবমী ঘ ৩-৩৮

ফসলী—৯ পৌষ, ১৩৩৯ ۲۲ شعبان شنبہ ۱۳۵۰

সম্বত—৯ পৌষ (বদী)-শনিবার, ১৯৮৮

[illegible]

1—F.

दो दिन की डायरी

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अंतिम दिनों की डायरी का एक पृष्ठ

बंबई से आया, भगवती के लड़की हो गयी है। सीताराम मिल कुछ ठीक चलभी शुरू हुई है।

८ अगस्त : नेपाल का लेख शुरू कर दिया है। गर्ग का कहना है, अफगानिस्तान और भूटान की यात्रा मुझे करनी चाहिए। सुझाव तो ठीक है परंतु अब शायद संभव नहीं होगा। समय नहीं है, समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। फिर भी चेष्टा करूँगा कि इंडोनेशिया से फिलीपाइन्स तक की यात्रा कर वृहत्तर भारत के दर्शन कर लूँ। परमात्मा की इच्छा।

९ अगस्त : दिन में ऑफिस था। कारखाने बंद थे। शाम को हिंदुस्तान के संवाददाता के साथ कॉफी हाउस गया। वहाँ से मीटिंग में गया। नाथ पै एम० पी० ने भाषण दिया, बहुत अच्छा, साम्यवादियों के विरुद्ध। मेरे मन में विचार आए, आज वही दिन है जब ४२ में भारत छोड़ो आंदोलन सारे देश ने चलाया परंतु साम्यवादियों ने अंग्रेजों का साथ दिया। आज भी उनकी सारी कोशिशें देश के खिलाफ ही रहती हैं। समझ में नहीं आता कि उनके सिद्धांत क्या हैं।

१० अगस्त : सुबह मैदान से गर्ग के पास गया। नेपाल का लेख उसे दिखाया, ब्रिटेन के लेख पर बातचीत की। सिलिगुड़ी यात्रा के सिलसिले में एक लेख तैयार कर अखबारों में भेजा। ब्रिटेन का लेख पूरा किया। गर्ग से पिंजरापोल छोड़ने को कहा, उसे काम मैं दे दूँगा।

कलकत्ता

१८ अगस्त : सुबह मालूम पड़ा कि नन्दू और बिरजू में मतभेद हो गया। मन खिन्न हो गया। क्या करूँ, समझ में नहीं आता। नन्दू को सलाह दी है दूसरा काम देखने की। विराट नगर के काम का प्रयत्न कर रहा हूँ।

२१ अगस्त : सुबह लेक घूमने गया, फिर पी० डी० के घर और पोद्दारजी के। वहाँ से लक्ष्मी झुनझुनवाला के रोलैंड रोड में। नेपाल के काम के बारे में बात की। यह काम नन्दू के लिए जँचा दूँ तो मन का बोझ हल्का हो। १० बजे घर आया। भरतिया के कारखाने में नन्दू नहीं जाता है, बी० एल० टी० से बोलचाल हो गयी है। मन में मेरे भी उदासी सी रहती है। क्या सोचता था, क्या हो रहा है। किससे कहूँ? समय ही बदल गया है।

२४ अगस्त : सुबह से ही हड़ताल। बंगाली इसे 'घर्मघट' कहते हैं। पता नहीं, कौन से घर्म का घड़ा है। ट्रामें-बसें सब बंद हैं। कलकत्ते की हालत खराब हो रही है। मजदूर काम नहीं करते। बसंती के तकलीफ हो रही है, मन में परेशानी है।

२५ अगस्त : हिंदुस्तान में 'यह कलकत्ता है' छपा है। लोगों को पसंद आया। नन्दू की तरफ से चिंता हो रही है। भरतिया में बहुत ही लॉस हो रहा है। तीन महीनों में नौ लाख के लगभग लग गए।

२९ अगस्त : सुबह बाजार गया। हुलास चंद गोलछा के यहाँ ठाकुर जी के साथ कॉफी पी। ११॥ बजे लोग मिलने आए। पशुपति गिरि भी आये। प्लेन से २॥ बजे पटना पुगा। ब्लेड बीस पैकेट लिए थे। सीमा पर झूठ बोला। गलती की। नहीं करनी चाहिए थी परंतु मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी है लोभ, वह सब कुछ करा देती है। मन में पछतावा हुआ कि झूठ बोल कर २०)रु० का बचाव किया। यदि कस्टम वाला देख लेता तो इज्जत जाने का डर था।

कलकत्ता

२ सितम्बर : रात में मदन का फोन था। मिल की हालत ज्यादा अच्छी नहीं है। कपड़ा नहीं बिक रहा है। आगे जाकर शायद अच्छी होगी, ऐसी धारण है। भरतिया में काफी तकलीफ है, आर्डर भी कम है और काम भी कम। पढ़ने-लिखने से मन कुछ देर चिंताओं से हटा रहता है। लेख लिखने से थोड़ा संतोष मिलता है। दिन में दस-बारह पत्र लिखे। राजनीतिक जीवन तो एक प्रकार समाप्त सा होता जा रहा है। ज्ञानभारती स्कूल कई दिनों से बंद है।

५ सितम्बर : स्कॉटलैंड का लेख भेज दिया है। सरिता में 'ताशकंद' आया है। अब छः लेख उनके पास और हैं। बी० के० गर्ग के यहाँ गया था। बातचीत की। लिखने पर जोर देता है, पर संस्मरण क्या लिखूं, कब लिखूं? यात्रा लेख के नोट्स् तो पहले से तैयार थे। परंतु संस्मरण के लायक नोट्स् नहीं हैं और चिंता भी दिमाग में है। एक सज्जन मदद माँगने आए थे। उन्हें २००) रु० किताबें वेचने को दीं कमीशन पर।

१० सितम्बर : २॥ बजे यू० एस० आई० एस० लाइब्रेरी में बैठकर नारवे पर कुछ लिखा। दिन में सी० एल० बाजोरिया का फोन आया। बी० आइ० सी० वाला काम अभी हुआ नहीं। बिरेन मुखर्जी की स्पीच बहुत अच्छी थी। बंगाल में अराजकता के बारे में मैंने उन्हें लिखा है।

१२ सितम्बर : वर्षा थी इसलिए सुबह घूमने नहीं गया। भाई जी दो तीन दिन बाद जायेंगे। दिन में थोड़ी देर के लिए नेशनल लाइब्रेरी गया था। वहाँ से ऑफिस। नारवे का लेख तैयार कर लिया है। चीन ने सिक्किम की सीमा पर हमले शुरू कर दिए। इससे शेयर बाजार मंदा हुआ है। इसी तरह चीन धीरे-धीरे मैकमोहन लाइन के इस पार आ ही जायगा। शायद कश्मीर की तरह हमारी स्थिति बन जायगी।

१३ सितम्बर : सुबह बिरला जी के गया, फिर लेक। वहाँ से गर्ग के कॉफी पी, बातचीत की। गर्ग कुछ परेशान सा था, पिंजरापोल के बारे में। दलबन्दी और रुपयों की टान बताता था। कहता था, काफी मुकदमें खराब हो जायेंगे, अधिकारी लोग देखते नहीं। मैंने कहा, झमेले की जगह में काम कर के समय खराब करना ठीक नहीं। शायद उसके जँची है परंतु भावुक है। ३ बजे मारवाड़ी सम्मेलन के काम से के० एल० ढांढनिया के

गया। ४ वजे ऑफिस गया। वंगाल में लेवर ट्रवल वढ़ रहा है, कारखाने वंद हो रहे हैं, कुछ भी स्टेविलिटी नहीं है।

२१ सितम्बर : 'विश्वमित्र' में मारवाड़ी समाज के वारे में लेख भेजा। कई पत्र लिखे। मातृका वावू आए हुए हैं। काफी वातचीत हुई। राजनीति का रूप सव जगह एक सा ही है। आजकल ऐसी भावना राजनीति में है कि देश से दल वड़ा है और दल से व्यक्ति; और सव से वड़ा है स्वार्थ, चाहे नाम का हो, दाम या काम का। 'सरिता' में टर्की पर मेरा लेख आया है।

२२ सितम्बर : जुकाम जोरों से है। ४ वजे संमेलन की मीटिंग में गया। ६ वजे नंदा जी को पार्टी दी थी, वंगाल रोइंग क्लव में, वहाँ था।

२३ सितम्बर : कपलर इस महीने में ३०० चले गए, १०० और चले जायेंगे। घाटा कम लगेगा। कपड़ा वंवई में 'कोहीनूर' ने नीचा वेच दिया। १३% घटा कर। दूसरी मिलें भी वेचने वाली हैं। हमारी मिल में भी वनता है। सुवह स्कूल में गया। काफी झगड़ा-झंझट है—मास्टर प्रिंसिपल को नहीं चाहते हैं। लड़कों से वात की, मास्टरों से वात की। ३ वजे एस० पी० जैन के यहाँ स्कूल की मीटिंग हुई।

२४ सितम्बर : सुवह ताश खेला, हारा। ११वजे घर आ गया, १२ वजे मातृका वावू के साथ नेशनल लाइब्रेरी गया, २॥वजे तक था। फिर खादी भंडार में नवलकिशोर शर्मा के निधन पर मीटिंग थी, उसमें गया, सभापति था। प्रायः साठ-सत्तर व्यक्ति आए थे। ४॥ वजे एस० एम० वनर्जी से, सिन्हा से मिला, वी० आइ० सी० के लिए। जर्मनी के वारे में थोड़ा सा लिख सका।

२६ सितम्बर : भरतिया के मजदूर आज दिन में ऑफिस आए। उनसे वोनस तय हो गया है, मन से एक प्रकार की चिंता मिटी। वंगाल की हालत रोज विगड़ती जा रही है।

३० सितम्बर : सुवह मैदान से वसंती के घर गया। देखा, उदासी-सी छा रही है। सुस्त चेहरे। वसंती के लड़की हो गयी थी। मैंने भी कुछ उदासी सी महसूस की। दो लड़कियाँ पहले थीं। प० वंगाल की गवर्मेंट शायद २ ता० को वदल जायगी। ऐसी चर्चा है।

वम्वई

९ अक्तूवर : भाई जी, मदन ने मिल की हालत कुछ ठीक वतायी परंतु रुपयों की टान है। डॉ० लोहिया ज्यादा वीमार हैं, मैं यहाँ से दिल्ली जाऊँगा।

११ अक्तूवर : वंवई में अपनी मिल की हालत ज्यादा खराव है। ग्यारह खराव मिलों में तीन वंद हो चुकी हैं। शेष आठ में अपनी सीताराम मिल है। स्टॉक वहुत ज्यादा हो

गया है। एक तरफ स्टॉक भरा पड़ा है, दूसरी तरफ रुपयों की टान। लॉस तो है ही, मन में चिंता कैसे नहीं हो?

१२ अक्तूबर : सुबह मेरिन ड्राइव पर घूमने गया। लोगों से मिला; बातचीत हुई। सब कहते हैं कि एक महीने बाद कपड़ों की अच्छी बिक्री होगी। मिलें कमायेंगी। यह तो एक महीने बाद की बात है, सो भी अनुमान है। अभी तो कुछ भी नहीं है, घाटा ही लगता जा रहा है। यह कोई ढंग का धंधा नहीं। यही हालत रही तो मिल में लगे रुपये सब घाटे में लग जायेंगे।

१३ अक्तूबर : आज मिलें बंद हैं। ओंकार जी और दिनकर जी आए हुए हैं। रात में बिरजू को फोन किया, रुपयों के लिए। पाँच-सात लाख रुपयों की कमी है। मिल शायद पिछले तीन महीनों में बराबर में चलती है। परंतु इससे काम नहीं चलने का। कपड़ों का स्टॉक बहुत है। बाजार मंदा होने पर नीचे भाव में निकालना पड़ सकता है। इधर ब्याज बहुत ज्यादा लग जाता है।

१४ अक्तूबर : मन बहुत उदास सा था। ४ बजे भागीरथ जी कानोड़िया के गया। दो घंटे था। फिर जगन्नाथ जी अग्रवाल के गया। मन में इन सात दिनों से काफी चिंता है। ऐसा लगता है, कि क्यों इतना झंझट थोड़े से जीवन के लिए किया जाय। कर्ज तो है ही परंतु अगर कपड़ा ही नहीं उठा तो फिर इज्जत जाने का डर भी है। नींद में भी स्वप्न आते रहते हैं।

१७ अक्तूबर : सुबह सी० डी० पांडेय के घर गया। जमीन का काम शायद नहीं पटेगा। चिंता हुई, मिल में गया। आज जो हालत है उसमें या तो मिल बिक जाय या कुछ कमाने लगे तभी चिंता मिटेगी। भगवती भी काफी परेशान है। मनुष्य को नाना प्रकार की चिंताएँ खत्म कर देती हैं, समय से पहले।

नयी दिल्ली

१९ अक्तूबर : सुबह ५॥ बजे उठा। जी० डी० बिरला के साथ आधा घंटा घूमा। फिर गंगा बाबू के और रामसुभग सिंह के गया। गंगाबाबू इस बार बीमार हैं। ९ बजे पी० डी० कलकत्ते से आए। दिन में दत्ता या फखरुद्दीन से टाइम नहीं हुआ। दिन में पार्लियामेंट के सेंट्रल हॉल में तीन घंटे था। एस० एन० मिश्र तथा दूसरे लोग मिले। रात में एस० एन० को कलकत्ते फोन किया।

२० अक्तूबर : सुबह ५। बजे उठा, पी० डी० के साथ बिरला हाउस गया। ८ बजे त्यागी जी के घर। उन्होंने अच्छा सजा लिया है। ९॥ बजे मुरार जी के गया। मातादीन खेतान आ गए हैं। १० बजे फखरुद्दीन जी से बात की, कुछ नाराज से हैं। १२ बजे दत्त (कम्पनी लॉ) के यहाँ। वह थे नहीं, वहाँ से राजपाल, आत्माराम के गए। २॥ बजे फिर मुरार जी के। पी० डी० के साथ काफी बात हुई।

२१ अक्तूबर : सुबह ४॥ बजे उठा। थोड़ी देर घूमा। प्रभुदयाल जी सुबह के प्लेन से चले गए हैं उन्हें छोड़ने गया था। फिर मनु भाई और गंगाबाबू के पास गया। १० बजे बी० एल० बाजोरिया, बी० पी० बाजोरिया आए। उनके साथ अशोक होटेल गया। वहाँ से १ बजे आकर घर पर भोजन किया। फिर पार्लियामेंट गया। दिन में रतनलाल जोशी और सरिता के विश्वनाथ जी से मिला। ५ बजे एयर पोर्ट गया। इंदिरा जी आयीं। काफी आदमी एयरपोर्ट पर गए थे। बहुतों से भेंट हुई, बातचीत भी। ९ बजे भवन, फखरुद्दीन के पी० ए० के गया। फिर १० बजे से ११ बजे तक गंगाबाबू के गया था।

२२ अक्तूबर : सुबह ६ बजे उठा। मुरारजी भाई को सी ऑफ० करने स्टेशन गया। और भी बहुत लोग थे, बात नहीं हुई। २४ को आयेंगे। बी० पी० बाजोरिया वहीं मिल गए। उनके साथ घर आया। फिर एक फोन ग्वाबर किया। मिल ठीक चल रही है। कलकत्ता, बंबई का फोन मिला नहीं। बाजार से कुछ सामान खरीदे। पेशाब की तकलीफ चल रही थी, सलाई ली, दर्द नहीं हुआ। त्यागी जी आए। बिजली का कुछ सामान ले गए। शाम को ३ बजे के बाद घर में रहा। थोड़ा बुखार सा हो आया है। बंबई और कलकत्ते से बात हुई। कलकत्ते में काफी ठीक है, बंबई में अभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। रुपयों का भुगतान हो गया है।

२३ अक्तूबर : सुबह ६। बजे उठा। बुखार उतर गया है। ८ बजे त्यागी जी के गया। फिर मुरार जी भाई से मिला, फखरुद्दीन से भी। दिनेश सिंह के घर गया था, पौन घंटे रहा, काफी बातचीत हुई। शायद काम हो जायगा। काफी मेहनत करनी पड़ी। रात में बाजोरिया आए, वे भी काफी चिंतित हैं।

कलकत्ता

२७ अक्तूबर : नोपानी जी के गया। उनके रुपए कुछ तो सौदे में लग गए कुछ कारखाने में। चिंतित थे। चिंता मुझे भी है, काफी परेशानी। दिन में ऑफिस में था। बिरजू से बात की। भरतिया में काफी टान है। घाटा तो है ही। ऐसा लगता है, कारखाना सँभल नहीं पायगा। शेयरों का बाजार तेज है। घाटा लग गया है। ७६०० शेयर मत्थे हैं।

२८ अक्तूबर : १२ बजे ऑफिस आया। भाई जी को पत्र लिखा। पुष्पा आया, चाय बगीचा बेचने की मनाही की।

३० अक्तूबर : सुबह विक्टोरिया गया था। दिन में ऑफिस में कुछ काम-काज देखता रहा। रुपयों की व्यवस्था नहीं हो पा रही है। रात में ९॥ बजे बद्रीबाबू के साथ कवि-सम्मेलन में गया। उर्दू की कविताएँ सुनी। रात २ बजे तक था। अच्छा प्रोग्राम रहा। ऐसा लगता है कि उर्दू के कवि पुरानी लीक को छोड़ने लगे हैं। नये कवियों की भाषा भी अब पहले जैसी कठिन नहीं रही, समझ में आ जाती है। जब तक मुशायरे में था, चिंता नहीं थी. बाहर निकलते ही फिर दिमाग में बातें आ गयीं।

३१ अक्तूबर : सुबह कहीं नहीं गया। रात देर से सोया था, ७ वजे उठा। ८ वजे सी० एल० वाजोरिया और वी० पी० वाजोरिया आये थे। दिल्ली एक वार जाना होगा। वी० आइ० सी० के काम की चेष्टा तो पूरी तौर पर हो रही है, होगा या नहीं, कौन जाने। दिन में १२ वजे ऑफिस गया। भरतिया में सितंबर में दो लाख का लॉस रहा सुन कर मन खराव हो गया। दिन में ओंकार जी वोहरा आए। डेडराज जी मर्दा का लड़का वीमार है। शाम को उसे देखने अस्पताल गया। एक महीने से लिखने का काम वंद है। एक प्रकार से मन ही नहीं होता है। रुपयों की टान है।

१ नवम्बर : सुवह उठा, लाला जी के साथ लेक गया। वहाँ से पी० डी० हिम्मतसिंहका, घनश्यामदास जी, प्रभुदयाल जी मोरुका तथा नंदलाल जी भरतिया के गया। १२६००) रु० चंदे के हुए। १० वजे नोपानीजी के गया, उनके रुपयों की कोई व्यवस्था नहीं कर पाया मन में चिंता तो है ही। विरजू, नन्दू से वात हुई। भरतिया में रुपयों की वहुत टान है। जुलाई-अक्टूवर तक ४ महीने में शायद छः लाख का नेट घाटा रहा है। पिछले ६ महीने में तीन लाख का नफा था। इस वर्ष डेप्रिशियेशन नहीं निकलेगा, ऐसी धारणा है। गंगा वावू आए हैं वंवई से। उनके साथ ६ वजे भागीरथ जी के गया। ६॥। वजे दीपावली का पूजन किया। मन में भारीपन महसूस करता रहा। पता नहीं क्यों ? रोना सा आता है। परमात्मा अव से वर्ष शुभ करेगा, ऐसी पक्की आशा है। आज शायद झूठ नहीं वोला, ऐसा लगता है।

२९ नवम्वर : सुवह ५॥ वजे कार से निकला। गाड़ी धीरजमल जी के घर छोड़ी, विक्टोरिया गया। कुछ लोग आए थे। पुरुषोत्तम जी के गया, दिन में खाना नहीं खाया। हड़ताल है, गाड़ियाँ नहीं चल रही थीं। पैदल गर्ग के घर गया। वहुत सी वातें हुईं। रात में पांचेलालजी के साथ पुरुषोत्तमजी के घर गया। खाना खाकर रात में वहीं रहा। हड़ताल एक प्रकार से आज सफल रही।

२ दिसम्वर : एस० एन० टी० आ गया। दिल्ली की खास वात नहीं वता रहा था। तीन घंटे अमेरिकन लाइब्रेरी में वैठा पढ़ता रहा। एक लेख लिखा। जर्मनी वाला फेयर करने को दिया। वुधमल जी शामसुखा के घर गया था। १००) रु० राजस्थान के एक रावल को उधार दिए।

१६ दिसम्वर : तीन लेख अधूरे पड़े हैं। दो लेख और भी सामयिक विषय पर तैयार कर रखे हैं। लेख पूरे नहीं कर पा रहा हूँ। मन की अवस्था चंचल है। टाइपिस्ट छुट्टी पर है, यह भी एक समस्या है। दिन में ऑफिस से आकर अमेरिकन लाइब्रेरी गया। वहाँ कुछ लिखा। महावीर के वगीचे के सलटने की वात हो रही है।

१७ दिसम्वर : सुवह रघुनाथ जी खेतान के घर पर था। वहाँ नाश्ता करके ११ वजे से ५ वजे तक नेशनल लाइब्रेरी में गया। तीनों अधूरे लेख पूरे किए, मन में संतोष हुआ।

फिर पी-डी हिम्मतसिंहका जी के गया, दिग्विजय जी के गया। आज मारवाड़ी संमेलन की मीटिंग थी, उसमें नहीं जा सका।

१८ दिसम्बर : सुबह डी० एन० सिंह के साथ एयरपोर्ट पर गया। मुरार जी भाई से मिलना नहीं हुआ। दिन में वी० पी० वाजोरिया के साथ राजभवन में मिला। बंगाल में वहुत उलट-फेर का वातावरण वनता जा रहा है। गंगाधर प्रमाणिक लेवर मिनिस्टर से जान-पहचान हुई।

१९ दिसम्बर : फखरुद्दीन जी से वात की, वी० आई० सी० के वारे में। खास इंप्रूवमेंट नहीं लगा। मदन का पत्र आया कुछ उत्साहवर्धक था। भरतिया का काम भी ठीक है। शायद ६८ का वर्ष ठीक रहेगा।

२७ दिसम्बर : महावीर ने वगीचा वेच दिया। १ वजे नोपानी जी के घर गया था, काम सलट गया, अच्छा हुआ। शाम को थोड़ी देर लेक पर भी गया था। फिर भागीरथ जी के गया। स्कूल की मीटिंग में भी गया था।

२९ दिसम्बर : सुबह मैदान गया। वहाँ से मातादीन के घर। ज्ञानभारती में झंझट काफी है। १० वजे से ११ वजे तक मास्टरों को लेकर नथमलजी के आया। सरिता के मेरे लन्दन वाले लेख को लेकर काफी चर्चा है। मेरा उद्देश्य विरलाजी को नीचा दिखाने का नहीं था। फिर भी, नाम नहीं देता तो अच्छा रहता। यह गलती तो हो ही गयी। मन में पछतावा सा रहा। आगे से सावधान रहूँगा। भरतिया के शेयरों के भाव ६ के हो गए हैं। शायद और नहीं घटेंगे।

सन् १९६८ ई० की डायरी नहीं मिली।

१९६९

कानपुर-दिल्ली

१ जनवरी : लोग मिलने वाले आते रहे। एलगिन मिल्स गया, कुछ जरूरी हिदायतें दी। सुबह ज्योति चांडक तथा अन्य जो नये लड़के काम कर रहे हैं, उनके पास गया। कमरों में फर्नीचर बिल्कुल नहीं है, और भी दिक्कतें हैं। परंतु मन लगा कर काम सीख रहे हैं। फिर मिल में आकर कामकाज देखा। प्लेन से दिल्ली १।। बजे पुगा। काफी समस्याएँ हैं। २२ जनपथ आया। भीड़ सी थी। शाम तक पार्लियामेंट लाइब्रेरी में था। कुछ किताबें देखीं, वहाँ से इन्फार्मेशन भी इकट्ठा किए। घर आ गया। सहगल मेरे साथ थे। अगर कूपर एलेन बिक जाती है तो जान बच जाती है।

नयी दिल्ली

२ जनवरी : कुछ ताकत आयी है, महसूस करता हूँ। नमक का खाना खाने लग गया हूँ। ब्लड प्रेशर टेस्ट कराया १७४-१०० है। दिन में पार्लियामेंट नहीं जा सका। राजपाल से कुछ किताबें खरीद लाया। ३ बजे से ५ बजे तक बी० आइ० सी० की मीटिंग थी। शायद काम पार नहीं पड़ेगा। वे लोग मजदूरों के लिए जो शर्त रख रहे हैं, वह मंजूर नहीं हो पायंगी। शाम को पी० डी० चले गए। बी० पी० बाजोरिया वगैरह भी निराश से थे। मुझे लगता है, यह कूपर एलेन सारी बी० आइ० सी० संस्था को खा जायगी।

३ जनवरी : केवल मनुभाई और बिलग्रामी से मिलने गया था। जगजीवन बाबू और भगत से मिल नहीं सका। इस बार दिल्ली में काफी भीड़ है, घर पर। बी० आइ० सी० के बारे में मुझे फिर लग रहा है कि इसका भाग्य ही खराब है। शेष में लॉस होगा। के० बी० लाल और बांचू के सेक्रेटरी को फोन किया। दिन में सहगल, पी० सी० जैन और मूर्ति आए थे। एक घंटा थे। कानपुर को तीन-चार फोन किए, कुछ हिदायतें दीं। बिलग्रामी से मिला। कूपर एलेन एक प्रकार से सरकार में लिया है, ऐसा लगता है। खाने-पीने का यहाँ आराम है, कमरा भी गर्म है। थोड़ी देर बैठ कर लेख पूरे किए।

बम्बई

५ जनवरी : बम्बई में ठंढ काफी कम है। ८॥ बजे मदन आया, फिर शाम को भी आया। भाई जी मशीन बेचने को राजी नहीं हैं। वेस्ट और म्युनिसिपलिटी शायद जमीन ले लेगी। यहाँ लिखने-पढ़ने का काम बिल्कुल नहीं हो पाता है। रात में देर तक भाई जी के पास बैठा रहा। वैसे स्वास्थ्य अच्छा है। वापिस जाने का मन है।

६ जनवरी : कपड़े का बाजार थोड़ा मंदा है। मदन के काम से भाई जी बहुत नाराज हैं, बिना वजह गुस्सा होते रहते हैं, आदमियों पर भी। मन में कैसा ही लगता है। बैंक को जगह देने की जँच गयी है। गोदाम भाड़ा देने की भी जँच गयी है। मशीनें हटाने की अभी नहीं जँची है, शायद जँच जायगी। कानपुर तायल को रात में फोन किया। कलकत्ता से फोन पर विशु से मालूम हुआ कि मरतिया में कुछ रुपयों की व्यवस्था हुई है। लुंकवा के रुपए सरकार को देने पड़े। मिल में कपड़े का स्टाक बहुत ज्यादा है, माल कम बनता है। मिल अगले वर्ष अच्छी चलेगी, ऐसा जँचता है।

७ जनवरी : धर्मदेव के पास टेक्सटाइल कमिश्नर के ऑफिस में गया। मि० दीक्षित वहीं थे, काफी बातचीत हुई। बी० आइ० सी० के शेयरों का भाव ५॥) रु० है, २) रु० बढ़ गए। पूरणमल जी बूबना के पास गया। उनको एलिगन की, बंबई के लिए एजेन्सी देने की बात की है। मैं परसों कानपुर जा रहा हूँ। आर० पी० पोद्दार से मिला। एन० एम० सी० वालों ने अपने कोटेशन दिए।

बम्बई-दिल्ली

८ जनवरी : सुबह ६॥ बजे तुलसी तालाब घूमने गया। वहाँ जयंत शाह (मुकुन्द) मिले। उनका कारखाना १९६४ से कुछ ठीक चला है। अखबार में देखे, शेयर के भाव, गरम हैं। हमें शायद ५००००) रु० का लॉस लग गया है। ९ बजे मिल गया। वहाँ से ११ बजे टेक्सटाइल कमिश्नर के पास गया। किताबें दे कर आया। रुई का बाजार तेज है। भाईजी ने बहुत सी बातें मान ली हैं। मिल अब शायद ठीक चलेगी।

कलकत्ता

२३ जनवरी : ब्लड प्रेशर जाँच कराया, १३०-१४० है। एक टिकिया सर्पासिल की रात में ली। सिर भारी रहता है। सुखाड़िया जी आज आए, उनसे मिला। दिन में ऑफिस बंद थी, सुभाष बाबू का जन्मदिन है। उनकी स्मृति में छुट्टी हो जाती है, बस इतना ही सम्मान उन्हें मिलता जा रहा है। शायद कुछ वर्षों बाद यह भी न हो। राजनीति अकृतज्ञ होती है। दिन में कुछ काम करता रहा। स्मृति में कुछ कमजोरी होती जा रही है, मन में भी कमजोरी सी महसूस हो रही है। कानपुर का इन दिनों में समाचार नहीं है। देवकी सराफ आया, कानपुर का कुछ काम करना चाहता है।

२४ जनवरी : सुबह जी० डी० के साथ घूमने गया। वहाँ से भागीरथ जी के साथ सुखाड़िया जी के पास शान्ति प्रसाद जी के गया। फिर रिलीफ सोसाइटी और नन्दू सुरेका के घर गया। वहाँ लखीसराय वाली लड़की आयी है। गरीब लड़की है, पति ने छोड़ दिया है। डेढ़ वर्ष का एक बच्चा भी है। समस्या तो है ही। झूठे इलजाम भी लगाए हैं। इसी ढंग की समस्या को सुलझाने की जिम्मेदारी समाज पर है। बच्चा नहीं रहता तो दूसरा विवाह किसी तरह हो जाता परंतु अब तो कठिनाई होगी।

२५ जनवरी : न जाने क्यों बहुत अकेला महसूस कर रहा हूँ। एक बार मन में रोना-सा आया। पिछली बातें याद आने लगी। किसी दिन सरदार शहर से घुबड़ी के लिए रवाना हुआ था। बहुत समस्याएँ थी। हमने मिल कर काम किया, आगे बढ़ते गए। आज हम सम्पन्न हैं। परंतु न पहले वाली शांति है, न वह बात है। पता नहीं गरीबी के वे दिन अच्छे थे या अमीरी के ये दिन।

२६ जनवरी : आज ६० वाँ वर्ष दिन है। झूठ न बोलने की प्रतिज्ञा की। सुबह बड़ाबाजार व्यायामशाला गया। झंडोत्तोलन करके थोड़ा-सा बोला। वहाँ से ८॥ बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय गया, झंडोत्तलन किया, छोटा सा भाषण भी दिया। सदासुख कटरा में प्रधान अतिथि था, यहाँ भी कुछ बोला। और भी दो-तीन जगह गया, बोलना पड़ा। शाम को के० पी० गोयनका के गया। आधा घंटा था, उन्हें 'पद्म-विभूषण' मिली है। बी० पी० गोयनका से बात की। भाई जी से फोन पर बात हुई, मिल ठीक चल रही है।

२७ जनवरी : जी० डी० ने परसों एक पत्र के साथ कपड़ा भेजा था। बहुत अच्छा पत्र लिखा था, कपड़ा भी अच्छा था। राजू को दे दिया है। सुबह मातादीन जी खेतान के साथ पी० सी० सेन के गया, २०००) रु० दिए, एक जीप का कहा है। वहाँ से बी० एस० नाहर के पास गया, १०००) रु० दिए एक कार का कहा है। ८॥। बजे श्रीमती रेणु चक्रवर्ती के यहाँ गया, एक घंटा था। उन्हें भी कांग्रेस जीतती सी लगती है। बंगाल की हालत अच्छी नहीं रहेगी। दिन में एक कहानी 'हजारी दरोगा' टाइप करने को दिया। दूसरा लेख भी टाइप हो गया है। रात में बंगाल के चुनाव पर लेख तैयार किया। शायद अच्छा बन पड़ा है। बिरजू मिलने आया, कारखाना अभी तो ठीक चल रहा है।

२८ जनवरी : शादियाँ थी, कई जगह गया। शेयर बाजार दो दिनों से बहुत तेज है। हमें ७५,०००) रु० का घाटा लग रहा है। मन में थोड़ी चिंता हुई। मदन से बंबई फोन पर बात हुई, बोला कि मिल ठीक चल रही है, कुछ नफा रहेगा, फरवरी में कपड़े का स्टॉक कम होगा। बी० एल० जालान के यहाँ शादी में गया। काफी लोग आए थे। २२ वर्ष पहले इनके यहाँ एक शादी में गया था, उस समय में ये लोग एक में थे, आज वह बात नहीं है।

पटना-मरहौरा

२९ जनवरी : सुबह ६ वजे पटना पूगा। राजस्थान होटेल आया। साधारणतया अच्छा होटेल है। रामकिशन चौधरी भी आ गए। ११ वजे स्टीमर से, महेंद्रू घाट से पहलेजा घाट उतरे। कार से मरहौरा ३ वजे पूगे। वहीं खाना खाया। रात में बी० पी० यादव भूतपूर्व एम० पी० और राजकुमारी देवी मिलने आए। दोनों एम० एल० ए० के लिए खड़े हो रहे हैं। ७५०) और ६००) रु० देने को कहा है। दोनों जीत जायेंगे। रात में मॉर्टन के मैनेजर ओ० पी० गोयल से मिलने गया। आदमी अच्छे हैं। उन्होंने कुछ उपहार भेजे। जगह अच्छी लगी, कमाई भी है ही। रामकिशन जी चौधरी आदमी अच्छे हैं।

मरहौरा

३० जनवरी : सर्दी काफी है। ७॥ वजे जीप से परसा गया। वहाँ दरोगा राय जी से मिला। वे पाँच-सात हजार मतों से जीतेंगे। शायद डेपुटी चीफ मिनिस्टर भी बनें। उन्हें जीप देने को कहा और भेज भी दी। सारन इंजीनियरिंग का मैनेजर नारायण स्वामी साथ था, अच्छा व्यक्ति है, मेहनती और ईमानदार। वापिस ९॥ वजे लौटा। ए० पी० गुप्ता और मि० गोयल आ गए थे। १२ वजे तक ऑफिस में ऑफिसर लोगों की मीटिंग हुई, अच्छा रहा। पहले इस तरह की मीटिंग कभी नहीं हुई थी। लोगों ने पसन्द किया। एक वजे नारायण स्वामी के यहाँ खाना खाया। दो वजे मार्टन कारखाना देखने गया। अच्छी फैक्टरी है परंतु लॉस में चल रही है। टाफी वगैरह खायी। आधा घंटा उनका कारखाना देखा। फिर ३ वजे से ४॥ वजे तक सारन की मीटिंग थी। सब काम बहुत ढंग से हुआ। पाँच वजे मार्टन शूगर और सारन के आफिसरों की टी पार्टी हुई। बहुतों से मिलना हुआ। अच्छा रहा।

चम्पारन-मुजफ्फरपुर

३१ जनवरी : सुबह ६ वजे कार से मि० घोष के साथ चम्पारन आया। दो मील घूमा अच्छा लगा। कभी यहाँ शायद जंगल था, लोगों ने बताया। वैसे बौद्धों के विहार भी थे मृत्युंजय बाबू के यहाँ गया, एक घंटा था। उन्हें पाँच दिनों के लिए कार देने को कहा कांग्रेस इस तरफ जीतेगी, ऐसी आशा है। कार से मुजफ्फरपुर के लिए चला। ११॥ वजे पूगा। सीधा दिग्विजय बाबू के घर गया। कार में, साथ में रामकिशन चौधरी टाटावाले थे। खाना खाकर बाजार गया। लोगों से मिला। यहाँ भरतिया सरदार शहर वाले मिल गए। काफी अच्छा कारबार कर रखा है। उनके साथ केदार बाबू के घर गया, कपड़ों के व्यापारी हैं, वहीं सोहनलाल जी केजड़ीवाल मिले। ट्रेन पकड़ी। कुल मिलाकर तीन दिनों की यात्रा बहुत अच्छी रही। काफी लोगों से मिलना-जुलना हुआ। मन में भी एक खुशी हुई। सारन इंजीनियरिंग छोटा सा परंतु अच्छा कारखाना है।

कानपुर

१ फरवरी : ९ बजे कानपुर आ गया। एलगिन तीन घंटे था। कामकाज देखा, २२ दिनों बाद आया हूँ। काफी प्रॉब्लेम हैं। काम ठीक चल रहा है। अपने बंगले के माली के घर गया। बहुत ज्यादा बीमार है, ३०) रु० दिए। शायद बचेगा नहीं। दवा नहीं मिलती है। उसके तीन बच्चे हैं। मिल में तम्बू का काम कम है। जो नये लड़के रखे गए हैं, काम ठीक कर रहे हैं।

२ फरवरी : नींद कुछ कम आती है। दुकान का हिसाब राधेश्याम पूना वाला ले रहा है। दो एक वर्षों में दस हजार घाटा रहा, ब्याज के २० हजार अलग, कुल तीस हजार घाटा रहा। सुबह भाई जी को फोन किया। सीताराम मिल साधारणतया ठीक चल रही है। एस० एन० पोद्दार कलकत्ते वाले आए थे, हरेकृष्ण आए थे। उनसे दुकानों के बारे में बातचीत की। अर्जुन अरोड़ा जी के जा कर आया। रुई एक हजार गाँठ ली। लोगों का ध्यान मंदा है, भिंडे का तेज है। शहर को ६ सीटों में से कांग्रेस ४ में जीतेगी, ऐसी आशा है। देहात की ८ में से ५, कुल ९। यू० पी० में शायद बहुमत में आए।

३ फरवरी : एलगिन और बी० आइ० सी० में गया। मशीन खरीदने की सारी बातें की। पुरानी मशीनें हटाये बिना पड़ता नहीं आएगा। प्रोडक्शन बढ़ानी जरूरी है, फाइनर में आना जँचता है। कूपर एलेन का काम सलटता जा रहा है। जल्दी हो जाए तो राहत मिलेगी। थोड़े से पुराने कर्ज भी सलटा रहा हूँ। स्टेट बैंक में गया। पी० एन० बी० से अकाउन्ट ठीक करने की बात की।

४ फरवरी : डॉ० दत्त को बुलाया। ब्लड प्रेशर बहुत ऊँचा है। ५००)-७००) रु० कलकत्ता हि० पु० ए० और दिल्ली भिजवाया, किताबों के लिए। शाम को मिल की लाइब्रेरी रूम में गया। अच्छा बड़ा हॉल है, लड़के, मजदूर और कर्मचारी यहाँ किताबें पढ़ते हैं। कसरत वगैरह की भी जगह है। किताबें कम और पुरानी हैं। नयी काफी खरीदनी पड़ेंगी, खास कर पाठ्यक्रम में काम के लायक भी। कसरत और खेल के सामान भी, मंगवाने हैं। शाम को सतीश जी के और सुपर मार्केट गया। न जाने क्यों मन में एक कमजोरी सी मालूम देती है।

५ फरवरी : सुबह ५ बजे उठा। कल रात में २१०-१३० ब्लड प्रेशर था। मन में चिंता सी थी, जल्द सो गया। आदमी को शरीर की शक्ति समझ कर काम करना चाहिए। चिंता-फिक्र से भी ब्लड प्रेशर बढ़ा रहता है। परंतु मैं अपने पर कन्ट्रोल नहीं कर पाता। ९॥ बजे एलगिन मिल में गया। १२॥ बजे तक था। मीरजापुर से बाबूलाल जी सेक्सरिया आए हुए हैं, ६९ वर्ष के हैं, ४० वर्ष से मैं जानता हूँ। अब कैसे ही लगने लगे हैं। तकलीफ में हैं। सोचता हूँ, मैं तकलीफ में नहीं परंतु मेरा स्वास्थ्य क्यों गिरता जाता है? मदन से बंबई बात की। मिल उसी तरह चल रही है। इन दिनों में कुछ भी नहीं लिख पा रहा हूँ। सुबह बी० पी० तिवारी के पास गया। उनके साथ बाहर जाने की बात कर रहा हूँ।

दिन में ३ बजे से ५ वजे तक की मीटिंग थीं। शो रूम वगैरह करने को सोच रहे हैं। रात में वहुत से लोग आए। ब्लड प्रेशर १९०-१२० है।

७ फरवरी : चुनाव के काम से गया। ४० झंडे आए थे, उन्हें दिन में देकर आया। ऐसा लगता है, कांग्रेस जीत जायगी।

८ फरवरी : लगता है, टेम्परेचर है। सुवह एल्गिन गया, दो घंटे था। ऑफिस भी गया। लोग दिन में आते रहते हैं। शाम को सतीश जी के परिवार के तथा और भी बहुत से लोग आए। कृष्णचंद जी अग्रवाल का फोन आया। वे उरई जा रहे हैं। १३ को कानपुर आयेंगे। रुई कुछ मंदी है, हम लोगों ने इन दिनों में तीस हजार गाँठे ली हैं।

९ फरवरी : दिन में मिसेज वारलो एक स्वेटर दे गयीं। अच्छी थी। १३ दिन हो गए, कुछ भी नहीं लिख सका। अखवारों में छपे लेख पर पत्र आते रहते हैं। अच्छा लगता है। पाठकवर्ग कैसा सोचते हैं, क्या चाहते हैं, मालूम हो जाता है। डॉक्टर आये, ब्लड प्रेशर १४०-९६ है। कमजोरी महसूस करता हूँ, सर्दी भी। प्रभाकर त्रिपाठी जी के चुनाव में कार गयी है। एल्गिन, कॉटेक्स में इस वर्ष १२-१४ लाख तक कपड़े से, ३-४ लाख मशीनों के, २ लाख रुई के हो जायेंगे, ऐसी आशा है। यदि मिल के काम में सक्सेस रहा तो वहुत सन्तोष होगा।

नयी दिल्ली

११ फरवरी : सुवह तीन मील घूमा, त्यागी जी के चाय पी, फाइनेन्स सेक्रेटरी रेड्डी के भी गए थे। १०॥ वजे उमाशंकर जी दीक्षित से मिला। मेरे वारे में उन्हें कुछ गलतफहमी है, ऐसा लगता है। शायद आगे जाकर राजी हो जायें। सुवह रतनलाल जी जोशी के गया, फिर सरिता के विश्वनाथ जी के। 'विश्वयात्रा के संस्मरण' किताब छप रही है। पेशाव की तकलीफ कई दिनों से थी, डॉक्टर के गया, सलाई ली। शेयरों में बड़ी मंदी आयी है। मेरे भी पन्द्रह-वीस हजार का फर्क पड़ा है।

१२ फरवरी : सुवह ८॥ वजे मुरारजी भाई के घर गया। पन्द्रह मिनट तक उनसे वातचीत की। काफी मायूस से हैं। वंगाल के रिजल्ट खराव आने से लोगों में काफी चिंता है। शेयरों के भाव घट गए हैं, शायद और भी घटेंगे। कल सुखाड़ियाजी आ रहे हैं। मुरार जी भाई ने अच्छी तरह से वात की। दिल्ली में मेरी तवीयत ठीक रहती है। 'हिंदुस्तान' में मेरा केवल एक लेख पिछले महीने आया है। 'विश्वमित्र' में तीन, 'आज' में दो देखा था। इन पन्द्रह दिनों में कुछ नहीं लिख पाया। शाम को ५॥ बजे प्रभुदयाल जी, श्रीदिनेश सिंह, श्री हाथी आदि काफी लोगों से मिलना हुआ।

१३ फरवरी : चुनाव के वंगाल के रिजल्ट बहुत खराव आए। यू० पी० में ४२० में २०८ सीटें हैं, ५ के चुनाव वाकी हैं। कांग्रेस की सरकार वन जायगी। शेयरों के भाव वापिस गर्म हैं। मेरा ध्यान मंदा है। ९ वजे सुखाड़ियाजी से मिला; अस्पताल की

बात की। १० बजे सी० डी० पांडेय के घर आया। १०॥ बजे उमाशंकर जी दीक्षित से मिला।

कलकत्ता

१७ फरवरी : ऑफिस १२ बजे आया। कामकाज देखा, शेयर बाजार में ४५०००) रु० का घाटा है। वामपक्षी बंगाल में काफी झंझट पर उतर आए हैं। ऐसा लगता है दो वर्ष के भीतर बहुत से उद्योगों को यहाँ से चला जाना पड़ेगा। पुष्पकुमार, नथमल जी सेठी आदि सब आए। ब्यावर मिल की बात उनसे की। अगर संभव हुआ तो कानपुर टेक्सटाइल में ले लेंगे।

१८ फरवरी : सुबह ५॥ बजे विक्टोरिया मेमोरियल गया। खुली हवा में अच्छा लगा किंतु ऐसा लगता है, मुझे अब बहुत सम्हल कर चलना चाहिए, कमजोरी तो है ही। १०॥ बजे से १२॥ बजे तक गंगाजी गया, तेल मालिश कराया, स्नान किया। घर आकर फिर मैंकलियड गया। बी० पी० बाजोरिया ने कहा कि कुछ टर्म्स कर लीजिए, मैंने ना कह दिया है।

नयी दिल्ली

२६ फरवरी : इस बार किसी मिनिस्टर से नहीं मिल पाया। बी० पी० बाजोरिया यहीं हैं। कूपर एलेन के लिए कई लोगों से बात की। दिन में सारे दिन सेंट्रल हॉल में था। रामेश्वरजी नोपानी यहीं हैं। शूगर मिल भी उनकी इस वर्ष अच्छी नहीं चल रही है।

२७ फरवरी : शाम को सरिता में जाकर पाँच पुस्तकें 'विश्व यात्रा के संस्मरण' ले आया। अच्छी छपी है। दाम २०) रु० शायद कुछ ज्यादा है, ऐसा लगा। ४ बजे उमाशंकरजी दीक्षित से मिला। कन्ट्राक्ट की बात कर रहा हूँ। वैसे खुश नजर आ रहे थे। पी० एन० बी० के जेनरल मैनेजर से मिला। ब्यावर की मिल के बारे में बात की। शायद गैरन्टी देने से रुपये उधार मिल जायेंगे। राजस्थान बैंक से भी बात करनी होगी।

ब्यावर

२८ फरवरी : ब्यावर १२ बजे पूगा। एक बजे से ३ बजे तक मिल में था। सब एकाउंट देखे। ऐसा लगता है, रुपयों की कमी और मिस मैनेजमेंट से घाटा हुआ। मेरा कुछ करने का मन होता है, कुछ-न-कुछ हो जायगा। साहू-जैन की सीमेन्ट फैक्टरी अभी बैठ रही है, शायद तीन वर्ष लग जायें। काम अभी पूरा चालू नहीं हुआ है। ५॥ बजे घूमने गया। साथ में सौभाग्यमल जी, उनकी पत्नी और बहन थी। अच्छा भला परिवार है। ६ बजे बजट सुना। खास चेंज नहीं है। पीछे पता चला कि मोटे कपड़े पर राहत मिली है। मिलों को ३५% ड्यूटी की छूट दी गयी है। चाय पर और स्टील कास्टिंग पर भी राहत मिली है।

अहमदाबाद

१ मार्च : दिन में ११। बजे अहमदाबाद पूगा। पन्द्रह वर्ष पहले एक बार आया था। सागरमल शुभकरण की दुकान में गया, फोन किया। वे लोग कार लेकर आए। सारे दिन साथ में थे। झूलती मीनार (सन् १४१८) की देखी। ऊपर चढ़ा। स्पष्ट रूप से हिलती है। कांकरिया लेक पर बच्चों का बाग देखा, अच्छा है, रमणीक भी। साबरमती आश्रम गए। गांधी जी का कमरा और कई चीजें देखी। मन में कई प्रकार की भावनाएँ आयीं। यह पवित्र स्थान है। साबरमती नदी के घाट पर थोड़ी देर बैठा रहा। शांति मिली। दिन में लक्ष्मी मिल (एस० एस० की) देखी। अच्छी चला रहे हैं। इस वर्ष बीस लाख नफे का अनुमान है। पहले खराब मिल थी, अब ठीक है, इनकी इज्जत बढ़ी है। शायद सत्तर-अस्सी लाख के आदमी हो गए। उन्हें तीन पुस्तकें दी। बच्चे बहुत होशियार हैं। ऐसा लगता है, ये लोग और राइज करेंगे। मैंने उन्हें कुछ सुझाव दिए; जमीन बेचने वगैरह के। अहमदाबाद बढ़ता हुआ शहर है। ६० मिलें और कारखानें, टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज और कई संस्थाएँ हैं।

बम्बई

२ मार्च : पिछले तीन दिनों से तीन रात ट्रेन में सो कर गुजारी। १० बजे दिन में बंबई पूगा। मिल चालू है, भाईजी यहीं हैं। सारे दिन घर में ही था। मिलों की हालत सुधरेगी, ऐसी धारणा लोगों की है। रुई का बाजार बहुत तेज है।

३ मार्च : बुधमल जी शामसुखा नाश्ते पर आए। धारीवाल जाने को तैयार हैं। सराफ, कूपर और सिवनीवाले मिलने आए थे। बूबना भी आए, फाइनर की बात की, १४) रु० ड्यूटी और सप्लिमेंटरी ड्यूटी लग गयी है। इससे हानि हो गयी है। मिल में ६९ मार्च में १८ नफा रहेगा। अगले वर्ष शायद २५-२७ भी रह जाय। यहाँ रुई पर ध्यान लोगों का तेज है।

नयी दिल्ली

५ मार्च : ब्लडप्रेशर ऊँचा है। सरिता वालों से बात की, १४-१५ ता० तक कुछ किताबें दे देंगे। पार्लियामेंट में बिरला जी पर बहस सुनता रहा। उनके पक्ष में गयी है।

कानपुर-नयी दिल्ली

८ मार्च : एलगिन और कॉटेक्स की दो मीटिंगों में काफी झंझट रहा। कूपर एलेन का काम अभी तक सल्टा नहीं है। ३। बजे ट्रेन में बैठा, ए० सी० सी० में। साथ में सहगल थे, पी० डी० हिम्मतसिंहका भी थे। रीडर्स डाइजेस्टका एक लेख पढ़ा। बढ़ती उमर के बारे में लिखा था, अगर अहतियात रखा जाय तो मनुष्य ७० वर्ष तक जवान रह सकता है।

कलकत्ता

१२ मार्च : कई पत्र लिखे। नेपाल का काम खराब चल रहा है, शायद आगे जाकर घाटा रहेगा। 'मोती काका' कहानी तैयार की। दिन में पाट बाजार में गया था। कल के 'हिंदुस्तान' में मेरा वाणिज्य उद्योग वाला लेख छपा है। मुरारजी भाई और इन्दिरा जी का रिपट सामने आ गया है। शेयर बाज़ार थोड़ा मंदा है।

१३ मार्च : दिन में सुशील धाड़ा के गया, आधा घंटा था। भले आदमी हैं। उन्हें चिट्ठी लिख कर दे दी है। शाम को ज्ञान भारती स्कूल की मीटिंग में गया। दिल्ली की खबरें खराब हैं, यहाँ की भी। बड़ी उलट-पुलट मच रही है। देखा जाय क्या होता है। कांग्रेस में फूट पड़ ही गयी।

१४ मार्च : दिन में मेरे लेख 'मोती काका' और 'यह भूख, यह ऐय्याशी' पत्रों में भेजता रहा। 'रीडर्स डाइजेस्ट' पर एक लेख लिखा, टाइप हो गया है। इन छः दिनों में कुल तीन लेख हुए। शाम को मुन्ना का पहला जन्म दिन था। बाहर के बच्चे आए थे, सिनेमा की व्यवस्था थी। मुन्ना मेरे पास रोज दही खाता है। बहुत सुन्दर बच्चा है। मन में कुछ चिन्ताएँ कम हुई। बंबई का इन दिनों कोई समाचार नहीं है। फिर भी लगता है, मिल ठीक चल रही है। भरतिया में अभी लॉस जा रहा है।

१५ मार्च : मुरारजी भाई का दिल्ली से पत्र आया, राजा रामगढ़ के बारे में। मेरे मन में विचार आते हैं, व्यक्ति और व्यक्तित्व को बड़ा मानने के कारण ही कांग्रेस का भविष्य बिगड़ता जा रहा है। इन्दिरा जी निश्चित रूप से मजबूत होती जा रही हैं। आगे चल कर क्या होगा परमात्मा जाने।

दिल्ली

१९ मार्च : सरिता से किताबें ले आया। छपाई अच्छी है, गेट अप भी ठीक, लोगों को पसंद आयी, तारीफ करते हैं।

२० मार्च : पत्र-पत्रिकाओं में सम्मति के लिए किताबें भेजीं। मित्रों में काफी बंट गयी। २०००) रु० सरिता वालों को दे दिया, ४००)-५००) रु० की किताबें खरीदीं।

कानपुर

२२ मार्च : सुबह ६। बजे पहुँचा। साथ में अर्जुन अरोड़ा थे। स्टेशन पर काफी लोग आ जाते हैं, मन में कैसा लगता है। दिन में लखनऊ के लिए तिलक अरोड़ा के साथ गया। त्रिपाठीजी और गुप्ता जी से मिला। श्री अमृतलाल नागर और भगवतीचरण जी वर्मा से भी भेंट की। रात में १० बजे वापस आया। ए० पी० गुप्ता बैठे थे, कानपुर की एजेंसी के लिए।

२३ मार्च : दिन भर लोग मिलने आते रहे। पदमपत जी सिंहानिया आए। कानपुर की

मेयर शिप की बात चल रही है। रात में ज्योति चांडक के यहाँ खाने पर गया, अच्छा खाना मिला। कल चेंकिग कराने के लिए अस्पताल जाना है।

२५ मार्च : सुबह सतीश जी के घर गया, थोड़ी देर बी० आई० सी० भी गया। अस्पताल से १० वजे आ गया। ब्लडप्रेशर आज ठीक है। २ वजे से ६। तक कानपुर और चम्पारन शुगर की मीटिंग हुई। बहुत से विषय थे, ब्यावर मिल की बात हुई, आठ आना पांती रखेंगे।

नयी दिल्ली

२६ मार्च : दिन में बी० आर० भगत से उनकी ऑफिस में मिला, ओम के साथ। कूपर एलेन का कुछ नहीं हो पाया है, मन में अशांति है।

कलकत्ता

१ अप्रैल : १० वजे गंगा जी जाकर तेल मालिश कराया। आधा घंटा गंगा जी में स्नान करता रहा। १ वजे कृष्णचंद्रजी अग्रवाल के गया। २॥ वजे ऑफिस आया। दिन में कई लोग आते रहे। ४ वजे त्यागी जी का फोन था, वे ४ को जायेंगे।

३ अप्रैल : इन दिनों कुछ भी लिख न सका। सिर भारी रहता है, आलस भी आता है। रात में त्यागी जी ७ वजे खाने पर आए और भी २२-२३ व्यक्ति थे। ७। वजे तक अच्छा प्रोग्राम रहा।

४ अप्रैल : जयप्रकाशजी ने १०००) रु० एक गरीब ब्राह्मणी लड़की के विवाह के लिए दिलाए। दिन में दो घंटे बी० के० गर्ग के साथ था, मन कुछ लग गया। दो लेख तैयार किए। शाम को ५ वजे प्रवचन सुनने गया।

५ अप्रैल : दिन में १। वजे ज्योति बसु के पास गया। कपड़े की मिलों के बारे में बात की। दो बार बिना लिफ्ट के ऑफिस में सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ी, थक गया। शाम को कृपलानी जी के प्रवचन में गया।

कानपुर

६ अप्रैल : दिन में सदरलैंड हाउस गया। काम करता रहा। ३॥ वजे से ५॥। बजे तक एलिगन में था, आफिसरों की मीटिंग थी। मिल के कामकाज के बारे में काफी बातें हुई। ऐसी मीटिंगों से अच्छा प्रभाव पड़ता है। ६ बजे घर गये। भिडे आये। रुई के सात लाख हो गए हैं। रुई तेज है, कपड़े का बाजार तेज नहीं।

नयी दिल्ली

१० अप्रैल : कूपर एलेन का घेराव मजदूरों ने दिन में २ बजे किया। पुलिस बुलाई, मुझे भी गुस्सा आ गया था। ५॥ वजे की प्लेन से दिल्ली रवाना हुआ। ७ वजे पूगा।

११ अप्रैल : एसिस्टेन्ट टेक्सटाइल कमिश्नर मि० राथ के पास गया। जान-पहचान के निकल आए। मिल कर वहुत खुश हुए। कूपर एलेन के वारे में रजिस्ट्रार के पास गया। १४ ता० को कूपर एलेन टेक ओवर कर लेंगे। दिन में वी० आर० भगत जी से वी० आइ० सी० के फाइवर के लिए मिला था।

कानपुर

१२ अप्रैल : लाल इमली की वर्किंग देखी, काम ठीक चल रहा है। तवीयत आज ठीक मालूम पड़ती है। एलिगन मिल में काम देखता रहा। एक वजे घर आ गया। फिर भटनागर के साथ श्याम मनोहर जी और श्री रामरतन गुप्त से मिला। अपनी कितावें भेंट दीं। कानपुर के मेयरशिप के लिए प्रयत्न चल रहा है, पर सफलता कितनी होगी, पता नहीं। शाम को ४ वजे से ५ वजे तक एलिगन मिल में था। फिर भटनागर जी के साथ जटाधर जी से मिला, रात में जुगलकिशोर जी गर्ग के घर कारपोरेशन के १० सदस्यों से जान-पहचान हुई।

१३ अप्रैल : शाम को कानपुर टेक्सटाइल गया। इसके पहले कारपोरेशन के वहुत से दस्यों से मिला। दिन में लोग आते रहे। वहुत व्यस्त रहना पड़ता है। मन कानपुर में लग जाता है। थोड़ी कमजोरी जरूर आ जाती है। आँखों की ज्योति शायद घट रही है।

१४ अप्रैल : दिन में सारन की मीटिंग एक घंटे चली। प्रस्ताव पास हो गया। वीस हजार शेयर वी० आई० सी० के लेने की तय हुई। सारे दिन एलिगन की मशीनों की तथा दूसरी वातें हुई।

नयी दिल्ली

१५ अप्रैल : सुवह के० पी० मोदी के साथ स्टेशन पर उतरा। एयर कंडीशंड में यात्रा की, आराम रहा, थकावट नहीं आयी। भगवती से शाम को मिला। के० वी० लाल भी वहीं थे। उनसे भी वात हुई। कानपुर के लिये फाइवर की काफी चेष्टा की। दिल्ली की यात्रा ठीक रही।

कलकत्ता

२२ अप्रैल : कलकत्ता आया हूँ। परोचन्द वगैरह ३ ता० को उदयपुर जायेंगे। मैं भी जाऊँगा। १२ वजे खवर मिली कि कल के प्लेन क्रैश में भागीरथ जी का दामाद था। नथमलजी भुवालका का लड़का था। सारे दिन नथमल जी के घर रहा। मन में उदासी वनी रही। यहाँ के मारवाड़ियों में इस घटना का वहुत दुःख है। सुवह जव भागीरथ जी के यहाँ गया था, उस समय उन्हें इस वात का पता नहीं था।

२३ अप्रैल : सुवह सीधा नथमल जी के घर गया। ज्यादा देर वैठ नहीं सका, मन भारी हो गया। भागीरथ जी जैसे व्यक्ति को परमात्मा ने ऐसा दुःख दिया। मुझे भी रोना आ

गया। उनके घर में बहुत ही शोक का वातावरण है। मन कहता है, जीवन क्या है, कब तक है, कुछ पता नहीं चलता।

कानपुर

२४ अप्रैल : कूपर एलेन अभी सरकार नहीं ले रही है। बी० आइ० सी० पर खर्च और घाटे का बोझ बढ़ता जाता है। मन में दुःख हुआ। बी० एल० के पास गया, सभी बातें की। दोपहर को लाल इमली और एल्गिन में गया। ओम से फोन पर बात हुई, मरतिया के चान्सेज अच्छे लगते जा रहे हैं।

नयी दिल्ली

२५ अप्रैल : दिल्ली ५॥ बजे पूगा। ओम को फोन किया, कपल्स मिल जायेंगे, ऐसी आशा है। मन में खुशी हुई। दिन में बी० पी० राय, प्रसाद वगैरह से बात हुई। शाम को मूर्ति से मिला, कपूर से भी। सी० बी० गुप्ता और कमलापति जी त्रिपाठी आदि से मिला। कूपर एलेन का फैसला नहीं होने से चिंता है। सुबह एस० पी० जैन से अथर्टन मिल के बारे में बात की।

२६ अप्रैल : दिन में हरिदेवजी जोशी तथा सीकर के कुछ लोगों से मिला। सी० बी० गुप्ता और सुखाड़िया जी से भी बात हुई। 'हिन्दुस्तान' में आज मेरा लेख अच्छी तरह छपा है। जोशी जी और रामानन्द से मिला। कादम्बरी के लिए लेख मांग रहे थे। गंगाबाबू को चारों लेख सुनाए, उन्हें अच्छे लगे।

२७ अप्रैल : सुबह दो मील बरुआजी के साथ घूमा। कानपुर की न्यू विक्टोरिया का मुझे कन्ट्रोलर बना रहे हैं। झंझट की मिल तो है मगर लगता है सम्हाल लूंगा।

दिल्ली-लखनऊ

१ मई : सुबह घूमने गया। दिन में पार्लियामेंट में था। जगजीवन बाबू से मिला। कल हाथीजी से भी बात हुई थी। सुबह उमाशंकर जी दीक्षित से मिला—काफी नाराज थे, तिवारी को लेकर। कूपर एलेन का कुछ नहीं हो रहा है। दोपहर में २ बजे एयर से लखनऊ पूगा। ४॥ बजे गुप्ता जी से मिला। उन्होंने मेयरशिप के लिए कह दिया है। मन में खुशी हुई। सुबह बनारसीदास मिले थे, उन्होंने ही विक्टोरिया मिल्स के लिए कहा है। कुल मिलाकर सब ठीक रहा।

कानपुर

२ मई : दिन में सारे दिन काम में व्यस्त रहा। ४ बजे चमड़ा कारखाने वाले आए, बीस आदमी थे। शायद झंझट भी करते। किसी तरह उनको पार किया। उनकी बात-चीत से मन में क्लेश सा हुआ। हम लोगों ने यूरोप वालों की तरह यूनियन तो बना लिया

पर संगठित होकर काम बढ़ाना नहीं सिखाते। बस एक बात पैसे बढ़ाने की जानते हैं, चाहे बरबादी करें, काम न करें, घाटा होता जाय। सारी इकनामी खराब होती जा रही है। कपड़े का बाजार समान है। सुबह जटाधर जी वाजपेयी, भागवत प्रसाद जी तिवारी से मिला। रात में रतनलाल जी शर्मा, विद्याधर जी और श्री भटनागर आए थे। मेयरशिप वाली बात आगे बढ़ रही है।

३ मई : सुबह ६ बजे उठा। एलिगन गया, वहाँ दो घंटे था। कल मंगतूराम जी जयपुरिया से मिला था। शाम को ए० पी० गुप्ता आए। रात में राष्ट्रपति जाकिर हुसेन की मृत्यु हो गई। विद्वान् थे, भले आदमी। मुसलमानों की शिक्षा के लिए बहुत किया।

कलकत्ता

६ मई : कमर में काफी दर्द है। कम नहीं होता। लोगों के कहने पर झाड़ा भी दिलवाया, कोई फर्क नहीं। पता नहीं, क्यों कलकत्ते में आकर अनेक समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। स्वास्थ्य इतना गिरता जा रहा है कि लोग मुझे वृद्ध कहने लगे हैं। भरतिया का कारखाना खराब चल रहा है, भाईजी से दो-तीन घंटे बातें होती रहीं। पिछले वर्ष १६ लाख का, इस वर्ष भी तीन महीनों में ५ लाख का लॉस हुआ है। भाई जी अभी कुछ दिनों तक यहाँ रहेंगे। दिन में २ बजे ऑफिस आया। कुछ लेख ठीक किए। एक लेख 'ये विदेशी पुतले' लिख कर टाइप करने को दिया, पाँच-छः लेख पत्र-पत्रिकाओं में भेजे। एक लेख लिख रहा हूँ। मुझे लिखने में जितना सन्तोष मिल रहा है, उतना किसी चीज में नहीं। शाम को दर्द कम हुआ।

नयी दिल्ली

१२ मई : सुबह ६ बजे दिल्ली पूगा। दिन में प्रभुदयाल जी के लिये पार्लियामेन्ट में प्रयत्न करता रहा। अभी तो चान्सेज अच्छे हैं। देखता हूँ, मेरा प्रभाव कम हो गया है। स्वाभाविक है, अब एम० पी० नहीं हूँ। रघुनाथ जी शायद इस बार हार जायेंगे।
१४ मई : सारे दिन प्रभुदयाल जी के चुनाव की चेष्टा करता रहा परन्तु कुछ भी काम नहीं हुआ। पाटिल से मिलने गया और भी बहुत से आदमी आये हुए थे। दिन में ऐसा मालूम हुआ कि हिम्मतसिंहका जी, ओंकार जी बोहरा और रघुनाथ जी तीनों हार जायेंगे। स्ट्रेटजी खराब हो गयी थी।

कलकत्ता

१६ मई : नन्दू चाय बगीचे गया हुआ है। राजू भी रात में नैनीताल चला गया। ब्यावर मिल को लेकर मन में काफी चिंताएं हैं। मेरे ऐसा लगता है कि मनुष्य कितने ही प्रयत्न करे भावी होकर रहती है, अच्छे बुरे दोनों में। रतनी बीमार रहती है। लेख भी इन दिनों नहीं लिख सका।

२२ मई : अभी भी कमर में थोड़ा दर्द है। दिन में भाई जी से बातें करता रहा। इस बार इतनी चिंताएं हैं, न जाने क्यों? कभी-कभी तो मर जाने को जी चाहता है। देने में परमात्मा ने कमी नहीं की पर चिन्ताएं बढ़ गयीं। शायद दोष हमारा ही है। नाना प्रकार की समस्याएं, एडवर्ड मिल, सीताराम मिल, लुकवा, भरतिया और रतनी के मुकदमें ही खास हैं।

३१ मई : सुबह भाई जी मोटर से पुरी के लिये रवाना हो गये। ओम शिलांग से आकर दिल्ली के लिए रवाना हो गया है। कपल्स के आर्डर मिलने वाले हैं। दोपहर का खाना नहीं खाया, पेट में दर्द और बदहजमी सी है। दिन में २ बजे ऑफिस में था। रेणु चक्रवर्ती से मिला, ज्योति बाबू से न मिल सका। शाम को थोड़ी देर अमेरिकन लाइब्रेरी में था। रात में ७॥ बजे स्टेशन आया, बी० एल० मिले। ए० सी० सी० की टिकट ली है। शेयर बाजार काफी तेज है, मुझे लगता है ऊंचे से ऊंचे भाव आज है परन्तु मुझे फाटका करना आता है नहीं, बराबर घाटा देता जा रहा हूँ।

कानपुर

२ जून : एलगिन मिल गया। जैन ने कहा कि फाइबर के इम्पोर्ट लाइसेन्स बन्द हो गये हैं। चिन्ता हो रही है। मैं समझता हूं कि कॉटन क्लॉथ की मांग पहले जैसी नहीं रही। लोगों का झुकाव सिंथेटिक पर बढ़ रहा है। फाइबर नहीं मिलने से मिलें कैसे फायदा पैदा करेंगी? चिन्ता हो रही है। कूपर एलेन की समस्या भी नहीं सलटी। रात में सी० बी० गुप्ता का फोन आया, उन्होंने बुलाया है। मेयरशिप वाली बात जोरों से चल रही है। रात में लोग मिलने आये। कल शाम को बंशीधर जी कसेरा के यहां व्याह में गया था। वहां श्री रमेश मौरोलिया ने कहा कि आप को खड़ा नहीं होना चाहिये, इसमें बदनामी का डर है। मेरी समझ में नहीं आता कि मेयरशिप के लिये खड़े होने में क्या बदनामी की बात हो सकती है?

३ जून : सुबह ६॥ बजे जटाधर जी बाजपेयी के यहां गया, ६॥। बजे शिवनारायण जी टंडन के। मेयरशिपवाली बात ठीक चल रही है। परन्तु मन में बहुत तरह की परेशानियां हैं। ८ बजे लखनऊ गुप्ता जी के यहां पहुँचा। पौन घंटे था, काफी बातें हुईं। न्यू विक्टोरिया के लिये मैंने उन्हें ना सा कर दिया है, काफी झंझट का काम है। टेक्सटाइल इंडस्ट्री की हालत अच्छी नहीं है, अनुभव ने सिखा दिया। पुरानी मशीनें हैं और फाइबर मिलती नहीं, मिलें कैसे पैदा करेंगी परन्तु सरकारी अफसरों का ध्यान इन बातों पर नहीं है। गुप्ता जी के यहां से कमलापति त्रिपाठी के यहां गया, उनसे मिला। बहुगुणा के गया, वहीं बनारसी दास मिल गये। कानपुर लौटने पर सदरलैण्ड हाउस गया, थोड़ी देर कामकाज देखा। घर गया। २॥। बजे जटाधर जी आये और लोग भी आये, कुछ सेटलमेन्ट हुआ। शाम को एलगिन का काम देखा। कानपुर में मन लग गया है।

४ जून : गरमी काफी पड़ती है। सारे दिन दौड़ धूप में व्यस्त रहा। लोगों से मिलता रहा। मिल का भी काम देखता रहा। जटाधर जी के साथ कारपोरेशन के सदस्यों से मिला। शायद रास्ता बैठ जाये। परन्तु मन में उत्साह नहीं रह गया है, चारों तरफ चिन्ताएं और झंझट देख रहा हूँ। रात में कैसे-कैसे विचार आने लगते हैं। शायद इन डेढ़ वर्षों में आयु घट रही है, मानसिक उलझने तो हैं ही।

५ जून : सी० बी० गुप्ता का फोन आया, न्यू विक्टोरिया दूसरों को दे दी है, मुझे अच्छा लगा। रतनलाल जी शर्मा और शिवनारायण टंडन से मिला। टंडन जी मुझे सपोर्ट करेंगे, ऐसा कहा है। दिन में एलगिन और लाल इमली का काम देखा।

नयी दिल्ली

६ जून : सवेरे ५॥ बजे पूगा। घर में भीड़ भरी है। ८॥ बजे बी० आर० भगत से मिला। बातचीत हुई, वे मद्रास जा रहे हैं, शायद कुछ रास्ता बैठ जाये। १२ बजे उद्योग भवन आया, २॥ बजे तक था। फाइबर को लेकर झंझट हुआ है। बम्बई से शिकायतें आयी हैं। लोग दुरुपयोग करते हैं, मामला सीरियस लगता है। ५ बजे तक पार्लियामेन्ट हाउस रहा। सुबह त्यागी जी, मनुभाई, डा० राम सुभग जी से मिला। शाम को मुरारजी भाई और त्रिपाठी जी के यहां आया। कानपुर से बी० एल० का और बीमा के पराक्रम जी भंडारी जी का फोन आया था। रात में फाइबर के सपने भी आते रहे।

१० जून : मेयरशिप के लिये चेष्टा में हूँ। ऐसा लगता है सफलता मिलेगी, कुछ माहौल इसी प्रकार का बनता जा रहा है। और सब काम एक प्रकार से छोड़ रखा है। परन्तु मिल का काम देख रहा हूँ।

१४ जून : दिन में कई फार्म भराये। रामेश्वर जी पांडे को डमी तय किया। जीत निश्चित लगती है। जटाधर जी के साथ शिवनारायण टंडन जी के गया, उनकी पूरी सहायता है।

२० जून : सुबह पौने छः बजे उठा। ३ बजे गुरुदीन, वीरसिंह जी, जटाधर जी, टंडन जी के गया। चुनाव का काम ठीक चल रहा है। १० बजे तक रतनलाल जी शर्मा के यहां था। पन्द्रह सभासदों को अपनी पुस्तकें दी। एक घंटा परमट घाट कैलासपत जी सिंहानिया के दाहकर्म में गया। काफी लोग आये थे।

२४ जून : काफी दौड़ धूप में लगा हुआ हूँ, ऐसा लगता है जीत जाऊंगा। रात में दो बजे जाते हैं लोगों से मिलता रहता हूं। जनसंघ के छह मत मिलेंगे, ऐसी आशा है।
२५ जून : सुबह ९ बजे तिलक हॉल में गया। वहां सभासदों ने नाश्ता किया। १० बजे से गिनती शुरू हुई। कुल ६१ मत मेरे और १५ राधेश्याम जी वाजपेयी के। काफी

भीड़ थी। लोगों ने बधाइयां दीं। मिल में आकर थोड़ी देर काम देखा। शाम तक घर में लोगों की भीड़ लग गयी, मन में प्रसन्नता हुई।

१६ जून : तार, चिट्ठियां बधाई की आती जा रही हैं, मिलनेवाले लोग भी आते हैं। मन में प्रसन्नता है परन्तु शरीर में बहुत ही थकावट मालूम देती है, जैसे गिरता जाता है।

९ जुलाई : पिछले कई दिनों से महापालिका का काम देखने लग गया हूँ, व्यस्त रहना पड़ता है, सुबह चक्कर लगाने शहर में जाता हूँ। बड़ा दफ्तर है जंचाना पड़ेगा, ऐसा लगता है, जम जाऊंगा। आर० पी० एन० सिन्हा सपरिवार घर पर ठहरे हैं।

१० जुलाई : एल्गिन का काम सुबह देखकर ५वीं गुमटी की तरफ निकल गया। काफी मेला सा लग गया, रास्ता रोका हुआ था। महापालिका के एक आफिसर को सस्पेन्ड किया गया। महापालिका के काम में बहुत दौड़-धूप करनी पड़ रही है परन्तु सन्तोष रहेगा यदि इस महानगर की कुछ भी सेवा कर पाया। लिखना एकदम बन्द है। डायरी तक नहीं लिख पाता, थकावट आ जाती है।

११ जुलाई : सुबह ५ बजे उठा। तेल मालिश करायी, स्नान किया। ८ बजे रतनलाल जी शर्मा और तीन-चार आदमी आये। ८॥ बजे हड़ताली भंगियों में थोड़ा सा बोला। हड़ताल टूट गयी, ऐसा सुना है। ९॥ बजे मल्ला के गये, पचास हजार दे रहे हैं, अस्पताल के लिये। एक बजे तक महापालिका में था। कई लोग मिले। आफिसरों से बातचीत की। काम में कठिनाइयां बहुत हैं, परन्तु लगता है पार पड़ जायगा, काम भी होगा। दिन में ३॥ बजे कूपर एलेन के वास्ते लेबर कमिश्नर के पास गया।

१९ जुलाई : शरीर एकदम थका सा लग रहा है, जैसे लेटा ही रहूं; मन भी सुस्त है। क्यों इतने झंझट में पड़ा? न लिख सकता हूँ, न मन में स्थिरता है। सुबह ८ बजे मिलने वाले लोग आ गये। ९ बजे बाहर निकला। बाजार देखा। शाम को तिलक हॉल में मीटिंग हुई।

२० जुलाई : सुबह लखनऊ गया। ११ बजे सी० बी० गुप्ता से मिला। त्रिपाठी जी बहुगुणा जी, बनारसीदास जी से भी मिला। मंगला प्रसाद जी से मिला। एलाहाबाद वाले पोद्दार जी का काम था, शायद हो जायगा। मन में एक खुशी सी है। कानपुर का काम कर रहा हूँ। बंगला ठीक से जंचा लिया है।

२१ जुलाई : शाम को ४ बजे महापालिका की मीटिंग हुई, पहली मीटिंग थी, प्रायः सब मेम्बर उपस्थित थे। वाइफ भी थी। मेरी जान में मैंने अच्छी तरह से मीटिंग का संचालन किया। थकावट तो आ ही जाती है।

नयी दिल्ली

२२ जुलाई : पी० डी० शाम को आये। शाम को मुरारजी भाई से मिला, कान्ति

भाई देसाई से भी। दिन में पार्लियामेंट में था। कपूर से मिला; फाइवर के लिये। काम हो रहा है। जज साहव से मिला। सरदी नहीं है। दिल्ली में मन लग जाता है। ऐसा लगता है संजीव रेड्डी जीत जायेंगे, मुरार जी भाई का कहना है। परन्तु इन्दिरा जी का रुख मुझे साफ नहीं लगता है। अभी कुछ कहना कठिन है। शाम को राजपाल से ४०००) की किताबें ले आया।

२३ जुलाई : १० वजे फखरुद्दीन जी से मिला। कूपर एलेन की बात की। दिन में १ वजे चिरंजीलाल जी आये, सौभाग्यमल जी भी थे। व्यावर की मिल की वात करते रहे। उनका लेने का मन है। आज चांद पर से लोग वापस आ गये। विज्ञान ने बहुत प्रगति की है।

कानपुर

२७ जुलाई : सुवह ६॥ वजे लखनऊ गया था। गुप्ता जी से मिला परन्तु वातें नहीं हो सकीं। वाइफ को काफी काम करना पड़ रहा है। कारण राधेश्याम नौकर नहीं है। मिलने-जुलने वाले बहुत आते हैं, वाहर के दो-तीन व्यक्ति आये हैं, सवके लिये चाय, नाश्ता, भोजन तैयार करना पड़ता है, मेरा तो ऐसा ही अड़ंगा है। दिन में गवर्नर से मिला। रात में लायन्स क्लव की मीटिंग में गया। गवर्नर आये थे मेरा भी भाषण हुआ, वहुत अच्छा वोल सका। कमिश्नर, कलक्कटर और भी काफी लोग थे।

२८ जुलाई : सुवह तेल मालिश कराकर गोविन्द नगर देखने गया। काफी गंदगी और सड़ांध फैली थी। इसका वन्दोवस्त जरूरी है। कर्मचारियों की लापरवाही है, यूनियन के कारण अनुशासन नहीं मानते। नागरिक भी सफाई का ध्यान नहीं रखते, यह भी समस्या हैं। सिखों का गुरुद्वारा, सनातन स्कूल, आर्य समाज स्कूल आदि बहुत सी जगहों पर गया। ऐसा लगता है, कारपोरेशन का काम एक वहुत ही झंझट का काम है, कितना कर पाऊंगा, कह नहीं सकता। विना टीम स्पिरिट के पक्की सफलता नहीं हो सकती, यही मुश्किल की वात है।

२९ जुलाई : सुवह ग्वालटोली की तरफ निकल गया। काफी गंदगी है। मकवरे की वस्तियां, झुग्गियां अकेले ही हर तरह की वीमारियां और अपराध वढ़ाने के लिये काफी हैं। वड़ी समस्या है। विदेशों में इटली, मिश्र, टर्की वगैरह में भी इस ढंग की नहीं देखने में आयीं। कलकत्ते में भी नहीं। क्या किया जाय, कुछ समझ में नहीं आता। वहुत वड़े रुपयों की जरूरत पड़ेगी, टाइम भी लगेगा। सवसे पहले सफाई और स्वास्थ्य के वारे में वताना जरूरी है। दिन में कॉटेक्स, लाल इमली और एलगिन गया, काम देखा। ३ वजे इंजीनियर्स मीटिंग, ४ वजे व्यायामशाला, ५ वजे हिन्दी भवन, ६॥ वजे

से ७॥ बजे तक गुरु पूर्णिमा फिर ७॥ बजे से लायन्स क्लब की मीटिंग में जाना पड़ा और भी मीटिंग थे पर समय नहीं निकाल पाया।

३० जुलाई : सुबह बेनाझावर और नहरिया की ओर देखने गया। नहरिया की तरफ तो गैरकानूनी घुसपैठ बहुत है। कैसे यह सब चलता रहा, समझ में नहीं आता। नियम का पालन तो एडमिनिस्ट्रेशन के डिपार्टमेन्टों के आपसी सहयोग से होता है। परन्तु हमारे देश में इसी बात की कमी है। स्वतन्त्रता के बाद से हालत और भी खराब होती गयी। नैतिकता गिरी है और इसका फल भुगतना होगा। एल्गिन, लाल इमली और कॉटेक्स का काम दिन में देखता रहा। सदरलैण्ड हाउस बिकने की बात चल रही है।

७ अगस्त : सुबह रावतपुर की तरफ गया। इतना ज्यादा एनक्रोचमेन्ट है कि मन में क्षोभ हुआ। वर्षों से यह सब होता रहा अब सुधारने में कितना समय लगेगा, कह नहीं सकता। मेयर को कार्यकाल का जो समय मिलता है, उसमें बहुत ही थोड़ा डेवलपमेन्ट या सुधार करने का मौका मिलता है। परन्तु पुलिस, लोकल-सेल्फ विभाग और महापालिका के अफसर अपनी जिम्मेदारी सचाई से निभाते नहीं। इसीलिये हालत बिगड़ती है।

८ अगस्त : सुबह एक आदमी एल्गिन मिल का आया। ४० वर्ष नौकरी की। अब उसको क्वार्टर से निकाला जा रहा है। उसका लड़का मिल में काम करता है। उसको वेलफेयर ऑफिसर गोयल पर चिट्ठी दी कि क्वार्टर लड़के को दे दिया जाय। कम तनख्वाह, बड़ा परिवार कैसे गुजारा करेगा, क्वार्टर छूटने पर? विचार आते हैं कि कर्मचारी मजदूरों के लिये अच्छी हाउसिंग स्कीम बनवा दूं। सुबह बाबू पुरवा की तरफ गया था, वैसी ही समस्या है, कितना कर पाऊंगा पता नहीं। शाम को बी० बी० लाल चीफ सेक्रेटरी और निगम एल० एस० डी० के आये। मैंने अपने विचार बताए। बच्चों के लिये पुतली घर की जगह देखी।

१२ अगस्त : दिन में एल्गिन और कॉटेक्स की मीटिंग थी। बी० आई० सी० के शेयर लेने की बात कॉटेक्स से पास करायी, साढ़े चार लाख के लिये। नफा दोनों में ठीक चल रहा है।

१७ अगस्त : सारे दिन लोगों से मिलता रहा। रविवार का दिन है, बहुत से प्रोग्राम हैं। शाम को ५॥ बजे अतिउर रहमान एल० एस० डी० मिनिस्टर आये, उनको पार्टी दी थी। प्रायः ८० आदमी शामिल हुए। अच्छा रहा। इससे पहले इकबाल लायलपुरी के मुशायरा का उद्घाटन करने गया। १५० व्यक्ति थे, थोड़ा सा बोला भी। आज का दिन बहुत व्यस्त रहा।

कलकत्ता

१८ अगस्त : सुबह रामेश्वर साह के साथ कार से सुबह ७॥ बजे लखनऊ एयरपोर्ट पूगा। प्लेन थोड़ा लेट था इसलिये मिल गया। ११॥ बजे कलकत्ता पूगा। पिछले सात महीनों में भरतिया में ९+डी० पी० का घाटा है, वेजिटेबल में १५ का नफा है। लुकवा समान सा चल रहा है। सीताराम मिल में अगस्त-सितम्बर में १५ लाख का ग्रॉस नफा रहेगा। कलकत्ता में इतने वर्षों से रहता आया हूँ, अपनापन सा हो गया है, मन लग जाता है।

१९ अगस्त : बाजार कुछ मंदा है। शेयर मार्केट भी गया। २००० मोटर, ५०० जी० के० डब्ल्यु० के शेयर लिये। दिन में ऑफिस में था। शाम को सत्यनारायण जी पोद्दार के गया, उनकी तबियत खराब हो गयी है। रतनी और परमा के भी गया। बी० आई० सी० के कोटेशन ५=) कर दिये हैं।

२० अगस्त : शाम को ५॥ बजे कैलकटा क्लब में गोविन्द जी के साथ गया। मुझे भंडारी जी ने पार्टी दी थी। ३० व्यक्ति थे। दिन में तो मन में खुशी थी। परन्तु रात में वी० वी० गिरि की राष्ट्रपति पद के लिये जीत सुनकर उदासी आयी। गोविन्द जी से रेड्डी के जीतने का सौदा किया था। मुझे रेड्डी की जीत का सन्देह था परन्तु फजूल सौदा किया। सट्टा या फाटका में हमेशा खो देता हूं, फिर भी करता हूँ, बहुत बड़ी गलती है।

नयी दिल्ली

३० अगस्त : ऐसा लगता है कि इन्दिरा जी का पावर बहुत बढ़ गया है। दिन में लोगों से मिलता रहा। पार्लियामेन्ट हाउस गया। कम्पनी लॉ के मि० सेनगुप्ता से मिला। ११% कमिशन कॉटेक्स की जल्दी ही हो जायगी। ऐसी आशा है। दिल्ली की यात्रा कुल मिलाकर अच्छी रही।

कानपुर

३१ अगस्त : कानपुर सुबह ६ बजे पूगा। १०॥ बजे कार से लखनऊ के लिये रवाना हुआ। वाइफ साथ में थी। लखनऊ में सी० बी० गुप्ता, त्रिपाठी जी, बनारसी दास जी और बहुगुणा जी से मिला। ५ बजे वापिस लौटा। ६ बजे से ८ बजे तक सिटी कांग्रेस की ऑफिस में मीटिंग थी, इन्दिरा जी के अभिनन्दन के लिये। महावीर जी त्यागी के लिये लखनऊ में बात की। उनकी सीट शायद हो जाय अगर प्राइम मिनिस्टर सपोर्ट कर

१ सितम्बर : सुबह शहर के दौरे पर निकला। फिर एल्गिन और लाल इमली का काम एक बजे तक देखा। के० एल० ढांढनियाजी आए, उन्हें कार दी। ११॥ से १२॥ बजे तक कारपोरेशन में था फिर ३ बजे से ४ बजे तक कलक्टर के बंगले पर। इन्दिरा गांधी की मीटिंग थी, उसमें गया।

२ सितम्बर : सुबह ५॥ बजे उठा। घूमने नहीं जा सका। मिलने वाले ९ बजे तक आते ही रहे। किसी तरह तैयार होकर ९। बजे पी० एन० बी० की आजादनगर की एक शाखा का उद्घाटन करने गया। ११ बजे से १२॥ बजे तक एल्गिन में था। घर आकर भोजन किया। ब्लड प्रेशर ९८/१५० है। एक लेख शिक्षा पर लिखा।

४ सितम्बर : तिवारीजी की चाय पार्टी थी। आज शाम को मेरे घर पर एक्जक्युटिव की मीटिंग थी, २० आदमी आए थे, काफी ढंग से चली। मेरी तबीयत सुस्त थी। मैं चुपचाप सुनता रहा। ८॥ बजे लोग गए।

५ सितम्बर : कारपोरेशन की मीटिंग शाम को चार घंटे चली। मंडी का मसला था, पास हो गया, चिंता मिटी। काफी परेशानी होती है। परंतु उपाय क्या, इसे मैंने स्वयं स्वीकार किया है। ब्लड प्रेशर ११०/१६० है। कारपोरेशन के कारण बी० आई० सी० का काम कम देख पाता हूँ।

६ सितम्बर : दिन में कारपोरेशन नहीं जा पाया। इन्दिराजी को लाने एयर पोर्ट गया। पहली माला मैंने पहनायी। कुछ नाराज सी लगीं। शायद मुझे मनुभाई, मुरारजी भाई, सी० बी० गुप्ताजी का आदमी समझती हैं। परंतु मेरे मन में अब तक किसी गुटबंदी में जाने की बात नहीं। अब तो एम० पी० भी नहीं रहा : जब था, तब भी गुट में नहीं जुड़ा। ५ बजे वर्कर्स मीटिंग थी। ७ बजे पब्लिक मीटिंग में इन्दिराजी को धन्यवाद मैंने दिया।

७ सितम्बर : सुबह ७ बजे उठा। मालिश करायी। ८ बजे सतीशजी के साथ सर्किट हाउस चाय पर गया। ऐसा लगता है इन्दिराजी मुझसे खुश नहीं हैं। शायद किसी ने शिकायत की है। इसका क्या उपाय? ९॥ बजे वहाँ से सद्गुरु शरणजी अवस्थी के प्रवचन (रामायण) में मैं भी क्लब में गया था, सवा घंटे रहा, बहुत अच्छा बोले, मुझे शांति मिली। अवस्थीजी की स्मृति बहुत ही जबर्दस्त है। कभी मेरी भी थी पर अब तो कुछ भी नहीं, भूलने लगा हूँ। शरीर में कमजोरी भी मालूम देती है। सुबह बी० एल० बाजोरिया आए थे। मिल का काम करता हूँ। मिल में नफा भी अच्छा हो रहा है। प्रॉब्लेम्स कम होते जा रहे हैं। फिर भी मन में संतोष नहीं। बहुत अड़चनें हैं।

दिल्ली-झूंझनू

१० सितम्बर : सुबह ११ बजे कार में दिल्ली से चले, श्रीप्रकाश जी साथ थे। झूंझनू ३॥ बजे पूगे, मीटिंग ४ बजे की थी। मीटिंग बहुत ही अच्छी रही। काफी लोग थे, मैं भी बोला। रात में मन्दिर के दर्शन किए। श्रीप्रकाश जी का अच्छा सम्मान हुआ। उनका भाषण भी अच्छा हुआ। विद्वान् तो हैं ही। रात में करोड़िया की बगीची में खाना खाया। वहीं सोया भी। वाइफ और राजू के साथ रहने से अच्छा रहा। उन्हें भी नयी जगह और मेला देखने का अवसर मिला।

झूंझनू-सरदार शहर

११ सितम्बर : सुबह कार से चले। ११॥ बजे सरदार शहर पूगे। १ बजे सुमेरमल जी के खाना खाया, रात का खाना कन्हैयालाल जी दूगड़ के यहाँ। गांधी विद्या मन्दिर, टांटिया कन्या विद्यालय, बाल मन्दिर, बालिका विद्यालय आदि संस्थाएं श्रीप्रकाश जी ने देखी। रात में पब्लिक लाइब्रेरी में मीटिंग हुई, काफी लोग थे। और भी मीटिंगें हुईं, मैं भी इनमें बोला। श्रीप्रकाश जी के भाषण अच्छे रहे। कुल मिलाकर सरदार शहर आना अच्छा रहा परंतु श्रीप्रकाश जी काफी थक गए, रात ११ बज गए थे।

सरदार शहर-झूंझनू-दिल्ली

१२ सितम्बर : सुबह सरदार शहर से चले, झूंझनू १०॥ बजे पूगे। श्रीप्रकाश जी साथ में थे, मोटर में ज्यादा भीड़ हो गयी थी। झूंझनू में खाना खाया। १२ बजे चले, ४॥ बजे दिल्ली पूगे। पार्लियामेंट हाउस गया। अखबार पढ़े। वाइफ, राजू, श्रीप्रकाश जी, संतोष साथ में हैं। बारह महीने बाद सरदार शहर गए थे, लोगों से मिले। इन तीन दिनों में एक तरह से काम के झंझटों से हट कर शांति मिली। मेयर के काम में इज्जत तो है परंतु सभासदों की तरफ से बहुत बाधाएं आती हैं, कभी-कभी तो बिना कारण की। इससे मन खराब हो जाता है, उत्साह भी नहीं रहता। एक प्रकार का भय-सा रहता है। ऐसा लगता है क्यों इतने झंझट में फंस कर आयु में कमी की।

कानपुर

१३ सितम्बर : शाम को दो मीटिंगें कीं। दिन में कारपेरेशन का दफ्तर बंद था। मिलों में गया। लाल इमली में काठ के काम में तीन-चार लाख की गड़बड़ हो गयी है। मैनेजमेंट खराब है। जैनियों का पर्व था, उसमें गया, वहाँ बोला भी, शायद अच्छी तरह। एक जैन मुनि की किताब पढ़ रहा था। उसमें लिखा था कि 'भौतिक पदार्थों की जितनी उपलब्धि होती है, उतना ही दुख बढ़ता जाता है।' वास्तव में यह बात सही है। मेरा अपना अनुभव भी यही है।

१४ सितम्बर : सी० वी० गुप्त आए, उनकी चार मीटिंगें थी। चेम्बर की मीटिंग में मेरा नाम लिया। बाल मन्दिर की मीटिंग में मैंने धन्यवाद ज्ञापन किया। दिन में लोगों से मिलता रहा। ब्लड प्रेशर ऊँचा रहता है, थोड़ा रेस्ट भी लिया।

१५ सितम्बर : सुबह कॉटेक्स की तरफ गया। शहर के दौरे पर भी गया। ब्लड प्रेशर ११०/१७० है। दवा ले रहा हूँ। इलाज पूरा नहीं हो पाता इसलिए फायदा भी नहीं होता। चिंता रहती ही है। ५ वजे से ५।।। वजे तक लाल इमली में वी० एल० के आने की वात थी, आए नहीं। ६ वजे से ७। वजे तक मर्चेन्ट चेम्बर में इंजीनियर्स मीटिंग थी। वहुत अच्छा वोल सका, लोगों ने पसंद किया। प्रताप नारायण श्रीवास्तव, हिन्दी लेखक मिलने आए थे।

१६ सितम्बर : सुबह ८।। वजे हरवंस मोहल्ला में गया। भंगियों के मोहल्ले देखे। जिस प्रकार की गन्दगी, दुख और संकट में लोग रहते हैं, देखकर ऐसा लगता है कि वहुत कठिन समस्या है। शिक्षा, संस्कार, दरिद्रता, अधिक सन्तान सव कुछ वहुत ही जटिल है। सदियों से ऐसी हालत में रहने के शायद अभ्यस्त हो गए हैं। लोगों से वात की। लगता है पैसे को सव से वड़ा साधन मानते हैं और कुछ नहीं चाहते। मगर पैसा जो भी मिलता है, नशाखोरी और खाने-पीने में उड़ा देते हैं, सिनेमा में भी। ऐसी जगहों पर सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की सेवा वहुत जरूरी है। मगर अव कौन सामने आए ? गांधी जी का जमाना चला गया। ११ से १२। वजे घर में कूपर एलेन के हरवंस सिंह से मिला। जूते हम लोग वेचेंगे यह तय किया। ३ वजे तक सदरलैंड हाउस में था, ३।। वजे तक स्टेशन राजू और उसकी माँ को 'सी ऑफ' करने गया।

१८ सितम्बर : सुवह लाल वंगले की तरफ इस्पेक्शन में गया। वहाँ एयर कमांडर ने चाय पर वुलाया। उसका कहना था कि एनक्रोचमेंट बुरे हो रहे हैं, उनको रोकना चाहिए। लोगों की काफी भीड़ थी। मीटिंग हुई। ११ वजे वहाँ से लाल इमली आए। एल्गिन में भी काम देखा। १ वजे घर वापिस आया। ४।। वजे महापालिका गया, वहाँ भी काफी लोग थे।

२३ सितम्बर : प्रतिदिन प्रायः दस-पन्द्रह लोग सवेरे ही मिलने आ जाते हैं। आज ९।। वजे तक आते रहे। शंकर टांटिया कलकत्ते से आया, उसके भी प्रॉव्लेम है, सल्टाना होगा। लाल इमली १२ वजे तक रहा। प्रायः दो-ढाई लाख की चोरी हो गयी है, आदमियों को हटा दिया। लोगों में डर वना हुआ है। १२ वजे से १ वजे तक एल्गिन में था। अथर्टन वेस्ट शायद वंद हो जायगी। ३ वजे सदरलैंड हाउस गया। ३।। वजे जटाधर जी वाजपेयी के साथ महापालिका। वहाँ दो मीटिंगें थी। आपस में काफी झंझट हुआ। मीटिंग वीच में स्थगित हो गयी।

कलकत्ता

२७ सितम्बर : सुबह ९ वजे पूगा। नन्दू, राजू दोनों स्टेशन पर थे। काम एक रकम ठीक चल रहा है। रतनी के पास गया, काफी वीमार है। मेरा आना जरूरी था।

२९ सितम्बर : सुबह विक्टोरिया गया, लोगों से मिला। यहाँ का काम काज देखा। घर के दूसरे लोगों ने शाम को राजू के लिए लड़की देखी, जंची नहीं। मेरे मन में थोड़ा-संकोच हुआ। हर लड़की वाले के ऐसी समस्या आती है। लड़कियों के मन पर भी इसका कुछ तो प्रभाव पड़ता होगा। दिन में ऑफिस में कई लोग आए, उनसे वातें करता रहा। कलकत्ते के तीन दिन काफी काम के रहे।

कानपुर

१ अक्तूवर : ११। वजे तक एल्गिन का काम देखता रहा। ११॥ वजे वी० एन० एस० डी० कालेज गया। वहीं हरिजनों का वनाया भोजन उनके साथ किया। कोई नयी वात नहीं थी परंतु उत्तर प्रदेश में जातिवाद कुछ है, इसलिए ऐसी वातों का महत्व वढ़ जाता है। वहुत से समझते थे कि मैं नहीं आऊँगा। ५ वजे 'वाल मेला' में गया। वहाँ से ६। वजे प्रताप नारायण जी श्रीवास्तव के साथ वालनिकेतन में। ७॥ से ९ वजे तक क्लव में। ९ से १०। वजे तक युवक समाज के संगीत समारोह में।

६ अक्तूवर : कल चुनाव के काम से निकला था। ५०००) रु० के सामान दिए। परंतु आज नहीं गया। दिन में लोगों को निमंत्रण देता रहा। शाम को सर पदमपत के घर गया। मिलों में काफी टाइम दिया। कूपर एवेन के जूते ठीक विक रहे हैं। काम तो वहुत है, दिन भर व्यस्त रहना पड़ता है परंतु रात में जव नींद नहीं आती, कैसा सा लगता है। पढ़ाई भी नहीं हो पाती, व्लड प्रेशर के कारण।

७ अक्तूवर : सुवह लाल इमली गया, वी० एल० भी थे। फिर ९। वजे चुनाव में। दिन में विद्यासागर जी से झंझट सा हुआ। शाम को ७ वजे नगर महापालिका आया। गवर्नर ७॥ वजे आए। स्वामी जी का प्रवचन ८ से ९। वजे तक सुना। घर पर ६० व्यक्ति, खाने पर आए। सर पदमपत, मंगतूरामजी, जयपुरिया तथा वहुत से ऑफिसर थे; कलक्टर, ए० डी० एम० तथा दूसरे वैंक वाले भी। खर्च तो ४००) रु० हुए, परंतु पार्टी अच्छी रही। रात में ११ वजे रासलीला देखने गया। अच्छा रहा।

८ अक्तूवर : सुवह ७ वजे चुनाव में गया, मालवीय जी थे। जटाघर, विद्यासागर नहीं आए,। १० वजे जटाधर, विद्यासागर सव लाल इमली आए। विद्यासागर जी ने एक प्रकार से झगड़ा किया था, मन खराव हो गया है। ११ से १२ वजे तक एल्गिन में था। ३ वजे तक घर में। वीच में चिरंजी के साथ दुकान देखने गया। ३॥ से ४॥ वजे तक उस में था। ७॥ वजे दरोगा राय (विहार मंत्री) तथा सारन के कई आदमी

आए। हम लोग कार से लखनऊ आए। राजू साथ में था, टी० एस० हितकारी भी। आज महापालिका की मीटिंग बिना झंझट के ठीक सी हो गयी थी।

नैनीताल

९ अक्तूबर : सुबह ७॥। बजे काठगोदाम पुगे। थोड़ी सर्दी सी थी। टेक्सी से चले, ९। बजे नैनीताल जगाती होटल में पुगे। ११ बजे मीटिंग में गए। दिन में डिबेट में रामरतन जी गुप्त बहुत अच्छा बोले। कुल ४ मील घूमा हूँगा। थोड़ी थकावट सी आयी। सी० बी० गुप्ता जी से बात हुई। रात में मोदी जी के साथ बोट क्लब में खाना खाया। राजू साथ था, अच्छा रहा। उसको परसों डायरेक्टर बना लेंगे। मन में एक प्रकार की खुशी होती है। यहाँ थोड़ी सर्दी है। कुल मिला कर दिन अच्छा ही रहा।

अकोला

१४ अक्तूबर : सुबह स्टेशन पुगे। दो आदमी कार लेकर आए थे। पन्नालाल जी हीरालाल रुई के व्यापारी के यहाँ रहा। राधादेवी जी गोयनका, बैजनाथ जी डालमिया तथा और लोगों से मिला। चिम्मनलाल जी भरतिया से भी। ४॥ बजे अग्रसेन भवन में मीटिंग हुई। आधे घंटे बोला। ६ बजे देशमुख वाचनालय की मीटिंग टाउन हॉल में हुई। १०० के लगभग व्यक्ति थे, एक घंटा बोला पर्यटन पर, अच्छा रहा। लोगों ने ध्यान से सुना। रात का भोजन बैजनाथ जी डालमिया के किया। ९। बजे भरतिया जी के आया। कुल मिलाकर आज मन में संतोष रहा। रात में हीरालाल जी के घर सोया। व्यवस्था अच्छी थी, आराम रहा।

अमरावती

१५ अक्तूबर : दिन में भाई जी से बातें करता रहा। सगाई की उनको जंच गयी है। खेती में कुछ नहीं हो रहा है। भगवती इधर कारबार करने की सोच रहा है।

बम्बई

१६ अक्तूबर : रुईवाले मिलने आते रहे। रुई का बाजार मंदा है और भी मंदा जाने की धारणा है। बम्बई की आबहवा काफी अच्छी है। मदन से मिल के बारे में बात हुई, ठीक चल रही है। अप्रैल-सितम्बर तक ग्यारह-बारह लाख का ग्रॉस फायदा बतलाता है।

ब्यावर

१९ अक्तूबर : रात में सुखाड़ियाजी के साथ अजमेर तक आया। सारी बात ब्यावर मिल के बारे में हुई। उन्होंने ३० ता० को जयपुर मुझे बुलाया है। मिल अब नफे में चल सकती है। रुई के भाव में २५० प्रति खांदी की मंदी आयी है। कपड़ा समान है। सौभाग्य जी का हिस्सा रखने का मन है।

नयी दिल्ली

२१ अक्तूबर : सुबह उठा। एक मील घूमने गया। ब्लड प्रेशर ८५/१४० है। दिन में कपूर से मिला। ४।। बजे श्री पंत से ओम के साथ मिला। ओम ने कारखाने में कुछ सुधार बतलाया। किताबों की दुकान पर गया, ५००) रु० की किताबें लीं।

कानपुर

२३ अक्तूबर : सुबह एक मील घूमा। ८ बजे तक घर में था। मिलने वाले आते रहे। ९।। बजे लाल इमली में गया। ११।। बजे तक था। अथर्टन वेस्ट और ब्यावर की मिलें लेने का तय किया है। शाम को गवर्नर की मीटिंग में गया।

२४ अक्तूबर : ४।। बजे महापालिका की मीटिंग शुरू हुई। लोगों में काफी रोष था। विद्यासागरजी बुरा नहीं बोले। और लोग भी ठीक बोले। मैंने तीन दिन का व्रत रखकर प्रायश्चित करना निश्चय किया। ६।। बजे सी० बी० गुप्त की पार्टी में गया और भी दस-बारह व्यक्ति थे। काफी बातचीत हुई। ऐसा लगता है, ये लोग हार जायेंगे। दिन में लाल इमली, एल्गिन में था। सुबह घूमने नहीं जा सका। नथमल जी सेठिया का पत्र था, ब्यावर मिल के बारे में।

२५ अक्तूबर : मेरे व्रत के बारे में अखबार में आया है। १०।। बजे विद्यासागर जी के कहानी सम्मेलन में गया। थोड़ा सा बोला भी। ११।।। बजे एल्गिन आया। अखबारों में एक स्टेटमेन्ट अपने व्रत के बारे में दिया। बहुगुणाजी आए, उनसे बातचीत की।

२६ अक्तूबर : आज उपवास का दूसरा दिन है। लोग मिलने वाले आते रहे। मन में एक प्रकार की शांति है। शहर में कुछ अच्छी हवा है कि मैंने जो कुछ किया, वह सही है। कमजोरी नहीं मालूम पड़ रही है। ब्लड प्रेशर १००/१५० है।

२७ अक्तूबर : व्रत का तीसरा दिन है, कमजोरी कुछ मालूम दी। दिन में नींबू पानी एक बार लिया। ब्लड प्रेशर ९०/१३० है। बातचीत करता रहा। १० बजे शुगर कंपनियों की दो मीटिंगें थीं, अटेन्ड किया। ११।। बजे कारपोरेशन चला गया और भी ४० सदस्य थे। २ बजे ए० डी० एम० ने विश्वास दिलाया, उपवास तोड़ दिया। अखबार वाले और लोग भी थे। विद्यासागरजी ने उपवास का विरोध किया था।

२८ अक्तूबर : राधाकृष्णजी वाइस चांसलर के साथ सुबह ६ बजे लखनऊ गया। सारे दिन लखनऊ में था। श्री प्रकाश जी से मिला। शाम को कारपोरेशन की मीटिंग थी, भूल गया। ५।।। बजे आया। लोग काफी नाराज थे। ७।। बजे तक मीटिंग चली। विद्यासागरजी ने बहुत प्रकार से बुरा-बकवास करना शुरू किया। लोगों ने उन्हें बुरा-भला कहा, मन में चिंता भी हुई। उपवास का कुछ असर पड़ा, ऐसा लगता है।

जयपुर

३० अक्तूबर : सुबह ५ बजे जयपुर पूगा। गेस्ट हाउस गया, स्नान वगैरह कर तैयार हो गया। चन्दनमल जी के गया। वहाँ से मूलचन्द जी सेठिया के घर। ९॥ बजे हरिदेव जोशी के यहाँ। १०॥ बजे सुखाड़िया जी के यहाँ, ११ बजे तक था। सारी बातें हुईं। सुखाड़िया जी ने कल इन्दिरा जी के लिए मतों का कह दिया है। ए० आई० सी० सी० के लोगों को बुलाकर तय कर दिया है। ब्यावर मिल के बारे में दस लाख के लोन की बात हो गयी है।

कानपुर

२ नवम्बर : सुबह मैदान नहीं घूमने गया। ८ बजे श्री प्रेमचन्द के यहाँ से रावतपुर कालोनी देखी। अफसरों के एक सौ नब्बे घर हैं। साफ जगह है, खुली हुई। ९॥ बजे पी० पी० एन० मार्केट में एक दुकान का उद्घाटन करने गया। मन में इस ढंग के काम से कैसा सा लगता है। उद्घाटन का शुभ काम तो पुरोहित या आचार्य का है परंतु अब पाश्चात्य की नकल में वह नयी प्रथा अपने यहाँ भी चल पड़ी है। इसमें पब्लिसिटी अच्छी मिल जाती होगी। परंतु उद्घाटन के दिन कम मुनाफे पर माल बेचने पर भी दुकान को बहुत अच्छी पब्लिसिटी मिल सकती है। १० बजे से १२॥ बजे तक बाजोरिया जी के यहाँ एल्गिन की बातें करता रहा। ३ बजे प्रभाकर जी त्रिपाठी के साथ गोविन्द नगर गया, झोपड़ियाँ और बस्ती देखी। मेरे आने पर लोगों को जितना सन्तोष होता है और आशा बंधती है, उतना ही संकोच मेरे मन में होता है। कितना कर सकूँगा, क्या कर पाऊँगा, मेरे कार्यकाल का समय भी कितना है, सभी बातें दिमाग में घूमने लगती हैं। ५ बजे डा० जवाहरलाल के गया। कांग्रेस को २०००) का विज्ञापन देने का कहा।

५ नवम्बर : दिल्ली से एल० एन० मिश्रा का फोन आया, मुझे बुलाया है। रात की ट्रेन से रवाना हुआ।

नयी दिल्ली

६ नवम्बर : दिन में बी० पी० बाजोरिया, गंगाबाबू, एल० एन० मिश्रा से मिला। सारी बातें हुईं। रात में चिरंजीलाल जी से मिल के बारे में बात की। दिल्ली की यात्रा एक प्रकार से अच्छी रही। कांग्रेस तो टूट रही है। बड़े लोगों की खींचतान में पार्टी के टूटने से देश को बहुत नुकसान उठाना पड़ेगा। कोई दूसरी पार्टी सामने दिखायी नहीं पड़ती। कम्युनिस्टों को अच्छा मौका मिल रहा है। स्वतन्त्र पार्टी नाम की रह गयी। जनसंघ अभी इतनी बड़ी पार्टी नहीं बन पाया है, दक्षिण भारत में तो बिलकुल ही नहीं है। वैसे इन्दिरा जी का पावर बढ़ रहा है, शायद कम्युनिस्ट और द्रमुक का सहयोग ले सकती हैं। कुछ सोशलिस्ट और इन्डिपेन्डेन्ट से भी बातचीत चलने की सुनने में आती है।

पटना (ट्रेन)–कलकत्ता

८ नवम्बर : सुबह पटना में आँख खुली। रामसुभग जी आये थे। स्टेशन पर बहुत भीड़ थी। एक हजार व्यक्ति आये थे। के० बी० सहाय, महेश बाबू, सबसे मिला। डेढ़ घंटा पटना रहा। दूसरी ट्रेन एक बजे मिली। जगह मिल गयी। दिन में किताबें पढ़ता रहा। शाम को ५॥ बजे हवड़ा पूगा। सबसे मिला। एस० एन० टी०, एन० एल० टी०, ओम आदि सबसे बातें कीं। कलकत्ते कम समय रह पाता हूँ। मन तो बहुत करता है पर नाना प्रकार के झंझटों के आगे वश चलता नहीं। कुछ लिख नहीं पा रहा हूँ।

९ नवम्बर : भरतिया एकदम खराब चल रही हैं। वेजिटेबल अच्छी चल रही है। दिन में एक बजे चन्देवाले दो-तीन व्यक्ति आये। ११००) दिये। दीपचन्द जी नाहटा के कल जीमने का रखा। २ बजे से २॥ बजे तक भागीरथ जी के, ४ से ५ बजे तक सीताराम जी सेकसरिया के था। आज दीवाली है। शाम को बच्चे पटाका छुड़ा रहे थे। पाँच सौ, छ सौ के होंगे। बचपन में इतने में हम चार महीनों का खर्च चलाते थे। बच्चों को खुश देखकर अच्छा लग रहा था। रात में गद्दी गये। कई लोगों से मिले। नाना प्रकार के विचार दीवाली के दिन पैदा हो रहे हैं।

ट्रेन

११ नवम्बर : शाम को ट्रेन से रवाना हो गया। तीन दिन रहा। कलकत्ते में मन लगा रहता है। जीवन में चालीस वर्षों तक यहां रहा। अब ५९ वर्ष की आयु में कानपुर रहने लगा हूँ। वहां न वैसे मित्र हैं न परिचित। वे सब अपने काम से आते हैं।

कानपुर

१७ नवम्बर : सुबह ७ बजे उठा। कल रात में हार्ट में बांयीं तरफ दर्द था। डाक्टर का कहना था कि ब्लड प्रेशर के कारण खून का दौरा ठीक नहीं होने से हुआ। अब कम है। ८॥ बजे घर से निकला। ११ बजे लखनऊ पहुंचा। १२॥ बजे बी० एल० लाल, चीफ सेक्रेटरी से मिला। शायद बीस लाख दे देंगे। मकान सदरलैंड हाउस उनका लेने का मन कम है। इन्दिरा जी का बहुमत पार्लियामेन्ट में हो गया, अब वह अपने को बहुत मजबूत बना लेंगी। पुराने लोग अब शायद कुछ नहीं कर पायेंगे। कुर्सी की बहुत बड़ी ताकत होती है।

२२ नवम्बर : शहर की सफाई कम होती जा रही है। शुरू में तो मेरे भय से अफसर और कर्मचारी ठीक काम करते रहे। परन्तु जानते हैं, मेयर कितना-क्या कर सकता है। कारपोरेशन के सभासद भी शहर की तरफ कम परन्तु अपनों की तरफ ज्यादा देखते हैं। सब ही शहरों में ऐसा होता है, विधान सभा और संसद में भी। फिर काम कैसे हों? फिर भी, जितना बन पड़ेगा करूंगा, मन में पश्चाताप क्यों रखूं?

२५ नवम्बर : सुबह ७।। बजे आलोक जैन जी के लिये एयर पोर्ट गया। सारे दिन उनके साथ था। तीन-चार व्यक्ति और आये थे। मिल को देखा, सारी बातचीत की। रात में ८।। बजे वे लोग चले गये। उन्हें कॉटेक्स, एल्गिन नं० १ और लाल इमली ले गया था, अच्छे खुश थे। कहते थे, चरणसिंह मंत्रिमंडल में आयेंगे।

२८ नवम्बर : सुबह डी० ए० वी० कॉलेज, पोस्ट ग्रेजुएट पॉलिटिकल साइन्स के विद्यार्थियों में भाषण देने को गया। तीन-चार प्रोफेसर थे, एक सौ विद्यार्थी। चालीस मिनट बोला, शायद अच्छा लगा, लोग ध्यान से सुनते रहे। जब कभी भी अच्छा बोला हूँ, मुझे मालूम नहीं कैसे बोल पाया, विचार अपने आप आते रहे हैं। मेरी तबियत खराब थी। मेकरॉबर्ट अस्पताल में दिखाया, बुखार भी था, १०१ डिग्री। दवा ली, घर आकर लेट गया। मन में नाना प्रकार की चिन्ताएं, दुविधायें हैं। पैरों में, शरीर में दर्द है। सारे दिन मदन गोपाल जी कानोड़िया बैठे रहे।

२९ नवम्बर : दिन में तीन डाक्टर आये। बुखार आज नहीं है। और भी बहुत से लोग मिलने को आते रहे। सारे दिन व्यस्त रहा। 'कितना धन कितना मान,' लेख आगे बढ़ रहा है। पुरानी बातें याद आती जा रही हैं। सारे दिन घर में रहा। सुबह १० बजे एक शुगर कम्पनी की मीटिंग थी, उसमें गया। ११।। से १।। तक घर में सारन की मीटिंग थी, उसमें रहा, और लोग भी आये थे।

३० नवम्बर : आराम करना चाहता था परन्तु नहीं हुआ। सारे दिन बहुत से लोग मिलने आते रहे। घर ही पर था। शाम को मदन सिंह जी छाजेड़ सपत्नीक आये, उन्हें एक किताब दी। भले लोग हैं। लोढ़ा जी के बहनोई हैं। रात में 'मेरा गाँव, मेरा बचपन', पढ़ा। मुझे खास पसन्द नहीं आया, वर्णन शैली कमजोर सी लगती है, सुधारूँगा। इन दिनों समय भी नहीं निकाल पा रहा हूं कि ठीक करता चलूँ। शाम को बुखार ९९ डिग्री था।

६ दिसम्बर : डॉक्टर विश्राम के लिए कहते हैं, मुझसे होता नहीं। जीवन में कभी नहीं कर सका, मौका मिलने पर भी। आदत कुछ ऐसी सी है। आज तीन बजे पं० देवदत्त मिश्र और रामरतन जी गुप्ता के साथ इलाहाबाद रवाना हुआ, ६ बजे पूगा। बहुगुणा जी के यहाँ इतनी बड़ी भीड़ लोगों की थी, ऐसा लगा कि लोग केवल पद के पीछे दौड़ते हैं। इतना बड़ा पंडाल, इतना बड़ा खर्च, सब अपने आप में अद्भुत थे। विचार आए, गांधी जी ने कांग्रेस को देश की गरीब जनता का संगठन बनाया। स्वतंत्रता के बाद संगठन धनी बन गया, जनता गरीब ही रह गयी और अब तो बेसहारा। फायदा नेताओं, अफसरों और धनवानों ने उठाया, आगे भी उठाते रहेंगे। मन कैसा सा हो गया। ऐसे में तो फ्रांस और चीन की सी क्रांति मचनी ही है। शाम को ८।। बजे वहाँ से चला और १२।। बजे कानपुर वापस आ गया।

७ दिसम्बर : सुबह ५।। बजे उठा। रात में नींद ठीक से नहीं आयी। नाना प्रकार के विचार आते रहे। सुबह ९।। बजे सिखों के मन्दिर में बावा मोहन सिंह जी के गया। गोपाल रेड्डी भी आए थे। मैं भी थोड़ा बोला। फिर कल्याणपुर में एक साथ लंगर में खाना खाया। अच्छा था। शाम को ५। बजे ज्वाला देवी कालेज में गया, उसमें बोला। फिर ए० एन० डी० कॉलेज में गया, काफी बड़ा जलसा था। मन्दिर देखने गया। रात में रामकिंकर जी का प्रवचन सुनता रहा। बहुत ही अच्छा बोलते हैं। भगवान राम की उन पर विशेष कृपा है, इसमें संदेह नहीं। कल फिर जाऊँगा।

१० दिसम्बर : मीटिंग हुई, काफी झंझट है। ढाई घंटे लगे। सभासदों में झगड़ा है। दिन में एल्गिन नहीं जा सका, लाल इमली गया था। सुबह भवानी प्रसाद जी मिश्र, हिन्दी कवि आए और भी बहुत से लोग आए। दिन में १२। बजे दिनकर जी को पुगाने स्टेशन गया।

कानपुर

२२ दिसम्बर : कमलापति त्रिपाठी जी का स्वागत करने के लिए गंगातट पर गया। एक घंटा खड़ा रहना पड़ा। उनका जुलूस स्टेशन से निकला। सुबह रतनलाल जी शर्मा के घर गया था। एक कार जटाधर जी बाजपेयी और कृष्ण कुमार जी शर्मा के पास रहती है। मन में न जाने क्यों चिंता सी बनी रहती है।

२३ दिसम्बर : सुबह एल्गिन में गया। एक घंटा काम देखा। नरेन्द्रजित सिंह जी को फोन किया, दिल्ली श्री अशोक जैन को फोन किया। दिन में २।। बजे से ४ बजे तक महापालिका में पं० कमलापति त्रिपाठी को अभिनन्दन दिया। ५ बजे एयर पोर्ट नहीं पुग सका, रास्ते में ही माला पहना दी। शाम को के० डी० मालवीय आए, उनके साथ एयर पोर्ट गया। वहाँ कमलापति जी, श्री बहुगुणा, इन्दिरा जी, कपूर जी सब से मिला। इनकी कांग्रेस यहाँ एक प्रकार सफल हो गयी है।

२५ दिसम्बर : राष्ट्रपतिजी को लाने गया, वे ११ बजे आये। एयर पोर्ट पर १२।। बजे सिविक रिसेप्शन दिया। काफी भीड़ थी, अच्छा बोल सका।

२६ दिसम्बर : शाम को ४ बजे चरणसिंह जी को रिसेप्शन दिया, काफी भीड़ थी। सी० बी० गुप्ता आए, उनसे मिला। बातचीत हुई। रतनलाल जी शर्मा को आउट करने की योजना बना रहे हैं।

२७ दिसम्बर : दिन में लाल इमली में श्रीमती रेड्डी (गवर्नर की पत्नी) के साथ था। टंडन ए० डी० एम० भी थे। २ बजे घर आया। बी० एल० बाजोरिया लाल इमली में थे। शाम को बी० आई० सी० क्लब में गया। राजाराम जी जयपुरिया की पार्टी में गया। रात में १० बजे स्टेशन आया, गंगाबाबू के लिए खाना ले गया। शंकर की लड़की दिखायी। कमल शाह आया।

२८ दिसम्बर : शाम को ६॥ बजे श्री नम्बूतिरिपाद को महापालिका में मानपत्र दिया गया। काफी भीड़ थी। दिन में डॉ० जवाहरलाल का फोन था, नगर कांग्रेस के लिए, रुपयों के लिए। राजू बस में खजुराहो गया था, रात में ११ बजे लौटा। भाई जी का बंबई से फोन था, मिल खराब चल रही है। दोनों सगाइयाँ तय हो रही हैं।

२९ दिसम्बर : सुबह ७ बजे श्री पाहवा और ए० के० जैन दिल्ली से आए। उनको श्री प्रकाश जी के घर ठहराया। उनके साथ ११ बजे तक नरेन्द्रजित सिंह के यहाँ अथर्टनवेस्ट के लिए डिस्कशन करते रहे। कॉटेक्स के लिए राजू के साथ स्टेट बैंक ११॥ बजे गया। १२॥ बजे से १ बजे तक लालइमली में था। ६॥ बजे तक एल्गिन मिल में काम देखता रहा। रात में 'मेरा गाँव, मेरा बचपन' पढ़ता रहा। 'सती' कहानी पत्र-पत्रिकाओं में भिजवायी।

३० दिसम्बर : याददाश्त कम होती जा रही है। काम में इतना व्यस्त रहता हूँ कि और कुछ सोच नहीं पाता। बी० आई० सी० का काम ठीक चल रहा है। बाजोरिया लाल इमली में ज्यादा इन्टरेस्ट लेते हैं।

३१ दिसम्बर : वर्ष का अन्तिम दिन है। यह वर्ष कुल मिला कर मिश्रित रहा। भरतिया स्टील, सीताराम मिल खराब चली। वेजिटबल फैक्टरी अच्छी चली। चाय का बगीचा भी साधारणतया ठीक है। कानपुर में मेरी इज्जत बढ़ी और काम में भी मन लगा। मेयरशिप मिली, काम भी काफी किया, कुछ अंशों तक सफल भी रहा, इतना संतोष है। ब्यावर मिल बंद हो गयी। कांग्रेस के दो दल हो गए। इन्दिरा जी का जोर ज्यादा है और भी शायद बढ़ेगा। मेरा झुकाव सिन्डिकेट की तरफ है, इससे मुझे नुक्सान पहुँच सकता है। वैसे राजनीति के प्रति रुचि कम हो रही है। मन में नाना प्रकार की चितायें घर कर रखी हैं। ऐसा लगता है कि क्या पता कब जीवन समाप्त हो जाय।

१९७०

कानपुर

१ जनवरी : आज नया दिन है। सुबह उठा, परमात्मा से प्रार्थना की। मिलों में गया। पिछले वर्ष से काफी उलट-फेर हुए। कानपुर का मेयर चुना गया। देश की राजनीति में नया मोड़ आया। मन में कैसा हो लग रहा है। शंकर टांटिया लड़की लेकर यहाँ आ गया है। उसकी सगाई कर दी। फाल्गुन में विवाह है। जे० पी० (भतीजा) की सगाई भी कलकत्ते हो गयी है। मदन की लड़की की अभी नहीं हुई।

४ जनवरी : सुबह कफ में ताजा खून कई बार आया। डॉ० शशिमाल को बुलाया। उनका कहना था कि ऊँचे रक्त चाप के कारण किसी शिरा में छिद्र हुआ है। मन में थोड़ी सुस्ती रही। दिन में बहुत से लोग मिलने को आए। ११॥ बजे अग्रवाल व्यायामशाला गया। वहाँ २ बजे तक था। उपसभापति चुना गया।

५ जनवरी : महापालिका ३॥ से ५ बजे तक था। लाल इमली और एल्गिन भी गया था। एल्गिन मिल रिटेल शॉप में ५०००) रु० का ऊनी कपड़ा फट गया है, असावधानी से। चिंता हुई। रात में स्वप्न आते रहे।

११ जनवरी : आजकल मन में न जाने क्यों चिंताएँ रहती हैं। कभी गरीब या जरूरतमंद आ जाते हैं तो मन खिन्न हो जाता है। फिर भी आते ही रहते हैं। एक हीन भावना सी महसूस कर रहा हूँ। चाहते हुए भी सबकी नहीं कर सकता, संभव भी नहीं। श्री चंद्रभानु गुप्त खाने पर आए, ३०-४० व्यक्ति और भी थे।

१३ जनवरी : ऐसा लगता है कि एक वर्ष में शरीर काफी थक गया। लोग मुझे वृद्ध कहने लग गए हैं। सुन कर अच्छा नहीं लगता, उत्साह घटता है। शायद इसीलिए विलायत में बुजुर्गों को वृद्ध कहते नहीं। 'मेरा बचपन, मेरा गाँव' पूरा टाइप हो गया।

पटना

१७ जनवरी : तूफान से सुबह ७ बजे पुगा। स्टेशन पर लोग आए थे। पी० डी० ११॥ बजे आए। मीटिंग में बिहार के बहुत से लोग आए थे। मैं आधा घंटा बोला, शायद

अच्छा बोला। श्री दारोगा राय से मिलने गया, उसकी सरकार बनती नजर आती है।

कानपुर

२० जनवरी : सुबह एलिगन में ऑफिसर्स की मीटिंग हुई। मिलों की हालत इस वर्ष खराब है। ऐसा लगता है, बम्बई की सीताराम मिल फिर तकलीफ में हो जायगी। शाम को ४। बजे महापालिका गया। ७ बजे वापिस आया। काफी झंझट रही। रतनलाल जी से कुछ नाराजगी हुई। हार-जीत बराबर रही। काम कम, बहस ज्यादा। समय बरबाद होता है।

२३ जनवरी : श्री गोपाल स्वरूप पाठक का महापालिका की तरफ से अभिनंदन किया। काफी भीड़ थी। दिन में उनके साथ ग्रीन पार्क में खाना खाया।

२६ जनवरी : १ बजे तक ७-८ जगह झंडे फहराए। साधारण-सा बोला भी। आज मेरा जन्म दिन है। झूठ नहीं बोला। शाम को ४ बजे फूलबाग की मीटिंग में गया। ५-७ हजार व्यक्ति थे। इन्दिरा जी का जोर था। गुप्ता जी को लोग बुरा-भला कह रहे थे। ऐसा लगता है, गुप्ता जी की सरकार नहीं टिक पायगी।

९ फरवरी : महापालिका गया, मिलों में भी गया। शरीर वृद्ध सा लगता है। उठते समय जमीन पर हाथ टेक कर उठता हूँ। मन में न जाने क्यों हीन भावना रहती है। ऐसा लगता है, शायद ५-७ वर्ष से ज्यादा नहीं जीऊँगा, अगर कार्यक्रम इसी प्रकार का रहा तो।

१० फरवरी : बहुत जगह समारोह-आयोजनों में गया। बोलना भी पड़ा। शायद ठीक-ठीक बोला। रात में ८॥ बजे कवि-दरबार हुआ था, पं० गया प्रसाद शुक्ल, 'सनेही' के अभिनंदन में। वहाँ भी गया। साहित्य-काव्य की दुनिया ही अलग है। आनंद के रस में सब डूबते हैं। पैसा भले ही न हो, जीवन तो है। दिन भर व्यस्त घूमता रहता हूँ। कामकाज देखता हूँ। एक लेख तैयार किया है। साधारण सा है, शिक्षकों पर। न जाने क्यों ऐसा लगता है कि बी० आई० सी० नहीं रहेगी। व्यास जी जैसलमेर से परसों आए हैं, भले व्यक्ति हैं।

११ फरवरी : आज सुबह अखबार में आया, श्री चरणसिंह की सरकार ३०० सदस्यों के सहयोग से बन रही है।

१४ फरवरी : सुबह ७ बजे गाड़ियों में १० व्यक्ति खजुराहो के लिए रवाना हुए। १२॥ बजे पहुँचे। खजुराहो पुराना जैन तीर्थ भी है। जैन मंदिर देखे। दिगंबर जैनियों के हैं। व्यवस्था अच्छी है। तीर्थों में विशेष रूप से दर्शन के, अध्ययन के अच्छे केन्द्र होने चाहिए। मुझे यह आवश्यक लगता है। खजुराहो के मंदिर देखे। चंदेलों ने बनाये

हैं, लगभग ८०० से १००० वर्ष पूर्व के हैं। वहुत दिनों से इन मंदिरों के वारे में सुनता रहा हूँ, वहुत कुछ पढ़ने में भी आया। आज प्रत्यक्ष देखा। कन्वारिया महादेव का मंदिर देखा। विशाल शिवलिंग है। हाँ, कलकत्ते में भूतनाथ के मंदिर के पास एक शिवलिंग ऐसा ही है। खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर और अन्य दो-तीन मंदिरों को देखा। पुरी, कोणार्क तो इसके मुकावले कुछ भी नहीं। एक खास वात जरूर है कि भोग-विलास के वीच देव मूर्तियां हैं। मंदिरों के अंदर भोग या काम का प्रदर्शन नहीं है। शायद इसका कोई गूढ़ अर्थ हो। संसार में काम या भोग लिप्सा से दृष्टि हटाने पर इसी देह-मन्दिर के अन्दर आत्मा-परमात्मा की उपलव्धि हो सकती है। मेरी धारणा है कि इन्हीं का संकेत होगा। वैसे तरह-तरह की विचित्र किंवदंतियाँ इनके वारे में सुनी-कही जाती हैं। एक वार तो ये मूर्तियाँ अजीव सी लगीं, पर मुझे खुद आश्चर्य है, मेरे मन पर कुछ भी वुरा प्रभाव न हुआ। सोचने लगा, क्या मैं वृद्ध हो गया हूँ इसलिये या भोग के परिणाम को भुगतते काफी देखने के कारण। शाम को जव हम लौटे तो काफी थक गये थे। सीताराम केडिया कलकत्ते से आए हुए थे, वे भी साथ थे।

नयी दिल्ली

२२ फरवरी : रमेश व्यास, वहुगुणा, त्यागी जी, वलीराम भगत के गया। सभी स्नेह रखते हैं। उत्तर प्रदेश में राजनीति ने करवट वदलनी शुरू कर दी है। सारे देश में आगे-पीछे प्रभाव पड़ेगा। राजस्थान में पता नहीं चांस है या नहीं। फखरुद्दीन से मिला, वातचीत हुई।

कानपुर

२४ फरवरी : शंकर की लड़की का मुद्दा आज हो गया। शादी में ५०००) खर्च लग जायगा।

२ मार्च : २॥। वजे दिन से शाम के ८। तक शंकर की पुत्री की शादी में व्यस्त रहा। एक दायित्व-सा वोध कर रहा था। पूरा हो गया। मन का वोझ हलका हुआ। सव काम अच्छी तरह से सलट गया।

कलकत्ता

९ मार्च : जे० पी० (भतीजा) की शादी हो गयी। सारे घर में उत्साह आनंद रहा। वीकानेर के और दिल्ली के लोग आये थे। मन में खुशी थी। लड़की वहुत सुंदर है।

कानपुर

१३ मार्च : मुझे लगता है वी० आई० सी० अंत तक चली जायेगी। कोई मेरी सुनते नहीं। गलती पर गलती करते जा रहे हैं। लाल इमली और धारीवाल की वुकिंग

शुरू हो गयी है, बड़े पैमाने पर। मैंने कहा है एजेंसी में चेंज नहीं करेंगे। पब्लिक कंपनी तो नाम की आज 'पब्लिक' रह गयी। डायरेक्टर-अफसर मनमानी चलाते हैं। लाभांश पब्लिक को कहाँ मिल पाता है? यही ढंग रहा तो लोग पूंजी नहीं लगायेंगे और आगे सरकार के हाथों में कंपनियाँ चली जायेंगी।

१५ मार्च : ब्लड प्रेशर १२०/१८०। सारे दिन लोग मिलने आते रहते हैं। उनसे बातें भी करनी पड़ती हैं। माथा गरम है। कल भाई जी का पत्र आया, मुझे कलकत्ते बुलाया है। लाल इमली गया। सेल अच्छा हो रहा है, दाम बढ़ा है। शाम को गोविन्द नगर की कच्ची झोपड़ियों में गया। आधुनिक उद्योग का वरदान कहूँ या अभिशाप? क्यों भागकर लोग शहरों में आते हैं? स्वास्थ्य टूटता है, अपना और बच्चों का जीवन नष्ट होता है। गांधी जी ने गाँवों में लौटने को कहा। स्वाधीन होकर हमने उनकी एक बात नहीं मानी। शहरों की ओर दौड़ने की होड़ मची है। एक नर्सरी स्कूल में गया। बच्चों को देखा, उनकी मुस्कान में कुछ देर के लिए खो गया। कल पंत जी, महादेवी जी आदि से मिला था, परसों श्री अमृतलाल नागर से। अपनी दुनिया में ये कितने सुखी हैं।

२३ मार्च : सुबह होली खेलने बहुत जगह गया। ३-४ गिलास ठंढई पी। सारे दिन होली खेलते-घूमते रहे। कई जगह गये, धूल, कीचड़ और रंग। बहुत कोशिश से लाल इमली, धारीवाल को सुधार के रास्ते पर लाया। लोग उसे उल्टा रहे हैं। वे मुझे गलत समझते हैं, मैं उनके काम में साथ नहीं देता। परंतु ऐसा भी क्या? कंपनी का जिससे भला हो, उसे करता हूँ। परंतु ऐसा लगता है, ये लोग कभी भला नहीं कर पायेंगे और न होने देंगे। ब्लड प्रेशर १६०/११० है। कभी-कभी मन खराब हो जाता है। सुबह अचानक ही रोना आ गया, पता नहीं क्यों?

नयी दिल्ली

२४ मार्च : दिन में बालचंद जी गुप्ता मिले। लाठी लेकर चल रहे थे। ब्लड प्रेशर हाई होकर लकवा आ गया था। मुझे चिंता हुई। अपना ब्लड प्रेशर डाक्टर को दिखाया। बहुत ठीक था, ९०/१४०। सुबह महावीर त्यागी, राजनारायण, रघुनाथ जी, बहुगुणा जी से मिला। त्यागी जी के लिये चेष्टा की। दिन में मोहन लाल गौतम, श्यामधर मिश्र, पहाड़िया, रामसेवक चौधरी जी से मिला। बिहार और यू० पी० में मत बिकेंगे।

कानपुर

२८ मार्च : पैरों में जोरों से दर्द है। आज शाम को कवि-सम्मेलन का उद्घाटन करने गया। न साहित्यिक हूँ न कवि, पर ऐसी सभाओं और सम्मेलनों में सभापति बनाया जाता हूँ, उद्घाटन कराते हैं इसलिये कि मैं बड़े पद पर हूँ, मैं पैसे वाला समझा

जाता हूँ। पहले कई बार मैंने अस्वीकार किया किंतु लोगों ने मुझे अहंकारी समझा, कइयों ने असामाजिक भी। अब मान लेता हूँ, लोग खुश रहते हैं, मैं भी। कवि-सम्मेलन का प्रोग्राम अच्छा था। ब्लड प्रेशर नार्मल था ९०/१४०। मुझ पर भाई जी का स्नेह बहुत है। बंबई के काम से वे दुखी हैं। यहाँ का काम यदि नहीं करूँ तो बंबई जाने को कहते हैं।

कलकत्ता

३ अप्रैल : पैरों का दर्द ठीक नहीं होता है। आज कम था। डा० चटर्जी को दिखाया। उसने २१ दिन का इलाज बताया है। मन में काफी चिंता सी हुई। परमात्मा की मर्जी। एक प्रकार कानपुर जाना भी नहीं हो सकेगा। विलायत यात्रा भी रद्द-सी हो गयी।

५ अप्रैल : मन दुखी, तन दुखी। सीताराम मिल और भरतिया कारखाने की चिंता, बंग-श्री की चिंता, ब्यावर की चिंता। बी० आई० सी० की जिम्मेदारी, चारों तरफ चिंता। मनुष्य खुद चिन्ता बढ़ाता है और परेशान होता है। कल बिरला जी के अस्पताल जाकर एक्सरे कराया। घुटने का दर्द कम था।

बनारस

७ अप्रैल : श्री प्रकाश जी के घर गया। बी० आई० सी० के बारे में बात की। वे भी वहाँ की हालत से नाराज हैं। शायद उनका विचार भी राजी-खुशी छोड़ने का नहीं है। २॥ बजे 'आज' कार्यालय, वहाँ से नागरी प्रचारिणी सभा गया। १२००) की पुस्तकें खरीदीं। टैक्सी से कानपुर के लिये मुगलसराय पुगा। बैठने को जगह मिल गयी। ३ बजे रात्रि तक बैठकर आया।

कानपुर

८ अप्रैल : लाल इमली, एल्गिन गया। काम देखा। लोगों से मिला। राजू से बातचीत की। रात में गजाधर बाजपेयी, कृष्ण कुमार, प्रेमचन्द जी और भी लोग आये थे। विद्यासागर जी वगैरह ने मुकदमा कर दिया है। २० तारीख पड़ी है। ८॥ बजे स्टेशन आया। एक सीट दिल्ली के लिए मिल गयी।

नयी दिल्ली

१४ अप्रैल : आज रामनवमी है। पर मुझे कुछ भी पता नहीं चलता। न जाने कल से क्यों मन खराब हो रहा है। बी० आई० सी० का भविष्य बुरा लगता है। शायद ४-६ महीनों में सरकार ले लेगी। एल्गिन, कानपुर टेक्सटाइल्स का भी यही हाल होगा। सरकार ले ले तो बुरा नहीं, मगर इनके चलाये भी तो उद्योग चलते नहीं। घाटे पर

घाटा होता है। पूरा करते हैं, टैक्स बढ़ाकर। कैसी अर्थनीति है। अपने देश में सब कुछ चल जाता है। फिजूल यहाँ बैठा हूं खर्च कर रहा हूं, कोई आवश्यकता नहीं। शाम को राजनारायण जी से अस्पताल में मिला। डी० के० बरुआ से भी। १० बजे स्टेशन आ गया।

कानपुर

१५ अप्रैल : कैलाश गर्ग के घर गया। उनके घर में कल शादी है। आज उनको हाई ब्लड प्रेशर के कारण हेमरेज हो गया। बेहोशी की हालत में हैं। मनुष्य के जीवन का क्या ठिकाना, कब क्या हो जाय। १०। से ११ तक लाल इमली में था, आज बंद है। ११ बजे से १२।। बजे तक एल्गिन में हिसाब देखता रहा। पिछले वर्ष का नफा ७१ लाख का शुद्ध है। मन में संतोष हुआ परंतु इस वर्ष का ५५ लाख से ऊपर नहीं होगा। रुपयों की भी टान है।

कलकत्ता

२० अप्रैल : टाइपिस्ट है नहीं, निराशा हुई। शेयरों का हिसाब देखा। प्रायः ४० हजार का घाटा है। कलकत्ते में मन लग जाता है। एल्गिन, कानपुर टेक्सटाइल्स, बी० आई० सी० के ५००००) के शेयर लिये हैं। ७००००) के बैंकों के लिये हैं। बी० आई० सी० के भाव वापिस वैसे हो गये हैं।

२३ अप्रैल : मदन से कल रात सीताराम मिल के बारे में काफी बात हुई। १५ लाख बैंकों से मिलेगा। उससे भुगतान दे देंगे। जून में गवर्नमेंट के पेमेंट का क्या होगा, देखा जायेगा। वसंती के लड़की हो गयी है। मन एक रकम खिन्न हो गया। रुलाई आ रही है। क्या किया जाय। परमात्मा की मरजी। मारवाड़ियों में इतना खर्च किया जाता है। लड़कियों के विवाह में लाखों रुपये लग जाते हैं। चिंता का खास कारण यह भी है।

कानपुर

२८ अप्रैल : राजू ने आज कहा कि यहाँ मन नहीं लग रहा है, मैं कलकत्ते रहूँगा। मैंने उसे समझाने का प्रयत्न किया परन्तु उसका यहां रहने का मन नहीं है। मैं स्वयं भी कैसा फील कर रहा हूँ, फिर वह तो अभी बच्चा है। मनुष्य के जीवन में कैसे-कैसे क्षण आ जाते हैं? एक तरह का अवसाद-सा होता जा रहा है। थोड़ा सा भी व्यवधान आ जाने पर निराशा-सी हो जाती है। मन में जाने क्यों एक अनजानी-अचीन्हीं चिंता हो जाती है। शरीर भी अब थका सा होता जा रहा है।

२९ अप्रैल : जब से राजू ने यहाँ से जाने को कहा है, जी खराब हो रहा है। आखिर तो लड़कों को ही काम करना है। यहाँ लाल इमली का काम गड़बड़ हो रहा है। मुझे

लगता है, काम सम्हालना इन लोगों के वस की वात नहीं, सलाह नहीं मानते, काम करने नहीं देते। सुवह पी० सी० जैन को फोन किया था। दो वार अर्जुन अरोड़ा जी को फोन किया। एलिगन मिल में आग लग गयी, काफी नुकसान है।

३० अप्रैल : राजू की कुछ चिंता है। विवाह योग्य है। विवाह कर देना ही उचित है। मैं यदि इस आयु में साथ चाहता हूँ तो फिर वह तो २० वर्ष का युवक है।

१ मई : राजू जा रहा है, मन उदास है। एक प्रकार की कुंठा सी मन में है, कुछ चिंता भी। जीवन में रस नहीं रहा। सपने खराव देखता हूँ। लोग मिलने आते हैं। काम करता रहता हूँ। अंदर रिक्तता वढ़ती जाती है। दिन में नियमानुसार मिलों में भी जाता हूँ। पर ऐसा लगता है, एक धुरी पर घूमता जीवन है, गति है पर प्रगति नहीं।

३ मई : सुवह घर पर लेख लिखता रहा। १०॥ वजे राजू वंवई चला गया। वाजोरिया जी के घर पर ८ से ९॥ वजे तक था। राजू का डायरेक्टर चुना जाना उन्हें अच्छा नहीं लगा। मैंने भी जिद नहीं की। शाम को कई शादियों में गया। एक लड़की के विवाह में ५००) दिये। फिर शादियों में गया। २००) एक और लड़की के विवाह में दिये।

५ मई : महमूद के हाते देखने गये। काफी गंदगी है। व्यक्तिगत संस्कार और आदतें इसके लिये अधिक जिम्मेदार हैं। जव तक इन्हें नहीं वदला गया, कोई भी सरकारी या प्रशासनिक व्यवस्था सफल नहीं हो सकती। कानूनी कड़ाई की वात अलग है। शाम को महापालिका की मीटिंग थी, दो घंटा रहा। परसों पर स्थगित रखी है।

८ मई : कहते हैं कोयले की दलाली में हाथ काले होते हैं। वही वात '. . . .' जी के कारखाने के वारे में हुई। सारी वातें तय कर ली गयी थीं, आज योगेश की मां ने कहा, किसी का हिस्सा उसमें कहाँ था। वस किराये के रुपये हम जरूर देते रहेंगे। खैर, जैसा होगा, हो जायगा। मन में एक चिंता हुई।

९ मई : सुवह पी० सी० जैन आये। उन्होंने कहा '. . .' वाजोरिया जी नाराज हैं। मैंने कहा, वी० आई० सी० का काम जैसे भी हो, गवर्नमेंट से तय कर लेना चाहिए। ११ वजे मैंने फोन पर कह दिया कि मैं वी० आई० सी० में रहना नहीं चाहता हूँ। मन में टेंशन रहता है। अच्छा नहीं लग रहा है। ६० वर्ष का हो गया। वच्चों के पास खाने को है, फिर क्यों अव उम्र घटाऊं? मन में नाना प्रकार की उलझनें हैं, एकाग्रता वन नहीं पाती। व्यर्थ समय जाता है। गरमी लग रही थी। दिन में घर में ही रहा। सुवह गयाप्रसाद लाइब्रेरी गया, और संस्थाएँ देखने गया था। ४॥ वजे तिलक हॉल, फिर अरोड़ा जी के। रायपुरवा में एक लड़की ६२ घंटे से साइकिल चला रही थी। उसे देखने गया।

वहुत ही जीवट और धैर्य का काम है। लड़कियाँ अपने देश में क्षमता का परिचय देने लगी हैं, अच्छा लगता है।

१२ मई : सुवह कार लेकर स्टेशन गया। दिनकर जी, महेंद्र सिंह जी के यहां ठहरे। दिन में महापालिका की मीटिंग हुई। वहुत अच्छी रही। दिन में गरमी थी, मन भी खिन्न था। घर पर ही रहा, पढ़ता रहा सेठ गोविन्द दास जी की जीवनी। रात में दिनकर जी आये, एक छोटा सा आयोजन किया, ११०० व्यक्ति आये, अच्छा रहा। साहित्यिक गोष्ठी सी रही। दिनकर जी ने अपनी कविताएँ सुनायीं। इनकी प्रतिभा से अभिभूत हो जाना पड़ता है।

१३ मई : पी० सी० जैन मिले थे। वी० आई० सी० पर ए० सी० आ रहा है। एक प्रकार से मेरा सपना सच्चा हो गया। पिछले ढाई वर्षों से इस काम के लिये जी तोड़कर मेहनत करता रहा हूँ परंतु नतीजा कुछ भी नहीं निकला, नफा भी अच्छा रहा। परंतु सरकार ले रही है। यही होता है। कंपनी की उन्नति और उद्योग के विकास के लिए आपसी मतभेद वहुत वाधक होते हैं। स्वार्थ ही इसका मूल कारण है। अफ़सर-कर्म-चारियों को अपनी करने का मौका मिलता है। वे कीचड़ उछालते हैं चिनगारियों में फूँक मारते हैं। वड़ी-वड़ी कंपनियाँ इसी में गयीं, नुकसान किसका हुआ? साधारण शेयर होल्डरों का, लोगों का, देश का। कौन समझे, कौन समझाये? सरकार भी आदमी ही चलाते हैं, उनकी कंपनियों की भी यही हालत है।

१७ मई : वी० एल० ने आज मेरे से वात नहीं की। ऐसा लगता है, उनका मन फिर गया है। मुझे भी अच्छा नहीं लगा। मुझे भावुक नहीं वनना चाहिए। काम अपनी जगह पर है, भावना अपनी जगह। सुवह टंडन आये थे। एल्गिन मिल को लेकर झंझट होने की संभावना है। '......' के कारखाने की वात भी आयी है। मेरी गलती थी, क्या दरकार थी वीच में पड़ने की? आगे पर सावधान रहना चाहिए।

१९ मई : वावा जी कैथावा से आये। उनके वैल-जोड़े मर गये। खेती नहीं हो पा रही है। मैंने ५००) देने का कहा हैं। ११ वजे से १ वजे तक एल्गिन में था। सुवह वाजोरिया जी से खुलासा वात हुई। उनको सारा हिसाव दिया। आपस में डिफरेंस भी कम हुए। मैंने कह दिया कि मैं काम नहीं कर पाऊँगा।

२१ मई : महापालिका की मीटिंग रोज हो रही है। इन दिनों में कोई खास लेख नहीं लिख पाया।

२३ मई : सुवह ८। वजे लौटा। घर पर जैन मुनि कनक विजय जी आये। उनकी किताव प्रकाशित होगी। मैंने कुछ किताबें लेने को कहा है। '......' का मामला सर दर्द है। हिस्सा नहीं देना चाहते हैं। सारा झंझट मेरे सर पर आ रहा हैं। खैर, यह भी एक सवक मिला। आगे पर किसी की भलाई भी समझ कर ही करनी चाहिए।

राजू १९ को बम्बई से आया पर मिल नहीं जाता है। कमरा बंद कर घर में ही रहता है। गलती मेरी थी। उसे अपनी रुचि के लायक काम नहीं दे पा रहा हूँ। मुझे थोड़ा इस तरफ अधिक ध्यान देना चाहिए।

२४ मई : ८ महीने पहले राजू यहाँ काम सीखने आया था। आज ३ बजे चला गया। उसका मन नहीं लगा। मेरा भी मन कम लग रहा है, फिर वह तो बच्चा है। उसे स्टेशन छोड़ने गया, जी में कैसा-सा ही लगा। रुलाई आ गयी। पता नहीं क्यों इस उम्र में इतनी चिंता, इतनी दुविधा में पड़ा हुआ हूँ। पी० सी० जैन का फोन आया कि दिल्ली में कुछ ठीक हो रहा है, शायद बोर्ड चेंज होकर रह जाय। मुंशीराम जी शर्मा को 'मेरा बचपन, मेरा गाँव' सुनाया, उन्हें पसंद आया।

२५ मई : श्री रघुनाथ रेड्डी के यहाँ गया, अर्जुन अरोड़ा जी के गया। ४॥ बजे से ५॥। बजे तक लाल इमली। महापालिका नहीं जा पाया। आज पहला मौका है कि मीटिंग में नहीं जा सका।

२७ मई : एम० सी० गुप्ता आये हुए हैं, जो चीजें बता रहे हैं वे बहुत ही डेन्जरस हैं। अगर यही हालत रहेगी तो बाजोरिया जी इस जगह नहीं रह पायेंगे। कारखाना ठप्प हो जायगा। आज मीटिंग नहीं है। परंतु मन बहुत ही खिन्न है। मुझे तो ऐसा लगता है कि एल्गिन और कानपुर टेक्सटाइल की मिलें बहुत दिनों तक नहीं चल पायेंगी।

जसीडीह

२९ मई : सुबह पटना में जागा। गंगा बाबू पटना उतर गये। मैंने क्यूल में तेल की पूड़ियां खायी थी। गंदी थीं। १२ बजे भवन पूगा। अच्छा सुधर गया है। २॥ बजे कोठी गया। स्नान किया। जसीडीह आकर मन में नाना प्रकार की स्मृति जाग्रत हो जाती है। ताऊ जी से मिला। उन्होंने कहा कि एक महीने के लिये यहाँ आना। वहां मामा मिली। पिछले दो वर्षों में उसके चेहरे पर निखार आया है। स्वस्थ भोजन और अच्छी जलवायु, चिंता रहित जीवन। इस प्रकार सभी स्वस्थ रह सकते हैं, इसे जानते भी हैं पर कितने कर पाते हैं? मैं तो केवल सोच कर रह जाता हूँ।

कलकत्ता

२ जून : सुबह सोदपुर गोपाल भट्टाचार्य एम० एल० ए० के घर गया। बहुत ही छोटे से एक कमरे में पति-पत्नी रहते हैं। गरीबी का वातावरण है। अच्छी तरह मिले। इधर-उधर की बात होती रही। प्रसंगवश बंग-श्री के मजदूरों की बात करते रहे। लगता है, शायद कुछ रास्ता बैठ जायगा। कल सारे दिन सीताराम जी सेकसरिया की किताब पढ़ी, अच्छी लगी।

कानपुर

२० जून : सुबह ७ बजे लखनऊ एयर पोर्ट गया। ९।। बजे तक था। इंदिरा जी आयीं। तारा जी ने उमाशंकर जी दीक्षित को मेरे बारे में कहा। उन्होंने कहा कि ये गुप्ता ग्रुप के हैं। ११।। बजे लौटकर सदरलैंड हाउस आया। बहुगुणा जी को लखनऊ भेजा। शाम को घर पर ही था। डाक्टर शशिमाल और प्रेमचंद आये। ऐसा लगता है; जटाधर और रामरतन जी का बराबर का जोड़ है।

बनारस्

२७ जून : सुबह ६। बजे की ट्रेन से मुगलसराय। वहां पर टैक्सी लेकर बनारस। ३।। बजे से ७ बजे तक मीटिंग चली। दीपचंद चांडक की छोटी लड़की की सगाई हो गयी। बी० आई० सी० की मीटिंग निर्विघ्न हो गयी। राजू की जगह बिलग्रामी को एल्गिन में डायरेक्टर लेने का तय किया।

कानपुर

२८ जून : सुबह ५ बजे पूगा। स्नान करके कुछ लिखता-पढ़ता रहा। पत्रों के जवाब दिये। नन्दू का फ़ोन था, वह विलायत जाने को कह रहा है। ११।। बजे महापालिका गया। इससे पहले डा० शशिमाल और प्रेमचंद आये थे। १२। बजे रिजल्ट आउट हुआ। मैंने वोट उन्हें दिया था। अगर वह रामरतन जी को देता तो बराबर रिजल्ट रहता। जटाधर जी के घर गया, मेरा मन खिन्न था। जटाधर सबके घर गये, मेरे यहाँ नहीं आये।

१३ जुलाई : ट्रेन एक घंटा लेट थी। ८ बजे घर पर आकर खाना खाया। तबीयत ठीक नहीं हुई, पेट खराब है। पैरों में चीस चलती है। फिर भी दौड़ भाग करता हूँ। गाड़ी से गोरखपुर तक फिर दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता। मुझे सम्हलना चाहिए। एल्गिन गया, सब काम एक प्रकार से ठीक चल रहा है। शाम को प्रेमचंद, शशिमाल जी के साथ परिपूर्णानंद जी वर्मा के था। वहाँ अचानक साँस बंद होती सी लगी। एक बार तो बेचैनी हो गयी। कोरामिन लिया तब जाकर ठीक हुआ।

१४ जुलाई : सुबह मैकरॉबर्ट हॉस्पिटल गया। कार्डियोग्राम लिया गया, नार्मल था। एल्गिन में, लाल इमली में गया। ऐसा लगता है, शरीर वृद्ध होता जा रहा है। आज फिर एक बार थोड़ी सी चोकिंग सी हुई, चिंता हुई। दिन में पुचका और आलू की टिकिया खायी। गलती हो गयी है।

१५ जुलाई : ९।। बजे एल्गिन में एक-डेढ़ घंटा था। १ बजे से १२ बजे तक मैकरॉबर्ट हॉस्पिटल में गया, टेस्ट वगैरह के लिये। डा० जैन आये। डा० दत्त भी थे। सबने एक्जामिन किया। नार्मल है। १२। बजे घर आ गया।

१९७० ई०

नयी दिल्ली

१७ जुलाई : २ वार दिग्विजय जी के गया। वहां दिनेश सिंह मिले। वे मेरे से न राजी है; न नाराज। शायद वी० आई० सी० का कुछ रास्ता वैठ जायेगा, ऐसा लगता है। महावीर त्यागी जी के गया, गंगावावू के दो वार गया। एल० एन० मिश्र १२। वजे मिले। काफी प्रेम से वातचीत हुई। दिल्ली में तवीयत ठीक रहती है। मन भी लग जाता है। श्री दिनेश सिंह इंदिरा जी से नाराज हैं, ऐसा लगता है।

दिल्ली-इंदौर-उज्जैन

२४ जुलाई : एयरपोर्ट पर सोहनलाल जी सिंहानिया और पी० डी० मिले, रामगोपाल जी गुप्ता भी। ग्वालियर भोपाल होते हुए ९।। वजे इंदौर पुगा। सामने लोग आये। हम लोग मालवा मिल के गेस्ट हाउस में ठहरे। खाने के पहले मिल देखने गये। मिल ठीक है पर वड़ा लॉस कर रही है। पिछले वर्ष ४-५ लाख का लॉस दिया। ५ वजे उज्जैन गये। मंदिर देखा। महाकाल शिवशंकर द्वादश ज्योति लिंगों में हैं। यहाँ आकर मन कैसा ही होता है। काल किसी को छोड़ता नहीं, अच्छा-वुरा सभी आत्मसात् करता है। इसी में कल्याण है भी। शायद इसीलिये शिव को महाकाल माना गया।

इंदौर

२५ जुलाई : ९ वजे आडिटोरियम में गये। काफी भीड़ थी। वहुत से लोग वोले, तरह-तरह के विचार, समस्याएँ। सवसे अच्छा वोले, तेजकुमार जी सेठी। उनकी मिल घाटा कर रही है। ऐसा लगता है कि इंदौर की मिलों की हालत खराव है, सिवाय दो-तीन मिलों को छोड़कर। काफी लोगों से परिचय हुआ। ऐसी मीटिंग में आना चाहिए। विचारों का आदान-प्रदान होता है, विभिन्न गतिविधियों की जानकारी होती है।

कानपुर

१ अगस्त : एल्गिन वहुत लॉस में जा रही है। मन में थोड़ी चिंता सी हुई। अगर यही हाल है तो फिर सीताराम मिल का क्या होगा। कल दिन में टंडन जी के यहाँ टी० ए० पै० चेयरमैन, एल० आई० सी० के साथ खाना खाया और आज कमला रिट्रीट में चाय पी। सीताराम जयपुरिया भी थे। घंटा वातचीत हुई। वहां से एल्गिन में आया, आंकड़े देखे। ऐसा लगता है, कपड़े में कुछ गोलमाल है।

कलकत्ता

४ अगस्त : शाम को श्रीप्रकाश जी को देखा, प्रसन्न हैं। कलकत्ते में मन लग गया है पर मेरे पैरों में दर्द ज्यादा है।

५ अगस्त : सुबह ८ बजे सोदपुर गया। ११ बजे तक था। बंगोदय मिल मजदूर चला रहे हैं। वह देखी, ठीक चल रही है। दिन में ऑफिस में था।

६ अगस्त : ३।। बजे बाजोरिया जी के गया। मीटिंग ३ घंटे चलती रही। फिर श्रीप्रकाश जी के पास अस्पताल में गया। उन्हें सारी बातें बता दीं।

जसीडीह

१५ अगस्त : आज स्वतंत्रता दिवस है, लोगों के मन में ज्यादा उत्साह नहीं है। ऐसा क्यों? शायद गुलामी और आजादी का फर्क साधारण लोगों को मालूम नहीं पड़ा। सारी व्यवस्था है भी पहले की तरह, फिर अंतर क्या मालूम पड़े? कलकत्ते से भागीरथ जी, सीतारामजी आदि बहुत से लोग आए हैं। मुझे यहाँ की हवा अच्छी लगती है, चिंताएँ भी नहीं घेरतीं।

१६ अगस्त : सुबह भवन में जाकर तेल मालिश और भाप-स्नान किया। काफी आराम मिला। ३ बजे मीटिंग थी, ४००-५०० व्यक्ति थे, मैं सभापति था। आज पूरा व्रत रखा, रात में थोड़ा-सा दूध लिया, अच्छा लगा।

मरहौरा

१८ अगस्त : ८ बजे भगवती, राजू, मैं और नौकर छपरा पूगे। टैक्सी से १० बजे मरहौरा। गुंडुराव, नारायण स्वामी, सब थे। १ बजे खाना खाया। गेस्ट हाउस में, थोड़ी देर आराम किया। ३ बजे सारन इंजिनियरिंग देखा। अच्छा चल रहा है। इस दूर इलाके में भी काफी काम इसके पास है, और भी बढ़ाया जा सकता है पर पूँजी चाहिए, सही प्लानिंग और अच्छी व्यवस्था भी। ४ बजे मरहौरा शुगर मिल गए। बड़ी है परंतु मिस-मैनेज्ड है। गत वर्ष फायदा नहीं हुआ। एक डिस्टिलरी भी है। वह भी फायदा दे सकती है। बहुत बड़े पैमाने पर चीनी और राब रखी है। शाम को ६ बजे नारायण स्वामी के यहाँ चाय पी। ऑफिसर्स आए थे, सबसे बात की।

गौरीबाजार-कुशीनगर

१९ अगस्त : सुबह ६ बजे मरहौरा से चले। ९। बजे गौरीबाजार पूगे। मिल कमा रही है। छोटी सी अच्छी मिल है। यहाँ से १० बजे चल कर १२ बजे कटकुंइया पूगे। सरदारजी जनरल मैनेजर हैं। शरबत दिया। आधा घंटा में मिल देखी। यह भी अच्छी है। १।। बजे पर पडरौना पूगे। २।। बजे तक खाना खाया। राजकुमार जनरल मैनेजर हैं। नये आए हैं। होशियार लगते हैं। प्रॉब्लेम की मिल है। गुंडुराव बहुत ही एफिशेंट व्यक्ति हैं। बगैर रुपयों के मिलें खराब चल रही हैं। ९ बजे कुशीनगर आए। बुद्ध का निर्वाण स्थान है। तथागत की दस फीट की एक प्रतिमा देखी। आसपास पुराने खंडहर काफी हैं। यात्रियों के ठहरने की जगहें हैं। बर्मा, सिलोन, जापान, स्याम से यात्री

आते रहते हैं। मेरे मन में एक विचार आता है कि भारत में बुद्ध का जन्म हुआ, बौद्ध मत यहाँ से सारे विश्व में फैला, लोगों ने श्रद्धापूर्वक स्वीकार किया। एक समय भारत में भी कश्मीर से दक्षिण तक बौद्ध विहार थे, पर आज बौद्ध तीर्थ तो यहाँ रह गए पर बौद्ध-मतावलंबी नहीं। जैन मत टिक सका पर बौद्ध मत उखड़ गया। ऐसा क्यों ?

कानपुर

२१ अगस्त : दिन में एलगिन में स्ट्राइक हो गयी। स्टेट बैंक वाले शायद शुगर मिलों के अकाउंट नहीं रखेंगे। बाजोरिया जी से नाराज हैं। शाम को बी० आई० सी० के बारे में बी० पी० राय बहुत नाराज थे। शायद बोर्ड छोड़ दें। रात में मन काफी खिन्न रहा। सपने भी आते रहे। जैन को कपड़े का हिसाब करने का कहा। लाखिया देर करते जा रहे हैं।

२३ अगस्त : कल की मीटिंग के बाद मन बहुत हल्का हो गया। बिलग्रामी ने प्रिसाइड किया था। राजू का एलगिन से इस्तीफा ले लिया पर कानपुर टेक्सटाइल से नहीं। हड़ताल पिछले दो-तीन दिनों से चल रही है। सूरज प्रसाद जी अवस्थी से बात की, मिल बंद रहने से हमारी कोई हानि नहीं है।

धारीवाल

२४ अगस्त : सुबह जालंधर पहुँचा। पेट खराब था। लुधियाना में एक गिलास पानी पिया, दो कप चाय पी। फिर सारे दिन अन्न नहीं खाने का तय किया। ८॥ बजे अमृतसर पहुँचा। हरि ओम और अशोक चांडक स्टेशन पर मिले। १० बजे धारीवाल आया। अफसरों से बात की। काम यहाँ का ठीक चल रहा है, परंतु 'लाल इमली' वाले इन्हें नेगलेक्ट करते हैं। झूठी शिकायत भी करते हैं। एक घंटा एक पहलवान से मालिश कराया। काफी तगड़ा व्यक्ति है। उसे देखकर मन में होता है कि मेरा भी बदन वैसा ही होता यदि थोड़ी सी सावधानी रखता। दिन में २-३ घंटे मिल का काम देखा। अशोक चांडक के यहाँ फलों का नाश्ता किया। ६॥ से ८॥ बजे तक दो लेख लिखे।

दिल्ली-बम्बई

२८ अगस्त : दिल्ली की यात्रा अच्छी रही। कमलापति त्रिपाठी, बलराज मधोक, देवकी पाटोदिया आदि से मुलाकात हो गयी। पार्ल्यामेंट में भी काफी देर पढ़ने का मौका मिला। एयर पोर्ट ८॥ बजे पर पहुँचा। ११ बजे बंबई पहुँचा। मदन आया था। मिल ठीक चल रही है। फायदा हुआ है। मन में खुशी हुई।

२९ अगस्त : दिन में ८ बजे रमा आयी, बहुत ही हँसमुख और सुंदर लड़की है। ११ बजे टेक्सपोर्ट मीटिंग में था। काफी लोग आए थे। १ बजे लंच रहा। एल० एन० मिश्र आये।

३० अगस्त : पाँच-छः दिनों से थोड़ी सी कसरत रोज करता हूँ। मोहनलाल गुप्त (पाली मिल वाले) नाश्ते पर आए थे। १०॥ पर रामनारायण जी मोर के यहाँ गया। ११॥ बजे ताज में। बहुत से लोग आए थे। कानपुर से एन० के० जैन का फ़ोन आया। मिल की हालत पहले से कुछ अच्छी है। बंबई की शान-शौकत दूसरे शहरों से ज्यादा है।

३१ अगस्त : कल श्री के० एम० मुंशी और श्रीमती लीलावती मुंशी से मिलने गया। मुंशी ८३ वर्ष के हैं, लीलावती शायद ६५-६७ की। दोनों में पिछले ५० वर्षों से एक-सा प्यार है। मुंशीजी ने साहित्य एवं राजनीति के क्षेत्र में यश-लाभ किया है। समाज सुधार में वे अग्रणी रहे। गुजराती साहित्य इनके प्रति चिर ऋणी रहेगा। मैंने इनकी बहुत सी किताबें पढ़ी हैं। इतिहास, संस्कृति एवं दर्शन का बड़ा गंभीर अध्ययन है। बड़ी प्रसन्नता हुई इस बार मिल कर। एक प्रेरणा मिलती है। मगर मुझे अब तो काफी देर हो गयी। मेरा जीवन बचा ही कितना?

१७ सितम्बर : दिन में क्या किया, याद नहीं। डायरी बहुत दिनों बाद लिख रहा हूँ। शाम को ७॥ बजे ट्रेन में आकर बैठ गया। देवकी का रुपया बाजार में डूब गया। सुस्त है। कानपुर में भी झगड़ा पड़ेगा। परंतु बेवकूफ लड़का है।

१९ सितम्बर : सुबह १० बजे बोर्ड की मीटिंग हुई। दो-ढाई घंटे चली। एक प्रकार से ठीक से हो गयी। चोपड़ा डॉमिनेट कर रहे थे। जज साहब का मूड ठीक था। बिलग्रामी ने प्रिसाइड किया। मुझे लगता है, बी० आई० सी० ज्यादा दिन बाजोरियाजी के हाथ नहीं रहेगी। उनकी गलती भी है।

नयी दिल्ली

२३ सितम्बर : दिन में १। बजे एल० एन० मिश्र से फिर मिला। शाम को बिलग्रामी के घर मीटिंग हुई। चीनी मिलें लेने का तय रहा। कलकत्ते में मीटिंग है, ३० ता० को। दिल्ली की ऐसी हालत है कि मेरा नाम '......' ने काफी बदनाम किया है। इसमें शायद '......' का भी हाथ है। बुरा तो लगता है पर उपाय क्या? समय अच्छा-बुरा साबित कर देगा।

कानपुर

२६ सितम्बर : रांची से आनंदमार्गी एक स्वामी जी आए हैं, कल शाम उनसे मिला। आज सुबह ७॥ बजे फिर गया, कुछ प्राणायाम वगैरह बताए हैं। इन दिनों 'आनंद मार्ग' की चर्चा बिहार में अधिक है। सरकारी अफसर भी इसमें हैं। स्कूल, कालेज, अस्पताल भी ये लोग चलाते हैं। धारीवाल से जाजू लाल इमली आए हैं। बताते हैं, वहाँ काम खराब हो रहा है। मेरे पैरों में दर्द बहुत जोर से रहता है।

कालपी

२९ सितम्बर : दोपहर को १ बजे परिपूर्णानंद जी वर्मा, बुधमल जी शामसुखा के साथ कालपी गया। वहाँ मीटिंग में बोला। महारानी लक्ष्मीबाई जहाँ ठहरीं थीं, उस स्थान पर थोड़ी देर रहा। मन में कितनी बातें आ गयीं। कितनी असहाय अवस्था हुई होगी, पर रानी ने साहस नहीं छोड़ा। चाहती तो सब पा सकती थीं। कालपी पुराना शहर है, वेदव्यास जी का जन्मस्थान। पता नहीं, बुंदेलखंड की भूमि में कैसा रस है जिससे साहित्य, दर्शन और शौर्य निखरता है।

बम्बई

८ अक्तूबर : सुबह प्लेन में दिल्ली में बैठा। ८॥ बजे बंबई पूगा। भाई जी ज्यादा बीमार हैं। मिल की मीटिंग में नहीं गया। उनके पास ही बैठा रहा था। मन में बहुत प्रकार की चिंताएँ हैं। मनुष्य के जीवन का क्या ठिकाना? अशोक के टायफायड है, बीशू भी बीमार है। मेरा अचानक कलकत्ते से कानपुर जाना वाजिब नहीं था। बंबई आ गया, यह तो अच्छा है।

१० अक्तूबर : अगर मैं बंबई नहीं आता तो बहुत ही गलती होती। कल भाई जी को बंबई अस्पताल ले आए। दिन में उनके पास था। कुछ आराम है, पर बीमारी बढ़ी हुई है। परमात्मा ठीक करेगा।

११ अक्तूबर : भाई जी की तबीयत कल से ठीक है। ऐसा लगता है, रास्ता बैठ जायगा। दिन में नत्थू केडिया की ससुराल उसके साथ गया, थोड़ी देर ताश भी खेला।

१५ अक्तूबर : भाई जी की तबीयत खराब ही है। सारे दिन अस्पताल में रहा, रात में भी रहा। दुखों का पहाड़ हमारे ऊपर टूट गया है।

१६ अक्तूबर : सुबह अस्पताल से ७ बजे आया। भाई जी की तबीयत अच्छी नहीं है। दिन में ३॥ बजे ऑपरेशन हुआ। वाइफ, एस० एन० टी०, परमा और अशोक आ गए। ४॥ बजे डॉ० झावरमल से पता चला कि कैंसर है। जी बहुत ही दुखी हो रहा है।

१७ अक्तूबर : ऑपरेशन का दूसरा दिन है। परंतु कैंसर निकलने के बाद सबकी हिम्मत टूट गयी है। मन खराब हो गया है।

१९ अक्तूबर : सुबह ४॥ बजे अस्पताल में एस० एन० टी० का फोन आया। भाई जी की तबीयत खराब है। मन में चिंता तो हो गयी थी पर यह आशा नहीं थी कि अस्पताल जाते ही शरीर शांत मिलेगा। बहुत रोया। ६० वर्ष हम दोनों साथ रहे। उनकी उम्र ६२ वर्ष ८ महीने की थी। इन दिनों में उनका स्वभाव भी कितना अच्छा हो गया था। सबकी खोज-खबर लेते थे। राजू को कल बुलाने का तय किया था, पर कौन जानता था

कि एक दिन में ऐसा हो जायगा। कैंसर की वीमारी थी, प्रायः १-१॥ वर्ष से पता नहीं चल रहा था। ७॥ वजे घर ले आए। ११ वजे अर्थी ले गए। भाभी का बुरा हाल था, रोते-रोते वेहोश सी हो रही थीं। मुझे लगता है, मैं भी अब शायद ज्यादा वर्ष जिंदा नहीं रह पाऊँगा। पैरों में दर्द रहता है, ब्लड प्रेशर है, चिंता छूटती नहीं। स्मशान भूमि कार से गया। वहुत लोग आए थे।

२० अक्तूबर : सारे दिन चिंता, लोग मिलने वाले आ रहे हैं। मन खराव हो रहा है। सोचता हूँ, जीवन कितना क्षणिक है। क्या पता कव चला जाय। बिरजू वगैरह सब आ रहे हैं। राजू को भी आने को कहा है।

२१ अक्तूबर : दिन में आगे के लिए क्या करना है, इस वात को सोचता रहा। मिल की हालत खराव है। ऐसा लगता है, कभी भी कंपलसरी क्लोजिंग हो सकती है। एस० एन० टी० काफी चिंतित है। मदन ने पहले की सारी वातें वतायीं, काफी चिंताजनक थीं। नन्दू, शारदा, वेला ११॥ वजे आ गए। काफी उदास थे। मुरझाए-से खड़े थे।

२३ अक्तूबर : कलकत्ते लोग जा रहे हैं। नन्दू आज दिल्ली चला गया। शारदा, अशोक, वेला सव कलकत्ता चले गए। मैं भी प्लेन पर गया। मन में नाना प्रकार की चिंताएँ हैं। राजू से वात की, वह एक प्रकार से राजी है।

२८ अक्तूबर : मन में न जाने कितनी तकलीफ, कितनी अशांति है। रात में मदन ने कहा कि भाभी नन्दू के लिए कहती है। मैंने नन्दू को फोन किया। उसने कहा, मेरी तवीयत वंवई में खराव रहती है। वंवई का पानी मुझे कम जँचता है।

३० अक्तूबर : आज भाई जी के १२ दिन हो गए। ४ वजे मंदिर गए। राजू को भाई जी की तरफ गोद दे दिया। उसकी माँ को वहुत दुख है, परंतु दूसरा उपाय भी क्या था?

नागदा

३१ अक्तूबर : सुवह ९ वजे विरला हाउस आ गया। आर० डी०, एम० पी० सवसे मिला। ९॥ वजे उनके साथ ही नागदा के लिए रवाना हुआ। १२ वजे पूगा। एयर पोर्ट पर वहुत लोग थे। ४ वजे कारखाना देखने गया। जी० डी० साथ थे। अच्छा कमा रहे हैं। परमात्मा इन्हें सफलता देते हैं।

नागदा-कानपुर

१ नवम्बर : सुवह जी० डी० विरला के साथ नागदा से रवाना हुआ। मन खिन्न था, रोना आ रहा था, भाई जी की याद आती है, रात में २ वजे कानपुर पूगा। ३ वजे घर आ कर सो गया। जितनी देर जी० डी० के साथ था, ठीक था, परंतु फिर वरावर उदास होता रहा।

कानपुर

२ नवम्बर : बी० पी० बाजोरिया का फोन आया। चीनी मिलों के बारे में पूछ रहे थे। मैंने कहा, ३५ लाख लगा, देंगे। कल फोन करने को कहा है। एलिगन का रिजल्ट काफी खराब है।

नयी दिल्ली

४ नवम्बर : दिन में काफी घूमा, पैरों में दर्द है। एल० एन० मिश्र से मिला। उन्होंने मुझे म्योर मिल देने को कहा है, अच्छा बर्ताव किया।

७ नवम्बर : सुबह ९ बजे पं० कमलापति त्रिपाठी के पास गया, ९॥ बजे चोपड़ा जी के एक घंटा था। मुझे अच्छे आदमी लगते हैं। ३ बजे बोर्ड मीटिंग में गया : ३॥ घंटे चली। जज साहब ने थोड़ा खराब रिमार्क दिया, वरना सब ठीक था।

नयी दिल्ली

१० नवम्बर : ललित नारायण जी मिश्र से बात हुई। शायद म्योर मिल दे देंगे। श्री दिनेश सिंह से बात हुई। उसका भी रुख ठीक है। लेख 'अग्नि परीक्षा' पर लिखा, 'नवभारत टाइम्स' में देकर आया और भी तीन जगह भेजा। रात में कई बार रोना आ गया, भाई जी की याद बनी रहती है। मन कैसा ही हो जाता है।

जयपुर

११ नवम्बर : सुबह की प्लेन से ८॥। बजे जयपुर पूगा। १। बजे की बस से ४॥ बजे सीकर। यहाँ बहुत से लोगों से मिला। चुनावों की तैयारियाँ हो रही हैं। मुरली देवड़ा के आने की बात है। मेरा मन नहीं है। साँवरमल जी फतहपुर से आए। दूसरे लोग भी आए। एक बार सरदारशहर जाने का विचार हुआ परंतु जी में सोचा कि वहाँ नौकर के बिना नहीं जाना चाहिए, अब पहले जैसा मेरा स्वास्थ्य नहीं रहता।

सीकर

१२ नवम्बर : दिन में १ बजे बद्री नारायण जी के साथ जीप में साँवली गया, जोशीजी साथ में थे। हर्ष पर्वत पर गया। ३१०० फीट की ऊँचाई है, अच्छी जगह है। कई मकान बने हैं, सड़क भी अच्छी बनी है। सोढानी जी वास्तव में अच्छे कार्यकर्ता हैं। राजस्थान में ऐसी सूझबूझ के ५ कार्यकर्त्ता भी निकल आयें तो बहुत बड़ा काम हो सकता है। मगर अगली पीढ़ी की तो बात क्या, इस पीढ़ी में भी नहीं मिलेंगे। सीकर के चुनाव में रामदेव जी छाए हुए हैं। मेरा विचार नहीं है, शक्ति भी नहीं है।

कलकत्ता

१५ नवम्बर : सुबह ९ बजे स्टेशन पहुँचा। नन्दू था, घर आया। दिन में बद्रीबाबू आए। उनके साथ 'आमि मंत्री होबो' देखने रंगमहल थियेटर में गया। व्यंग साधारण सा था। बंगला रंगमंच में गिरीश बाबू, शिशिर भादुड़ी, अहींद्र चौधरी जैसी प्रतिभा अब नहीं दिखायी देती। समय भी बदला है। रात में ९ बजे सो गया। कैसा ही सपना आता रहा। वाइफ रात में आ गयीं, राजू भी आ गया। वाइफ मन में बहुत उदास है, राजू के कारण। स्वाभाविक है, अपने बच्चे को कोई भी माँ छोड़ना नहीं चाहती।

१६ नवम्बर : वाइफ को रात में नींद नहीं आती है, सारे दिन चिंता रहती है। चाय ठीक है, पाट मंदा है। घाटा तो है ही। सीताराम मिल खराब चल रही है। कपड़े का बाजार कलकत्ते में समान है। रुई तेज है; शेयर बाजार मंदा।

१७ नवम्बर : रतनी आयी, काफी बीमार है। सुशीला जी आयीं। न जाने कल से क्यों चित्त खराब है। लिखना-पढ़ना सब बंद है।

बम्बई

२१ नवम्बर : सुबह ७॥ बजे जी० डी० बिरला के पास गया। वे परसों बंगलोर जायेंगे। मैंने जाने की ना कह दी है। मिल की हालत उन्हें बता दी।

२२ नवम्बर : जी० डी० चुनाव में मुझे खड़ा होने को कह रहे हैं और मित्रों ने भी कहा। मेरा विचार नहीं। पैरों में दर्द रहता है। भाभी राजू की बात पक्की करने को कहती हैं।

२५ नवम्बर : सीताराम मिल की हालत देख कर मन में चिंता होती है; रोना आता है। इस वर्ष काफी घाटा लगेगा। ऐसा लगता है, सँभल नहीं पा रहे हैं। मुरार जी मिल का पिछले वर्ष का नफा १.०४ है, इस वर्ष भी अच्छा रिजल्ट लिखा है।

२७ नवम्बर : सुबह कांति भाई देसाई के यहाँ गया। वे कहते थे, मनु भाई नयी कांग्रेस में चले जायेंगे। १२ बजे मदन के साथ एयर पोर्ट पर आया। वहाँ फिल्म लिया जा रहा था। मुमताज और राजेश खन्ना थे। काफी लोगों की भीड़ थी। वास्तव में मुमताज सुंदर दिखायी दे रही थी। आज भाभी ने राजू के बारे में स्पष्ट बातचीत की है।

कानपुर

२९ नवम्बर : पैरों में बहुत दर्द है। काम फिर भी मिलों में देखना पड़ता है। तकलीफ बढ़ जाती है। जगजीवन बाबू शहर में हैं, परंतु मैं नहीं जा सका। जाना चाहिए था। सुबह रमेश जी मरोलिया से बात की। रुई के भाव बढ़ते जा रहे हैं। ऐसा लगता है, कपड़े की मिलों में इस वर्ष अनाप-शनाप घाटा लगेगा।

नयी दिल्ली

१ दिसम्बर : मनु भाई के साथ रात में खाना खाया। वह कांग्रेस (ओ) छोड़ रहे हैं, इन्दिरा कांग्रेस में जायंगे। दिन में सी० डी० पांडेय से मिला, श्री दिग्विजय नारायण सिंह से भी। गंगा बाबू के घर दो वार गया, दिनकर जी से मिला। ईद की छुट्टी थी। श्री बिलग्रामी के घर गया।

रेल (दिल्ली)

११ दिसम्बर : सुवह भोपाल में आँख खुली। ट्रेन में साथ में एक पति-पत्नी थे। भारतीय हैं, न्यूयार्क में रहते हैं। दोनों काम करते हैं, २४०० डालर मासिक आय है। लड़का अपनी माँ से मिलने आया है। अच्छा लगा। कहता था, स्वदेश का प्यार खींचता है। काफी रुपए कमा कर वापस भारत में दोनों आ जायेंगे। आगरा, मथुरा उतरने का मन में विचार आया, पर असुविधा के कारण मैंने हटा दिया।

कानपुर

१३ दिसम्बर : सुवह ६ वजे पूगा। ट्रेन में साथ में कलकत्ते के एक खेतानों का लड़का शादी में दिल्ली आया था, वापस जा रहा था। रात में उसे कंवल दिया। बेचारा सर्दी से वच गया, नहीं तो वहुत परेशान होता। मेरे पैरों में दर्द है, तेल मालिश कराया। स्वामी जी को २० कम्वल दिए। चाँदगोठियाजी आए, मिलों की हालत वहुत खराव है। ऐसा लगता है; कई मिलें वंद हो जायेंगी। स्वामी रंगनाथानंद का प्रवचन वहुत ही सुंदर रहा। गवर्नर के साथ फोटो खींची गयी। मन न जाने क्यों क्षुण्ण है, वुरे स्वप्न आते हैं, शायद ब्लड प्रेशर भी है।

१५ दिसम्बर : सुवह एक स्वामी जी के पास गया आसन सीखने; अजीब से लगे। रुपया चंदे का माँगते हैं। गलती हम लोगों की है। कौपीन या गेरुआ पहन कर आसन सिखाने वालों से हम आसन सीख कर समझते हैं कि योगाभ्यास करते हैं। ऐसे आसन तो व्यायामशालाओं में सहज में सीखे जा सकते हैं। स्वामी जी लोग अध्यात्म का रस वीच-वीच में पिलाया करते हैं। ऐसा लगता है, यही फर्क है। एल्गिन, कॉटेक्स की मीटिंग हुई। घाटा होता जा रहा है। वड़ी चिन्ता हो रही है। इससे भी ज्यादा सीताराम मिल की हो रही है। वहाँ भी कम-से-कम महीने में २ लाख का घाटा तो होगा ही। ब्लड प्रेशर ऊँचा होता जा रहा है।

कलकत्ता

२१ दिसम्बर : पाट की मिलों में हड़ताल है। वाजार समान है। हमारे पाट के काम में २०-३० हजार का घाटा है। वंवई की मिल की हालत खराव सी है। नाना प्रकार की समस्याएँ उभरती सी आ रही हैं।

बम्बई

२५ दिसम्बर : भाभी से राजू की शादी की बात की, राजी हो गयी हैं। चिंता लग रही थी, वह मिट गयी। मन में शांति हुई।

नयी दिल्ली

३१ दिसम्बर : सुबह दिग्विजय बाबू के गया। गंगा बाबू मिले नहीं। बी० पी० वाजोरिया आए। चीनी मिलों का सौदा हो गया है। ४४ लाख देने होंगे। मिलों की हालत खराब है। ऐसा लगता है, बी० आई० सी० को ५०-६० लाख की टूटत आ जायगी। अगर वाजोरिया जी चीनी मिलें नहीं लेते तो यह हालत न होती।

१९७१*

जयपुर

१४ नवम्बर : दौसा से रामकरण जी जोशी के बाग में गए। अच्छा है। चाय पी। ९॥ बजे चला और १०॥ बजे गलता में गया। ४॥ बजे सीकर पूगे। संदूक रास्ते में खो गया। मन उदास हो गया। सब जगहें देखीं, पर मिला नहीं। सारी रात जागता रहा।

१५ नवम्बर : सुबह उदास मन से चला। १०,०००) रु० की हानि हो गयी, लेख, कागज-पत्र डायरी वगैरह खो बैठा। सारी रात चेष्टा की पर संदूक नहीं मिला। ११ बजे सरदारशहर पूगा।

सरदारशहर

१८ नवम्बर : बहुत दिनों बाद सब लोग सरदारशहर आए हैं। घर भरा-सा लगता है। लोगों को कपड़े वगैरह बाँटने हैं। परसों स्कूल का जलसा है। लाइब्रेरी में कल या परसों रामाश्रय दीक्षित जी की कविता है।

१९ नवम्बर : सरदार शहर में रामाश्रय दीक्षित के साथ में हैं। वाइफ, भाभी, राजू, त्रिशू, मंजु, जे० पी०, कैलाश, एस० एन० टी०, ब्रिरजू, मालती की माँ सब एक साथ हैं। परमा भी आयी है। काफी चहल-पहल है।

कानपुर

४ दिसम्बर : पिछले दो दिनों से कानपुर हूँ। मन लग गया है। एल्गिन, लाल इमली ठीक चल रही है। लेख तैयार किए। लोगों से मुलाकात होती रही। तेल मालिश कराता हूँ। परंतु जुकाम परेशान कर रहा है। पाकिस्तान से लड़ाई जोरों से चालू है। हम लोग जीत रहे हैं। शायद पूर्वी पाकिस्तान १०-१२ दिन में गिर जायगा। रात में अँधेरा था।

६ दिसम्बर : सुबह देर से उठा। कल रात में काफी उलझन रही। ऐसा लगा कि हार्ट फेल हो जायगा। दवा ली। डॉक्टर शशिमाल आए। दिन में सारा काम काज

---

*सन् १९७१ की डायरी खो गयी थी।

देखता रहा। गंगा बाबू से फोन पर दिल्ली बात की। चुनाव लड़ने का मेरा विचार हो रहा है। पाकिस्तान से लड़ाई में हम लोग जीत रहे हैं।

जसीडीह

१० दिसम्बर : मन लग गया है। तबीयत यहाँ आने के बाद ठीक है। रोज ३ मील घूमकर पगला बाबा के मंदिर जाता हूँ। १२ बजे भोजन, फिर १ घंटा सोना। कोई खास काम है नहीं। दोनों बच्चे हिल-मिल गए हैं। 'फ्रांस की राज्य क्रान्ति' पढ़ रहा हूँ। अच्छी किताब है।

कलकत्ता

१५ दिसम्बर : आज पाकिस्तानी फौज ने हथियार गेर दिए। सारे भारत में हर्ष छा रहा है। लोगों का मनोबल बहुत ऊँचा हो रहा है। देश में एक गौरव-बोध होता है।

१७ दिसम्बर : डायरी बच्चों ने खराब कर दी। पन्नों में पेन्सिल से आड़ी-सीधी लकीरें। क्या कहूँ, गलती मेरी है, हँसी भी आती है। लड़ाई की जीत की खुशी हो रही है।

गया

१९ दिसम्बर : सुबह १० बजे पूगा। स्टेशन से टेंपो लेकर गुलाब जी खंडेलवाल के गया। कांग्रेस के कई लोग बैठे थे। अनंत देव शर्मा, डी० सी० सी०, प्रेसिडेंट आदि। अच्छी खातिरी हुई। गुलाब जी सहृदय कवि हैं। बहुत ही अच्छी कविता लिखते हैं। १८ वर्ष की आयु से लिखना शुरू किया, आज तक लिखते जा रहे हैं पर उन्हें रेसपॉन्स नहीं मिला। कवि-सम्मेलन स्थगित हो गया था। ४ बजे मल्ली बाबू डालमिया मिले। पहले भी उनसे मिल चुका था। बड़े भले धार्मिक व्यक्ति हैं, साधना करते हैं। उनकी कार से युनिवर्सिटी और बुद्ध गया पूगा। बुद्धगया बहुत ही पवित्र स्थान है। अच्छी तरह देखा। म्युजियम भी देखा।

१९७३*

बम्बई

१ जनवरी : सुबह मैदान नहीं गया। कसरत भी नहीं की। ८।। वजे राजू के साथ मिल गया। भुगतान की काफी तकलीफ है। वैंक के अकाउंट की लिमिट मिल जायगी। एक प्रकार से राहत वनेगी, दिन में थोड़ी देर किताबें पढ़ता रहा। यहाँ सर्दी कम है। इस वार एक महीने रहने को आया हूँ। रात में मदन का फोन आया कि लिमिट में झंझट है। नींद उड़ गयी। काफी चिंता है।

५ जनवरी : मिल का काम उलझता जा रहा है। मदन पूना गया है। वैंक के वहुत से रुपए उधार ले रखे हैं, चेक फिरती आ जाते हैं, मन में वहुत तकलीफ होती है। किसी तरह किनारा नजर नहीं आता। भवन में स्वामी रंगनाथानंद का भाषण हुआ, सुना। अमेरिकन किताव 'हर' पढ़ रहा हूँ। ऐसी किताव पहले नहीं पढ़ी थी। रुंगटा हाउस में राजस्थानी साधु आए हुए हैं, उनके पास शाम को गया।

८ जनवरी : मदन ७।। वजे आ गया। उषा की माँ वहुत वीमार है। एक वजे तक उसके यहाँ था। मदन से मिल के वारे में वात की। गलती हुई, आज जैसी उसकी हालत है, उससे चिंतावाली वात नहीं करनी चाहिए थी। जनवरी तक मिल को देखने की वात है फिर वेच देनी होगी। कल मजदूरों को पेमेंट देना है, काफी तकलीफ होगी। जी० डी० विरलाजी का फोन आया, दिल्ली चलने को कहा, मैंने 'ना' कर दिया।

११ जनवरी : काम-काज देखने में मन लग गया है। दिसंवर का हिसाव देखा। २ लाख का नफा हुआ है। जनवरी में ४ और फरवरी में भी ४ होगा, मार्च और इसके आसपास ५-६ तक भी हो सकता है। मन को एक प्रकार से थोड़ी सी राहत मिली। कपड़ा २।। करोड़ का विका हुआ है। कुल ७ करोड़ का। इसमें ४ करोड़ का एक्पोर्ट कर देंगे। एक वार रुपया आना शुरू हो जायगा तो फिर चिंता की वात नहीं रहेगी। एक लेख कानपुर भेजा।

१६ जनवरी : कलकत्ते में सव राजी हैं। वंवई में मेरा मन लग गया है। यहाँ आने के वाद १५ दिनों में ३ लेख तैयार किए 'जेवुन्निसा का प्यार', 'पाँचवीं योजना' और 'वढ़ती कीमतें' कलकत्ता भेज दिए।

---

*१९७२ की डायरी नहीं मिली।

२० जनवरी : मुरारजी भाई से मिला। दिन में जी० डी० बिरला का फोन आया, वे कल यहाँ आ गए। उन्हें २३ को दिल्ली जाने का कह दिया। परंतु फिर सोचा कि मुझे तो अभी १०-१२ दिन यहाँ रहना चाहिए। दिन में 'कमांडो' फिल्म देखने गया। लड़ाई की थी। गंदी जगह थी। मूँगफली खा लीं, खराब थीं। पेट दुखने लगा। बाल कटाए। एक मील वर्ली में घूमा। अभाव-ग्रस्त गरीबों की बस्ती है, क्लब के नाम पर कुछ जुआघर थे, वेश्याएँ भी थीं। तरह-तरह के विचार आए। गरीबी अभिशाप है। इस समस्या का सुलझाना संभव नहीं है, पुराने जमाने से कोशिश होती रही। क्या है? क्यों आती है? मैं भी अभावग्रस्त था। आज मेरे बहुत है, फिर भी अभाव है, रुपयों की टान है। चिंता रहती है। मन भटकता है।

२३ जनवरी : १९७२ के नौ महीने का मिल का हिसाब बनाया, १५-२० लाख का घाटा है। बहुत दुख हुआ। मन राजी नहीं है। लिखने-पढ़ने का काम तो खैर कुछ हो जाता है परंतु रिटायर होने की सोच रहा था, यह बात समाप्त-प्राय हो गयी। इसे दुर्भाग्य ही कहा जायगा।

नयी दिल्ली

२४ जनवरी : हवाई जहाज से १। बजे दिल्ली पुगा। सस्ता साहित्य मंडल गया। कल के अखबार में मेरा अच्छा लेख था, पांचवीं पंचवर्षीय योजना पर। बंबई से आया यह ठीक हुआ या नहीं, पता नहीं, परंतु बिरला जी को अच्छा लगा। बंबई में मन लगा था पर जी खुश नहीं था। वजन ७४ किलो है।

२६ जनवरी : सुबह याद ही नहीं रहा कि आज मेरा जन्म-दिन है। दिन गुजरते हैं, आयु भी। कितना बीता, कैसा बीता, आदमी जानता है पर कितना बीतेगा, कैसा रहेगा, नहीं जानता। शायद जानने की सच्ची चाह भी नहीं रखता रवि बाबू की—' 'कि पाइनी तार हिसाब मिलाते मन मोर नहे राजी' की पंक्तियाँ याद आती हैं। पैरों में दर्द है। जी० डी० बिरला से, रतनलाल जी जोशी से बात की। आज झूठ नहीं बोला।

कलकत्ता

२ फरवरी : मदन को फोन किया। वह पूना से आया नहीं है। रुपयों की यहाँ कुछ सुविधा है। मगर बंबई के लिए क्या कर सकता हूँ? तबीयत इन दिनों ठीक नहीं, जोरों से जुकाम हो रहा है। कोयला की खानें सरकार ने कल ले ली। राजस्थान के अकाल के बारे में मीटिंग हुई। २॥ घंटे चली। कुछ करना होगा पर लोगों में अब पहले की सी मुस्तैदी नहीं दीखती। 'फूलों की घाटी' लेख तैयार किया। लगता है, अच्छा बना है।

४ फरवरी : हमड़ागाछी गया। काशी विश्वनाथ सेवा-समिति का कैंप था। एक तरह की गोठ थी। भोजन वहीं किया। अच्छी व्यवस्था थी। मैं भी २ घंटा सेवा पर बोला। शायद अच्छा रहा।

कानपुर

५ फरवरी : सुबह मुगलसराय में ट्रेन बदली की। चिरंजी इसी गाड़ी में थे। ५ बजे कानपुर पूगा। गुंडुराव के घर सामान रखा। ३ बजे बी० आई० सी० की मीटिंग में था। चिट्ठी आयी है, एम० डी० के लिए विचार हो रहा है। ५ तक मीटिंग चली। माथुर का रुख ठीक नहीं लगा। ५॥ बजे एलिगन होता हुआ दीक्षित्त जी के घर गया। वहाँ से प्रो० श्रीप्रकाश के घर, फिर गुंडुराव के यहां से कुछ सामान लाकर गर्ग के घर आ गया। एक लेख शाहजहां वाला तैयार किया। औरंगजेब वाला आधा बना।

कानपुर-दिल्ली

६ फरवरी : मैकरॉबर्ट अस्पताल गया। ब्लड प्रेशर ज्यादा है, २१०/१२०, वजन ७७ किलो। १०॥ से १२॥ बजे तक मीटिंग में था। निर्मला जी के बारे में जज साहब और चोपड़ा जी से बात की। एक बजे लाल इमली और श्री अर्जुन अरोड़ा के गया। १॥ बजे गर्ग के खाना खाया। २॥ बजे एयर पोर्ट पूगा और ४॥ बजे दिल्ली! मदन कलकत्ते गया है मेरा विचार कल शाम को जाने का है! कभी ट्रेन से भी जाने का विचार आता है, २५०) का फर्क पड़ता है।

नयी दिल्ली-बंबई

७ फरवरी : ब्लड प्रेशर १७८/१०० है। बस में बैठकर घूमता हुआ कुतुबमीनार, मेहरौली, राय पिथौरा के किले पर गया। ८०० वर्ष पहले के भारत में पूग गया। प्लेन से ७॥ बजे बंबई पूगा।

बंबई

९ फरवरी : ८॥ बजे वापिस मिल गया। जनवरी का एक रकम हिसाब हो गया है। ४॥-५॥ लाख का नफा है। प्रोडक्शन भी ठीक है। ऐसा लगता है, इस वर्ष ६० लाख तक कमा लेंगे। कपड़े का काफी सेल है। रुई भी ली हुई है। ६०+३० जमीन और गोदामों के ९० आ जायँ तो फिर बहुत सी झंझटें सलट जायंगी। मिल अपने पैरों पर खड़ी हो जायगी। मैं भी रिटायर होकर कुछ लिखने-पढ़ने का काम करूंगा। शरीर अस्वस्थ होता जा रहा है। बुढ़ापा सा आ गया है। रविवार को माथेरन जाने की बात आज सुबह की। १९ ता० का राजस्थान का टिकट बन गया है।

११ फरवरी : दिन में मिल का हिसाब देखता रहा। रोना आ जाता है। और लोग कितने बढ़े, हम उल्टे डूबते चले गये। ७३ मार्च में भी कुछ फायदा नहीं होगा। दिसम्बर तक तो एक प्रकार से नुकसान है। इन तीन महीनों में जो कुछ थोड़ा-बहुत नफा हो जाय। सरदार शहर जाने का विचार है। माथेरन का प्रोग्राम नहीं रहा, इसलिये पहले चला जाना चाहता हूँ।

बड़ौदा

१८ फरवरी : सुबह ५।। बजे ट्रेन से सूरत पूगा। वेटिंग रूम में ठहर गया। घूमने निकला। ताप्ती नदी का पुल पार किया। मन को शांति मिलती है। समुद्र के किनारे घूमता रहा। इतिहास में सूरत प्रसिद्ध रहा है व्यापार, रफ्तानी का बड़ा काम होता था। अब तो बंबई बड़ा है। पुराना किला देखा। बताया, १५४० ई० में बना था। साधारण-सा लगा। शिवाजी सूरत आये थे। मराठों के इतिहास की घटनाएँ मन में आने लगीं। गरमी काफी पड़ रही थी। थकावट भी काफी आ गयी। बस से शहर वापस आ गया। बहुत ही गंदा सा शहर लगा। २।। बजे ट्रेन से बड़ौदा चला आया। चार घंटे पैदल और बस में शहर घूमता रहा। बहुत अच्छा व्यापारिक शहर है। काफी बड़े-बड़े मकान वगैरह हैं। कल-कारखानें भी हैं। शहर बढ़ रहा है। रात में स्टेशन के रेस्तराँ में खाना खाया। वृन्दावन लाल वर्मा की 'महादजी सिंधिया' पढ़ता रहा। आज दिन में तीन शहर देखे। परंतु इस प्रकार भागदौड़ में शहर देखने का कुछ अर्थ नहीं।

आबू

१९ फरवरी : सुबह अहमदाबाद ६।। पूगा। चाय, काफी पी। मेल से ९।। चला। डटकर नाश्ता कर लिया। प्रायः १३ वर्ष पहले माउंट आबू आया था। इन वर्षों में परिवर्तन हुआ है। पहले की बातें याद हो आयीं। आबू पर लिखने का मन होता है। सरस्वती नदी आज भी रहस्य है। प० बंगाल, प्रयाग और यहाँ। असल में कहाँ रही है? दिलचस्प बात लगती है। साथ में रामू है, तेल मालिश कराता हूँ। पेट खराब है।

किशनगढ़

२२ फरवरी : दो दिनों से किशनगढ़ में हूँ। भागीरथ जी बहुत राजी हुए। जगह अच्छी है। २२०० करघे हैं और भी कई तरह के काम हैं। पुराना किशनगढ़ गया। ३००।४०० वर्ष पहले का शहर है, टूटा-फूटा, उजड़ा हुआ-सा। भागीरथ जी तन और मन से स्वस्थ हैं। उनकी पत्नी के चेहरे पर भी संतोष और सुख है। कल एक फैय्याज अली नाम के चित्रकार के घर गया। बहुत अच्छा वातावरण था। कृष्ण का और नागरी-दास जी का भक्त था। कई चित्र बना रखे थे। बोला, बेचूंगा नहीं, चाहे कितनी ही

तकलीफ पाऊँ। लड़के-लड़की सब संस्कृत पढ़ते हैं। अच्छा लगा। किशनगढ़ में और तो सब ठीक है, पर खाना ज्यादा हो जाता है। मिल ९ लाख रुपया महीना कमा रही है। सार्वजनिक कार्यों में काफी बड़ा हिस्सा ये लोग लेते हैं—खर्च और दान भी करते हैं। आज सुबह बहुत से लोग कलकत्ते से आये। जे० पी० भी आये। स्टेशन पर बड़ी भीड़ थी। जे० पी० ने रुपये वाली बात के लिए धन्यवाद दिया। कुछ सेवा मुझसे बन जाती है, कोई खास बात नहीं। मैं तो कुछ भी नहीं कर पाता हूँ। ३ बजे से ६ तक आयोजन-समारोह था। मेरा नाम भी बोलनेवालों में था। तीन दिन किशनगढ़ में अच्छे बीते। भागीरथ जी के स्नेह-आतिथ्य के क्या कहने, सब घर वाले लगे रहे।

नयी दिल्ली

२४ फरवरी : दिन में पार्ल्यामेंट गया। रतनलाल जी जोशी के घर तौलिये दे आया। रात में लालबहादुर शास्त्री जी के लड़के के विवाह में गया। जान-पहचान के बहुत लोग मिले। परंतु आज शास्त्री जी जिंदा होते तो बात ही दूसरी होती। कल मंगलदेव जी शास्त्री के घर गया था। अच्छे विद्वान् हैं। उन्होंने एक पुस्तक भेंट की। मन में कैसा ही लग रहा है। वे ८२॥ वर्ष के हैं। इतना लिख रहे हैं, मैं क्यों नहीं लिख पाता हूँ?

सवाई माधोपुर-रणथंभोर

२५ फरवरी : सुबह ५॥। सवाई माधोपुर पूगा। स्टेशन पर सामान रखा। स्कूटर से मालचंद जी शर्मा के घर गया। ९॥ तक बाजार में घूमता रहा। थोड़े से अनार खरीदे, पपीता खाया, २ कचौरियाँ भी। १० बजे रणथंभोर का किला देखने चला। २॥ घंटे वहाँ था। १२ बजे नीचे उतरा। रणथंभोर का मंदिर देखा। पुराना है, शायद २५० वर्ष, ३०० वर्ष का। किला ९०० वर्ष का है। हमीर की याद आ जाती है। राजस्थान का शौर्य मन को घेरता है। वैसे, शरीर में कमजोरी थी परंतु किले पर अच्छी तरह चढ़ गया। शर्मा जी के साथ खाना खाया। वे स्टेशन तक पहुँचाने आये। उन्हें तीन किताबें और 'विश्वयात्रा के संस्मरण' भेंट की।

रेल-दिल्ली

२६ फरवरी : ट्रेन में मन लग गया। इस सफर में तकलीफ नहीं हुई। रात में नींद ठीक आयी। सुबह ६ बजे जगा। कॉफी और थोड़ा सा सैन्डविच लिया। १५) में एक प्रति 'विश्वयात्रा के संस्मरण' की बेची। साथी यात्री को अच्छी लगी। ९॥ बजे बंबई पूगा। विश्राम किया। मुरार जी से बात की। फरवरी का महीना अच्छा जायगा, शायद कुल मिलाकर ५॥ लाख का नफा रहेगा।

बम्बई

१ मार्च : नत्थु केडिया, जी० डी० के साथ ३ मील घूमा। घर आया। लिफ्ट खराब हो गयी है। ऊपर चढ़ने में दिक्कत होती है। पैरों में दर्द है। एक प्रकार से बुढ़ापा आता जा रहा है या आ गया है। जी० डी० ने भी कहा तुम्हारे पैरों में कष्ट है। देश में धर्मशाला बनाने की बात है। २॥ लाख खर्च होंगे। बिरजू ने कहा है, यहाँ से ड्राफ्ट भेजने होंगे। मुझे कम जँचा। ४२ लाख में एक चाय बगीचा लेने का नन्दू ने विचार किया है।

७ मार्च : प्रभुदयाल जी से मिलने ७ बजे उनके फ्लैट गया। वे बिरला जी के गये थे। जी० डी० का 'हिंदुस्तान' में गंगा जी पर बहुत अच्छा लेख छपा है। दिन में मिल में था। वैसे, मिल बहुत अच्छी चल रही है। 'माउंट युनिक' में रहता हूँ। दिन में किताबें पढ़ता हूँ।

रेल-सीकर

११ मार्च : सुबह रतलाम में जगा। कॉफी-चाय ली। सीताराम मिल का हिसाब देखता रहा। ऐसा लगता है, भगवान् ने विनती सुन ली। ७४ के मार्च के अंत तक १० लाख का नफा जरूर होगा। जमीन, गोदाम, बिजली की समस्या ठीक हो जायगी। सब रुपये चुकती हो जायंगे। मन में एक प्रकार शांति है। डायरी पढ़ता रहा। शुरू से ही दुख और निराशा है। पैरों में दर्द रहने लगा है। कमजोरी भी है। २ बजे माधोपुर होते हुए ५ बजे जयपुर पूगा। सीकर स्टेशन पर रघुनाथ जी तथा साँवरमल जी आये थे। सर्दी जोरों से है। ११-१२ बजे तक लोग मिलने को आते रहे।

नयी दिल्ली

१३ मार्च : सुबह ७ बजे पूगा। स्टेशन के वेटिंगरूम में सामान रखकर गंगाबाबू के पास गया। फिर डाक्टर गुप्ता के। सलाई ली। पेशाब की तकलीफ हो जाती है, जड़ से मिटती नहीं। बंबई में और पूना में जान-पहचान के डाक्टर नहीं। दिक्कत हो जाती है। अनजान पर भरोसा होता नहीं। गंगा बाबू को शहद दिया। ५। बजे उनके साथ कैवल्य धाम और योगाश्रम के समारोह में गया। ९ बजे स्कूटर से स्टेशन पूगा। लखनऊ एक्सप्रेस से कानपुर के लिए रवाना हुआ।

कानपुर

१४ मार्च : सुबह कानपुर पूगा। कार नहीं आयी थी। कैसा ही लगा। शर्मा जी की कार में सामान रखा। पार्क हाउस में ठहरा। सदरलैंड हाउस गया। २ बजे स्टेशन आया। ट्रेन में भीड़ थी। मन में कानपुर से विराग सा हो रहा है।

कलकत्ता

१९ मार्च : आज कल चंदे के काम से निकलता हूँ। हो रहा है। भागीरथ जी की वहुत अच्छी इज्जत है। ९ वजे रशेल स्ट्रीट में होली के उत्सव में गया। १५० आदमी थे। खाने-पीने की अच्छी व्यवस्था थी। ४ वजे विशुद्धानंद में भी गया। २॥ घंटे था।

वम्बई

२६ मार्च : सुवह ६॥ वजे दादर पूगा। टैक्सी लेकर घर आया। ऊपर आया तव पता चला वैग छूट गया। मन में चिंता हुई। डायरी वगैरह उसमें थी। आधा घंटे वाद टैक्सीवाले सरदार जी लेकर आये, ५) इनाम के दिये। ९। वजे मिल में गया। काम पहले से ठीक है। मार्च में ६० लाख का माल वनेगा। नफा है ही। कंट्रोल पर ज्यादा कड़ाई है।

२९ मार्च : सुवह मारु जी के साथ वावा का दर्शन करने गया। शाम को उनका प्रवचन वल्लभ भाई स्टेडियम में था। अच्छा वोलते हैं। एक लाख के लगभग भीड़ थी, भजन वगैरह हो रहे थे।

३१ मार्च : सुवह जी० डी० के साथ ३॥ मील घूमा। विजली का ढंग ठीक हो जायगा, लगता है, पर कंट्रोल कपड़े की चिंता है। हरिद्वार या मथुरा जाने का मन हो रहा है। वंवई अव कम आने का मन हो रहा है। न जाने कैसा-कैसा सूना लग रहा है। वसंती के अगर वच्ची फिर हो गयी तो घर में कैसी उदासी आ जायगी। अगर लड़का हुआ तो फिर कलकत्ता जाऊँगा। दिन में वेंकटेश्वर प्रेस गया। दो कितावें ले आया।

२ अप्रैल : दो-चार दिनों से न जाने क्यों मन में अवसाद सा आ रहा है। मन करता है, कहीं रिटायर होकर रहूँ। जी० डी० वंगलोर चलने को कहते हैं। पर मेरा मन गर्ग, दीक्षित जी आदि के या फिर नत्थू आदि के साथ जाने का या अकेला कहीं जाने का कर रहा है।

४ अप्रैल : आचार्य रजनीश वंवई में रहते हैं। वहुत ही विद्वान् और अच्छे ऑरेटर हैं। ५० पुस्तकें लिखी हैं। उनकी काफी चर्चा है।

कानपुर-लखनऊ-वारावंकी

७ अप्रैल : सुवह ८ वजे कानपुर पूगा। रिक्शा लेकर पार्क हाउस आया। सारे दिन घर पर रहा। लिखना-पढ़ना कुछ हुआ नहीं। शाम को ६॥ वजे कार से रवाना हुआ। रास्ते में लखनऊ में सर्वहितकारी भोजनालय में खाना खाया। वारावंकी रात में ११ वजे पहुँचा। अच्छी धर्मशाला मिल गयी थी।

वारावंकी-अयोध्या-दभनान

८ अप्रैल : वारावंकी से सुवह ७ वजे अयोध्या पूगे। वाल छोटे कराये। सरयू के घाट पर पुल के नीचे स्नान किया। पानी ठंडा था। दीक्षित जी, दूगड़, गर्ग और ज्योति

और मैं, ५ थे। १० वजे वमनान पहुँचे। ५॥ तक रहे। १॥ लाख में एक जेनेरेटर लिया। ९ वजे लखनऊ पुगे। १२॥ वजे कानपुर।

९ अप्रैल : दिन में कानपुर और चंपारण की मीटिंग हुई। जज साहव, चोपड़ा जी आये थे। चेयरमैन हर प्रकार से झंझट कर रहे हैं। सतीशचंद उनके पक्ष में हैं।

पुरी

१३ अप्रैल : वीस वर्ष वाद आया हूँ। अच्छा लगा। समुद्र में खूब नहाया। शाम को वाजार गया। मंदिर देखा। सेक्स की प्रतिमाएँ हैं। खजुराहो में भी मंदिरों में ऐसा ही है। शायद तांत्रिक प्रभाव है। हो सकता है, विकारमय शरीर का वाहरी आवरण विकारी है और आत्मा की तरह इस देह के अंदर निर्विकार भगवान विराजते हों, यही भावना हो।

१५ अप्रैल : पांच-छः मित्र साथ हैं। समय वीत जाता है। समाचार-पत्र नहीं आते, रेडियो भी नहीं है। ताश में हल्ला वहुत होता है। कल पांचीलाल जी घेलिया ताश में हार कर चिल्ला रहे थे। उन्हें कड़ाई से समझाया। आज पंडा जी आये। उन्होंने वही दिखायी, सं० १९६७ के आसोज में दादा जी आये थे। फिर मैं स० १९७९ में ३३ वर्ष पहले आया था। फिर एक वार सं० २०१० में मित्रों के साथ आया था। ३२ वर्ष पहले पिता जी और माता जी भी आयी थीं। पंडे को ५) दिये। मन में कैसा सा लगता है। न पढ़ना, न लिखना। पास में रुपये थे, वे खर्च कर दिये हैं।

कलकत्ता-बम्बई

३० अप्रैल : सुवह ४। वजे उठा। सामान जँचाया। वाइफ नाराज है। तवीयत उसकी खराव है। मेरी भी खास अच्छी नहीं। न जाने मन सूना-सूना सा क्यों हो रहा है। प्लेन से नागपुर ९ वजे पूगा। १० वजे वंवई। सारन का पत्र था। मुझे एक्सिक्युटिव डायरेक्टर नहीं वनाया गया। मन में वैसे खास चिंता नहीं हुई। फिर भी ऐसे व्यवहार से कुछ उदासी तो आयी ही। मदन से, राजू से वात हुई। कंट्रोल क्लॉथ हमलोग वना रहे हैं। ७५ पैसा घाटा लगता है। जून तक ५ लाख का नुकसान लगेगा। एक्सपोर्ट के जहाज कम मिल रहे हैं। अपना रुपया १० लाख लगा हुआ है। मिल में विशेष सुधार नहीं है।

कलकत्ता

८ मई : प्लेन से नागपुर होता हुआ वंवई से आया। वंवई में रुपये की वहुत चिंता सी रहती है। शाम को वसंती के गया। ३००-४०० लोग आये। काफी रौनक थी। दिन में गीगे का नामकरण हुआ। मेरे मन में खुशी है। कलकत्ते में मन लग जाता है।

१० मई : ४ से ७ तक विवाहवालों के घर गया। मारवाड़ी सम्मेलन के कारण विवाह में थोड़ी सादगी जरूर हुई है। फिर भी अभी तक काफी दिखावा और सजावट है। जिस प्रकार का, समाज का ढंग है, क्रांति आयेगी, सब मरेंगे। रुपया शेष हो जायगा। लोगों को सरकार जेल देगी।

वाराणसी

१६ मई : उपवास किया। सारे दिन फल और मट्ठा लिया। चित्त वैसे खुश है, डाक्टर से ब्लड प्रेशर जँचवाया। १८६/११७ है। चिंता सी हुई। बनारस वैसे अच्छी नगरी है, चीजें अपेक्षाकृत सस्ती हैं। शाम को सीताराम जी चतुर्वेदी और 'आज' गया। रात में विश्वनाथ मुखर्जी के गया। डा० गंगाप्रसाद पांडे के गया। उन्होंने सवा महीना-डेढ़ महीना जमकर इलाज कराने का कहा। दिन में घर पर ही था। बाजोरिया जी का लड़का आया था। कानपुर शुगर से इस्तीफा देने को कहा है। मुझे मन में काफी दुख हुआ। जिनके लिये इतना किया, वे ही इस प्रकार के हो गये हैं।

कानपुर

१९ मई : आज चोपड़ा जी और जज साहब ने बी० आई० सी० से इस्तीफा दे दिया। ३ घंटे मीटिंग चली। काफी झंझट सा हुआ। अब कानपुर में आना और रहना गैर-वाजिब बात है।

बम्बई

२६ मई : मदन की पत्नी का ऑपरेशन था। ७॥ बजे अस्पताल गया। ९॥ बजे तक ऑपरेशन हो गया। बहुत बड़ी गाँठ निकली। शायद अब ठीक हो जायगी। रोज की चिंता भी मिटेगी। ७ बजे बिड़ला हाउस गया। आर० डी० के बगैर सूना सा लगता है। जीवन का क्या ठिकाना? एक घंटे पहले बात कर रहे थे। एक घंटे बाद, सब यहीं छोड़ चले गये। ऐसे ही एक दिन मैं भी चला जाऊँगा, सारी चीजें यहीं पड़ी रह जायेंगी, धन, दौलत और बेटे, पोते। जो पढ़ना-लिखना हुआ, वही रह जायगा।

४ जून : आज हैंगिंग गार्डन में एक बेंच पर बैठा था, फिर रोना आ गया। कब ठीक होगा? रुपयों की लगातार टान चली आ रही है। नफा पिछले वर्ष नहीं की तरह है।

९ जून : 'हरित क्रांति' का लेख काफी मेहनत कर तैयार किया। शायद अच्छा बन पड़ा है। यहां की ब्रिटिश लाइब्रेरी अच्छी है। मिल में बिजली की समस्या है। कटौती होती है, मिल बंद करनी पड़ती है, प्रोडक्शन घट जाता है। विकल्प नहीं। कपड़े का

स्टॉक जमा हो गया। इंसपेक्टर पास नहीं कर रहा है। देरी होती जाती है, मन में फिर से चिंता शुरू हो गयी।

नासिक

१३ जून : मौसम बहुत अच्छा है। गोदावरी के किनारे दो मील घूमा। बहुत से पुराने मंदिर देखे। स्मृतियाँ जुड़ी हैं। गोदावरी में स्नान कर चित्त प्रसन्न हो गया। लगा, सारा अवसाद मिट गया। इसे दक्षिण की गंगा कहते हैं। ९॥ बजे दो गुजराती सज्जन और नरनारायण जी आये। उनके साथ कार से गुफाएँ और मन्दिर देखने निकल गया। अच्छा समय बीता। श्री राम जहाँ ठहरे थे, बहुत रमणीक जगह है। लगता है, स्थान-विशेष का प्रभाव मन पर पड़ता है। त्र्यंबकेश्वर में पहाड़ पर गोदावरी का उत्स देखा। काफी खड़ी चढ़ाई है। ऊपर से दृश्य बहुत सुंदर है। कई छोटी-बड़ी गुफाएँ हैं, एक गुफा में मंदिर भी है। गुरु गोरखनाथ का बताते हैं। जगह अच्छी है पर उपेक्षित। रास्ते में गाँववालों ने सूखी मछलियों के ढेर लगाये थे। बड़ी बदबू थी। इन्हें कहीं और हटाया जाना चाहिए। यात्रियों को असुविधा होती है।

कानपुर

२२ जून : पार्क हाउस में ठहरा हूँ। कल एक महीने बाद आया। गर्ग, दीक्षित जी, दूगड़, विनोद मोदी सभी मिलने आये। 'जेबुन्निसा' वाली कहानी पूरी हो गयी। अच्छी जान पड़ती है। सदरलैंड हाउस गया। १० बजे से १॥ तक मीटिंग चलती रही। कानपुर में मन लग गया था, लोग स्नेह रखते हैं।

कलकत्ता

१ जुलाई : सुबह विक्टोरिया गया। फिर नत्थू केडिया के साथ 'राज' फिल्म देखने गया। १० बजे गंगा बाबू आये। एक हिंदी प्रकाशन की बात कर रहे थे।

कलकत्ता-बंबई-रेल

४ जुलाई : कलकत्ते से थर्ड क्लास में पत्नी के साथ चला था। 'आज' पढ़ता रहा, ताश खेलता रहा। नागपुर में लोग खाना लेकर आये थे। रात में फर्स्ट क्लास में जगह मिल गयी। इसलिये आराम से सो गया। दरअसल इस उम्र में अब थर्ड क्लास की यात्रा काफी तकलीफदेह लगती है। पत्नी एक प्रकार से थक गयी थी।

बंबई

६ जुलाई : अहमदाबाद से शुभकरण दूगड़ का फोन आया। उनकी मिल ६ लाख कमा रही है। हमारी उससे दुगुनी बड़ी है परंतु इतना ही कमा रही है। रुपये की टान शायद

इस महीने मिट जायगी। ६ वजे से ८ वजे तक चोखानी जी की लड़की की शादी में गया। अच्छी जोड़ी थी। दरअसल, लड़के वाले ने त्याग किया। यह सगाई पूरी तौर से मेरे प्रयत्न से हुई। मुझे भी खुशी हुई। चोखानी भले आदमी हैं परंतु उनके पास रुपये नहीं हैं। सामनेवाले को एक लाख लगाने वाले मिल रहे थे। परमात्मा की दया से यह संबंध हो गया, लड़की-लड़का खुश हैं।

कानपुर

२२ जुलाई : सुवह ७ वजे दिल्ली पूगा। सरदारशहर और सीकर की यात्रा अच्छी रही। ९। वजे नयी दिल्ली स्टेशन आया। आसाम मेल से रवाना हुआ। ऊपर की सीट थी। अधिकांश समय सोता रहा। दिल्ली में वर्षा अच्छी हो गयी है। शाम को ५ वजे कानपुर पूगा। चंपारन की मोटर आयी थी। पार्क हाउस गया। लोगों को फोन किये। सुवह मदन से वंबई वात कर ली थी। कुछ चिंता मिटी। काम ठीक चल रहा है।

नयी दिल्ली

२४ जुलाई : सुवह ५॥ वजे दिल्ली आया। इसके पहले थोड़े से आसन कर लिये थे, गरम पानी नीवू भी लिया था। डेढ़ मील घूमा। ६॥ वजे मनु भाई के गया। ७॥ तक था। काफी वात हुई, इंदिरा से नाराज हैं। मिनिस्टरी चाहते हैं। मिलती नहीं। वहाँ से आकर एस० एन० मिश्रा, गंगावावू, सी० डी० पांडे, दिग्विजय वावू, सवसे मिला, चीजें देकर आया। ११ वजे रतनलाल जी जोशी, वहाँ से 'कादंविनी', राजेंद्र अवस्थी मिले नहीं। १२ वजे पार्ल्यामेंट आया, ५ वजे तक था। दिल्ली में ऐसा लगा, इंदिरा जी का ग्लैमर फीका पड़ रहा है। शाम को सत्येन्द्र नारायण सिन्हा, विहार कांग्रेस (ओ) के नेता से वातचीत की। ६ वजे कई मित्रों के साथ सी० वी० गुप्ता जी से मिलने अस्पताल गया। वे वीमार हैं। हार्ट का इलाज चल रहा है। मृत्युंजय वावू के दामाद भी वीमार हैं। घर आया, गंगावावू, त्यागी जी, टी० एन० सिंह, रतन लाल जी जोशी, वगैरह खाने पर आये। मेरा मन राज्यसभा में आने के लिये कुछ हो रहा है।

वंवई

२८ जुलाई : एक ज्योतिषी ने मेरा नाम वताया और कहा कि राजू के लड़की होगी। जे० पी० अस्पताल में हैं, अभी तक उनके पास नहीं जा सका। मिल से १२॥ वजे घर आया। देखा वहुत से लोग आये हैं। भीखमचंद जी भी आये। वातावरण वहुत हँसी-खुशी का था। ८ वजे तक धार्मिक पुस्तकें पढ़ता रहा। मेरा मन होता है, प्रकाशन संस्था कर लूं, नवोदित लेखकों की रचनाएँ प्रकाशित करूँ।

२९ जुलाई : १० मित्र आये थे। राजनीति की बातें होती रहीं। देश की आर्थिक स्थिति खराब है। इंदिराजी ने विरोधी नेताओं को बुलाया है। अनाज बहुत महँगा हो रहा है। राजस्थान में घास का भाव १) ७५ प्रति सेर हो रहा है। घी २०) किलो। पिछले दिनों ३ दिन सरदारशहर और १ दिन सीकर रहा। दिल्ली भी एक दिन रहा। सभी जगह चिंता है।

४ अगस्त : परमानंद जी० केजड़ीवाल के साथ शेख अब्दुल्ला से बात करने ताजमहल होटल गया। और भी २५-३० व्यक्ति थे। काफी इन्फॉरमेटिव बातें थीं।

१२ अगस्त : ९॥ बजे सुबह एस० पी० जैन के साथ जे० पी० से मिलने गया। उनकी तबीयत कुछ ज्यादा ही खराब है। लगता है, बहुत दिन नहीं बचेंगे। अच्छे व्यक्ति हैं। रविवार को मन लग जाता है। लिखना तो कम है ही। कल के० पी० मोदी की पार्टी अच्छी हो गयी। वे खुश थे। एस० पी० जैन से बात होती रही कि अगर १० लाख रुपये आदमी के पास हो जायें तो बहुत आराम से रह सकता है।

२१ अगस्त : रामेश्वर दयाल तोतला जी कल चले गये। आदमी भले हैं। परंतु शायद व्यावहारिक कम हैं। सदाचार-समिति कर रहे हैं जो निश्चित रूप से फेल होगी। मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता है, भौतिक सुख। आज की संस्कृति में तो आचार-विचार का सत् रहना और रखना बहुत कठिन जान पड़ता है। दिल्ली के चंद्र स्वामी के यहाँ सारे दिन था, खाना नहीं खाया। शाम को जे० पी० को लाने गया। स्वामी जी के पास आया। वहाँ कृष्णपूजन था। भजन वगैरह हुए। ९॥ बजे घर लौटा। जे० पी० कह रहे थे, स्वामी जी में सिद्धि है, सारी बातें बता देते हैं।

२३ अगस्त : स्वामी जी के पास अधिकांश समय चला जाता है। मुझ पर एक धुन सी सवार हो जाती है यह भी एक कमजोरी है। स्वामी जी कैसे हैं, क्या करामात है, यह तो मालूम नहीं, परंतु जे० पी० उनसे प्रभावित जान पड़ते हैं। उनके ९ बड़े सवाल का ठीक जवाब दिया। मुझे लगा, बात ज्यादा करते हैं। मुझे कहते हैं, तुम्हें संसद का सदस्य बनायेंगे। इंदिरा जी से फोन पर बात हुई है। जी० डी० बिड़ला के रात में गया; वे खाने पर बैठे थे, मुझे भी बैठा लिया।

कलकत्ता

५ सितम्बर : भागीरथ जी देश से आ गये। ज्यादा बीमार हैं। लीवर खराब बताते हैं। शारदा भी बीमार है ज्यादा सोरियसिस, बहुत कमजोर हो गयी है। शेयरों में, हेशियन में घाटा २५०००) हो रहा है। बहुत चिंता होती है; सौदा करना नहीं आता,

नहीं करना चाहिए। क्यों फजूल में मन में चिंता हो। सुवह भागीरथ जी के घर गया, परमात्मा उन्हें जल्दी ठीक करे वहुत पवित्र व्यक्ति हैं, दयालु और सेवाभावी।

७ सितम्वर : रघुनाथ जी खेतान के पैर की हड्डी टूट गयी, मिलने गया, काफी कष्ट में हैं। दिल्ली से आज आये हैं। भागीरथ जी कानोड़िया भी काफी वीमार हैं, परंतु ऐसा लगता है, वच जायेंगे। मैं वहुत देर तक उनके पास वैठा रहा। शेयर वाजार काफी तेज है, मन में चिंता है हेशियन-वोरे भी तेज हैं, मत्थे हैं, मुझे घाटा है।

बम्बई

१३ सितम्वर : पैरों में दर्द है। लिखने का काम वंद सा है। चंद्र स्वामी के ९। वजे गया। स्वामी जी ने कहा है, 'इंदिरा जी से तुम्हारे लिए वात की है। उन्होंने कपूर को कह देने को कहा है, रुई तेज है, मदन ने कुछ पुराने कंट्राक्ट सेटल किये हैं। रुई के एडवांस की व्यवस्था नहीं है, इसलिए तकलीफ होती है।

१७ सितम्वर : ८।।। वजे दिनकर जी के यहाँ नाश्ता किया। फिर परमानंद जी केजड़ीवाल, दिनकर जी के साथ ५२ मील पर गणेशपुरी में स्वामी नित्यानंद जी के आश्रम गया। वहुत से विदेशी साधक भी रहते हैं अच्छा वातावरण लगा। प्रायः ६०)- ७०) रु० महीने का खर्च है। भोजन किया, गरम पानी के झरने हैं।

१९ सितम्वर : एस० पी० जैन के यहां दिनकर जी के साथ नाश्ता किया। एक लेख लिखने का प्रयत्न कर रहा हूँ। इस वार वंवई में शरीर ठीक नहीं रहता है। मन भी कम लगता है, लिख-पढ़ नहीं पा रहा हूँ। मन और तन दोनों अस्वस्थ हैं। सोचता हूँ, अव कारवार से छुट्टी ले लूं। ६० वर्ष से ऊपर हो गये, कितने दिन और करूँगा? थोड़ी सी वात पर चिंता हो जाती है। शाम को श्रेयांस प्रसाद जी जैन और दिनकर जी के साथ स्टर्लिंग सिनेमा गया। फिर, दिनकर जी के साथ एक रेस्तराँ में।

२२ सितम्वर : स्वामी जी इस वार पेडर रोड में ठहरे हैं। रात में उनके साथ एक जगह डालमिया जी के यहाँ कीर्तन और भोजन पर गया। पता नहीं, कैसे काफी लोग आते हैं। मैं तो इनसे विशेष प्रभावित नहीं हो रहा हूँ।

कलकत्ता

६ अक्तूवर : घर में रामायण का पारायण चल रहा था। आज पूर्णाहुति हुई। ब्राह्मण-भोजन हुआ। रामायण का कार्यक्रम अच्छा रहा। ५०००) खर्च हुए होंगे। पंडित जी भले हैं। ऐसे कार्यक्रम से एकरसता दूर होती है। मन वहलता है। ज्ञान वढ़ता है। शायद कभी विवेक भी जग जाये। भागीरथ जी के गया। ११ को दिल्ली जाने का रखा। वंवई से पिछले ८ दिन से कोई फोन नहीं हुआ।

दार्जिलिंग

८ अक्तूबर : कांता का बगीचा प्रॉबलेम का और छोटा है परंतु वह मेहनत बहुत करता है। लड़का बहुत होशियार है। नाश्ता किया। मोटर खराब थी, किसी तरह कर्सियांग पहुँचा, ठीक करायी। १ बजे दार्जिलिंग। २३-२४ वर्ष बाद आया हूँ। बहुत फर्क है। काफी भीड़ है, व्यस्त-सा जीवन। बहुत लोग आए हुए हैं। मौसम अच्छा था। केवेंटर में डटकर नाश्ता किया। २०) लगे। बाजार घूमा। ३० वर्ष पहले पत्नी के साथ आया था। नन्दू छोटा-सा था। तीन बजे हम चले और नये रास्ते से ४० मील पर कर्सियांग आये। बहुत खड़ी चढ़ाई का रास्ता था, मोटर भी ठीक नहीं थी, ड्राइवर नया था। खैर, किसी तरह पहुँच गये। कलिंपोंग पहली बार देख रहा हूँ। अच्छा हिल स्टेशन है। यहां काफी मारवाड़ी हैं। प्राकृतिक दृश्य अच्छे हैं। ईसाई मिश्नरी आज कल यहाँ 'होम्स' चला रहे हैं। कुटीर-उद्योग सिखाने के कारण इनका अच्छा प्रभाव पड़ा है। बाजार अच्छा है। पहले जब तिब्बत से व्यापार होता था, तब यहां अच्छी बड़ी मंडी थी। वापसी में चार जगह मोटर खराब हुई, परेशानी रही।

नयी दिल्ली

११ अक्तूबर : सुबह प्लेन से ८॥ बजे दिल्ली पूगा। सारे दिन स्वामी जी के पास था। शाम को कपूर आये। बातचीत हुई। वे नाराज नहीं हैं। शांतिलाल सब कागज लेकर आये। वह बोलते हैं, खास चिंता नहीं है।

बंबई

१८ अक्तूबर : दो दिनों से बंबई हूँ। मन में अशांति है। गोकुलदास जी मुरारका मर गये। क्या काम आया रुपया? सब यहीं धरा रह जाता है। एक दिन यूँ ही चला जाना है। १० बजे मिल गया। मजदूरों से सेटलमेंट हो गया है।

नयी दिल्ली

१९ अक्तूबर : गंगाबाबू के पास दो घंटे था। वे काफी दुखी हैं। कर्जा है, उसका ब्याज लगता है। भले हैं, विद्वान हैं। कभी रुपया बनाने पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। सारा जीवन देश और समाज पर खपा दिया। मैं चाहता हूँ पर कर नहीं सकता, होता ही नहीं। हरियाणा स्टील की मीटिंग में गया। बहुत अच्छी चल रही है। १०% डिवि-डेंड देंगे। १००) की किताबें खरीदीं, जे० पी० के लिये। गंगाबाबू को स्टेशन पर दे आया।

२० अक्तूबर : बंबई का फोन नहीं मिला। किताब पढ़ता रहा। शेयर बाजार गरम है, हेशियन बोरा मंदा। ८ बजे कठोतिया भवन गया। मोहनलाल जी कठोतिया,

पूनमचंद जी से मिला। मोहनलाल जी अध्यात्म के लिये अच्छा प्रयास कर रहे हैं। काफी साधना भी है। शाम को एक पंजाबी नाटक 'मैली चादर' देखा।

२१ अक्तूबर : सुबह मनु भाई, त्यागी जी के गया। ११ बजे तक कठपुतली का खेल देखा। बहुत अच्छा लगा। फिर अणुव्रत भवन में मुनि स्वरूपचंद जी से मिला। १२ बजे बुधमल जी शामसुखा तथा शैलेंद्र गोयल के साथ हिसार के लिये रवाना हुआ। रास्ते में रोहतक में रुका, खाना खाया। ४। बजे पहुंचा। २। घंटे आचार्य तुलसी से बातचीत की। भले व्यक्ति हैं। दिन में आज चिंता कम रही। मन में अगर मजबूती लायी जाय तो फिर शांति मिलेगी।

नयी दिल्ली

२५ अक्तूबर : दीवाली पर यहीं रह गया। लिखने में मन लग गया है। घर वालों और मित्रों से दूर हूँ। फाटके में २५ हजार का घाटा है। क्यों करता हूँ? छोड़ दिया था मगर फिर करने लगा। शिवानी की 'चौदह फेरे' और नागर का 'मानस का हंस' पढ़ रहा हूँ। शिवानी ने बहुत अच्छा लिखा है। ३ बजे स्वामी जी के पास गया, ५॥ बजे तक था। यशपाल कपूर के यहाँ किताबें देकर आया। कपूर नहीं थे, उनकी पत्नी थी।

जम्मू–कटरा–वैष्णो देवी

२६ अक्तूबर : रात में ९ बजे की ट्रेन से २ टायर में चला था। असुविधा रही। थर्ड क्लास में बड़ी भीड़ रहती है, अब नहीं चलना चाहिए। मुझ में पहले की-सी शक्ति नहीं रही। सुबह ९॥ बजे जम्मू पहुँचा। वहाँ से ११ बजे कटरा। खाना खाया। वहाँ से घोड़े पर वैष्णो देवी चला। काफी चढ़ाई है। ६ बजे पहुंचा। बहुत थक गया था। डेढ़ घंटे दर्शन में लग गये। ठंडे पानी से स्नान किया, गुफा के भीतर गया, एकदम ठंडा पानी है। एक-एक व्यक्ति जाते हैं, काफी दिक्कत हुई। बहुत लोग चले आते हैं, बूढ़े-बच्चे। सब लोग धर्म के नाम पर सब सह लेते हैं। रात में सर्दी लगकर बुखार जैसा लगने लगा। २ कप चाय पी। बड़ी तकलीफ में रात गुजारी। क्यों घूमता रहता हूँ? खास करके अकेला तो अब मुझे घूमना चाहिए नहीं।

बंबई

८ नवम्बर : बहुगुणा जी लीडर चुन लिए गए हैं, यू० पी० के। कल चीफ मिनिस्टर हो जाएँगे। राजनीति में मनुष्य कितना बढ़ जाता है, कहाँ से कहाँ। मदन से दिन में बातें होती रहीं। मिल ठीक चल रहा है। २-३ दिनों में कलकत्ते जाने का विचार कर रहा हूँ।

९ नवम्बर : कल रात में शेयरों के बहुत सपने आये। नींद में व्यवधान आया। लोग कहते हैं, कपड़े के दामों में मंदी आयगी। आज मुरारजी भाई आये।

कलकत्ता

१७ नवम्बर : डायरी बहुत दिनों बाद लिख रहा हूँ। इसलिये सारी बातें याद नहीं पड़ रही हैं। कोयला पर लेख तैयार कर रहा हूँ। अपना एक लेख विमुद्रीकरण पर सन्मार्ग में भेजा।

कानपुर

२२ नवम्बर : १० बजे सारन की मीटिंग में गया। चिरंजी राजी है। काम साधारण ढंग से चलता है। दोपहर में संपत दूगड़ के अच्छा खाना खाया। शाम को ७ बजे से १० बजे तक संपत के रहा। उसकी लड़की का विवाह था। काफी लोग आये थे। कानपुर आना अच्छा रहा।

कलकत्ता

२५ नवम्बर : मारवाड़ी फेडरेशन की मीटिंग थी। ३ बजे पी० डी० के घर खादी-भंडार को मीटिंग हुई। सीताराम जी, भागीरथ जी, रामकुमार जी थे। शारदा की बीमारी के कारण बंबई का टिकट रद्द करा दिया।

२७ नवम्बर : आज हेशियन ले लिये। ३५०००) का घाटा है। शेयरों में भी १२-१४ हजार का घाटा है।

१ दिसम्बर : ९ बजे प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका का फोन आया, लैंड बिल के लिये सरकार शायद मेरे पर कार्यवाही करेगी। मुझे बहुत चिंता हो रही है। नन्दू, रतनी के मुकदमे को लेकर चिंतित है। रात में पी० डी० के गया। केस की तथा बिल की बात की। शेयर बाजार मन्दा है। हम लोगों के घाटा कमती हो गया है।

नयी दिल्ली

७ दिसम्बर : रात ३ बजे तक नींद नहीं आयी। सुबह ७ बजे जागा। सर्दी काफी है परंतु कमरा गर्म था। त्यागी जी के, दिग्विजय जी के तथा एस० एन० मिश्र और सी० डी० पांडे के गया। गंगा बाबू के यहां पौन घंटे था। गंगा बाबू को स्टेशन पहुंचाने गया। उनके लिये टिफिन ले गया था। ट्रेन लेट थी। वापिस रामनाथ जी गोयनका के यहाँ गया। १॥ घंटे था। टिकट थ्री टायर का मिला। काफी तकलीफ हुई। सर्दी

भी काफी है। मुझे अब यात्रा एकदम बंद कर देनी चाहिए। कहीं भी एक जगह, जसीडीह, बनारस, कलकत्ता या सरदारशहर रहूँ।

बम्बई

१७ दिसम्बर : एक पैर में सूजन है, शायद नये जूतों के कारण, गलती मेरी है। दिन में घर पर रहा। कल हड़ताल है। मुझे बुखार है, सर्दी भी लगती है। बदन में कमजोरी और दर्द है। मन में उदासी आती जा रही है। क्यों इतनी चिंता करता हूँ? क्यों नहीं कहीं जसीडीह या सरदारशहर जाकर कुछ सार्वजनिक काम करूँ? कपड़े का बाजार मंदा है। हम लोगों के सब कंट्राक्ट कैंसल हो रहे हैं।

१९ दिसम्बर : सुबह के० पी० मोदी के ओवेराय होटल में गया। कभी-कभी मन में अत्यंत निराशा छा जाती है। इतनी चिंता किसलिए करनी है? आखिर मनुष्य की जिंदगी भी कितनी है? ६४ वर्ष का हो गया। शरीर थकता जा रहा है। शायद ८-१० वर्ष जीऊँगा। क्यों नहीं कहीं रेस्ट लेता। दुनिया का कारबार तो ऐसे ही चलेगा।

२१ दिसम्बर : यहाँ रुपयों की टान है। मिल का माल रुक गया है। आज दिन में चिंता करता रहा कि तबीयत खराब है, फिर क्यों यहां रहकर परेशान होता हूँ। २८ ता० को हवाई जहाज का टिकट लिया। सोचता हूँ, अगर राजू के लड़का हुआ तो यहाँ रुक जाऊँगा। नहीं तो फिर कहीं भी चला जाऊँगा। दरअसल मुझे रिटायर हो जाना चाहिए। कलकत्ते की चिंता नहीं है। यहां भी चलता ही है फिर क्यों नाहक कष्ट सहूँ?

२५ दिसम्बर : सुबह देर तक सोता रहा। सारी रात प्रायः जागता रहा। ३ बजकर ३७ मिनट पर राजू के पुत्री हुई। घर में एक प्रकार से उदासी सी छा गयी। न जाने मारवाड़ी समाज में पुत्र-पुत्री में इतना फर्क क्यों समझा जाता है? शायद दहेज कारण है। मेरे मन में भी उदासी सी आयी। ४॥ बजे रमा के पास गया। सुस्त थी। कल रात में काफी तकलीफ पायी।

२६ दिसम्बर : सुबह ९॥ बजे मिल आया। रुई का पेमेन्ट नहीं हो सका। भीखमचंद जी सुस्त बैठे थे। मन में बहुत चिंता हुई। मदन को इन बातों की शायद परवाह नहीं। आज बहुत दिनों बाद फिर रोना आया। जनवरी में क्या हालत होगी पता नहीं। इस तरह तो शायद ही काम चलेगा। रुपया-पैसा धन-दौलत क्या काम लगे, अगर इज्जत ही नहीं रही। ५॥ बजे कुरसी पर से किताब उतार रहा था, गिर गया। हड्डी टूट गयी। बहुत दर्द हुआ। डाक्टर आये। एक्सरे ली। अस्पताल गये। सारे घर में मातम छा गया। इन तीन घंटों में जो कष्ट और दुर्भावनाएँ आयीं, वह निजी अनुभव की बात है, लिखी नहीं जा सकती।

२७ दिसम्बर : कल रात में पैर में वजन बाँध दिया, सीधा लेटा दिया, कड़ी दवा देकर नींद दिलायी। दिनभर लोग आते रहे। एक डेढ़ महीना लग जायगा परंतु आज मुझे जितना टेंशन होना चाहिए, वह हुआ नहीं। जी० डी० बिरला हद से ज्यादा मेरी देख-माल कर रहे हैं। हॉस्पिटल के सारे डाक्टर लगे हुए हैं। पता नहीं क्या होगा, मन दुखी है।

२८ दिसम्बर : डाक्टर को मैंने ऑपरेशन के लिये कह दिया। वह तैयारी कर रहे हैं। इससे कष्ट जल्द दूर होगा। बंबई में इतने लोग मिलने आ रहे हैं कि मन में लगता है, कितनी जल्दी जान-पहिचान हो जाती है। रात में दवा से नींद आती है। वजन और पट्टे से छटपटाहट है। वाइफ अस्पताल में साथ थी।

२९ दिसम्बर : कल ऑपरेशन का तय किया है। पैर में काफी तकलीफ हो रही है। ईश्वर की ऐसी ही मर्जी है। बेचैनी और छटपटाहट, कभी-कभी ऐसा लगता है कि पैर कटवा लूँ। पट्टे लगे हुए हैं, पैर बँधा हुआ है, सम्हाल पूरी है। हॉस्पिटल की व्यवस्था अच्छी है। शाम को मदन आकर बोला, विरजू और वाइफ दोनों कलकत्ते चले गये। पी० के० बांगला बीमार हो गया। मन में चिंता हो रही है।

३० दिसम्बर : सुबह से ही सारी तैयारी होने लगी। मन में एक प्रकार का टेंशन था परंतु हिम्मत भी थी। ९॥ बजे बेहोशी की दवा दी। १०॥ बजे ऑपरेशन हुआ। ११॥ बजे चेत हुआ, दवा देते रहे। २ बजे जी० डी० आये। इस बार जितना स्नेह जी० डी० के परिवार वालों से मिला, वह अपने आप में अद्भुत है। मुझे इनसे शिक्षा लेनी चाहिए। लोग मिलने वाले आते रहे।

३१ दिसबर : कपड़े की मिलें बंद हैं। कल मेरा ऑपरेशन हो गया। इंप्रूवमेंट हो रहा है। कलकत्ते में पुष्पा बीमार है। मन में बेचैनी है। वाइफ और विरजू डाक्टर को लेकर कलकत्ते गये हैं। नन्दू भी लौट गया। बहुत संकट के दिन हैं। रात में दवा से नींद आ जाती है, भूख एकदम नहीं है। लोग मिलने आते हैं।

१९७४

बम्बई

१ जनवरी : बंबई अस्पताल। आज वर्ष का नया दिन है परंतु मेरे लिए तो चारों तरफ अँधेरा। पिछले हफ्ते बहुत बुरे सपने आये थे और वैसे सपने सही होते हैं तो व्यक्ति की मृत्यु होती है। भगवान् ही जानें। बंबई आकर मैंने अच्छी जान-पहचान बढ़ा ली है। प्रभु की कृपा है परंतु पैर की हड्डी टूटने से एक रकम अपंग हो गया।

२ जनवरी : रात में नींद अच्छी आयी। मदन रात में आया था। शायद उस समय उसे पता चल गया था कि पुष्पकुमार बागला की मृत्यु हो गयी। सत्यनारायण वगैरह रात में पहुँच रहे थे परंतु मुझे नहीं बताया। टाल-मटोल करता रहा। मन में बुरे विचार आते हैं। हड्डी के ऑपरेशन का दर्द कम है। नीचे का पट्टा आज खोल दिया है।

३ जनवरी : सुबह मदन ने कलकत्ते के बारे में कुछ नहीं बताया। टालता रहा। बोला, फोन नहीं मिला। ८ बजे सत्यनारायण और लाला जी आये। उन्हें देखते ही रोना आ गया। पुष्प तो रात में एक बजे ही चला गया था। हेमरेज हुआ था। सारे दिन जी खराब रहा। जी० डी० बिरला आये, और भी लोग आये। मन में नाना प्रकार की चिंता होती रही। शून्यता-सी आ गयी। चारों तरफ निराशा सी दिखाई देती है। पुष्प अभी बच्चा था। स्वस्थ था, मेहनती था। वैसे, पिछले हफ्ते जो सपने आये वे खराब थे। कल सारे दिन मन में एक अनजान भय-सा रहा।

४ जनवरी : जब दूसरों के यहाँ ऐसी मृत्यु की बात सुनता हूँ तो उनको समझाने का प्रयत्न करता हूँ, अपने पर आती है तो तब समझ नहीं आती, क्या करूँ। बिरला जी मिलने जब आते हैं तो एक बार सब भूल जाता हूँ। फिर अकेले में रोने लगता हूँ। बसंती कितनी निरीह, कितनी भोली है। कलकत्ते से जब आया, बच्चियाँ चहकती रहती थीं, आज कैसी हो गयी होंगी। डाक्टर ने कहा है, १४ को कलकत्ते भेज देंगे।

५ जनवरी : मदन, सत्यनारायण से सलाह की। पुष्प के कारबार को कैसे सम्हालना होगा। शायद ५-७ लाख की दरकार पड़े। सीताराम मिल में फाइनेंस की तकलीफ जनवरी

में आने वाली है। परमा और भाभी को देखकर रोना आ गया। मनुष्य मरता तो है ही। मैं भी एक दिन मर जाऊँगा। फिर शोक क्यों होता है? संसार का नियम है। ज्यादा चिंता पुष्प के कारबार की तथा उषा के विवाह की है। वह बहुत समझदार लड़की है। आज मारवाड़ी समाज में बिना बहुत सा रुपया दिये कोई शादी-विवाह नहीं करता। वह घूँघट-पर्दा हटा, अशिक्षा दूर हुई। परन्तु यह कैसा पर्दा पड़ा, कैसी शिक्षा आ गयी।

१३ जनवरी : आज पार्ल्यामेंट का चुनाव है। शायद कांग्रेस जीत जायेगी। यह जीत जबर्दस्ती की है। देश कराह रहा है, कब तक ऐसे चलेगा? किताबें पढ़ने में मन नहीं लगता। गीता में भी एकाग्र नहीं हो पाता।

१६ जनवरी : अखबारों और पुस्तकों से मन बहलाने की कोशिश की। ५ नं० के रोगी पुरुषोत्तम जी घुवालेवाला ज्यादा बीमार हैं। परमात्मा उन्हें ठीक करें। शाम को ८ बजे घर आया। २१ दिनों बाद घर आ सका। बहुत संकट के दिन गुजरे। प्रभु ऐसी तकलीफ किसी को न दे। 'फाउन्टेन हेड' पढ़नी शुरू की।

कलकत्ता

२६ जनवरी : आज मेरा जन्म दिन है। परंतु मन में एकदम उदासी है। बहुत किया, लोग इसे पुरुषार्थ कहते हैं। मगर कमाई वह है जो गँवाई न जा सके।

१२ फरवरी : दिन में सीताराम जी सेकसरिया की 'बीती बातें' पढ़ता रहा। अच्छे संस्मरण हैं। मेरा समय किसी प्रकार बीत रहा है। 'एटलस श्रग्ड' पढ़ रहा हूँ।'

२४ फरवरी : कल बनारस के आनंद कृष्ण जी और विश्वनाथ मुखर्जी आये। अखबारों में चुनावों की खबरें हैं। यू० पी० में शायद कांग्रेस जीत जायेगी। उड़ीसा में हार जायेगी। बंबई में दंगा शांत है, गुजरात में हो रहा है। गुजराती लीडर लोग दिल्ली में बैठे हैं। 'गॉन विथ द विंड' पढ़ रहा हूँ। अच्छी है, गंगाबाब के चोट लग गयी। अस्पताल में हैं।

२७ फरवरी : कसरत थोड़ी बहुत कर लेता हूँ। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस जीत गयी। उड़ीसा में भी जीतने की संभावना है। रेडियो सुनता रहा। शारदा बीमार है, उसे चोनी है। उसकी तरफ की बहुत चिंता है। अभी प्राय: घर में रहता हूँ। चाय के दाम, ऊँचे जा रहे हैं, अच्छा मुनाफा रहेगा। बंबई से अच्छे समाचार कम आते हैं। मैं क्यों चिंता करता हूँ, पता नहीं।

५ मार्च : दिन में देवुजी भालोटिया आ जाते हैं, मन लग जाता है। आज बाहर निकला। पैरों में कमजोरी है। बैसाखी का सहारा लेना पड़ता है। अब शायद पहले की तरह घूम नहीं सकूँगा। दुख होता है। लखनऊ से अमृतलाल नागर जी का पत्र

आया। पढ़कर रोना आ गया। कसरत कराने वाला आया, काफी फायदा होता है।

८ मार्च : आज होली है। हम लोगों के यहाँ शोक है। हेशियन के शेयरों के भाव तेज हैं। रात में खराव सपना आया। कल पैर हिल रहे थे, डर लगता है, कहीं गोविंद वल्लभ पंत की तरह वीमारी न आ जाय।

२४ मार्च : दिन में 'जोगी मत जा' विमल मित्र की किताव पढ़ी। ज़ोरों से तूफान आया, ओले पड़े। चाय वगीचों में पैदावार अच्छी हो जायगी। पैर ठीक हो रहा है।

२७ मार्च : सुवह ८ वजे वैठा हुआ था। आठ-दस व्यक्ति कस्टम वाले आये। परवाना साथ लाये थे। चीजें देखीं-भालीं। मन में कैसा सा लगा। सारे दिन वर्षा होती रही। चाय की खेती के लिए फायदे की वात है। कल चाय वगीचे वाले एक्साइज का केस हार गये, लोगों को काफी रुपये देने होंगे। डाक्टर के गया। उसने कहा, अव चल-फिर सकते हो।

३ अप्रैल : पैर में अभी तक ताकत नहीं आयी। लिखना वंद है। मन कैसा होता है। 'एयर पोर्ट' किताव खत्म कर दी, अच्छी है। मन करता है, यू० एस० आई० एस० की लाइब्रेरी में जाकर कुछ लिखना शुरू कर दूँ।

७ अप्रैल : विना वैसाखी के दो-चार पग चला। जी० डी० के पास नहीं जा सका, उनका फोन कई वार आया। मन में दुख हुआ। मैं कैसा था, कितना लाचार होता जा रहा हूँ। जे० पी० इस हालत में भी एक्टिव हैं। परमात्मा की उन पर कृपा है। उनका जुलूस शांतिपूर्वक निकला।

९ अप्रैल : वहुत दिनों वाद वैसाखी छूटी। शाम को जी० डी० विरला जी के खाने पर गया, एक छड़ी के सहारे।

१९ अप्रैल : घर में विना काम के वैठा रहना पड़ता है। कैसा ही लगता है। वसंती का छोटा मुन्ना हँसता रहता है, मन को शांति मिलती है। वंवई का कोई समाचार नहीं।

२२ अप्रैल : सारे दिन घर पर ही था। पढ़ता रहा। ताश भी खेला। इसमें वहुत समय वरंवाद हो जाता है। पर मित्रों की वात टाल भी नहीं सकता। वी० एस० जैन आये थे। उनका कारखाना विक गया। कानपुर की मिलें ठीक चल रही हैं। हेशियन-वोरा में घाटा मुझे हो गया।

२४ अप्रैल : देश की हालत सुधरती नहीं दिखती। ईश्वर ही कोई चमत्कार करें। आंदोलनों में जोर नहीं है। पहले के-से लोग रहे नहीं। आज जे० पी० से मिला। काफी वातें हुईं। वे मद्रास गये।

मेरी ऐसी धारणा बनती जा रही है कि लोगों को अपनी वृद्धावस्था के लिये सक्षम रहने की कोशिश पहले से करनी चाहिए, नहीं तो औरों के मुँह की तरफ देखना पड़ता है।

१ मई : ६॥ बजे सीताराम जी सेकसरिया के अभिनंदन समारोह में गया। बहुत ही अच्छा रहा, अभूतपूर्व। १००० व्यक्ति २॥ घंटे तक सुनते रहे। लोगों के मन में उनके प्रति प्यार है। अच्छा लगा। परसेवा करके व्यक्ति अवश्य ऊँचा उठता है। लोगों को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। सीताराम जी तो एक विशेष युग के प्रतीक हैं।

४ मई : पैरों में ताकत आ रही है। जी० डी० के पास गया, थोड़ा सा घूमा भी। घर पर १५-२० व्यक्ति आये। कन्हैयालाल जी सेठिया, गुलाब जी की कविताएँ हुईं। २॥ घंटे अच्छी तरह बीत गये। कोयले पर लेख समाचार-पत्रों में भेज दिया है। मन में खुशी हुई। इतने दिनों बाद ही सही, कुछ तो लिख पाया।

बम्बई

१३ मई : बंबई में मन लग गया है। बच्चों को घूमाने ले जाता हूँ। लोगों से मिलना-जुलना होता है। हैंगिंग गार्डन जाता हूँ। ३॥ बजे आचार्य रजनीश के गया। किताब ली। इनका भी अपना दृष्टिकोण है। मनकी शुद्धि के लिए प्रयास के अपने-अपने ढंग होते हैं। शांति जिससे मिले, वही ठीक जँच जाता है। श्री कांति देसाई के गया। फिर ब्लिट्ज वालों के साथ घर आया। रात में मुरार जी भाई की जीवनी पढ़ता रहा।

१८ मई : आँख में तकलीफ थी। पट्टी लगी, आज डाक्टर ने खोल दी। १००) रु० लिये। कुछ ज्यादा लगे। आँख प्रायः ठीक हो गयी, खुशी हुई। पूना जाने का मन है।

पूना

१९ मई : घर से पूना आ गया। ११॥ बजे कोठी में पूगा। बाजार गया। एक जैन होटल में खाना खाया। बहुत खराब था। गोयल के साथ पर्णकुटी, शिव जी का पुराना मंदिर देखा। आगा खाँ के महल में कस्तूरबा एवं महादेव भाई की समाधि देखी। गांधी जी की अग्नि-परीक्षा में वे सदैव खरी उतरीं। महादेव भाई तो भक्त हनुमान की तरह रहे। कर्त्तव्यपरायणता एवं डिवोशन दोनों ही सफलता के लिये जरूरी है।

पूना-महाबलेश्वर

२० मई : रात खूब अच्छी नींद आयी। मुन्ना के साथ खेला। राजेंद्र बाबू की आत्म-कथा पढ़ी। अच्छी है। न ऐसी बातें होंगी, न ऐसे लोग मिलेंगे। अब समय बदला गया

है, विचार-व्यवहार भी। करीब ९ बजे पूना से चला। ७५ मील पर महाबलेश्वर है। जाने का मन था। रास्ते में पंचगनी है पर आगे बढ़ कर एक बजे महाबलेश्वर पूगा। गुजराती होटल में खाना खाया। बहुत ही अच्छा था। ७) रु० प्रति व्यक्ति लगे। ३ बजे तक कई होटलों में जगह देखी। नहीं मिली। घटिया कमरे १००) रु०, १२५)रु० रोज के। रात में खाना नहीं खाया, वसंती को खिलाने ले गया। यहाँ का मौसम बहुत अच्छा है। होटल अच्छा मिल गया। ७५) रु० रोज का है। नये चादर हैं।

महाबलेश्वर-प्रतापगढ़

२१ मई : पैरों में दर्द था, घूमने नहीं गया। आज अन्न नहीं खाना है। सुबह ९। बजे पुराना महाबलेश्वर देखने गया। महादेव जी का मंदिर देखा। यहीं अतिबल और महाबल दानवों के मंदिर भी हैं। प्राचीन हैं, जगह भी अच्छी, देखरेख नहीं। लोगों में रुचि भी नहीं। कहते हैं, यहीं शिवा जी ने अपनी माता का सोने से तुलादान किया था। शहद २ किलो लिया। घूम फिर कर आर्थर-प्वायंट गए। उतरना-चढ़ना पड़ता इसलिए ऊपर से ही देखा। २ बजे प्रतापगढ़ के लिए हम रवाना हुए। १५ मील पर है। किले के ऊपर जाने-आने में दो घंटे लग जाते। पैरों की लाचारी खल गयी। गढ़ में भवानी के दर्शन से रह गया। इन स्थानों की देख-रेख ठीक होनी चाहिए। विदेशों में तो इन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। हम लोगों में उपेक्षा की भावना है, यह कैसा सा लगता है।

पूना-नासिक

२३ मई : आचार्य रजनीश के भाषण में गया। अच्छा था। लौटा, रास्ते में बहुत पानी था, मोटर रुक गयी। किसी तरह घर वापस आया। इन दिनों वसंती का मन थोड़ा प्रसन्न हो रहा है। बच्चा भी इम्प्रूव कर रहा है। परमात्मा आगे जाकर सब ठीक करेगा।

नासिक-व्रजेश्वरी-गणेशपुरी-बम्बई

२४ मई : तैयार होकर पर्णकुटी में गए। गोदावरी में स्नान किया। अच्छा लगा। मुन्ना बहुत खेल रहा था। हँसता ही रहता है। व्रजेश्वरी पूगे, स्नान किया। गणेशपुरी गए। स्वामी जी अमेरिका गए हैं। ९ बजे हम घर आ गए। राजू से बात हुई। मिल में कुछ सुधार हुआ है।

कानपुर

३० मई : दिल्ली से कल कानपुर आ गया था। लोगों से मुलाकातें होती रही। पुराने साथी तो मिले ही, साथ ही नयों से भी परिचय हुआ। चिंताएं दूर हो जाती हैं। एलिगन गेस्ट

हाउस में सुविधा है, पर फोन नहीं। विनोद, दूगड़, गर्ग, वी० एस० जैन, एन० के० आदि आज आए, कल भी आए थे। एलिगन मिल भी कुछ ठीक चल रही है। फिर भी न जाने क्यों इसके लिये बेचैनी सी मन में आ जाती है। एक सहायक तेल-मालिश के लिए साथ रखना चाहिए। इससे फर्क पड़ेगा। स्वास्थ्य ठीक रह सकेगा।

सरदार शहर

१ जून : सुवह ७।। वजे सुमेरमल जी की कार से ९ वजे पूगे। एस० पी०, कलक्टर सव से मिले। धर्मशाला छोड़ देंगे। थानेदार से कहासुनी हो गयी थी। गलती मेरी भी थी। सरदार शहर में मन लग जाता है।

सीकर

२ जून : फतहपुर होता हुआ ११।। वजे पर सीकर पहुँचा। साँवरमल जी के घर गया। पीपुल्स वेलफेयर में शाम को ५ वजे लोक-सेवा-संघ की मीटिंग थी। रेडियो जी आए थे, कहते थे, झावरमल जी का वकील धर्मशाला छोड़ने में आपत्ति करता है, परंतु एस० पी० सरदार शहर जा रहा है, जल्द छोड़ देगा। सुवह घंटाघर की दरार की वात की। मन में दो दिनों से चिंता हो रही है। वहुत से लोग आए, मिलते रहे। कहते हैं, मैं वर्तमान एम० पी० से ज्यादा एक्टिव था।

वम्बई

७ जून : डायरी लिखने में देर हो जाती है। मिल की हालत ठीक नहीं, रुपयों की टान है। चिंता होती है। रात में वुरे सपने आते हैं। दिन में नींद आती रहती है। ऐसा लगता है, ज्यादा दिन नहीं वचूँगा। खास चिंता वसंती की है। पर कर ही क्या सकता हूँ ?

११ जून : प्रह्लाद राय दाधीच मिला। वर्ली में मेरे साथ घूमता था। आज सात महीनों वाद मिलने आया। वहुत ही दुवला-पतला लग रहा था। कहता था, १३ महीनों से अन्न नहीं खाता है। २ सेर दूध और १०-१५ केले। शरीर में फुर्ती रहती है। ५-६ मील घूम लेता है। ११ किलो वजन जरूर घट गया है।' मैं एक दिन में ही सुस्त हो जाता हूँ। अपने पर इसका थोड़ा-सा प्रयोग करूँगा। शरीर और पैरों में दर्द है। वंवई से मन उचट गया है। कभी कलकत्ता, कभी जसीडीह, वनारस जाने का करता है। रात में मन खराव रहा। ऐसा लगता है कि अगर इसी प्रकार रहा तो जल्दी ही जीवन समाप्त हो जायगा। जैसी भावी होगी, वह होकर रहेगी। फिर क्यों इतनी चिंता की जाए ?

१३ जून : परमानंदजी और कई लोगों को नाश्ते पर ले आया। ८ वजे तक थे। जे० पी० के आंदोलन पर वातें होती रहीं। तरह-तरह की राय है। मगर सभी उनसे सहानुभूति रखते हैं। मुझे लगता है, जे० पी० का यह प्रयास निष्फल नहीं जाएगा। जनता का

विश्वास सरकार पर रहा नहीं। आतंक कब तक चल सकता है? मिल में स्टॉक इकट्ठा हो रहा है, ऐसा लगता है, फिर संकट आएगा। पैर की तकलीफ के लिए डॉक्टर ने कसरत और इलाज कराने को कहा है।

१५ जून : कादंबिनी के राजेन्द्र अवस्थी मिल गए, घर ले आया। खाना साथ ही खाया। भले, अच्छे आदमी हैं। रात में दुःस्वप्न आते रहते हैं। ऐसा लगता है, ज्यादा दिन जीता नहीं रह सकूँगा। खास चिंता बंबई की तरफ की है। प्रायः रोज ही रोना आ जाता है।

कलकत्ता

२१ जून : कलकत्ता आकर एक प्रकार से मन लग गया। अच्छे कामों के लिए चंदे के रुपए देना चाहता हूँ। पर कहाँ से दूँ? रुपए तो बंबई में फँसे हैं, आते नहीं। दिन में १२ बजे शेयर बाजार गया, फिर जूट एक्सचेंज गया। ६ बजे बँगला थियेटर गया। "हठात नवाब" देखा। हँसी का तमाशा था। मन हल्का हुआ। बंगला रंगमंच और अभिनय काफी परिमार्जित और उन्नत होता जा रहा है। यहाँ मन लग गया है। दो कहानियाँ लिखी हैं।

८ जुलाई : शेयर बाजार मंदा है। ५०० शेयर लिए। ३०००)रु० का फ़र्क आ गया। फिर भी शेयरों में ३०-४० हजार का नफा है।

११ जुलाई : कैसी विचित्र बात है। लड़कियों की शादी नहीं होती, लड़के वाले अनाप-शनाप रुपए माँगते हैं। इसकी प्रतिक्रिया बुरी होगी। 'हरित क्रांति' का मेरा लेख छप गया।

१३ जुलाई : ज्ञान-भारती की मीटिंग में गया। इसके पहले ऑफिस आया था। ६॥ से ९ बजे तक भारतीय संस्कृति-संसद् में फिल्मी गाने सुने। अच्छे थे।

१४ जुलाई : सीताराम जी सेकसरिया, काशीप्रसाद जी मोदी स्कूल की मीटिंग के लिए आए। स्कूल में झंझट शुरू हो गये हैं। शाम को भँवरमलजी सिंघी के साथ 'गुप्त ज्ञान' देखने गया। इन्फॉरमेटिव अच्छी तस्वीर थी। ७ महीनों बाद सिनेमा आज प्रथम बार देखा।

१६ जुलाई : रात में ९॥ बजे तक टाँटिया स्कूल में मीटिंग थी। हेडमास्टर और मास्टरों में आपस में झगड़ा हो गया है, शायद स्कूल बंद हो जाय। शिक्षण-संस्थाओं का वातावरण कितना दूषित होता जा रहा है। कैसे पढ़ाई चलेगी? भागीरथ जी, सीतारामजी भारतीय भवन का चंदा इकट्ठा कर रहे हैं। काफी इकट्ठे कर चुके हैं, पर अभी तो बहुत बाकी है। मैंने अभी तक कुछ नहीं दिया है। इन लोगों ने १२ लाख कर लिए। मुन्ना के घर रोज जाता हूँ, रोना आ जाता है।

बम्बई

३१ जुलाई : रामलखन जी यादव पटना से आए हैं, उन्हें घर ले आया। जे० पी० के बारे में बातचीत की। उनका आंदोलन खत्म नहीं होगा, कहते हैं। इंदिरा जी दमन नीति अपनायेंगी, ऐसा मुझे लगता है। मदन विलायत चला जाएगा। मुझे बंबई रहना चाहिए। वैसे मन यहाँ इतना लगता नहीं। शाम को साधु-बेला-आश्रम गया। भजन चल रहा था, बड़ी शांति मिली।

५ अगस्त : मन न जाने क्यों बंबई में नहीं लगता, वैसे भी कहीं नहीं लगता है। फिर भी कलकत्ते में बसंती के मुन्ने के साथ लग जाता है। यहाँ भी मुन्नी खेलती रहती है। शेयर बाजार वापिस ठहर गया है, शायद कुछ बढ़ जाय। रोज रुपयों की चिंता, यह भी क्या जिंदगी है। आदमी कम खाकर रह सकता है। फिर क्यों जीवन को इस तरह से दुखी किया जाय? पुष्प इसी तरह तकलीफ पाकर चला गया। मदन भी इसी तरह तकलीफ पा रहा है।

बम्बई-अहमदाबाद

८ अगस्त : राजू कल चला गया। घर एकदम सूना लगता है। मुन्नी काफी होशियार हो गई है। हवाई जहाज से ७ बजे अहमदाबाद पूगा। शाम को रविशंकर महाराज के गया। ५०००) रु० देने की कह कर आया हूँ। ८० वर्ष के हैं। बीमार रहते हैं। देवता आदमी हैं।

नयी दिल्ली

१५ अगस्त : महावीर त्यागीजी से मिला। १०० किताबें दीं। बहुत खुश हुए। सुबह कृष्णकांतजी के गया था। १०० किताबें उन्हें दी थीं। किताबें अच्छी आयी थीं। सुबह जगजीवनराम जी के यहाँ गया। उन्हें भी तौलिए और किताबें दे आया। कुछ बातचीत भी हुई। मन को दबाए हैं, ऐसा लगता है। इन लोगों का दबा रहना देश के लिए ठीक नहीं है। आदमी को कुछ न जँचे और कर न सके तो साथ छोड़ दे। मगर ऐसा होता नहीं, मैं भी नहीं कर पाता।

१८ अगस्त : सुबह उठ कर बंगला साहब गुरुद्वारा की तरफ घूमने गया। ९१ वर्ष का हट्टा-कट्टा एक आदमी मिला। बहुत से वायसरायों के साथ रहा, अब अकेला रहता है। स्वास्थ्य ठीक है। कहता था, शरीर और स्वास्थ्य सबसे बड़े साथी हैं। पैसा हो या पुत्र, सब छोड़ देते हैं। पत्नी तक। ठीक कहा, मैंने दोनों की हमेशा उपेक्षा की। मोहन धारिया जी से मिला। एल० एन० मिश्र से बातचीत की। धारिया प्रेम से मिले। त्रिपाठी जी के गया। वे पूजा कर रहे थे। डी० पी० चट्टोपाध्याय से भी मिला था।

२२ अगस्त : सुबह जी० डी० बिरला और एस० पी० जैन के साथ घूमने गया। जी० डी० ८१ के हैं, स्वास्थ्य अच्छा है। कितने एक्टिव हैं। मैं नियमित नहीं रह पाता। कभी नहीं रहा। आज पहली बार ८ महीने में २ मील घूमा काफी स्पीड से, अच्छा लगा मन में खुशी हुई। १२ बजे एयर पोर्ट पर मदन को विदा कर घर गया। मदन विलायत गया। काम बन गया तो अच्छा रहेगा। राजू अभी होशियार नहीं हुआ है। १०-१५ दिनों में कलकत्ते जाने का मन हो रहा है।

२६ अगस्त : मदन के जाने से चिंता है। मिल में रुपयों की बहुत टान है। ऐसा लगता है, मैं तो इस हालत में पागल हो जाऊँगा। एस० पी० जैन को हार्ट की तकलीफ हो गयी। पटना के अस्पताल में हैं। वे भी चिंता से ही बीमार हो गए। मैं मायामोह के चक्कर में चिंता करता हूँ। झमेले में पड़ गया। मेरा मन अब धन कमाने का बिलकुल नहीं है। सोचता हूँ, २ लाख रुपयों से, शांति से जीवन भर आराम से रह सकता हूँ। सारे दिन रुपयों की हाय-हाय और खींचातानी लगी रहती है, चैन है नहीं। ब्लड प्रेशर इसी से ऊँचा हो जाता है। मिलकी बैलेंस शीट तीन-चार दिन में निकल रही है। कलकत्ते जाने का निश्चय किया है।

बम्बई

६ सितम्बर : मन में नाना प्रकार की चिंताएँ हैं। बंबई मुझे छोड़ देनी होगी। इसी में सार है। क्या फायदा जीवन के अंतिम दिनों में उम्र घटाने से।

१५ सितम्बर : दिनमें ताश खेलता रहा। मन को दूसरी तरफ लगाने का इसमें सहारा सा पाता हूँ। पर नशे की तरह यह बुरी बात है। सर दुखने लगा। ताश कभी-कभी खेलना अच्छा मनोरंजन है। परंतु ज्यादा देर नहीं। कपड़े का बाजार बहुत मन्दा है। सारे दिन भाग-दौड़ और चिंता। सस्ता साहित्य मंडल की १० पुस्तकें बिरला जी को देकर आया।

कलकत्ता

१९ नवम्बर : शाम को विक्टोरिया गया। अकेला था, कई बार रोया। पुष्प चला तब रोया था और शायद अब रो रहा हूँ। मन में कमजोरी आ गयी है।

जसीडीह

२३ सितम्बर : सुबह तेल मालिश करा कर ठंढे पानी से नहाया। शायद एक-डेढ़ वर्ष बाद (सिवाय वैष्णो देवी के) ठंढे पानी से नहाया। मन में अच्छा लगा। ताऊजी के पास बैठकर बातचीत की। स्वस्थ शरीर के लिए स्वस्थ मन चाहिए। यह कैसे पाऊँ ? चिंता

छूटती नहीं। ताऊ जी कहते हैं, आदमी के पास रुपयों की दरकार ही क्या है, उल्टे चिंता रहती है। "हीरे तो खाने की चीज नहीं फिर क्यों हीरों के पीछे लोग पागल हैं ?" बंबई का कोई समाचार नहीं, पता नहीं क्या हो रहा है।

३० अक्तूबर : सुबह अचानक मन खराब हो गया। रात में खराब सपने आ रहे थे। रोज थोड़ी देर रो लेता हूँ। संयोग की बात है, ६ महीने में कितना परिवर्तन हो गया। ६५ वाँ वर्ष मेरे लिए बहुत खराब साबित हुआ। पुष्प कुमार का देहांत केवल ३७ वर्ष की आयु में हो गया। बच्चे अनाथ हो गए। नाना प्रकार की समस्याएँ खड़ी हो गयीं। वे किसी तरह ठीक हुईं तो मेरे पैर की हड्डी टूट गयी, मुझे अपंग कर दिया। जुलाई के बाद अचानक मिल खराब चलने लगी, घाटा होने लगा।

कलकत्ता

१ नवम्बर : मन यहाँ भी नहीं लग रहा है। जसीडीह पत्र लिखा, गंगाबाबू को भी लिखा। देश जाने की सोच रहा हूँ। पत्नी का मन तो कम था, पर तैयार हो गयी है।

६ नवम्बर : कल व्रत रखना भूल गया। आज भी नहीं रखा। सब समझाते हैं, क्यों इतनी चिंता करता हूँ। न जाने मुझे मिल के प्रति इतना मोह क्यों हो गया। कोई मानता नहीं, मेरी सुनता भी नहीं। व्यापार में जिद और भावुकता नहीं आनी चाहिए। मनुष्य दुःख स्वयं मोल लेता है। अगर १०००) रु० मासिक की बँधी आय हो तो वृद्धावस्था में अच्छी तरह चला सकता है। फिर भी न जाने क्यों धन के पीछे बुरी तरह पड़ा रहता हूँ।

रांची

२९ नवम्बर : राँची में मन लगा है। मौसम भी अच्छा है। कई वर्षों बाद आया। पहले स्वस्थ था, खूब घूमता था, अब नहीं हो पाता। 'जाने अनजाने' किताब अच्छी बनी है लोगों की राय है। सुबह पीटर अलवारेज आये। जे० पी० के आन्दोलन के लिये मैंने......रु० दिए। आन्दोलन चलेगा। चलाना पड़ेगा। जनता कष्ट में है। देश का संकट बढ़ रहा है। आगे कोई बढ़ता नहीं। सब अपने-अपने में पड़े हैं। यहाँ बहुत-सा समय ताश में चला जाता है। लिखना-पढ़ना कम होता है। लिखना तो बिलकुल नहीं। फिर भी राँची की यात्रा अच्छी रही।

कलकत्ता

६ दिसम्बर : सुबह जी० डी० के साथ घूमा। हिंदी साहित्य और मारवाड़ियों पर बात होती रही। जी० डी० की सूझ पैनी है, ज्ञान, अध्ययन भी। इतना समय इन्हें कैसे मिल जाता है ? जी० डी० से बहुत प्रेरणा मिलती है। देवजी के साथ मद्रासी होटल में डोसा खा लिया, गलती की।

९ दिसम्बर : कई विवाहों में गया। वहुतों से मुलाकात हो गयी। कपड़े में कुछ तेजी आनी शुरू हुई है। ऐसा लगता है कि शायद मिल का माल उठ जाय। रुई भी कुछ तेज हो रही है। रात में जी० डी० के गया। घर पर सी० डी० पांडेय आए।

१९ दिसम्बर : सप्ताह चल रहा है। कल गोपियों का प्रसंग अच्छा लगा। ऑफिस नहीं जाता हूँ। आज उद्धव जी का वर्णन था। वहुत ही रोचक था। वहुत से स्त्री-पुरुष आते हैं। नन्दू के आग्रह से यह अच्छा काम हुआ, पहले मेरा मन कम था। राजू, रमा दोनों यहाँ हैं, मन लग गया है। मुझे अच्छा लगा।

२६ दिसम्बर : कला मंदिर में भारतेंदु का नाटक देखा, अच्छा था। इन सवों से तनाव कम हो जाता है। सस्ता साहित्य मंडल का कार्यवाहक अध्यक्ष चुना गया। मेरे मन में तो झिझक सी है। परंतु एल० एन० विरला जी और हरिभाऊ जी का जोर था। मुन्ना के साथ एक घंटा साग-वाजार गया।

२८ दिसम्बर : दिन में ऑफिस गया था। लेख तैयार करके भेज रहा हूँ। कहानियाँ भी तैयार हो गयी हैं। रुपये कमाने में जो शांति नहीं मिलती, वह लेख पूरा करने पर मिलती है। शायद यह तृप्ति ही असली कमाई है।

१९७५

वंबई

१ जनवरी : आज वर्ष का पहला दिन है। चिंता, फिकर, रात में वुरे सपने। जी० डी० विरला की किताव 'कुछ देखा, कुछ सुना' पढ़ी। अच्छी है, वहुत अच्छी। हिंदी ग्रंथ रत्नाकर में गया, अपनी कितावें दे आया, उनकी लेता आया।

१० जनवरी : मिल की हालत पर रोना आता है। वीस वर्ष पहले भाई जी और मैं आए, तव ली थी। खूव चली, कमाई अच्छी रही। अव गले फँसी है। अपनी कमजोरी है। कोई सुनता नहीं।

कलकत्ता

२६ जनवरी : सर्दी यहाँ वंवई से ज्यादा है। ८॥ वजे श्री शिक्षायतन में झंडोत्तोलन किया। कई लोग वोले, मैं खास वोल नहीं पाया। लगता है, भीतर से खाली होता जा रहा हूँ। वहुत से लोग मिलने आए। आज मेरा जन्म-दिन है। वधाई, शुभकामनाएँ मित्र लोग देते हैं। क्या किया मैंने ? वसंती के गया। मुझे वारवार रोना आता है। परमात्मा ने इस आयु में कितना दुख दिया, मिल का और वसंती का।

२८ जनवरी : कुछ कहानियाँ और लेख तैयार किए। दो-तीन पत्र भी लिखे। जी० डी० का 'जमुनोत्तरी' वहुत अच्छा हुआ है। कलकत्ते में मन ज्यादा लग जाता है। कुछ लिखना मन को अच्छा लगता है, परंतु अव वहुत लिख नहीं पाता।

३ फरवरी : अपने समाज में शादी-विवाह में अव अनाप-शनाप खर्च होने लगे हैं। वरवादी इसी तरह शुरू होती है। कितनी मिसालें हैं, पर हम देख कर भी नहीं देखते।

२७ फरवरी : सारे दिन महावीर के घर रहा। लड़के के विवाह का भोज था। लड़की सुंदर है, वहुत अच्छी। रात में घर आया। थक गया। इन दिनों लिखना-पढ़ना एक प्रकार से वंद हो गया। कुछ तय करना पड़ेगा कि लाइफ में क्या किया जाय। समस्याएँ

जोंकों की तरह पिछले चार वर्षों से खून पी रही हैं। सोचता हूँ, सब छोड़-छाड़ कर निकल जाऊँ। जगह-जगह छापे पड़ रहे हैं। जयपुर महारानी के १० करोड़ के जवाहरात पकड़े गए। कितना सच, कितना झूठ, कौन जाने।

१ मार्च : शाम को बाजार गया। बसंतो का मुन्ना बड़ा होता जा रहा है। स्वभाव का भी अच्छा है। इसका विवाह तो मैं देख नहीं पाऊँगा। तीन-चार दिनों में दिल्ली होते हुए बंबई जाने की सोच रहा हूँ।

नयी दिल्ली

६ मार्च : स्कूटर से घर आया। त्यागी जी, डी० एन० सिंह, एस० एन० मिश्र आदि से मिला। गंगा बाबू के गया। सस्ता साहित्य मंडल में २ घंटे था। जी० डी० का फोन आया, वे बंबई जा रहे हैं। मुझे भी जाना है, पर मन नहीं करता। परंतु जाऊँगा।

बम्बई

१२ मार्च : आज मिल में चोरी पकड़ी गयी। काफी संगीन है। मुझे अंदेशा था। बड़े कर्मचारी चोरी करते हैं, मैंने कई बार कहा है। मिल हमारी खराब नहीं थी। मैनेजमेन्ट की खराबी से हालत बिगड़ी है। 'क्राइम एंड पनिशमेंट' पढ़ रहा हूँ। 'लैंड सिलिंग' लागू होगी। चिंता की बात है।

१९ मार्च : दिन में मिल रोज जाता हूँ। पढ़ना-लिखना बंद सा है। बंबई प्रवास की एक दुखद स्मृति मात्र रह जायेगी। मदन आजकल बीमार रहने लगा, चिंता-फिक्र से। असहाय-सा हो गया।

२१ मार्च : दिल्ली शनिवार को जाने का तय रखा। दिन में 'हरदौल' की कहानी लिखनी शुरू की। शाम को हनुमान प्रसाद जी पोद्दार की स्मृति-सभा में गया। भाई जी ने असाधारण कार्य किया। गीता प्रेस का अब इतना काम शायद नहीं हो पाए। कौन इतनी लगन रखता है? दिल्ली से विष्णुहरि डालमिया आए थे। गोरखपुर में एक कैंसर अस्पताल बनाने की योजना है। अच्छा काम है। मेरे मन में भी ऐसा काम करने की इच्छा होती है।

बम्बई

३१ मार्च : कानपुर जाने का मन हो रहा है। वहीं रह कर नयी किताब तैयार करने की भी इच्छा है। मार्च में चिंता ही चिंता रही। मिल भी खराब चलती है। कपड़ों का हिसाब ठीक नहीं। मेरा यहाँ रहना स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं। शायद रिटायर होकर लिखने

का काम करूँ। फालतू इतनी चिंता करता हूँ, मिल चली जाती है तो जाय। सड़क के आदमियों से तो फिर भी अच्छे रहेंगे।

कलकत्ता

१६ अप्रैल : लिखना-पढ़ना बंद। एस० एन० टी० से मैंने कहा, मेरी तबीयत खराब रहती है। उसने कहा, चिंता करने से क्या होगा।

कानपुर

२६ अप्रैल : रात में कुछ देर जागता रहा। चुपचाप गंगा जी चला गया। सवा मील घूमा। पानी गरम परंतु साफ नहीं था। आधा घंटा स्नान किया। कल प्लेन से आया, पार्क हाउस में ठहरा हूँ। एयर कंडीशनंड कमरा है। आराम मिला। नींद भी आ गयी। गर्ग, मोदी, दूगड़ एयर पोर्ट पर आए। बड़ा स्नेह रखते हैं। अच्छा लगता है।

बम्बई

२ मई : शाम को ब्रिटिश लाइब्रेरी में गया। लेख तैयार किया। यहाँ से चला जाना ही अच्छा है।

माथेरन

११ मई : गरमी लगती है। अच्छी साधारण पहाड़ी जगह है, सस्ती। ४८) रु० में खाना नाश्ता तथा कमरा। साथ लगा बाथरूम, गरम पानी। चिंता के कारण कहीं भी आनंद नहीं ले पाता। बुरी बात है। मन पर काबू रखना चाहिए। इतना दुर्बल नहीं था। बाजार और आसपास घूमा। शाम को टेलिविजन में 'काबुली वाला' फिल्म देखी। अच्छी थी। फिर कब यहाँ आ पाऊँगा, मालूम नहीं।

बम्बई

१३ मई : बच्चे कार से महाबलेश्वर गए। मैं दिन में नींद लेता रहा या किताब पढ़ता रहा। मदन बीमार है। फ्लू है, मानसिक तनाव भी है। रतनलाल जी जोशी का फोन लेख के लिए आया। अहमदाबाद, जयपुर, सीकर, सरदारशहर होकर दिल्ली जाने का, वहाँ २-३ दिन ठहर कर हरिद्वार जाने का विचार है। बंबई आकर लाइफ बिगड़ी, शरीर थक रहा है।

बम्बई-अहमदाबाद

१५ मई : लोगों से विदा ली। न जाने कब बंबई आऊंगा। कलकत्ते से लेख आ गया। अच्छा है। आसकरणजी को किताबें दीं, चीजें दीं। ब्रिटिश लाइब्रेरी गया। १०००

ग्वालियर रेयन वेचा। मेरा ध्यान शेयरों पर मंदा है। पहले कुछ कर लेता तो रुपए आ जाते। शाम को अहमदावाद ५।। वजे पूगा।

सरदारशहर

१७ मई : साढ़े ग्यारह महीने वाद जन्म-भूमि की गोद में आया हूँ। रात में वर्षा आयी, ठंढ हो गयी। अच्छा लग रहा है। तेल-मालिश करायी। के० एल० दूगड़ के पास २ घंटे वैठा, अच्छी वातें सुनने को मिलीं। गणेशमलजी के साथ वापू निकेतन गया। रुपए दिए, मीरा निकेतन को भी दिए। कुल १,५००) रु० दिए, तीन जगह। लोगों में प्यार है। मेरे वारे में वात होती है कि मैं सरदारशहर को भूल गया। मन में कचोट होती है। भूल कैसे सकता हूँ? मेरा घर वहुत वड़ा है। सुंदर लगता है। मैं कहाँ जा गिरा? विरजू ने गांधी-विद्या-मंदिर को रुपए भेजे हैं। रात को १० की गाड़ी से सोकर पूगा।

१८ मई : रात ठंढ थी। थका था। दिन में १२ वजे लोक-सेवा-संघ की मीटिंग थी। रघुनाथ जी का ५००) रु० का महीना किया, एक महीने का वोनस। कत्तिनों को १०) रु० इस तरह ११,०००) रु० का नफा वरावर कर दिया। मन में संतोष हुआ। एक वजे एक श्रद्धानंद जी आए। उनके दर्शन किए। कुछ चीजें खरीद दीं। ९ वजे स्टेशन आ गया। १५-२० लोग पहुँचाने आए। वंवई जितनी चिंता देश में नहीं रही।

जलपाईगुड़ी-तसाती

१ जून : सुवह ट्रेन लेट थी, मालदह में १ घंटा ठहरा। आम लिए, सस्ते थे। मन में आता है, कभी कार से दोस्तों के साथ इधर आयें। पांचीलाल घेलिया नहीं आया। उसका दामाद वीमार है। ऑपरेशन होगा। काफी अच्छा लड़का है, चिंता हो रही है। पिछले दो हफ्ते पहले वंवई में मिला था। १२। वजे जलपाईगुड़ी पहुँचे। महावीर लेने आया था। २ वजे वगीचे तसाती पहुँचे। लोग आए हुए थे। स्टाफ के आदमी भी थे। अच्छा लगा। शाम को २०० आदमियों की पार्टी हुई। २५००) रु० खर्च हुए। परंतु अच्छे लोग थे, आयोजन भी अच्छा। दीपचंद नाहटा आए। यहाँ आकर खुशी होती है।

दलगाँव-जलपाईगुड़ी-वीरपाड़ा

२ जून : सुवह डेढ़ मील घूमा। दलगाँव गया। प्रकृति के वीच मनुष्य को कितनी शांति मिलती है। किताव पढ़ता रहा। डुआर्स गार्डन गया। वीरपाड़ा में रावतमलजी गिडिया से मिला। ५।। वजे वसंती के वगीचे गया। वच्चे खुश थे। डटकर नाश्ता किया। ६। वजे तक उसका वगीचा देखा। मन खुश हुआ। काम अच्छा हो रहा है। ऐसा लगता है, इससे अच्छी कमाई हो जाएगी। वीच-वीच में मिल की चिंता हो जाती है और सव काम ठीक चल रहे हैं, केवल मिल खराव है। गलती हम लोगों की है।

दलगाँव-अलिपुर दुआर-फासकोवा

३ जून : १॥ बजे कार से चले। अशोक चला रहा था। ११ बजे कूचविहार पूगे। वहाँ २ घंटे ठहरे। मुझे तो खाना न था। मंगलवार है। व्रत रखता हूँ। हर जगह का एक समय होता है। इसका भी था। यहीं की जयपुर की महारानी गायत्री देवी हैं। समय सब बनाता मिटाता है। थोड़ी सी देर के लिये अलिपुर दुआर, फिर वहां से महावीर के बगीचे ३॥ बजे पूगे। अच्छा है। चिरंजी, बच्चे, सब मिले। ५ बजे कार से चले। गर्मी काफी थी। थकावट भी आ गयी थी। ६॥ से ७ तक पुसिलिंग (भूटान) में ठहरे। अच्छी पहाड़ी जगह है। बौद्ध मंदिर हैं, दर्शन किये। अच्छे दृश्य देखने में आये। अभी इस अंचल में राजनीतिक हलचल के प्रति रुझान नहीं दिखती; अच्छा है। राजनीति से शांति टूटती है। हमारे देश में मुसलमानों और मिशनरियों के कारण जिस तरह सीधे-सादे आदिवासियों और पहाड़ियों में उत्पाती प्रवृत्ति आयी, वैसी भूटान में शायद नहीं हो पायेगी। यहाँ भी मारवाड़ियों के घर,-व्यवसाय हैं। कूचविहार, अलिपुर दुआर तथा इधर के गांवों में लोग सुखी हैं।

कलिम्पोंग

६ जून : रात कार से यहाँ आया, थकावट सी रही। नींद आयी। तबीयत ठीक है। दार्जिलिंग जितनी चहल-पहल यहाँ नहीं। तिब्बत से व्यापार बन्द हो जाने के कारण इस जगह की बढ़ोतरी इतनी नहीं हो पायी। फिर भी पहले से स्थानीय व्यापार-उद्योग बढ़ा है, लोग बताते हैं। मोहनलाल जी कठोतिया से साधना पर बात की। अच्छे साधक हैं। पूरा समय दिया है। मेरा मन भी होता है। परंतु मजबूती की दरकार है। कल से शुरू करना चाहता हूँ।

कलकत्ता

१० जून : जाप बंद हो गया, फिर भी राम नाम लेता रहता हूँ. कलकत्ते आया हूँ। नन्दू मिला, बच्चे भी। न जाने क्यों उदासी बढ़ती जा रही है। रूपमती की कहानी बहुत अच्छे ढंग से बनी है। सोचने की शक्ति घटती जा रही है, ऐसा लगता है। एक वर्ष में १० वर्ष बूढ़ा हो गया हूँ। बाहर जाना चाहता हूँ। घिसी-पिटी जिंदगी लगती है।

२२ जून : नथमल केडिया के साथ विशुद्धानंद विद्यालय में कवि-सम्मेलन में गया। साधारण-सा था। अब पहले की तरह कविता में भावना नहीं मिलती। शब्द-योजना भी वैसी नहीं रही। ऐसा लगता है, समय और हमारे सोचने के ढंग में काफी फरक आ गया।

जसीडीह

८ जुलाई : रोज मालिश, कटि स्नान कर लेता हूँ। घूमता भी हूँ। तबीयत ठीक मालूम देती है। खाने-पीने का परहेज है। कलकत्ते का फोन नहीं आया। पता नहीं, इन सात दिनों में क्या-क्या हुआ।

राजगिर-पटना

१० जुलाई : मुन्ना के साथ मन लग जाता है। कल बुद्ध मंदिर देखने गये। मुन्ना पहाड़ पर चढ़ रहा था। कैसा-सा डर लगा। भगवान को याद करने लगा। राजगिर, नालन्दा के पुराने खंडहर देखने गये। पहले भी देखा था। जब भी देखा यही प्रश्न आया, इस्लाम के नाम पर मुसलमानों ने चारों तरफ बरबादी की आँधी क्यों उड़ायी। यूरोप में भी यही देखा। मैंने जब भी इन लोगों से पूछा वे कतराते रहे। इन लोगों के विचित्र संस्कार हैं। बहुत वर्षों बाद नालंदा आया हूँ। राजगिर तो ५ वर्ष पहले आया था। पावापुरी पहली बार आया। बहुत सफाई है, इन्तजाम भी अच्छा। मंदिर के चारों ओर कमल-सरोवर बहुत सुंदर लगा। पटना पहुँच कर खाना खाया। कार से घूमने में सुविधा रही। गंगा बाबू के घर गया। कल की शादी है। गरीबी का-सा वातावरण है। गंगा बाबू चाहते तो सम्पन्न बन सकते मगर उन्होंने जीवन खपा दिया देश के लिए। मैं चाहता ही रह गया। पाकर भी न कुछ पाया, कुछ कर भी न सका। २५०) विवाह के लिये कहकर देने लगा, लिये नहीं।

वाराणसी

१२ जुलाई : कलकत्ते का फोन नहीं मिला। शाम को भूख एकदम नहीं लगी। सुबह जलेबी कचौरी खा ली, गलती की। राय कृष्णदास जी तथा रत्नाकर जी के बच्चों साथ शाम को सारनाथ गया। बनारस में मन लग जाता है। 'गोरा' पढ़ रहा हूँ। विन्ध्याचल होकर वापस कलकत्ता जाने का विचार है।

मधुवन (पारसनाथ)

१९ जुलाई : सुबह से मौसम अच्छा था। पैर में दर्द है, शायद घाव हो गया। चीस चलती है। मधुवन में एक कमरा मिल गया। साफ नहीं था, फिर भी ठहर गया, आराम तो मिला। एक मंदिर देखा, भव्य और सुंदर। पैर के दर्द ने ज्यादा चलने नहीं दिया।

कलकत्ता

२१ जुलाई : पैर में दर्द, बुखार भी था। डाक्टर ने दवा दी। मवाद निकलता है, चीस भी है। सारे दिन लेटा रहा। ऐसा लगता है, ५-४ दिन लगेंगे। गलती मेरी है,

अगर ट्रेन से आ जाता तो हैरानी नहीं होती। 'बना रहे बनारस' सारे दिन पढ़ता रहा। १५०० शेयर बेचे। बाजार गरम है।

२६ जुलाई : डाक्टर ने फोड़ा चीर दिया, काफी मवाद निकला। गलती मेरी है तो दंड भी मुझे ही भुगतना है। बहुत दर्द हुआ। बंबई जाना शायद ही हो। पाँच सौ खर्च हो गये, तकलीफ अलग, घाव भरने में देर लगेगी।

२ अगस्त : फोड़े में बहुत आराम है। बंबई न जा सका। घर पर ही रहता हूँ। सीताराम जी सेकसरिया के साथ शाम को कला-मंदिर में बिरजू महाराज का नृत्य देखा। अच्छा था। अभ्यास और साधना है।

५ अगस्त : आज बुखार तो नहीं है, पर कमजोरी है। दो बार खराब सपने पिछले महीने में दिखायी दिये। अगर सपनों में कुछ तथ्य होता है तो फिर मृत्यु है।

११ अगस्त : भागीरथ जी के घर रात में गया। उनकी तबीयत अब ठीक है। खुशी होती है। 'फूलों की घाटी' का मेरा लेख आया। गंगोत्तरी पर लिख रहा हूँ। फोड़ा ठीक होता जा रहा है। मन में होता है, साधु हो जाऊँ।

२० अगस्त : शाम को वर्षा में बड़ा बाजार गया। भीग गया। जालान पुस्तकालय, जैन पुस्तकालय दोनों बंद थे। केदारनाथ-बद्रीनाथ लिख रहा हूँ। लेख अच्छा बन पाये, चेष्टा करता हूँ।

२८ अगस्त : सुबह ८ बजे ५० सरकारी आदमी आये। सारे घर को घेर लिया। रात में ११ बजे तक रहे। सब कुछ ले गये। मन एकदम खराब हो गया। वाइफ पर भी गुस्सा आता था, परंतु उससे क्या बनता है। हम लोगों का सिस्टम कुछ ऐसा ही है। गहने पहनने नहीं परन्तु इन पर खर्च अनाप-शनाप लगायेंगे। बार-बार इन्हें गढ़वायेंगे, तुड़वायेंगे। रुपया फँसा रहता है, काम आता नहीं। लोगों की नजरों में पड़ता है। नाना प्रकार की दिक्कतें खड़ी हो जाती हैं। कुछ हो या न हो, एक बखेड़ा बेकार का खड़ा हो गया। लोग क्या-क्या सोचेंगे? कैसा सा लगता है।

सरदारशहर

३ सितम्बर : वाइफ़ की ४५ वर्ष पहले की फोटो मिली। बीते दिन सामने आ गये। मेहनत करता था, आगे बढ़ता, कभी पीछे हटता। इतनी परेशानी नहीं थी। दिन में थोड़ी देर सोया। कल मंगलवार का व्रत नहीं कर पाया, आज दूध लिया, फल खाया। यहाँ दिल्ली से जो सरकारी आदमी जाँच के लिये आया, वह शाम को असफल होकर चला गया। अच्छा व्यक्ति था। लोगों से मिलता-जुलता रहा। धर्मशाला, मंदिर

गया। सरदारशहर वहुत दिनों वाद आया हूँ। लोग मिलते हैं। वहुत से बूढ़े से हो गये, वदले हुए चेहरे के लगते हैं।

वम्बई

८ सितम्बर : दिल्ली होकर वम्बई कल आया। दिल्ली में तवीयत कुछ सुधरी। भूख लगती थी। सुवह जी० डी० के साथ साथ दो मील अच्छी स्पीड में घूमा। हैंगिंग गार्डन गया। दोस्त मुझे वहुत प्यार करते हैं। सुवह मदन के घर गया। वहुत उदास है। मेरे भी रोना सा आ गया। छोटी मुन्नी वड़ी प्यारी हो गयी है। सरमद पर लेख लिखना शुरू किया।

कलकत्ता-जसीडीह

६ अक्तूवर : शारदा, वेला, अशोक दिल्ली चले गये। घर सूना हो गया। मैं वाइफ के साथ ट्रेन से जसीडीह रवाना हुआ। रात में २॥ वजे कुछ वदमाश कंपार्टमेंट में घुसे। उनके पास छुरे थे। मगर काफी हिम्मत से हम लोग जूझे। सामान कुछ नहीं गया परंतु चोट लगी है।

जसीडीह

११ अक्तूवर : कल लहरिया सराय से गंगा वावू आये। मन लग जाता है। तेल मालिश रोज करता हूँ। परंतु खाना ज्यादा खा लेता हूँ। जो चोट लगी थी, ठीक हो रही है। भवन में आलूचाप खा लिये, रात में खाना नहीं खा सका।

१९ अक्तूवर : सुवह तेल मालिश नहीं करायी। ६॥ वजे पी० डी० हिम्मतसिंहका के साथ ७८ मील पर के भागलपुर के लिए रवाना हो गया, कार से। ९ वजे हनुमान-प्रसाद जी हिम्मतसिंहका के घर गये। आँखों से कम दिखता है, वैसे स्वस्थ हैं। अकेले रहते हैं। तीन लड़के हैं, किन्तु दुकान का काम-काज वे निज में देखते हैं। चम्पानगर की खुदाई देखने गया। काफी पुराना शहर है। लोग कहते हैं, कर्ण का है। महाभारत-कालीन होगा। खुदाई के स्थान पर जानकार अधिकारी का रहना आवश्यक है। इससे चीजों की गड़वड़ी का अंदेशा नहीं रहता और व्यवस्था भी वनी रहती है। यहाँ किसी को नहीं पाया। आना एक तरह से अधूरा रहा। ५॥ वजे जसीडीह के लिए लौटा। आने-जाने में १६० मील का चक्कर लगा परंतु किसी प्रकार की थकावट नहीं आयी। भागलपुर शायद १०-१२ वर्षों पर आया। काफी वड़ा शहर हो गया है।

जसीडीह

२३ अक्तूवर : आज मामा से 'महाभारत' ले आया। कुछ पढ़ा। मुझे पुराण, महाभारत न जाने क्यों ज्यादा अपील करते हैं। किन्तु इनके प्रति मेरा धार्मिक दृष्टिकोण नहीं

वन पाता। इनकी कथाएँ अच्छी हैं। प्रतीक शैली में गंभीर वातें कही गयी हैं। मन में उतरीं तो वैठ ही जाती हैं। राम का नाम तो लेता रहता हूँ। जसीडीह आना अच्छा रहा। यहाँ मच्छर ज्यादा हैं।

कलकत्ता

२६ अक्तूबर : व्लड प्रेशर २२०/१३० है। सुवह गंगा जी गया। मालिश कराके तैरा भी। मुन्ना के साथ मद्रासी होटल में गया। कार चला कर वीडन स्ट्रीट में डाक्टर के पास गया। सलाई ली। वी० पी० दिखाया, मन में चिंता हुई। केवल १९६९ में कानपुर में इतना ऊंचा वी० पी० हुआ था। दिन भर मन में उदासी रही।

३ नवम्बर : आज दीपावली है। दिन में घर में था। देवू भाई जी के गया। ५॥ वजे शेयर वाजार गया। ६॥ पर घर आ गया। भरापूरा परिवार है, केवल मिल की मुझे चिंता है। प्रभु की दया से वह भी ठीक हो जाय तो जीवन की चिंता मिटे। रात में वाजार गया। अच्छी रोशनी थी।

२८ नवम्बर : मन में ऐसा आता है कि सव छोड़-छाड़ कर कहीं निकल जाऊँ। दस-पंद्रह वर्ष की आयु शायद और है उसमें क्यों चिंता करूँ। जो संयोग रहेगा, वही होगा। परंतु घरवालों से कहने की हिम्मत नहीं।

वंगलोर-हरिहर

२३ दिसम्वर : कल १०॥ पर विरला जी के प्लेन से हरिहर पुगा। रास्ते में मैसूर सिमेंट का कारखाना ऊपर से देखा। पिछले वर्ष १॥। करोड़ इस कारखाना ने कमाया है। अव भी अच्छा चल रहा है। १२॥ तक हरिहर के कारखाने में घूमा। उत्पादन के आँकड़े वगैरह काफी अच्छे हैं। शिवजी का एक मंदिर देखा। दक्षिण के मंदिरों का रख-रखाव उत्तर से काफी अच्छा रहता है। जी० डी० के साथ २ घंटे वात की।

हरिहर-देवनगिरि

२५ दिसम्वर : सुवह २ मील घूमा। सर्दी अच्छी है। ८ वजे नाश्ता किया। फिर विरला जी और मडेलिया जी से वातें करता रहा। इन लोगों की एफिशियेंसी देखने लायक है। नंदलाल (प्रेसिडेंट, मैसूर सिमेंट) के साथ देवनगिरि देखने गया, अच्छा कस्वा है। सुवह ९ वजे विरला जी के साथ हरिहर का मंदिर (१०० वर्ष पुराना) देखने गया। उन्होंने यहाँ २ लाख का कल्याण-मंडप वनाने को कहा है। इनके इतना रुपया आता है कि कितना ही दे दो।

नयी दिल्ली

२७ दिसम्बर : नागदा से यहाँ १०।। बजे पूगा। प्लेन ने समय और दूरी को कितना कम कर दिया। एक बजे त्यागी जी के गया। बहुत ज्यादा बीमार हैं, बचेंगे नहीं, ऐसा लगता है। गरीबी में भी हैं। ईमानदार व्यक्ति की यही हालत होती है, भगवान् का न्याय है या परीक्षण, पता नहीं। नागदा से मिठाई लाया था, दे दी। एक समय के इतने प्रसिद्ध प्रभावी व्यक्ति, उनकी असहाय अवस्था देखकर दया, करुणा उपजती है। लकवा आ गया है। मनुष्य के भाग्य का कुछ भी पता नहीं चलता कि कब क्या हो जायगा। मेरा भी क्या होगा, कौन जानता है?

१९७६

१ जनवरी : सुबह ९ बजे कार से ऋषिकेश के लिए चले। जी० डी०, बी० के० सपत्नीक और उनकी पुत्री मंजुश्री और दामाद। बहुत विशाल जगह है, गंगा के तट पर हम ठहरे। राजसी ठाठ है। जी० डी० से बहुत बातें होती रहीं। शाम को स्वर्गाश्रम गये। मेरे मन में आता है, रिटायर होकर ऐसी जगह रहूँ। यहां सर्दी ज्यादा लगती है।

२ जनवरी : सुबह तीन-सवा तीन मील घूमा। जी० डी० के साथ नाश्ता किया। ९ बजे कार से ऋषिकेश गये। बिड़ला जी ने २ लाख रुपये देकर मंदिर बनवाया है। शिवानंद-आश्रम देखा। ५ लाख खर्च किया है। वहाँ से लछमन-झूला आये। नौका पर उस पार गये। पहले भी कई बार आ चुका हूँ। हर बार मन लगता है। शांति मिलती है। १२ बजे तक स्वर्गाश्रम का काम देखा। अच्छी बड़ी संस्था है। डाक्टर आया, मुझे जाँचा। ब्लड प्रेशर ऊँचा है। १९४/११४, कफ में खून है। कल भी आया था। दवा दी है। बहुत ही नियम रखने को कहा है। वजन घटाने को तथा खाना कम करने को कहा है। ऊँचाई पर चढ़ने की मनाही की है। शाम को काली कमली वाला में गया।

ऋषिकेश

३ जनवरी : आज घूमने पर थकावट-सी आयी। ८॥। तक पंडित देवधर जी से बातें करता रहा। भले आदमी हैं। स्वर्गाश्रम का काम देखते हैं। ४ लाख, वर्ष का बजट है। वियोगी हरिजी मंत्री हैं। मेरा भी मन होता है, इसी ढंग के काम सम्हालूँ। कुछ ज्यादा ही खा लेता हूँ। आज भी थूक में थोड़ी-सी ललाई आई। मन में चिंता तो है ही। नींद ठीक से आ जाती है। कोट, कलम और शीशा—तीन चीजें खोयी। स्वास्थ्य वैसे ठीक है, किंतु ब्लड प्रेशर ऊँचा है।

बम्बई

८ जनवरी : गोदाम के बैंक द्वारा लेने में झंझट पड़ गयी, चेष्टा हो रही है। परंतु काम पार पाना मुश्किल लगता है। चारों तरफ की आफत से जी घबरा जाता है। कल गर्ग को, संपत को पत्र दिया। शेयरों के घाटे की तो अपने रुपयों से पूर्ति कर लूंगा। दरअसल

फाटका करना अव मेरे वस की वात नहीं है। घाटा होता है तो वड़ा हो जाता है। अभी भी थोड़ा जमा हुआ खून आता ही है।

१३ जनवरी : डाक्टर रोज आता है। जी० डी० का फोन भी आता है। वीमारी लग ही गयी। खड़े होने पर चक्कर आते हैं। ऐसा लगता है, शरीर थका-सा जा रहा है। घर में ही रहता हूँ। जव भी यात्रा पर से आता हूँ, वीमार हो जाता हूँ। शायद, स्वास्थ्य का ख्याल नहीं रखता। राजू, नन्दू दोनों मिल को वेच देने के वारे में जोर दे रहे हैं। ब्लड प्रेशर ११०/१२०।

१५ जनवरी : शाम को मदन से वात हुई। वह मिल किसी हालत में वेचने को तैयार नहीं। ऐसा लगता है, जमीन विक सकती है। कुछ रुपया भी शायद आ सकता है। परंतु घर में झंझट मोल लेने की जँचती नहीं। एस० एन० टी० का फोन आया था। वह भी कह रहा था, मदन का मन नहीं है। शेयरों में घाटा वढ़ता जा रहा है। ६०००) रु० का घाटा हो गया। आगे पर सौदा नहीं करूंगा। ये रुपये तो देने ही हैं। शायद अव भाव और वढ़ेगा नहीं। वाइफ और नन्दू २-३ दिनों में कलकत्ते चले जायेंगे।

कलकत्ता

२६ जनवरी : सुवह विक्टोरिया गया। एक मील घूमा। १० वजे स्कूल गया। झंडोत्तोलन में थोड़ा सा वोला। आज जन्मदिन है, ६६ वर्ष का हो गया शायद ५-४ वर्ष और रहूँ। चिंता से शरीर जर्जर हो गया है।

११ जनवरी : शेयर वाजार आज मंदा है। ऐसा लगता है और भी मंदा जायगा। जूट पर लेख भेजा। ३-४ पत्र दिये। २० ता० की दिल्ली जाने की टिकट करायी है। मन में एक तरह की खुशी है।

नयी दिल्ली

२० फरवरी : दिल्ली प्लेन से रवाना हुआ। २॥। पर वाराणसी, ४ वजे कानपुर। दीक्षितजी, ए० पी० गुप्ता, प्रो० श्रीप्रकाश, संपत तथा वालकृष्ण एयरपोर्ट पर आए थे। काफी प्रेम से मिले। आधा घंटा थे। ३२ पुस्तकें ले आया। टाइप अच्छी है, छपाई वगैरह भी। शाम को ६ वजे दिल्ली पुगा। ९। तक पुस्तकें पढ़ता रहा। रात में नींद आयी पर पेशाव के लिए कई वार उठना पड़ा। आदत हो गयी है। दिल्ली का मौसम अच्छा है।

सरदार शहर

२४ फरवरी : यात्रा मुझे अव कम करनी चाहिए। एक पुराने मंदिर की मरंमत के लिए २,०००) रु० दिए। तीन दिन सरदार शहर में रहा। मन लग गया। कल रात में थोड़ी देर कविता-पाठ हुआ। ठंढ वहुत ज्यादा है।

बनारस

२६ फरवरी : सुवह ७ वजे कानपुर पूगा। स्टेशन पर गर्ग और दूगड़ आए थे। मैंने गर्ग को कलकत्ते वुलाया है। दिन में ट्रेन में पढ़ता रहा। सर्दी दिल्ली से कुछ कम है। थकावट आ ही जाती है। २।।। पर मुगलसराय और ३।। वजे बनारस पहुँचा। विश्वनाथ मुखर्जी के गया। किताव देकर आया। फिर आचार्य सीतारामजी चतुर्वेदी के गया। ३ प्रतियाँ कालिदास ग्रंथावली ले आया। वाजार से एक स्टोव ले आया, अच्छा लगा। गर्म कर के खाना खाया। वनारस २-३ दिन ठहरूंगा। नोपानीजी नहीं हैं। यात्रा से थकावट आ जाती है। शायद यात्रा अव ज्यादा नहीं कर पाऊँगा।

कलकत्ता

११ मार्च : मातृका प्रसादजी कोइराला मेरे यहाँ ठहरे हुए हैं। उनके सम्मान में १५ व्यक्तियों को खाने पर वुलाया।

१४ मार्च : दवा कुछ ज्यादा ले लेता हूँ, कैसा ही लग रहा है। एक राजस्थानी प्रोग्राम में गया, अच्छा था। मैंने उद्घाटन किया। वंवई की खास खवरें नहीं आती हैं। मैं फोन नहीं करता। 'विश्वमित्र' में मेरा लेख आया है। मातृका वावू आज चले गए। पहले जैसा ही स्नेह वनाए हैं। कितने विद्वान और वहुपठित हैं। प्रधानमंत्री होने पर भी इन्हें गर्व नहीं था, प्रेम से मिलते रहे, आज भी। ऐसे लोग कम होते हैं।

१९ मार्च : गंगा जी नहाने से स्वास्थ्य में यथेष्ट सुधार है। रामचंद्रजी के मंदिर गया। कितावें ले आया हूँ। पढ़ता रहता हूँ। समय कट जाता है मन भी थोड़ा लग जाता हैं। सुवह मैदान गया। डॉ० भानुशंकर मेहता और लक्ष्मीशंकर व्यास घर आए। कल वालकृष्ण गर्ग को खाने पर वुलाया है। लेखों की तरफ झुकाव कम होता जा रहा है। कहानी लिखने का मन होता है।

६ अप्रैल : आज मंगल का व्रत है। पुरी जाने की योजना बना ली है। सौगंध थी, परंतु १००० मन पाट वेची, जरूरत भी क्या थी ? गंगाजी रोज नियम से जाता हूँ। मालिश और तैरना, इससे स्वास्थ्य अच्छा है।

७ अप्रैल : तवीयत वहुत ठीक है। एस० एन० टी० वगैरह आज नए ऑफिस जा रहे हैं। दुर्गादास पर एक कहानी लिखी। इन दिनों में काफी लिखा है।

पुरी

१७ अप्रैल : पंडाजी आए, पुरानी वहियाँ ले आए। ६५ वर्ष पहले दादाजी, दादीजी आए थे; उन्होंने सव वताया। मैं भी दो-तीन वार आ चुका हूँ। अव बीमार होता जा रहा हूँ। फिर कव आना होगा, पता नहीं। पंडों की परंपरा सभी वड़े तीर्थों में है। अच्छी

व्यवस्था थी। यात्री को विश्वासी जगह पर ठहरने की सुविधा हो जाती, पूजन की भी। मगर इसे पंडों ने ही बिगाड़ा। मौज-मस्ती में जजमानों के दिए रुपयों और संपत्ति को बरबाद किया, उन्हें परेशान भी। अब इन्हें कौन पूछेगा? पहले के से धार्मिक पंडे रहे भी नहीं। अपने लड़कों को भी इन लोगों ने तैयार नहीं किया। शायद अब पंडों की जरूरत नहीं पड़ेगी। होटेल और गाइड मिल जाते हैं। शाम को नथमलजी भुवालका कलकत्ते चले गए।

२० अप्रैल : बदन दुखने के बावजूद समुद्र-स्नान किया। दिन में गर्मी रहती है परंतु हवा बहुत तेज चलती है। रात में सर्दी सी लगती है। लिखना-पढ़ना प्रायः बंद है। ताश ज्यादा खेलने से सर दुखने लगता है। चाडंक आज शाम को चला जायगा। लोगों ने उसे बहुत तंग किया। वह भी अव्वल दर्जे का कंजूस है।

२१ अप्रैल : सुबह काफी थकावट थी। ताश में भी मन नहीं लगा। समुद्र नहीं गया। तेल मालिश करायी। आज कलकत्ते जा रहा हूँ। यहाँ आकर कफ आने लगा फिर छाती में दर्द हो गया, ऐसा लगता है, मुझे बाहर जाना बंद कर देना पड़ेगा। पुरी फिर कब आऊँगा, पता नहीं। मंदिर में दर्शन प्रायः रोज करता रहा। हनुमानजी के भी गया। पुरी के मंदिर पर सेक्स की मूर्तियों के बारे में इधर-उधर की बहुत सी बातें पढ़ीं। तंत्र, कला और बहुत बातें। लोगों से जानना चाहा पर लगा सभी अटकल लगाते हैं। सही क्या है, मन में जम नहीं पाया। जो हो, भक्त लोग तो आज भी इन बाहरी नंगी मूर्तियों से अधिक अंदर के जगन्नाथजी को देखते-पूजते हैं। टूरिस्टों की बात और है।

कलकत्ता

२७ अप्रैल : आज मंगल का व्रत नहीं रख सका। कमजोरी-सी थी। थोड़ा सा कार्न-फ्लेक्स् और दूध लिया। दो-तीन कहानियाँ तैयार की हैं। अखबारों में भेज रहा हूँ।

बम्बई

१ मई : कल शाम के प्लेन से बंबई ६॥ पूगा। राजू ने बताया, मिल की खबर ठीक है, शांति मिली। सुबह मैदान गया। कार चला कर ले गया। ३॥ महीने बाद दोस्तों से मिला। सब बहुत खुश हैं। कल लोनावाला जाने का कह दिया। यहाँ आकर भूख थोड़ी ज्यादा लगने लगी है।

४ मई : सुबह भागीरथजी के घर गया। ६॥ बजे मैदान आया। आधा घंटा था। इंदौर, मांडू जाने की सोच रहा हूँ। तबीयत सुस्त सी है। मन एकदम खराब है। ऐसा लगता है, जीवनी-शक्ति घटती जा रही है। चलने में कैसा ही लगता है। शाम को ५ बजे इंडियन एयर लाइंस का टिकट करा लिया। कांतिलालजी देसाई के गया, जे० पी० के गया। पहले से अच्छे हैं।

इंदौर-धार-मांडू

६ मई : सुवह कलकत्ते से नन्दू का फोन आया। दिल्ली की मनाही की। ६ वजे भगवती, मदन आए। साथ में नाश्ता किया। ९ वजे एयर पोर्ट राजू के साथ था। एक बजे इंदोर पूगा। २॥ पर स्कूटर लेकर वस स्टैंड पर आया। गरमी ज्यादा नहीं है, ९५ फा० हा० है। धार देखकर मांडू ६॥ वजे पूगा। ऐसा लगता है, कभी अच्छा शहर था। किले की दीवार अव भी है, कई दरवाजे हैं। कल ठीक से देखूंगा। रात एक धर्मशाले में ठहर गया। ठंढ थी। स्थानीय लोगों से वात की। कहते हैं, ६०० वर्ष पुराना कस्वा है। मगर धार प्राचीन 'धारा नगरी' है। इसे मुस्लिम आक्रमण ने तोड़ा-फोड़ा। किसी जमाने में कला और साहित्य का केंद्र था, हिंदू काल में। धार में विक्रमादित्य की याद बहुत आयी। खंडहरों में प्राचीन गौरव और वैभव कराहता है। मन कैसा सा हो उठा था।

ओंकारेश्वर

७ मई : सुवह ६ वजे उठा। मांडू घूमा। वस से ११ वजे ओंकारेश्वर पूगा। १॥ घंटे में नदी स्नान, दर्शन वगैरह किए। स्नान से ताजगी आ गयी। अहिल्या बाई ने इस नगर का पुनरुद्धार किया, कहा जाता है। वह यहीं रहती थीं। अपूर्व धैर्य, साहस और चारित्रिक वल था। मेरी धारणा है, भारत के इतिहास में ऐसी तपस्विनी राजरानी पिछले ५ सौ वर्ष में शायद ही कोई हुई हो। ओंकारेश्वर सिद्धपीठ है, ऐसा लगता है। यहाँ अपने आप शांति मिलती है।

पंचमढ़ी

८ मई : वस यात्रा में तकलीफ रही। भीड़ काफी थी। लोग यात्रा करना सीख नहीं पाए, खेद है। अनुशासन का अभाव अखरता है। १० वजे पंचमढ़ी पहुँचा। एक तिवारी लॉज में ३) रु० में ठहरा। खाना भी ३) रु०। पति-पत्नी भले हैं। सारे दिन काम करते हैं। साधारण-सा होटेल है। गरमी वहुत है। ३॥ मील घूमा। पांडव गुफा गया। अच्छा लगा। स्वास्थ्य ठीक रहता तो और भी आनंद आता। शारीरिक शक्ति घट गयी है। घूमने इच्छा तो रहती है पर हाथ-पैर साथ नहीं देते, वेवसी। रमणीक स्थान है। भोपाल के त्रिवेदी परिवार के लोग दो कारों से आए थे। उनसे भेंट हो गयी। उनके साथ घूम सका। संयोग की वात है, मुझे पहचान लिया। खाने पर वुलाया। मेरी तो हुलिया विगड़ी थी, वढ़ी दाढ़ी, थकी सूरत। वक्स की चावी खो चुका था। क्या करता, एक घंटा वनवाने में लगा। चार दिनों वाद हजामत वनायी।

१० मई : सुवह जंगलों में काफी देर घूमता रहा। जवलपुर के दो व्यक्ति थे, उनके साथ टूरिस्ट लॉज गया। वस पूरी भरी थी, मगर जगह मिल गयी। जटाशंकर गया। वहुत ही सुंदर स्थान है। आश्चर्य है कि ऐसी जगहें उपेक्षित क्यों हैं। लोग कश्मीर, मनाली, दार्जि-

लिग जाते हैं, जाड़ों में यहाँ यदि आएँ तो प्रकृति का आनंद उठा सकते हैं, स्वास्थ्य-लाभ भी होगा, खर्च कम। पहाड़ों के बीच में धाराएँ हैं, झरना है। रामायण का अखंड पाठ होता है। इसकी गूँज से मन के टेंशन खुद हट जाते हैं। राम, हनुमान का मंदिर देखा। जुकाम से मुझे थकावट काफी आ गयी थी। ११।। बजे टूरिस्ट बस से महादेवजी के मंदिर पहुँचा। शायद पंचमढ़ी में यह सब से सुंदर स्थली है। स्नान के लिए झरना है। उपेक्षा और ठीक देख-रेख नहीं होने से पानी गंदा सा है। वापस आकर एक पहलवान से अच्छी-तरह मालिश करवायी। स्नान किया, डटकर खाना खाया। फिर बाजार गया। साधारण सा है। तिवारीजी का गरीबी होटल है। १०) रु० चाय, खाना और रहने की जगह के लगे। रात में इंदौर के त्रिवेदीजी आए थे, वे अपने बँगले ले गए। मुझे दवा दी।

पंचमढ़ी-पिपरिया (ट्रेन)

११ मई : रात में नींद आयी थी। जुकाम कम है। शरीर स्वस्थ सा लगा। डा० मेहता (भोपाल) तथा त्रिवेदी जी (इंदौर) से बातचीत करता रहा। ये लोग दो कारें लेकर आये हैं, आराम से हैं। चाय पी। ७।। बजे की बस से पिपरिया के लिये चला। ९ बजे पूगा। सारे दिन और रात तीसरे दर्जे में रेल में रहा। तकलीफ तो पायी ही परंतु एक नया अनुभव हुआ।

जसीडीह

१४ मई : जीभ का स्वाद खराब था। आज सुबह कुंजर किया। व्रत रखा। केवल नींबू पानी लिया। पी० डी० का फोन आया। वे मंगलवार को जसीडीह आ रहे हैं। मुझे रुकने के लिये कहा है। ताऊ जी से भवन के बारे में बात हुई, वे दुखी हैं। नन्दू का फोन आया, कलकत्ते वाले काफी चिंतित हो गये थे। हजारों रुपये खर्च हो गये, मुझे खोजने पर। कितनी परेशानी हुई होगी। बिना बताये इधर-उधर घूमता रहा। गलती मेरी थी, तार नहीं दिया। मन में कैसा सा अनुभव कर रहा हूँ।

१७ मई : आज उपवास का चौथा दिन है। नीबू पानी, थोड़ा-सा बेल का पानी। ऐसा व्रत जीवन में पहली बार किया। आज थोड़ी सी थकावट तो आयी है। परंतु मन प्रसन्न है। दिन में ताऊ जी से बात करता हूँ, रामायण, महाभारत वगैरह पढ़ता हूँ।

१८ मई : आज भी अन्न नहीं खाया। तीन पाव मट्ठा और दूध। एक गिलास बेल का शरबत तथा एक गिलास मतीरे का रस। आधा पपीता भी लिया। तबीयत दुरुस्त है। डेढ़ मील घूमा। भवन गया। रोज वर्षा होती है। 'भारत सावित्री' पढ़ रहा हूँ।

१९ मई : आज सुबह ६ तोला दलिया, शाम को ३ फुलके लिये, तीन पाव मट्ठा और दूध, एक गिलास बेल का शरबत। कलकत्ते जाने का विचार है। पी० डी० नहीं आये।

मुझे अव यात्रा में डर-सा लगता है। कुल ५००) खर्च हुए इस यात्रा में, १५ दिनों में। जसीडीह ८ दिन रहा।

कलकत्ता

२८ मई : भागीरथ जी अस्पताल से आ गये हैं। स्वस्थ एवं खुश हैं। मुझे वहुत संतोष हुआ, एक चिंता मिटी।

१ जून : गंगा स्नान, तेल-मालिश नियमित चल रहा है। 'राह चलते चलते' लोगों को दिया, पसंद किया। रात में मदन का फोन था। मिल मई में घाटे में चली। रुई खराव आ गयी थी। मैं तो अक्टूवर ७४ से सोचता था, वंद हो जायगी। परंतु अभी तक चल रही है। शायद ईश्वर कुछ सहायता करना चाहता है।

बम्बई

४ जून : सुवह ५ वजे वर्षा आ रही थी। वर्ली नहीं गया। शेयरों में कुछ सौदा करने की सोची। गलत वात है। जव तय कर चुका तो क्यों सोचनी चाहिए? तवीयत में सुधार लगती है। मौसम अच्छा है। मिल की हालत वुरी है।

५ जून : तूफान और वर्षा। कल ४०० मल्लाह डूवे। मछेरे रहे होंगे। प्रकृति के प्रकोप से वचना कठिन है। मनुष्य असहाय है। इनके घरवालों पर क्या वीत रही होगी। आज घूमने नहीं जा सका।

८ जून : मडेलिया जी से राजू मिलने गया। २० टन स्टेपल का कोटा मिला। ८०-९० हजार का महीने में फर्क पड़ जायगा। वम्वई में आकर तवीयत ठीक है। विरला जी के रोज जाता हूँ।

१० जून : मदन से मिल के वारे में वात हुई। उसका मन एकदम नहीं है। ऐसा लगता है डूवेगा, राजू भी साथ में। अभी तो शायद कोई और ले लें। यहाँ मिलें खराव चल रही हैं। वहुत सी मिलें घाटा दे रही हैं। हमारी भी घाटा दे रही है।

१४ जून : शाम को जी० डी० ने कहा, मडेलिया जी से मिल लो, शायद तुम्हारा कोटा वढ़ जाय। रात में वीरेंद्र जैन, डाक्टर प्रभाकर श्रोत्रिय सपत्नीक खाने पर आये। भले लगे। 'जमुनोत्तरी' का मेरा लेख प्रकाशित हो गया। खुशी होती है। यदि यात्रा के सुंदर स्थलों में लोग जाया करें तो पैसे की वरवादी कम होगी और इन सुंदर रमणीक स्थलों की आर्थिक प्रगति भी हो सकेगी। मिल की हालत ज्यादा अच्छी नहीं है, फिर भी मेरे आने से काफी फर्क पड़ गया है।

१५ जून : सुवह तुलसी तालाव गया। सव मित्रों से विदा ली। मिल गया। सुवह १०॥ वजे राजू के साथ मंडेलिया जी से मिलने गया था। १५ टन का कोटा वढ़ गया, मन में खुशी हुई। वंबई यात्रा अच्छी रही।

अहमदाबाद

१६ जून : सुबह ६॥ पर स्टेशन पूगा। सामने लोग कार लेकर आये थे। नाश्ता किया ११ वजे भोजन। फिर डेढ़ घंटा सो गया। २। वजे गणेश जी दूगड़ के लड़कों के पास गया। उन्हें समझाया। ३॥ वजे सुखसागर टेक्सटाइल्स गया। आधा घंटा था। ४॥ वजे वाजार गया। सरदार शहर के लोग आये। उन्हें 'राह चलते-चलते' दी। ७॥ वजे नथमल जी सेठिया के साथ ओपेरा सिनेमा गया। भारत में नयी चीज है। ८। वजे उनके घर आया। ९ वजे गणेश जी के घर आया। १०। वजे स्टेशन। जगह आराम से मिल गयी। अहमदावाद की यात्रा अच्छी रही। लक्ष्मी मिल काफी तकलीफ में चल रही है। ये लोग परेशान हैं।

आबू

१८ जून : सुबह मिनी वस से घूमने निकला। ३४ दर्शनीय स्थान देखे। पहले भी आ चुका हूँ। ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण रहा है। जलवायु और प्राकृतिक दृश्य के लिए अच्छी जगह है। अव सरकार भी ध्यान दे रही है। कुछ किताबें ली। आवू पर वहुत कम लिखा गया है। जैनियों के तीर्थ होने के कारण लोग इसे कुछ जानने लगे पर पुराण काल से इस स्थान का महत्व रहा है। इतिहास की कड़ियाँ टूटी-विखरी हैं। इन्हें जोड़ने का काम होना चाहिए। मेरी इच्छा होती है पर इतनी जानकारी नहीं और अव तो वहुत देर हो गयी।

कलकत्ता

२८ जून : सुबह गंगा जी गया। डाक्टर लिल्हा आये। खून जाँचने की वात कहते हैं। पेचिश तो है ही, कमजोरी भी काफी है। विटामिन का इंजेक्शन लिया। पुरानी ऑफिस गया, थक गया। ६ वजे डाक्टर के गया, सलाई ली। ७ वजे एक्सरे कराया। मन खराव सा हो रहा है। नाना प्रकार की चिन्ता लगी हुई है।

२ जुलाई : दिन में २॥। पर वालकृष्ण आया। तानसेन के वारे में विचार-विमर्श कर लेख जंचाया। मांडू और पंचवटी का लेख तैयार हो रहा है। मुझे वीच-वीच में अवसाद सा आ जाता है। खून जाँच के लिए दिया है। इस वार कलकत्ता आकर तवियत खराव रहती है, चक्कर आते हैं।

१६ जुलाई : घूमता हूँ पर गंगा जी जाना वंद है। प्रभुदयाल जी वीमार हैं। उनका रक्तचाप नीचा है। ईश्वर इन्हें जल्द ठीक कर दें। वहुत काम करते हैं, नियम से रहते हैं। मैं दोनों ही नहीं कर पाता, सजा भुगतता हूँ।

२२ जुलाई : सुवह घूमा। फिर गंगाजी गया, मालिश कराया। घर आया। भागीरथ जी के साथ प्रभुदयाल जी के घर गया। कमजोर हैं। दिन में २ वजे राजू के साथ ऑफिस

आया। मिल की हालत संगीन है, शायद बच नहीं पायेगी। भगवान मालिक है। बड़े उत्साह से भाई जी से मिल कर काम किया। उनकी बहुत याद आती है।

जसीडीह

२५ जुलाई : कल आया हूँ। इस बार मन उखड़ा-सा लगता है। ब्लड-प्रेशर ऊँचा है। १९२/१३०। किशोरीलाल जी ढांढनिया के मकान में गया। मौसम अच्छा है, वर्षा हो रही है। सारे दिन पेट दुखता रहा।

२९ जुलाई : पी० डी० कल आये। पहले से स्वस्थ हैं। ताऊ जी के पास बराबर जाता हूँ। तेल मालिश भी कराता हूँ। सारे दिन धमा-चौकड़ी मची रहती है। थोड़ा समय पी० डी० के साथ देता हूँ, भवन भी जाता हूँ। मन एक रकम लगा है। गंगाबाबू का तार है, मुझे कलकत्ता बुलाया है।

३० जुलाई : सुबह ५ व्यक्ति चले गये। ६ दिनों तक रहे। काफी मन लग गया था। सारे दिन ताश खेलते थे। रघुनाथ जी खेतान, गोविन्द जी कानोड़िया, किशन जी सब चले गये। भूख बंद हो गयी, कमजोरी काफी है।

जयपुर-सीकर

६ अगस्त : सुबह कार से चले। नेमा को छोड़ दिया था। रास्ता भूल गये। जयपुर १०॥ बजे पहुँचे। एक होटेल में खाना खाया। कानोड़िया कालेज गया। बहुत अच्छा है। १००० छात्राएँ हैं। ३ बजे 'राजस्थान पत्रिका' में लेख देकर आया। ४ बजे रवाना होकर ६॥ बजे सीकर पूगा। गेस्ट हाउस में ठहरा। खाना अच्छा था।

७ अगस्त : सुबह एक मील घूमा होऊँगा। ९॥ बजे एस० के० सोमानी तथा और लोग आये। ४ बजे तक थे। आरोग्य सदन का काम ठीक लगा। वास्तव में काम अच्छा चल रहा है। १०० रोगी हैं। १०० में ९५ ठीक होकर जाते हैं। खर्च ज्यादा है।

सरदार शहर

९ अगस्त : तुलसी महाराज के १॥ घंटा था। साधारण-सा व्याख्यान था। भीड़ तो बहुत थी। बाहर के लोग भी आये थे। ११ बजे लोगों से मिलकर घर लौटा। खाना खाया, पेट दुखने लगा। किताब पढ़ता रहा। सोहन लाल जी वैद्य आये। कल ज्यादा वैद्यों को सलाह के लिये बुलाया है। पेट कमजोर है, भूख नहीं लगती है।

१० अगस्त : वैद्य लोग आये। १४ वैद्य आये थे। संग्रहणी का पूर्वरूप है, मन में काफी चिंता हुई। सुगनचंद जी वैद्य आये। ९३ वर्ष के भले व्यक्ति हैं। आसन, प्राणायाम करते हैं। अच्छे स्वभाव के हैं। दवा शुरू की।

१३ अगस्त : मन लग गया है। सुबह रानी सती के मंदिर तथा रघुनाथ जी के मंदिर गया। शरीर की कमजोरी है ही, मन की भी। संसार से चित्त हटाना चाहता हूं, नहीं कर पाता। रात में रामायण सुनता हूँ।

२१ अगस्त : वैद्य लोग आये। दवा वदल दी। परंतु कुछ भी हजम नहीं होता, दस्त आते हैं, कमजोरी वढ़ती है। पेट में दर्द रहता है। वजन घट गया है।

२३ अगस्त : अस्पताल में जाकर सलाई ली। दर्द से वुखार हो गया। पेशाव भी तकलीफ से हो रहा है। इलाज में शायद गलती की, वैद्यों की दवा छोड़ दी है।

२७ अगस्त : वजन ६४।। किलो, व्लड प्रेशर १५५/१९० डाक्टर वांठिया की दवा लेता हूँ। लिखना एक प्रकार से वंद है। इतने दिन ऐसे ही वीत गये। २-३ घंटा दिन में ताश खेलने वालों के पास वैठ जाता हूँ। कलकत्ते जाने का मन कर रहा है। वंवई का कोई समाचार नहीं।

७ सितम्वर : कानपुर का तार आया। १७ ता० को पहुँचना है। मुकदमे की सुनवाई है। सारा प्रोग्राम कैंसिल कर रहा हूँ। अभी तक स्वास्थ्य ठीक नहीं हुआ। पेट में दर्द रहता है। वी० एल० टी० यहीं है। दिल्ली से किताबें आ गयीं। लोगों को दे रहा हूँ।

११ सितम्वर : सुवह थोड़ी देर आसन किये। भूख है ही नहीं। पूरण मीमानी के घर किताबें देकर आया। लाइब्रेरी को किताबें दीं। दिन में २ घंटे ताश खेला। कन्हैया-लाल जी दूगड़ आये।

नयी दिल्ली

१४ सितम्वर : मिल की हालत खराव है। रतन लाल जोशी कार लेकर आये। गंगा वावू के साथ एस० एन० मिश्रा के गया। वहीं ४ वजे तक था। खाना खाया, अच्छा खाना मिला। वहुत वात हुई। यहाँ की आवहवा निश्चित रूप से वेहतर है। किताबें पढ़ता रहा।

दिल्ली

१६ सितम्वर : तवीयत सरदार शहर से यहां कुछ अच्छी रही। दिल्ली ४ दिनों का प्रवास अच्छा रहा। एस० एन० मिश्रा, त्यागी जी, मनु भाई, गंगावावू आदि सवों से मिलना हुआ। रात में ९।। वजे कानपुर के लिए रवाना हुआ। वाइफ साथ में थी। स्टेशन पर मुन्नी तथा भगवती आये थे।

कानपुर

१७ सितम्वर : सुवह ६ वजे पूगा। स्टेशन पर विनोद मोदी और संपत आये थे। एल्गिन के गेस्ट हाउस में ठहरा। वहुत से मित्र मिलने आये। ११ वजे कोर्ट गया।

केस की तारीख ३ नवंबर पड़ी। फिर आना होगा। शर्मा जी, निर्मला जी और बागला जी के यहाँ गया था। ३ वजे कालका से रवाना हुआ।

कलकत्ता

१८ सितम्बर : सुवह ९ वजे पूगा। घर आया। इस वार दो महीने में अत्यंत कमजोर हो गया हूँ। शरीर में सलवटें पड़ गयीं। ऐसा लगता है, शायद ठीक नहीं होऊँगा।

२० सितम्बर : अशोक के बुखार है। शेयर वाजार तेज है। वंवई की मिल की हालत खराव है, शायद नवंवर में वंद हो जाय। गोदाम की लिखा-पढ़ी नहीं हो पा रही है। राजू से फ़ोन पर वात हुई। कलकत्ते की आवोहवा अच्छी है।

२१ सितम्वर : रविवार से गंगा जी जाता हूँ। पानी गंदा है। परंतु कुछ तैरना शुरू किया है। आज ऑफिस आया। जयपुर के खजाने पर लेख लिखाया। कुछ पत्र भी लिखाये। रात में पीठ में दर्द होकर नींद खराव हो जाती है। अशोक के बुखार है।

२७ सितम्वर : पीठ में दर्द के कारण काफी तकलीफ है। वहुत दर्द होता है। बेचैनी होती है। वहुत वार मन में आता है कि ऐसे जीवन को खत्म हो जाना चाहिए। ८॥ बजे वेलेव्यू में एक्सरे लिया, ६०) रु० लगे। १० वजे घर आया। १२ वजे तक नींद आ गयी।

३ अक्टूबर : दिल्ली से विरजू का फोन आया। मिल एम० एल० टी० के साथ में ले रहा है। राजू को छोड़ रहा है। रुपये सव फंस गये हैं। गलती मेरी थी। मैंने किसी की सलाह नहीं ली। शाम को ६ वजे 'राजलक्ष्मी' देखा, अच्छा था।

बम्बई

४ अक्टूबर : सुवह देर से उठा। मन खराव था। शरीर में कमजोरी वढ़ती जा रही है। चक्कर आते हैं। १० वजे मुन्ना के घर गया। १०॥ पर एयर पोर्ट पूगा। वंवई के लिये रवाना हुआ। एन० एल० टी० साथ है। २१ वर्ष पहले भाई जी के साथ मिल खरीदने वंवई गया था। मन में उत्साह था। आज छोड़ने जा रहा हूँ। एकदम जी खराव है। फिर भी, झमेले से तो वच जाऊँगा। एन० एल० टी० के रुपये मेरे कारण से मिल में चले गये। वंद हो जाती तो अच्छा रहता।

८ अक्टूबर : एन० एल० टी० और मैं मिल छोड़ने को आये हैं। विरजू का मन है। आज से २१ वर्ष पहले खरीदने को आये थे। आज इतना घाटा खाकर छोड़ रहे हैं। मन में दुख तो होता है। जो हो, फिर भी मिल घर में रहती है। उधर आती दफे मारूजी से मिलने गया, मैदान भी गया।

९ अक्टूबर : राजू ने भाभी से मिल के वारे में वात की। उनका पूरा मन वेच देने का है। तवीयत वहुत सुस्त है।

११ अक्तूबर : सुवह ८ बजे बंबई अस्पताल में भरती हो गया। डाक्टर लोग आये। खून वगैरह मिलाया। मन में थोड़ी उदासी सी हुई। बहुत दिनों से बीमार था। कुछ ठीक हो जाऊँगा। रात में नींद की दवा दे दी गयी।

१२ अक्तूबर : आज दूसरा दिन है। कमजोरी काफी है। लोग मिलने आ रहे हैं। यहां आना ठीक हुआ। इलाज हो जायगा। सरदार शहर में इलाज गड़वड़ हो गया था।

१३ अक्तूबर : ५ घंटे तक ऊपर का खून दिया। २ नवंबर को कानपुर का टिकट कराया, भूख एकदम कम लगती है। शाम को थोड़ी देर मैदान गया। एस० एन० टी० दिल्ली से आया वी० एल० टी० यहीं हैं। मिल लेने की वात कर रहे हैं।

२१ अक्तूबर : आज दीपावली है। मन में काफी चिंतित हूँ। बंबई में मन नहीं लग रहा है। कपड़े का वाजार मंदा है। ऐसा लगता है कि शरीर थकता जा रहा है। चक्कर आते हैं। किसी तरह यहाँ से चला जाऊँ।

२७ अक्तूबर : सुवह मैदान गया। तवीयत सुधार पर है। ९ वजे डाक्टर मोदी आये। किडनी खराव वताया। वहुत सी दवा दी। गंगा वावू के साथ परमानंद जी के जीमने गया। ४।। वजे आया। आज ६ पत्र दिये।

२८ अक्तूबर : मदन आया। काफी उदास था। रुपयों की व्यवस्था नहीं हो पायी। राजू का मन भी खराव रहता है। कैसी आफतें आ गयी हैं। दिन में ४ वजे गंगा वावू आये, परमानंद जी आये। शाम को अश्विनी कानोड़िया, मदन आये। शेयर वाजार मंदा होगा। अभी मुझे २०,०००) का घाटा रह गया है।

२९ अक्तूबर : १२।। वजे राजू के साथ जसलोक हॉस्पिटल गया। डाक्टर मनी ने एक घंटे तक जाँच की। कल खून वगैरह लेंगे। १।।। वजे पर घर आया। थोड़ा सा खाना खाया। तवीयत थोड़ी सुधार पर है।

१ नवम्बर : सुवह मैदान नहीं गया। रात में थकावट सी आ गयी थी। इस वार वीमारी ने मुझे जकड़ लिया। विरजू कलकत्ते से आया है। मिल शायद १० को वंद हो जायगी।

२ नवम्बर : सुवह ९ वजे डाक्टर आये। कमजोरी तो है ही। थोड़ा वदन भी गरम है। कफ में ललाई आती है। भूख वंद है। मैदान गया था। दिन में ५-६ वार दस्त आये। रात में जी घवरा कर उल्टी होने को हुई। दवा ली, व्लडप्रेशर १९०/१०० है, वुखार ९९.६, व्लड प्रेशर तो ठीक है, पर युरिया वढ़ी है।

५ नवम्बर : कफ में खून आ रहा है। चिंता तो है ही। रात में १२ वजे नींद आ जाती है। दवा लेकर सोता हूँ। कलकत्ते के फोन आते हैं। मन, शरीर दोनों खराव

हैं। क्या करूँ, कुछ सूझता नहीं। रमा-राजू वहुत सेवा करते हैं। रमा के पिता जी आये। उन्हें मिल की सारी स्थिति वता दी।

९ नवम्बर : सुवह तैयार हुआ, ८॥ जसलोक में भरती हो गया। डाक्टर मनी ने देखा। किडनी खराव होकर युरिया वढ़ गयी है। भूख एकदम वन्द है। शरीर में सूजन है। सांस लेने में तकलीफ होती है। दवा दी, पानी कम कर दिया, थोड़ा निकाला भी। अच्छा हुआ, अस्पताल में आ गया। दवा एक प्रकार से वंद है। वंदोवस्त ठीक है।

१२ नवम्बर : इलाज का एक्सपेरिमेंट हो रहा है। अभी तक दवा खास शुरू नहीं की। एक्सरे उतार रहे हैं। काफी खर्च का काम है। मन में हर प्रकार की चिंता है। राजू का मिल में जाना वंद हो गया।

१३ नवम्बर : आज एक प्रकार से एकजामिन हुआ। कुछ इंप्रूवमेंट मालूम देता है। मेरी गफलत से वीमारी इतनी वढ़ गयी। अव तो हर प्रकार से मुश्किल है। अश्विनी कानोड़िया से मिल की वात की।

१४ नवम्बर : आज किडनी का आपरेशन हुआ, मुझे वेहोश करके। २-३ दिनों में पता चलेगा कि कितनी खरावी है। वजन ४ किलो घटा है। मन में खास उदासी नहीं।

१५ नवम्बर : एस० एन० टी० और एन० एल० टी० आये हैं। मिल का काम अभी तक सलटा नहीं है। मन में चिंता लग रही है। परमात्मा करें, सलट जाये। नन्दू वगैरह सव तरह से राजी हैं। मिलने वाले आते हैं। पेशाव के रास्ते नली लगाकर इलाज होता है। लिखना-पढ़ना वंद है।

१६ नवम्बर : भूख वहुत कम है, पानी कम देते हैं। सारे दिन दस्त नहीं लगा। लोग मिलने आते हैं। रात में दवा से नींद आती है। पढ़ने में मन नहीं लगता। डाक्टर कहते हैं, किडनी काफी खराव हो गयी है।

१७ नवम्बर : पहले से मन खुश है। परंतु दस्त तकलीफ से लगा। लिखना-पढ़ना नहीं होता है। एस० एन० टी०, राजू, मदन, नन्दू, सव आये। मिल विरजू से भी चलेगी नहीं। घाटा लग जायगा। हालत खराव है। वहुत से लोग मिलने आए। वजन ९ किलो घट गया है। कमजोरी है। पेशाव नली से आती है। शायद ५-४ दिन और लगेंगे।

१८ नवम्बर : एक हाथ में ऑपरेशन और होगा। मिल २-४ दिनों में लोग संभाल लेंगे। राजू खुश है। नन्दू कहता है, उसको यहाँ रुपये भेज देंगे तो वह कुछ काम शुरू कर देगा। मदन, विरजू आए, मिल में घाटा लगता जा रहा है। एस० पी० जैन आए थे, एक घंटा थे। इस वार वंवई में आकर मेरी किडनी का इलाज शुरू हुआ। मन में उदासी तो आ गयी। जीवन लिमिटेड हो गया। परंतु मिल की चिंता मिट गयी। मदन वहुत सुस्त है। राजू रंग का काम वढ़ा रहा है।

१९ नवम्बर : ८ पत्र लिखे। मन में खुशी है। आज ओम आ रहा है। मिल उन्होंने एक प्रकार से ले ली है। मेरे मन में खुशी है। परमात्मा ने राजू की परेशानी और इज्जत बचा ली। २ बजे वजन हुआ, ६४॥ केजी है। कल मेरा ऑपरेशन होगा। थोड़ा सा डर मन में है। ओम और कुसुम आए हैं।

२० नवम्बर : सुवह से ऑपरेशन की तैयारी रही। ९॥ वजे ऊपर गया। ११ वजे फिरती आया। लोकल इंजेक्शन देकर हुआ। परंतु सारे दिन दर्द रहा। लोग मिलने आते रहे। रात में दो घंटे नींद आयी।

२१ नवम्बर : दर्द है। सारे दिन दस्त नहीं लगा। वेचैनी रही। दिन में एक घंटा सोया था। वी० एल० टी०, एम० एल० टी०, महावीर सब आए थे। मन खुश है। श्री शुभकरणजी और अश्विनी कानोड़िया, नागरमल जी सर्राफ तथा और लोग आए। रात में ८ वजे सोया, सुवह देर तक सोता रहा। पानी ज्यादा पी लिया।

२२ नवम्बर : दोनों डॉक्टर कहते हैं कि इलाज हो गया। अव दो दिनों में जा सकते हो। मन प्रसन्न है। लोग आते रहे। दिन में सोया। शुक्रवार को जाने का तय रहा। हाथ का पट्टा खोल दिया गया। मिलों की हालत शायद कुछ सुधर जायगी। शाम को विरजू, मदन आए थे। उनका मन एकदम साफ है, मेरा भी।

२३ नवम्बर : आज डॉक्टर ने छुट्टी दे दी है। ६,२००) रु० लगे। इलाज तो हो गया, परंतु दोनों किडनी खराव हो गयी। जीवन एकदम सीमित हो गया। कल यहाँ से घर चला जाऊँगा। सोचता हूँ, प्रकृति जब मेरा साथ छोड़ चुकी है तो इलाज कितना कर पायेगी। मिल बहुत जोर खो रही है। रात में हाथ में दर्द रहा, नींद की गोली ली।

२४ नवम्बर : सुवह दस्त नहीं लगा। ५-४ दिनों से यह शिकायत मुझे है। काफी तकलीफ होती है। घर जाने की तैयारी में रहा। अस्पताल से छुट्टी मिली। १५ दिनों तक नन्दू की माँ ने बहुत मेहनत की। ११ वजे घर आया। मन में बहुत खुशी हुई। चैन मिला। अच्छा खाना खाया। शाम को घूमने गया, वगीचे में जाकर बैठ गया। मन में विचार आते रहे। जो हुआ सो हुआ, आगे ठीक रहे। मैंने कभी अपने वारे में नहीं सोचा। आगे से सावधान रहना है, पर आदत मेरी विगड़ गयी है।

२५ नवम्बर : सुवह नन्दू के साथ वगीचे गया। लोगों से मिला। मन में खुशी हुई। कमजोरी है ही परंतु चक्कर नहीं आते। खाना-पीना बहुत रेस्ट्रिक्टेड देते हैं। भूख थोड़ी लगती है। रमा-राजू ने बहुत मेहनत की। १ वजे राजू की नयी ऑफिस में गया। अच्छी वनी है। विरजू, मदन आए थे। मिल जोरों से घाटा कर रही है। शाम को सुधा, उषा और वच्चे आए।

बम्बई-कलकत्ता

२६ नवम्बर : सुबह मैदान गया। लोगों से छुट्टी ली। बड़ा प्रेम करते हैं। १२॥ बजे हवाई अड्डे सब के साथ गया। बंबई से मन में उदासी लेकर जा रहा हूँ। मिल की, राजू के अकाउंट की चिंता रहती है। जीवन में बहुत कुछ किया, सब व्यर्थ गया। अगर अक्टूबर ७४ में रुपए नहीं देता तो अपने आप ही मिल की झंझट मिट जाती। ५ बजे कलकत्ता पूगा। एयरपोर्ट पर शांतिलाल, एस० एन० टी०, सब बच्चे आये थे। ६ बजे घर आया। शाम को घर के सब मिलने आए। बच्चे भी, बड़े भी।

कलकत्ता

२९ नवम्बर : रात में नींद आ जाती है, नींद की गोली लेता हूँ। दिन में थोड़ी देर के लिए आदमी के सहारे नीचे जाता हूँ, बंबई की मिल काफी घाटा कर रही है। शायद, बिरजू को भी घाटा खाकर बंद कर देनी पड़े। राजू का इस्तीफा अभी तक मंजूर नहीं किया गया है।

३० नवम्बर : डॉ० मदन और लिल्हा का इलाज चल रहा है। मन में काफी सुस्ती और कमजोरी है। चिंता है ही, ऐसी बीमारी मुझे आज तक नहीं हुई थी। मेरी अनियमितताओं का फल भुगत रहा हूँ। जीवन को छोटा कर दिया। घर वाले भी सब चिंतित हैं।

१ दिसम्बर : यूरिया ७८ है। शाम को बहुत कमजोरी आ गयी। सब घर वाले थे। मन कैसा ही हो गया। सुबह मैदान गया था। चल फिर नहीं सकता। पढ़ने में भी मन नहीं लगता।

२ दिसम्बर : आज सचमुच बीमारी ने अपना रूप दिखाया। शाम तक तबीयत ठीक थी, फिर भी अचानक खराब हो गयी।

५ दिसम्बर : दवा के साथ एक आयुर्वेदिक अर्क लेना शुरू किया है। लिखना बंद है। पढ़ने में भी कमजोरी मालूम देती है। बीमारी कड़ी है। देखें क्या होगा।

७ दिसम्बर : दोनों समय मैदान जा कर बैठता हूँ। चक्कर आते हैं। मन में कमजोरी है। बाजार समान है। जी खराब रहता है। नन्दू भी बीमार है। बेला की सगाई की बात चल रही है। शायद राजगढ़िया के हो जाय।

१० दिसम्बर : दस्त आते नहीं। डूश लेकर पेट साफ करता हूँ। आज ४ बार लिए। डॉक्टर रोज आते हैं, सूई देते हैं परंतु शरीर कमजोर होता जा रहा है। मैं घूम फिर नहीं सकता हूँ।

११ दिसम्बर : जी० डी० बिरला का फोन बंबई से आया, बाहर जा रहे हैं। शाम को ४ बजे डॉक्टर रायवागे के पास कलकत्ता हास्पिटल में गया। उन्होंने देखकर कहा, शायद

डायलेसिस देनी होगी। मन में थोड़ी चिंता हुई। वेलेव्यू गया, खून दिया, १९२) रु० लगे। भूख नहीं थी। वजन २ किलो घट गया।

१५ दिसम्बर : गर्ग आता है, पर लिखने-पढ़ने का काम मुझसे नहीं हो पाता। खाना बंद सा ही है। डॉक्टर रायबागे ने अस्पताल में भरती होने की सलाह दी है। कुछ जँची नहीं।

१६ दिसम्बर : तबीयत एक दम बिगड़ती जा रही है। वेलोर जाने की सोचता हूँ। वहाँ का एक डॉक्टर आया। उसने कहा, शरीर में नमक ज्यादा हो गया। मन में ऊहापोह है। आज ऑफिस गया था।

बम्बई

१९ दिसम्बर : सुबह मैदान नहीं गया। दिन में घर में था। अचानक बंबई जाने का विचार कर लिया, शाम को एयर बस से। साथ में बी० एल० टी० था। १० बजे रात बंबई पूगा।

२० दिसम्बर : डॉक्टर लोग आए। दिन में लोग मिलने आते रहते हैं। यहाँ आकर ठीक किया, मन में कुछ अच्छा लगा। १॥ बजे जसलोक अस्पताल आए। कल से दवा शुरू करेंगे।

२१ दिसम्बर : सुबह उठा। थकावट तो थी ही। डॉक्टर कुरुविला आए। कहा, तुरंत सॉल्ट देना चाहिए। रात में 'काम्पोज' नहीं ली।

२३ दिसम्बर : जी० डी० बिरला आए। मेरी तबीयत वैसे ठीक है।

२४ दिसम्बर : गंगा बाबू अस्पताल में मुझसे मिलने दोनों टाइम आए। काफी देर तक थे। परमानंद जी आए। १२ महीने बाद शेयरों का सौदा किया।

२६ दिसम्बर : आज अमरिका से, मरे आदमी की किडनी यहाँ बदली जा रही हैं, दो आदमियों पर। एक प्रकार से नया प्रयोग है। मन में खुशी हुई।

२८ दिसम्बर : आज जसलोक से छुट्टी लेकर घर आया। मन में खुशी हुई।

३० दिसम्बर : कमजोरी बढ़ती जा रही है। चक्कर आते हैं। किसी भी समय गिर सकता हूँ। डायरी भी नहीं लिखी जाती।

३१ दिसम्बर : घर पर हूँ। इतनी कमजोरी आ गयी है, जितनी कभी नहीं थी। ऐसा लगता है, चक्कर खा कर गिर जाऊँगा। बिरजू-मदन आए। कलकत्ते का फोन आता रहता है। डॉक्टर को दिखाने गया, फिर भरती होना पड़ेगा।

१९७७

बम्बई

१ जनवरी : आज नया दिन है परंतु मेरे लिए तो संकटमय। किडनी दोनों खराब। वजन एक वर्ष में दस किलो घट गया। शरीर थक कर कैसा ही हो गया। पिछले वर्ष मैंने बहुत गलतियाँ की, उनका फल भोग रहा हूँ। अगर पहले चेत पाता तो किडनी की तकलीफ नहीं होती। अब तो जीवन भार-स्वरूप हो गया है। अस्पताल में भर्ती होऊँगा।

२ जनवरी : दिन में २। बजे चार-पाँच मित्र ताश खेलने आए, ५।। बजे तक थे। मन लग गया। कमजोरी बहुत है, चक्कर आते हैं। कल अस्पताल में भरती होने का रखा है। खाने में रुचि नहीं है। कलकत्ते का फोन आया, बेला की सगाई राजगढ़िया के हो गयी। मन में बहुत दिनों से चिंता थी, मिट गयी। उन्नीस वर्षों की हो गयी। ईश्वर उसे सुखी रखें।

३ जनवरी : सुबह जल्दी से तैयार हुआ। सात-आठ पत्र लिखे। ८ बजे जसलोक अस्पताल आ गया। बहुत कमजोरी है। डॉक्टर आए। दो बोतल सलाइन वाटर दिया। पता चलेगा, डायलेसिस देना होगा या नहीं। बिरजू, मदन रोज आते हैं। रात में ९ बजे सो गया था। इसलिए बीच-बीच में जागता रहा। पेट खराब हो रहा है। अस्पताल में आने से थोड़ी आशा बंधी।

४ जनवरी : सुबह ६ बजे उठा। इससे पहले 'मृत्युंजय' पढ़ता रहा। चाय पी। आज ज्यादा दस्त नहीं आए। ९।। बजे नाश्ता कुछ ज्यादा कर लिया। ९।।। से ५।। बजे तक नमकीन पानी तीन बोतल दिया गया। शाम को बिरजू, मदन आए। भागीरथ जी का पत्र आया। चक्कर कम आते हैं। डायरी लिखी, रात नींद नहीं आयी, हिचकी आती रही।

५ जनवरी : कल सारी रात जागता रहा। आज दिन में थोड़ा सोया। परमानन्द जी केजड़ीवाल आए थे। राजू का काम ठीक चल रहा है। ऐसा लगता है, जमा लेगा।

६ जनवरी : सुबह दो घंटे सोया, रात में पाँच घंटे जागता रहा। बड़ा कष्टदायी लगता है। भूख फिर कम है, खाने में परिवर्तन किया। मिलने वाले लोग आते रहे। बात कुछ ज्यादा करता हूँ। शायद पाँच-सात दिन अस्पताल में रहना पड़ेगा। ४ पत्र लिखे, डायरी लिखी।

७ जनवरी : सुबह ७॥ बजे उठा। कब्ज से पेट भारी सा लगता है। मल निकलता नहीं। खाना गरिष्ट खा लिया बदहजमी हो गयी। रात में सूप लिया। शाम को नन्दू तथा बेला के भावी पति, उसके पिता, आदि मिलने आए। लड़का स्मार्ट लगता है। बिरजू, मदन रोज आते हैं। मिल खराब चल रही है। रात में सोचता रहा। रात में सिर्फ ३ घंटे नींद आयी।

८ जनवरी : आज कलकत्तेवालों के यहाँ फल भेजा। वे लोग शाम को मदन के जीमे। सब बोस आदमी हो गए। मेरी तबीयत कुछ सुस्त होती जा रही है। कल की अस्पताल से छुट्टी ली, घर जाऊँगा। भूख एकदम बंद हो गयी है। पत्रों का जवाब दिया। जिस प्रकार का जीवन है, उसमें मजा नहीं है। जसीडीह, बनारस जाने का मन होता है।

१० जनवरी : नन्दू आज चला गया। तीन दिनों तक अच्छी चहल-पहल रही। मेरे स्वास्थ्य में कमी आयी है। चलना-फिरना नहीं हो सकता। चक्कर आ जाते हैं। पत्रों का जवाब भी नहीं लिखा पाता। वजन भी घटा है। भूख है ही नहीं, जबरन कुछ खा लेता हूँ। कैसी जिंदगी है। डॉ० मणि आ गए हैं। वे दो एक दिन में बतायेंगे कि क्या करना होगा। रात में बिना गोली के नींद आयी।

११ ज़नवरी : पिछले तीन दिनों से तबीयत गिरती जा रही है। चक्कर आते हैं। ब्लड प्रेशर नीचा है। एम० पी० आए थे। शायद जिया जी राव की मीटिंग रखेंगे। सारे दिन 'मनोहर कहानियाँ' पढ़ता रहा।

१२ जनवरी : जसलोक आ गया। ब्लड शुगर ११२ था, यानी ठीक है। भूख लगने लगी। घर से आलू चॉप आया, वह खाया। रींगस वाले अग्रवाल जी आए। और भी लोग आते रहते हैं। रात में ८ घंटे नींद आयी, एक गोली खा ली थी। हिचकी आनी बंद हुई।

१३ जनवरी : खून लिया गया, तबीयत ठीक है। परंतु चलने में चक्कर अभी भी आते हैं। दो दिनों में घर जाऊँगा। हिचकी फिर आ रही है। मन में शांति है। भागीरथ जी को पत्र लिखा। रात में ८॥ बजे सोया, २ बजे उठ गया। ५ पत्र लिखे, वैद्यों को। शाम को हलुआ और लड्डू खाया था, बदहजमी नहीं हुई। सूप दोनों समय लेता हूँ। सुशीला जी सिंघी आयीं।

१४ जनवरी : डॉक्टर ने कह दिया है घर जा सकता हूँ, डायलेसिस की दरकार नहीं है। एक बार तो चिंता मिटी। परंतु यह नहीं कहा कि किसी भी समय जरूरत हो सकती है। शाम को एस० पी० जैन आए थे।

१५ जनवरी : रात में केवल चार घंटे सोया, नींद उड़ गयी। सुबह ५ बजे उठा। एक पत्र 'विश्वमित्र' को लिखा। जसलोक से १०॥ बजे घर आया, डायरी लिखी। दो चार पत्र और भी लिखे। मारुजी को फोन किया। ४ बजे परमानन्द जी आए। उनके साथ बगीचे गए। एक घंटा बैठा। अच्छा लगा।

१६ जनवरी : दिन में ३ बजे जी० डी० बिरला से मिलने गया। इससे पहले मदन आया था। मिल की हालत खराब है। घाटा लगता जा रहा है। प्रॉविडेन्ड फण्ड वाले केस करेंगे। वह दिल्ली जा रहा है।

१७ जनवरी : सुबह मैदान गया। दोस्तों को खुशी हुई। चलने-फिरने में थकावट आ जाती है। घर आकर मालिश करवायी, स्नान किया। १ बजे खाना खाया। २ बजे से ७ बजे तक नींद आती रही। कमजोरी की गैल है। दो-चार पत्र आए। खास पढ़ना नहीं हो पाता। शरीर कमजोर होता जा रहा है। बेला, शारदा २० तारीख को आ रही हैं। दोपहर में मारु जी के टीके में गया था। काफी लोगों से मिलना हुआ।

१८ जनवरी : सुबह घूमने नहीं गया। रात नींद खूब आयी। परंतु बुरे सपने आते हैं। कमजोरी है ही। १०॥। तक सोया। कल से गिडिनेस आती है। ११। बजे जसलोक गया। डॉक्टर कहते हैं, उसी तरह है। घर आकर डायरी लिखी, पाँच पत्र भी लिखे।

१९ जनवरी : काशी जाकर अंतिम समय में रहने का मन होता है। अगर किडनी के लिए कोई खास व्यवस्था नहीं करनी है तो ठीक है, नहीं तो वहाँ डायलेसिस का पता चलायेंगे। डायलेसिस से न जाने क्यों डरता हूँ। परंतु आज जो हालत है वह भी चल नहीं पायगी। न भूख है, न रुचि और न शान्ति है।

२० जनवरी : राजू के साथ सुबह मैदान गया। वापिस आकर एस० पी० जैन के गया। थकावट काफी है। चेहरे पर और पैरों में सूजन आ जाती है। छः पत्र लिखे। शारदा, बेला रात में ११ बजे कलकत्ते से आ गयीं। मन में खुशी सी हुई। रात में रोज टी० वी० देखता हूँ। समय कट जाता है, मन भी बहलता है। दो किताबें डॉक्टर को भेजीं।

२१ जनवरी : मारुजी के गीतों की व्यवस्था थी। ३॥ बजे जी० डी० बिरला के गया, वहाँ से मारु जी के ५॥। तक था। देश में राजनीतिक हलचल बढ़ रही है, ऐसी खबरें हैं। लोगों में असन्तोष तो है ही। डॉक्टर के पास ११। बजे गया था। उसने दवा में कुछ हेरफेर किया है। पानी, नमक कम कर दिया है। चेहरे पर सूजन है।

२२ जनवरी : शरीर गिरता जा रहा है। पहले केवल रिटायर करने की इच्छा होती थी, अब संसार से जाने की इच्छा होती है। क्या फायदा ऐसे जीवन से? रोज तेल मालिश

हो रही है, इलाज भी चल रहा है। ज्यादा पढ़ नहीं पाता। कभी-कभी मन में आता है वैद्य जी का काढ़ा शुरू कर दूँ। परंतु वाइफ विरोध कर रही है। नींद आठ-दस घंटे आ जाती है परंतु आज जो हालत है वह तो ज्यादा नहीं चलेगी। १०० स्टैंडर्ड शेयर वेचे।

२४ जनवरी : दिन में १२ वजे वालकृष्ण आया। मन लग जायगा। कुछ लिखना-पढ़ना हो जायगा। पत्र लिखवाए। कल शिव शर्मा वैद्य को वुलाया है। तवीयत सुस्त होती जा रही है। चलने-फिरने में चक्कर आते हैं। भूख है नहीं, काम में रुचि नहीं। ऐसा चलता रहा तो शायद ही एक दो वर्ष निकाल सकूँ। डायलेसिस लेने की सोच रहा हूँ। जव तक प्राण है, ठीक से रह सकूँ।

२५ जनवरी : शिव शर्मा वैद्य की दवा शुरू की। वेला, शारदा आयी हुई हैं और नन्दू भी। मन में संतोष है। वालकृष्ण आया, दिन में १२ वजे से ७ वजे तक उससे काम कराया। काफी थकावट आ जाती है। जीमने के वाद प्रायः चार घंटे सोता रहा। एक तरह का गैल सा रहता है। शरीर में कमजोरी है। वाहर वहुत कम जाता हूँ। शाम को दो शादियों में गया। ८ वजे घर लौट आया। थोड़ी थकावट आ गयी थी। सुशीला जी सिंघी आयी थीं। चार घंटे रहीं। अस्पताल गया था। डॉक्टर वैसा ही वतलाते हैं। आठ पत्र लिखाए। गर्ग के आने से शायद कुछ काम हो।

२६ जनवरी : आज ६७ वर्ष पूरे हो गए। एक प्रकार लम्वा समय हो गया। जो कुछ किया, उनमें से कुछ वातों को छोड़ कर मन में संतोष है। १० वर्ष पार्लियामेंट में रहा। कानपुर का मेयर भी वना। वी० आई० सी० का मैनेजिंग डायरेक्टर रहा। जितनी सेवा वनी, करता रहा। सार्वजनिक संस्थाओं में भी रह कर काम किया। गरीवी से उठ कर संपन्न वना। वच्चे भी इज्जत करते हैं। लड़की में यद्यपि दुख पड़ गया परंतु सम्पन्न हो गयी। आज वह लगभग करोड़पति है। नन्दू, शारदा दोनों का स्वभाव अच्छा है। वेला को अच्छा सम्वन्ध मिल गया। एक पोता, अशोक, वह पढ़ने में काफी होशियार है। भाई लोग सव मजे में हैं। भरा-पूरा परिवार है। अव मैं चला जाऊँ तो मन में फ़िकर नहीं।

२७ जनवरी : गर्ग नयी किताव की तैयारी कर रहा है। उसके साथ दिन में भारतीय विद्या भवन गए, किताव ले आए। थोड़े चक्कर तो आते हैं। वी० एल० टी० और ओम दोनों यहीं हैं। मिल जोरों से घाटा कर रही है। मदन रोज आता है, वहुत सुस्त है। राजू का काम ठीक से चल रहा है।

२९ जनवरी : डॉक्टर के पास ११ वजे एन० एल० टी० के साथ गया। उसने कुछ ठीक वताया। सूजन घटी है। नमक देना शुरू किया। वैद्य जी का आसव लेना शुरू किया। अभी तक भूख नहीं लग रही है। वाहर वहुत कम जाता हूँ। रात में नींद आ जाती है।

वैद्य जी शिव शर्मा का इलाज चालू है। शायद कुछ फायदा भी है। माला फेरना शुरू किया है।

३० जनवरी : सुवह मैदान गया। काफी थकावट सी लगी। घर आया, तेल मालिश कराया। दिन में गर्ग से कई पत्र लिखाए। अकोला के भरतियाजी आए थे। ताश खेलने के लिए पाँच-छः मित्र आए, ५ वजे तक थे। तवीयत कुछ सुधार पर है। शायद डायलेसिस नहीं लेनी पड़े।

३१ जनवरी : सारे दिन घर में था। शाम को परमानन्द जी आए; बहुत देर तक थे। कुछ राजनीतिक चर्चा रही। अव इस ओर मेरी रुचि कम होती है। पहले के से लोग रहे नहीं। आपस में एकमत नहीं। देश का क्या भला होगा ? आज कुछ भूख लगी। दो डोसे खा लिए। कुछ लिखना-पढ़ना भी हुआ। तबीयत शायद वैद्य जी की दवा से ठीक है। दिन में सुशीला जी सिंघी आयी थीं। शाम को वी० एल० टी०, ओम और मदन आए। रात में राजीव गोयनका, उषा खाने पर आए। शाम को थोड़ा सा खाया। नमक का पानी परसों से लेना शुरू किया है।

१ फरवरी : सुवह नाश्ता किया फिर तेल मालिश। १० वजे राजू की ऑफिस गया। बहुत अच्छी जँचाई है, जी खुश हो गया। १०॥ वजे से ११ वजे तक जसलोक में था। डॉक्टर ने देखा। वी० पी० ऊँचा था। आज भूख वढ़ी, कुछ ताकत भी मालूम देती है। दिन में गर्ग से रूस और स्वीडेन को संक्षिप्त रूप देने के वारे में वात हुई। चित्त में कुछ खुशी है। शायद वैद्यजी के इलाज का प्रभाव है। ९ ता० की शाम को कलकत्ता जाने की सोच रहा हूँ। दिन में सोया नहीं। एन० एल० टी० शारदा दिल्ली गए। वेला कलकत्ते गयी। 'मेरा संघर्ष मेरा कलकत्ता' की तैयारी कर रहा हूँ। शेयर वाजार तेज है।

४ फरवरी : दिन में डॉ० गौड़ से अपॉयन्टमेन्ट किया। शाम को बंबई अस्पताल जाकर सलाई ली। तकलीफ तो नहीं हुई, परंतु रात में बुखार आ गया, काफी कंपकपी हुई। कई कपड़े ओढ़े। मन में चिंता हुई। अस्पताल में काफी चक्कर आ रहे थे। जगजीवन राम जी ने कांग्रेस छोड़ दी। कांग्रेस टूट गयी, स्वार्थ और आपसी फूट से। जनता भी परेशान है। इन्दिरा जी का प्रभाव संजय की वजह से वहुत घट गया है। परंतु अभी भी कांग्रेस-विरोधी फ्रंट पर लोगों में भरोसा नहीं है। जगजीवन वाबू अलग रहेंगे या साथ देंगे, पता नहीं। शेयरों के भाव घट गए हैं। इन पंद्रह दिनों में मेरा वजन ४ किलो वढ़ा है।

५ फरवरी : थोड़ा वुखार है, शायद सलाई के कारण। कमजोरी शरीर में है ही। मैंने थोड़ा सा शेयरों का सौदा कर रखा है। गलती की है। परमानन्द जी से रोज फोन पर वात होती है। रामनारायणजी मोर के भांजे आए थे, और भी लोग मिलने आते हैं। संकट के दिन हैं, भगवान पार लगायगा।

६ फरवरी : घर में ही रहता हूँ। दिन में पाँच-चार दोस्त आए थे। शरीर में काफी थकावट है। गिरा-गिरा सा रहता है। भूख वंद हो गयी। वाथरूम तक भी विना पकड़े जा नहीं सकता। वैद्य लोग आए, उनकी दवा लेता हूँ। रात में दस, साढ़े दस वजे सो जाता हूँ। हाथ-पैरों में सूजन है। तेल मालिश रोज कराता हूँ।

७ फरवरी : सुवह १० वजे जसलोक में गया। थकावट वहुत थी। डॉ० मनि ने देखा। अस्पताल में भरती होने का कहा, डायलेसेस लेना होगा। मन में कमजोरी महसूस कर रहा हूँ। वालकृष्ण से कुछ वातें करता रहा। यूरोप यात्रा की पुस्तक ठीक कर रहा है। नए आंकड़े देने होंगे। शरीर थकता है, वजन घट रहा है, सूजन वढ़ रही है। घर वालों को चिंता है। परमात्मा क्या करेगा, पता नहीं।

८ फरवरी : कल जसलोक में जाने का तय रखा है। शरीर में सूजन है, कमजोरी हद से ज्यादा। भूख नहीं है, पानी वहुत कम पीता हूँ।

९ फरवरी : सुवह जोर से चक्कर आ रहे थे। कमजोरी वहुत थी। ८ वजे थोड़ा सा नाश्ता किया। ११॥ वजे जसलोक में आया। डायलेसेस लेना पड़ेगा। मन में अनेक प्रकार की चिन्ता हो रही है। लाइफ तो एक प्रकार से आधी हो गयी। दिन भर में पानी केवल तीन पाव पीने को मिलता है। वैद्य की दवा वंद कर दी। वालकृष्ण गर्ग सारे दिन पास में रहता है।

१० फरवरी : जसलोक में आ गए। कल डायलेसेस लूँगा, डर लग रहा है, मरने से नहीं। पता नहीं कैसा रहेगा। जीवन में नया मोड़ आ गया। हर दूसरे दिन (तीन वार सप्ताह में) सात घंटे वैठा रहना पड़ेगा। खर्च भी काफी है। चित्त उदास है। विरजू, मदन सव आये। एस० एन० टी०, एन० एल० टी० का फोन आया। शायद २२-२३ तक कलकत्ते जाने की इजाजत मिले। अस्पताल में दस हजार रुपए जमा दिए।

११ फरवरी : सुवह डॉक्टर आया। कहा, डायलेसेस ९ वजे करेंगे। मदन-विरजू, राजू सव आ गए। १० वजे ऊपर १९वीं मंजिल पर ले गए। ४॥ वजे तक था। काफी भय लगा, दर्द भी हुआ। सव सह लिया। काफी कम्पलिकेशन का काम है। राजू तो वेहोश हो कर गिर गया। दिन में थोड़ा सा खाना खाया। वालकृष्ण तथा वाइफ वारी-वारी से वैठे रहे। वी० पी० ९०-७० हो गया। चक्कर आने लगे। परमानन्द जी केजड़ीवाल आए थे। आज छः पत्र लिखवाए। रात में एक वजे तक नींद नहीं आयी।

१२ फरवरी : कल डायलेसेस लिया, आराम मिला। आज कुछ भूख भी लगी, परंतु कमजोरी है। वी० एल० टी० जा रहा है। कलकत्ता से विशु आया है। उसकी सासू के

कैंसर हो गया है। मंजु भी आयी है, विलायत जायगी। मुझे डायलेसेस पहले ले लेना चाहिए था।

१४ फरवरी : कल गरिष्ठ खा लिया था, नुकसान कर गया। सावधानी वरतनी चाहिए। त्रिफला ले लिया था, पेट दुखता था। सारे दिन राह देखता रहा, आज डायलेसेस नहीं हुआ। मशीनें कम हैं, वीमार ज्यादा। खाली मिलती नहीं। मन में चिंता सी हुई। रात में नींद के लिए दवा ली। पाँच प्रतियाँ 'इतिहास के निर्झर' की वनारस से आयी हैं। पुरुषोत्तम जी मोदी ने अच्छी छापी, वहुत स्नेह रखते हैं। तवीयत सुधार पर है। परंतु एक हाथ में सूजन है। भूख खुलने लगी है। शायद पाँच-चार दिन में घर जाऊँगा। राजू-रमा रोज आते हैं। देखता हूँ, शायद डायलेसेस पर पाँच-चार वर्ष निकल जायें। ५०००) रु० महीने का खर्च सिर्फ डायलेसेस पर है।

१५ फरवरी : डायलेसिस पर १० वजे से ५ तक रखा। आज दर्द कम हुआ। वजन ढाई किलो घट गया, पानी निकाला। शरीर सूख गया है। वजन ५३.७५ केजी है। दस्त नहीं लगा, पेट कैसा ही रहा। सारे दिन 'पायरेट' पढ़ता रहा, वहुत ही भ्रष्ट है। न मालूम अमेरिका में ऐसी कितावें क्यों विकती हैं। भ्रष्टता का यह रोग तो अव अपने देश में भी आ गया है। शायद हिन्दी में अनुवाद की हुई पुस्तकें इसे फैला देंगी। इसे कौन रोक सकता है? विवेकानन्द सी प्रतिमा तो है नहीं। रात में ११॥ से ३ वजे तक जागता रहा। वहुत तरह के विचार आते गए। गर्ग के आने से सुविधा हो गयी। पास में रहता है परंतु डायलेसेस का अडंगा लग गया, चिंता होती है। सप्ताह में तीन दिन, आठ-आठ घंटे शरीर में सूई और नली लगाए वैठा रहना कैसा ही लगता है।

१६ फरवरी : शायद १८ ता० को अस्पताल से डॉक्टर मुझे छोड़ देंगे। भूख तो लगती है, परंतु ताकत नहीं आ रही है। दिन में कितावें पढ़ता रहता हूँ। शरीर सूख कर काला हो गया है। पेट में कब्ज है। अपने से साफ़ होता नहीं। घर वालों को मेरी वजह से कितनी चिंता और परेशानी है। इस प्रकार जिन्दा रहना फजूल है, जीवन में जो कुछ करना था कर लिया। अव सोचता हूँ, क्या पाया, क्या खोया। उम्र शायद मैंने अपने आप कम कर ली। चुनाव की खवरें आ रही हैं। कांग्रेस-विरोधी पक्ष मजवूत पड़ रहा है फिर भी अभी निश्चित कुछ नहीं।

१७ फरवरी : सुवह एनिमा लिया। कल रात में काम्पोज ली, उससे नींद आ गयी थी। ९ वजे डायलेसेस के लिए ऊपर गया। कुर्सी पर ले जाते हैं। ५ वजे वापस आया। सर्दी लगी, वेचैनी भी महसूस हुई। लाइफ खराव हो गयी। गर्ग वरावर पास रहता है, वाइफ भी साथ रहती है। परंतु शरीर साथ नहीं देता। चैन नहीं है, वंध सा गया। वजन घट रहा है। शायद ज्यादा दिन नहीं रह पाऊँगा। इसके लिए मन तो तैयार है पर शरीर

नहीं। यह बड़ा कष्टदायी है। समय काटने के लिए अंग्रेजी की फालतू किताबें पढ़ता हूँ। रात में कई लोग मिलने आए।

१८ फरवरी : कब्ज की बड़ी तकलीफ है। बराबर दवा या एनिमा लेनी पड़ती है। भूख कुछ लगने लगी है। अस्पताल से मन ऊब गया है, घर जाने के लिए। एम० पी० झुनझुनवाला आए थे, उनकी पुत्र-वधू भी। ढाई वर्षों से डायलेसेस पर हैं। सब रकम निभा रहे हैं, इनके दूसरी बीमारियाँ भी हैं, परंतु बच गए। मुझे भी आशा होने लगी है।

१९ फरवरी : आज ९ बजे से ५ बजे तक डायलेसेस लिया। जे० पी० से मुझे मिलना चाहिए था परंतु हो न सका। मन में कैसा सा लगा। हम दोनों कितना मिलते थे, आज बगल के कमरे में रहते हुए भी एक दूसरे को नहीं देख पाते। शरीर में ताकत नहीं बढ़ती, डॉक्टर कहते हैं, देर लगेगी। महावीर, नन्दू आए, मैं कल जा रहा हूँ। तीन डायलेसेस और यहाँ लेकर कलकत्ता २६ ता० को जाने की सोच रहा हूँ।

२० फरवरी : सुबह १० बजे घर आ गया। भूख लगी थी, खाना खाया। दिन में १॥ घंटे सोया। परमानन्दजी, जी० डी० अश्विनी कानोड़िया को फोन किए। रात में टी० वी० देखी। कमजोरी तो है परंतु भूख लगने लगी है, कुछ रुचि भी हुई। गर्ग को आज सिरडी, पूना, नासिक भेज दिया। उसे भ्रमण करने का मौका मिल जायगा। प्रतापगढ़ देखने को कह दिया है। मैं तो अब शायद ही यात्रा कर सकूँ।

२१ फरवरी : गर्ग कल नासिक चला गया। दिन भर घर में था। दो बार आइसक्रीम खायी, अच्छी लगी। भूख खूब जोरों से लगती है। परंतु वजन नहीं बढ़ रहा है। एन० एल० टी०, महावीर तथा उसकी वाइफ यहाँ हैं। दिन में महावीर के साथ परमानन्दजी के घर गया। आधा घंटा था। थकावट नहीं आयी। चुनाव जोरों पर है। जनता पार्टी का दबाव बढ़ता सा है। जे० पी० से मिला था, ५०००) रु० दिए।

२२ फरवरी : सारे दिन डायलेसेस लेता रहा। कुर्सी पर बैठना पड़ा, इसमें आराम कमती रहता है। ६ बजे घर आया। थकावट आ गयी और अवसाद महसूस करता रहा। दिन में थोड़ा सा सूप लिया। खास कुछ पढ़ नहीं पाया। गर्ग नहीं है। एन० एल० टी० महावीर सब आए। कलकत्ते का एस० एन० टी० का फोन है, कुछ दिन और यहाँ रुकने को कहा है। मेरा मन रविवार को जाने का है। लाइफ हर तरह से आधी रह गयी। शाम को जाड़ा देकर बुखार आया।

२३ फरवरी : सुबह एनिमा लिया। ८॥ बजे नाश्ता किया। शोभा झुनझुनवाला के गया, कई तरह की जानकारी मिली। दिन में १ बजे से ३ बजे तक सोया। श्यामनन्दन मिश्र का फोन आया, उन्हें खाने पर बुलाया।

२५ फरवरी : दिन में घर पर था। शाम को जी० डी० के यहाँ जाने का मन था, गया नहीं। शेयर बाजार बहुत तेज होता जा रहा है। मेरे मत्थे है। पूना जाने का विचार कर रहा हूँ। डायलेसेस से फायदा है, ताकत आती जा रही है।

२६ फरवरी : आज ५ घंटे का डायलेसेस लिया। ३ बजे फ्री हो गया। काफ़ी आराम मिला। ९। बजे गया, ३।। बजे घर वापिस आया। थकावट थी, थोड़ा टेम्परेचर था। लेट गया। मिल की हालत बहुत खराब सी चल रही है जोर से घाटा लग रहा है। शायद सत्तर-अस्सी लाख तक पहुँच जायगा। मेरा स्वास्थ्य सुधरता जा रहा है। आजकल भोजन में जितना स्वाद लगता है, कभी नहीं लगा। चुनावों में जनता पार्टी जीत जायगी, ऐसा लगता है। जे० पी० का सबको एक करने में बहुत बड़ा हाथ रहा है। यह एक अद्‌भुत घटना होगी।

२७ फरवरी : सुबह मदन के घर ८। बजे गया। नये ढंग का नाश्ता किया— जर्मन फार्मूला का, बहुत अच्छा लगा। भूख खूब लगती है। दिन में २ बजे तक सोया। फिर सीकर के टी० बी० अस्पताल की मीटिंग हुई, दस-बारह व्यक्ति आये। शायद यहाँ रुपये इकट्ठे हो जायेंगे। अच्छा काम है। ३ बजे ताश खेलनेवाले मित्र आये, ५।। बजे तक थे। शेयर बाजार कुछ मंदा है। ४।। बजे नाश्ता ज्यादा कर लिया था, पेट भर गया, रात में खाना नहीं खा सका। १३ ता० को कलकत्ता जाने का विचार है। डायलेसेस की वहाँ व्यवस्था है।

२८ फरवरी : आज थोड़ी थकावट सी महसूस होती रही। सुबह जे० पी० के पास गया। वे डायलेसेस पर थे। काफी सुस्त लगते हैं। जगजीवन बाबू से मिलने गया परन्तु वे मद्रास जा चुके थे। ५०००) रु० ले गया था।

१ मार्च : डायलेसेस ९। बजे शुरू किया। जे० पी० के पास गया। उन्हें छेना दिया। बातचीत की। काफी बीमार हैं। ३। बजे तक अस्पताल में था। डायलेसेस में २ घंटे की कमी से आराम रहा, काफी सुविधा हो गयी है। ३।। बजे घर आकर लेट गया। काफी भूख लगती है। आइसक्रीम तीन बार ले लेता हूँ। अखबार या किताबें पढ़ता रहता हूँ।

२ मार्च : शाम को जी० डी० के पास गया। उससे पहले परमानन्द जी के घर गया था। जी० डी० तीन मशीनें डायलेसेज की ले लेंगे। लोगों का भला हो जायगा। डा० कुरुविला ने मदन से कहा है कि नये टाइप की फ्रेंच मशीन आ रही है, उसके लिये वेट करना चाहिये।

३ मार्च : ८।। बजे जसलोक गया। जे० पी० से मिला। उन्हें पांच दिये, एस० एन० टी० के अकाउन्ट में। काफी सुस्त मालूम देते थे। मुझे तो ऐसा लगता है, ज्यादा दिन

वचेंगे नहीं। परन्तु परमात्मा इन्हें ठीक रखे, इनकी वहुत जरूरत है। ९।। वजे मैं डायलेसेस पर वैठा। २।। पर उठा। ३। वजे घर आ गया। एक घंटा सोया। हाथ में सूजन है। कमती करने के लिये ऊपर लटकाये रखना पड़ता है। विरजू कल जा रहा है। एस० एन० टी० से वात हुई, १००००) ढढ्ढा जी को देगा। जनता पार्टी शायद चुनाव में वरावर रह जायगी। शेयर वाजार मंदा है। रात में नींद आ जाती है।

४ मार्च : देश में वहुत वड़ा परिवर्तन आने की संभावना है। जे० पी० सम्पूर्ण क्रान्ति चाहते हैं। वहुत वड़ी वात है। विरोधी-दल निस्वार्थ भाव से एक होंगे और काम करेंगे तब शायद कुछ कर सकें। मैं तो अव किसी काम का न रहा। पता नहीं, जे० पी० किस दैवी शक्ति से इस हालत में काम कर लेते हैं।

१० मार्च : डायरी कई दिनों पर लिख रहा हूँ। दिन में घर पर था, कहीं गया नहीं। विरजू परसों चला गया, मिल वहुत खराव चल रही है। शायद अक्तूवर-मार्च में ६० लाख घाटे के लग जायेंगे। मारु जी की मिलें ठीक चल रही हैं। दूसरी वहुत सी मिलें ठीक चल रही हैं। मुझे लगता है आगामी अक्तूवर तक एक करोड़ घाटा लग जायगा। मदन वहुत चिन्तित है। इन दिनों मेरा लिखना-पढ़ना वंद है।

११ मार्च : सुवह घर पर था। शाम को जी० डी० के पास आधा घंटा था। सुवह रमा-राजू, मैं झुनझुनवाला के गया। एक घंटा था, वहीं जीमा। खाना अच्छा था। भले लोग हैं, साधारण स्थिति के परन्तु वीमारी में काफी खर्च पड़ जाता है। शोभा होशियार है। ससुर के डायलेसेस निज में करती है, घर में मशीन है। उसे अच्छी जानकारी हो गयी है। सुना, जगजीवन वावू को हार्ट अटेक हो गया। इस उम्र में वे वहुत परिश्रम करते हैं, सावधानी रखनी चाहिये। ४१।। में ग्वालियर के शेयर ले लिये। रात में ९ वजे थोड़ा सा खाना खाया। वजन तथा ताकत नहीं वढ़ रही है। डायलेसेस का झंझट हफ्ते में तीन वार का लगा ही है।

१२ मार्च : सुवह ९ वजे जसलोक, ५ वजे तक डायलेसेस लेता रहा। काफ़ी थकावट सी आ गयी। घर आकर लेट गया। वालकृष्ण के कलकत्ता जाने के वाद से पढ़ना-लिखना वन्द है। कांग्रेस के हारने के चान्स हो रहे हैं क्योंकि इस वार मुस्लिम वोट क़ांग्रेस को वहुत कमती मिलेंगे।

वम्बई-कलकत्ता

१३ मार्च : सुवह तुलसी तालाव गया। थकावट आ गयी, घर आया। ९ वजे रमा-राजू के साथ परमानन्द जी केजड़ीवाल के कारखाने पर गया। ज्यादा खा लिया, पुचके, पानी आदि। पेट खराव हो गया। घर आकर सो गया। १ वजे उठा। ३।। वजे मदन के साथ एयर पोर्ट आया। ५ वजे प्लेन से कलकत्ता। पौने तीन महीने वाद आया।

ऊपर चढ़ने में काफी थकावट लगी। एयर पोर्ट पर बहुत लोग आये थे। रात में ११ बजे नींद की दवा लेकर सो गया।

कलकत्ता

१४ मार्च : सुबह ६। बजे विक्टोरिया गया। लोग खुश हुए। घर आकर नाश्ता किया। दिन में पत्र लिखवाता रहा। मन में अवसाद भरा रहता है। न लिखने का मन, न पढ़ने का। याददाश्त भी कमजोर। जीवन व्यर्थ मालूम देता है। परमात्मा जैसा रखता है, रहना पड़ता है।

१७ मार्च : सुबह ८॥ बजे कलकत्ता अस्पताल गया। वजन ६०॥ किलो हुआ। ९॥ बजे डायलेसेस मशीन पर आया। ५॥ घंटे बहुत तकलीफ में रहा। तीन-चार उल्टी हुई, दो बार दस्त आये। मन में बहुत दुख होता है। परन्तु जीवन भर तो यही करना होगा। शायद जीवन भी अब ज्यादा नहीं है। ३॥ बजे घर आकर सो गया। ६ बजे उठा। मिलनेवाले आते रहे। रात में नींद आ गयी। कमजोरी बहुत महसूस होती है। चुनावों की चर्चा है, यहाँ पं० बंगाल में कांग्रेस की हालत कुछ अच्छी है। परन्तु वामपंथियों का जोर बढ़ा हुआ है।

१८ मार्च : घर पर था, तबियत में सुधार है पर कमजोरी बहुत है। लिखना-पढ़ना बन्द है। चुनावों का थोड़ा सौदा किया है, जो नहीं करना चाहिये था परन्तु आदत पड़ी हुई है।

१९ मार्च : डायलेसेस में ६ घंटा था। आज पेट नहीं दुखता था। ४ बजे घर आया। मन में न जाने कैसी सी ही विरक्ति भरी रहती है। सोचता हूँ, समय आ रहा है बहुत हुआ तो दो-तीन वर्ष। कष्ट तो रहता ही है, नींद भी कम आने लगी है। ज्यादातर एक गैल सा बना रहता है।

२० मार्च : सुबह मैदान गया। फिर भागीरथ जी के साथ चार जगह चन्दे में गया। दो-तीन लाख मिलेंगे। सारी रात जागता रहा। इन्दिरा जी हार गयीं, कांग्रेस हार गयी। मेरे १५०००) लगने से मन में चिन्ता हुई।

२१ मार्च : आज डायलेसेस नहीं है परन्तु शरीर पर बुरे खून का असर मालूम देता है। कल सारी रात रेडियो सुनता रहा, आज दिन में सोया। पचीस-तीस पत्र लिखाये। मुरारजी भाई से बम्बई में नहीं मिल सका, इसका खेद रहा। ग्यारह वर्षों से इन्दिराजी शासन कर रही थीं, वह अचानक खत्म हो गया। ऐसी हार की आशा नहीं थी परन्तु जनमत का रुख कब क्या हो जाय। फ्रांस, रूस और चीन में यही हुआ। इंग्लैण्ड में भी। मीसा और संजय हार के कारण है, ऐसी मेरी धारणा है। नसबंदी ने मुसलमानों का वोट कांग्रेस के विरुद्ध कर दिया, यह हार का एक और जोरदार कारण बना।

२२ मार्च : सुवह ९ वजे गर्ग के साथ कलकत्ता अस्पताल गया। ९॥ वजे मशीन पर। ५ घंटे का था। काफी तकलीफ रही। उल्टी दस्त सव हुए। वहुत दुख पाया। सोचता हूँ, यह क्या जीवन है। ३ वजे डायलेसेस समाप्त हुआ। ४ वजे घर आकर सो गया, ६ वजे उठा। के० एल० ढांढनिया, भागीरथ जी, सीताराम जी आये। थकावट वहुत आ जाती है। पार्लियामेन्ट में जनता पार्टी की मेजॉरिटी हो जायगी।

२३ मार्च : चुनावों में जनता पार्टी आ गयी। उत्तर प्रदेश, विहार, हरियाणा पंजाव से एक भी कांग्रेसी नहीं आया। राजस्थान में एक आया। सुखाड़िया जी ने गवर्नरशिप से इस्तीफा दे दिया। मेरी तवियत आज ठीक है। आठ-दस पत्र लिखवाये। किताव का कुछ काम किया। दोनों हाथों में दर्द है। एक में सूजन, दूसरे में दर्द। भूख कम लगती है। रात में गोली लेकर नींद आती है।

२४ मार्च : सुवह थोड़ा सा नाश्ता करके गर्ग, नन्दू के साथ अस्पताल गया। १० वजे मशीन पर। २ वजे तक वहुत तकलीफ पाया। उल्टी हुई, पेट में दर्द होता रहा। मन में होता है यह कैसा जीवन है। आदमी इतनी तकलीफ सहकर कैसे जीता है। वापिस वम्वई जाने का विचार कर रहा हूँ। खवर मिली कि मुरार जी भाई प्राइम मिनिस्टर हो गये। मैं उनसे वम्वई में मिल नहीं सका था। एक धोखा रह गया, विवश था।

२५ मार्च : सुवह मैदान गया। दोस्तों से मिला। एक घंटा आर० के० भुवालका के घर था। थोड़ा चावल, डोसा ले लिया। दिन में 'मेरा संघर्ष' पढ़ता रहा। शायद अच्छी किताव होगी। मशीन पर मुझे वहुत तकलीफ होती है। परन्तु कोई उपाय नहीं। अखवार पढ़े, दिल्ली की खवरें अच्छी हैं। शायद जगजीवन वावू कैविनट में आ जायें। दो-तीन दिनों में मंत्री-मंडल वन जायेगा। कुछ राज्यों में कांग्रेसी रहेंगे पर लोक सभा जनता की। नयी वात है, मेल से रहें तो देश का भला हो सकता है।

२६ मार्च : हर समय डायलेसेस दिमाग में घुसा रहता है, यह ठीक नहीं। मानसिक तनाव से शरीर भी गिरता है। और चीजों पर ध्यान जमता नहीं। मुरारजी भाई प्रधानमंत्री तो वने पर इसके पीछे जो खींचतान चली, वह लक्षण शुभ नहीं। शायद भगवान आगे चल कर सवों को सुवुद्धि दें।

१ अप्रैल : डायरी लिखने में देर हो गयी। कल डायलेसेस लिया था। जोर से सर्दी शुरू में लगती है, मन कैसा ही हो जाता है। सारी उम्र का फंदा हो गया। शायद एक-डेढ़ वर्ष और ज्यादा से ज्यादा। शरीर थकता जा रहा है, चल फिर नहीं सकता।

३ अप्रैल : शाम को वाई और वच्चों के साथ मद्रासी होटल में गया। थोड़ा सा डोसा मैंने भी खाया, खाना नहीं चाहिये था। सारे दिन घर में था। मैदान नहीं गया।

तबीयत कमजोर है, मन में कैसा सा होता है। धीरे-धीरे फीकापन बढ़ रहा है, महसूस होता है।

४ अप्रैल : शाम को मैदान गया। मिलने-जुलने वाले लोग आ जाते हैं। शायद १९७७ तक बच जाऊं। इतने में बेला की शादी और किताब का काम हो जायगा।

५ अप्रैल : पश्चिम बंगाल में वामपंथी दलों का जोर बढ़ रहा है। ऐसा लगता है कम्युनिस्ट पार्टी और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी को छोड़ कर बाकी सारे वामपंथी दल खत्म हो जायेंगे। मार्क्सवादी अन्त में अकेले सरकार बना लेंगे। कांग्रेस यहाँ यदि आपसी दलबंदी न बढ़ाती तो वामपंथी बढ़ नहीं पाते। जनसंघ ने भी साधारण लोगों के लिए कुछ नहीं किया। कलकत्ता के बाहर तो इन्हें कोई शायद ही जानता हो। आज तबीयत कुछ ठीक सी रही।

१४ अप्रैल : ९॥ बजे मशीन पर चला गया, ३॥ बजे तक था। बहुत थकावट आ जाती है। यह कोई जीवन थोड़े ही है, एक प्रकार से जिन्दा लाश हूँ। लिखना-पढ़ना होता नहीं।

१५ अप्रैल : डायरी में क्या लिखूँ, समझ में नहीं आता। तन-मन दोनों खराब। मृत्यु चाहता हूँ। मुझे चिन्ता नहीं, बच्चे अच्छे हैं, भले हैं।

१६ अप्रैल : खाना एकदम बन्द सा है। मन खराब रहता है। आज डायलेसेस था। ९। बजे गया, २॥ बजे तक रहा। के० एल० दूगड़ आये थे, गांधी विद्यामंदिर के चन्दे के लिये।

१७ अप्रैल : घर में कन्हैयालाल जी दूगड़ का प्रवचन हुआ। अच्छा रहा। हमने तो सवा लाख रुपये गांधी विद्या मंदिर को चन्दा में दिये। सुबह मैदान गया था, दिन में घर पर था। खराब सपने आते रहते हैं। रात में जुलाब और नींद दोनों की गोलियाँ लेता हूँ।

१८ अप्रैल : मैदान नहीं गया। सुस्ती बहुत है। तेल मालिश करा लेता हूँ, कुछ ठीक लगता है। अखबार पढ़ा। सोता रहा। मन में नाना प्रकार के खराब विचार आते हैं। मृत्यु का अब मुझे डर नहीं है। भागीरथ जी के घर गया, एक घंटे था।

१९ अप्रैल : मन स्थिर रहता नहीं। सारा जीवन भाग-दौड़ में खपा दिया। बाहर ही देखा, अन्दर की पुकार सुन कर भी अनसुनी करता रहा। आज तन जर्जर है, मन अस्थिर। उस पर काबू नहीं। लोग आते हैं, आशा बंधाते हैं। मैं मुस्कुरा देता हूँ। जानता हूँ, भगवान् से तन पाया, मन पाया परंतु आज दोनों को खोया बैठा हूँ।

२० अप्रैल : भाई लोग आते हैं, दोस्त भी। कारबार की, राजनीति की चर्चा में रुचि रही नहीं। फिर भी मोह से छुटकारा नहीं मिलता। कल रात जागता रहा, भगवान् से यही माँगता रहा कि शरीर की पीड़ा से मुक्त करें।

२१ अप्रैल : अब डायरी लिखी नहीं जाती। आँखों के आगे धुंधला छा जाता है। शायद अब अधिक कष्ट नहीं भोगना पड़े। जिस धन को कमाया, वह आज प्राण निकलने में बाधा पहुँचाता है। नसों में नली, सुई से खून चढ़ाना यह सब जबरदस्ती प्राण को रोकने की कोशिश है। इससे शरीर को कष्ट होता है। गरीब को यह सुविधा कहाँ? इसलिए वह थोड़ी तकलीफ सह कर छुटकारा पा जाता है।

बम्बई

८ मई : अस्पताल में हूँ। सारे दिन भूख नहीं। काम में मन नहीं। लोग मिलने आते हैं। सहानुभूति कर जाते हैं। शरीर में ताकत तो खत्म हो गयी है।

९ मई : डायलेसेस पर १० से ४ बजे तक। शरीर पर जो बीतता है वह अलग, मन में काफी तकलीफ होती है। उम्र भर का रोग लग गया। इस जीवन से छुटकारा मिल जाय तो अच्छा। मनुष्य आखिर काम करने के लिये जिन्दा रहता है। जब काम ही नहीं कर सकता तो उसकी क्या जरूरत? घर वालों पर १०,०००) महीना खर्च डालने से क्या फायदा? मेरे पर तो भगवान की कृपा है परन्तु दूसरे गरीब तो मर जाते हैं।

नामानुक्रमणिका

प

फ

ब

भ

म

य

स

ह